GOVT. COLLEGE, LIBRARY

KOTA (Raj)

Students can retain library books only for two

BORROWER'S	DUE DTATE	SIGNATURE
1		Į
1		{
- {		{
{		
1		}
		}
1		1
1		ł
1		1
1		}
1		1
1		1

राजनय के सिद्धान्त

(Theory & Practice of Diplomacy)

公

ठों हरिस्पन्न समा अग्रित प्रतिक्रित प्रतिक्

एव शशी के जैन

☆

कालेज बुक डिपो, जयपुर

D. 45-be-

© Publishers
All Rights Reserved with the Publishers

Published by College Book Depot B3 Tripoka Ja Put 2

Type-Setting at Printograph Japur

नये संस्करण की भूमिका

--=--

साधारण बोत्तमाल की माना में 'सजनव' (Diplomacy) शब्द का प्रयोग छल कपट यादुर्व एय असरस व्यवहार के लिए किया जाता है। अन्तर्राष्ट्रिय सम्बन्धों में मी राजनवा को प्रारम्भ में इसी अर्थ में समझा जाता था। कुछ विधारकों की मान्यतानुकार राजनवाड़ एक राज्य का ऐसा प्रतिनिधि होता है जो विदेशों में युद्ध बोतने के लिए नेजा जाता है। भारतीय राजनीतिझ कीटित्य के मतानुसार राजनवाड़ा को मदुनुष्ठी नीति झार राज्य के लक्ष्य प्रारम करने का प्रयास करना चाहिए इस नीति के आ है—मानि। युद्ध तटस्थता युद्ध तत्परता साधि और गाडुओं में जूट कालना। इस हिंद राजनवा किसी आरहां को रस्थ्य मानकर मही चलता घरन राज्य के लिए घासतिक सफरता प्राप्त करना ही प्रस्का मुख्य लक्ष्य है। आज मी राजनव का रुख्य राज्य के राष्ट्रीय हिंतों की उपलब्ध है चयांदि आज राजनव के तरिके क्रांक्रिया एव माना में परिवर्तन आ गया है। राज्यों में ज्यों ज्यों केन्द्र बनता जा रहा है।

राजनय के सिद्धाना का यह नवीन सर्गापित परिवर्धित सस्करण प्रस्तुत करते हुए हमें विशेष हर्ष है। इसमें राजनय के सिद्धाना और व्यवहार सीनों है। व्यवं को सुविश्वा अधिक नमृद्ध हनाय महिरा है। लगमग प्रत्येक अध्याय को संग्रापित परिवर्धित करते हुए राजनय की नवीन प्रवृत्तियों के फाशा में अध्यान हनाने की पेष्टा की गई है। राजनय और साता और अन्तर्ग हुए द्वार और शानित के दौरान राजनय, कुछ महान राजनयक आदि पर नए अध्याय जोड़े गए हैं। इसमें नर्गरिहराव शरकार के राजनय तक को भी जोड़ा गया है। सोवियत साथ के पतन परिवर्धी एतिया के समाधान के लिए अध्योतित सिद्धित और श्राप्तियन सम्मेतन भी इसमें ग्राप्तित किये गये हैं। आग्रा है अपने नाए स्वरुप में यह सरकरण विषय में कियरीत पाठकों के लिए पहले की तुनना में अधिक राजयेव विषय होगा।

सुपार हेतु सुझाव सहबं आमन्त्रित है। जिन कृतियाँ और बोतों से पुस्तक के प्रणयन में सहायता ती गई है उनके प्रति हम हृदय से आमारी हैं।

लेखकद्वय

अनुक्रमणिका

1. राजनय का जन्म, स्वस्त, विकास, सक्ष्य एवं कार्य (Origin, Nature, Development, Objectives and Functions of Diplomacy)

uppomacy)
राज्य का कर्य एवं स्टक्स (1) राज्यम और विदेश नैपि समा कन्तर्राष्ट्रीय
कानून (6) राज्यमिक रामनैति (9) राज्यम और विज्ञान (9) राज्यम का
जन्म या उदय (10) राज्यम का विकत्त (11) राज्यम का देल

जन्म या उदय (10) राजनय का दिकता (11) राजनय का क्षेत्र (17) राजनय के कर्यस् (18) राजनय के कार्य (22) राजनयिकों के प्रमुख कार्य (25) राजनय के प्रयोग की दिश्यमें (27) राजनय का महत्व क्रयदा कर्न्सस्ट्रीय राजनीय में राजनय का स्थान (28)

2. शाजनय राष्ट्रीय शक्ति के हिययार और साधन के सप में (Diplomacy as a Weapon and Tool of National Power)

राजनीयर सम्बन्धी की स्थापना और मान्यदा ह्वार राष्ट्रीय हिन्ने की अनिहाँद्व (30) राष्ट्रीय रिके के हियार और साधन के रूप में राजनय पर मोर्नियों के विदार (32) राष्ट्रीय रिके के साधन के रूप में राजनय की सकता के किए में निवस (35) राष्ट्रीय रिक के साधन के रूप में तराजनय की सकता के किए मी निवस (35) राष्ट्रीय हिंद की अनिहाँद्व के लिए राजनय की साधना कर (38)

के मृतमृत कार्य (38)

3. राजनय के साधन एवं, वरीके, राजनियक व्यवहार का विकास—राजनय के युनानी, इटालियन, फ्रॉसीसी और भारतीय मत

कं यूनानी, इटालियन, क्रांसीसी और भारतीय मत (Means and Methods of Diplomacy, Evolution of Diplomatic Practice-Greek, Italian, French and Indian School of Diplomacy)

यूनकी राजनिक व्यवहार (40) रोमन राजनिक व्यवहार (42) राजनिक कावार का बुद्दिन वरीका (45) राजनिक कावर का क्रांसैनी वरीका (51) राजनिक कावर का भारतीय दरीका (57) भारतीय राजनव के कावन (60) भारतीय राजनय के प्रमाद (62) भारतीय राजनय का व्यावहारीक रूप (64)

4. राजनय के रूप : प्रजावन्त्रात्मक राजनय, संसदीय राजनय, रिक्स राजनय, सम्मेलनीय राजनय, व्यक्तिगत राजनय रुद्धा सस्मितन राजनय, अग्रुनिक दिश्व में उनका प्रमाव और सीमारी - पुराना राजनय - पुराने का नए की और स्वियर्तन, न्या राजनय, नई शकनीक तथा राजनय में आयुनीक रिकास -

(Types of Diplomacy-Democratic Diplomacy, Parliamentars, Diplomacy, Sammit Diplomacy, Conference Diplomacy, Parsonal Diplomacy, and Coultion Diplomacy, Their Potentialities and Limits in the Modern World-Old Diplomacy, Transition from Old to the New, New Diplomacy, New Techniques and Recent Developments in Diplomacy).

प्रजातनालक राजनय (67) सम्दीय राजनय (73) विवार राजनय (77) सम्मेतनीय राजनय (84) व्यक्तिगत राजनय (94) सम्पिकारदादी राजनय (94) साल राजनय और गृत राजनय (95) दुकानदार जैका

117

	(१०) नार्कुनतक राजनय (१११) युद्धनात राजनय (११२) राजनय म नया	
٠	तकनीकें और नये विकास (113) राजनय पर प्रमाव ढालने वाले कुछ नये	
	विकास (115)	
5	राजनय का दगत असलनता का राजनय, गहायता का राजनय अन्तर्राष्ट्रीय सगठनों का राजनय, राष्ट्रपण्डतीय राजनय (The Arens of Diplomacy of Non silgament, Diplomacy at Ald, Diplomacy at the International Organisations, Commonwealth Diplomacy)	117
	असलग्नता का राजनय (117) सहायता का राजनय (120) अन्तर्राष्ट्रीय	
	सगठनों का राजनय (127) राष्ट्रमण्डलीय राजनय (139)	
6	आधुनिक राजनय में प्रचार—युद्ध और शान्ति के दौरान राजनय (Propaganda in Modern Diplomacy Diplomacy during War and Peace)	143
	प्रधार का अर्थ (143) प्रधार एव राजनय (144) पाष्ट्रीय हिन्द में वृद्धि के लिए प्रधार (145) विदेश नीति के साधन के रूप में प्रधार (146) प्रदुक्तत और शानिकाल में प्रधार का राजनय (147) राजनय प्रधार तथा राजनीतिक युद्ध (149) प्रधार के उपकरण (150) प्रधार के राहिक (152) प्रधायकाल प्रधार के आवश्यकताएँ (155) गानित और युद्ध के दौरान महाशानियों के प्रधार सन्त्र (156) सीवियत साथ का प्रधार यन्न (158)	
7	राजनय और महाराक्तियाँ—राजनय और अन्तर्राष्ट्रीय कानून (Diplomacy and Super Powers Diplomacy and International Law)	160
	संयुक्तराज्य अमेरिका का शंजनय (160) सोवियत संघ का राजनय (177) ब्रिटिश राजनय (190) राजनय और अन्तर्राष्ट्रीय कानून (194)	
8	राजन्त्रिक अभिकर्ता और राणिज्य दूत अंगियाँ एवं चन्तुक्तियाँ, तृतीय राज्य के सन्दर्भ में स्थिति, राजनियक निकाय अप्रत्य का निवम प्रत्यय पत्र	
	एवं पूर्णाधिकार (Diplomatic Agents & Consuls Their Classes and Immunities, Position in Regard to the Third State, The Diplomatic Body, Prin- ciple of Precedence Credentials and Full Powers)	197
	राजनियक अमिकताओं की श्रेणियाँ (198) दूतों की नियुक्ति (202) विशेषाधिकार एव छन्मुक्तियाँ (203) तृतीय राज्य के सन्दर्भ में राजनियक	
	अमिकर्ता की स्थिति (207) राजनियक निकाय (209) अग्रत्व का	
	नियम (210) प्रत्यय पत्र एव पूर्णीयकार (213) राजनियक मिशन की	
	समादि (214) वाणिज्य दृत (219) वाणिज्य दृतों का कानुनी स्तर और श्रेणियाँ (218) राष्ट्रीय हितों की अमिवृद्धि में राजनयझों का योगदान (223)	

9 अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन और कार्य सन्पादन

(International Meetings and Transactions)

राजनय बनाम यौद्धिक राजनय (98) प्रचार द्वारा राजनय (100) सयक्त या सहमितन राजनय (100) पुराना राजनय (102) नदीन राजनय

226

m *अनुक्रमणिका*

सम्मेलन का अध्यक्ष (229) अग्रत्व (230) सम्मेलनों की प्रक्रिया (230) सम्मेलन का संधिव (232) अन्तर्सष्ट्रीय सम्मेलनों के कुछ उदाहरण (232) 10 समियों एव अन्य अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के कुछ उदाहरण (232) या समियों एव अन्य अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलने अदिवारी, अन्तिम अधिनियम, प्रामाणिक दिवरण, अनुसमर्यन, समिलन आदि (Treater and other International Compacts, Concordat, Additional Articles, Final Act, Process Verbal, Ratification, Accession etc.)

_242

260

.. 303

..312

काँग्रेस तथा सम्मेलन (227) सम्मेलन का स्थान (227) सम्मेलन की तैयारियाँ (228) सम्मेलन के प्रतिनिध (228) सम्मेलन की माद्य (229)

Articles, Final Act, Process Verbal, Ratilication, Accession etc.)
कारिय एवं अपियान (242) घोषणाई (254) समझौता (255)
विदेश पिकरन (256) सम्पर्ज का विनित्तय (256) अदिप्रतिनति
समिय (257) अपितिक धाराई (257) अपित अपिनियम (258) सामान्य
अपिनियम (258) प्रामनिक विदरण (258) अस्थायी प्रणाती (259) विशेष
समझौते (259)
11 राजनिक सम्पर्क की माचा एवं अभितेखों का रूप
(Language of Diplomatic Intercourse and Forms of Documents)
राजनिक माचा अधेनी तेदिन क्रिय (260) स्वित्त कथन (262)

राजनीयक शब्दावती (264) सम्प्रमुखे पुर राजनायको के बीच पत्र व्यवसार (268) राजनीयक पत्र व्यवसार की अमान्दता (269) 12. कुछ महान् राजनयझ - मेटरनिवा, केसल रे, बिस्मार्क, विस्तन, तेले यें, के मेनन, के, एच पत्रिकर, राजनवर्ष्ट्रा की बदलती हुई मूनिका (Vome Great Diplomats - Matternich, Castle-righ, Bismarck, Wilson, Talaron, K. Menon, K. W Pannikar, Changing Role of Diplomats)

Upplomats)
भेटरनिख (270) केसतरे (275) दिस्तर्क (278) दुइरो दिस्तन (282)
तेरेसे (286) दो के कुम्म मेनन (288) कैंक्रियर राजनय कैसे और क्या ' (289) के एम एकेकर (292) नरसिंहरात का राजनय (293) राजनयज्ञ के लिए परानर्स (295) राजनयज्ञ की ददलरी हुई सूनिका (298) राजनयज्ञ के लिए परानर्स (295) राजनयज्ञ की ददलरी हुई सूनिका (298)

राजनीक कार्य के सिन्धे (भा) र जनवर का बदलते हुई नुनव (२००) र जनविक कार्य की सैन्धे (भा)

13 विदेश नीति एव राजनव (torego Polics & Diplomact)
विदेश नीते एव राजनव (शा) विदेश नीते के तत्व (भा) विदेश नीते के त्वव (भा) विदेश नीते के त्वव (भा) विदेश नीते के त्वव (भा) विदेश नीते एक रूसरे के पूरक (भाभ) राजनव और विदेश नीते में कन्तर (भाभ)

14 विदेश सेवा एवं विदेश कार्यातव (torego toffice)

दूरक (याक्ष) राजनय और दिदेश मीति में अन्तर (याक्ष) दिदेश सेवा एवं विदेश कार्यातव (bereign betwee & bereign (Illice) अमेरिकी विदेश तेवा का मेंग्यान (याक्ष) अमेरिकी दिदेश सेवा का दिकास (याक्ष) अमेरिकी दिदेश तेवा की वर्तमान स्थित (याक्ष) अमेरिकी दिदेश तेवा का मूल्यकन (याक्ष) मार्ग्याव दिदेश तेवा और दिदेश कार्यान्य (याक्ष)

Suggested Readings

centuries

Career Ambassador

A Diplomai's Wife Through Ambassy Eyes

their Diplomacy

The Extra-territoriality of Ambassadors in the 16th and 17th

The American Secretaries of State and

Diplomacy and the Study of

1 Adam, E.R.

2 Beaulac, Willard L

4 Frascr, Mrs Hugh

5 Dodd Mortha

6 Heatly, D P

3 Bemis, Samuel Flagg, ed

		international Relations
7	David Jayne Hill	History of Diplomacy in the
	•	Development of Europe, 3 Vols
8	Hudson and Feller	Diplomatic Laws and Regulations
9	Kelly and Dot	Dancing Diplomats
10	Knatchbull Hugessen,	Diplomat in Peace and War
	Sir Hughe	
11	Stewort, Irwin	Consular Privileges and Immunities
12	Vare Daniele	The Laughing Diplomat
13	Waddington, Marry King	Letters of a Diplomat's Wife
14	Young, George	Diplomacy Old and New
15	Akzın, Benjamın	Propaganda by Diplomats
16	Aldrige, James	The Diploma:
17	American Assembly	The Representation of the United
		States Abroad
18	Barchard, Edwin M	The Diplomatic Protection of Citizens
		Abroad
	Childs James Reuben	American Foreign Service
20	Crosswell Carol M	Protection of International Personnel
		Abroad
	Hankey, Lord Maurice P	Diplomacy by Conference
22	Huddleston, Sisley	Popular Diplomacy and War
23	Mayor, Amo J	Political Origins of the New
		Diplomacy
	Numelin, Ragnar, I	The Beginnings of Diplomacy
25	Ronsonby, Arthur	Democracy and Diplomacy A Plea
		for Popular Control of Foreign Policy
	•	

n Sı	n Suggested Readings		
26	Satow Sir Ernest		
27	Stuart, Graham, H		

28 Wriston, Henty M 29 Harold Nicolson 30 Harold Nicolson

31 Krishna Murty 32 Hayter

33 K. M. Pannikar 34 Thajer 35 Regalla 36 Kennedy, A.L.

37 I P Smgh

Diplomac

Diplommetry

Practice

Diplomacy

Trends in Diplomatic Practice Diplomacy-Old and New

Principles and Practice of Diplomacy

A Guide to Diplomatic Practices American Diplomatic and Consular

Evolution of Diplomatic Methods

Diplomacy of the Great Powers

Diplomacy in Democracy

Dynamics of Diplomacy

राजनय का जन्म, स्वरूप, विकास, लक्ष्य एवं कार्य

(Origin, Nature, Development, Objectives and Functions of Diplomacy)

आज वा ग्राम अनारांड्यीयता का ग्राम है। मार्यक राज्य से यह अपेशा ही जाती है कि व्य दे से कार्य म करे जिनते दिख सानि मगरी में आसका हो। इसके लिए यह आरावक है कि दिख का क्यांच मक्त अपना अपने अनारांड्यिय सम्बर्धी का विदेश कर कार्य अपने अनारांड्यिय सम्बर्धी का निवंदा के अवसर ज्यांचित का ही। जनके आपसी विवादों का निवंदात सानियुर्ण हम से ही। अनतांड्यीय साम्बर्धा के से सामि अपने अपना जिल्हा का निवंदात सानियुर्ण हम से ही। अनतांड्यीय सामस्याओं को सामस्याओं सामस्याओं को सामस्याओं का सामस्याओं का सामस्याओं को सामस्याओं का सामस्याओं को सामस्याओं का सामस्याओं को सामस्याओं का सामस्याओं का सामस्याओं का सामस्याओं का सामस्याओं को सामस्याओं का सामस्याओं का सामस्याओं का सामस्याओं का सामस्

वर्तमार अन्तर्राष्ट्रीय वायन्यों का सम्पूर्ण साता बाना 'साजगिक व्यवहार और सान्वन्यों पर आक्रित है। प्रस्परावार्थी विवासमार के अनुसार राजगिक क्रयहरर का प्रमुख उदेश प्रध्य राज्यों के साथ मैत्रीयूर्ण सान्वन्य क्षाणित करते एक राज्य के राज्यों होता की राद्य हा अनिवृद्धि करना है। इसके लिए प्रत्येक राज्य अपने राजगिका क्रिया हाता स्वागतकारी हो भेजात है। ये राजगिक्ष अपने कुमत बुक्तिपूर्ण एव सर्तावार्य्य क्यादा हाता स्वागतकारी तत्त्व की जाता और सरदार का दिन जीनों को प्रसाद करते हैं। दानाम अनति ही सर्वाद्धिक अवसारी पर युद्धि के सीम सम्बन्ध जोड़ी का एक सूत्र है। इसके हाता अनेक सम्माधिक अवसारी पर युद्धि रोका क्रांगा है तथा संज्यों के अपनी विवासी के जीन क्रयोग के स्थान पर समुक्ती एवं बासतिय हाता रहा किया नाता है।

मार्गेंच्यों में पाजनपात को चाड़ीय सांकि का मरिएम्बर (Bean of National Power) मार्गों के और 'साड़ीय मर्गोक्तत या दीमार्ग के उसकी अलगा (National morale is its south की लगा है। उन्हीं के महत्यों में "डिसिट्स में प्राय हुई वाम आभा से रहिल गोलियाय "केंद्रिक" हारा मारा भाषा है किरके वाल मरिएम्बर और आप्ता दोगों है। थे। उत्तम आणी का पाजनपात दिक्ता-जीति के स्थाय मार्गाम का पाड़िय सांकि के प्राय सार्गों से का दिक्ता-जीति के स्थाय मार्गों का पाड़िय सांकि के प्राय सार्गों से का स्थाय स्थापित कर देगा। यह पाड़िय सार्गिक के पुरा पोर्शी की खोज कर देगा और उन्हें स्थायी रूप से सार्गीक सांकित सार्गाम को सिंग प्राया कर यह अल्य स्थायों होते और और की मार्गिक सामारागाओं सीनिक सीमार्ग सार्गीय सार्गी

से विदित हों तो राष्ट्रीय शक्ति अपनी तनान सम्मादनाओं का पूरा सदुपदोग कर सामान्यतया किन्तु मुद्ध के समय दिशेष रूप से उच्चतन शिखर पर पहुँच सकता है।" इस तरह से राष्ट्रीय शक्ति की अनिदृद्धि में राजनयज्ञ की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूनिका है।

राजनय का अर्थ एवं स्वरूप (The Meaning and Nature of Diplomacy)

लेखको एव राजनयडाँ ने राजनय सम्बन्धी दिश्य पर प्रदुर साहित्य की रवना की है। प्रारम्भ में इसे एक गोमनीय एव रहस्यूम्टी व्यवसाय माना जाता था तथा राजनपड़ा ऐसे लोग समझे जाते थे जो क्रमरी धम्क-दमक के पीछे खतरनाक शब्दम्जों का आयोजन किया करते थे। आज वे केवल नागरिक सेवा की विशेष शाखा के सदस्य मात्र हैं। यदारी राजदूरी एव मन्त्रियों को दूसरे राज्य में अपने पूर्वदर्तियों की गाँति सम्मान विशेषाधिकार, उन्युक्तियों प्रदान की जाती है किन्तु जनका अरीतकातीन राजसी काट-बाट और क्रिक्तिकायूम्टी जीवन अर केवल इतिहास के पूर्वणे कहा कितित वर गाय है। पाजनपड़ी के व्यवहार के विनिन्न पहलुओं ने राजनय के अर्थ में नी अनेकरूरता ला यी है। एक सक्रिय व्यवसार होने के नाते राजनय शब्द का अनेक शर गावत प्रयोग में किया जाता है। कमी इस्कुण किया जाता है।

रा ुाय का शान्तिक अर्थ (Meaning of the word 'Diplomacy')

हिन्दी का 'राजनय शब्द अंग्रेजी के 'डिप्लोनेसी' (Diplomacy) का समानायी है। डिप्लेनेसी शब्द का प्रयोग आज से लगनग 196 दर्ष पूर्व होने लगा था । सैर्दप्रयन 🐣 1796 ई में एडमन्ड दर्क ने इस अर्थ में यह शब्द प्रयुक्त किया। 'डिप्लोमेसी' शब्द की उत्पत्ति ग्रीक नाम के 'डिप्लाउन' (Diploun) शब्द से हुई है जिसका अर्थ मोडना अयदा दोहरा करना (To Fold) होता है। रोमन साम्राज्य में पासपोर्ट एव सढकों पर घलने के अनुमति-पत्र आदि दोहरे करके सी दिए जाते थे । ये पासपोर्ट द्वया अनुमति-पत्र घातु के पत्रों पर खुदे रहते थे इनको डिप्तोमा (Diploma) कहा जाता था । धीरे-धीरे "डिप्लोमा शब्द का प्रयोग सनी सरकारी कागजातों के लिए होने लगा । दिदेशियों के दिशेपाधिकार अथवा उन्मुक्ति एव दिदेशी सन्धियों सम्बन्धी कागजात को भी 'डिप्लोमा' की सड़ा दी जाने लगी । एवं इन सन्धियों एवं सनझौतों की सख्या अधिक हो गई तो उनको सुरक्षित स्थानों पर रखा जाने समा । ये स्थान बाद में राजकीय अमिलेखागारों के नाम से जाने गए । राज्यानिलेखागारों के डिप्लोमाज की सख्या बढने पर जनको छाँटकर अलग करके और उनकी देखनाल रखने के लिए अलग से कर्मचारी नियक्त किए जाने लगे। इन कर्मचारियों का कार्य राजनियक कृत्य (Diplomatic Business) कहलाया । धीरे-धीरे इस कार्य-व्यापार के लिए डिप्लोनेसी' शब्द प्रयुक्त होने लगे । राज्यानिलेखागारों का कार्य अलग हो गया । आज नी इस बार्य के लिए अंग्रेजी नावा में 'डिप्लेमेटिक' शब्द ही प्रचलित है।

परिभाषाएँ एवं स्वरूप (Delinitions and Nature)

'राजनय' शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया गया है । प्रतिद्ध फ्रान्सीसी दिहान हैरल्ड निकोल्सन (Harold Nicolson) के अनुसार ये अर्थ एक-दूसरे से पर्याप्त निसते हैं। बभी इसका प्रयोग दिदेश गीति के सामानार्थक के रूप में विया जाता है। कफी इस शब्द द्वारा सन्धि बार्ता को इमित निया जाता है। बाजा व सन्धि बार्ता को प्रक्रिया एव यन्त्र को भी दिनित बरता है। बभी बभी दिदेशी सेवा बी एक साखा को पाजाय कह दिया जाता है। एक आप कार्य है। बभी क्या बभी अन्तर्राष्ट्रीय साधि बार्ता करने का अमृत्ती जुन या कुसतला था। जाता है। राजनय को सन्तर्राष्ट्रीय साधि बार्ता करने का अमृत्ती जुन छत्त करने का है।

हरा प्रवार राजनाय एवं अनेतार्पक शब्द है। हसके अधी एवं प्रयोगों वी निजता एवं आपसी दिसेप आंक कार पाठक को प्रमानें हाल देता है। सम्मदत राजगितिसास्त्र की अप कोई साव्या हरात प्रमान उपलग नहीं करती हैं। हेस्टक विकल्पन द्वारा सर्वात्र राजनाय के उत्तर अपी के सम्बन्ध में आर्मिन्दी (Organski) ने तित्या है वि कुमालता चुताई एवं कपट एवं अच्छे राजाय के सम्मान हो सकते हैं कि मुक्ते राजनाय को परिसादित करों साली विमेशता मदी मात्रा ज्या सकता। राजनाय पिदेशी निति के समक्वत भी गाही है। यह विदेशी नीति का ऐसा आ है जो उसकी रामा और द्विपादित में साव्या योगाया करता है। आर्में रुकी ने राजनाय की यह परिभागा दी है—"राजनाय दो अध्या दो से अधिक राष्ट्रों के सरवारी प्रतिनिधियों के बीच होने सावीं सिध्य सर्वात्री मध्या में हमित्र करती है।"

मैक्सेला तथा अन्य के कमा प्राताः 'राजाय वी मूस्सूत परिमात्ता के अनुवार यह
राष्ट्रों के मध्य रिस्ता समर्थ वा एवं कफ है जो प्रत्येक अन्य राज्य की राज्यांगी में प्रतरेक
राज्य के प्रतिशिक्षण र अग्रारीत है।' नैम्दर्स एक्साइस्तेक्षिट में दिस्त्य नारदक् मैटलीकाट ने राजन्य विषयक सेख में बताया है कि "नित्य प्रति वी भाषा में राजाय
मानदीय कार्यों के मानुर्देश सायान है।' कैसादों के प्रति वी भाषा में राजाय
सार्यों ना रामिय प्राता है। में समर्थ के प्रति के प्रति वीराज्यां में यह अन्तर्राष्ट्रीय
राजन्य वा अर्थ है—"राष्ट्रों के मध्य सार्थ वार्ता स्वासन वा वार्य या कला अथ्या ऐसे
प्रवाद में कीरात या पहला का प्रयोग।' अंत्रवारों ई एतिया दिक्सारी के अनुसार
'सिय बात्ती हाल अन्तर्राष्ट्रीय समर्था है। यह राजन्तिक रूप प्रति है कि प्रति है
दे हारा राजदूत एवं दूरा हो सान्यों की प्रवास्त्रा करते हैं। यह राजनिक्षक कार्य अथ्या
क्रीलात है। "यह परिमाश संदिश्त किन्तु व्यायक है। निकल्सन ने राजाय को दिदेश 'तिर अ अन्तर्रारीय वाचारों से प्रशास के प्रता है।

¹ Nicolson II Dislomacy pp 13 14

^{1.} Nikouonii 1 picensky w 19-14
2 "To put the definition down complexely Diplomacy refers to the process of negotia ton
carmed on between the official governmental representatives of one nation and those of other
(or other)" — AFK Organsia.

^{3 &}quot;The most basic definition of diplomacy is that it is a form of contact between nations based on permanent represents: on of each state in the capital city of each other state."
—Meltillan and Others

⁴ Chamber s Encyclopsedia (New Ld tion) Vol IV

⁵ Webster & New Engl sh Dictionary (1928)

^{6 &}quot;Diplomacy is the management of internat onal relations be negotiat on the method by which these relations are adjusted and managed by embateedors and envoys the business or act of the of colomates."

प्रो विवसी सद्धट (Prof. Quincy Wright) ने सलनय को दो क्यों में एरिलावित किया है—लेकप्रिय अर्थ में तथा विशेष कर्य में । लोकप्रिय कर्य में सलनय का कर्य है— "किसी सिय-वार्त या आदान-प्रदान में मातुरी, ऐप्डेसली एवं कीसत का प्रदेश । अपने विशेष कर्य में यह सिय-वार्ता की दह कता है लो युद्ध की सम्मादनापूर्ण राज्यीतिक व्यवस्था में न्यूनतन तामत से अधिकदन सामूरिक तस्यों की उपनयि कर सकें।" है स्व प्रतिन्य की उपलेखनीय बात यह है कि लोकप्रिय कर्य में राजनय को ऐसी सिय-वार्त माना गया है लो दवाव पर नहीं बच्च समझाने-दुष्टान पर कायातित रहती है। इसके दिश्लेष कर्य में राजनयाओं को राष्ट्रीय हित के प्रति निकायन माना गया है। राजनीतिसास्य में राजनय का लोकप्रिय कर्य लागू नहीं होता।

रास्टों रेमेला (Roberto Regala) के मतानुसार 'राजनय' शब्द का पर्यात दुरुपयोग हुआ है। असल में राजनय एक ऐसा व्यत्साय है जिन्सों क्रोक क्रियारी शानिल हो जनते हैं। यह दिनया के ऐसे हुच व्यत्सायों में से एक है जिसकी पारित में मानदीर क्रिया की प्रतिक शासा शानिल हो जाती है। इसका सम्बन्ध शांकि राजनीति (Power Poluzo), आर्थिक शक्ति एवं दिसारपाराओं के सार्थ से हैं। 'राजनय की मानक परिताश सर कर्नेस्ट तीचा दी गई है। 'राजने पर्यात को सरकारों के श्रेष अधिकारी सम्बन्ध के सरकारों के श्रेष अधिकारी सम्बन्धी के सार्थक में इंदि और सर्टाई हो।'

इस सम्बन्ध में पानर तथा पर्विस ने यह जिल्लासा प्रकट की है कि यदि राज्यों के आपसी सम्बन्धों में ब्रिटि और मातर्थ का अमृद है हो क्या राजनय असम्मव होगा।

स्एट है कि राज्यप में 3 कर राजुद में उनके दे हो पर प्रियंत्र करान है। हा स्वरं के स्प्य सिरत सस्या है, तहनुसार प्रत्येक राज्य दृद्धि कौरास एवं चातुर्य वा प्रयोग करात है। इसके द्वारा राज्य अपने राष्ट्रीय हिंदी की अधिकटन अनिवृद्धि करने का प्रयास करता है। के एन. ए⁻⁹कर के रास्त्रों में "अन्तर्राष्ट्रीय राज्यों ते में प्रयुक्त राज्यप अपने हिंदी को दूसरे देशों से अगे राखने की एक करता है। के पितन किता हिंदी को में एक करता है। के पितन किता हिंदी को में एक करता है। कि राज्यप करने हिंदी की प्रत्येत की प्रतिप्रियत राज्यपाती की प्रतिप्राध्य कर में परिस्तारित किया जा सकता है जिसके इसा जान्य शासिकाल में परस्यर सम्पर्क राखते हैं। "की एक स्वरंग का कहना है कि टकनीकी

अर्थ में राजनय की व्यवस्था सरकारों के बीच सम्पर्क के रूप में की जा सकती है। राजनय की उपर्यक्त सती प्रतिनवार पर्यक्त नहीं हैं क्योंकि सन्य कीर

प्रतिस्थितियों में प्रतिर्दित के साथ-साथ प्रतिनय का क्यें नी बदलता पहेटा है। उनेक 1 "Dyloman in the popular senier mean the employment of use, uthershore and skill am ingrounder or transaction, but he more special senie sende in treatment and indicates is the use of regression in order to achieve the maximum of group objective with a resurrantion of regression in order to achieve the maximum of group objective with a resurran-

Roberto Regula The Trend in Modern Diplomatic Prisonet, 1959, p. 24

 Diplomater as the application of artiflagence and tast to the conduct of official relations between the Government of independent States.

^{5 &}quot;Diplomato, wed to relation to externational polinics, in the an of forwarding one's material methods to other countries."
— K. W. Parkitive
6. "Diplomato, can be defined as the process of represervation and regionation by which starts."

^{6. &}quot;Diplomatic can be defined as the process of representation are regional of the section of the consumer of the section of t

लेखकों ने राजनय को केवल एक व्यवसाय (Profession) ही नहीं बरन एक कला (An) भी माना है। अधिकाँश सरकारे अपने हिलों की प्राप्ति एव अनिवृद्धि के लिए इसे अपनाने लगी है। यह भीरे धीरे शान्ति का एक प्रमावशाली साधन बनता जा रहा है।

राजनय को कुछ लोग एक रहरवपूर्ण व्यवसाय मानते हैं यह सड़ी नहीं है। एक राजनयड़ा के ही राब्दों में—"असल में राजनय एक श्रमसाच्य व्यवसाय है। यह जादू अच्छा रहस्य से परे हैं। इसे किसी भी अप्य सरकारी कार्य की मौति एक गम्मीर व्यवसाय के रूप में देखा जा सहला है।" प्री पामर तथा पर्सिस ने राजनय की निम्नालिखित विशेषताओं का सल्लेख किया है।

- (क) राजनय एक मशीन की भाँति अपने आप में नैतिक अथवा अनैतिक नहीं है। इसका मुख्य इसे प्रयोग करने वाले अभिप्रायों व योग्यताओं पर निर्मर करता है।
- (ख) राजनय का समातन निर्देशी कार्यालयों दूतावासों दूतकर्मी वाणिज्य दूतों एव विश्ववाराणी विशेष विश्वनों के माध्यम से किया जाता है।
- (ग) राजनम मूल रूप से द्विपशीय होता है। यह राष्ट्रों के मध्य सम्बन्धों का नियमन करता है।
- (प) आज अन्तर्राष्ट्रीय सम्पेतनी अन्तर्राष्ट्रीय सगठनी क्षेत्रीय प्रवन्तों एव सामूहिक सरक्षा प्रयासों के बढ जाने के कारण राजनय के बहुम्झीय रूप का महत्त्व बढ़ गया है।
 - (ह) राजन वर्ष जान के बीध साधारण मामलों से लेकर शान्ति और युद्ध जैसे बड़े बड़े
- सभी मामलों पर विधार करता है। जब यह सम्बन्ध टूट जाता है तो युद्ध या कम से कम एक बड़े सकट का खतरा पैदा हो जाता है।

क्या राजनय का अर्थ धोखा है ?

राजनय में गोपनीयता निहित है तथापि यह धारणा भ्रामक है कि राजनय का अर्थ पोखा है। इस सम्बन्ध में शेषक उदाहरणों के साथ डॉ एम पी शय ने स्वय्ट व्याख्या प्रस्तत की है²---

साजहरी शताब्दी के जिटिस पाजदूत द्वयुक और बिक प्रम स्वार हे निर्मे वाटन ने आस्तवर्ग (कार्मी) में क्रिस्टोक्टर एतंक्योर हारा प्रार्थना करने पर मजाक में दिखे गए इन सब्दी में पाजदूत का अर्थ बतावा था कि "पाजदूत एक सत्ववादी मनुष्य है किसे देवा के दित के दिए विशेष में अस्तव बोलने को मेजा जाता है।" इतातिक इसी व्यक्ति (सर हेनरी बाटन) ने बाद में इटन के अद्यक्ष के रूप में अपने एक नित्र शाजदूत को वार्ती के सफलता के दिए पामर्स देते हुए कहा था कि अपनी पुरशा तथा अपने देश की सेवा के तिए "एन समा और इर प्रीमिश्वति में सत्व बोलना पादिए।" पाजदूत अस्तव माश्य अपने देश के दिल करता है। रिसले इन तेवला पाय अपने देश के हिल करता है। रिसले इन तेवला मा इन इनरी बाटन की प्रियोग को दोशकों हुए यह कहा था कि सहस्वी शताब्दी में पाजदूत असने देश के दिल के लिए युठ बोलता था पर इन आपिक अमेरिकी राजदूत पुरो देशों के हित में युठ बोलता है। 'जैसन प्रथम पर अपने है के दिल के लिए युठ बोलता था पर का आपिक अमेरिकी राजदूत पुरो देशों के हित में युठ बोलता है।' जैसन प्रथम में

¹ Hugh Gibson The Road to Foreign Policy 1944 p 31 2 को एम पी पाय राजनय के सिद्धान्त एवं व्यवहार पृथ्व 6

^{3.4} DP Heathy D plomacy and the Study of International Relations p 8

⁵ Surley Huddleston Popular Diplomacy and War p 29

6 राजनय के सिद्धान्त

छसे तुरन्त ही त्यागपत्र देने को बच्च कर दिया। इसके पश्चन् दाटन को किर राज्यूत नियुक्त नहीं किया गया। जेन्स की मान्यता थी कि किसी नजुरू स्थित में एक झूठ देखेंने वाले राज्यूत का कोई सरकार केसे विश्वस करेंगे। बच्च ऐसी झूठ खेलने की स्थित में एक राजयूत सकतापूर्वक कार्य कर सकेगा? मैकियपेटी ने राजनय में झूठ और धोखें के प्रयोग का समर्थन किया था। उसका मत था कि "राज्य दिवा नैविकता से कपर है।" (Raushn d'Etai is above morality)। इसने अपने दूत को निर्देश दिए थे कि "यदि वे

जिसमें हास्य की मावना का अमीव था। दाटन के मजाक में कहे शब्दों का बरा माना और

के प्रयोग का समर्थन किया था। उसका मत था कि "राज्य दित नैतिकता से ऊपर है।"
(Raisin d'Etai is above morality)। इसने जपने दूत को निर्देश दिए थे कि "प्ति वे दूठ बोलते हैं तो तुम्हारा कर्ताया है कि दुम उससे जियक दूठ बोलों।" राजिलन, भेने सादेशों का योग्य शिष्य था। वह भी राजदृत होता झूठ और छस कमट के प्रयोग को स्वीकर करता था। किलीमसे का मत इसके दिपरीत है। वह इस बात को स्टीकार करने को तैयार नहीं

है कि राजनय का अर्थ पैस्ता है। बैलीन्स के हन्दों में ''राजनय में घें'खे-यकी का उपयोग वास्तद में सीनित रूप से ही सत्मन है। क्टोंकि प्रकार में आर झूठ के ममान कोई मी अनिशाप अधिक आस-ग्लानिकारक नहीं है। बार्ग को इससे लाग की अधेश हानि अधिक

होती है क्योंकि यहै सारकातिक रूप से इससे सञ्जला मले ही मिल जाए, किन्तु अनातीमचा इससे सन्देद का बातादरा बन जाता है जो मधी सङकरा को असम्य बनी वाहे हो। यह एक कहु सत्य है कि जो सम्बन्ध करियास से परिपूर्ण होते हैं, दे बजन मूल्य जो देते हैं। एक योग्य, सकत एव आवर्ष पारण्य का सर्वोब्ब गुन हमानवारी और सम्बन्ध है। राजन्य का कायर वस संदेश पितृ हो हिए प्रामाणिक है होने याहिए। किस्पर्ट के एक स्वत्यों को इतो पार्टिए हो कि एक स्वत्यों को अनाए एको की एक करना है। इसी के मध्य मन्दर्भ को अनाए एको की एक करना है। इसी के मध्यम से राज्य अपने अमसी सरकारी कार्यों को पूर्व रूपा शासिस्तुर्ण सम्बन्ध का सरकारी के लिए राज्य सर्वा, सम्बन्ध कर कर कर स्वा के लिए राज्य सर्वा, सम्बन्ध कर कर स्व एक राजी के लिए राज्य सर्वा, सम्बन्ध कर कर सरकारी के लिए राज्य सर्वा, सम्बन्ध कर कर सरकार कर सरकार सरकार

को कान में लिया जाता है। एक राज्य राजनियक युन्तियों (Diplomatic manereting) के मध्यम से दूसरे राज्य की राजनीतिक, नार्नेडिवानिक, यहाँ तक कि हैनिक कार्यवाहियों में सहायक क्यरा दिल्यों हो सकता है। इस प्रकार राजनय रह बस्त्र है जिसकी सहायता से न केदत कार्याण्ड्रीय सतस्याओं का शान्तिपूर्ण समध्यन निकाल जाता है। यहने पाष्ट्रीय शक्ति की अनिजृद्धि मी की जाती है।

राजनय और दिदेश नीति तथा अन्तर्राष्ट्रीय कानून (Diplomacy & Foreign Policy & International Law) जनय का स्टतप सन्द्रने के लिए यह भी आदरयक है कि हन दिदेश नीति

राजनय का स्रवेत सन्द्रने के लिए यह नी आदरयक है कि हम दिदेश नीते, अन्तर्राष्ट्रीय कानून, दिहान आदि से सस्के सम्बन्ध दथा अन्दर का अध्ययन करें । राजनय

- Handd Nicholson The Evaluation of Diplomatic Method, p. 29
 Norman D Palma & Howard C Parlian International Relations The World Community of Treatment, p. 8
- 3 Archolson Op cal., p. 62-63
- 4 डॉस्नग्रीस्य स्टीमुहे

और विदेश नीति पर अध्याय 13 और राजनय तथा अन्तर्राष्ट्रीय का रून पर अध्याय 7 मे पृथक से विचार किया गया है अत यहाँ सौकेतिक विवेधना पर्याप्त होता ।

अनेक विचारक और लेखक मनमाने रूप से 'राजनय शब्द-का प्रयोग विदेश नीति बनाने और क्रियान्पित करने के लिए करते हैं जो अनुधित है। विदेश मीति और राजनय राष्ट्र की बाह्य व्यवस्थाओं से सम्बन्धित नीति के वे पहिंचे हैं जिनकी सहायता से अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति चलती है लेकिन दोनों एक दूसरे के पर्याय नहीं है। राजनय किसी भी देश की विदेश नीति को कार्यान्तित करने की प्रक्रिया और विदेश नीति के लक्ष्यों की प्राप्ति का साघन मात्र है। सर विकटर वेलेजली (Sir Victor Wellesley) के कथनान्सार "राजनय नीति नहीं है वरन इसे क्रियान्वित करने वाला अधिकरण है। दोनों एक दूसरे के परक हैं क्योंकि एक के बिना दूसरा कार्य नहीं कर सकता। राजनय का विदेश नीति से प्रथक कोई अस्तित्व नहीं है बरन ये दोनों मितकर कार्यपालिका की नीति निर्धारि करते हैं। विदेश नीति द्वारा रणनीति तय की जाती है और कुटनीति द्वारा तकनीके तय की जाती है।¹ विदेश नीति वैदेशिक सम्बन्धों की आत्मा है और राजनय वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा दिदेश नीति को सचालित किया जाता है। राजनयझाँ द्वारा अपनी सरकारों की विदेश नीति के सिद्धान्त निर्पारित नहीं किए जाते किन्तु वे अपने प्रतिवेदनों द्वारा इस नीति की रचना में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं। विदेश नीति तय करते समय राजनयूत्रों के प्रतिवेदनों को सदैव ही मत्यवान कच्या माल समझा जाता है। यामर तथा परिकन्स के कथनानसार "राजनय यह सेवी वर्ग और यन्त्र प्रस्तृत करता है जिसके हाश विदेश नीति को क्रियान्त्रित किया जाता है। इनमें एक मूल तत्व है और दूसरा प्रणाली है।"3

हेरल्ड निकल्सन ने दियना काँग्रेस सन्यन्धी अपनी रचना विदेश नीति एवं राजनय के मध्य स्थित सम्बन्ध पर प्रकाश ढाला है । उनके मतानसार दोनों का सम्बन्ध राष्ट्रीय हितों का अन्तर्राष्ट्रीय हिताँ के साथ समायोजन से हैं । विदेश नीति राष्ट्रीय आवश्यकताओं की एक सामान्य धारणा पर निर्मर है। दसरी ओर राजनय एक लक्ष्य नहीं है वरन साधन है अदेश्य नहीं है बरन एक तरीका है। यह बढिं समझौता वार्ता एवं हितों के आदान प्रदान द्वारा सम्प्रम राज्यों के बीच संघर्ष होने से रोकता है। यह एक ऐसा अधिकरण है जिसके महत्यम से विदेश नीति युद्ध के अलावा अन्य साधनों से अपना लक्ष्य प्राप्त करने का प्रयास कपती है। राजनय शान्ति का साधन है। जब समझौता करना असम्भव बन जाता है तो राजनय निष्मय बन जाती है और अकेली विदेश नीति कार्यरत रहती है। विषयंक्त विवेयन के अच्चार पर यह कहा जा सकता है कि विदेश नीति और राजन्य को समानार्थी रूप मे समझना गलत है। इन दोनों में आधारमूत अन्तर है। जहाँ विदेशनीति साध्य है राजनय प्रसका साधन है। लेकिन दोनों में आपस में विरोध की स्थिति नहीं है अपित एक दसरे के परक हैं।

¹ Sir Victor Wellesley D plomacy in Fetters p 30 2 J Rives Childs American Foreign Service p 9

³ Palmer and Perkins International Relations p. 97

⁴ Harold Nucolson The Congress of Vienna A Study in Allied Unity 1812 22 p 164

राजनय और अन्तर्राष्ट्रीय कानून (Diplomacy and International Law)

राज्यय और अन्तर्राष्ट्रीय कानून के बीव महत्वपूर्ण सत्य है। राज्यय वा सन्ध्य उन तरीकों एव कला कौशत से हैं जो एक राज्य द्वारा उपनी दिदेश नीति को क्रियन्दित करते त्या अपने अन्य राष्ट्रीय हितों की प्रार्थित के लिए अपनाए जो हैं। अन्तर्राष्ट्रीय कनून राज्यों के आपसी सम्बन्धों को नियन्तित करता है। सैद्धानिक रूप से ये दोनों एक दूनरे के दिपतीत है। राज्यय दिशुद्ध रूप से एक राज्य के राष्ट्रीय हितों की अनिहंदि का सपन है। इसके दिपरीत अन्तर्राष्ट्रीय कानून राष्ट्रीय हितों की उपनिदंध कानूनी व्यवस्था को महत्व देता है। यदि सभी राज्य अपने राष्ट्रीय हितों की उपनिद्धी के तिए पूर्णत राज्यन का प्रयोग करें लो अराजकला की नियति उपनय हो जसफलता की पेमचा है। इस अर्थ में राज्यय अन्तर्राष्ट्रीय वानून को कुछ सम्मान देता है ताकि अन्तर्राष्ट्रीय ज्यानू में व्यवस्था बनी रहे और राज्यय क्रियमील रह सके। अन्तर्राष्ट्रीय कानून के कुछ मीलिक नियमों का पालन करने पर रोगी प्रतिथिति बनशी है जिसमें राज्यय कार्य वर सक्त है वा अन्तर्राष्ट्रीय वानून द्वारा राज्यों के बीच जब पारस्पर्शित्य विश्वर पिका है तमी राज्यय का अन्तर संस्था का पाल्य सम्पद बनल है। रप्पूर्ण के मैच अपसी दिशेर पिका दिश्वस के अनव में युद्ध, शीत युद्ध अपया तत्या की सियनि दनी रहती है।

राज्यिक अधिक रियों के विदेशधिकार और उन्नुक्तियाँ अन्तर्राष्ट्रीय कानून के विश्य हैं। अप्रत्य को व्यवस्था (Order of Precedence) तथा राजन्यिक अधिकारियाँ की श्रेनियाँ अन्तर्राष्ट्रीय कानून द्वारा तथा की जाती हैं। राजन्य द्वारा राज्यों के आत्मी सम्बन्धी को सुपरने के तरीकों एव सिद्धान्ती पर विदार हिंगा किया जाता है। सतुक्त राष्ट्रतया जैसे अन्तर्राष्ट्रीय सगठन अन्तर्राष्ट्रीय कानून के विषय हैं किन्नु सदुक्त राष्ट्र साथ में सदस्य राज्यों के प्रतिनिधि जिस तरह से अधरण करते हैं वह राजन्य का विश्य हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय बानून राजनय के सधन के तथ में भी उपयोगी है। यह राजनियक रखतें की उपलिय के लिए साध्य प्रस्तुत करता है। गुजनुषाई (Diplomats) के लिए सामन्य साभ प्रक्रिया सामन्यी मुचिया सहान्यों पुत्राने कर रहेके दिवाद तथ करने तथा समझ्या रूरने के मध्यावों अदि दी आवश्यकता रहती है जो उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय कानून हारा उपलय कराए जो है। इनके होने से सचिय दार्ग सुगन वन जाती है। सनिय दार्ग दी प्रक्रिया और रूप में अन्तर्राष्ट्रीय बानून हारा तथा किए जाते हैं। राजन्य के दिश्य बोग प्राच करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय कानून पर अग्यरित हुई प्रस्तुत किए जाते हैं।

जर राज्य अर्क्स्य विद्या दिवारी को तय करने का प्रधास करती है दो अस्तर्राष्ट्रीय कार्युन अर्कक प्रकार से उसका सहस्यक तिद्ध होता है। अस्तर्राष्ट्रीय दिवारों को तय करने के समी तरीकों में अस्तर्राष्ट्रीय कार्युन के नियमों का अनुगनन किया जाता है। कुल निल्कर यह कहा जा सकता है कि अस्तर्राष्ट्रीय कार्युन राज्य का एक अरत्यत उपयोगी समा है। यह एक दृष्टि से राज्यय का परिचाम मी है। अस्तर्राष्ट्रीय कार्युन का अधिकार मारा रिवर्ण पर अध्यक्षित है। यह एक स्थान विद्या कार्युन का अधिकार मारा रिवर्ण पर अध्यक्षित है। यह राज्यय का परिचाम मी है। अस्तर्राष्ट्रीय कार्युन का अधिकार मारा रिवर्ण पर अध्यक्षित है। यह राज्यय हारा की गई सचि वर्ष्ट्रों एक समझैत वर्ष्ट्रों (Conference Diplomacy) के निर्मय अस्तर्राष्ट्रीय कार्युन के सामान्यन, स्वकृत नियम

बन जाते हैं । राजनियक पत्र व्यवहारों एवं औपचारिक घोषणाओं द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय कानून का विकास किया जाता है । स्पष्ट है कि ये दोनों एक-दूसरे के सहायक हैं !

राजनयिक रणनीति (Dinlomatic Strategy)

प्रतंक देश का राजकीरीक मेतृत्व अपनी सरकार की विदेश-मीति की सामान्य रूपरेखा का निर्धारण करना है। इस मीति का निर्धाजन करते समय इसके द्वारा राजनीयक रणनीति में मी तीयार की जाती है जिता विदेश मीति को अधिक प्रमावशास्त्री बनाया जा सके । इस प्रकार एक देश की विदेश-मीति एव राजनीयक रणनीति मेरी मित्र स्वार्थ है। देशों मेरू कर्न्य हैं ये देशों के स्वर्ध की सूरक हैं। दोनों के मध्य अन्तर को स्वरू करते हुए डॉ ए कीसिगर (Dr. A Kunger) तिखते हैं—"सानित को सीते रूप से प्राप्त नहीं किया जा सकता। यह कुछ परिस्थितियों ए शक्ति-सम्बन्धों की अभियाति हैं। अस राजनाय को शानित को अध्याति हैं। असे स्वरूप को शानित करने के लिए दिदेश-मीति अनार्राष्ट्रीय कानून और राजनीयक रणनीति से उसके सबस्य को उस्त जानकारी अस्वराष्ट्रीय कानून और राजनीयक रणनीति से उसके सबस्य को परिस्थितियों में परिस्वर्तन एव नवीन विकासों के साथ-साथ इसके स्वरूप भी बदलता पहला है। यह एक विकासानित पारणा है। विदेश नीति की सकलता में राजनियक रणनीति को अहम मूनिका सीत है।

राजनय और विज्ञान (Diplomacy and Science)

विज्ञान और तकनीकी ने अनार्श-ट्रीय सम्बन्धें और राज्यसित्य को गहराई तक प्रमादित किया है और राजनय के स्वरूप पर भी इतना प्रमाव काता है कि उसका परम्पपास स्वरूप त्यामय समादा सा हो गया है। विज्ञान और तकनीकी के कारण समय और दूरी समाद्य हो गए है स्वराद व्यवस्था में उजति के कलस्वरूप राजनय पर प्रजातन्त्रीय प्रमाव बढ़ा है और बहुस्थीय राजनय अधिक प्रस्त रूप से मुखर हुआ है। विज्ञान और तकनीकी ने पाजनय को जिस कप में प्रमावित किया है और बदलते हुए परिक्रेय में राजनय और विज्ञान का जो निकट सम्बर्ध आयरका है पने इंगित करते हुए और प्रमाव पाय ने तिवा है

"यह निर्दिवाद सत्य है कि सम्राट के क्रान्तिकारी विकास ने राजनय की तकनीकी में अद्भुत परिवर्तन ला दिए हैं। राजनय की ये परिकृत सकनीके विकास न प्राविधिकी के समानुवाद में उत्तरोत्तर परिवर्धार्जित के रही हैं। राजदूर्ती के आवागमन तथा उनके मध्यावरों में पहले महीने और साल लगते थे, परन्तु आज ये हणिक बन गए हैं। "सम्राट प्यवस्यां के क्रान्तिकारी परिवर्त—चैट युग एथा दूर सम्राट प्यवस्यां के कारण निर्मय प्रक्रियां के क्रान्तिकारी परिवर्तन—चैट युग एथा दूर सम्राट प्यवस्या के कारण निर्मय प्रक्रियां में प्रमादित होकर केन्द्रित हो गई है। अधिकार महत्वपूर्ण निर्मय राष्ट्राच्यत विदेश मनी आदि

For detailed study of relationship between diplomacy and international law, see Quincy Wright International Law and the United Nations 1960, p. 362

² Dr A Kuunger Reflections on American Diplomacy, Foreign Affairs Oct, 1956

³ को एम पी साथ बडी. पू 24

⁴ Merchant Johnson Dunennons p 121

रा ननय के सिद्धान्त

लेते हैं प्रतिदेदनों को शीध प्राप्त कर सकते हैं और दिख्यपायी घटनाओं की तुरना सूचना प्राप्त कर देश की दिदेश नीति के निर्माण में सही मार्गदर्शन दे सकते हैं। विज्ञान ने आगदिक स्थियपों का दिकास किया है जो दिश्व शान्ति के लिए घतक सिद्ध हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में दिश्व शाति को कायन रखने में राजनिय्कों की मूनिका बहुत ही महस्दर्मी इन गई है।

राजनय का जन्म या उदय (Origin of Diplomacy)

दो मनव समूहों के सम्बन्धों के व्यवस्थित आदरा के रूप में राजना का इरिहास इतिहास से मी पूराना है। इसकी परमार हैं मार्गिक मिक करते के उस व्यवस्थार मूर्त है। 16दी इराजी के माराम होती हैं किताका बान केवस करता और अनुमान पर निर्माद है। 16दी इराज्यों के सिद्धानदादी यह मानते थे कि देददूत (Angels) ही प्रथम राजनयन थे क्योंक दे देवलें क और मूर्लें के के पेय सदेशताहकों का कार्य करती थे। मारामिय पीपीक प्रयोग में उस्ति किता नरद को राजनपढ़ों का पूर्वन माना जा सकता है। इन करनाओं दे पीक कोई ऐरिक लिक रूप्य न होने के करना ये निरायर हैं और इसलिए मान्य नहीं हैं।

दैइ 'निक दृष्टि से अनुनन है कि राजनाय का जन्म तह हुआ जह मनुष्य ने अकेले मटकना एं डकर समूर्ते अध्या गिराहें में मितकर एहना प्रत्म किया है गा । देन जार मानत समूर्ते के सत्यये तो एक सनय यह समूर्त आ गाई कि यदि वे आपने शिकर की संगत है में कि सत्यों को एक सनय यह समझ्रेता कर से तो लाम्प्रद रहेगा ! टक्कालिन गिराहें के बीच आसारी दिवद और राष्ट्रमार्थ निप्तरों कि दी हैं गी ! इनके निराकता निर्मा वे के दिव आसारी दिवद को राष्ट्रमार्थ निप्तरों की हितद तो करते हैं गी ! इनके निराकता कि लिए वे यदान्वता सीय वर्षा या दोनों पर्यों की हितद तो करते हों गी ! इनके निराकता समूर्य गई हैंगे कि यदि देशें पाय के दूर्व के निप्तर मानत हुआ हेगा ! है 'गा है ये आदि मानत समझ गए हैंगे कि यदि दिश्यों पर्य के दूर्व को अपनी सीना में आते हैं मर दिया गया तो सीय वर्ष्य सर्वे कि यदि दिश्यों पर के दूर्व के उपनी सीना में आते हैं मर दिया गया तो सीय वर्ष्य सर्वे के के देशें की मान हैंगा है गई में कि यह देशें के प्रति वर्ष्य के प्रति हों के अदि वर्षय हों पर पाय हो सा प्रत्य पर पर स्वा प्रति हों के अदि वर्षय हों मान के मान के प्रवेश के मान के प्रवेश के मान के प्रयोग के साथ के प्रवेश में हम स्व करने अनु वर्षये के जनके प्रमा नेन का अदिश दिव्य हों दिव्य हमने पर हों सीने के मान के अदिश ती से निर्मा में इसे नीने दिर्पी बटते हुए कहर-

नइ सीस करि दिनय बहुता। नैकि दिरोध न मारिय दूता॥ अन दाङ कछु करिअ गोसाँई। सबहीं कहा मत्र मत माई॥

(रमदरिव मानस, सन्दर का-८ 23)

^{1 &}quot;From the earliest days of the existence of organised states there must have been diplomacy and diplomacs for status can hardly exist without relations with each other."

समय के सन्ध-सन्ध दौरव पद के विभिन्न अधिकार बढते गए । दूताँ एव सन्धिकर्ताओं को अनतिक्रम्य माना जाने लगा ।

आदिकालीन समाजों में सभी विदेशियों को खतरनाक तथा दक्षित माना जाता था अत अन्य समाज की सीमा में प्रदेश पाने से पूर्व उसका विभिन्न प्रक्रियाओं द्वारा शक्किरण कर दिया जाता था । ये प्रक्रियाएँ अत्यन्त विधित्र और कष्टदायक हुआ करती थीं जैसे अग्नि की लपटों में होकर निकलना या नाधना जाद टोने से शुद्धि करना आदि । इस परम्परा के अवशेष कुछ समय पूर्व हाक प्राप्त होते हैं। 15वीं शताब्दी में वेनिस गणराज्य ने सन स्वदेशवासियों को मत्य की धमकी दी जो विदेशी दलावासों के साथ किसी प्रकार का सन्पर्क रखते थे । शुद्धिक्रिया की डाझटों तथा कच्टों से बचाने के लिए युनान में दतों का देवता हरमेश (Hermes) के सरक्षण में माना जाने लगा और इस प्रकार दौत्यकर्म को धर्म का भोगा पहना दिया गया। धार्मिक मावना के प्रमाव से दत का व्यक्तित्व रक्षणीय एवं अनतिक्रम्य बन गया । प्रो ओपेनहीम के कथनानुसार "पुरातन काल में भी जबकि अन्तर्राष्ट्रीय विधि जैसी किसी दिधि का पता नहीं था राजदूतों की विशेष रक्षा की जाती थी तथा उन्हें जता किया विधा को पता नहां था। राजडूता का ावस्त रहा। का जाता था। साथ उन्ह विदेशाधिकार प्राप्त थे। ये उन्हें किती विधि के कारण प्राप्त थे और राजदुतों को अनिकित्तम्य माना जाता था। ¹¹ दौत्यकर्म की प्रतिक्वा के दिख्र दुनों को हरमेत देवता का सरदाज दुर्गाय्यासी विद्ध हुआ। ² दूत को छल्तूर्ण वस्त्रस्त जाने लगा क्वीक हरमेस अपनी धालाकी तथा छल्लप्न के लिए प्रसिद्ध था। श्रीकासिक कार्स में राजनय का जन्म यरोप में आधुनिक राज्यों के जन्म से सम्बन्ध है। विंती शताब्दी से लेकर 18वीं शताब्दी के बीच आपुनिक राष्ट्रीय-राज्यों का विकास हुआ इनके साथ-साथ राजनय भी आधनिक अर्थ में विकसित रूआ । तच्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि एक व्यवसाय के रूप में राजनय का प्रारम्भ तथा स्थापी राजदतों एवं मन्त्रियों की नियन्ति पन्दहर्शी शताब्दी के अन्तिम दिनों में होने लगी थी । 1815 की विधना काँग्रेस में राजनय को दूसरे व्यवसायों की भीति एक पृथक व्यवसाय की मान्यता दे दी गई। आज की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति तो राजनय से परिपूर्ण है और विश्व स्तर पर सभी छोटे-बड़े राज्यों द्वारा विभिन्न दतावासों भिशनों कान्सलेटों आदि की स्थापना की जाती है। ये सस्याएँ कछ निश्चित नियमों रुढियों और अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों द्वारा नियन्त्रित और नियमित होती हैं।

राजनय का विकास (Development of Diplomacy)

राजनय के दो अग हैं—राजनियक आचार (Diplomatic Practice) तथा राजनियक सिद्धान्त (Diplomatic Theory) ! दोनों एक-दूसरे को प्रमावित करते हैं ! नए राजनियक

¹ L. Oppenheum International Law, p 687

The choice of this duty had an informate effect upon the subsequent repute of the diplomatic service
 Honoral historian
 From the earliest days of the existence of organised states there must have been diplomate.

and diplomats for states can hardly exist without relation with each other "

—K M Panikkar

^{4 &}quot;Diplomacy and its ongun in the period in which modern states emerged in Europe that is the period from the 16th to the 18th century." — Roberto Regala

आवारों से राजनीयक तिद्धानों का कलेदर बदता है और नए राजनीयक तिद्धान्त राजनादतों के आवार को प्रेरना एव मार्गदरान देते हैं। यहाँ हन राजनीयक तिद्धान्त के क्रिनेक दिकास का दिदेवन करेगे। इसके आधार का अध्ययन हमारे अगते अध्याय का विषय है।

राजनिक सिद्धान्त का त्यार्य अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार तथा सन्धि दार्ता के सिद्धान्ती एवं तरीकों के स्वीकृत दिवार से हैं । राजनिक सिद्धान्त के अतीरकालीन इविहास का अव्ययन करने से इन्त होता है कि उसके दिकास की गाँत होता प्राप्ती की और नहीं रही है। अनेक बार इसका दिवास अदरुद्ध हो जाता है तथा वह अदनित की और भी अप्रसर होने तमाती है। प्री मोदेट ने यूरोपीय राजनिक सिद्धान्त के दिकास को तीन कार्ती में वर्षाकृत किया है—

- (क) 476 से 1475 ई वक का कात : इस वाल में राजनय ्रीप्येग असगठित या।
 - (स) 1476 से 1914 ई. तक का काल : इस काल में राज्यनिक तिद्वाल ने यूरोपीय राज्य व्यवस्था (State System) की नीनि का अनुसरन किया । इस समय का राजनय यूरोप तक ही सीनित रहा ।
 - (ग) 1914 से दर्तमान तक का कात : राष्ट्रपति दुढरो दिल्तन ने रूपनी घेषणा में कहा था कि ससार में प्रण्यन्त्र का उदय हो गया है । फलट इस युग में दिकमित राजनय को प्रजातन्त्रत्मक राजनय कहा गया ।

हेल्ल निकल्पन कार्य कुछ दिवाक राजनीयक सिद्धान्त के दिवान को इस प्रकार वालक्षमों में दिन जित करने से सहनत नहीं है। वे इसके दिवास को निरन्तारमूर्ण मनते हैं। राजनीयक सिद्धान्त का दिवास अन्तर्राष्ट्रीय वानुन से बाड़ी प्रमादित रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय वानुन वा जमदान होंगे क निराती हुयो प्रीयस्त (Hugo Groous) था। इसने 1625 वें प्रकारत असने प्रमा 'The Law of War and Peace' में अनतर्राष्ट्रीय वानुन वा सम्बक्त दिवेदन प्रस्तुत दिया है। सनते अनतर्राष्ट्रीय कानुन को परिमास में सन सभी कादरमों को सम्मिन्त दिया जिनका पालन सम्य सम्द्र पारस्वरिक व्यवहार में करते हैं। इस प्रवार राजनय भी इसका खम बन जाता है।

प्राप्तिहासिक काल में चारत्रिक विद्वान्त के दिकास के सम्बन्ध में बनुवान है कि प्रत्म में व्यक्ति पर विद्वान्त पान सह सम्बन्ध ने जाने करवा गिरोह के विद्वान्त के स्थान नहीं पढ़ा था। इनक्क प्रतिकितियों बदल्वे पर दावके सहीने दृष्टिकोन में प्रतिकृतियाँ विद्वान्त के साम के सहीने दृष्टिकोन में प्रतिकृतियाँ विद्वान्त के प्रतिकृतियाँ विद्वान्त के प्रतान के विद्वान्त के विद्वान्त के विद्वान्त के प्रतान के विद्वान्त के प्रतान के विद्वान्त के क्यान के विद्वान्त के क्यान के विद्वान्त के क्यान कुत्वन क्यान के विद्वान्त के क्यान कुत्वन क्यान के विद्वान्त के क्यान कुत्वन क्यान क्यान के विद्वान्त के क्यान क

हुँई हैं।" राजनियक सिद्धान्त के विकास का अध्ययन निम्नलिखित कालों के अन्तर्गत किया जा सकता है...

(1) यूनानी काल (The Greek Period) राजनिक सिद्धान्त के विकास में यूनान करवापूर्ण योगदान रहा है। आजवल प्रयक्ति सम्मेदली का श्रीगणेस यूनामित्रों हाल किया गया। यूनानी नगर राज्य अपनी पारस्वरिक समस्याओं के समाधान के लिए सम्मेदल किया करते थे। शैरावी शताब्दी के राष्ट्रसाथ तथा सयुक्तगण्ट्र साद की भौति है पारस्वरिक सम्मेदल किया करते थे। दिशको एक्किक्ट्यानिक (Amphusytonic) अर्थान् केत्रीय परिषद्

यूनान के इन शेत्रीय सम्मेलनों का स्वरूप पल्लेखनीय था। वनका एक स्थायी स्थितात्व होता था। इसका कार्य था पवित्र स्थापी एक कोचें भी रहा करना, तीर्म्याविद्यों के आवागमन की सुविधाननक व्यवस्था करना तार्म्य विनित्र नगर राज्यों के राजनीतिक मानलों पर विधार विमर्श एक आवश्यक कार्यवादी करना। निकल्सन के कम्पनानुतार इन्में राजनां के होत्र में एक मई पद्धित का भीगनेग हुआ । इन सम्मेलनों को कुछ रिशेशाधिकार प्रदान किए जाते थे जिनको वर्षाना मानमा ने राज्य वेजावी अधिकार अध्या राजनीविक विशेशाधिकार करा जा सकता है। है। सम्मेलन के सहस्य स्थाय क्या इस तान राजनीविक विशेशाधिकार करा जा सावका है। सम्मेलन के सहस्य स्थाय क्या इस तान राजनीविक विशेशाधिकार करा जा सावका है। सम्मेलन के सहस्य स्थाय कर इस हम उन्हें करेग तथा उत्तर्थ करायों में किसी प्रकार की कावद नहीं बतलेगा। इस सम्बति के किरद कार्य करने बाता राज्य शेष स्थाय राजनीविक विव्यवस्थ करने वाता राज्य शेष सम्पर्ध राज्य की स्था हम तथा हो। इस सम्बति के विरुद्ध कार्य करने के लिए युद्ध की प्रोचमा कर देते थे। यूनारी इतिहास में नेशीय परिचर्च की एक्सत्यक कर्यवादी के अनेक वदाहरण मितते हैं। इन संजीय परिचर्चों में अन्तर्राष्ट्रीय कार्यून एवं सामान्य अन्दर्शन्द्रीय हितों की परच्या को विकतित किया। अब राजनियक रिद्धाना करमा उपरने रागा था।

यूनानी दोत्रीय परिषदे अन्त में असफत होकर समाच हो गई। इनकी असफतता के दो कारण थे (क) ये परिषदे सर्वयापी नहीं थी। अनेक मस्त्वपूर्ण राज्य इनके सदस्य नहीं थे। (य) उनकी संयुक्त सांक इतनी नहीं थी कि ये शक्तिशाली राज्यों को अपने निर्मयों का पातन करने के तिए बाध्य कर पाती। इन परिषदें के असफतना से राष्ट्रसाय (League of Nations) के कर्णपारी ने प्रेरणा नहीं ती अन्यया इतिहास सायद स्वया की न दोहाता।

यूनानीकाल में राजनय की दृष्टि से एक अन्य महत्वपूर्ण तथ्य प्यानिर्मय (Arbursuon) की व्यवस्था थी। वे अपने अन्तर्ग्रहीय विवारों को तथ करने के लिए इस शानिरपूर्ण सायन को अपनाते थे। राजा आर्थिक्सन ने स्पार्टा की साम में देश गए अपने एक लम्बे और मगीर माचन में पय निर्मय की पढ़ति अपनाने पर जोर दिया था। उसके मतानुसार जो देश पय निर्मय के लिए रीयार हो उसे दोनी कहना विधे के विरुद्ध है।

important diplomatic function and introduced an important d plomatic innovation

¹ The progress of dipl smatic throw has been from the narrow core epison of exclusive tribal rights to the wider conception of inclusive common interests.

— Nicolson

They also dealt with the pullutal matters of common filelians tracest and as such had an

14 राजनय के सिद्धान्त

इस प्रकार सिद्धान्त और आदर्श के रूप ने यूनानियों की कल्पना ने राजनय के दिकास को आगे बढाया किन्तु तदनुसार व्यवहार न करने के कारण यह दिकास अवरुद्ध हो गया । शान्तिपूर्ण सहयोग की भावनाएँ समाप्त हो गईं। उसके ऊपर आक्रामक एद भावनाओं का प्रमुत स्थापित हो गया । मैसीडोनिया के महत्याकाँकी सिकन्दर महान् ने नगर-राज्यों को इतिहास की गाया बना दिया। "सहयोग का स्थान पराधीनता ने से तिया और स्वतन्त्रता समाप्त हो गईं।"

- (2) रोमन काल (The Roman Period) : हेरल्ड निकल्सन के कथनानुसार राजनिक सिद्धान्त के क्षेत्र में रोमन लोगों का योगदान बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने छल और चपलता का स्थान आजापालन एवं संगठन को दिया तथा अराजकता की जगह शान्ति का पाठ पदाया । तेकिन अन्य विचारक इस मत से सहमत नहीं हैं । सैदान्तिक क्षेत्र में रोमदालों की देन का सम्बन्ध अन्तर्राष्ट्रीय विधि से हैं राजनियक सिद्धान्त से नहीं ! रोमन साम्राज्य ने सैनिक शक्ति के आधार पर व्यवस्था अनुशासन आज्ञापालन शान्ति और सगतन की भाउना स्थापित की थी। इससे राजनियक सिद्धान्त के लिए कोई स्थायी लाम प्राप्त नहीं हो सका । इसके विपरीत साम्राज्यवादी मनोवृत्ति ने उस समय स्वस्थ राजनयिक सिद्धान्त की प्रगति पर रोक लगा दी तथा ससे आगे नहीं बदने दिया । हैरल्ड निकल्सन ने रोमन-काल को राजनियक सिद्धान्त के विकास में सहायक इसलिए माना है क्योंकि वे पीछे हटने को भी विकास मानते हैं।² सब तो यह है कि रोमवालों ने स्वतन्त्रता और समानता के अधार पर विकसित होने वाले राष्ट्रीय राज्यों का दमन किया तथा उन्हें अपनी विस्तारवादी नीति में आत्मसात् कर दिया । रोमन साम्राज्य पूर्ण रूप से शक्ति पर आयारित था अत पडोसी राज्य इसकी शक्ति से निरन्तर भयमीत रहते थे । इस प्रकार रोमनकाल में राजनिक सिद्धान्त का अधिक विकास नहीं हो सका। इस काल की मख्य देन अन्तर्राष्ट्रीय कानन के क्षेत्र में है।
 - (3) बाइजेंटाइन साम्राज्य काल (The Byzantine Empire Period): इस साम्राज्य के चारों और असन्य हमा बर्दर जातियों रहती थीं अत. यह केवल सैन्य शांकि पर मरोसा करने नहीं रह सकता था। अपनी सुरक्षा के लिए चसने कई तरीके अपनाए। वह बर्दर जातियों को आपस में लड़ाता था कुछ को प्रलोगन देकर कपनी और मिला लेता था और ईसाई थर्म का प्रचार करके विरोध के आधार को निटा देवा था। ये सद तरीके अतिक थे। इस प्रकार कराति के हिरस्क निकल्सन लिखते हैं कि राजन्य की नैतिकता एत सहयोग की मावनाओं का अन्त हो गया तथा इसके स्थान पर अनैतिकता, छत-करण्ट और दिस्मात्मक मावनाओं का प्रमाव बंदा। राज्यों के आपसी सम्बन्धों की ईमानदारी और पविज्ञता समाप्त हो गई स्था कुटनीतिक व्यवहार का विकास हुआ। लात्म फूट दुराप्रह सोखेडाओं आदि दर्गमां राजनीकिक सम्बन्धों के आपसा बना था।

1 Harold Nicolson Diplomacy, p. 42.

2. The word evolution is not intended to suggest a continuous progression from the rudimentary to efficient. On the contrary, I hope to show that international intercourse has always been subject to straing entrogressions." — Harold Nucolson

 [&]quot;Diploruscy became the stimulant rather than annuode to the greed and folly of markind instead of co-operation, you had dismagnition, instead of unity disruption instead of nearly you had a stuteness in the place of moral principles you had in opinity "Harold Nicolson" — Harold Nicolson

(4) मध्य युग (The Middle Ages) मध्यकातीन यूरोप में सामनावादी व्यवस्था का बोतवाता था। इस सामनावादी व्यवस्था में निरनार युद्ध होते रहते थे। निरनार युद्ध के रिवारी में रहने के कारण यूरोप के राज्य अब शक्ति के लिए तरसने लगे थे। इसके अरितिक राष्ट्रों के चीप बढते हुए वाणिज्य व्यापार के कारण शानिपूर्ण सम्बन्धों का कायम रहना अनिवार्ष हो गया था।

भध्ययुग में राजनय के सम्बन्ध में पाँध सिद्धान्त प्रतिपादित किए गए

(i) संगी राष्ट्र एक परिवार के सदस्य है 1 (n) यह परिवार एक कानून या नियम हात संवादित होता है जो सभी सदस्यों पर पारपरिश्ता के कारण लागू होता है अपर से सोपा नहीं जाता (10) ध्यावरा में इस विधि को सारतव में क्रियोशित किया जाता है । (iv) सदस्यों के आरसी मनमुदाब ययासमब शानित पूर्वक सुनक्षाये जाते हैं । यह समी शांतिपूर्ण प्रमास असफल हो जाएँ तो युद्ध को सम्माबना बढ जाती है । (v) राजनव प्रकट रपट राया प्रजानवार्शक होना पारिट ।

मध्यकातीन राजनम् अनैतिकता और छलकषट से परिपूर्ण था क्योंकि यूरोप ने इसे इटली के नगर राज्यों के मध्यम से बाइजेंटाइन साम्राज्य से प्राप्त किया था। निम्नतिखित कारणों ने इसमें योगदान टिया

- (क) इस समय के राजनराह प्राप्त कर सा से निम्मतरीय एवं अमेरिक कुटनीति का अपना करते थे। दूसरे देसां में दिहीह को आग महकाना वहाँ के आचारिक मामतों में हरतारीय करना दिदेशी समावदों को रिस्त देकर अपनी और मिला देना आई, राजनदिक प्रवाहन सामान्य थे। एस समय राजदूत को सम्माननीय पुरापत कर जाता था। जेसा अपन के सामानकी ए पुरापत कर जाता था। जेसा अपन के सामानकी ए पुरापत कर जाता था। जेसा अपन के सामानकार के किटिया राजदूत रास हेरती बाट ने दिखा है हि "राजदूत ऐसा ईमानदार प्राप्त कर के किटिया राजदूत रास हेरती बाट ने दिखा है हि "राजदूत ऐसा ईमानदार है हि से सामा सामानकार के कार्य सामान कर सामानकार के कार्य सामान कर सामान सामानकार के कार्य सामान सामानकार के कार्य सामान सामानकार के सामान सामानकार सामानकार
- (य) इटली के कीटित्य निकोली मैकियावली के प्रन्य दी किन्स (The Prince 1513) ने राजनय को दूषित करने में मोगदान किया। रोचक सैली में यह प्रन्थ राजकुमारों को कुछ उपदेश निर्देश देता था जो शीध ही यूपेप पर में लोकप्रिय हो गए। राजनिक आधारों एवं सिद्धानों का तादान्य मोरी धीरे मैकियावली के उपदेश के साथ देवाया जाने लगा। इस प्रन्य के कुछ उद्धानों का सिद्धान वार्य निन्निलिखित प्रकार से हैं

"जब विसी राष्ट्र को सुरक्षा छतरे में हो तो वहाँ न्याय अवका अन्याय जदार या पिड्रुर गोरवपूर्ण या रन्जरास्पर क्या है इसका दियार नहीं होना पाहिए इसके विसरीत स्वतन्त्रता कामम रखा और जीवन रक्षा के साधन के अतिरिक्त प्रत्येक पीज की अवहेलना वो जानी पाहिए।"

"किसी पुरदर्शी मासक को ऐसे वचनों को पालना नहीं करना चाहिए जिन्हें निमाने से उसके दियों को हानि होती हो दिशेषकर उस समय जबकि बमन बद्धा के कारण समाप्त हो चुके हो। यदि सब व्यक्ति अच्छे होते तो यह विशा उपयुक्त नहीं थी किन्तु क्योंकि वे हुं। है और दिश्यात का निर्माट करने को तैयार नहीं है इसलिए तुम भी विश्वास पालन के लिये बाज्य नहीं हो।"

नैकियदती के उपदेश ताकालीन प्रतिस्थितियाँ में व्यवहारिक रूप से उपयोगी थे । उस समय की विकट राजनैतिक परित्थितियाँ में राज्य अमुरस्ति थे। इटली की राजनीतिक :;
अस्थिरता निरन्तर सपर्य पूट और अराजनतापूर्ग के लिए शाकि महत्वपूर्ण थी। मैकियावती।
के विवार उपयोगी थे किन्तु उनके प्रमाव से राजनय पूरित हो गया। मैंनिक आवरान को ;
अमारस्यक हानिकारक दिखारा एवं कमज्जेरी का प्रतिक माना जाने लगा। छत, तपर
पोखेशांची चूट एव विश्व स्थात को व्यवहारिक आरस्यकता समझा जाने लगा।
(5) वर्षमान काल (The Modern Pernot) - प्रयक्तात के जनिस दिनों में राष्ट्रीय ह

राज्यों का उदय हुआ तथा यूरोप के राज्य अपनी आर्थिक सामाजिक तथा धार्मिक है पिनिस्तियों के क्षण नए प्रदेशों की क्षेत्र करके वहाँ बसने सामे । इस काल में है विकास हुआ। राष्ट्रों के पारस्पतिक व्यवहार के अन्तर्राष्ट्रीय साम्बर्धों में अनेक प्रकार में है विकास हुआ। राष्ट्रों के पारस्पतिक व्यवहार से अन्तर्राष्ट्रीय कानून के नियमों का अधिकाशिक प्रदेश है ने ला। यह राजनाय के नए युग का मूलपात था। इस दुग में राजनियक सिद्धाना है के साम्बर्ध ने निम्मित्येद्वत दो विद्याप्तायत्ते उत्तर कर सानने आई

(क) नैतिक विद्याप्ताया (Moral Theory) इस विद्यापारा के सन्तर्यकों का विद्यार

है कि जिस प्रवार सामाजिक व्यक्ति को नैरिक्ता का पालन करना पड़ता है उसी प्रवार व अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में मी नैतिकता का पर्धात महत्व है। हैरड़ निकल्सन के मतानुसार वि नैतिक राजनय अन्तर अधिक प्रमादशाली सिद्ध होता है। अनैतिक राजनय स्वय के ही उद्देश्यों को परासन कर देशा है। के एम पत्रिकर के मतानुसार छस्कपटपूर्ण राजनय एक देश को लक्ष प्रचा करने में करावित्त ही सहाप्रता करता है।

द्या वा न्या प्रत्य प्रत्य करा भ कताचत् हा हहावता करता है।

नैतिवन को चाजन्य में महत्व देने बाते वियायक निम्मलिदित सामनों का सम्पर्यन करते हैं दुष्टीकरा (Appeasement), मेल मिलाम (Conciliation), समझीरा (Compromise) त्या साख (Credit) ! इसके समर्थकों का मूल वरेश्य राष्ट्रीय कल्यान तथा व्यापार-वृद्धि होता है। इनकी मान्यना के अनुसार लक्षाई-सगढ़े में दो पद एक-दूर्शा को नाय करते में तथी हुँ कथा। यह है कि से महत्वी हारा आरती स्वन्यदार्थ को राय

तथा व्यापर-इंदे होता है। इनकी मान्यन के अनुसार तरह ई-झगढ़े में दो पक्ष एक-दूसरे को नष्ट करते में नर्ग हैं अच्छा यह है कि वे समझते झार अरसी मननुदार्त को दूर कर लें। इस नैरीक दिवारघारा को दुकानदार की दिवारघारा (Shopkceper Theory) भी कहा जन्ता है। (व) राष्ट्रदारी विवारघारा (Nationalistic Theory): यूरोप महाद्वीप में इस

विवास्तरा को व्यास्त्र सन्धर्मन प्राप्त हुआ है। इसके सन्धर्मनों का विवास है कि सान्तरिक या व्यक्तियत जीवन में जिस नैतिकता का महत्व है वह अन्तरिक्षीय साम्बर्धी में सार्वया अनुमुद्ध के हैं। एत्रेक राज्य को अपनी स्वयंतिद्धि में त्यो रहना चाहिए, एते नैतिकता का व्यन्त रखें बिना प्रत्येक सचन अन्ताना चाहिए। इस विवास्त्रात को चीदिक विवास्त्रात (Wamor Theory) का नम भी दिया जाता है। इसका सबसे बढ़ा गुन यह है कि इससे जनता में उल्लंध देग-प्रेम की मदना विक्तित हाती है। इस विवास्त्रात के सम्बर्ध यक्ति-राजनीत (Power Pollucs) को महत्व देते हैं। वे राष्ट्रीय-गीतव प्रतिष्ठा अग्रत्व,

^{1 &}quot;Voral diplomacy is ultimately the most effective and the immoral diplomacy defeats its

^{2.} I' 4 Paultar Opeau p 35

क्यांचिनी एवं रवनिमान से प्रमान्ति होकर व्यवहार करते हैं। उनने मतानुवार सिन्ध वार्त विनिक्त अनियान का ही एवं अप मात्र है। इसी कारण हमने सफलता प्रणा करते के लिए में पुत जेती पूर रचना करते हैं। सिन्ध वीत गांवि का एकमात्र ल्या दूर एवं एवं एवं रिजय प्राप्त करना है तो है। मनझेते की गिति प्राप्त वनने के लिए में प्रमुख का प्राप्त करना है। सिन्ध वार्त में सुत्तरे एवं एर एणि दिनय प्राप्त करने के लिए में प्रप्तेक एक स्वत्त की गिति को अपनाने से नहीं पूर्वकों। उनके मतानुवार राजनाय एवं पुत्तिक है अर्थ एक एवं हो गिति को अपनाने से नहीं पूर्वकों। उनके मतानुवार राजनाय एवं पुत्तिक है अर्थ एक्से मुद्ध में सानी करने के निर्मा स्वत्त करनाई प्राप्त सकती हैं और आक्रमा बरना एक्स्यूक सीचे हट लागा स्वत्त बाला पुत्र है हैना बत्त प्रदेश करना पिता है। हमने प्रप्तिक स्वाप्त स्वत्त के सिन्ध से प्रप्तिक सिन्ध सोच करना पिता है। हमने मुद्ध होता अपना प्रदेश स्वाप्त सान प्रदेश है। इसके स्वित प्रदेश करने हिन्द सोच का स्वत्त है। इसके स्वत्त प्रदेश करने हिन्द सोच का स्वत्त है। इसके स्वत्त के सिन्द से हिन्द स्वत्त के सिन्द से सान प्रपत्त के सान सिन्द से सान सिन्द से सिन्द से सान सिन्द से सान स्वत्त से सान सिन्द सान सिन्द से सान सिन्द से सान सिन्द से सान सिन्द से सिन्द से सान सिन्द से सिन्द से सिन्द से सान सिन्द से सिन्द से सान सिन्द से सान सिन्द से सिन्द से सान सिन्द से सान सिन्द से सिन्द से सान सिन्द से सिन्द से सान सिन्द से सिन्द सिन्द से सिन्द सिन्द से सिन्द से सिन्द से सिन्द से सिन्द से सिन्द से सिन्द सिन सिन्द सिन सिन्द से सिन्द सिन्द सिन सिन्द से सिन्द सिन्द सिन सि

देशानिक आविष्यारों एवं तकनीकी प्रगति के इस युग में नैतिक विवास्थारा अधिक महाचुम है। वर्षामान में जो शाया अन्तार्गभूमा विशिवता के निक्यों की अवहेरता करता है यह निवार जानक की बहु आतिकान का पात कर जाता है। निकल रूप से यह कहा जा सकता है कि राजनय का इतिहास व्यतिगत स्वामं की संबुधित सीमाओं में होता हुआ क्रमारा पाद्मीयता एवं अन्तर्गद्भीयता भी और अग्रसर हुआ है। वर्तमान में राजनय का सबस्थ अन्तर्गद्भीय परिवेश सारात्र कर मुका है।

राजनय का क्षेत्र (Scope of Diplomacy)

बीसवी सताबी की वैद्यानिक प्रपति ने राजनय के क्षेत्र की व्यापकता को बहुत अधिक बढ़ा दिया है। आज की अन्यर्दिध्य सर्जा मित्र का खोई मी पदा—सीक्ष्मिक सामाजिक आर्थिक पाजनीतिक मित्र इस्पादि—स्थान महि दिवारी प्रजादत की प्रपत्न मित्रक की गुंजाश को विद्या के हों प्रावत्त की प्रपत्न मित्रक की गुंजाश ने हैं। एक हैं विद्या के सामाजिक के जम बोहे से व्यवसायों में से एक हैं जिसके पेरे में मानविध किया करनायों की प्रपत्न साथा आ जाती है। 'वे अन्यर्त्त प्रीया साथाओं सहक राष्ट्र पर्यू पण्डल की प्रावत्त मित्र के हस युग में दिमित्र अन्तर्ताहीय सस्याओं सहक राष्ट्र पर्यू पण्डल की प्रावत्त परिया है। वामुहिक सुरक्षा साधियों सस्यीय राजनय कि सिव्य वार्ती खुला का कान्य वाहराया का सराजनय की साधा प्रावत्त प्रतिक सुरक्षा साधायों स्वत्तीय स्थाप परिया है। वामुहिक सुरक्षा साधायों स्वत्यीय स्थाप परिया है। वामुहिक सुरक्षा साधायों स्वत्यों स्वत्या स्थाप परिया है हिया के स्थाप परिया है हिया के स्थाप परिया है। विद्या के स्थाप परिया है हिया की स्थाप साधा स्वत्य है। के सिव्य का प्रावत्य की स्थाप के कार्य सरक की सिव्य की सिद्या की स्थाप साधा स्वत्य है। स्वत्य स्थाप हो स्थाप के स्थाप स्थाप है। स्थाप हो स्थाप हो स्थाप हो स्थाप हो स्थाप के स्थाप स्थाप है। स्थाप हो स्थाप हो स्थाप हो है स्थाप करता है। स्थाप हो है। स्थाप हो स्थाप

^{† &}quot;Fundamental to such a concept on of d plomacy s the bel of that the purpose of negot a nest victory and that the denial of compile overtory means defect."

He of Necotion.

² Regala Trends p 24

को बढाता है तथा आर्थिक व्यापारिक और सॉस्कृतिक सम्बन्धों को प्रोत्साहित करता है। यह राजनय ही है जिसके मध्यम से राज्यों के मध्य बार्तीय समझौते सन्धियाँ आदि राज्यों को एक-दसरे के नित्र अथवा रात्र बना देते हैं। इसी के माध्यन से राज्यों के आर्थिक व्यापारिक दानिजियक मॉस्कृतिक सामाजिक वैज्ञानिक और तकनीकी सम्बन्ध घनिष्ठ होते हैं। आपटिक हरियारों के दिकास ने दिश्व शान्ति को संकट में डाल दिया है अत. शान्ति व्यवस्था को बनाये रखने के लिए राजनय का सहारा लिया जाना आदश्यक है। यह राजनय के प्रयत्नों का ही परिणाम है कि दिश्व रातिय महायद्ध की दिनीविका से बचा हुआ है। एक योग्य राज्यत द शिगटन, मास्को बीजिंग अचदा नई दिल्ली में बैठा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को प्रमादित कर दिश्व व्यवस्था को दनाये रखने में सहायक सिद्ध हो सकता है। नये राजनियक तरीके समय और परिस्थिति के साथ दिकसित हुए हैं। नये राजनितिक सगठनों सस्थाओं, सम्मेलनों, दिशेषड़ों और प्रचार ने राजनय के क्षेत्र को निश्चित ही दिस्त किया है। राज्यत के कार्यों, उनकी दिन प्रतिदिन की गतिदिचियों नये सचनों के उपयोग अदि ने राजनय के क्षेत्र को अस्यिक दिवसित कर दिया है। राजनय अपने रहेरमें की प्राप्ति में अनुनय, मध्यमार्ग भय आदि का प्रयोग करते हैं। ये सचन स्वय में गमीर एवं दिस्तृत हैं। आज राजनय के क्षेत्र की सीमा निर्धारण यदि असम्मद नहीं तो जिटल अदश्य है। आज राजनय 'सम्पूर्न राजनय' (Total Diplomacy) हो गया है।

राजनय के लक्ष्य (The Objectives of Diplomacy)

युद्ध और सान्ति दोनों ही बालों में राजनय राष्ट्रीय हित की अमिनृद्धि का मुख्य संघन है। राष्ट्रीय दित के अन्तर्गत देश की सुख्य, जन कल्यान हमा अन्य रनन सन्तितित किये जन सकते हैं और राजनय का अनिम लक्ष्य इनशी सुरश और अनिनृद्धि है। सरदार के एन धनिक्का के रान्तों में "समस्त राजनिक सम्बन्धी का यूलपूत होरय अपने देश के रिते की रहा करना होना है और हर राज्य का मुलपूत हित स्वय अपनी सुख्श करना होता है। सास्तु इस सर्वेगरि लक्ष्य के अनिक अधिक दित, व्यापर देशकारियों की रखा अपने मी देसे महत्यपूर्ण दिवय है जिनका प्रांत रखना राजनय का स्वरिय है।"

राजनव मूल रूप में एक शानिकालीन संघन है। यदि राजनव का अन्त युद्ध में हेता है तो इसे राजनव की असकरदा का द्वोरक माना जाता है। किन्तु युद्ध रहतीन स्थिति में में राजनव दिनें रूप से सक्रिय रहता है क्योंक युद्ध और शानि पैसी गम्मीत समस्याओं को सेनचरियों पर पूरी तरह नहीं छोड़ा जा सकता है। शानिकाल में राजनव (Diplomacy) प्रतक्त योगदान करता है जरके शकि (Power) एकपूमी में रहती है, किन्तु युद्ध काल में राकि आगे रहती है और राजनकि दौर-सेव एकपूमी में रहती हैं। किर भी युद्ध के सन्दर्भ में राजनके कार्य से प्रयासक हो जनते हैं। विरोध मह युद्धकाल में राजनय सम्मेलतों की महत्वपूरी पूनिका रही थी और युद्ध सम्बन्धी नेति-निर्माध इन सम्मेलजों में तिए जाते थे। पानर एव पर्किस्त के अनुहार—"दिदेश-नीति की मीति राजनय का प्ररोध, सम्मदट राजिपूर्ण सामग्री हम्मी सहायता द्वारा राष्ट्रीय सुरक्षा प्राप्त करना है। राजनय जैसाकि निकल्सन ने कहा है युद्धकार में समाप्त महीं को जाता अधितु मुद्धकार में उसे पृथक् पूरिका निमानी पड़ती है तथा विदेश भित्रणें की तरह राजनमात्री (Nojomaus) का कार्यक्षेत्र अधिक व्यापक हो जाता है। इस रातान्दी के दो महायुद्ध हम पारणा की पुष्टि करते हैं। "के एम प्रीकेट हिस्की हैं "एक राजनपत्र का मुख्य कार्य अपने देश का नाम ऊँचा रखना उसके लिए आदरमाव उत्पन्न करना तथा उसके प्रति सद्भावना पेरा करना है।" राजनयञ्ज अपने कार्यों द्वारा राष्ट्रीय दिसों की उपनिथित का स्वास करता है।

विभिन्न विधारकों ने राजनय के जिन विभिन्न लक्ष्यों का उत्लेख किया है उन्हें हम इस प्रकार वर्गीकृत कर सकते हैं

- 1 राष्ट्रीय हितों की रक्ष (To Saleguard the National Interests) राजनय का मुख्य स्ट्रंप अपने राज्य के हितों की रक्षा करना है। प्रत्येक राज्य का मृत्यमूत हित अपनी सोमाओं की रक्षा होता है। इसके अधितिक आर्थिक हित व्यापार राष्ट्रिकों की रक्षा आर्थि में महत्वत्यों निवय है तथा राजनय इनकी सुरक्षा का प्रयास करता है। अन्य राज्यों के साथ सरमावनावर्ण सम्बन्ध स्थापित करना भी राजनय का मृत्य तक्ष्य होता है।
- 2. पान्य की प्रादेशिल, पाजनीतिक एव आर्थिक अखण्यता की रखा (To Safeguard the Territorial, Political and Economic Integrity of the State) पाजनय का यह महत्वपूर्ण कार्य है कि वह अपने देश की प्रादेशिक अखण्यता के साथ-साथ पाजनीतिक एव आर्थिक हिता की भी रखा करें। आजनक केवल सैनिक आक्रमण से ही पाजनीतिक एवं आर्थिक हिता की भी रखा करें। आजनक केवल सैनिक आक्रमण से ही पाजनीतिक पाजनक केवल सैनिक आक्रमण से ही पाजनीतिक पाजनक केवल केवल सैनिक आक्रमण से ही पाजनीतिक प्रमाण कार्यक्र के लोगी पाजनीतिक प्रमाण करा आर्थिक दबाव एवं देश में राजनीतिक प्रमाण बढा कर भी उसकी सुरक्षा को उसके में हाला जा सकता है। अत राजनय को हमेशा सजण रहना पाछिए तथा देश देश के पता के विचेत्र दूसरे पाज्यों की मीतियों और गतिविधियों पर रोक रंगानी चाहिए
- 3. पित्रों से सामन्य बढ़ाना तथा शतुओं को तटस्य बनाना (Strengthening relationships with friendly countries and the neutralisation of forces hostile to itself) राजनय अपने राष्ट्रीय हितों की उपलब्धि के लिए नित्र देशों के साथ अपने मैत्री सम्बन्धों को दृढ करता है। इंट लिय बताई हारा अपने सम्बन्धों और मित्रों की सख्या में गृद्धि करता है। सामान्य हितों वाले राज्यों के साथ उसके मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध यृद्ध हो जाते हैं। जिन राज्यों के राष्ट्रीय हिता परस्पर नित्र अध्या विरोधी होते हैं उनके बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्धा उत्तरी है। यहाँ राजनय का सख्य ऐसी राजियों को तटस्य बनाना होता है वार्कि वे उसके प्राप्ट्रीय हितों को हानि न पहुँचा सकें।
- 4 विरोधी शक्तियों के गठबन्धन को रोकना [To prevent other States from combining against her? । राजनय का एक दुर्जा स्टब्स एवं की है कि अपने पान्यों को अपने राज्य के विरद्ध स्मावित होंने से लेके। इसके लिए एवं कुछ राज्यों के साम समझीत करना होगा कुछ को कार्यन देना होगा क्या ऐसे कुछ राज्यों से सम्बर्धन एवं सम्बर्धन पर स्थाप होंने कुछ राज्यों से सम्बर्धन एवं सम्बर्धन पर स्थाप राज्यों के राष्ट्रीय होतों के दिवस करते हैं। यदि से सोर सेरिक अपकर हो जारी और शक्ति कर्यों करना अपनी व्हान्यों बन जाए तो रह

¹ K M Panikkar The Principles and Practice of Diplomacy p 34

सर्वाधिक लानप्रद परिस्थितियों में ही किया जाना चाहिए और इस रूप में किया जाना चाहिए ताकि दुनिया के दूसरे राज्य यह जान जाएँ कि यह राज्य न्याय के पद्म में है तथा केवल अपने अधिकारों की रक्षा के लिए ही लढ़ रहा है। यदि विश्व यह मान ले कि राज्य न्याय कपे तेए लढ़ रहा है तो यह राजनाय की विषय होगी।

- 5 युद्ध का सचालन (The Conduct of War) युद्ध दुरा होते हुए भी अपरिहार्य है। यदि युद्ध प्रेडना आवश्यक बन जाए तथा सन्धि-वार्ता के सभी साधन असफल हो जाएँ तो राजनय के दायित्व का रूप बदल जाता है। युद्धकाल में भी प्रमावशाली राजनय का महत्व है। के एम पनिकार के मतानुसार "प्रमावशाली राजनय कि मिना न तो युद्ध लढ़े जा सकते हैं और न जीते जा सकते हैं। युद्ध से पूर्व गावत राजनियक तैयारियों एव युद्धकाल में प्रमावहिन राजनय एक शाकि मम्मन राष्ट्र की हार एव उसके विनाश का कारण बन जाता है।" अत युद्धकाल में राजनय का महत्व और भी बद जाता है।
- 6 आर्थिक एव व्यावसायिक तस्य (Economic and Commercial (D)petrive) राजनाव के उपर्युक्त स्वस्य राजनीतिक थे। आजकल गैर-राजनीतिक स्वस्य मा महत्व निरत्तार बद्धा जा रहा है। इसमें आर्थिक एव व्यावसायिक स्वस्य विशेष उत्तरेखनीय है। प्रत्येक राज्य दूसरे देशों में अपने उत्पादनों के लिए बाजा तलाश करता है स्पर्धी को घटाता है आर्थिक सर्वकता रखता है तथा अपने हितों की इसा के लिए अन्य उधित कदम उठाता है। पनिकर के राज्यों में "पिछले तीस बचीं में ध्यावसायिक राजनाय (Commercial D)plomucy) अन्यर्राष्ट्रीय जीवन का एक सर्वतिक सक्रिय पहलू दन गया है।" फलस्वकम नियतींग (Quota) अनुआर्थियों (Lucenes), मुद्धा-नियन्त्रग (Currency Control) तथा ध्यावसायिक सम्पर्क की अन्य तकनीकों को राजनाय में साधन के रूप में अपनाया जाने तथा है।

प्रत्येक राज्य अपने राजनिक निशन के साथ व्यायार-आपुक्त एव वाणिज्य सहधारी ' (Commercial Attackes) अदरय मेजता है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक राजनियक निशन मे आर्थिक विशेषज्ञ अधिकारी नियक्त किये जाते हैं।

- 7 सामात्र की सहायता (Food Assistance): द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद ससार के विनित्र भागों में खायात्र की कमी होने के कारण खायात्र से सम्पत्र देशों ने इसे अपने राजनय का समन बनाया है। आज अत्र उत्पादन देश अपनी शतों पर ही मान बेचते हैं। खायात्र प्राप्त करने के लिए राज्य को एता होमा तक अन्य राज्यों का हस्तरों भी सरीकर करां पहला है। इससे सम्बन्धित सीय इतिर्धि केवल व्यादसायिक न रह कर राजनीतिक बन जाती है। इससे सम्बन्धित सीय इतिर्धि केवल व्यादसायिक न रह कर राजनीतिक बन जाती है। इससे सम्बन्धित साथा करने बाते देशों की विदेशगीति प्रमादित होती है।
- 8 राज्य के स्थापी हितों की पूर्वि (Sersing of the Permanent Interests): राज्याय का मुख्य तस्य राज्य के स्थापी हितों की पूर्वि करना होता है। इन स्थापी हितों की अर्थ हतना होता है। इन स्थापी हितों की अर्थ हतना केवत मधानक सकट के समय ही हो सकती है। कती-कती अस्थापी लागों के लिए भी सौदेवाणी की जाती है। जनता के आग्रह एव दवाव के कारण सरकार को तुष्ठ समय के लिए स्थापी हितों को छोडकर अन्य हितों की प्रतिक का प्रयास करना पहता है।

भावनाओं पर आधारित जन प्रतिक्रिया के दबाव में राज्य को यदि अपनी विदेश नीति या राजनय को बदलना पड़े तो वह अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण और राजरताक शिक्ष हो राकती है।

- 9 पारायरिक आदान प्रदान (Mutual Give and Take) राजनय अपने प्रमुख त्यर पारच की मुखा तथा अपने अधिकारों की रहा। करने के लिए पारत्यरिक आदान प्रदान की मीति का अनुसारण करता है। कोई राजनव यदि असिना सत्यों (Ulumate Truths) की धारणा पर आयारित है तो यह निश्चित ही असकल होगा अत एक राकल राजनय को व्यावहारिक होना माहिए। उसे दूसरे राज्यों घर नीतिक िर्माय देने अयवा उनके अधिकार निर्मारित करने का प्रयास नहीं करना माहिए क्योंकि प्रत्येक राज्य का अपना जीवन दर्शन होता है। इस राजनीतिक स्थामं को स्वीकार कर के ही अन्य देशों के साथ राजनियक व्यवहार स्थापित करना चाहिए।
- 10 सद्भावना की स्थापना (To Establish Goodwill) राष्ट्रीय दित की उपलिय के लिए राजनंत्र को अपने राष्ट्री उपलब्ध साधा में हारा दूसरे देश के साथ सद्भावनापूर्ण साबन्ध स्थापित करने भाटिए। राज्य के अन्यती समझीते एव साथ्यमी आस्त्रीत सद्भाव एवं रुचि पर निर्भर होने भाटिए। सम्मादित शत्रु देश के साथ भी सद्भावना की स्थापना का प्रयास करना भाटिए। यदि उस देश की सरकारी नीति को नहीं भी बदना जा सका तो कम से कम उस देश में मित्री एव समर्थकों का एक वर्ग अवस्य तैयार किया जा सकेगा।
- के एम पनिकर ने राज्यों के कूटनीधिक व्यवहार के निम्नलिखित प्रमुख लक्ष्यों का जल्लेख किया है
- मित्र राष्ट्रों के साथ सम्बन्धों को मजबूत बनाना और जिन देशों के साथ मतभेद
 हों उनसे यथासम्भव तदस्य रहना ।
 - 2 अपने राष्ट्रीय हित की विरोधी शक्तियों को सटस्थ बनाए रखना ।
 - अपने विरुद्ध दूसरे राष्ट्रों का एक गुट बनने से रोकना ।
- 4 यदि दूसरे राष्ट्री के विरुद्ध अपने हितों की ख्या करते समय साम बान और मेद-ये तीनों ही नीतियाँ असावल हो जाएँ तो युद्ध का सहारा दिया जाए । किन्तु कूटनीति का कार्य है कि युद्ध ऐसी परिस्थिति में साथ ऐसे रूप में अपनाया जाए कि दूसरे देश यह समझ जाएँ कि तुम्हारा एस न्यायपूर्ण है स्था तुम अपने अधिकारों की रक्षा के लिए लड़ रहे हो और आक्रमणकारी तुम नहीं बन्तु कृतय पत है।
- 5 भागस्य का मत था कि यदि युद्ध और शान्ति दोनों के समान परिनाम प्राप्त होते हों तो सान्ति को अपनाओं हथा युद्ध और निव्यवता का समान लाम मिल रहा हो तो निव्यवता को अपनाओं । युद्ध को तो केवल तथी अपनाना भाहिए जब अन्य सभी सामन अपनाल हो जाएँ ।
- 6 युद्ध कूटनीति की असफलता का छोतक है किन्तु इसका अथं यह नहीं लगाना माहिए कि युद्ध के चानम कूटनीति ही सानाच हो जाती है बदन सम तो मह है कि बिना कूटनीति के न तो युद्ध किए जा सकते हैं और न हो जीते जा सकते हैं। युद्ध ये पूर्व गत्तर कुटनीति ति तथा से यूद्ध के पानम की प्रमादहोन कूटनीति हार' को निरिध्त बनाकर सोहिसाती चानु के का निर्देश के पानम की प्रमादहोन कूटनीति हार' को निरिध्त बनाकर सोहिसाती चानु के का निर्देश कर देती हैं।

अपने चरेरयों की पूर्ति के लिए कूटनी ति निर्मालिखत तीन सचनों को कान में ला सकती है—(1) समझाना (Persusuon) (1) समझौता करना (Compromuse) पूर (111) श्राप्ति प्रयोग की धमकी देना (Threat of Force)। सकत कूटनी ते के लिए ऑप्टेंग्ल है कि एस्ट्रीं एक सम्मद हो सके वह प्रयम यो सचनों के मध्यम से ही अपने चरेरयों को पूर्ति का प्रयास करे। कूटनी तो के कला इस बरत में है कि वह समय व परिश्यिति के अनसार ही होनों में से किसी एक का प्रयोग करे।

राजनय के कार्य (The Functions of Diplomacy)

राजनय का अन्तिम तस्य राष्ट्रीय हित का सबर्द्धन त्या निर्धारित नीने के छोरमों की धूर्ति का प्रयत्न है। स्टानिन ने राजनय को एक प्रकार की कता मनते हुए कहा था कि कूटनितिक के राम्दों का उसके कारों से कोई सम्बन्ध नहीं होना चन्छिए, यदि ऐसा है तो वह राजनय ही केसा? कथानी एक चीज है और करनी दूसरी। अच्छे राब्द हुरे कार्यों को छिमाने में डाल का कन्म करते हैं। एक निकप्ट राजनय छसी तरह ससम्बन है जिस तरह कि सुखा गरी। या नाम लोड़ा।

रण्ट्रीय दित सवर्दन की दृष्टि से राजनय के मूलमूत कार्यों को दिनन्न विचारकों राजदुतों और राजनीतिओं ने निम्न प्रकार से सम्ब्द किया है

(क) हिन्दू नीवि शास्त्रों का मत

हिन्दू मीति र स्त्रों में यर प्रकार के राजनीक साधन और उपाय बताए गए हैं— साम, दान बार और मेद। साम के अनुसार एक देश निजवापूर्ग व्यवस्य सुद्धाव एवं सैक्कि तहीं हाता अपने राष्ट्रीय हित साधन का प्रधाय करता है। ऐसे समझैते करता है जिसमें स्वय के धन से दूसरे प्या का लान है। कुछ महत्वपूर्ण लस्दों को प्राप्त करने कें लिए कुछ देना कुछ व्यय करना आवश्यक बन जाता है। सह समझैते वा एक तरीका है। यहाँ साम और दाम से बाम बनता न दीवार हो वहीं मेदू का सहस्य लेना होता है के अर्थात यहाँ के प्राप्त से नेता कर होना और साम के प्रश्त से पूट बन्त देना। राजनय का समसे अनिम हिप्पार राक्त है। जब सत्ती अन्य साधन असकत हो जारे हो राजनाय को

प्रसिद्ध विचारक कैटित्य ने अपनी पुस्तक अर्थरास्त्र में राजनय के निम्निसित कार्य गिनए हैं

(क) फ्रेंक राज्य एवं स्वयंत्रकर्ता राज्य की सरकारों के दृष्टिकों का कादान एदरन, होगा (व) समीधा करना, (ग) अपने राज्य के दर्यों को स्वकार करने के लिए दिनिज्ञ तरिक अपनन । राज्य अपने राज्य की स्वर्ध तिदि के लिए पुढ़ की धनकी देता है अपने निज्ञ करने राज्य की सर्च तिदि के लिए पुढ़ की धनकी देता है अपने निज्ञ करान स्वर्ध की सच्च प्रदान है गुर साज्यों की उपने कार किरा है दिरोपी राज्य में कराव की लिए देता है सरकारी अधिकारीयों को अपनी और निज्ञ लेता लेता है (प) राज्यपन को मुख्यत जन सरकारी अधिकारीयों से निज्ञण बढ़ानी चाहिए जिनके

1 Joseph Caller Queed in David Dallin The Real Sweet Russia, 1944 p. 71

अधिकार में जगलात शीमावर्ती क्षेत्र आदि विषय आते हैं (ह) राजनयक्ष को स्वागतकर्ता राज्य की किलेबन्दी का पूरा झान होना चाहिए। उसे यह जानकारी भी प्राप्त करनी चाहिए कि मूल्यवान चीजों के खजाने कियर हैं।

कौटित्य का मत है कि अपने कायों के सम्पादन के लिए राजनयज्ञ को अवसरानुकूल चातुर्य कुशलता और कुटिलता का मार्ग अपनाना होता है। इस तरह से घाणस्य ने अपने साम्य की प्राप्ति के लिए राजनयज्ञ को समी समय सायन अपनाने की घूट दी है।

(स) शरदार पनिक्रर का मत

विख्यात मास्तीय पाजनिक के एम पीनकर के अनुसार मूर्तना कपट आदि से पूर्ण कूटनीति अपने संदर्ध की प्राप्ति में बहुत कम सहायक हो सकती है। कारण यह है कि कूटनीति अपने देश के प्रति दूसरे दोता की मुक्त माम्य कर की सहती है। दूसरे देशों की प्राप्त माम्य कर के दिल्द भेरित होती है और कपट आदि इस उदेश्य के माग में खतरनाक साधन हैं। दूसरे देशों की शुन कामना प्राप्ति के लब्द की पूर्ति चार प्रकार से अधिक क्षणी सतह हो सकती है—दूसरे देश छल देश की भीती को ठीक प्रकार से मार्ग एवं प्रकार मेरित क्षणा नावना यह उद्देश हम हो भीती भीता को उपन कर को आप बहुत से होगों को सदा के लिए पीरों में नहीं एक सकते और इस इस्टि से चानून कर आप बहुत से होगों को सदा के लिए पीरों में नहीं एक सकते और इस इस्टि से चानून कर आप बहुत से होगों को सदा के लिए पीरों में नहीं एक सकते और इस इस्टि से चानून कर आप बहुत से होगों को सदा के लिए पीरों में नहीं एक सकते और इस इस्टि से चानून कर उपन की स्वार की असतिस्थत जाहिर हो जाएगी सी दिश्य-समाज में उस देश के स्तर को बहुत माम्य पहुँचेगा। अत उक्का मत है कि व्यक्तिन लीवन की मीति अन्तर्राष्ट्रीय जीवन में भी ईनानदारी सबसे असी नीति है।

(ग) पामर एवं परकिन्स का मत

पानर एव परिकल्स ने पाजनयम्न को दूसरे देशों में अपनी सरकार की और कान (Eyes and cars of his Government) कहा है जिसके मुळ्य कार्स हैं—अपने देश की लेशियों को क्रियानियंत करमा, अपने रेश के हिसों और देश्यानियं (कि. विदेश में हैं) के खा करना तथा अपनी सरकार को रेश विश्व में होने वाली मुख्य घटनाओं के बारे में सूचित परवारों के कारों को आगे घटनार और मैं साथ करते हुए पानर एव परिकल्स ने इन्हें निनातियंत पार आधारमृत वार्गों में बालित किया है—(1) प्रतिविधित (Representation), (2) समझीता-चार्ता (Negotauon), (3) मित्रवेदन (Reporting), एवं (4) विदेशों में अपने पान्न और अपने देश के मागरिकों के हितों की सुरवा (The protection of the interest of the Nation and its citizens in Grougi land) है रूक अपने स्वस्त पर लेखकह्म ने लिया है कि विदेश-गीति की भीति है पाजनय का यह लक्ष्य है कि आपासक्य जानिकूर्य आधारों से हैर की बहात करें। तेतिन यदि युद्ध अपरिवर्ध है हो जाए सो तीनिक तैयारी कर सुद्ध करें। युद्ध के समय मागरिन करतीन पाताल (Peace une Diplomacy) का रूप बदलकर सुद्ध के अवस्थाओं के अनुकल हो जाता है।

^{1.2.} Palmer & Perkins International Relations p 85

(ध) क्विन्सी राइट, ओपेनहीम तथा चाइल्ड्स का मत

क्तिन्सी राइट के अनुसार राजनय युद्ध से नित्र इसलिए है क्योंकि यह भौतिक शास्त्रों के स्थान पर शब्दों का प्रदोग करता है । शक्ति-प्रदर्शन और युद्ध की धनकी राजनय के सचन है पर जब युद्ध छिड जाता है तो दोनों पत्नों के बीच प्राय राजनयिक सम्बन्ध दिच्छेद हो जाते हैं। ओदेनहीम ने राजनदर्ज़ों के कार्यों को तीन मागों में दिमाजित किया है—(क) समझौता (Negotiation), (ख) पर्यदेशम (Observation) एवं (ग) स्तरश (Protection) । चाइल्ड्स ने मी पामर एवं परिवन्स की माँति ही राजनयझी के कार्यों को इन चार नागों में बाँटा है

 प्रतिनिधित्व करना (2) समझौता करना, (3) प्रतिवेदन करना एवं (4) विदेशी भिम में अपने देश के नगरिकों तथा देश के हितों की रहा करना।

(ड) हैंस.जे.मॉर्गेन्धो का मत

हैस जे मॉर्गेन्थों के अनुसार राजनयुद्ध के निम्नतिखत चार प्रमुख कार्य हैं—प्रयम, राज्य की शक्ति को ध्यान में रखकर अपने लक्ष्यों को निर्दारित करना द्विदीय, अपने चरेरपी और राज्य शक्ति के साथ-साथ दूसरे राज्य की शक्ति का समुद्रित मूल्याँकन, ट्रतीय, यह पता लगाना कि दिनित्र राज्यों के लक्ष्य एक दूसरे से कहाँ तक मेल खाते हैं और यदि इन लक्ष्यों के मध्य सान्य न हो तो उनके बीच समन्दय स्थापित करने का प्रयत्न करना एव चतुर्य, अपने लक्ष्में की प्राप्ति के लिए समझैता समझाना-बुझना बल प्रयोग की धमकी अदि खपायों का अश्रय लेना ।

(घ) लियो बी. पौलाद का मत

एक मृतपूर्व अमेरिकी राज्यूत लियो वी पौलाद (Leou B Poullada) ने उपने एक तेख में राज्यय के पाँच कार्यों का उल्लेख किया है --

- (1) संधर्ष का प्रस्थन (The Management of Conflict)
- (2) समस्य समधान (Problem solving)
- (३) परा सॉस्कृटिक कार्य (Trans-Cultural Functions)
- (4) समझैल दर्ल और सैदेवाजी (Neconations and Bareaining)
- (5) कार्यक्रम व्यवस्था (Programme Management)

राजनयञ्ज का एक प्रमुख कार्य संघर्ष का प्रबन्धन (Management of Conflict) है अर्थात जहाँ कही हिटों का भरी कटाद (Intersection of Interests) हो दहाँ एक राजनयन को समझ ने बुझले. सेंदेशजी करने, सुलह करने अदि दिनित्र उदायों द्वारा संपर्दपूर्ण स्थितियों के समयान में प्रदृत होना चहिए। घरेलू क्षेत्र में पेरोदर राजनीतिज्ञ जिस प्रकार इन कार्यों का निर्देहन करते हैं उसी तरह अन्तर्राष्ट्रीय जगत में राजनयञ्ज इन कार्यों का निर्देहन दिन्तित्र संस्कृतियों और मूल-व्यदस्याओं के सन्दर्न में करते हैं और इस हैसियद से दे मुख्यतया एक 'परा सँस्कृतिक संघर्ष दलाल (Trans-Cultural Conflict Broker) की मनिका का निर्दाह करते हैं।

Leve B. Powlists a stude in "The Theory and Practice of International Relations", 1974. pp 19-190 h David Midellan W. C. O'son and Fred A. Sondermann.

मूल्यून राज गिरक गतिथित का दूसरा क्षेत्र समस्या समस्यान (Problem Solvine) है। विदेश सम्बन्धों के साम्रतन में ओक सामस्यार्थ और चिनाइयी उपस्थित होती है तथा कई बार सीमान प्रान्दनियों (Muginul (houce) के प्यान करने की सियति उत्तव होती है। अत राजनयन वा हतियेदन सम्बन्धी काम सुगम मंदी होता। देवाने में प्रतिदेश राज्यों के साम्रत का सीधा साम्रा काम रागाता है लेकिन यह आवस्यक छूप से साम्या साम्राध्य का एक अप्यास कहा है। राजनाम को मारिए कि वह सर्पन्नमा विभिन्न सम्मद ध्यावपाओं में से युनाव करे सूधना साम्रत से विभिन्न सांस्कृतिक पूर्वावरों या प्रधानती की उद्यनी कर दे और उपस्था सुम्बा को प्रयोग में साने का बहुत ही स्थावस्था स्वीक सुने सांकि नीति निर्माण और मीति विभावस्था नरीने को प्रस्तुत होना का स्वान स्वीक सुने सांकि

मूलमूत राजाधिक गतिथिये का सीसार क्षेत्र बूटनीतिक व्यवसाय के परा साँस्कृतिक कार्यो (Trans Cultural Functions) पर केन्द्रित है। राजनप्रश्न का मुख्य योगदान उसकी इन निपुणता में प्रकट होता है कि दह विभिन्न संस्कृतियों के मध्य किस प्रकार अपनी व्याख्याओं पर पहुँचता है। विभिन्न संस्कृतियों के मध्य कार्य करते हुए भी राजनयञ्ज को '-'जबने संस्कृति कि के संस्वदान में लगा रहना चाहिए।

राजनय का चौथा भूतनृत कार्य समझीता वार्ता और सौदेवाओ (Negotialions and Barganing) है । समझीता वार्ता केवल अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेतनों मे ही नहीं होती सिरूक राजनया अपने दैनिक कार्यों में विभिन्न वरीकों से विधार विमर्श, सौदेवाजी और समझीते सम्बन्धी कार्यों में लगा रहता है।

राजनय का धाँयवाँ कार्य 'कार्यक्रम व्यवस्था (Programme Management) है। विदेशों में अपने देश के किसी कार्यक्रम के प्रबन्ध की कुशलता का काफी प्रमाद पड़ता है। उसके माध्यम से विदेशों में देश की प्रतिचा बढ़ाई जाती है। आज के युग में इस प्रकार के कार्यक्रमों का महत्व दि राष्ट्रीय और बहु राष्ट्रीय सब्यों के विकास में बहुत अधिक बदता जा रहा है।

राजनयिकों के प्रमुख कार्य (Important Functions of Diplomats)

उपर्युक्त विश्लेषण के आयार पर यह उधित होगा कि अलग अलग विद्वानों द्वारा प्रतिपादित कार्यों की अलग अलग व्याख्या न करके सामूहिक दग से प्रमुख कार्यों की व्याख्या की जाए जिसे निम्नलिखित रूप से रखा जा सकता है

1. सरबाण सबसी कार्य (The Protection) राजनय का प्रमुख कार्य यह है कि अपने देश के अधिकारों एवं हितों की स्वा काशा वृद्धि करें। किंतों की स्वा करना राजनय का कार्य है। प्रो ओपनाहीन के कथानानुसार "राजनयिक दूतों का यम मुख्य कार्य है कि वे अपने देशवासियों की सन्याध्यापन पर हितों की स्वा करें जो स्वागतकार्ता राज्य की सीमा में बसाते हैं। चर्चरा के सम्मान एवं हितों के प्रति राज्याजनय कोई सीदेवाजी नहीं कर सकता। यदि विदेश में रहने वाले हैं। राष्ट्रजनों के अधिकार छीन तिए पर है सम्पति जब की गई है किशी जपहन में वे हराहान हुए है अखया कर के वातृत का पूर्ण तरखण नहीं निव्ह को गई है किशी जपहन में से हराहान हुए है अखया कर कार्यून का पूर्ण तरखण नहीं निव्ह हुए है अखया कर कार्यून का पूर्ण तरखण नहीं निव्ह हुए है अखया कर कार्यून का पूर्ण तर्वा कर स्वा है। राजनय रहा है तो है अपने राजनविक सिक्षन ने जियत सहायता की मींग कर सकते है। राजनय

को चाहिए कि वह अपने राष्ट्रिकों के कप्ट निवारणार्य पूरा सहयोग दे। यदि स्वाग्तकर्ता राज्य में राजनीतिक अस्पिरता के कारण सानि-प्यवस्था खतरे में पढ जाती है तो उन राष्ट्रिकों को बूतावास में शरण दी जाती है। गृहपुद्ध तथा अन्तर्राष्ट्रीय पुढ की रिपादि में राजनिक निश्चन अपने राष्ट्रिकों को स्वदेश तीटने अपवा सुरक्षित स्थानों पर पहुँचने में सहारता देते हैं। सन् 1991 के खाड़ी पुढ के समय खाड़ी देशों में पिरत मारतीय राजनिक निश्चों ने वहीं फ़्से मारतीयों को सुरक्षित रूप से मारत पहुँचाने में महती मूनिका वा निश्चों को राष्ट्रिकों की खाड़ी पुढ के समय खाड़ी हो प्रयम स्था दिताय विकास राज्यों के राजनवाड़ी को राष्ट्रिकों की खा का दारिक सीमा जाता है। प्रयम साथ दिवाय विकास पुढ़ों से समय विद्युलर्सैन्ड तथा स्वीवन द्वारा यह कार्य किया गया था। वर्तमान में सी रिस्टलर्सनेन्ड और आहिट्ठण हारा इस कार्य का सम्यादन किया जाता है।

2. प्रतिनिधित्व (Representation) : प्रत्येक राजनयज्ञ दूसरे देशों में अयदा अन्तर्राष्ट्रीय सावजों में अपने देश का मितिनियत करता है। एक प्रतिनिधित करता में पाजनयज्ञ अपने तथन देश का मितिनियत करता है। राज प्रतिनिधित करता है। राजनयज्ञ को उसके देश का मुँह और बान वहा गया है। यह अपने देश के इच्छित्का को सही यहुत्या, स्पटता एव सिटेत्वा के काम प्रस्तुत करता है। किसी प्रमा के बारे में उसके अधिकात विवाद करे हुए भी हों, किन्तु दूसरे देशातीसों को यह उसी दिसातें को दहाएगा जो उसके देश की सातकार के हैं। अपनी सातकार के प्रतिक तथा प्रदान के क्या के तथा है। अपनी सातकार के प्रतिक तथा प्रदान के क्या में कार्य करते हुए राजनयज्ञ दिश्यों में अपने देश के लिए मित्रदा में दुधि करता है और इसके लिए यह वहीं के अपनी, समाजसेथी शिक्षाता, राजनीतिक एवं सरकारों नेदाओं से सम्पर्क स्थानित करता है। यह अपने देश की नीतियों पर प्रवास करता है।

दरिष्ठ राजनयह एव राजनियक निशन के अध्यय महत्वपूर्ण अरसरों (ऐसे शारी, पूर्त्य सहलार, राज तितक कार्यि) पर अपने देश का म्विनिधित करते हैं। दूसरे देशों की सदानारा मात्रा हारा वहाँ की सिपते की जानकारी प्राप्त करते हैं। वे अन्य राजनूरों के सम्मान में मीज देते हैं तथा पूसरों हारा दिए गए मीजों में शानित होते हैं। हैरोल्ड सीमर (Harold Seymou) के कथ्यानुसार एक अच्छा मीज राजनय की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण सं सकता है। अधिकार प्राप्त प्राप्त को स्वया के तथा प्रदेश कर से सहत महत्वपूर्ण है सकता है। अधिकार प्रदेश से राजनियकों को स्वया के स्वर्थ महत्वपूर्ण के सद्भावना प्राप्त कर सर्क । सद्भाव गाज्य कर सर्क । सद्भाव ना करें।

3. पर्ववेशन एवं प्रविदेदन (Observation and Reporting): राजनदाई की सहारा से एक देश की सरकार अपने दिरीती मानलों का कुटनीती सत्यों के दिकाल में सहाराक बना सकती है. सकतान कर पाती है। प्रायेक राजनिक निश्चन अपने देश की सामिक प्रतिदेदन मेज्या रखता है। इन प्रतिदेदनों में स्वाप्तकत्ती देश की आर्थिक, सामिक, राजनितिक रूपा तैनीक प्रतिदेवति और विधायतीन व्यवस्थारन, मदीन ज्यादन एव जांगा, तकनी की कामिक, सामिक प्रतिदेवति की कामिक, राजनितिक स्वाप्तकत्ती क्या रिक्श में होने दाने परिवर्तन आदि का दिवान होता है। इस जानकारी को प्रत्य करने के लिए उनकी सुचना के तमी होने एवं स्वितिकत्ति आदि का दिवान होता है। इस जानकारी को प्रत्य करने के लिए उनकी सुचना के तमी होने एवं सीतिकत्ती का निरत्यर कव्ययन करते वहना चाहिए। सारी सुचनाओं को एकतिन सीतिकत्ति आदिकारी को सुचनाओं को एकतिन सीतिकत्ति का तमिल प्रतिकारी की स्वत्य के सार्व को सुचनाओं को एकतिन सीतिकत्ति आदिकारी सामिक प्रतिकारी की स्वत्य के सार्व को सामिक प्रतिक्ता सामिक प्रतिकारी की स्वत्य के सार्व की स्वत्य को सुचनाओं को एकतिन सीतिकत्ति का सामिक प्रतिकारी की स्वत्य के सार्व की स्वत्य की सामिक सीतिकत्ति की सामिक सीतिकत्त्र की सामिक सीतिकत्त्र की सामिक सीतिक सीत

कर उनका मूल्योंकन करने के लिए दिशेषणों की सहायता ली जाती है। औपधारिक राजनियंक होतिनियंती से यह आशा नहीं की जाती कि वे दूसरे देश में जाकर पुनतार का कार्य करें किन्नु असारीके व्यवस्तर में ऐसा होता है, दूसरे देश के गुप्त केंद्रों को जानने के लिए तथा अपने स्वायों की सिद्धि के लिए अनेक राजनयत्र जासूची कार्यवाही कार्यों है। शीरपुद्ध के समय पारपारव और साम्यवादी देश एक दूसरे पर राजनीतिक जासूची करने का आरोप दातारी थे।

4 सन्धि वार्ताएँ (Negotiations) राजनय का यह कार्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। णॉज एक कैनन ने इसे मुख्य राजनियक कार्य कहा है। पाजनयह व्यक्तिगत कर से लिसी राज्य के साम्य समझीता वार्ता करता है अस्य करान्तांड्रीय सम्येतन में अनेक राज्यों के साम्य वार्ता करता है। दोनों ही अवसर्य पर यह अपने राष्ट्रीय हित में यह कार्य करात्र है। राजनयह दो दोनों है अवसर्य पर यह अपने राष्ट्रीय हित में यह कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य करता है। साथ वार्ता के कि सार होते हैं। वहन्ती अपने देश के प्यस्त में सीदेवाजी करता है। साथ बार्ता के कई सार होते हैं राज्यप्रध्यों के बीध स्त्रीय वार्ताण विदेश साथिय इंडाप पत्र प्रयक्तार के माध्यम से साथिय वार्ताएं साथ विदेश मन्त्रियों को अस्म मुक्तिक होती है। र प्रयासन (Administration) राजनियक विरास की हिन प्रतिनिक्त की प्रामासीक की प्रमाण करता है।

5 प्रयासन (Administration) राजनियक नियन की दिन प्रतिदिन की प्रयासनिक गतिविधियों का संवासन करने का दायित्व भी राजदूत का ही है। वह अपने दूतावास की प्रयासनिक गतिविधियों का नेतृत्व और नियंत्रण करता है।

राजनय के प्रयोग की विधियाँ (Procedure for Implement of Diplomaty)

राजनय की विनिन्न विभिन्नों का चरेरायों राष्ट्रीय हिलों की अमिनूद्धि करना तथा विश्व जनमत और अमरी प्रधा में करना होता है। मधुक राष्ट्र के सिद्धान्त मानव अधिकार विश्व जनमत और अमरीस्ट्रीय कानून आदि की दुहाई देकर अधिकाँच राज्य अपर में हा नक्षी की प्रारित करने का प्रयत्न करते हैं। इस होतु राज्य आरर्शवादी नारों जैसे स्वतन्त्रता समानता मानव अधिकार विश्व सानित आदि का प्रयोग करते हैं। पाश्वात्त पुट मदि स्वतन्त्रता और मानव अधिकार है हुदाई देता है तो साम्यावती जात समानता और विश्व शानित के नारों को दोहरता रहा। राज्य अपने व्यापादिक वाधिज्यक तथा अन्य जामी के विश्व व्यापादिक प्रतिशेष (Tade Embugos) का दबा के सामने करन में प्रयोग करते हैं। राजनाव के प्रोग्ना की परिक्रिय करना व्यापक है। इसमें सचुक राष्ट्रसा जैसी अन्तर्रास्थिय तथा सेत्रीय सस्थाओं के अर्द्ध ससदीय तरीकों से लेकर युद्ध की मण्डी स्मृतिपत्रों (Memones) और संयुक्त विश्वादि से लेकर सम्मेलनी तथा शिखर वार्ताओं तक समी

प्राचीन काल में राजनय का जो भी स्वरूप रहा हो आज यह सरवागत बन गया है। आधुनिक युग में राजनय का प्रयोग खाती सदमाव अनुनय मेल यिलाप मध्यस्थता जीव आयोग, समझीता आदि के पाध्यम से होता है। साथ ही यह भी सही है कि बढी शकियाँ

[।] औं एन पी राथ वही, पू 31

28 राजनैय के सिद्धान्त

छोटे राज्यों पर दबाद के राजनय का प्रयोग भी करती हैं । सहायता की कूटनीति में यह ददाव की राजनीति परिलक्षित होती है। समय और परिस्थिति के अनुसार राजनय की किसी भी विधि या सभी विधियों या एकाधिक विधियों को प्रयोग में लाकर राष्ट्रीय हित-सर्व्ह्रन किया जाता है। राजनय की कार्यविधि को स्पष्टत और रोषकता के साथ समझाते हुए क्विन्सी राइट (Quincy Wright) ने लिखा है "राजनय समझौते से चलता है जिसमें विरोधी को कम से कम देना पढ़े सौदेवाजी द्वारा एक क्षेत्र से देकर दूसरे क्षेत्र में लिया ज सके प्राप्त होने बाले लागें कर पुरस्कार दिया जाये भीठे शब्दों के साथ बल प्रदर्शन की तैयारी हो मखनल के दस्ताने में छिपा हुआ धूँसा हो युद्ध की धमकियों आर्थिक प्रतिबन्ध य्यापारिक भेद-भाव ऋणों की अस्वीकृति तथा दूसरे प्रतिबन्धक उपाय हाँ तृतीय पक्ष का समर्थन या तटस्थता प्राप्त की जाये महत्वपूर्ण व्यक्तियों को रिश्वत देकर या प्रचार के माध्यन से या आरवासनों द्वारा विरोधी वर्गों को विमाजित करके जनमत को पक्ष में किया जाये ! ये चपाय विशेषत[ः] तबःप्रयुक्त होते हैं जबकि विरोधी पक्ष लगनग तुल्य बल वाले हों अधिकाँर बातों में परस्पर विरोधी हों, तथा जब दातां द्विपक्षीय हो । राजनय खतरनाक तृतीय पक्ष के विरुद्ध सामान्य मोर्चा बनाने के आधार पर भी कार्य करता है । कानन, नैतिकता, मानवता एर सम्पता की दुहाई दी जाती है तथा सामान्य उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सहयोग से होने वार्ट लामों पर बल दिया जाता है।"

> राजनय का महत्व (Significance of Diplomacy)

> > अथवा

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में राजनय का स्थान (Place of Diplomacy in International Politics)

मानवीय प्रयत्नों में राजन्य वास्तद में सान्ति स्थापना और राष्ट्रीय शक्ति की उत्तरोतर वृद्धि का सबसे महत्वपूर्ण और प्रमावकारी साधन है। इसके माध्यन से राज्य अपने प्राथमिक वृद्धि का सबसे महत्वपूर्ण और प्रमावकारी साधन है। इसके माध्यन से राज्य अपने प्राथमिक वृद्धियाँ और प्रमुंग्नी दिशें की पूर्णि कराते हैं। अस्तर्राचीय राजनीय के महत्वव वहाता ही जा रहा है। मैटरनिक टेलेरों अथवा को हैन्स की की लिए तरिक से अटिल सम्बाधों का हल किया जा सकता है। राजन्य के मध्यम से की गई समस्या के हल के लिए किसी मी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेवल अथवा बैठक का व्यय एक छोटे से छोटे मुझ के व्यय से कहीं करा होता है। सन् 1991 में अरब-इजरायल समस्या के समाधान के लिए मैद्रिक में आयोजित शियर सम्मेवल प्राथम प्राप्त व्यय कि छोती अरब-इजरायल पुर एक छोटे से छोटे मुझ के व्यय से कहीं करा होता है। सन् 1991 में अरब-इजरायल समस्या के समाधान के लिए मैद्रिक में आयोजित शियर समस्यान पर क्रिक्ट गा राजन्य अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में शाह्य के प्राप्त पर की हाला में बहुत कम या। राजन्य अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में शाह्य के प्राप्त या प्रमावोत्पादन का सबसे सरल सुलन और सस्ता।स्थान है जिसका चार निर्मन राष्ट्र में स्वय सकता है। युद्ध हार स्थापित प्रमाय पर, सबस परी स्वरंग का कान्त्र है करिक राजनवंविक्षास्त्राम्यम से स्थापित प्रमाय सन्ति हारिक व विकास का जन्म दाता है।

¹ Quincy Wright Internancial Relations p 159 २२ वी एवं पी पाय चही, मूं ३३

हैंस जे मोर्नेचों के अनुसार राष्ट्रीय श्रीक के निर्माण में जो मी तत्व योग देते हैं जनमें सबसे महत्वपूर्ण तत्व राजनय या कूटनीति को उत्तरका है मते हैं। यह तत्व कितना है सबसे महत्वपूर्ण तत्व राजनय या कूटनीति को उत्तरका है मते हैं। यह राष्ट्र के तिलान के अस्यायों क्यों न है। राष्ट्र प्रेय कि के निर्देश्य करने बाते अन्य सभी तत्व तो वास्तव में वह कच्चा मात है जिसके द्वारा किसी राष्ट्र को शांति गयी जाती है। यह राष्ट्र के राजनय की उत्तरका है है त्या वानकों सुन सम्मायनाओं को वास्त्रविक शांकि की तीर्थ प्रवान कर जाम्रत करती है तथा वानकों सुन सम्मायनाओं को वास्त्रविक शांकि की तिए वार्तिन करना प्राप्ट्रीय वाकि के लिए प्राप्ति के सत्तर मी उत्तर है। है जितना कि युद्ध के समय प्राप्ट्रीय शांकि के लिए प्राप्ति के सत्तर मी उत्तर है। है जान की यह के विकास प्राप्ट्रीय सांकि के तिए प्राप्ति के सत्तर मी उत्तर है है वाना और दाव वेग्रों का सवातन। यह वह करना है जिसके द्वारा राष्ट्रीय शांकि के विभिन्न तत्वों को अन्यत्वाद्वीय परिस्थितियों में राष्ट्रीय दितों से स्वयं रुप्त के सम्मायना में में अधिकाधिक प्राप्ती रूप से प्राप्ति में सार्प्तिय है।

मॉर्गेंन्सो का मत है कि राष्ट्रों को अपने राजनय पर विभिन्न तत्वों के उत्प्रेरक के रूप में अवलम्बित रहना चाहिए जो कि राष्ट्र की शक्ति के अन्य होते हैं।

अस्तर्राष्ट्रीय राजनीति में कूटनीति का महत्व अतीत में भी रहा है और आसुनिक युग में तो यह अरदायिक बढ गया है। एक मृतर्युव अमेरिकी राजदृत लियो भी पीतर (Leou B Poullada) के अनुसार अन्तर्याईम्प्रेय राजनीति में कूटनीति का क्यान इसतिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि कूटनीति का अधिक अध्या झान (1) शक्ति और प्रमाव के अध्ययन को (Studies of Power & Influence) (2) महत्वपूर्ण अन्त कियाओं के अध्ययन को (Studies of Strategic Interactions) (3) सीदेवाजी और समझीता वार्ता सम्बन्धी अध्ययनों को (Studies of Barganing and Negousitons) एवं (4) निर्माय करने सम्बन्धी अध्ययनों को (Studies of Decision making) सुधारता है।

राजनय शान्ति सरमण युद्धों को रोकने और मैंबी स्थापित करने का एक मात्र सफल सायन है। सोहार्द्रपूर्ण बातावरण में की गई समझीता वाती एक दूसरे के दृष्टिकोण को समझाने में सहायक होती है। इस प्रकार की चार्ताओं से मित्रता प्रगाद होती है तथा भावी गत्तरफहिमों को दूर कर नावी सहयोग के लिए मार्ग प्रमास्त होता है। यह निर्विचंद सत्य है कि राजनव मानव के लिए शान्ति स्थापना का सर्वोच्य प्रमावकारी उपकरण है।

Margenthau Polit es Among Nations p 135 37

David 5 Melelian William C Olson Fred A Sandermann The Theory and Practice of International Relations 1974 (Article by Leou B Poullads) p 199

राजनय राष्ट्रीय शक्ति के हथियार और साधन के रूप में

(Diplomacy as a Weapon and Tool of National Power)

राज्यय राष्ट्रीय राष्ट्रिक है दिनित्र राष्ट्री को गतिशीलता एव एकरुनता प्रदान करता है। राष्ट्रीय हितों की प्रगति के लिए शक्ति के जो दिनित्र राख हैं चर्के चेजनय के मध्यम से ही दास्विदक रूप में प्रमादी बनाया जो सकता है।

चारणिय राष्ट्रीय दिव में अनिवृद्धि का सबसे महत्यपूर्व समय है। विदेश नीति वो बाहे जितनी अंच्छी तरह ये जन बद्ध किया जाए, उसकी सकतरा अन्तदोग्रह्मा काम और दुशस चजनम पर निर्नर बन्दी है। एक सही, सुनियोजित, विदेकपूर्व और सक्रिय कूटनीत राष्ट्रीय दिव की अनिवृद्धि में जिल्ला महत्यपूर्व योग दे सक्सी है उतना अन्य कोई समन नहीं।

हैंत के मॉर्नियों के अनुसार "उतम केती की कूटनीति रिदेश-नीति के लस्य तथा सधम की राष्ट्रीय शक्ति के समर्पति से सामज्यस स्थानित कर दीया दिन राष्ट्रीय शक्ति के गुत चेती को राधेन कर तेनी और उन्हें पूर्ण स्थायी रूप से राजनीतिक स्थायीत में परिवार कर देगी। राष्ट्रीय प्रयत्नों की दिशा प्रदान कर वह अन्य हत्यों जेते—कीटोंगिक सम्माजनीं, कैंगिक देयारी, राष्ट्रीय कवित तथा राष्ट्रीय मनोबन का मन्यद बढ़ा देगी।" इस्तर से चतम और कुशल राजनय से राष्ट्रीय शक्ति में निरस्तर अन्दिन्दी होती रहती है।

> राजनयिक सम्बन्धीं की स्थापना और मान्यवा द्वारा राष्ट्रीय हितों की अनिवृद्धि (Promotion of National Interest through Recognition and the Establishment of Diplomatic Relations)

जब कोई भी नया राज्य स्वदानहीं प्राप्त करके अस्टिल में आता है हो अन्य देशों की सरकारों मानव्य एसे मानव्य प्रयान करती हैं। इसी प्रकार कर कोई नई सरकार वैयानिक और व्यवस्थित प्रज्ञिम संसातव्य होती हैं। कथाया क्या में उसकी मिन्दिय प्रमुख स्थानित होता है दो कन्य सरकारों समानव्य एसे अन्य मानवा प्रयान कर देशे हैं। इस प्रकार की मानवार देने के कूटनैरिक या एक्यिक कदन के पीछे राज्य के अन्यने हित निर्देश होते हैं। मान्यता देने वाली सरकार समझती है कि अनुक राज्य या अनुक सरकार को मान्यता देने अयदा दूसरे राज्यों और सरकारों से राजनिक सम्बन्धों की स्थापना करने से उसके हिसों कम सबर्धन होगा। आज के विश्व में प्रस्थेक राज्य की सुरक्षा और करवान औरिक रूप से इस बात पर निर्मर है कि अन्य राज्यों के साथ उसके सावन्य कही तक सत्तोषणनक है। 'राजनियक सम्बन्धों के माध्यम से एक सरकार अन्य राष्ट्र की मीतियों को प्रमादित करने में समर्थ हो सकती है वह अपने लिए एक सम्मानजनक सातावरण का निर्माण कर सकती है और अपनी नीतियों के लिए दूसरे राज्यों का कियान्यक समर्थन प्राप्त कर सकती है। राजनियक सम्बन्धों की स्थापना द्वारा लामकारी वाणिज्यक और साँस्कृतिक आदान प्रसन्त को प्रोत्याहन दिया जा सकता है। जो नागरिक विदेशों की यात्रा करते हैं

कभी कभी सरकारे अपनी मान्यता सहतं देती हैं अर्थात् मान्यता प्रदान करने के बदले में किसी 'समर्थन की माँग करती है या कोई परिवर्तन चाहती है। जब कभी ऐसा होता है तो प्राप्ट दूसरी सरकारें जिनकी नीतियों से अनुक नमर्थन या परिवर्तन टकराता है अपनी आपती प्रमुद करती है। छात ने 1778 हूं में समुक्तराज्य अमेरिका को मान्यता है अपनी आपती प्रमुद करती है। छात ने 1778 हूं में समुक्तराज्य अमेरिका को मान्यता है जितका अर्थ था युद्ध में सहत्वागिता। प्रयाप महायुद्ध काल में निजराष्ट्रों ने पेकांस्तीवाकिया के नए राज्य की सरकार को छात समय ही मान्यता दे दी जबकि उसका राज्य के किसी मी क्षेत्र पर वास्तविक नियन्त्रण था ही नहीं। स्पेन के गृहयुद्ध के प्रारम्भ में है इटली और जर्मनी दोनों ने क्षेत्रके कि स्वत्या हो हो हो से के गृहयुद्ध के प्ररम्भ में ही इटली और जर्मनी दोनों ने क्षेत्रके कि उपन्यक्त था हो नहीं। स्पेन के गृहयुद्ध के प्ररम्भ में ही इटली और जर्मनी दोनों ने क्षेत्रक के विजय स्विमिश्वत हो जार हो जार से कि इटली और जर्मनी दोनों ने क्षेत्रके के उपने स्वत्य हो जार हो जार से कर स्वत्य हो हुए।

कभी कभी सरकार मान्यता रोक भी देती है...विशेषकर तब जबिके वह किसी परिवर्तन का विरोध करती है। समुक्ताराज्य अमेरिका का वा देखा रहा है कि जसने प्राय क्रामिक्ष सामध्येक होती है। समुक्ताराज्य अमेरिका का यह रवेया रहा है कि जसने प्राय क्रामिक्कारी सरकारों को मान्यता देने भे सेकोप प्रदर्शित किया है या लग्ने समय कर उन्हें मान्यता नहीं है। बहुत से लेटिन अमेरिकी राज्यों को अमेरिका ने तरकात मान्यता देने से इन्कार किया क्योंकि सत्ता परिवर्तन असीविधानिक राज्यों है। इस्ता था। पर इसका यह मतत्त्व नहीं है कि अमेरिका सीवधानिक परिवर्तन का दिमार्थी था बहिला बात यह थी कि अमेरिका पिछली सरकार का पदम नहीं माहता था अधीत नई क्रामिक्ता सरकार को सत्ताक्ष्य नहीं देखना चादता था सामध्यायी चीन के किए अमेरिका होता सामध्यायी चीन के किए अमेरिका हाता सामध्यायी चीन के मान्यता हो तक अपर में तटकी रही। सन् 1971 ई में समुक्त राज्य अमेरिका हाता सामध्यायी चीन को मान्यता दों पढ़ कि वह । अक्टूबर 1949 ई को ही दिवर मानियन पर असितव ने आ गया था। जनवरी 1992 को नारत ने इजरायत को मान्यता दें हैं।

¹ Lernon Van Duke International Politics p 24%

32 राजनय के सिद्धाना

राष्ट्रीय शक्ति के हथियार और साधन के रूप में राजनय पर मॉर्गेन्यों के विधार (Morgenthau on Diplomacy as a Weapon and Tool of National Power)

राजनय को राष्ट्रीय राक्ति से नित्र करके नहीं देखा जा सकता । राजनय राष्ट्रीय राक्ति का एक अत्यन्त प्रभावशाली हथियार और सचन है राष्ट्रीय हिटों की रहा का दिशेष उत्तरदायित राजनयज्ञों पर है। सफल राजनज दही है जो राष्ट्रीय स्दर्शों को परार्थपरक या उससे अदिरोधी के रूप में दिखाये। किसी मी देश की दिदेश-नीति निर्माण का प्रेरक तत्व राष्ट्रीय हित हुआ करता है। किसी भी राजनय का मुलमृत एव सर्वेश्य छदेश्य अपने राष्ट्रीय हितों की रहा तथा चनकी अनिदृद्धि होता है। मॉर्गेन्यो ने तो राष्ट्रीय शक्ति के निर्माण में योग देने वाले सनी तत्वों में सबसे महत्वपूर्ण तत्व राजनय को माना है। पिछले अध्याय में एक स्थल पर उद्घृत किये गये मॉर्गेन्थों के इन शब्दों को हम पून. दोहराना चाहेंगे—"राष्ट्रीय शक्ति को निश्चित करने दाले अन्य सनी तत्व तो दास्तव में दह कच्या माल है जिसके द्वारा किसी राष्ट्र की शक्ति गढ़ी जाती है। यह राष्ट्र के राजनय की उत्तमता ही है जो इन तत्वों को एक लड़ी में गूँचता है जन्हें दिशा और गुरुता प्रदान करता है त्या जनदी सुप्त सम्मादनाओं को दास्तदिक शक्ति की सींसें प्रदान कर जाग्रत करता है। विसी राष्ट्र के दिदेशी मामलों का उसके कटनीतिजों द्वारा सदालन करना राष्ट्रीय शक्ति के लिए शान्ति के समय भी चतना ही महत्वपूर्ण होता है जितना कि युद्ध के समय । राष्ट्रीय शक्ति के लिए सैनिक नेट्ल द्वारा ब्यूड-रचना और दाव पेषों का-समालन । यह वह कला है जिसके द्वारा राष्ट्रीय राक्ति के विनिन्न तत्वों को अन्तर्राष्ट्रीय परिस्पितियों में राष्ट्रीय हिर्टों से सफ्ट रूप से सम्बन्धित मामलों में अधिकाधिक प्रमावी रूप में प्रयोग में लाया जा सकता

मॉर्गिन्यों ने राजनय को राष्ट्रीय शक्ति का महिल्क (Brain of National Power) माना है और राष्ट्रीय मनोस्त या हीसते को उसरी कारण (National morale is it soul) की सड़ा दी है। यदि राजनय का दृष्टिकोन यूचित है इसके निर्मय गतन है तो अन्य तत्व करतीगता एक राष्ट्र के लिए कम यंग्यान दे पाएँगे। राजनय में पिछड जाने पर एक देश करतीगता एक राष्ट्र के लिए कम यंग्यान दे पाएँगे। राजनय में पिछड जाने पर एक देश करतीगता करने कम्य तत्वों के लागे को मी छो देशेगा और अपने अन्य तंष्ट्रीय लक्ष्तों की पूर्व में कसकत रहेगा या रहुत दूर्वत लिड होगा। मॉर्गिन्यों का स्तर्भ अपने क्रिये करने प्रेस में प्रेस करने करने करने में सहस्त है कि सहस्त के कुर है की अपने अपने पार्ट्रीय शक्ति के हत्वों का समूच प्रयोग करती है और इस तरह क्या देशों हो करने की पूर्व करनी स्तर्भ में सहस्त हो जानी है अपने राष्ट्र की शक्ति मान सहस्त करने में सहस्त हो जानी है। अपने राष्ट्र की शक्ति करने कर लिख मान सुर्वित करने राष्ट्र की शक्ति के स्तर्भ में करने की करने में सहस्त हो जानी है। अपने राष्ट्र की शक्ति के स्तर्भ में कर रहेगा के स्तर्भ में पार्ट्र करने हैं कि साम स्तर्भ की सहस्त के हमस्त के इस्त मान स्तर्भ के सक्ता है। उन्हीं के राष्ट्रीय में "इंटिसन में प्राप्त करने की प्राप्त साम ने वित्र के स्तर स्तर्भ की सहस्त के देशा मान प्राप्त है जिसके पास मानित्व की साम स्तर्भ हो थे। एतन क्ष्मी का राजनय दिशेतानी के रुप्त राष्ट्रीय शक्ति हो प्राप्त कर लेगा और साम के स्वर्ध के स्वर्ध के साम कर के साम और साम उत्तर साम के स्वर्ध के साम कर रहेगा और साम है सामी का प्राप्त कर रहेगा और साम के स्वर्ध कर रहेगा और साम है सामी

रूप से राजाितिक सत्स्ताओं मे परिशत कर देशा। राष्ट्रीय प्रयत्न को दिशा प्रयान कर वह अन्य सत्यों जैसे अतिविश्वक सम्मावताओं सैनिक सैयारी राष्ट्रीय घरित्र तथा सम्द्रीय हैंसते का प्रमाय बचा देशा। यदि नीति के तत्त्व तथा सायन वस्य रूप से दिदित हों हो सप्दर्भिय शक्ति अपनी तमाम सम्मावताओं का पूरा सदुययोग कर सामान्यतया किन्तु युद्ध के समय विशेष रूप से उध्याप शिखर पर पहुँच सत्वती है।

मॉर्गे-थो ने अपने विवरण में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति जगत के उदाहरणों को प्रवुर मात्रा में गिनाते हुए यह बताया है कि राजाय विश प्रकार राष्ट्रीय शक्ति का मस्तिष्क है तथा अन्तर्राष्ट्रीय राजिति में राष्ट्रीय हित की अमिवृद्धि का अत्यन्त शक्तिशाली तत्व है। दो महायुद्धों के बीच समक्तराज्य अमेरिका ने उस राष्ट्र का उत्तम उदाहरण प्रस्तत किया जो शक्तिशाली होने के बावजूद विश्व मामलों में हल्की भूमिका अदा करता है। सयक्तराज्य अमेरिका की विदेश रिति इतनी शिथिल रही कि वह अपनी हरि के पर्ण प्रभाव को अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर केन्द्रित नहीं कर सका । अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर सयक्तराजा की शिरु का असर दिसशाजनक प्रतीत हुआ वर्षींकि अमेरिकी कूटनीति इस तरह संवालित हुई मानों अमेरिका की भीगोलिक स्थिति के लाम उसके प्राकृतिक सामनों उसकी औद्योगिक सम्मावनाओं जनसंख्या गुण आदि तत्त्वों का अस्तिव ही न हो । सन 1890 से 1914 ई के मध्य का प्रॉस एक ऐसे राष्ट्र का उदाहरण है जो अन्य पर्शों में बरी तरह पिछड़ गया हो लेकिन केवल शानदार राजनय (Brillians Diplomacy) के बल पर शक्ति के उच्च शिखर पर पहेंच गया हो । सन् 1870 ई मे जर्मनी के हाथों बुरी तरह पराजित हो ो के बाद प्रांस एक दितीय श्रेणी की शक्ति रह गया और बिस्मार्क की जादर्ड कटनीति ने उसे यरोप के राष्टों से अलग अलग कर बसबर द्वितीय श्रेणी की शक्ति ही बनी रहने दिया. लेकिन 1890 ई में बिरमार्व के पतन के बाद जर्मनी वी विदेश नीति रूस से दूर होने लगी वह ग्रेट ब्रिटेन की शकाओं के समाधान के लिए इच्छुक नहीं रही और जर्म ही विदेश नीति की इन त्रुटियों का फ्राँसीसी राजनय ने पूरा लाग उठाया । १४९४ में फ्राँस ने रूस से विए गए १४९१ के राजनीतिक समझौते में सैनिक सन्धि को जोड दिया और 1914 तथा 1912 में उसने ग्रेट बिटेन से औपवारिक समझौते हिए। 1914 में जहाँ फ्रॉस ने एक समृद्ध मित्रराष्ट्र को अपना मददगार पाया वहाँ जर्मनी के एक मित्र इटली ने अपने मित्र को ही घोखा दे दिया और जर्मनी के अन्य मित्रों आरिट्रया हगरी बल्गेरिया तथा टर्की आदि दी कमजोरियाँ भी जर्मनी पर भार बन गई । मॉर्गेन्थों के अनुसार यह कार्य फ्रॉस के प्रतिभावान कूटनीतिज्ञो माइल बैरे (इटली में फ्राँस का राजदूत) जल्सकेंबोन (जर्मनी मे फ्राँस का राजदूत) पौल केबोन (ब्रिटेन में फ़्राँस का राजदूत) मोरिस पोलियो लोग (रूस मे फ्राँस का राजदूत) आदि का धा ।

पुत्तरच दोनों दिख महायुद्धों के मध्य अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में रोमानिया ने अपने साधनों को तुस्ता से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण मुनिका प्रस्तुत की थीं उसका मुख्य श्रेय एक व्यक्ति अर्थात् विदेस मन्त्री हिंदुनेत्वयु वो था। इसी प्रकार इन्ते प्रदेश तथा अतिनियत्त विद्यों से होने के बावजूद जंसीसवी शतान्त्री में बेन्जियम ने जो शक्ति प्राप्त कर ली थी। वह उसके 34 राजनय के सिद्धान्त

तीरण दुद्धि दाले तथा चुस्त राजा लिओपोल्ड प्रथम व लिओपोल्ड हितीय के व्यक्तित्व के कारण थी। सत्रहर्दी शताब्दी में स्पेन की कूटनीति ने तथा सत्रीसर्दी शताब्दी में तुर्किस्तान की कूटनीति ने उनके राष्ट्रीय हम की खाई को कुछ समय के लिए पाटे रखा था। ब्रिटिश

शक्ति के उतार-चढाद ब्रिटिश कूटनीति की उत्तमता के परिदर्तनों से जुड़े रहे हैं। कार्डिनल बूल्टे कसलरे तथा कर्निंग ब्रिटिश कूटनीति के उच्चतम शिखर का प्रदर्शन करते हैं जबकि लॉर्ड नार्य तथा नेदाइल चैम्बरलेन दोनों हास के द्येतक हैं। रिचैलू मजरिन अधदा तेलेरी की कटनीत के दिना फ्राँस की शक्ति क्या होती ? दिना दिस्सार्क के उर्मनी की शक्ति क्या

होती ? दिना केंद्र के इटली की शक्ति क्या होती ? इसी तरह नदीन अमेरिकी गणतन्त्र अपनी शक्ति के लिए क्या फ्रैंकलिन, जेकरसन, मेडीसन एडम्स के प्रति ऋगी नहीं है जो उसके राजदत व राज्य-सदिव थे ? और मी उदाहरण लें तो सन् 1890 में दिस्मार्क के

राजनीतिक मच से हट जाने के उपरान्त जर्मनी कटनीति के गर्मों में गम्मीर तथा स्थायी गिरादट का गई । फलस्वरूप जर्ननी की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति की क्षति का अन्त उस सैनिक परिस्थित में हुआ जिसका सामना उसे प्रथम दिख महायद में करना पढ़ा । सन 1933 से 1940 तक की जर्ननी कुटनीति की दिजय एक व्यक्ति हिटलर के मस्तिष्क की दिजय का परिणान थी और उस मस्तिष्क के क्षय के कारण ही नाजी शासन के अन्तिन दर्शों में उसे दिप्तसहारी दर्घटनाओं को सहन करना पढा था।

मॉर्गेन्थों का मत है कि राष्ट्रों को अपने राजनय पर चन दिनित्र तत्वों के चठोरक के रूप में अदलन्दित रहना चाहिए को कि राष्ट्र की शक्ति के अग होते हैं दसरे शब्दों में, जिस प्रकार भी ये दिनित्र तत्व कुटनीति हारा अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर हादी कराए जाते हैं. वहीं उस क्षेत्र में राष्ट्रीय शक्ति का रूप होता है । इसतिए यह अत्यन्त आदश्यक है कि दैदेशिक राजनय सगटन सदा सत्तर अटस्या में रहे ।

राष्ट्रीय राक्ति के राक्तिराली सचन के रूप में राजनय को प्रतिष्ठित करते हुए लिखा है : "अनेक लोगों को राजन्य का कार्य नैतिक दृष्टि से बाहे जितना मी अनाकर्षक प्रतीत हो, राजनय एन सम्पूर्ण प्रमसत्ता सपत्र राष्ट्रों में शक्ति के लिए सधर्ष का लंहन है, जो आपस में स्व्यदस्यित एव शान्तिपूर्ण सम्बन्ध स्थापित रखना कहते हैं । यदि अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र से शक्ति के लिए संपर्ष को रोकने का कोई उपाय होता, तब राजनय स्टय ही लख हो जाती। यदि दिख के राष्ट्रों का व्यवस्था एवं अराजकता, शान्ति एवं युद्ध से कोई सम्बन्ध नहीं होता. तब वे राजनय का त्याग कर यद की वैदारी कर सकते थे तथा सर्दोत्तम परिनामों की आशा कर सकते थे । यदि चाट्ट, जो सम्पूर्ण प्रमुसता-सम्पन्न हैं, जो अपने क्षेत्रों में सर्दोच्च हैं त्या जिनके ऊपर कोई सम्बन्धिकारी नहीं हैं पारस्परिक सम्बन्धों से

शन्ति एवं व्यवस्था का सरक्षण चाहते हैं तब छन्हें अनुनय, समझौते तथा एक-इसरे पर दश्य डालने का अवस्य प्रयत्न करना होगा। इसका अर्थ यह कि उन्हें राजन्यिक प्रक्रियाओं

च अदश्य प्रयोग एव दिकास करना होगा तथा चन पर निर्मर करना होगा।^{भी} उपर्युक्त 1 Morgenthau Polaxis Among Nations (Hand) p. 646-47

विस्तेषण के आपार पर यह कहा जा सकता है कि राजनय शाष्ट्रीय-शक्ति का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण उपकरण या साधन है।

> राष्ट्रीय शक्ति के साधन के रूप में शाजनय की सफलता के लिए नौ नियम (The Nine Rules' for the Success of Diplomacy as a Tool of National Power)

मॉर्गेन्सो का विचार है कि आयुनिक गुग में कुछ ऐसे विकास हुए हैं जिनके परिणामसकरूप 'राजनाय की प्रमाशमीलता को आपात पहुँगा है सामारि मारि राजनाय उन तरीकों का पुन प्रमोग कर विनकें छारा सुदूर अतीत से राष्ट्रों के पारसारिक राम्ब्य निवानित्रत हुए हैं तो इसकी उपयोगिता का पुन प्रवर्तन हो सकता है। मॉर्नियों ने राजनाय के 'मी नियार्ग' का उन्लेख विज्ञा है जिनके माध्यम से यह 'सामारोजन ह्यारा सानित (Peace Through Accompodation) स्थापित कर सकता है और राष्ट्रीय शक्ति प्राप्त राष्ट्रीय हित सबर्दिन के एक मोकिसारी साथन के कम में पन प्रतिविध्त हो सकता है।

- 1 राजनय को धर्मपुद्धीय भावना से अवस्य रहित होना होगा (Diplomacy must be divested of the crusading spirit) यह उन निगमों में से पहला नियम है जिसकी अवदेलना राजन्य युद्ध का सकट लेकर ही कर सकता है। कोई मी घर्म अयदा मत पूर्व सदलना उपन्य युद्ध का सकट लेकर हो कर सकता है। कोई मी घर्म अयदा मत पूर्व सत्य नहीं होता अत अपने धर्म को ही सत्य मानकर उसे योच समार पर आरोतिक करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए। ऐसा कोई मी प्रयत्न गानित के लिए पातक होना। विदेश नीति के प्रयोग की परिभाश एक विश्वप्यापी राजनीतिक धर्म के रूप में नहीं की जानी चाहिए। धर्मपुद्धीय मानना से रिवेट होकर ही राजनय को उन वस्तिविक समस्याओं का सामता करने का अवसर प्राप्त होगा जिनके लिए सानिपूर्ण समाधान आवस्यक है। राष्ट्रवादी विश्वप्राद के धर्मपुद्धीय मातक होगा जिनके लिए सानिपूर्ण समाधान आवस्यक है। राष्ट्रवादी विश्वप्राद के धर्मपुद्धीय मातक और राष्ट्रिय हा सकता कै परिस्थाप पर हो गाजनय राष्ट्रीय शक्ति और राष्ट्रीय हानस्वर्धन का एक सफल लाधान सिद्ध हो सकता है।
- 2 दिदेश नीति के ध्येयों की परिभाश राष्ट्रीय हित के अर्थ में अवश्य करनी होगी सच्च इसका य्योष्ट शक्ति हारा अवश्य पोषण करना होगा (The objectnes of Foreign Policy must be defined in terms of the national interest and must be supported with adequate power) गारित सस्यण राजन्य का ग्रह दूसरा निमम है। एक शान्ति-प्रिय राष्ट्र के राष्ट्रीय हित की परिभाश केवल राष्ट्रीय सुरक्षा के अर्थ में हो सकती है, स्था राष्ट्रीय सुरक्षा की परिभाश राष्ट्रीय शेष एव इसकी सस्याओं की अरबण्डता के स्वयं में अवश्य होगी चाहिए। तब राष्ट्रीय सुरक्षा वह न्यूनतम यस्तु है जिसकी राजनय को यसेच्छ गाँकि हाला विमा समझीते के रहा करनी होगी।
- 3. राजनय को राजनीतिक क्षेत्र पर दूसरे राष्ट्रों के दृष्टिकोण से अवश्य देखना होगा (Diplomacy must look at political scene from the point of view of other nations) राजनय को यदि उसे राष्ट्रीय हित-सम्बर्धन की दृष्टि से सफल होना है

¹ Morgenthau Politics Among Nations (Hinds), p 646-47

दूसरे राष्ट्रों के दृष्टिकोन और राष्ट्रीय हित को मी ध्यान में रखना धाहिए। "आतम-ध्यान की अतिहायता एवं अन्य लोग स्तमादतः क्या आशा अयदा किस से मय करते हैं, इस दिवर के पर्गतः अमाद के समान किसी राष्ट्र के लिए और कृष्ट भी धातक नहीं है।"

4. राष्ट्रों को उन सभी प्रश्नों पर, जो उनके लिए महत्वपूर्ण नहीं है, समझौता करने के लिए अवश्य इच्छुक रहना होगा (Nations must be willing to compromise on all issues that are not vital to them) यही राज्यच का कार्य सबसे अधिक कटिन है। प्रत्येक राष्ट्र के स्थायी और अस्थायी दो प्रकार के हित है। अस्थायी हित अधिक महत्वपूर्ण नहीं होते कर, ऐसे राष्ट्रीय हित्ते पर समझौता करने की महत्वा रखनी चाहिए।

5. यवार्य लाच की वास्तदिकता हेतु निरर्धक अधिकारों की प्रतिकाराय का परित्याग कर चीतिए (Give up the shadow of worthless rights for the substance of real advantage). समझै ता करते समय चाजनयज्ञ को अमूर्त बतों की अमेशा टप्पन्त समुख्ये हो प्यान में स्वकर दिसर करना चाहिए। स्वन्नयळ के समझ देवता एवं अदैदार के वीच नहीं, दरन् राजनीतिक दिदेक एद राजनीतिक मुर्वता के बीच दिकस्प होता है।

6 अपने आपको कभी ऐसी स्थिति में न रिक्षए जारों से आप दिना प्रतिशा गंगए पीछे नहीं हट करते क्या जारों से आप दिना गामीर संकर्यों के आपे नहीं बढ़ सकते (Never put yourself in a position from which you cannot advance without grave risks): चण्डनिक परिवानों से करावधान सकत एक राष्ट्र किसी हैसी दिविं के साथ अनन्यना स्थापिन कर सकता है, जिसे अपनाने का उसे अधिकार हो भी सकता है और नहीं भी,और तह किस सम्बद्धार होता कित हो लगा है। उपनी प्रतिश्चा में मामीर हिने के निना एक राष्ट्र उस स्थिति से सीधे नहीं हट सकता। चण्डनिक्षित्र सकतें, और सम्पादन युद्ध के सकत के अपने को अन्तुत किए दिना पर उस स्थिति से आगे भी नहीं बढ़ सकता। उपनितित्र सकतें, और सम्बद्धा युद्ध के सकत को प्रतिश्चा में सम्बद्धा होता राष्ट्र के सकता के उपने को अपने को अपने को साम प्रतिश्चा सकता करता और सिरोबनर उपित समय में उनते अपने को मुक्त करने से हट्टर्डक अस्तिआर करता अपने पाजना का लग्न है। सन् 1870ई के प्रकेटियोनस युद्ध के टीक एक्टर्ने नितित्र इसके अप उदाहरण है। ये चराहरण यह में प्रतिस्था इसके अप उदाहरण है। ये चराहरण यह में प्रतिस्था इसके अप उदाहरण है। ये चराहरण यह है। प्रतिस्था इसके अप उदाहरण है। ये चराहरण यह है। वह सिराब करता है कि युद्ध के सकत और इस नियम के उत्तरपान है कितारी प्रतिख्य है।

7. एक निर्देत सदिव राष्ट्र को अपने तिए कभी निर्मय नहीं करने दीलिए (Never allow antestal any observable of the second of the sec

1853 के क्रीमिया मुद्ध के ठीक पहले टकी ने जिस प्रकार ग्रेट-ब्रिटेन एव फ्रांस को ब्राय्य किया उसमें इस नियम के उल्लायन का ब्रेस्ट उदाहरण मिलता है। युरोपीय-साय (The Concert of Europe) रूस तथा टकी के बीय के साम के नियदार के लिए एक सामक्रीते को प्राय के नियदार के लिए एक सामक्रीते को प्राय की काम स्वीकार कर पूछा था। उसी सामय टकी ने यर जाता हुए कि रूस के साथ युद्ध होंगे पर पारधारय साक्रियों इसकी सहायदा करेंगी उस युद्ध के असम्म के लिए पूरा प्रयत्न किया। पहली केट-ब्रिटेन एव फ्रांस के लिए पूरा प्रयत्न किया। पहली केट-ब्रिटेन एव फ्रांस के तीना पड़ा। इस प्रकार टकी ने अपने राष्ट्रीय हितों के अनुसार प्रेट ब्रिटेन एव फ्रांस के लिए पूर्व प्रति सानिय के प्रत्य के साथ आवश्यक नहीं था और ये इसके आस्म को रोकने में प्राय सासका हो गए थे तथापि उन्हों के निर्णय स्वीकार करना पड़ा। उन्होंने कार्य की अपनी स्वत्य सामजित कर दिया था। जिसने पत्रकी नीतियों पर अपने नियन्त्रण का अपने हितों के लिए प्रयोग किया।

8 सासक्य सेनाएँ विदेश मीति की यन्त्र हैं, इसकी खासी भहीं (The Armed Forces are the instruments of foreign policy, not its matter) - हम तियम के पालन के दिना कोई सारक एक सालियुर्ण विदेश-नीति सम्म्य नहीं है। यदि सेना विदेश नीति के सात्यों के नियार के सात्यों को नियारित करे तो कोई मी राष्ट्र सरायिति की नीति का अनुसरण नहीं कर पालता। । सात्राज्ञ सेनाएँ युद्ध के पन्त्र हैं विदेश नीति की का एक पन्त्र है। युद्ध का रूप सात्राज्ञ सेनाएँ युद्ध के पन्त्र हैं विदेश नीति की का एक पन्त्र है। युद्ध का रूप से सरात्र एव सार्वादित हैं अर्थात् पानु की क्या के स्वत्र के अधिक मेश स्थाना पर अर्थित से सात्राज्ञ हैं अर्थात् पानु के काय के सदसे अधिक मेश साथा पर अर्थित से आधिक हिंसा का प्रयोग करना। फलत तीतिक नेता अव्यव है दुसाड़ी हम ये विचार करेगा। विदेश-नीति का प्रदेश सार्वाद है। अपने महत्वपूर्ण हिंतों की रखा के सात्राच्यां हम पान्त्र पूर्व हों के इच्छा को तीत्राज्ञ नहीं के का साथेत एव सात्राज्ञ है अपने मार्ग की साथार्थ के सत्यापूर्ण हिंतों की रखा सुका हो है। अपने महत्वपूर्ण हिंतों की रखा सार्वाद है अपने मार्ग की साथार्थ के सत्यापूर्ण हों के स्थाना। विदेश-नीति के या साथेत एव सत्तर्व हैं अपने मार्ग की बाधार्थों को सामाल्त कर आगे बढ़ना सही बर्च एकके समस्य पीधे हटना चन पर विजय पाना उनके साथेप चारे सत्तर्ता, यहा अनुनय वार्ता एव दक्षाव की सहस्रता हम पर है वीरे-पीते से स्था के स्था से के सा साथेत्र स्था के स्था से स्था साथे स्था से स्था के कर से से देखा हम से परिताह करता। हम साथ स्थान करता है। यह साथ स्थान करता है। इस्ता करता है। इस्ता इसका की हिताया करता है। इस्ता करता की श्रिताय करता है।

9 शरकार जनमत की नेता है, इसकी दास नहीं (The Government is the leader of public opinion, not its slave) - यदि विदेश गीति के सम्रादल के लिए जगरदायी व्यक्ति इस नियम का अविधिक्ष रूप में प्रमान की रखते हो से राजवान के पूर्वताली नियमों का भी अनुपातन नहीं कर सकेंगे। जनमत की अधिकविद्यों पुक्तिगात नहीं की अधिकविद्यों पुक्तिगात नहीं की अधिकविद्यों पुक्तिगात होने की अधिकविद्यों पुक्तिगात नहीं की अधिकविद्यों पुक्तिगात की स्वाधिक हो की स्वाधिक हो की स्वाधिक हो अधिकविद्यों पुक्तिगात की स्वाधिक हो अधिकविद्यों नीति स्वाधिक की स्वाधिक हो अधिक स्विधिक नीति की स्वाधिक हो अधिक सिद्यों गीति स्वाधिक की स्वाधिक स्वाधिक के स्वाधिक स्वाधिक के स्वाधिक स्वाधिक स्वाधिक के स्वाधिक स्वधिक स्वधिक स्वाधिक स्वाधिक स्वधिक स्वधिक

ले आत्मसन्दंग करना चाहिए और न ही उसे इसकी अवहेलना करनी चहिए । उसे ऐस माग अपनाना चाहिए कि दह दोनों स्थितियों के अनुकृत रह सके। एक शब्द में, उसे नेट्य

अदश्य करना होगा । मॉर्गेन्यों ने यह प्रतिपादित किया है कि "ददि कोई राष्ट्र राजनय को प्रयोग में नहीं

लाना चाहता रूपदा उसके पास राजनय या कूटनीति को कार्यन्वित करने की हमदा नहीं है तो दह अपने राष्ट्रीय हित-सम्दर्धन के लिए युद्ध के अदिरिक्त अन्य किसी दिकत्य का

सहारा नहीं से सकता । यदि वह युद्ध का सहारा भी नहीं हेना चाहता या नहीं से सकता तो उसे अपने राष्ट्रीय हितों का ही परित्याग करना होगा।" इस तरह से राजनय शांति के सरस्या का सबसे सत्तम सन्धन है।

राष्ट्रीय हित की अभिवृद्धि के लिए राजनय के मूलमूत कार्य (Substantive Functions of Diplomacy for the

Promotion of National Interest)

राजनय का अन्तिन लक्ष्य राष्ट्रीय हित का सम्दर्धन तथा निर्वारित मीति के स्टेश्यों की पूर्वें का प्रयत्न है। राष्ट्रीय हित की अनिवृद्धि के लिए राजनय के जो मूलमूत कार्य हैं उन्हें

दिनित्र दिवारको राजदूतों और राजनीतिकों ने दिनित्र प्रकार से म्पष्ट किया है। इस मृत्यय ने हम हिन्द नीति शास्त्रियों के मत्, दिख्यात राजनयङ सरकार पत्रिकर पामर एवं पर्किन्स, किदन्ती राइट कोरेनहीन, चाइल्डस तथा पैडलकोई एवं लिकन के मता लियों ही चौलाद के नत अदि का दिस्तार से उल्लेख प्रयम अध्यय में 'राजनय के कार्य' (Functions of Diplomacy) নানক মীৰ্মক ক ভন্তৰ্যন্ত কৰে অক চুঁ ।

राजनय के साधन एवं तरीके, राजनियक व्यवहार का विकास-राजनय के यूनानी, इटालियन, फ्रॉसीसी और भारतीय मत

(Means and Methods of Diplomacy, Evolution of Diplomatic Practice-Greek, Italian, French and Indian School of Diplomacy)

राजनय एक कला है जिसे अपनाकर विश्व के विनित्र राज्य अपने पारस्परिक सम्बन्धों में मुद्धि बर के अपने मान्द्रीय दिता वी मुर्ति करते हैं। यदि राजनम के साधन तथा सत्यों के बीध असाति हो हो दे दे करनेयारे होता है दरनम होता है तथा प्रवासी अपनीत्रीय प्रतिस्था गिर जाती है। इस दृष्टि से प्रत्येक राज्य को ऐसे साधन अपनाने चाहिए जो दूसरे साज्यों में उसके प्रति सद्भावना और विश्वास पैदा वर सहे इसके लिए यह आवस्यक है कि साज्य अपनीत्रीयों को स्थान रूप कर सो सामाण्य दूसरे राज्यों के सामाधीदित या को आनावता दें सामा ईमानदारी का प्रवाहार करें। बेहमानी तथा मात्रसाजी से बाम करने वाले राजनग्रहा अल्यकातीन त्यां में सम्बन्धा प्राप्त कर तेते हैं किन्तु दूस गिताकर ये राष्ट्र का आदित ही करते हैं। अने प्रमुप्त पाजनम् मा एकला ग्रियेवर है।

प्राप्त प्रमुख हिंती दी रहा बना निर्माण यह प्याप रख्या माधिए कि इसका मुख्य एरेराय राज्य के प्रमुख हिंती दी रहा बना रना है। टीक यही एरेर्स अन्य राज्यों के राज्य का भी है। अता प्रत्मेक राज्य को धारस्पिक अपना प्राप्त है। प्राप्त के प्रथम के धारस्पिक अपना माधिए। प्रत्येक राज्य के राज्य का धारस्पिक साम प्राप्त है। प्रस्तेक राज्य के साम राज्य के सम राज्य हो। साम कि साम कि बार करान करनी होता है। साम किता सार्वेद को का प्रत्म में है के हुए भी प्राप्त वन्तेन के हिए कुछ में कुछ स्वाप्त करना पहल है। इस्ति में मी उद्योदण प्रदार को कि कि साम कि प्राप्त के अपनी समझ हो स्वाप्त में हिए का कि प्राप्त के अपनी समझ हो स्वाप्त के हिए कुछ के अपनी समझ हो साम कि स्वाप्त के अपनी का कि के हिए का कि साम के स्वाप्त के अपनी कुछ प्राप्त साम कि स्वाप्त के साम के स्वाप्त के साम के साम के स्वाप्त के साम के साम

से बुंधे तरह दरया। उस समय ज्यंनी एक पराजित और दबा हुआ राज्य था। अतः उसने यह शोषण मजदूरी में अस्वीकार कर तिया किन्तु कुछ समय बार डिटतर के नेतृत्व में जब वह समय बार डिटतर के नेतृत्व में जब वह समय बार हिटतर के नेतृत्व में जब वह समय बार जो उसने इन समी शारों को अमन्य घोषित कर दिया तथा विश्व को डितीय विश्व हुए को दिनीयिका को सहन करना पड़ा। अतः यह स्पष्ट है कि पारस्परिक अदान प्रदेग ही स्थायी राजनय का आपर बन सकता है। बायता है हिंसी पुरंतर एक क्या एक क्या एक क्या पर अपरीत सम्बन्ध अस्तावतीन है के हैं तथा दूसरे पद पर दिरोधी प्रयाद वालते हैं जिसके फतस्तक्ष उनके मादी सम्बन्धों में कट्ता आ जरी है।

राजनय के साथारें और तरीकों का दिकास राज्यों के आगती सम्बन्धों के लाबे इतिहास से जुढ़ा हुआ है। इन पर देश काल की परिचितियों ने मी प्रमान डाला है और राजनिक व्यवहार मी तरनुसार बदलारा रहा है। दिख के दिमेन्न देशों के इतिहास का अदलोवन करने पर यह साथ हो जाता है कि राजनिक आधार का रारेशा प्रत्येक देश का अपना दिश्यार रहा है। यहाँ हम यूनन, इटली फ्राँस तथा मारत में अपनण् गये राजनिक आधार के तरीकों का अध्ययन करीं।

यूनानी राजनयिक व्यवहार (The Greek Diplomatic Practice)

राज्यय का इरिहास यूनरी नगर राज्यों से प्राप्त हंगा है। यूनरी सम्यता के प्रार्थिक बराग में नगर राज्यों के साज्यूर्तों को अप्रयूत (Haralds) कहा जाता मां इनका कार्य केवत सचि बराग बरने रक ही सीचिन नहीं या बरन्य परवर्षों के सम्यत्न कार्य केवत सचि बराग बरने रक ही सीचिन नहीं या बरन्य परवर्षों में कर सम्यत्न अपि कार्यों में कर सम्यत्न अपि कार्यों के सम्यत्न अपि कार्यों की करते थे। यूनरी सम्यत्न के विकास के सम्य सम्य नगर राज्यों के समय चरित एवं स्पर्दां में कार्या कर परिवर्षों के समय कर कर एवं एवं स्पर्दां में कार्या कार्यों के सम्यत्न कर राज्ये हिंदी स्था प्राप्त कर ही रिजले तित्र समरा कि एवं दुस्तन आवस हो रिजले तित्र समरा कार्या एवं एवं स्था प्राप्त कर साम के देहरी नगर साज्यों की समुख अपने नगर का कृष्टिकों प्रस्तुत कर साम के देहरी नगर साज्यों की साम्या कार्यों के साम्या कार्यों के साम्या कार्यों के साम्या कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों का विद्वान रथा मनवेंद्र निक से में प्रस्त के साम के साम के साज्या कर साम के साज्या कर साम के साज्या कर साम के साज्या कर साम के साज्या के साम्या के सित्र स्थान होंगे पर्यों के साम के साज्या के साम के साज्या के सित्र स्था के रितर साम की सित्र स्था के री साम के साज्या के साम के री स्था के सित्र साम के री स्था के सित्र साम के री साम के

यूनरी राज्यक्त (D planas) ये बाय समात्र बात से स्वायत्वतां राज्य से सम्प्रेत मूपता एवणित करना लेकप्रिय नगर राज्य के सम्प्रेत ज्ञाने राज्य के हिएँ क समर्थन में सानी राजिक अपना दियेरी राज्य के सम्प्रेत में सानी राजिक अपना दियेरी राज्य के समान्य में सानीयक प्रदिदेश दीयार बतना दियेरी राज्य के जाने राज्य के नाज्य राज्य के नाज्य राज्य के सानीय का नाज्य राज्य सामान्य सा

दृष्टि से निवासियों को सीन मागों में वर्गीकृत किया गया—दास विदेशी और एथेस के नागरिक। अन्य राज्यों के साथ उसके सम्पर्क का रूप प्रजासनास्क था। वहाँ का गजनव प्यापार वाधिन्य और सुरक्षा सम्बन्धी अवस्थलकाओं से हमादिक था। नृत्युन के इन नगर राज्यों द्वारा राजनिवकों को अनेक उन्युक्तियों एवं विशेषायिकार प्रदान किए जाते थे। प्रारम्भ से हैं वैदेशिक सम्बन्धों के रथना में इन राजनिवकों का योगदान न केवल महत्वपूर्ण बन्दा व्यापक में था।

यूनानी नगर राज्यों के राजनियक व्यवहार को स्क्षेप में निम्नतिखित रूप से विश्लेषित किया जा सकता है

- (i) यूनानी काल में राजनियक सन्धि वार्ताएँ मौखिक रूप से हुआ करती थीं । सैद्धान्तिक रूप में इन वार्ताओं का पूरा प्रमार किया जाता था ।
- (n) सचिययाँ खुले में की जाती थीं तथा उनके अनुसमर्थन के लिए दोनों पह सार्वजनिक रूप से शपयों का आदान प्रदान करते थे। गुप्त सचिययाँ अपवाद स्वरूप थीं। उनको उचित नहीं समझा जाता था।
- (iii) युनाती नगर राज्य तटस्वता और पय फैसले से पूर्ण रूप से परिधित थे। तटस्वता का अर्थ था पुत्र कैठ जाना। वे दिवादों को तय करने के लिए पय फैसले की प्रक्रिया अपनाते थे। 300 से लेकर 100 वर्ष ईसा पूर्व तक के काल में पाय फैसले के 46 मामलों का उत्तर्केण मिलता है।
- (1v) यूनानी नगर राज्यों द्वारा विकसित सर्वाधिक उपयोगी सस्या वाणिज्य दूरों (Consuls or Protessos) की थी। ये बाणिज्य दूर उसी नगर के मुक विवस्ते हाते थे जहीं इनको रखा जाता था। ये अपने राज्य में नियुक्तिकतों राज्य के हितों की देखात करते थे। उनका पद पर्यांन सम्यानजनक समझा जाता था और अनेक प्रतिमाशाली लोगों ने प्रमानजायुर्वेक इस पद पर कार्य किया। यह पद प्राप्त वस परम्परागत बन जाता था।

इन पदाधिकरियों का कर्य न करत सम्बन्धित देश के व्यापारियों के हिंदी की देखनान करना होता था दरन य राजनियक मन्धिदार्ताओं की पहल भी करते थे ।

(१) प्रीवर्ष शतान्दी ई तक दूर्गितयों ने अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क का एव्य म्टर प्रान्त कर दिया था। दे अपसी सदयोग एवं सगवन के महत्व से परिवित्त थे। एन्होंने युद्ध की भी नात ग्रान्ति क्यापना, सविद्ये का अनुसम्भीन, भाव-फैसला तटस्यत, प्राप्तुनी का अवान-प्रवान, क्यीत्रव्य दुनों के कार्य युद्ध के कुछ पिना अपि में सम्विद्यत सम्प्रान्ति सिद्धानी का दिव स कर तिया था। दे दिशीराये की स्थित, नागरिकता शरगदान, प्रत्यंन एवं समुद्र-व्याप्तर अपि से सम्बन्धित दिवारों को परिचित्त कर चुके थे। स्थल है कि युन्निनयों ने पाजनिक आवार के देन में पर्यांत स्थति करती थी। इस प्रकार से यून्नियों ने पाजनिय के दिकास

यूनानी काल के राज्यव की ठालोबना करते समय यह दर्क दिया जाता है कि यूनानी लोग उन्तरांद्रीय नैटिकरा की धाराम से उन्होंदित से जिन्नके दिना क्षेत्र राज्यनिक यत्र मी निष्य हो जाता है। समान्य यूनानी वी अपने नगर राज्य के प्रति स्वाम्मिक हटनी गहरी होती सी कि दर अपने नगर-राज्यदासियों को अपना सम्मानित शत्रु और शेष असम्बं को सम्मानिक बात माना था। राज्यदिक समस्यों की विनेत्र सल्टेकरीय धाराम के होते हुए मी यूनानियों का राज्यपिक कावार कई दृष्टियों से दोषपूर्ण था—

- (1) दे परस्तर इतने ईम्पालु थे कि इससे उनकी अल्लाखा की आवश्यकता को नी इति पहेंचरी थी !
- (u) यूननी लोग स्टन्य से अब्धे राज्यस्य नहीं थे। अवस्य चनुर एवं चलाक होने के कारन दे अवस्थित चरेहसील थे। फलतः उनके अरिरदास के कारन कोई सन्धि दार्नी सफल नहीं में पानी थी।
- (III) यूननी नगर-राज्यों में कर्यसारिका और व्यवस्थातिका के दादित्यों का सही विदारान ने में के कारत सर्जायिक कार्यों में किटिनाइसी एवं मन पैदा हो राजे थे। यूननी यह नहीं खोज भार कि प्रजादनात्मक राजनय को स्टेच्यासारी राजनय में मीति कैसे कर्मेंदुराज काया जा सकता है? यही मरूबी छनके दिनाय का कारता बन गई। प्रजादनात्मक व्यवस्था होने के कारता छनके निर्मय न हो गुल रहते थे और न ही तीथ दिए छात थे। उनके राज्यून सर्वागित सम्पन्न नहीं होते थे छाट छोडे-छोडे निर्मयों में मी दिल्प हो जाता था। उस कार की जनतानारें अनुतादादी थी। स्वय के निर्देशानुसार कार्य करने दाने राज्यूत के कार्यों को भी रा कर देती थी।

रोमन राजनयिक व्यवहार TineRomanDiplomaticPractice)

रोनन होंग यून्नियों की दुलता में जबिक बर्स थे, जट दे अन्तर्राष्ट्रीय स्वस्तों का दिशाम नहीं कर नहें । यून्तियों ने सचिव धन्ने पद्धने को दिस्मित किया था और राजनिक प्रिया के मध्या से दिरोधियों से सम्पर्क स्थापित करने में दिशता यक किया था, दिन्सु रोनन होगों ने मैनिक बन्ति पर अधिक दिश्शस किया। ये राजनदक्ष की बज्य

] "......the general deplomatic practice of care states was unexpectedly advanced." — Handid Nicolson

विजेता अधिव थे। रोमन लोगों ने राजनिक तौर तरीयों के स्थान पर शीधी कार्यवारी (Dirict Action) पर अधिक विश्वारा किया। उन्होंने अपनी सर्वोच्यता बनाए रखने के लिए यह तरीका अध्याना किया। या अधिक राष्ट्री के बीच सार्ध्य के समय वे कमजोर का पदा लेते विश्वारा किया या अधिक राष्ट्री के बीच सार्ध्य के समय वे कमजोर का पदा लेते विश्वीक उनका विश्वारा था कि इस नीति से दोनी ही पदा रोम के राजनीतिक अनुग्रह के आर्थारी बने रहेंगे। कमजोर का पदा लेते से यह तो होन होन माने माने कि विश्वारा कमजोर का पदा लेकर जब शक्तियाली वो उखाद किया जाएगा तो वर शक्तिशाली पदा भी दोर का प्रमाव मानने वे ने मजदूर हो जाएगा। रोमन लोगों ने राजनव के क्षेत्र में पुद्ध की वैद्यानिकता के शिवार के

रोमा लोग युद्ध और शान्ति दोनो ही बायों मे विदेशी राजाितिकों का स्वागत करते रो । ये राजदूत वो सामा द्वारा 1.4, 100 कहते थे और बणी कमी 1.01.1 मी कर देंगे थे पर एक अधिकींतर युद्ध अथवा शान्ति वे लिए वार्ताकार वे साथ लगाया जाता था। रोमा सीनेट विप्पीत कर से विदेशों मे अपने देग ने राजदूत नेजती थी। रोमा का प्रावहित वार्ताक विदेश में अपने देग ने राजदूत नेजती थी। रोमा का जीतिक विदारक सिसारों) जो रोम ने राजदूत बनकर अध्या था इस सम्बन्ध में दिखा है— राजदूती की अनीकिम्मका देवीय स्था मानवीय दोगों ही का तूनों से है विदार वे दिखा के आदर्शीय है साकि वे अनीकिम्म करे रहें। यह वेचल क्षित्राम्ह ने ही गरी है अदि सु सु वे रोमा का तूनों के अनाित वार्तिक प्रावह कर कर साम आप वार्तिक स्था स्वावह के साम का तूनों के अनाित स्वावह के साम का तूनों के साम का ताता था। राजदूत के पत्र व्यवहार और राजने लिए अनिवार्य क्यूंजे ने शारियों गी अनीकिम्म साम जाता था। राजदूत जब किसी तीसरे राज्य में से गुरूरता हो भी उसे अनीिक का विरोधाविकार प्राय था। राजदूत पर किया गया वोई मी हमल रोमा अनतिका विद्याल भी लागू होता था अर्थात् वोई समझीता तोठे जाने पर राजदूत राज्य के न्यावात्य में मुकरमा गरी सामा जाता था। राजदूत पर किया था वार्तूनों से उनुक था। रोमन सीनेट राजदूती के पत्र जबकीय अविवार्य के न्यावात्य में मुकरमा गरी प्रवार्य का त्यां वोई समझीता तोठे जाने पर राजदूत राज्य के न्यावात्य में मुकरमा गरी प्रवार्य का विद्याल भी लागू होता था अर्थात् वोई समझीता तोठे जाने पर राजदूत राज्य के न्यावात्य राजदूती के पत्र जबकीय अविवार्य के सामा देशी थी।

रोमन तोगों ने राजनय के क्षेत्र मे एक प्रशिक्षित पुरालेखणात (Archivis) की पद्धित प्रदान की। पुरालेखणात राजनिक दृष्टातें और प्रक्रियाओं ने प्रवीण व्यक्ति होते थे। आज मी राजनय की एक महत्वपूर्ण शाखा पुराने लेखों शानियाँ अमितेखों आदि की रहा कन्यना और उन्हें व्यवस्थित रखना है। रोमन तोगों ने पुरालेखागारी अध्यत तेखों से सम्पन्धित कार्य को राजनिक व्यवसार (res d plomatics or D plomatic Business) की सहा दी है। इस प्रकार के लेखों को व्यवस्थित रखने की पद्धित रोमन तोगों की एक महत्वपूर्ण देन हैं।

रोमन लोगों ने राज्यों की समानता के सिद्धाना का कभी आदर नहीं किया। इसका कारण यह था कि रोमन लोगों को अपनी 'सर्वकेच्छता में विश्वस था ये अन्य किसी राज्य को अपने समक्ष्य नहीं समझते थे। यही कारण है कि रोमन काल में समानता के आधार एन शानतिक सम्बन्धों की स्थापना करने और सचिव वार्ता करने के होत्र में कोई विकास नहीं हो सका। रोमन लेगों ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना तो की लेकिन राजनियक माईबारे के आधार पर अन्तर्रष्ट्रीय सम्बन्धों को विकसित नहीं किया। यूनानी सम्यता के मुल तत्वों से रोमन लेग लगगग अप्रमादित थे।

रोमन राजनय पर डॉ एस पी दुबे का अध्ययन

डॉ शुकदेव प्रसाद दुबे ने राजनय अथवा कूटनीति के इतिहास में अपने अध्ययन में प्राचीन रोमन राजनियक आधार पर प्रकाश डालते हुए लिखा है¹—

'रोमन विजयों ने जिस विश्व राज्य का निर्माण किया उसमें पार्रार्थियन हिन्दु और चीर्न सन्यताएँ ही ऐसी थीं जो उसकी सीमा परिध के बाहर थीं । अत इस राजनीतिक वातावरण में रोम को किसी विशेष कुटनीतिक दिघान की आवश्यकता नहीं थी। उसका काम केवल अपनी राज्य सीमा को बर्दर आक्रमणों से सुरक्षित रखना था फिर मी रोमन साम्राज्य के वैदेशिक मामले काफी दिलचस्प थे। प्राचीनकाल से ही रोम के युद्ध और शान्ति की परिस्थितियों पर जो भी कटनीतिक वार्ता आवश्यक होती थी। वह एक विशिष्ट कटनीतिक सस्या (Collegiuma Fetialium) अर्थात् कॉलेज ऑफ फैटियल्स को सौंपी जाती थी । रोमन घारणा के अनुसार सभी यदा उदित थे यदि वे औपचारिक रीति से तद घेषित किये गए जब सभी शान्तिपूर्ण प्रयास दिफल हे चले थे । युद्ध के पूर्व फेटियल्स कॉलेज का मुखिया जिसे पेटरस कहते थे सीनेट को सूचित करता था कि उसका शान्तिपूर्ण हल निकालने की सारी कूटनीतिक वार्ता निष्फल सिद्ध हो गई। यद्ध प्रारम्भ करने के निर्णय के उपरान्त वह एक खनी माला शत्र के स्थल पर फेंकता था । यह अनुष्ठान जपीटर आदि देवताओं के आहवान के साथ शपथ सेकर किया जाता था। जब रोम के दिस्तार के साथ ही फिटीयल्स का प्रतिनिधित्व राजदूत करने लगे तो माला फेंकने की औपचारिक प्रणाली ने एक प्रतीकात्मक स्वरूप से लिया और शत्र के स्थल के स्थान पर माला मीटियर्स प्राप अयवा देलना के मन्दिर के सामने फेंका जाने लगा । फिटीयल्स को सन्धि स्थापना का भी कार्य दिया जाता था । विदेशी राजदर्तों को सीनेट से फरवरी के महीने में कैपिटाल के निकट ग्रेकास्टियेसस के अवसर पर प्रत्यक्ष वार्ता करने का भी अवसर मिलता था । साम्राज्यवादी युग आने के साथ यह कार्य सम्राट ने स्वय अपने हच्चों में लिया । रोम द्वारा की गई समी सन्धियों असमान थीं क्योंकि वे दिजित प्रदेशों के शासकों पर सदैद के लिए धेप दी जाती थीं । रोम का जसटेन्टियम अर्थात वह दियान जिसके अन्तर्गत उन कानुनी सिद्धान्तों का विकास हुआ था जो रोमन नागरिकों की विदेशी आदश्यकताओं की पूर्ति के लिए इन'ये गए थे सही अर्थ मे अन्तर्राष्ट्रीय दिघान नहीं था यदापि यह उन सम्बन्धों का भी मार्गदर्शन करता था जो रोमन साम्राज्य अपने पढोसियों से स्थापित करता था ।

प्रैक संस्कृति के प्रि पूर्ण सम्मान और निष्ठा रखते हुए मी रोमन साम्राज्यदादिये ने ग्रीक अन्तर्राष्ट्रीय सहिता का अनुकरान नहीं किया । इसका करण स्थल ही था । जहां ग्रीक अन्तर्राष्ट्रीय दियान उस संस्कृति के स्वतन्त्र राज्यों के परस्परिक सम्बन्धों से उटल आवरयकता की देन या वहीं रोमन साम्राज्य दूसरे देशों के प्रति एक विस्तरवादी दृष्टिकोण अपना बुका था और शीमाविरोध विज्या कर उनका विलय अपने साम्राज्य मे करन चाहता

ही मुक्टदेव प्रसाद दुवे अधुनिक दिश्व का कूटनैटिक इनिश्म मण । पृ १९-४०

था अर्थात् उनका विश्व साम्राज्य प्रीक राज्य व्यवस्था के विग्रटन पर ही सम्मद था। रोमन साम्राज्य अनेक जातियो एव राष्ट्रीयताओं वा सब लन था और जहाँ केन्द्रीय सत्ता 'रे स्थानीय राष्ट्रीयताओं को हुए भी स्थाप। अधिकार देना उदिक नहीं समझा था। अत प्रीक राज्ये वो अन्तर्राष्ट्रीय प्रणासी रोमन कूट प्रीतिव प्रिस्थितियों के सर्वया प्रतिकृत थी। 395 ई मे रोम! साम्राज्य वा पता हो गया।

राजनियक आचार का इटालियन सरीका (Italian Method of Diplomatic Practice)

इटली भो आपुनि समितित एव प्यावसायिक राजनय वा जनक माना जाता है। यह माना जाता है वि प्रथम द्वावाय वी श्यापना मिलान (Milan) के द्रवृक्ष प्रिमेसको सकोरण भी सा 1455 है में जो वो में वी थी। सम् 1496 है में वेशिय सरकार ने दो प्याप्यारियों को जप सजदात बातवर सन्दम रोजा। बुध मासपोपरान्ता इटली के अन्य सज्यों ने में सन्दन पेरिश स्था अन्य यूरोपीय सजकारियों में अपने द्वावाया स्थापित किए। 16वीं सत्ताव्यी के अन्त तर स्थापी द्वावास अथवा प्रातिप्रधावात शिवुक करने की परम्पता को अधिकौत यूरोपीय राज्यों ने भी अपना दिया।

मध्यपुत के अन्त तब इटली मे बेनित तथा पत्रोरेस जैसे नगर बसा लिये गए थे। अब रेर धार्मिक मामलों में पोप वो सर्वीधाता होते दरी थी। सामन्दावादी विकानो तथा दरातन नगरों ने अध्यस में रिकल कर हे गांसे वो अध्यस्य के दिन नगरों के महत्वावादी। विकानों सर्वावादी। विकानों सर्वावादी। विकानों सर्वावादी। विकानों सर्वावादी। परिवारों से हमेश सर्वाया पहना पहना था। ये अपनी विद्युप्त रिकि को पुत्र भारात करों के लिए कोई मी तरीका अपना सकते थे। मौस स्थेन तथा गर्वानी आदि का बारगे शिक्ती से अध्यामी मनमुदाव और समर्थ सात्रा तथा ये धानता रहता था। इन परिविधियों में सर्वाया का महत्व बहुत अधिक बढ़ मांव। कमजीर राज्य अपनी स्ततान्ता एव अस्त श्या के लिए राज्य विकान तरीकों से शिक्तावारी राज्य से मीनी सम्बन्ध स्थापित वर तेते थे। राज्य से मेनी सम्बन्ध स्थापित वर तेते थे। राज्य से मेनी स्वस्थ

वेनिस का शाजनय (The Venetian Diplomacy)

मध्यपुग में राजनियक करना में सर्वाधिक पारगत राज्य वैनिस गणराज्य था। 16वीं साताब्दी में उसके राजदूत थियना पेरिस मेहिड साथा ऐस में कार्यरत थे। वैनिस कार्ती का पूर्व के साथ दीर्घकासीन पनिष्ठ सान्त्रय रहा था अत जन पर बाइजेंटाइन की राजनियक विषादसारा का पर्यांत प्रमाय पढ़ा । दोहराज तथा सर्वेड के दोष यहीं के राजनिय में पृष्टिगोचर होते हैं। यहाँ राजदूतों का चयन जनकी योग्यता के आधार पर सावधानी से किया जाता था। राजन्य का सगीठी व्यवहार सर्वाध्यम यहीं पर अपनाथा गया। यहाँ के राजदूती को सर्वाधिक व्यवहार कुमल एव अन्तर्पाद्रीय स्थिति से परिधित माना जाता था। वेरिस के राजनियक व्यवहार को निन्नितियत सर्वी उस्लेखनीय है—

 राज्यामिलेखागारों को व्यवस्थित रूप में रखने का श्रीगणेश करने का श्रेय वैनिसवारियों को है। उनके नी शताब्दियों (873 से 1797 तक) के राजनियक अमिलेख उपलब्ध होते हैं। इन अमिलेखों में राजदूतों को दिये गए निर्देश राज्दूतों के अभिन प्रतिदेवन सम्मवार पत्र आदि शमित हैं। बेनिसवासी यह जानते थे कि दिदेश में रहने के कारण राजदूत अपने देश की गतिन्धियों से अपरिवित हो जाता है अत उसे सामध्येक सुपना भेजी जन्मी पहिए। इन समावार पत्रों को अदिसी (Ayvisı) करते थे।

- 2 देनिस बालों ने राजदूरों की नियुक्ति एव आवरन के सम्बन्ध में कुछ नियमों की रापन की भी। वैनिस का राजदूर केदल तीन या धार महीनों के लिए नियुक्त किया जरा था। 15वी साताब्दी में इसके कार्यकाल की सम्मदित सीना 2 वर्ष कर दी गई। राजदूर जिस देश को नेजा जता था वही वह कोई सम्पति नहीं रख सकता था। यदि वही उसे कोई नेज था रोजदार होता था तो सरदेश लीटने पर हड उसे राज्य को सीप देता था। कार्यका में पूर्व के उसे सामा होता था। तो सर्व कार्यका माना था। होट ने पर 15 दिन के मीतर वह अपने कार्यों का अन्तिम प्रतिदेदन प्रस्तुत करता था।
- र राजदूत अपने साथ पत्नी नहीं से जाता था क्येंकि यह आशका थी कि गर्में मारने में समय खराब करके वह उसके कार्यों में बावक बन जाएगी। राजदूत के साथ स्वय का रसोंड्य होता था ताकि विदेशी रसोंडए हारा विव विए जाने की आशका न रहे।
- 4 देनिसदासियों की यह घारणा थी कि सानी दिरशी दिरोब रूप से देशी राजदूत जासूसी करने के लिए आते हैं अत उनके व्यवहार को नियमित करने के लिए दिरेब नियम दनये गए। सन् 1481 ई में निर्मित एक नियम के अनुसार देनिस के राजदूत किसी गैर सरकारी दिरोशी के साथ राजनितिक दिवार दिमर्शा नहीं कर सकते थे। जे नागरिक दिरोशी राजनियकों के सार्दजनिक दिवार दिमर्शा करते थे उनके दन्द देने की व्यवस्था थी।

अन्य राज्यों की स्थिति (The Position of other States)

वैनिस के अविरिक्त इटली के अन्य राज्यों की स्थिति अल्यन्त दयनीय थी। वे सामन्यव्य कमजोर थे। उनके पन्त राष्ट्रीय सेना नहीं थी। अपनी सुरक्षा के लिए वे माढ़े के सैनिकों की सहायता लेते थे उनमें आत्तरिक फूट व्यन्त थी। जब उन पर विदेशी आक्रमा हुए वो निमा विरोध किए है उनका पतन हो गाया। उनकी आपती फूट के कारण शानित व्यवस्था का रहना असम्बद था। वैनिक कमजेरी के बारग वे आत्मरक्षा के लिए शानित व्यवस्था मुद्दे। उस समय उनका राजनय किसी आदश विषय अया वीर्यकालीन त्यव्य से मब्ब नहीं था वरन् वे तत्कालीन हितों की रहा के लिए प्रयत्मग्रील रहते थे। उस समय के उनेजनपूर्ण तथा निर्देश्तपूर्ण वरन्दरा में राजनिक समझेरते में चानाकी धूर्वता उत्त कपट एव थूठ को अपनय पाना था। इटली के इन राज्यों की राजनितिक अस्थिरा के कारण यहाँ का जन जीवन मी अस्त व्यवस्थात था।

मैकियावेली का योगदान

(The Contribution of Machiavelli)

मैंकेट देती एक महान् राष्ट्रदादी था जो इटली की एक्ता का स्वय्न देखता था। उसका मत था कि आरसी फूट और कमजोरी इटली की स्वतन्त्रता को नष्ट कर देगी तथा उस हमेशा के लिए दिदेशियों का दास बना देगी। अत उसने धर्म और मीतेकता से कपर एक दृढ राधिशाली और तुरन्त निर्णय लेगे वाले राजा का समर्थन किया जो अपने कुशल एवं पाटुर्वपूर्ण राजाय द्वारा इटली को एक करके एसे फ्राँस, रपेन तथा जर्मनी की दासता से मुक्ति दिला सके। उसने राजा के पय प्रदर्शन के लिए एक महान कृति दी प्रिन्स (The Funce) की रपना वै। इसे राजनंद की एक युग प्रवर्तक कृति माना जाता है। इसमें प्रविपादित सिद्धान्तों ने राजनंद के हिलास पर उल्लेखीय प्रभाव ढाला है। इसमें प्रावर्तिक राजनीति पर प्रकाश जाना गए। है।

मैकियायेती ने अपने प्रना डिसकोरीज के अध्याय 59 में स्पष्ट दिखा है कि ''मैं यह दिश्यार करता है कि जब राज्य का जीवन सकट में हो तो जाजाओं और मण्याय्यों की रहा के लिए विश्वास्थात तथा कुलनता का महर्मित वाना माहिए।'' उपका स्पष्ट मत्त या कि सीता।हिक सफलता सबसे बड़ा साध्य है जिये पाने के लिए अमीतिक सम्पानी को अपनाता आवश्यक है। साध्य की सफलता साधनों को पवित्र बना देती है। इस विवेषन से यह भिष्कर्त निकालना समक होगा कि सैकियावेती गितिकता नाम की किसी बात से परिसित नहीं था। उसने मो गितिक मान्यताओं एद सिद्धान्तों को राजनीति के क्षेत्र से दूर रखा है। उसने गैतिक गुनों की विशेषकाओं को अस्वीकार नहीं किया है परन्तु राजनीतिक गुनों के लिए उन्हें आवश्यक नहीं भागा है।

मीठियादेली के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में शासक की नीति शक्ति सतुलन बनाए रखने की होनी घारिए। राजा को हमेशा यह व्यान रखना धारिए कि यह उन पहोंसी राज्यों को आपरा में सरिय में न बयाने दें जिनकी सतुल्ह शक्ति उसके स्वय के राज्य से अधिक हो जाए। इस चरेर्स्य की पूर्ति का तर्योतम चराय यही है कि शासक पहोंसी राज्यों के आनारिक मानदों में गिरन्तर हरक्षेय की मीति अपनार। अपनी रिवारी सुद्ध क्लाए रखने के लिए यह पहोंसी राज्यों को प्रलोमन अयवा शक्ति हास अपनी स्वित सुद्ध क्लाए रखने के लिए यह पहोंसी राज्यों को प्रलोमन अयवा शक्ति हास अपनी स्वित स्वात । जिन राज्यों को वह युद्ध में जीत से उन्हें अपना उपनिवेश बनाकर वहीं एक शक्तिशाली सेना रख दे। मैदियादेशी ने शासक को युद्ध सम्बन्धी परामर्श मी दिया है कि उसे व्यवसम्बन्ध पेरा डालने की अपेश खुद्धे नैदान में युद्ध नीती अपनानी घाडिए। सफतता प्रतिष्ठ के लिए शासक को तुरन्त निर्मय क्षेत्रे की आदत डालनी घाडिए। तुरन्त और दृष्ट निर्मय तथा उसकी शीध कार्यनिती द्वारा गम्पीर समस्याओं का समस्यान सदल हो जाता है।

भीकेपादेशी का विश्वास या कि यदि कोई राज्य दुनिया के मानसित्र पर रहना याहता है तो उसे अपना प्रसार करना होगा अन्यसा वह नष्ट हो जाएगा। विजय और प्रसार का निर्देश देने वाला उसका दर्शन शानितायी नहीं या बरन् निरन्तर साथ करते रहने ना सदेश या। उसने अनुमद और निरोक्षण के आयर पर अपने सिखान्त प्रस्तुत निए । मिल्यादेशों के विश्वास-दर्शन की कट्ठ आलोचना की जाती है। उसे आलोचकों हारा युद्ध लोलुप गीतिहीन, धर्महीन, नीच व्यवहार का समर्थक धरेपोशान कुटिल्या वा पोषक एव अमानवीय कहा गया है। इस सम्बन्ध में हेरीन्त निकोत्तन (Harold Nucolson) का मत है कि मीकियादेशों को उसके समय की परिस्थितों के सपने में हो देखा जाना वादिए। यह अपने युग्ध का शिरा था। उसने दर्शन के देशों का निराकटान वरने के लिए अपने विधार प्रसुत्त किए। वह किसी स्थाई सिद्धान्त का विकास नहीं कर रहा था। उसने उसी प्रमारशासी सत्य का प्रतिचादन किया जिसका अनुमव उसने अपने जीवनकाल में किया था। राजनय के सत्य में उसके विधार बहुत महत्व रखते हैं।

হুহানিয়ন বাজন্য কী देन

(Contribution of Italian Diplomacy)

इटली के राज्यों ने पारस्परिक समझैते की जिस कला का विकास किया दह धीरे-धीरे अन्य राज्यों द्वारा अपना ली गई । 15वीं त्या 16वीं शताब्दियों में समझैने की इस प्रणारी का अध्ययन हेरोल्ड निकोल्सन ने निम्नलिखित तीन श्रीईवों के अन्तर्गत किया है—

1. सन्पियों के लिए समझौते (The Negotiatjons of Treaties): 15वीं शताब्दी में इटली में समन्तदादी मरम्पताएँ व्याप्त भी और पोप की सर्वोच्चता के दिवार का प्रमुख भी और पोप की सर्वोच्चता के दिवार का प्रमुख भी । इसके फलस्क्स्म सन्धियों के लिए की जाने वाली समझौता बार्तीएं अन्यन्त अधिताय ना मही कोई बढ़ा मान्य है महुन कर सकता था कि अनुक राज्य उसका अधिताय (Vassal) है और इसीलिए दिना उसकी स्वीकृति के वह दूसरे राज्यों के साल्य सन्धि करने का अधिकार नहीं रखता । पोप भी काने-कानी इस्टार्टेप करने का दावा करता था ।

चल किनाइयों होते हुए मी इटालियन चार्ची के बीच समस्ती वा दार्र हैं प्राय समय होगी थी तथा रुप्ट रूप से सम्बद्धी सम्पादित की जाती थी। दुछ ऐसे प्रोटोकोल करने का भी रिवाज था जिनने स्वीकृत बातों की सूची पहती थी किन्तु चन पर सियकर्ता च्या हस्ताव्यर नहीं करते थे। पेप हारा स्वीकार की गई सियाई सम्पक्तरी होती थीं। देशन पीप ही समुख्यों को शाय के मार से उन्छ कर सकरना था।

सिय के अनुमोदन के लिए सम्मरोह किया जाता था । यह माना जाता था कि यदि सर्दराक्षिसम्बन्न राजदूत कोई सिय करे तो उसे सम्बन्न स्टीकार कर लेगा । ऐसा न करने के परिणाम अत्यन्त मयकर हो सकते थे। ऐसी स्थिति में राज्यों के बीध सभी सिपतातांएँ असमाय हो जाती थी। इटालियन राज्य राजनीतिक सम्पियों के अतिरिक्त व्यापारिक समियों भी करते थे। उसमें आपसी व्यापारिक के प्रमुन्ते पर समझौता किया जाता था। सन् 1490 ई में हमलेक तथा पत्तीरेस के बीध व्यापारिक साथि की गई। इसके अन्तर्गत हमलेक ने पत्तीरेस को इटली में कन के व्यापार का एकांग्रिकार प्रदान किया और बदसे में पत्तीरेस ने अप्रेज व्यापार का एकांग्रिकार प्रदान किया और बदसे में पत्तीरेस ने अप्रेज व्यापारियों को पीता (Pisa) में निगम स्थापित करने की अनुमति दी।

2 सम्मेतनीय राजनय (The Diplomacy by Conference) 15वीं सतान्दी में सम्मेतन हाता राजनय का अधिक प्रम्यतन गरी था। उस समय इसे अत्यन्त सन्देह की इस्टि नो देखा जाता था। उस समय का सम्मेतन राजनय सम्प्रपुर्वी अर्थादा राजाओं के व्यक्तिगत सांसात्कार के रूप में होता था। उसने यह खतरा निर्देश इस्ता था कि कहीं एक पाजा दूसरे राजा का अपहरण न करते। इसी कारण यह साझात्कार सामान्यत एक पुत के बीय में हुआ करते थे। सन् 1807 ई. मैं नेवीतियन ने इस आसान्य दर्शिक को बरता। इन व्यक्तिगत समान्यत सामान्यत राजे

(क) यह तरीका पर्याप्त स्थासित सा क्योंकि प्रत्येक पदा देशे को पानी की तरह बहा कर यह प्रदर्शित करना पाहता था कि यह अधिक तायह है। (थ्र) सम्मेवन से पूर्व दोनों पर अपने अना की महरवाकीशाओं को बहा देते थे। दू हसी ओर दिदेशों में उनके हरादों के प्रति सन्देह किया जाता था। इसके फलातक्का अनेक विशेषी अक्षाई फल जाती थे। (ग्र) इन पाशास्त्राकों में के में हो बाते समझीत दिखित न होकर मीधिक होते थे। अत गतास्वकालों में के होने बाते समझीत दिखित न होकर मीधिक होते थे। अत गतास्वकालों के कार्ता दो समझ होते थे जो अपने बराबर बातों से बात करना नहीं जानते थे। एक-पूनरे की माण न जानने के कारण भी कठिनाह्मी उपरिक्ता होती थी। फलात साजास्त्राक का परिणाम कोई मेंश्रीपूर्ण समझीता न होकर पास्त्यार्थिक दिखे के रूप में प्रकट होता था। इस सम्बन्ध में 15वीं हाताब्दी के प्रविद्ध राजनाय फिरीस्प देशे के की मेंसि (मीमामिक विद्व के कार्य करना पाहते हैं तो उनको आपने न्यामने कभी महिं आना चाहिए बरन् अच्छे और दृश्चिमन पाजदूरों के माध्यम से वार्तालाय करनी मारिए गां

पुनर्जागरण काल में राजनिक व्यवहार का एक महत्वपूर्ण दोष यह था कि सागरोह सम्बन्धी प्रश्नों को अनावरयक महत्व दिया जाता था। नगर राजदूत के आने पर कई सप्ताह उसके स्वागत सागरोही एव परिचय-पत्नों को देख माल ने ही व्यतीत किए जाते थे। इस काल में राजदूत एव स्वागतकती सम्बन्ध को औक ऐसे कार्य करने होते थे जो आज हमे अनावरयक राचा अर्थहिन प्रतीत होते हैं।

 अग्रत्य की समस्या (The Problem of Precedence): इटालियन राजनय मे अग्रत्य की समस्या अत्यन्त गमीर थी। सिद्धान्तत राजदूत का स्तर उसके राज्य के स्तर

[&]quot;Two great princes who wish to establish good personal relations should never meet each other face to fire but night to communicate through good and wise embassadors."

Philippe de Compara

50 राजाय के सिद्धाना

के अनुरुप होता था। सन् 1501 ई में पोप जूलियस द्वितीय ने अग्रत्व की एक तन्तिक बनाई जो निम्न प्रकार थी—

> सहाट | फ्रॉस हा रण | स्पेन हा रण | अन्य डपुक राज्युमर इत्यदि।

इस सूची में पूर्तग्त प्रवर्दे और इसतै व सग्यें नम्दर पर था। जब पेप वी रिज का पतन हुआ और नदेर गर्दीय तज्जनों की उदय हुआ ते उक्त सूची का इन्त दूट गया। स्तेनवित्ती ने यह मानने से इन्कार वर दिया कि जनना स्थान प्रभा के माद है। इस अन्तरिक दिये के कत्तरकर साज्दावरों के अग्रत्य को निर्धारित करने का गर्दे तेनी वाले हस्ताक्तरों ने परिवर्तन आवा। राज्यों के अग्रत्य को निर्धारित करने का गर्दे निरीवल वर्षका न होने के कारा अनेक वर साध्यें पैदा हो जाने से प्रीत कि प्रवर्ता को मस्त्युद्ध के लिए में तैया होना पढ़ता था। सन् 1661 ई में लब्दा में देवी ही पदना यदी। वहीं जब स्तेनित राज्युत की गरी को अर्जे की राज्युत में में को से राखा गया तो साध्ये प्राप्त ही गया त्या कई होना हल्हत हुए. स्तेन त्या प्रभा से के बीच राज्यिक सास्त्रत तत्त न्यूनों हो गया केंद्र वर्णा कहा हुए को नाय हो गया। इसते प्रता सन्ता 1768 ई में तत्त्वन दस्तर में हुआ। वहीं जब कुनी ती पाज्युत में यह देखा कि सत्ती राज्युत अरिद्रत्य राज्युत के बाद वर्णा आमें की सीच पर्वेदा। इसके परिपानस्तरम मत्त्युद्ध प्रिक गया। इसने सत्ती राज्युत दुरी राह घम्यल हो गया।

आरल के ध्यतस्या से संभिद्धें पर हस्तक्षर करते समय में किन्दुं देदा होती थी। प्रत्येक रूप्य का प्रिनिधि संधि पर पहले हस्तक्षर करता चहता था क्यूंकि यदि उसने दूसरे राज्य के प्रतिनिधि से निधे हस्तक्षर विश हो वह उसके राज्य के सम्भान के विरुद्ध होगा। इस समस्या के निरुद्ध होगा। इस समस्या के निरुद्ध करता कि स्वाप्त करता है हिम्म हिम के से प्रत्यत्य अपाई गई। इस तरीक में अनुक्षिया होने पर एक अन्य ध्यतस्या चातू की गई जिसके अन्तर्गत साम की अनेक प्रतिनिधी सर पहले स्वाप्त हस्तक विरुद्ध हम्म प्रतिनिधी सर पहले स्वाप्त हस्तक विरुद्ध हम्म प्रति हम्म कर्म करा हम किया जात राहा। सन्त अन्तर्यास्य ध्या प्रतस्य सत्य हस्तक विरुद्ध हम प्रति हम स्वाप्त हम स्वाप्त किया प्रति स्वाप्त की स्वाप्त के माम पर सहा किया जात राहा। सन्त 1815 की विद्या करेंग्र स्वाप्त की स्वाप्त की साम स्वाप्त हम स्वाप्त हम्म किया कि स्वाप्त सुर्व स्वाप्त की स्वाप्त की साम स्वाप्त हम्म हम्म स्वाप्त हम्म स्वाप्त हम्म स्वाप्त हम्म स्वाप्त हम्म स्वाप्त स

गया । तीन वर्ष बाद एश ला घेपल की सन्धि में यह निर्णय लिया गया कि सन्धियों ६२ सन्धिकर्ता राज्यों को वर्णमाला के क्रम से हस्ताहार करने शाहिए।

निकर्ष क्य से यह करा जा सकता है कि इटली की पुनर्जाग्रति ने राजनत की जो प्रमाणि किसीयत की वह अमपूर्ण तथा पर्याप सम्प्रण स्थापण भी तत्कालीन राज्यों का राजनव विद्यान एवं यह प्रमाण जाता था कि अन्तर्जाष्ट्रीय कानून रथा न्यार हमेगा पेट्टीय हितों से गीण है। धोरोबाजी अवसरवादित एवं स्वामियतिष्ट्राण जैसी प्रमुक्तियों को बहता देकर इटली ने राजनय की करन को निक्सीय मना दिया। जिल्ले परिशिक्तियों में ताक्कालिक परिगाम प्राप्त करने की दृष्टि से अध्यो समझीता वालों की अनिकत्ता को मुझा दिया गया। फलत साइकी और अध्यक्ति सामझीता वालों की अनिकता को मुझा दिया गया। फलता साइकी और अध्यक्ति सामझीत वालों की अनिकता को मुझा दिया गया। फलता साइकी और अध्यक्ति सामझीत वालों की अनिकता को मुझा दिया गया। फलता साइकी और अध्यक्ति सामझीत वालों का स्वामित्य हो गया कि एक अधिक दुद्धिमान तथा अधिक दिश्वसानीय प्राप्ता की करने करें।

भ्रमाशा का रहाज कर । भ्रमाशी मानानी में इटली के राजनाय का मूल चरेरण स्वार्थ सिद्धि रहा । जिनाकी पूर्ति के लिए वह पूर्तवापूर्ण एव अपसरवादी तारीक अपनाये गये । शांति-शांता की कला में इटली के राजनाया शियों कर भी दात रहे । किसी देश से स्वार्थ सिद्धि के लिए वे पहले उस देश से अपने सम्बन्ध स्थित्र हमें ते किसी दर्ग रास चुन पास्त्रमों को मुख्याने का निम्नान्य दे हैं । सम्बन्ध मुख्याने के आवादास्त्र के सब्दे में वे अपनी अवक्रीता पूर्ण कर लेते हैं । इटलियन राजनाया हारा की जाने वाती सिन्ध यातीएँ माय तीन प्रकार की होती हैं (क) इटलियन राष्ट्र में इत्तर एक के विरुद्ध करूपनात्मक दिवेच कुछ न कुछ चलता नामाए रहना । (१) अन्य एस में ऐसी सुविधा या बस्तु मींगान जिसे लेने की यासादिक इच्छा तो नहीं है किन्तु जिसे प्रेम में ऐसी सुविधा या बस्तु मींगान जिसे लेने की यासादिक इच्छा तो नहीं है किन्तु जिसे केने पर अपन या बस्तु मींगान जिसे लेने की शास्त्र हो जाएगा। जब ऐसा

- 4 इटेलियन राजनयं की एक अन्य विशिष्ट विशेषता स्थायी और समितत राजनियक रोता का विकास करना था।
- 5 राजनय को नैतिकता की जंकडन से मुक्त कर के इसे वैझनिक स्वरूप प्रदान किया गंका !

राजनयिक आचार का फ्राँसीसी सरीका (The French Method of Diplomatic Practice)

फ़ौरीशी राजनय को दो दिवारकों ने बहुत अधिक प्रमानित किया है थे—फ़्रीशियस तथा दिवतु । हनमें से एक शो अन्तर्राष्ट्रीय विधिदेशा था और दुसरा राष्ट्रीय राजनीतिक था। दोनों के राजनय सान्वर्यी विधारों के आधार पर ही फ़ौसीशी राजनय के आधार का रूप निपारित हुआ।

मोशियम के विचार (Hugo Grotius on Diplomacy) : मोशियस ने राजनय के सम्बन्ध में अग्रहिखित चार महत्वपूर्ण सिद्धानों का प्रतिपादन किया—

शाधवेन्द्रसिंह शाजनय पृष्ट 98

। अपन समय क घामक संघंप की दृष्टि से प्रेशियत ने कहा कि प्रेटेस्टेन्ट एव कैथे तिक मतानुबाधियों का एक दूसरे पर अपने विधारों को आरोपित करना अर्थिंहन है।

यदि य दिरोध और संघर्ष के स्थान पर प्रेम तथा सहयोग से सीचे तो मानदता अनेक कर्छ से मुक्त हो सकती है।

2 प्रकृतिक कन्तून (Natural Law) राजरूने सस्याओं एवं सरकारों से स्वतन्त्र टेवा इनमें अधिक प्राचीन और स्थायी होता है। यह व्यक्ति की बौद्धिवता पर निर्मर है। जब हक मानदता इस प्रकृतिक कानून को स्थीकृति एवं मान्यता नहीं देगी तब तक अन्तर्राष्ट्रीय अराजकता का समधान नहीं हो सकता।

3 प्रकृतिक कानून का सामान्य रूप से पालन किए बिना शक्ति सन्तुलन का सिद्धान्त खतरनक सदित होगा। जब तक दुनिया के शामक यह न मोर्चे कि उनक कार्ये एव

नीतियों को प्रशासित करने वाली जावी राष्ट्रीय सुविधा ही नहीं है बरन् कुछ निरिवत सिद्धान्त हैं तद तक न्यायपूर्ण सम्तुत्यता स्थापित नहीं की जा सकती। 4 प्राकृतिक वानून को प्रशामित एवं लागू करने वाली कोई संस्था होनी चाहिए। द्रेशियस का नत था कि ईसाई राज्यों के एक रेसे निकाय की रचना करनी चाहिए जहाँ

प्रत्येक राज्य के दिवादों को नि स्वार्थ पत्नों हारा सलझाया जा सक । बहिएना शर्तों को लगु करने के लिए कुछ सधन मी होने बाहिए।

प्रेरीयस हात स्त्र बाहरा (External Territoriality) के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया । उसने राजनिक प्रतिनिधियों के विशेषधिकारों एवं स्टब्ब्ब्लाओं हा दिस्ता से उल्लेख किया है। उसका स्पष्ट मत था कि राजनियकों को स्वागनकला देश के क्षेत्राधिकार से बहर रहा जाना चहिए। अन्तर्राष्ट्रीय सन्दियों के सम्बन्ध में प्रेशियस का कहार बा कि ये न केंद्रल कर्न पर ही बल्कि उसके उत्तरधिकारी पर भी लगा होती हैं। उसने यह

प्रतिपदित किया कि परिस्दितियाँ बदलने पर सन्धियों को अस्टीकार किया जा सकता है। जो सन्धर्ण जिन परिस्थितयाँ में की जाएँ वे उन्हीं परिस्थितयाँ में लागू रहनी चाहिए। रियल् के विचार (Richelieu on Diplomacy) ग्रेरियस एक अप्दर्श ददी विचारक था। इसके दिवरीत रिवल एक क्यार्थदादी दिवारक था। यही कारा है कि

ग्रेरियस के दिवारों को उसके समय में दुकराय गया किन्तु रिवलू क दिवारों ने तन्त्रातीन व्यदहार को प्रमादित किया। उसने राजनम के तिद्धाना और व्यदहार में कुछ स्वार प्रसादित विए। उसवी एल्लेखनीय देन निम्नलिखित है-

। रिवल् ने बताया कि सन्धि दार्रा (Negouzuon) की कला एक स्थाई प्रक्रिया है यह जल्दवरी में किया जाने दाला कार्य नहीं है। अर राजनय का स्टेश्य अवसरवादी प्रबन्ध करना नहीं है दरन मजबून और स्थाई सम्बन्ध स्थापित करना है। असकस समझैत दर्ज में नित्यक नहीं होने बद्दें के उससे अनुमद और झान बढ़ना है। राजन्य कोई तदमें प्रकृति का कार्य नहीं है बरन् यह एक निरन्तरतापूर्व प्रक्रिया है।

2. दिव्यू के मतनुसार राज्य का हिन प्राथमिक एवं अन्मिरिक होता है। यह मादन विचारवारा में मैडिनिक दरप्रमें से पर है। यदि राष्ट्रीय हिले दिरोधी विचारवारा बाते राज्य से सीध करने की मैंग करता है तो निस्तरीय की जानी बाहिए। सकट के समय

- त्रों का भुनाव उनकी ईमारदारी या लगाव के आयार पर वही वरन् भौतिक एव भौगोलिक यों के आधार पर किया जाना चाहिए।
- 3 रियन् का कहना था कि वोई ग्रीति तमी सफल हो सबती है जब उसे राष्ट्रीय हा जनमत का समयी प्राप्त हो। इसके दिए उसने प्रमादयूर्ण प्रयार व्यवस्था वा स्पेत्र किया और अपनी मैतियों के सम्मर्थन में जनमत जाग्रत करने के लिए छोटे बग्ने पत्रिकाएँ छान्ने का सुझाव दिया।
- 4 रिचलू ने सन्धियों को पवित्र दस्तावेज मानकर उनके अनुसीसन का सत्तर्थन किया। तक कहनो था कि सन्धि एक महत्वपूर्ण साथा है अता हते करने से पूर्व पूर्व साववानी तो भारिए। एक बर तक स्वरीय पर समझीता हस्तावार एक अनुसम्भी हो जाए तो तका पासन अनिवार्य रूप से किया जाना भारिए। राजपूर्ती अथवा सन्धिकर्ताओं को ने निर्देशों से हतर कुछ नहीं करना भारिए करीके एसा करने पर सम्भगु का दिशस्त देंगे। सन्धि की प्रदित्ता सेतिक आधार पन स्वी बना प्रवादाति कर प्रिटेश महत्वपाली
- 5 रिवल् का दियार था वि एक सही राजनाय में गिरियतता रहनी चाहिए यदि किसी य वार्त के बाद समझीता न हो सके तो दिया की बात नहीं है किन्तु यदि समझीता पर एक स्वाचित नाम में हो विकास के बात नहीं है किन्तु यदि समझीता पर करने गए रासां आर्थियत माथा में हो विकास के स्वाचित के अगाव में साथिय के पता ती मालता समझने की साथावना बढ़ जाती है। निरियतता के अगाव में साथिय के पता सीच आप के साथावना के साथ अगाव के साथ का साथ के साथ का साथ के साथ के साथ के साथ के साथ का साथ के साथ कर साथ के साथ के साथ के साथ के साथ क
- 6 रिचलू का करना था कि विदेश नीति का निर्देशन तथा राजदूत का रियन्त्रण एक मन्त्रात्त्व में केन्द्रित होना चारिए अन्वयम रामझीता वार्तीए प्रमावदीन विद्ध होंगी। यदि रहावित्व को विमाजित किया गया तो राजदूत एव उसर्स समित्र वार्ता करने वाला दूसरा अप में प्रस्त प्राप्ता !
- 1 सुई 15 वें का योगदान क्रीत के राजा सुई पोदहरों (Louis XIV) के मन्त्रिमण्टक देदेश मन्त्री एक स्थार्ग सदस्य होता था। इसकी गिडुकि राजा द्वारा वो जाती थी राया के कारामण्टकी एक स्थार्ग स्वरूप होता था। हिस्तान ज्या से दिदेश मन्त्री त मे दिदेशी राजदूर्ती का स्वाग्त करता था राया दिदेशों में क्रीतीयी राजदूर्ती को रिदेश सान्त्री ता था। कभी बभी यह कार्य स्वर्थ पांची हो साम्य्र कर तेता था राया विदेशमन्त्री को भी मानि साम्ये देता था। पर्याप स्वरूपमार्थी होते हुए भी सुई पौदहर्ती अपने मिनुक अयों के प्रति अनुदार राही था। यह देपपूर्वक उपने मानी को सुराता था यही तक हि शै आलोमगाओं या भी आदर करता था। दिदेशी राजदूर्दी को सुनो से पहले यह

single voice only and not by a chor s of

हमेरा। विदेश मन्त्रालय से परामर्श करता था कि उनकी किन दातों को छोड़ना है और किनको मानना है। कमी कभी राजा उत्तरदायी मन्त्री के नाम पर गुप्त समझौता दादीएँ भी कर लेता था।

2. विदेश कार्यालय - विदेशमन्त्री के अधीन एक छोटा विदेश कार्यालय होता या जिसमें कुछ लिपिक कुछ अनुवादक तथा कुछ अन्य अधिकारी होते थे । इनकी निमुक्ति वह व्यक्तिगत रूप से स्वय करता था और पदिमुक्ति स्वर्गवास या अरुवि के बाद थे पद ह ट्यक्ति थे । दियने के सस्यरणों से बात होता है कि सन् 1961 में फ्राँसीसी विदेश कार्यालय में पाँच इधिकारी थे ।

ष्ठाँस की विदेश सेवा अन्य राज्यों की अर्पेश अधिक व्यासक थी । सन् 1685 ई तक फाँस ने रोमन देनिस कान्स्टेनटिनोप्पल दियना हेग, तदन, मेंद्रिड तिस्तन म्यूनिय कोपन्तिगत तथा देने आदि में अपने स्थायी द्वातास स्थापित कर लिए थे । उसने कुण राज्यों को अपने विरोध मिशन नेसे लया कही-कही आवास मन्त्री (Ministers Residents) रखे । तत्कलिन राजनिय किश हे इन क्षेत्रियों में विमाजित किया जा सकता है असावारण राजदूत (Ambassadors Extra-ordinary), सावारण राजदूत (Ambassadors Ordinary), दृत (Envoys) त्या आवासी (Residents) ! बाद में साधारण राजदूत होने निन्दिनीय समझा जाने तथा और इसिल्प सनी राजदूतों के साथ असावारण राजदूत होने साथ असावारण राजदूत होने साथ असावारण राव्य जोति साथ राव्य होने क्षा और इसिल्प सनी राजदूतों के साथ असावारण राजदूत होने लगा ! यदि राजदूत अयोग अध्या अविदरस्तनीय नहीं होता था तो वह कम से कम तीन या बार वर्ष तक कार्य करता था । यदि राजदूत अपने पर पर विदेश में होता था और युद्ध पीति हो जाता था । यति राजदूत अपने पर पर विदेश में होता था और युद्ध पीति हो जाता था । यति राजदूत अपने पर पर विदेश में होता था और युद्ध पीति हो जाता था । यति राजदूत आपने पर पर विदेश में होता था और युद्ध पीति हो जाता था । यति राजदूत अपने पर पर विदेश में होता था और युद्ध पीति हो जाता था । यति राजदूत अपने पर पर विदेश में होता था और युद्ध पीति हो जाता था । यति राजदूत अपने पर पर विदेश में होता था और युद्ध पीति हो जाता था । यति राजदूत अपने पर पर विदेश में होता था और युद्ध पीति हो जाता था । यति राजदूत आपने था । यति राजदूत अपने था विदेश में होता था और युद्ध पीति हो जाता था ।

4 राजनियक तौर-वरीके : फ्राँसीसी राजनिय में हमेसा चिरत तौर-तरीकों पर जोर दिया गया । यही की मात्रा ने सक्दर्वी कींत कटारहर्वी स्तादियों में राजनिय की मात्रा का रूप से दिया । राजदूत की नियुक्ति के समय दिए जाने दाले निर्देशों में एसके रहन्ति के के तरीके अग्रव एवं रस्त-दिवाजें पर विशेष जोर दिया जाता था। उसमें यह भी बतायां जाता था वि राजदूत हो जिस से सम्बन्ध बढाने चाहिए सचा विनासे नहीं। सन् 1772 में जब फोसीसी राजदूत को तन्दन केया गया हो जसे यह निर्देश दिया गया कि ब्रिटिश सरिधा। वे अनुसार राजदूती का विरोधी दल से सम्पर्व स्थापित करा। गतत नहीं माना जता अत उसी विरोधी दल यानी से कट कर रहा वी आदरस्वता। सहीं है।

5 दूरायस से कर्मचारी फरीतीसी दूरावास के सभी वर्मचारी राजदूत हात नियुक्त विष लागे थे और वही जाने बेता देता था। राजदूत के लियत साम राहण्यारी उत्तरके परिवार जाते पूर्व के पाने कर जाते कर प्राप्त कर कर परिवार जाते पूर्व के पूर्व के पुरुष नहीं होते थे। इसो पर भी राष्ट्रीय सम्मान की दृष्टि से जा पर पर्यादा धन समें किया जाते था। राजदूत के साथ अनेक सर्वायी राजदूत के साथ अनेक सर्वायी राजदूत के साथ अनेक सर्वायी राजदूत के जाता था और वह उत्पाराज्य कर स्थाय प्राप्ताय सर्वायी है। इसी पर भी अप साथ अने स्थाय प्राप्त सर्वारी रहे पर अपने सामान की जाता था और वह उत्पाराज्य हो उत्पार में अपे सर्वा भी सर्वा दिया पर लेता था। आवागमन के चपयुक्त स्थापन सही न होने के कारण दूर देश में राजदूत की रियुक्ति अधिक सम्मानजाक नहीं मारी जाती थी। इसे टालने के तिए राजा पर अनेक स्थाय करने जाते थे।

6 आर्थिक हितों की अपिदृद्धि फ्रोंस ने पाजदूत का यह एक महत्वपूर्ण कतांव्य माना जाता था कि अपने देश के व्यापार की बृद्धि के लिए यह अपनी समता के अनुसार प्रत्येक सम्मय प्रसास करें । बुण प्रीजिं का व्यापार हतना महत्वपूर्ण समझा जाता था कि जनसे मान्य-पित प्रदेशों को मेजे जाने कार्य पाजदूत की शिक्षित विदेश मन्त्री हास न होकत विता एवं व्यापार मन्त्री हाता होती थी। फ्रींस छोड़ों से पहले पाजदूत भेवस्य ऑफ कॉमर्स से मेंट करते थे सामा जनवी मांगी और सिफारिसों के प्रति पूर्व किंग प्रदर्शित करते थे। ये राजदूत अपने कार्यों का प्रतिदेदन विदेश मन्त्रालय को न भेजकर फ्रांसीसी व्यापार विवन्त्रक को भेजते थे।

7 राजदूर्तों का श्वामत समझी शतान्यों में यर परप्या प्रपत्तित गड़ी थी कि राजदूर में जो सामय दिस्ती राजा या सरकार वो यूर्व स्वीवृत्ति जी जाए। प्राय किसी को भी अध्यानक राजदूर व नाजर भेज दिया जाता था। इस प्रकार जब यन नु 1685 में रार दिलियम ट्रूब्ब्ल (Six William Teunbull) को बिटिश राजदूर व नाकर पेरिश भेजा गया तो रहें 14ये को अध्या नहीं लगा। इस सामट वी राजदूर एव दिस्ती शासकों के साम्यम में अपनी पसन्द की शी नायस्तर थी और तद्वागात ही उनका स्वागत सामरोह किया जाता था। वसामत सामरोह का कार्यक्रम पर्याप्त विस्तृत रखा जाता था। कुछ समस्तर कर राजदूर साथ पर्याप्त विस्तृत रखा जाता था। कुछ समस्तर तर राजदूर साथ पर्याप्त विस्तृत रखा जाता था। कुछ समस्तर तर राजदूर तथा पर्याप्त विस्तृत स्वा जाता था। कुछ समस्तर तर राजदूर साथ पर्याप्त विस्तृत रखा जाता था। क्ष्म साम तक राजदूर साथ पर्याप्त विस्तृत रखा जाता था। क्ष्म साम तक राजदूर साथ नहीं होते थे। राजता था। विस्तृत रखा को होते हो थे। राजता था। विस्तृत रखा को होते हो थे। राजदूर साम की होते थे। राजदूर साम की होते थे। राजदूर साम की होते थे। राजदूर साम से भी उनको विशेष सीट नहीं दी था जाती थी। राजदूरर साम से भी उनको विशेष सीट नहीं दी वाली थी। राजदूरर साम से भी उनको विशेष सीट नहीं दी वाली थी।

8 गोपनीय विचार विनार हुई पीटरवी सम्मेलगीय राजनय के प्रदा में नहीं था। एसके मतानुसार यह समझीता वार्ता का एक धीमा व्यवसाय जरिल दारीका था। इसके स्थान पर वह विशेषकों के बीच दोने वाली गुप्त वार्ता को प्राथमिकता देता था। उसका कहना था कि खुली समझीता वार्ताओं में वार्तावार कभी सम्मान का प्रतान पदारे थे तथा कपना गौरव कायम पदाना पाहते थे। वे अपने सम्प्रमु वे ितो एव सकों का ही ध्यान रखने 9 डॉसो वी कैतियर्स (Francis de Callieres) के दिवार : कैन्टियर्स का राज्य गम् 1655 में हुआ था। यह हुई 1व्हें उत्तरत का मुख था। इसने राज्यिक महत्व के प्रभाव में पर कर्ष कर व्यवहारिक ब्युक्त प्राप्त किया तथा विश्वन्दार्श के करा के सम्बन्ध में कर्जने उत्तरीय विश्वा प्रकट किए। उनके प्रमुख दिवर निर्माणियर थे.

(छ) स्पि-दर्दा करते सन्य दूहरे को धनकी नहीं दी जारी बहिए। एक सही सीय दह होती है जिसमें सम्बन्धित परों के बन्दनिक हिटों के बीब सनक्ष्यम्य स्वास्ति हिया

एए। धन्हियाँ सीय बार्ट के लिए हानिकारक हैं क्योंकि ये सहैद उत्तेजना को प्रोत्तसहित कारी हैं। धनन्द से सकत्या प्राप्त कारी का प्रयास स्वय को बीछा देखा है।

(ग) कैरियर्स में राज्यस के पूर्ण का कलेख किया है। उसके मानुसार एक अध्ये राज्यस में नहीं निर्मास लेने की हमता होने मारिए। यह सम्पन्नसम्बद्ध एक कथा लोटा, करना की की समार करा की मारिए। यह मारिए। उसे म

(u) विनियर्त ने राजनवर्त्रों को टीन हेगियों में दिनजित किया है . राजदूत, दूत

कारामी एद कनिसाई।

(ह) वैनियमें के नदानुसार सकतु को ब्यादस्त्रीक राजनियक सेवा के निए नदी एव प्रतिक्षण की ब्यादन्या करती चाहिए। युवक सहद्याचिने को सनकी प्रतिवासिक पृक्तुनि के कन्यान पर नहीं दरन् सोच्या के कारत पर नियुक्त किया जन्द चाहिए। यार्निक व्यक्तियों

1 "he should per stanton to women, but never her his best." —Francos de Collecti

को राजनयञ्च नहीं बनागा चाहिए। सैनिकों को भी राजनियक सेवा में नहीं लिया जाना चाहिए, क्योंकि उनसे शान्तिप्रिय होने की आशा नहीं की जा सकती। विधि वेता भी राजनयश के दायित्यों का निर्वाह करने योग्य नहीं होता।

- (U) कैतियर्स का कहना या कि सामान्यता एक राजदूत को अपने राज्य को सरकार के समी निर्देशों और आदेशों का तो पातन करना चाहिए किन्तु उसे ईश्वर अथवा न्याय के नियमों के दिक्द किसी आदेश का पातन नहीं करना चाहिए । तदनुशार वह स्वागतकर्ता राज्य के सम्प्रुन की हत्या करने अथवा क्रानिकारियों के रायार्थ अपनी उन्नुतिकार्य का प्रयोग करने से मना कर सकता है। कैतियर्स के विधारों का राजनय के इतिहास में महत्यपूर्ण स्थान है। उसकी अनेक मान्यताएँ आज भी महत्व रखती है। इन मान्यताओं की महत्यपूर्ण कमी अथवा मृत यह थी कि इनमें शक्ति सन्तुतन के सिद्धाना अथवा व्यवहार को कोई

स्पष्ट है कि फ़ाँसीती राजनय के पीछे एक लन्मी परम्परा है इस राजनय की मुख्य प्रवृतियों में नीतकता की प्रधानता, राजनय में सगतन और परम्पराओं को स्थान देना राजदुर्तों की उन्मृत्तियों और दिशेषाधिकार तथा सधि सम्पादित करने के गुगों का समावेश पाया जाता है।

राजनयिक आचार का भारतीय तरीका (Indian Method of Diplomatic Practice)

प्राणीन भारतीय प्रन्थों में राजनय की प्रकृति तस्य सगठन सीमा व्यवहार आदि के सन्वयम में बिखरे हुए किन्तु चन्नत विचार उपलब्ध होते हैं। मनुस्कृति में कहा गया है कि मीति कुसत राजा को उन सब तरीकों का प्रयोग करना चाहिए जिनसे सनु मित्र एव उपसीन राज्य अधिक बतवान न होने पाएँ। कॉटिट्स के अधीसान्त महामारत के शान्तिपर्य एव अन्य दूसरे प्रन्थों में इन कुटनीति साधनों का उत्तरेख हैं। वेसे तो इस बात पर जोर दिया गया था कि मित्रों उदासीन एव मध्यम राज्यों को अपने पस में बनाए रखने के लिए इस सम्मव प्रयास किया जाए किन्तु कुटनीतिक व्यवहार मुख्य रूप से मनुकों के साथ प्रमुक्त करने के लिए ही था। कुटनीति उपायों के वर्णन का अपना महत्व था। धार्मिक नियमों की जो मर्यादाएँ राज्यों के पारस्परिक व्यवहार पर लगाई गई थीं उनका पालन केदल धर्मभीक राजाओं द्वारा ही किया जाता था। दुग्ट प्रकृति का अधार्मिक राजा तो किसी प्रकार का तितस्य मानता ही नहीं था। ऐसी स्थिति में धार्मिक नियन्त्रण धर्मशील राजाओं को हानि है स्थिति में रख देते थे। अत यह कहा गया कि ऐसे राजा से संघर्ष करते समय किसी

धार्मिक राजा को भी कूटगीतिक उपायों का प्रयोग इस प्रकार करने के लिए कहा गया कि अध्येमी राजा को नियन्त्रण में लाया जा सके। यह सिद्धान्त आधारों के व्यावहारिक ट्रिटकोण का प्रतीक है। शत्र दिख्य की लारता एव चक्रवर्ती सम्राट बनने की महत्त्वकोंका के पीछे किसे यह होश रहता है कि वह धार्मिक नियमों का पालन करे। इतने पर भी यह कहा गया कि कूटगीतिक उपायों का प्रयोग परिस्थिति के अनुसार किया जाए। इनकों कहत राजाओं के साथ ही प्रयुक्त किया जाए प्रका के प्रति नहीं। प्रजा के साथ हो प्रयुक्त किया जाए शहनकों कहत राजाओं के साथ ही प्रयुक्त किया जाए प्रजा के प्रति नहीं। प्रजा के साथ हो प्रयुक्त किया एग कूटगीति साधन दिखने में तो अधार्मिक एव अनैतिक लगते थे किन्तु अपने चरेश्य के आधार पर वे चिवत ठहराए जा सकते थे। महानात्त में भीम के अनुसार वर्ष केवल बड़ी नहीं है जो श्रुतियों या स्मृतियों में कहा गया है दरन्त सफलन लोगों की शुद्ध में अजेक बार घर पर्म का निर्णय करती है। विज्ञातिकारी राजा को भी समय की आवरयकता एव परिरिवरियों की मजदूरी को देखते हुए निर्णय लोगा बाहिए। राजा का जन्म दूसरों का हित साधन करने के लिए हुआ है. इसलिए उसकों सीचण कार्य करने होते हैं क्योंकि अवस्थ का वध न करने में भी दोष होता है।

प्राचीन भारत में अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीति की यह एक मुख्य मान्यता थी कि आक्रमण करने के लिए ययासाय युद्ध का सहारा नहीं लेना चाहिए। जब साम, दाम दण्ड आदि मीति के समी क्षाय असफल हो जाएँ तो अन्तिम चपाय के रूप में दिवश होकर युद्ध को अपनाना चाहिए।

वार्ता दबाव समझौता एव युद्ध की घमकी कूटमीति के मुख्य तत्व थे । कूटमीति व्यवहार में कुराल राजा को पृथ्यी का विजेता माना गया था । विजिगीषु कूटमीतिक व्यवहार का केन्द्र या । यह पुरोहित हारा अनुसासित किया जाता था । उसमें छ गुगों का होना अनिवार्य माना गया था। ये थै—माषण की कुरातता, रासमों का तत्काल मुख्य करना वृद्धिमता स्परण सांकि राजनीतिक एव नैतिक आवरण काना । विजिगीषु अपने साज के समाना करने के लिए सात सायन अपनाता था जैसे—जाट. दवारें, मेंट आदि ।

आवार्यों ने जिस मण्डल-व्यवस्था की स्थापना की बी उसका केन्द्र-बिन्दु भी स्वय विजिमीष्ट ही था। वह अदिराज्य मध्यम राज्य एव उदासीन राज्य के पारस्परिक सम्बन्धों का रूप निश्चित करता था। वह अपनी मत्र राक्ति उत्तराह राक्ति एव प्रमुचित के माध्यम से बुद्धि कोच और साहस का सहारा देकर रन्तावाक किया सम्पन्न करता था। विजिमीष्ट की यह प्रमुख समस्या थी कि मण्डल के सदस्यों को कैसे अपने अधिक से अधिक हित में किया जाए। साम दाम दण्ड और मेद की नीति अपनाकर विजिमीष्ट मण्डल के सभी सदस्यों को अपने प्रमाव में कर सेता था। सामान्य रूप से विजय सम्मन्य मही के कारण षाडगुण्य को अपना कर व्यवहार सम्प्रतित करता था। ये तत्कासीन कूटनीति का एक मारतपूर्ण आ थे। कौटित्य ने मुद्ध को एक बुगई मानते हुए स्वामी को प्रत्येक ऐसी नीति अपनाने को कहा जो मण्डल की एकता एव समस्त्रता को बढावा से सके। सनिव एव आप्रम की नीति करता कथारे राजाओं के साथ अपनानी चाहिए और उसे यथासम्बद बनाए रखा जाना चाहिए। शानित वानी बराबर वानों से या अपने से उच्च से करनी चाहिए।

कीटित्य ने कुटनीति एव रणकौशल पर विचार करने वाले के रूप में सग्रहत्र संघर्ष की अपेका कुटनीतिक सामार को अधिक महत्व दिया। मुद्ध धीवत हो जाने के बाद भी खुले संघर्ष की अपेका कुटनीतिक प्रयासी से ही यदि विजय प्राप्त हो जाए तो अच्छा है। कोटित्य की आसन या संदर्श्यता की मान्यता विश्व पानतिति के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण देने है। उदासीन पान्य तो स्थारी रूप से तटक्य रहते थे। हतने पर भी मण्डल में उनका स्थान एव महत्व था। चरेवासन की मान्यता हारा यह बताया गया कि एक रायव बिना किसी का नित्र अथवा सन्तु बने ही मध्यम समन्या विकसित कर सकता था।

कीटित्य की कूटनीति में ज्यायों के माध्यम में बाडगुज्य की क्रियानिति भी अपना महत्त रखती है। ज्यायों में माया तथा इस्तजात को कूटनीतिक व्यवहार का निम्न तत्व माना गया है तथा उसे अन्तर्राज्यीय मैतिकता एव कूटनीति के विद्यान्तों में स्थान नहीं दिया गया है। कूटनीतिक व्यवहार में उपेक्षा का प्रयोग आधुनिक काल में भी अपना महत्त रखता है। कौटित्य ने बताया है कि कमजोर राष्ट्र जो शांकि राज्य के साथ खुला युद्ध नहीं कर सकते अपने पड़ीतियों के माने पूर्ण उदानीत्ता का इन्दिक्तीण अपनाना माहिए। यह अपनर्शन के तिए आवश्यक है। उसी प्रकार यह स्वयंत्र की अथवा उच्चतर शक्तियों के श्रीय महत्ता के तिए आवश्यक है। उसी प्रकार यह स्वयंत्र की अथवा उच्चतर शक्तियों के श्रीय महत्ता के वातावरण को कम करने भे भी सहयोगी है।

प्रापीन भारत में कूटनीतिक सम्बन्धी का रूप अत्यन्त जरित था। उस समय सम्प्रतिता वार्ताएँ बहुत अधिक हुआ करती थी। यही कारण है कि कूटनीतिक प्रतिनिधियों सद्देशवाहकों तथा गुल्यपरों को पर्याप महत्व दिया गया। वे कूटनीतिक अध्वरहा के अधिमाञ्च एवं नियंत्रित अन बन गए। कूटनीतिक अधिकारी को अपने स्वामी के हिलों का प्रतिनिधित्व कंट्रमें के हिल्ए दूसरे राजा के दरबार में नियुक्त किया जाता था। वह प्रकाश दूक होता था और इस प्रकार और गृद दुर्तों से तिक होता था। की हम्मू एजेन्ट कोई थे। प्रकाश हैत का कार्य था युद्ध योषणा को प्रवारित करना मित्र बनाना तथा राज्य के अधिकारियों एव प्रजा के बीध मेट कालना। राजदूत तीन प्रकार के होते थे। नि युस्तार्थ प्रयंत्रितार्थ और

गुप्तापर कूटनीतिक अधिकारी के नियन्त्रण में रहते थे और अपनी गतिविधियों के लिए एसी के प्रति उत्तरदायों थे। गृद्ध पुरुष का मुख्य कार्य शत्रु प्रदेश से महत्वपूर्ण सूक्ता एकदित करना तथा उसे अपने देश की सरकार के पास भेजना था। दूत को हवा की तरह तीव और सूर्य की तरह डाकिसाती होना था। बौटिन्य में गुप्ताचरों के जी 9 मेद किए हैं उत्तरों यह स्पष्ट होता है कि उस कात में कूटनीति का क्या प्रमाव था। अन्तर्राज्यीय सम्बन्धों मे इतका महत्वपूर्ण स्थान था। यहाँ तक कि थल सेना एवं जल सेना भी इनकी जीच से बादर नहीं रहती थी। सेना के विनिन्न विमागों एवं अधिकारियों के प्रस्तंक कार्य पर सूच्य इन्हिट रखी जाती थी। मण्डल को गुद्ध स्थाने के लिए यह सब किया जाना आवश्यक था। विरोधी तथा शत्रु पक्ष के गुरावयों द्वारा मण्डल को अशुद्ध बनाया जा सकता था। राजनीति का साता खेल आस पास के राज्यों के बीच शक्ति समुतान की स्थापना करने के लिए था। इसके लिए अन्तरिक जागरकता आवश्यक थी। एक ऐसे राज्य से भी आक्रमण की आता की जा सकती थी जो कि कल्यना के बाहर था। कामन्यक ने मण्डल की तुलना एक घक से की हिल्ता श्री जो कि कल्यना के बाहर था। कामन्यक ने मण्डल की तुलना एक घक से की है जिसकी पुरी विज्ञीगीनु होता है। अन्य राज्य इसके बाहर का परिवा तथा उसे मिलाने वाली ताडियों होते हैं। यदि युरी मजदूत है तो वह मति के समय ताडियों एवं पिट्र मिलाने वाली ताडियों होते हैं। यदि युरी मजदूत है तो वह मति के समय ताडियों एवं पिट्र में में यसारयान रख सकेगी। युरी में किसी प्रकार की कमजोरी पूर्व घटन के लिए खतरनाक हो सकती है। विजिनीमु का यह कर्तव्य था कि वह अपने मण्डल के चित्र चक्र को युद्ध एवं विनाश से अधुता रखें। इसके लिए उसे लालब, अदिवेक एवं अनीधित्य से दूर रहने को कात्र गार्थ है।

भारतीय राजनय के साधन (The Means of Indian Dinlomacy)

भारत के प्राधीन ग्रन्थों में राजनय के सावनों का विदेषन किया गया है। वे इनको जगय की सज्ञा देते हैं। इन उपायों के उपित प्रमीग से राजा को तिद्धि प्राप्त होती है। मुन के कथनानुसार दिजय के अमिताषी राजा को अपने पड़ीसियों को साम अबिट पायों द्वारा वस में करना चाहिए। भारतीय आवारों ने इन उपायों के महत्व का साहिरियक माषा में उल्लेख किया है। शुरू ने सिखा है कि "लोड़ा अति कठोर होता है किन्तु उपाय से वह भी पियत जाता है। लोक में प्रमिद्ध है कि पानी अभिन को बुझा देता है किन्तु उपाय से वह से कान तिया जाए तो अगिन समस्त जल को सुखा देती है। मदोन्मत हायियों के तिर पर भी उपाय द्वारा पैर रखा जा सकता है।"

अधिकाँच विचारकों ने इन उपायों की सख्या चार मानी है। ये हैं—साम दाम, दण्ड और मेद। कामन्दक ने इनके अतिरिक्त तीन अन्य उपायों (माया उपेक्षा और इन्द्रजात) का मी उल्लेख किया है। राजनय के इन उपायों का सक्षिन्द परिचय निम्नितिखित रूप से हैं—

- साम शत्रु अधवा बिगड़े हुए मित्र को समझा-बुझा कर वश में करना साम उपाय कहलाता है। कामन्दक ने साम उपाय के पाँच मेद बताए हैं—
- (1) पारस्परिक उपकारों का वर्णन (11) पारस्परिक गुना-कर्म की प्रशास (111) पारस्परिक सम्बन्ध का आख्यान (117) महित्य के कार्यो पर प्रकाश तथा (17) महीतर मीठी तथा हितकारी वाणी में यह करते हुए के "मैं तुम्तरात हूँ", आत्मसमर्पर्धन । साम जपाय को अपनाने वाले राज्य हारा प्रदुत्त की जाने वाली माथा के सम्बन्ध में कामन्दक ने लिखा है कि "जिस बाणी से दूसरे को उद्धोग न हो वह सामवाणी कहतार्ती हैं। " सा सरज, सत्य एव प्रिय डांगी है।" राज्यों को स्वासम्पव इस उपाय का अनुसरण करना भाहिए। कोटिट्य के मतानुसार दर्सत राज्यों को समझा-इसा कर प्रसान पढ़ान चाहिए।
- 2. दान : इसे दान भी कहा पोता है। शत्रु अयवा विगठे हुए भिन्न को शान्त करने के लिए आश्वासनपूर्ण वयन भूमि धन धान्य आदि के दान का आश्रय लिया जाना दाम चपाय कहलाता है। राजनय का मूलमूत नियम आदान प्रदान है। यदि एक राज्य अन्य
 - 1 रक्रनेति, अध्याय-4-स्तोक 1126 1127 एव 1128

राज्य से कुछ पाना भारता है तो उसे स्वय मी कुछ देने के लिए तैयार रहना भाहिए। यही समझीते का आध्य है। कामन्द्रक ने इस उपाय के भीय मेदी का उस्लेख किया है—(1) मात्रु अपया नाराज नित्र का जो धन धान्य या हम्म देय (Due) है उसे ज्यों का त्यों लीटा देना. (1) अपना जो धन धान्य अपया कृषि आदि शत्रु के अधिकार ने पहुँच गई है उसे उसी के पास छोड़ देना (11) स्वय द्वारा स्वेष्ण से अन्य राज्य को भूमि आदि दान करना (19) शत्रु राज्य से रवय धन-धान्य भूमि आदि प्राप्त करना तथा (9) शत्रु से तूट में प्राप्त हुए प्रदेश या सम्पत्ति को छोड़ देना। दाम उपाय के इन मेदी को कोटित्य ने भी स्वीकार निवार है।

3 भेद जिस समय द्वारा शतु अध्यय नित्र शाला में मेद या फूट उत्पन्न हो जाए उसे मेद प्रथम करते हैं । इतके हारा एक राज्य अपने विरोधियों में फूट उतन कर उनली शांकि को कमजेर बनाता है। कामन्दर्क के मतानुसार मेद उपधा बीग प्रकाश का है—() शतु के स्त्रेडियों एव समर्थकों में फूट उत्पन्न करना (n) शतु के मन्त्री सेनाव्यव समर्थक एव अन्य उच्छा पद्यिकारियों में सप्तर पहुंच्यापूर्ण व्यव्हार को प्रोत्साहन देना ताकि उनके बीध मेद ऐसा हो जाए (m) प्रमध्यि वैदेश कहा युर उपस्तर सहायकों के दिनों में पर उत्पन्न करना है।

मेद नीति जिन व्यक्तिमाँ पर अपनाई जानी चाहिए उनके लहागों को भी कामन्दक ने प्रस्तुत किया है। उसके मतानुसार चार प्रकार के पुरुष चेद योग्य होते हैं—वे जिनको उनकी दी गई वस्तु का मूट्य नहीं मिला है वे जो लोनी मानी तथा तिरस्कृत हैं, वे जो किसी कारचारता नाज्ञज ब्याक्रोदी हैं तथा वे जो यह कहते हैं कि तुम्होंने काम्य मेरा काम दिगाइ गया। ऐसे पुरुषों पर मेद का प्रयोग शत्रु को अपन कर देता है।

राजनय के चंक तीनों सामनों का आकरवंकता एव परिस्थित के अनुसार प्रयोग किया जाना चाहिए। सारतीय आवार्यों ने चंध्ये उपाय दण्ड को मजदूरी में अपनाने के दिए कहा है। मनु के कयनोन्सार यदे शानु प्रथम तीन चपायों हारा वश में न आए तो दण्ड हारा उसका दमन करना चाहिए। इस प्रकार दण्ड का प्रयोग विवासा का परिणाम है।

4 दम्ड र शत्रु द्वारा किये गए अपकार के हेतु उसे दन्दित करने के साधनों को अपसान रण्डोपाय है। कामन्दक ने दण्ड के तीन मेद स्वाए है—सत्रु का बच कर देना उसका पन हर तेना तथा सारीहित करूर देना होतिहत्य ने भाना है है कि जो राधा दुर्स के है उनको समझा-दुझा कर और कुछ देकर अपने अनुकूल बना सेना चाहिए तथा जो राजा समस हो उनको दण्ड उपयो से बस ने करना चाहिए। मनु के कममानुसार "जिस प्रकार कृषक धान्यों की रसा हेतु निराई करता है उसी प्रकार राजा को धर्म-विरुद्ध आवश्य करने साती का दण्ड हारा दमन करना चाहिए।"

दण्ड का प्रयोग प्रकट एव अप्रकट दो रूपों में किया जा सकता है। कामन्दक के मतानुसार प्रजादेशी एव शबुओ पर प्रकट करा से दण्ड का प्रयोग करना प्राहिए किन्तु जिनको दिण्डता करने से प्रजा के उत्तीरित होने की आशका हो या जो दण्डनीय व्यक्ति राजा के निरूटतों हो जनके अप्रकट दण्ड दिया जाना पाहिए। इस प्रकार के दण्ड में विश्व साथा दिशेष प्रकार के संग्व गता करने प्रकार के संग्व गता है।

1 मनुरमृति—198 200/7

62 राजनय के तिद्धान्त

5 माया - राजनय का एक अन्य सचन माया है। इसके अनुसार इच्छानुमार रूप यारन करने महत्रास्त्र अयदा जल की दर्श करने अन्यकार में टीन होने की नीति अपनई एती है। इनको कामन्दक ने मानुदी माया के नाम से सम्बोधित किया है। वे इसे उपमुक्त अदसर पर शत्रु के नाम के लिए उधित मानते हैं।

6. समेशा - दूसरे राज्य द्वारा अपकार किए जाने पर नी दिशेष परिस्थिति में उसकी और से ठींव बन्द कर होना हमा मैन रहना कामन्यक के अनुसार स्पेश का समय करना है। उसके मतानुसार स्पेश की सीन मेद होते हैं—(1) अन्याय की स्पेश करना (n) व्यसन की स्पेश तथा (m) पुद में प्रवृत होने बाते का निवारण न करना।

7. इन्द्रजात : श्रंत्रु को नयनीत करने के लिए जिन उपायों नो अपनाया जाता है उन्हें भारतीय जावायों ने इन्द्रजाल कहा है। उचाहरण के लिए नेय, अन्यकार, दृष्टि, अगिन, पर्वत त्या अनुनृत दर्शन एव घजा पताका है युक्त दुरस्य सेना का दर्शन आदि कार्य। इन सभी उपायों के आलम्बन द्वारा शत्रु अवकित होता है और मयमीत क्षेकर सम्बन्धित राज्य दी सर्तों के जो कुक जाता है।

मारतीय आवार्यों ने राजनय के रमर्पुळ साथाँहें हो शत्रु की सेना अवदा बिद्रोहियों में आवस्यकरामुसार प्रयोग करने का पदानर्री दिया है। इन उपायों का आव्रय लिए बिना युद्ध का मार्ग अपनाने की भेष्टा अन्ये पुरुष के कार्य जैसी मानी गई है।

भारतीय राजनय का प्रभाव (The Effect of Indian Diplomacy)

प्राचीन मारतीय ग्रन्थों के अदलोकन से स्तरूप हो जाता है कि सकतय की प्रक्रिया एवं व्यवहार के अनेक सिद्धान्त मारतीय मर्गीशियों द्वाग्र प्रतिपादित किये गए हैं। राजनिक दूरों का उल्लेख प्राचीनवन धर्मगास्त्र मनुस्कृति में मिलता है। वदनुसार "राजदूत की निदुक्ति चंज द्वारा की जग्म सेना का नियन्त्रन सेनायति करे तथा प्रजा का नियन्त्रन सेना करे। पाज्य की सरकार पर राज्य का नियंत्रन रहे तथा मुख्य एवं शान्ति का निर्मंत राजदुत के द्वारा किया जाए।"। रामायन में राजनियक दूरों की निद्मिति के दो चदाहरन मिलते हैं—

(क) भी हनुमानजी सीताजी की छोज करने के लिए सजदूत बनकर रादम के दरदार में उपस्थित हुए। उन्होंने अस्रोक दादिया के दुधों को होक कोई कर सार्दियिक सम्पत्ति के हार्ति यह के हुए हैं को होक कोई कर सार्दियिक सम्पत्ति के हार्ति यह कि हुए दिसीवम ने एसे यह सुझाव दिया कि उपराभी होने पर भी दुत को नहीं मारणा चाहिए। (छ) एक अप अदसर एर आद को दून बनकर रादम के दरसार में में हम गया या साहित रादम के दिख्य अनियम रूप में सुद्ध की धीवमा करने से पूर्व शासनकारों की सम्मादमा का पद्धा लगाता जा स्वो । महासरात में मुद्ध अस्था प्रशास होने से पहले पानदारों की और से श्रीकृष्ण दुर्धाय के दरसार में दूत बनकर गए थे। उनका रूप छानियुने समझीने के लिए वर्ता कराता था। वहाँ पर कृष्णा पर अध्यात करने की योजना स्वाई यह दिद्ध से कहा कि दूत अनिदाह मारणा था।

¹ महास्थि, VII, 65

^{2. &}quot;रमदूर बदुतित बतयन्थं, बज्जीपुत परन कुटरम 🗈 भी दुनसीदार

होता है। धर्मग्रन्थों के ये उदाहरण चाहे ऐतिहासिक सत्यता न रखते ही किन्तु यह तो सिद्ध करते हैं कि प्राचीन भारत में तदर्थ राजनियक दत्त मेजने की परम्परा थी।

भीर्यकाल में राजनय के सिद्धा त और व्यवस्तर की प्रमति अपने घरम स्तर पर पहुँम गई थी। शितारी शताब्धी हैसवीं में सीरिया के सैल्युक्त निकेटार ने मैगस्मनीज को दूत में नाकर मन्द्रपुत मीर्य के दरवार में भैगा था घन्द्रपुत के शासनाकत में कीटिव्य (धाणश) में राजनय के अपने मिरिद्ध प्रमा अर्थशास्त्र की रामज की। इसके प्रमा गाण के सोल्डवे अव्याय में कीटिट्य में राजनिक हुतों की सस्था पर विचार किया है। अर्थशास्त्र के अनुसार पाजनिक दूरों का साम गाण में में शांकरण किया था सकता है—दूत निस्नटार्य प्रतिनितार्थ एवं शासनदर। इन समी प्रशर के दूतों के रामणा का मुख्य कहा है क्योंकि वह हमके मार्य में अपनी बात अन्य राजभी तर दूरी से राजन का मुख्य कहा है क्योंकि वह इनके मार्यम से अपनी बात अन्य राजभी तर बहु सामकता है और उनकी बात सुन सकता है।

अनि पुराण (भीधी शताब्दी) एव वार्वणमृत (दसवी शताब्दी) में राजनीयैक प्रतिनिधियों का उल्लेख किया गया है। यदी इनको केवत बाद बाते तीन मार्गी में ही दिमाजित किया गया है। मारादी इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण नितात है जितसे का हिस्त होता है कि बौद्ध काल में रोजनियक प्रतिनिधि मेजे जाते थे। सम्राट् अशोक के समय मारत के लक्ष तीरिया नित्र आदि देतों के साम राजनियक सम्बन्ध थे। सातवी शताब्दी के पुलेकीतन दित्रीय स्था परिचात के साक के सीम राजनियक सम्बन्ध थे। शोश्यक के राजा इर्षयोंच और भीन के शारी दरबार के बीम राजनियक सम्बन्ध थे। धारे कात के मारतीय राजनियक दूसरे राज्यों के स्वति-वार्ती एव पत्र-व्यवहार करते समय गुढ लेख अथवा गुल साथ का

राजदूत की योग्यताओं के सम्बन्ध में मनु का कथन था कि राजदूत स्वामिगक ईमानदार, पतुर अध्यी स्मृति वाला सुन्दर निव्हर तथा समय और स्थान का महत्व जानने बाला होना चाहिए। महामादत के बीध्म ने राजनिक दूत की सात योग्यताओं का उत्सेख किया है यथा—जध्य-कुम अध्या परिवार श्रेष्ठ घ्याष्ट्रपाता, चतुर निष्ठ-माणी स्वामिमक एव अध्यी मृति वाला।

महापारत शान्तिपर्व (राजधर्म) LXXXV, 26 27

भारतीय राजनय का व्यावहारिक रूप (The Practical Form of Indian Diplomacy)

मारत में राजनीक विवार केवल सेंद्व निक साहित्य में परिनेत रह कर ही पाटड़ों का मने राजन नहीं करते रहे वरन् जनका व्यवहाँक राजनीत पर प्राप्त रहा। वैटिव्य ने राजनय द्वारा ही पम्मुनुत को मारत का प्रकृती सक्तर बनाया। महत्व दिवायहरू का महत्व मुद्रा सहसा इसी क्यमन कर कथारित है। इसने राजनीक कुटली के एव राजनीतिक दाव पेया पर समुचित प्रवास दाला गया है। वरत्या द्वारा रिका राजनीति इस राव्य का प्रणा है कि प्राप्ती नामक के समक्र निपन्नित रूप ने हम्या विशेष करतार्थे

मुगत रामनकात में राजारिक अधार को हव अमनावा जाता था जब देश में समान रक्ति बते दूसरे राजा में हेते थे। देशवादी एकप्रतार क्यापित हो जाने पर राजारिक आवार की आदरकता नहीं रहती थी। इस कात में दूसरे राज्यों से दूरों के आने जाने के कुछ उपहरा मिलने हैं।

मुगत रासन के पतन के ससय भारत छोटे छोट स्ततन्त्र राज्यों में दिनछ हो गया त्या यहाँ करोण फ्रांसिसी और पूर्तगाली कारि अपने देश जाने ने हो इस सास के मात मी हमें राज्यिक व्यवहार के प्रमाण प्राय होने हैं। तह मात मूमि पर मारटा सिक्छ मुगत सप्तट नदार बारी, कहा बहिला हो मुस्तमान सस्तान्ते अग्रेण आंत्री कार्य में राजयिक शताब की मातें सत्त्रों में अपने दुवि सहुर्य का उपयोग किया था। तुछ राजयिक शताब्दी में बाराजीय, माताब्दी हिरहात्री दीन सुमान, राजीपित

सिक्यों की राजनीत में कूटनीत के दर्रन तो होने हैं किनु राजनय के नहीं होते। बार बार की आपना करायित करके कालों रोक्ता या जरह की गई सिवारी आहर काला हुन करों की आदत बन चुड़ी थी। इंदार को सारी मानवार की गई सिवारों को भी हरके कींच की वादत की दिया जाना था। विकार इन्हित से सीच काओं के लिए राजनिक प्रतिपिध (दा दर्शन) नेजने तथा बुलने के अनेक चटाहरण मिलते हैं। राज्य 1783 ई

1 HR Giges History of the Sikhs Vol. 11 p 67-64 197 183 59

राजनय के साधन एवं तरीके ५५

में सिक्कों ने दिल्ली पर आक्रमण किया तथा सम्राट से तीन लाख रुपए एँठ लिए और अपने दितों की रहा के लिए अपने वकील लखपतराय को छोड़ गए ।

मराठा इतिहास में उच्च रणकौशल के साथ-साथ राजनयिक पटता के भी दर्शन होते

हैं । छत्रपति वीर शिवाजी स्वय राजनय के पण्डित थे तथा अपने जीवन के अनेक प्रसगो में उन्हों ने अप है इस योग्यता का परिचय दिया । देश के प्राय सभी शासकों के यहाँ मराठा शासकों के प्रतिनिधियों का आदान प्रदान होता था। सन 1730 में सम्राट के प्रतिनिधि जयसिंह ने जब भराठों से शान्ति सन्धि का प्रयास किया तो छत्रपति शाह में दादा मीमसेन

को अपना राजनियक दूत बनाकर भेजा । ब्राह्मण राजनयञ्ज रामदास पत का नाम मराठा इतिहास में विशेष स्थान रखता है। इस काल में 1759, 1767 तथा 1772 में अग्रेजों ने

पना में अपने राजदत भेजे। महादजी सिन्धिया एक कुशल राजनयज्ञ था। उसे मुगल सम्राट मे पेशवा के प्रतिनिधि की हैसियत से वकील-ए मृतलक अथवा पूर्ण अधिकार प्राप्त अमात्य नियक्त किया। महादजी

ने बढ़ी कुशलता एव शान्तिपूर्ण कार्य किया । उसके सहयोगी दूतों में इगले मल्हार तथा अन्याणी के नाम उल्लेखनीय हैं । इस प्रकार भारतीय इतिहास में कुशल राजनयड़ों की कमी नहीं रही किन्तु उनको पारस्परिक वैमनस्य फूट देशद्रोह व्यक्तिगत स्वार्थ एव विज्ञामिल के करणा श्रीक्रिकीय सफलता प्राप्त नहीं हो सकी ।

राजनय के रूप

प्रजातन्त्रात्मक राजनय, संसदीय राजनय, शिखर राजनय, सम्मेलनीय राजनय, व्यक्तिगत राजनय तथा सहमिलन राजनय, आधुनिक विश्व में चनका प्रमाव और सीमाएँ-पुराना राजनय-पुराने का नए की ओर परिवर्तन, नया राजनय, नई तकनीकें तथा राजनय में आधनिक विकास of Diplomacy-Democratic Diplomacy, Parliamentary Diplomacy, Summit Diplomacy, Conference Diplomacy, Personal Diptomacy and Coalition Diptomacy, Their Potentialities and Limits in the Modern World-Old Diptomacy, Transition from Old to the New, New Diptomacy, New Techniques and Recent Developments in Diptomacy)

राजनय का प्रयोग किसके द्वारा किया जा रहा है, किस दिध से किया जा रहा है उसका लक्ष्य क्या है। उसका क्या स्वरूप है तथा उसके परिनाम क्या हो सकते हैं, आरि महत्वपूर्न इन्तें के अन्तर के कारण राजनय को अनेक रूपों में दिमाजित किया जाता है कुछ प्रमुख रूप निम्नितिखत हैं---

- 1. पुरना राजनय (Old Diplomacy)
- 2. नया राजनय (New Diplomacy)
- 3 प्रजादन्त्रात्मक राजनय (Democratic Diplomacy)
- 4 ससदीय राजनय (Parliamentary Diplomacy) 5 शिवर राज्नय (Summit Diplomacy)
- 6 सम्मेलनीय राजनय (Conference Diplomacy)
- 7. व्यक्तिगत राजनय (Personal Diplomacy)
- 8 सद[ा]यकारदादी राजनय (Totalitarian Diplomacy)
- 9 खला राजनय बनान गुप्त राजनय (Open Diplomacy v/s Secret Diplomacy)
- 10 दहानदार जैसा राजनय बनाम यैद्धिक राजनय (Shopkeeper Diplomac) s/s Warnor Diplomacy)
 - 11 प्रदार द्वारा राजनय (Diplomacy by Propaganda)
 - 12. सहँदेलन राजनय (Coalition Diplomacy)
- 13 बुछ अन्य स्य (Some other forms) ऐसे—सँस्कृटिक राजनय (Cultura Diplomacy), युद्धपेन राजनय (Gurboat Diplomacy), सहायदा का राजनय (Au Diplomacy) 1

राजनय के विनिन्न रूपों में परस्पर कोई सम्बन्ध न हो ऐसी यात नही है। यदापि इनने से को एक-दूसों की विसंधि प्रकृति के हैं किन में यह सम्बन्ध है कि देश के राजनव में इनमें से हुए कर एक साथ प्राप्त हो तो है। उदाहरण के हिए एक सहस्य प्रजावनास्त्रक होने के साथ साथ प्रयार का खुले सम्मेलनों का एव दुक्तादार जैसा भी हो सकता है। इस दृष्टि में यदि राजनय के उपयुक्त विश्व अनारी को अन्तर की सज्ञा न देवल केवल राजनय की विधेषताएँ नहें तो भी अनुदित न होगा।

प्रजातन्त्रात्मक राजनय (Democratic Diplomacy)

अर्थ एव विकास (Meaning and Fvolution)

प्रजातन्त्रात्मक विधारधारा के विकास के साथ साथ राजनध के स्वरुप एव प्रक्रिया में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन उपस्थित हुए । प्रजातन्त्रिक राज्यों में भ्रमुससा जनता में निवरस करती है और सम्भूष्ण राजनीतिक एव प्रशासनिक शांक का प्रयोग करने वाले प्रयाधिकार करती है। उस जनता के प्रति उपस्थानी होते हैं। तत्त्र द्वारा प्रजातन्त्रात्मक देशों के राजदुर्ज अप्य राज्यों में अपने मन्त्रिमण्डल का प्रतिनिध्य करते हैं। उस पर प्रवादता दिशेश मन्त्री का नियनल पहला है। विकास साम कि साम का नियनल पहला है। विकास साम कि अधि उपस्थानी होते हैं। इस प्रकार अधिक प्रतादात्मक के अधि राजनिक प्रतिनिधि होने के कारण जा इच्छा के प्रति उपस्थानी होते हैं। हम प्रकार अधिक प्रतादात्मक का के स्वाद का मार्च में अपने का मार्च में अपने का मार्च के प्रतादात्मक का प्रतादात्मक प्रतादात्मक प्रतादात्मक प्रतादात्मक प्रतादात्मक प्रतादात्मक प्रतादात्मक प्रतादात्मक प्रतादात्मक का प्रतादात्मक प्रतादात्मक प्रतादात्मक प्रतादात्मक प्रतादात्मक प्रतादात्मक प्रतादात्मक प्रतादात्मक प्रतादात्मक के प्रतादा होती है इस्तिरण इसे राजनित से दूर ही राज जाता है। राजनिक प्रतिनिधि सरकार के अध्यक्ष प्रतादात्मक करते हैं। अपने अनुमय जाति इस के आधार पर वे अनेक बाद सरकार को प्रयाद्य देते हैं है स्था उसे किनाइमों से अवराद करते हैं किना प्रताद कर सामन करते हैं। अपने अनुमय जाति इस प्रतादा पर वे अनेक बाद सरकार को प्रयाद है है। इस प्रताद करते हैं महिना उस प्रताद करते हैं किना उस सरकार के अपने का स्वाद करते हैं कि स्था उस किनाइम्ब के अधार पर वे अनेक बाद सरकार के प्रतादा है है किना उस हो अपने करते हैं। इस प्रताद करते हैं किना उस किनाइम्य के अधार प्रताद करते हैं। का स्वितेष्ठ प्रताद करते हैं। स्वाद कर

इस प्रकार भीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में प्रजातत्त्रात्मक राजनय शब्द लोकप्रिय बना । अब अन्तरोष्ट्रीय सबर्यों में निर्णायक शक्ति जनता बन गईं।

प्रजातनात्मक राजनय का सही दिकास प्रथम धिरवयुद्ध के बाद हुआ यदापि हससे पूर्व भी कुछ यूरोपीय देशों में इसका प्रपतन था किन्तु ये देश अनेक महत्यपूर्ण पून सावियाँ करते थे जिनके हाथ अनजाने में किसी देश की जनता को अन्य देश के विरुद्ध लटने के हिए चयनबद्ध कर दिया जाता था। उदाहरण के हिए जर्मनी औदिऱ्या तथा इटली के बीच त्रियसीय साविय स्वाधित किए जनते में केवल साव्य के अन्यान रखा गया बरन् मान्त्रमण्डल के अनेक मन्त्रियों को भी जानकारी मही दी गई। प्रथम विरुद्ध के बाद समी यह मानने तुनी कि गुण स्वियाधी विरुद्ध शानित के लिए खारनाक है सथा अजजातानिक

 [&]quot;The diplomatist being a civil servant is subject to the foreign secretary being a member of Cabroet is subject to the majority in parliament, being but a nyercentative assembly to subject to the will of the sweetign people —Illered (A. of on.).

६६ राजनए के हिटाना

हैं। इतः महिष्य ने चित्रपुद्ध को चेठने के लिए गुढ समियों के स्थान पर खुले रूप में सन्दर्भ का सन्दर्भ किया जने तम ।

दिशेषवाएँ (Characteristics)

। प्रजननात्मक राजनद में राजनदारों को न केदल रूपने देश के शासदों की रुपि का है ध्यान रखन पड़ता है दरन उन्हें जनता की रूपि एवं पनहित का भी ध्यान रखन हेटा है।

2 राजनीक स्नर घर की जाने दाली सभी सन्धियों एवं समझौतों से सामान्य जनदा को परिचेत रखा जाता है और जनता समय समय पर चनके बारे में अपनी राय प्रकट दरती है।

3 अनेक एन सन्दर्भो एवं सगठन द्वारा विदेशों से की गई सन्धिमें एवं समझौतों के दिरेय य सन्धन में नहा प्रवार आर्देशन एवं जुलूतों का खर्चारन किया जाता है। 4 प्रजारचारूक राजनय पर अनेक दर्तों का प्रमाद पढ़ता है, जैसे स्वरूप्त प्रेस माचन की स्टान्त्रदा एकन्द्र का प्रमाद,विनित्र सस्याओं एवं सग्दर्शों का मद दिस्की दलीं की मुनिका प्रधान मंत्री का करिशन और विदेशनती की मुनिका कादि । यह सम्पूर्ण देश

5 प्रजादन्त्रात्मक राज्यम में गुरा सन्दियों का दिरोप तथा खुली सन्दियों का सन्दर्ग किया जाता है। क्षेत्रीकी चल्लुपति दुढतो विल्लन के अनुसार शान्ति सम्बन्धी समझैदे टया चनकी प्रक्रिया भी खते रूप में होनी प हिए (Open covenier's of peace openly errived a) । इस सूत्र के अचार पर सनी गुरु एवं शन्ति दिरेची राजनिक कार्यों पर रोक लगाने की माँ। दी गई। चप्रपेद दिलन के इस योगदन का चलना के इटिहास में स्वापी मूल्य है। 8 जनवरी, 1918 को कमेरिकी काँद्रेस के सम्मुख इन्होंने खुले रहनाय का कार्य स्पष्ट किया। यह राज्य कारूर्य यह नहीं होता कि गुल्मेर विचर्य पर निजी विचर पिनर्य दिया ही न पर इसका अर्थ केवल यह है कि कोई गुरा सन्दरेदा नहीं किया जान दहिर । सनै अन्तरंश्रीय सम्बन्धं का निर्दार्ग साथ स्था स सनी के समने किया जान

ਦ ਪੜ੍ਹੇ है। राष्ट्रसंय एवं संबुक्त राष्ट्रसंय का दोगदान

के समन्द हिट की कार की का प्रयस करता है।

(The Contribution of League of Nations and U.N.O.) तन 1919 की दर्नय की सन्य हात समुख्य की स्वारत हुई । इनके हात गुट स्थिम के समाद करने दया दिदेश-मित पर जनता का नियन्त्र स्वापित करने के तिर का कदन स्टार पर । राष्ट्रस्य की बारा 18 के अन्तांत यह प्रत्यान था कि भीव

बहिर । बहरान में प्रवाहनात्मक राजनय में अब योगनीय कार्यशियों की समावता नहीं

में राष्ट्रस्य के सदस्यों हारा को नी सन्धि की कार्री वसे श्वादिरीय सब के विदेशत्य में लिक्ट करण जारा दया यह चेचा की जारी कि दह शोपटिशीय प्रकृतित हो एए। इस प्रतिया के हिन्द प्रत्येक सन्दर्भता या सचि बनान्य रहेरी। बारहर में राष्ट्रसय

¹ Topes coverant of peace, opening armed at all at which them shall be no primate mismatural understandings of are hard but diplomate shall proceed always freely and عمدها الإعلاماتا - 3 or 5 or 5 4305

की यह धारा अधिक सार्धक सिद्ध नहीं हो सकी क्योंकि अनेक राज्य पहले ही सप के सदस्य नहीं थे और कुछ बाद में अलग हो गए। अत गुप्त सन्धियों का कार्यक्रम घलता रहा।

राष्ट्रसम् ने इस परम्परा को प्रोत्साहित किया कि अन्तर्राष्ट्रीय सन्धियों का अनुसमर्थन सम्भु गिकि द्वारा किया जाना माहिए। यह व्यवस्था गुन्त सन्धियों के निराजक्श तया राजनय को प्रजातन्त्रास्क बनाने के अनुरूप थी। लेकिन वर्तमान मे ससद प्रेसीडियम या सीनेट कार्यणितिका द्वारा सन्धिय को अस्वीकार शी कर सकते है और करते भी हैं।

समुक्त राष्ट्रसम्प के घाटंर में भी सन्धियों के पजीकरण की व्यवस्था की गई है। धारा 102 के अनुसार समुक्त पार्ट्रसम् के प्रत्येक सदस्य द्वारा की गई समित्र को पजीकृत किया जाना घाहिए। जिस सन्धि को पजीकृत किया जाता है केवल सभी के उल्लंघन या कियान्यपन सम्बन्धी विषय को सप्त के किसी अग के सम्मुख लाया जा सकता है। सन्धि का सप्त में पजीकरण न होने का अर्थ यह नहीं है कि उसे अर्थय भाना जाएगा। सप्त का साधिवालय समय समय पर समियों की शृखला प्रकाशित करता रहता है। सन्धिकर्ता-राज्य

प्रजातान्त्रिक राजनय के गुण

(Virtues of Democratic Diplomacy)

प्रजातात्रिक राजनय में कार्यपालिका और व्यवस्थापिका पर जनता का पूर्ण वर्षस्य होता है। जनता सचियों से पूर्ण परिचित रहती है।

सक्षेप में जनतान्त्रिक राजनय के निम्नलिखित लाभ हैं---

- 1 इनमें संभियों सुने रूप में रोती हैं प्रजातन्त्र के विकास से पूर्व विभिन्न शासक आपस में ऐसी गुप्त संभियों कर देते थे जो उनकी जनता एवं पद्धोती राज्यों के लिए सरुटपूर्ण बन जाती थें। पिरब राजनीति के इतिहास में महाराजियों ने इसी प्रकार गुप्त संभियों करके छोटे राज्यों पर वर्षमेंस वस्पीयत किया था। प्रजातानित्रक राजनय में ऐसी समियों को सम्मादना नहीं एसती है।
- 2 चुबिदित जनता प्रजातान्त्रिक राजनाय में जनता को दिदेश मीति का पूरा जान रहता है। फलत सान्यायों को कार्याचिति सदी रूप में हो पाती है। सान्यायों पर जब ससद् की सीकृति प्राप्त की जाती है तो सीत्रित उनमें आयरकतानुतार सुधार एव सायेपन का सुझाव देते हैं। जनमत द्वार समर्पित होने के कारण सान्य की क्रियाचिति अधिक सफलता से हो पाती है। उदाहरण के लिए मारत सोलियत मैंनी गरिय (अगस्त 1971) के सम्बन्ध में देश के सानी प्रमुख राजनीतिक दलों की सहमति थी। जनता भी सारी स्थिति से अवगत है।
- 3 प्रेस की श्रूपिकः प्रेम की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह समक्त जनमत का निर्माण करता है, साथ ही अनुतरदायी राजनेताओं पर नियत्रण रखता है।
- 4 विदेश सेवा का सम्मालन कूटनीतिक सेवाओं में योग्यता के आधार पर मर्ती किये जाने के कारण विदेश सेवा का कुरालतापूर्वक संघालन किया जा सकता है।

- 5 दिख शान्ति को सुदृढ करना ' प्रजानातिक राजनय से दिख शान्ति सुरद्रित रहरी है क्टोंकि इसमें गप्त मुद्रमुखें तथा धात प्रतिधात के लिए दोई स्थान नहीं होता है।
- 6 संयुक्त राष्ट्रसम्य के महत्व में दृद्धि प्रजातात्रिक रजनय ने संयुक्त राष्ट्रसम्य के महत्व को बढ़ारा है। महासमा का महत्व उत्तरोत्तर रूप से बढ़ता ही जा रहा है। प्रजातान्त्रिक राजनम्य के दोष

(Demerits of Democratic Diplomacy)

प्रजातिक राजनय की व्यापक आलोधना भी हुई है। हडलेस्टम (Huddleston) के मतानुसार प्रथम दिख्युद्ध के बाद वा एजनय व्याप्तर्थ में राजनय ही नहीं था (Negotion of Real Diplomacy)। चनवा प्याप्तर्थ है कि हमन्त्रो ज्येक रप्पट एवं स्नन्त ध्यावसाधिक राजनय हो और ही लीट जाना चहिए। है हेरोस्ड निकल्यन तथा क्या विचार को हारा दिना प्रजानक राजनय के कुछ खरों एवं दोष निमानिविव हैं—

1 अनुतरदायित (Irresponsibility): प्रजातन्त्रिक राजनय का अनुनद कुल निलाकर निराताजनक रहत है। इसने दिरोर-नीति को नियन्तित करने को रिंठ अनिम स्त से जनता को सीची जाती है किन्तु जनता इस रािक के स्तारदारितों से अनिक रहती है। प्री निकल्सन ने सम्भु जनता के अनुतरदारित को प्रजानन्त्रक राजन्य का सर्वधिक सम्भ जतता भाग है। सामान्य जनता अपनी सम्भुता के सम्भय में अवेत रहती है। साद के बहुनत हात स्तीकृत किया को मी सामान्य जनना अपने ही प्रतिनिधीयों हारा स्त्रीकृत न मानकर आलेक्या करती है। ऐसी हालत में सरकार दी स्थिति शोवरिय का जाते है। यह इन सन्दियों तथा समझी को सहित से नाम नहीं कर पाती है।

2. जनता की ब्रह्मनता (Ignorance of the People): ज्यातन्त्र में जनता को दिदेश मीति की पूरी जानवारी नहीं रहती। वह दैदेशिक सान्वन्यों के बारे में आतस्यपूर्ण त्या उसारीमाना मीति अपनती है हमा दिस्कृति के कारण अनेक महत्यपूर्ण तथ्यों से अपरिक्षित रह जाती है। दिदेशी मामलों पर आतोबाना प्रदेश करते समय चन्हें घरेलू मामलों के बरावर महत्व नहीं दिया जाता। इसके अतिरिक्त शासन तथा दिशेषण्य मी मत्याताओं की पूर्ण जानवारी प्रयान नहीं करते।

प्रजातानिक व्यवस्था का यह युंच्यद रथ्य है कि जो व्यक्ति विश्व के राज्यों का नाम तक मती प्रकार नहीं जनता वह भी दिदेश मीति के प्रत्येक महत्वपूर्ण प्रस्त पर निर्मय क्षेत्रे का बादा करता है।

3. दिसम्ब (Delay) : दिदेश-मैं ति के अनेक प्रक्तों पर श्रीच निर्मय लेना आहरसक होता है किनु क्रान्टन में यह मन्यद नहीं हो प्राह्म ! यहाँ प्रत्येक निर्मय पर सामद की स्वीवृत्ति आहरसक होती है। ससद करनी स्वीवृत्ति प्रदान करने से पहले इस सामदा में जनता की राय जनने का प्रमान करती है। इस प्रक्रिया में पर्याच सामय लगा जाता है दिसहा द्रष्यीचान समुचे देश को मुखना एकता है। प्री निकल्सन के क्याननस्य,

¹ States Huddleston Popular Diplomacy and War, pp. 256-61

 [&]quot;The sovereign people are not conscious of their sovereignty and are therefore unaware that
g is they themselves who have caused these treaties to be signed."
—Harold Nicolson

"एक सिक्रशाली राजा या तानाशाह को किसी नीति के निर्माण और क्रियानित करने में केवल कुछ पण्टे लगेंगे, किन्तु एक प्रजातानिक सरकार को उस समय तक प्रतीशा करनी होती है जब तक कि उसका जनमत अपने निक्कों को प्यां न लें। ¹ यदापि यह प्रक्रिया अनसोधे निर्मयों के खतरों से तो रखा करती है किन्तु इससे प्रमावशाली राजनय को हानि पहुँचती है। देश के नेता समय पर निर्मय नहीं ले पाते।

परिवर्तनावित्तमः रहती है । इसमें राजनयाम ऐसी गीवित्त अपनाते है जिनका वै आवस्यकतानुवात रहती है । इसमें राजनयाम ऐसी गीवित्त अपनाते है जिनका वै आवस्यकतानुवात रहता होता कुछ भी आर्थ लगा गतं । प्रशातानिका सरकारों को जनतान का समर्थन प्राप्त करने के लिए कुछ कहना पड़ता है राष्ट्रीय हित की रहा के लिए कुछ और साम अन्य राज्यों को मैत्री प्राप्त करने के लिए पूर्णत मित्र बात करनी होती है। इन सब मित्राओं की मित्राने के लिए वे समय सामय रूप मीति ही विदेशी व्यायणाई महान्त्र करते हैं। इसके फलस्वरूप राज्यों के बीच अधिकार की भावना प्रनथती है। राजनयाई की मांच अमिरियत अरस्य हिन्दा की होता की स्वाप्त में स्वाप्त की अधिकार अभिवार की साम

आदामा वो बात को जाता है जिनका व्यवहार प काई महत्त नहीं होता है।

5. प्रकाशन का दुरुपयों (Misuse of Publicity) अवातात्रिक राज्यों में प्रधार
और प्रकाशन का तस्य केवत जनता को समझाना व चूचित करना ही न होकर उसका
मानीसक मुद्रिकरण करना होता है। सरकार दो प्रकार से प्रकाशन कार्य पर नियन्त्रण
स्वती है—(i) विज्ञायनों एव प्रमुख समाचारों में प्राथमिकता के मान्यम से यह मुख्य पत्र
और पिकेकाओं पर नियन्त्रण स्वती है। (ii) विरेश मन्त्रात्य या समग्र प्रसातन द्वारा सुम्माप्य
प्रसारण के सिए स्वय का सगठन गठित किया जाता है। यह स्वय सरकारी नीतियों
का प्रकारण करता है। कती कभी समाचार पत्र अपनी स्वतन्त्रण कर्त्वा के दुल्यों कर स्वतन्त्र नीतियों
की प्रकारण करता है। कती कभी समाचार पत्र अपनी स्वतन्त्रण कर्त्वा कर दुल्यों में कर स्वय सरकारी

नाति को एसा आलायना करत हैं (जनका जनता पर प्रावद्भक्त प्रनाव पदका है। 6 राजनीतिकों की विदेश सात्राएँ (Foreign Tours of Politicians) प्रजातन्त्र में विदेशन्त्री प्रधान मन्त्री या अन्य राजनीतिक सत्ति वालोशों के सित्र विदेश यात्राएँ करते रहते हैं। उनकी ये यात्राएँ अधिकौंश मामलों में अनुपयुक्त एवं अनावश्यक होती हैं। विदेशों में अपने रवगात की मून पान तथा आदर सरकार के कारण उनके विधार निष्मा नहीं रह पात्रों। उनकी मावनाएँ युद्धि पर छा जाती हैं और वे प्यक्तिगत प्रमाव से जो निर्णय लेते हैं। इस कभी कभी सावनीय तित से सिन्न होते हैं।

बहु कभा कभा राष्ट्रीय 160 स लिय हात है।

अता प्री निकल्सन में मुझाया है कि साधारण स्थिति में दिदेश के प्रधान मन्त्री विदेश
मन्त्री या विदेश सायिव से मितने का कार्य व्यावसायिक राजनयहाँ पर छोड़ देना थाहिए।
इससे जन सभी दोषों का निराकरण हो जाएगा जो राजनीतिहाँ की विदेश यात्राओं से
जलका होते हैं। शालनय सम्बाधीत करने की कला गृही है बरन एक गिशियत एवं स्वीकृत
कर्य में वातीलाय हारा समझीता करने की कला है।
अत सन्धि यात्रां का कार्य राजनयहाँ
को हो करने देना पाहिए।

¹ Harold \ olson Diplomacy

^{2 &}quot;D plomacs is not the art of conversion at it the art of negotiating agreements in precise and ratifiable form

— Harold \(^1\) colson.

7. सर्वीती व्यवस्था । प्रजातन्त्रिक राजनय में प्रवार और प्रसार पर अत्यधिक व्यय किया त्या है। महियों के सम्पादन के समय ही कारी बाय किया जाता है।

प्रतातन्त्रात्मक और परम्परागत राजनय में अन्तर

(Distinction Between Democratic and Traditional Diplomacy)

प्रजातन्त्रात्कक राजनव को और अधिक स्पष्ट रूप से समझने के लिए अब सप्रयक्त होगा कि इसका परम्परागत राजनय से अन्तर किया जाए इस अन्तर को निम्नलिखित रूप में विश्लेषित किया जा सकता है...

। प्रजातन्त्रात्मक राजनय इस बात में दिखास करता है कि राष्ट्रों की पारस्परिक अथवा दिश्व समस्याओं का समयान दिवार दिनर्श द्वारा और आदान प्रदान की मादना से किया आए। प्रजातन्त्रात्मक राजन्य शानितपूर्ण राजन्यिक तरीकों में विश्वास करता है और हिंसा को टालते हुए अनुकृत दातादरन बनाकर समस्या का समधान प्रस्तृत करता है। इसके दिपरित परम्परागर राजनय शक्ति की माचा राजनय के कटिन तरीकों और म्हेनगरापिता में हिज्हास करता है । प्रत्यारायत राजनय दिख्य एनमत की परदाह नहीं करता ।

2 प्रजातन्त्रात्मक राजनय का चंदेश्य जन हित और जन इच्छा की उनिदद्धि करना है जरकि परम्परागत राजनय शासक वर्ग के हिलों की अनिवृद्धि का पक्षपाती है । प्रजातन्त्रात्मक राजनयज्ञ अपने को जनता का सेदक मानकर चलते हैं और उन्हें दसरे देश में स्ददेश की जन इच्छा की अनिव्यक्ति का मच्यम माना जाता है। दे शासक दर्ग को निर्नय होकर सलह देते हैं कि अनुक राजनियक व्यवहार या अनुक नीति के पालन से पान हित की अनिवृद्धि होगी और अनुक नीति जन हित की दृष्टि से अनुकूल नहीं होगी। परम्परागत राजनय इस प्रकार के आदशों में दिश्यास नहीं करता । ससका स्टेश्य राज्य की सीमाओं वा दिस्तर और व्यक्तिगत हिलें को पूर्ति करना होता है। प्राचीन काल में राजनयज एन सेदक नहीं दरन शासक के व्यक्तिगत प्रतिनिध समझे उनते थे।

 प्रजातन्त्रात्मक राजनय 'लोकतन्त्रीय सत्तरदादित्व' में दिश्व'स करता है। प्रज'रान्त्रात्मक राजनयञ्ज सम सरकार के प्रति जनरदादी होते हैं को निदादित व्यवस्थापिका के प्रति उत्तरदायी होती है। इस प्रकार प्रजातन्त्रात्मक राजनपड़ों की गलदियों पर ससद में बहुस हो सकती है। जन प्रतिनिध सरकार से चनके कार्यों के बारे में प्रश्न एछ सकते हैं अर्थात उनके कार्यों का मृत्यांकन ससद हाता किया जा सकता है। इसके दिवरित परम्परागत राजनय जनता की नहीं दरन केंद्रल शासक या शासक वर्ग की हित साधन की प्रधानता देता है। प्राधीनकाल में राजनयञ्च स्दय को केदल राजा के प्रति ही उत्तरदायी नानते वे राज्य ही जनको नियुक्त करता वा और हदाता भी वा ।

4 परम्परागत राजनय में मुख्यतः सन्हीं व्यक्तियों को राजनयिक सेदा में लिया जन्ता था जे कुलीन वर्ग या र सक दर्ग से संबंधित होते थे । सानान्य जनना को राजनीयक सेदा में कोई प्रतिनिधित्व प्राप्त नहीं या किसी अदसर पर कोई अपदाद हो यह अलग बात है। इसके दिएरीत प्रजारनक राजनय दार्पिय राजनय न होकर जन राजनय है जिसमें राजनदर्जी की मर्ती येग्यता के रूचार पर प्रतियेगी परीक्षा के मध्यन से की दाती है। नियक्ति के बाद भी राजनियक अधिकारी अराजनीतिक' बने रहते हैं और सनका कार्य गृह रारकार की नीतियों के अनुसार देश के हितों की रक्षा करना होता है। ये राजनय सविधान के प्रति उत्तरदायी टोते हैं।

के प्रति उत्तरदायी टोते हैं।
5 परम्परागत राजनयज्ञ जनता के सम्पर्क से दूर रहते थे उनका कार्य क्षेत्र राज घरानों तक ही सीमित था। इसके विपरीत प्रजातन्त्रात्मक राजनयञ्ज जनता के सेवळ है जो अपने

देश की जनता से अलग नहीं रहते हैं।

6 प्राचीन काल में राजनयहां जो समझौते एवं समियों करते थे उन्हें अपनी सरकार के पास स्वीकृति के लिए प्राय नहीं मेजली थे। राजन्द्रा का पद इस दृष्टि से चूर्ण अधिकार साथन माना जाता था और उसके हात किए गए समझौत देवनकारी होते थे। राजनूत राजन या साधाद कर प्रतिकिधे होता था। प्रजातन्त्रास्त्रक राजनय में अमीला सािक जन प्रतिकिधि खाता था। प्रजातन्त्रास्त्रक राजनय में अमीला सािक जनाव में प्रतिकिधि खाता साथन राजने था। प्रजातन्त्रास्त्रक राजने के अमाव में राजनूत कोई समझौता साथन नहीं कर सकता। विद्यालर्तन्य की से देव में तो सीच्या पर अनिवार्ध जनाव साझ की व्यवस्था है। वर्तमान में सनिवार्ध का अनुमोदन लगानग साि होंगे में अध्यावक तो गाया है।

आज का गुण प्रजातन्त्रात्मक है अत प्रजातन्त्रात्मक राजनय ही लगभग सर्वत्र प्रयक्ति है । सार्विकारदादी अथया अधिनायकवादी राज्य भी अपने राजनय को प्रजानक्त्र का बाना पहनाते हैं । परस्थागत राजनय को आज कोई साना प्रजान ते हैं कि स्थापि कुछ ऐसे राष्ट्र भी है जो कुछ अवसरों पर परस्थागत राजनय का सहारा सेने से नहीं पुक्ते क्योंकि उनकी नर्जृति सिकारवादी है। प्रजातन्त्रीय राजनय वह सानित दृत है जो मानित और साव्धातित्मक वो सहित्यों को प्रोत्तान्त्रनीय राजनय यह सानित दृत है जो मानित और प्रजातन्त्रीय राजनय वह सानित दृत है जो मानित और प्रजातन्त्रीय राजनय का मानित और प्रजातान्त्रिक साजन का प्रवाद करता है। प्रजातान्त्रिक साजन का प्रवाद करता है। प्रजातान्त्रिक साजन को प्रवाद करता है। प्रजातान्त्रिक साजन को प्रवाद प्रवाद के सिकार से प्रजातन्त्रात्मक साजनय की प्रवाद प्रवाद के सिकार से में इसे निरियत करा से बेहार समझता है। किए में मेरी यह मान्यता है कि प्रवादन्त्रात्मक राजनय अमी तक अपना स्था का सुत्र (Lown formula) नहीं औल पाय है।

संसदीय राजनय (Parliamentary Diplomacy)

अपने अधिनक रूप में ससदीय राजनय बीसवीं सदी की देन है। अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं

अपने अपने कानुनिक रूप में सस्तरीय राजनाय भागवी सारी को दी है। अन्तर्राष्ट्राय समस्याओं में दिश्व व्यापनकता के भदेश के साथ साथ राजनाय में बहुत्याय वन नया और दिश्य समस्याओं पर दिश्यात दिस्सी दशा उनके समस्यान के लिए बहुत्यतीय वार्ता पद्धि अधिकारिक प्रवास्ति होंने गई। दिग्व त्याई एव अस्याई अन्तर्राष्ट्रीय मार्गी का निर्माण किया गया जिनने वाद्मास्त्र के उत्तराधिकारी के रूप में वर्तमान संसुक्त राष्ट्रसाथ सबसे प्रमुख है। वास्त्रक में सर्वक्रम के उत्तराधिकारी के रूप में वर्तमान संसुक्त राष्ट्रसाथ सबसे प्रमुख है। वास्त्रक में सर्वध्याय पान्य अध्यान विद्या उसे हैं। सर्वस्त्र पान्य अध्यान विद्या उसे हैं। सर्वस्त्र पान्य स्वत्र का जाता है। शास्त्र राज्य आयान दिया उसे हैं। सर्वस्त्र पान्य स्वत्र का जाता है। स्वाह्म उत्त्र अधिकार मृत्युवि दिश्य स्वत्र है। सर्वस्त्र पान्य स्वत्र के इस सर्वस्त्र के इस सर्वस्त्र को हमा सर्वाय राजनय स्वत्र के प्रयम उपयोग का क्षेत्र है। इसके पूर्व में राजनय के इस सर्वस्त्र को हम् 1899 तथा 1907 के शांति सम्पेलनों में प्रयोग में साया जा पान है।

ससदीय राज्यय से हम्मा लादाय बहुमीय राज्यय की जन खुरी दानाओं व दिवार दिवारों से हैं जो अन्दार्म्य्य सम्मदाओं से निरादने के लिए समुग्त राष्ट्र व अन्य क्षेत्रय सामाओं में मतली रहते हैं त्या जिनके मुगो व देगों पर खुमा दिवार होना है और जिन्म मिर्गय मत्याद हमा दिवार जाता है। इस्त विवार का मुगत उनीर ठीक दैसे हैं है जैसे प्रमार का बी सत्या में देख जाते हैं। इसा 165 वस्तरीय अन्याद्रीय सत्या में दिवार सम्मयाओं पर नुगार मुगो को छोड़ हर समी राष्ट्र वर दिवार करते हैं और मारावा में हमुत के कामार पर अनेक सिम्म दिए जाता है। समुक्त राष्ट्र मारावा में सहस्त के कामार पर अनेक सिम्म दिवार स्थान है मारावा में स्वार सम्मयाओं पर नुगार मुगो को छोड़ हर समी राष्ट्र वर्ष करते हैं और मारावा सरस्त बहुन कुण राष्ट्रीय ससद् से मितला जुनता है—वसे हम राक प्रकार से पिश ससद् की सक्का दे सकते हैं। महस्तमा की बरायत हम्म में दिवार का समामा 166 राष्ट्रों के प्रतिचीय देशने हैं और चिन्न समस्याओं पर दिवार दिवार का समामा 166 राष्ट्रों के सम्मद्र ने एक व्यक्ति एक रोट के सिद्धान्त को मन्यदा देश राष्ट्रों का नेद मिदा दिया गया है।

महसना एक सत्तरीय तिकाद की मीति है क्योंकि दिस प्रकार सहदीय व्यवस्था में राजनिक दल हेकीय गुरू पर दिशेष हिंद समूद राज की पीति मीति को प्रजावित करते हैं एकी प्रकार क्यार्रिय राज्य पर पर भी होत्रीय होता चार्यानिक गुरू संपुत्त राष्ट्र संघ की प्रतिमार एवं सतके पीति जो कार्यानित करते हैं। महस्ता में राज्यों के समूद (Group) चहतिलन या गटदस्यन (Coalisions) गुट

महत्ता में राज्यों के समूह (Group) सहितन या गडराया (Coalmons) गुट (Blocks) भारि निराद्ध स्टिय है है । अलेयार्ड के अनुसर सहमितन समूहों और सम्बंद में मिनियों के प्रस्तरम मामसा द्वाचा किसी निम्म्य निराद पर पहुँचने की सम्मादमा पट जरी है। महासा के राजनीटिक निकास (A Political Body) होने के कारण है दिस होता है।

सन्दिर राज्यस में यह दिश्यम किया जाता है कि किसी दिवस को सबके सानों लाने से दया एस पर दाद दिवस करने पूर प्रलाम पाटित करने मात्र में उसे मुनक्रम पा सकता है। यह मान्या गान्य है। यह सादित प्रत्या में दूर प्रपास से मानुद्राद तथा प्रश्लीय मानवारों उसरी है। मानवार से पहले प्रतेष प्रमास प्राप्तेष प्रमास पुरत्य किया नहीं कर पाना। मानदान के सावय अवस्था पाना अनुद्रासित मी पहले हैं। इस को कायानी में कैतने का अध्यार पुरस्ती बन जाता है पो अनेक बार दिश्य शामि के लिए सहस्य सावित हैं कि है। सहसीय प्रजास की उससीतित यह है कि इसके फलस्त्यस दिस पानना सावित होना है। इसने माध्यम से अनेक राज्यों के सहसीतानुग सम्बन्धों की प्रतास सावित हैं क्या है सावित कारवार सहस्यों का पाने हैं।

संदुक राष्ट्र संघ में दिनेज प्रकार के सहयों संचूरों और साउनों का निकास होटा है। इनमें टर्क्स सहनितन (The Adhot Costition) होता है जिसका कन या क्रिक

¹ Neoton Dipometrip 53

समय के लिए समस्या विशेष पर विधाद विभन्ने के लिए निर्माण होता है और सब वह समस्या समापत हो जाती है क्यावा एसका पत्रका पत्रका पत्रका है तो यह सबसे सहिमलन (Adhos. Codinion) समाप्त हो जाता है। महासमा में राज्यों के एक दूसरे प्रकाद के समावन चा गठक्यान (Codition) का उदस वह होता है जब कुछ राज्य मियीन चा अधियति कर्य से काक्स (Caucus) में मिलते हैं ताकि वे सामान्य हित के मामलो पर आवस में विधाद विभाग कर सके किना इस सात यह वयनब्द हुए वि ये एक होवर कार्य करेंगे। महासमा की एपदोक्त सानी गतिविधियों को अमेरिकी विदेश मुझे डीन रस्क ने सारादीय राज्या (Parliamentary Democracy) की साम दी थी।

ससदीय राजनय की प्रकृति

संयुक्त राष्ट्र महासमा में ससदीय राजनय के स्वरूप के प्रकाश में हम इस राजनय की प्रकृति वो निम्नलिखित बिन्दुओं में स्पष्ट कर सकते हैं....

(1) ससदीय राजनय बहुपतीय होता है। वे विषय जिनकी प्रवृति सानान्य है अथवा जिनका सम्बन्ध दिनी क्षेत्र दिरोष के विभिन्न देशों से है ससदीय राजनय के दियारणीय विषय हो सकते हैं। सामदीय राजनय ऐसी समस्याओं वो नहीं लेता जिन्हें दि प्रदीय यार्ता हारा हल क्ष्या जगार हो।

- (3) ससदीय राजनय में निर्मय सदेव बहुनत से लिए जाते हैं। संयुक्त राष्ट्र महासमा में महत्वपूर्ण प्रमाने के निर्मय के लिए चर्णास्थत सरस्यों का दो तिहाई बहुनत और साधारण प्रमानों के निर्मय के लिए साधारण इस्तुनत यांची कोता है। युक्ता परिवर्त में भी निर्मय बहुनत से लिए जाते हैं लेकिन स्थायी चादायों को जो विशेषाधिकार (Veto Power) है यह समझीय राजनय के सर्वाधिकार के विश्तीत है वह तो एक प्रकार से 'निरकुत्त राजनय जीती व्यवस्था है
- (4) ससदीय राजनय के दिकास के फलस्वरूप छोटे और अल्पदिकसित देशों का महत्य बढ गया है क्योंकि सयुक्त राष्ट्रसय के मव पर महाशिक्यों उनके समर्थन के लिए लालाधित रहती हैं।

(5) ससदीय राजन्य अपने स्वरुष में बहुत कुछ अराजनीतिक है वर्योकि यह राजनय बहुएसीय होने के साथ साथ सम्प्रनु राज्यों के लिए बन्धनकारी निर्णय नहीं कर सकता । महासमा अपने किसी भी सदस्य को इस बात के लिए बन्ध्य नहीं कर सकती कि वह अनिवार्य रूप से उसके निर्णय को माने । दूसरे शब्दों में महासमा के निर्णय मुख्यत रिफारियों जैसा प्रमाद रखते हैं । ससदीय राजनय विश्व जनमत को जाग्रत कर अनीचारिक दबाव प्रक्रिया लाग करता है।

संसदीय राजनय के गुण एवं दोष

संयुक्त राष्ट्र संघ का राजनय संसदीय राजनय का संवातम उदाहरण है। इस राजनय के मुख्य गृण अथवा लाम निम्नलिखित हैं—

- (1) ससदीय राजनय विश्व जनमत को प्रमावित करता है। सयुक्त राष्ट्र महासमा ने शान्ति और सहअस्तित्व के भदा में तथा समस्याओं को वार्ता द्वारा सुलझाने के पहा में एक अन्तर्राष्ट्रीय जनमत का निर्माण किया है जिससे समूचे विश्व में शान्ति और समृद्धि के प्रति एक हद तक विश्वास व्यान हुआ है। ससदीय राजनय द्वारा उत्पन्न विश्व जनमत महाशक्रियों को नियम्बिन रक्तम है।
- (2) ससदीय राजनय से बहुपशीय प्रयत्नों को प्रोत्साहन मिलता है जिससे समस्याओं में शीप निर्णय में सहायता पहुँचती है। अब्द इज्जायल सम्प्र्य को शान्त करने में ससदीय राजनय ने जो महत्वपूर्ण मूलिका निमायी वह सर्वविदित है। जिन समस्याओं का हल आपसी वार्ती से नहीं निकल पाता जनके लिए बहुपशीय राजनय ही सर्वेतन जगाय है।
- (3) ससदीय राजनय ने ही विभिन्न प्रकार की राजनियक पद्धतियाँ को जन्म दिया है । इस राजन्य के विकास के कारण समान विचारधारा और समान हितों के आकंक्षी देशों में आपसी सम्पर्क बढा है। समय समय पर उनके सम्मेलन होते रहते हैं। उदाहरण के वित्र पुट-निरफेशता में विश्वास रखने बता देशों के गुट-निरफेश सम्मेलन होते रहते हैं। पामवारय देशों में अनेक ऐसे मच है जहीं समय-समय पर सदस्य पाटू आपस में विचार-निमर्श करते रहते हैं। इस प्रकार के राजन्य को हम परामर्शात्मक राजन्य (Consultative Diplomacy) कह सकते हैं। ससदीय राजन्य ने यात्रा राजन्य (Travel Diplomacy) को बढावा दिया है।
- (4) ससदीय राजनय ने संयुक्त राष्ट्र महासमा को एक प्रकार की विश्व ससद् बना दिया है। सन् 1979 में स्थापित यूरोपीय ससद् मी ससदीय राजनय की बढ़ती लोकप्रियता का प्रमाण है।

संसदीय राजनय के अनेक दोष भी हैं यथा---

- (1) ससदीय राजनय पर्दे के पीछे जो दाव पेंच खेलता है उससे राष्ट्रों के आपसी विश्वास को घड़ा पहुँचता है और एक-दूसरे के प्रति सन्देह वो दातावरण विकसित्व होता है। शीत-यद को बढाने में ससदीय राजनय का बढ़ा योगदान रहा था।
 - (2) ससदीय राजनय ने सपुक्त राष्ट्र महासमा को राजनीतिक अखाई का मध बना दिया है जहाँ प्रत्येक राष्ट्र अपनी वैद्यारिक तथा राष्ट्रीय श्रेष्ठता के प्रदर्शन में लगा रहता

- (३) ससदीय राजाय खुला राजनय है अत खुले राजनय के लगगंग सभी दोष इस राजनय में आ जाते हैं। ओक अवसरों पर संसदीय राजाय समस्याओं को उल्टे अधिक उलझा देता है जिससे विश्व सनाव में बिट मोती है।
- (4) ससदीय राजनय से गुट राजनिति और क्षेत्रवाद वो बढ़ावा मिला है। महासमा की मतता। प्रक्रिया और वटी वे राजनितिक दाव पेयों पर दृष्टि डाले तो हम यही देखते है कि इस विस्त ससद में विमिन्न गुट बने हुए हैं और फलस्वरूप सारे विचार विचार गृट प्रतिबद्ध स्थिति में होने हैं।
- (5) सारादीय राजनय एक प्रकार से प्रचार राजनय अधिक है क्योंकि प्रत्येक गुट अपने मापणों मतदान आदि के द्वारा अपने विरोधी को नीया दिखाने और अपने हित का सम्वयंन करने को प्रयत्नशील सहया है।
- (6) महारामा की औपचारिक कार्यवाही में प्रतिशिधों की उतनी रुचि नहीं रहती जितनी पर्दे के पीछे पतने वाली अनीवचारिक बातांओं में रहती है। अनीवचारिक बातांओं में में लिए गए निर्णयों को सुन्दर शब्दजात से महारामा के पटल पर रख दिया जाता है और यही महाराम स्वतन्त्र कर जाता है।
- (7) ससदीय राजाय को गाया मुकंबाजी (Shadow Baxing) की सहा दी गई है। इसे लाउडरपीकर का राजनम (Diplomacy by Loud Spc Mcr) तथा अपनान का राजनम (Diplomacy by Insult) भी कहा जाता है। ससदीय राजाम एक ऐसा खेत है जिसमे विपन्नी को पीमा दियाने और अपनानित करने न प्रायात किया जाता है। शीतपुर्व की मरम स्थिति ने मामुक्तराज्य अमेरिका और सोवियत सम यही करते रहे। सोवियत सम

की समार्थित के साथ ही सीराबुद्ध समान्त हो गया । पर्यपुंत दोषों के बावजूद यह स्वीकार करना होगा कि ससदीय राजनय ने सप्तरत्र पुढ़ों के अवसरों को घटाया है और दिख को अन्तर्राष्ट्रीयता दी और अग्रसर किया है । इस ससदीय राजनय ो उग्र राष्ट्रीय महत्वाकाँता पर कुछ न कुछ अकुरा लगाने में सफलता एनट की है।

शिखर राजनय

(The Summit Diplomacy)

जब राजनय मे एक देश का राज्याच्या या सर्वोध्य सरकारी अधिकारी स्वय भाग लेता है तो उसे सिखर राज्याय की सक्ता दी जाती है। एत्सर दिसर्क (Flmc Phichice) के कमानुतार "मितर राज्याय की याव्या व्यापक स्वरे ने राज्य के मुख्य क्षमा रास्त्री र स्तर के अध्यन द्वारा विदेश नीति एव अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धी के निर्धारण एव प्रकाशन के रूप मे की जाती है। "स्मप्ट है कि सिखर संबद का अर्थ राज्य के अध्यव्या सारकार के अध्यन मे है। मन्त्रास्य स्तर के दियेश सम्बन्धी को उपसीखर की सक्ता दी जाती है।

ऐतिहासिक दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि राजतन्त्र के समय स्वय राजा ही देश के आन्तरिक और बाह्य प्रशासन के लिए जतस्वायी होता था । प्रजातन्त्र का विकास होने

^{1 &}quot;Summ t d plomacy may be broadly interpreted as meaning of the determ nation and publicizing of foreign policy and the management of anternational affairs at the chief of state or head of government level ——I limer Plancks.

पर सियति बदल गई किन्तु हाल ही में रिखर राजनाय के रूप मे पुरानी परस्था के नर् सादमें से रूप को पुत्र परिखरीत कर सिया है और राजनाय का जो सहस्य काज सार पिठ प्रस्तिन है रह रिखर राजनाय ही है। जब दो अयदा अधिक देशों के राष्ट्रपार्ट्स की मुतकात होंगे है रो जनती आसती वार्ल के उरारण प्राप्त सहुल विल्टि प्रकरित की जाती है जिसमें अपनी सामयों और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के विन्त्र मुद्दी के प्रति अपन महत्त्री के दुण्डिमों में यातक होंगी है और जिल मुद्दी पर्त पर असत वि होंगी है। उत्तरे हहत में साम्यान आदि में आरा थाता की प्राप्त है जह प्रया जाती ही जाती। क्षित्रीय रिवाद्युक के बाद समुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपत्रियों और संविद्यत्त्रसा के नेहाओं के मैच अनेक शिवाद सामोलन आये जिल होते रहे हैं। इससे विश्व सानस्याओं के साम्यान में सहस्यता नित्ती । अमेरिकी राष्ट्रपत्रियों ने ताने शिवार सामोलनों ने देश राष्ट्रपत्रियों राष्ट्रपति निवादल गोर्चायोंद के मैच होने दाने शिवार सामोलनों ने देश राष्ट्रपत्रियों विस्त ही बदल थी। शिवार राजना के कररात्रा जो साहुत दिखरित प्रकरित के प्रता करती है और उपना महत्त्र की स्ता है कि स्तारे हैं रा अनुकुल या प्रतिकृत प्रतिकारों साल करती है अपन यह में साम्यत है कि स्तारे हैं रा अनुकुल या प्रतिकृत प्रतिकारों साल करती है अपन यह में साम्यत है कि

इस प्रस्त हम वह सकते हैं कि "शिखर राजनाय रहे राज्यों के राज्याच्यानें अपना सरकार के सार्नेच्या अधिकारियों का दह व्यक्तिगत सम्मेटन है एहाँ वे सानाय राजनिक मार्ग की जेव्या कर कर्नार्ट्स मानस्थाले पर मिन्य केते हैं। "जर राज्याच्या मार्ग के जेव्या कर कर्नार्ट्स मानस्थालें पर मिन्य केते हैं।" जर राज्याच्या सर्वेच्या अधिकारियों हार परस्पर पत्र व्यवहर विषय जाता है या निर्धा प्रतिनिधि में ने जाते हैं हो यह भी पिखर राजन्य का सहस्य है है। अन्तर्राष्ट्रीय सामस्याओं के सामधान में शिखर राजनाय हो ज्योदिन विस्तित है।

शिखर राजनव पर एक ऐतिहासिक दृष्टि

(A Historical View of Summit Diplomacy)

भिस्न के राजा रमेलेस हित्या (Ramina sill) और हिंद्रस के राजा खेतासर (Khetasar the King of Hitties) में रिखर राजाय के कायार घर ही एक समित की सी। तिल्लार महान पुलिसर सीजर कोनेना है तीर करण कोनी तो प्रसार करनी पहर पिट्ट के लिए कोनेना है तीर करण कोनी तो प्रसार करनी पहर राज्ये कोने ही पाना जा है है सुरसे के इंद्रेन और में मंद्रीयो में तेरत राज्ये हिस्सर के प्रसार कोने की रिजिय कर्ना पूर्व सामस्त्रों के सामया नी किला सा। अपनित पुत्र में राष्ट्रपति मिलान के पैरिस साम्येन में मान तेने से पो पूर्व परात्र सामस्त्र के प्रसार सामस्त्र की साम की है हिने करना पूर्व पर प्रसार का साम की है हिने कर अपनित प्रसार की साम की साम की है हिने है हिने साम की साम की है हिने हैं हिने साम की साम की

इनमें शिद्धर सम्मेलन ही थे । द्वितीय महायुद्ध के दौरा। इन सम्मेलनो ने ही वास्तव में शिद्धर सम्मेलन हारा राजनय को प्रांतादित दिया। द्वितीय महायुद्ध की दामाधि के पम्हाद सीवपुद्ध की सामाधि के पमहाद सीवपुद्ध की सामाध्य के एक तन के किए मित्र नाव्यों के मी समय समय पर शिद्धर सम्मेलन होते रहे। व्यक्तिम समस्यापे जो रहा करने के लिए मित्र नाव्यों के मान्य प्राचित करवार राजनपिक काय्य राजनपिक काय्य सम्मेलनों के मान्य में सुत्तानों के प्रायस किया जाता है। स्जयंद्ध सीव्यंत व स्टोतिन के मान्य सिव्य सार्ताकों हाता एक दूर्वार के साव्य सार्वाम से युद्ध एव मान्ति के करियां की प्राच करने में अद्वितीय सार्वाम की प्राव एक्स सार्वाम के प्राव करने में अद्वितीय सार्वाम की प्राव एक्स सार्वाम के प्राव करने में अद्वितीय सार्वाम की प्राव एक्स मान्य किया प्राव सार्वाम के सम्म प्रारम्भ शिव्य राजनाय का प्रवास से साम्य नहीं भी पत्ती । द्वितीय महायुद्ध के स्थ्य प्रारम्भ शिव्य राजनाय का प्रवास के साम्य प्रव हों भी पत्ती । द्वितीय महायुद्ध के स्थ्य प्रारम्भ शिव्य राजनाय का प्रवास के अध्यास पर अत्यार्वाम सार्वाम के अध्यास पर अत्यार्वाम पर प्राच सार्वाम के सार्वाम पर अत्यार्वाम पर अत्यार्वाम पर अत्यार्वाम का साम्यान की शिव्य जाता है जावित निम्म स्तर के अधिकारियों ह्या वित्ती सामस्य का साम्यान नहीं शिव्य लाता है जावित निम्म स्तर के अधिकार वित्ता सार्वाम के अध्या काता मिन स्तर पर मान्य गति से सत्त रही हो और उर्ते शीध साम्यादित करना वार्ताओं को शीध साम्यादित करना व्यास साम्यात तार्वित करना वार्ताभ को शीध साम्यादित करना वारा साम्यात तार्वाम करना वार्ताभ साम्यावान स्तरित करना वारा साम्यात सार्वाम साम्यावान करना वारा साम्यावान साम्यावान स्वत साम्यावान करना वारा साम्यावान साम्यावान साम्यावान करना वारा साम्यावान साम्यावान साम्यावान साम्यावान करना वारा साम्यावान साम्यावान करना वारा साम्यावान साम्यावान साम्यावान करना वारा साम्यावान साम्यावान करना साम्यावान करना साम्यावान साम्यावान करना साम्यावान करना साम्यावान साम्यावान करना साम्यावान साम्यावान करना साम्यावान करना साम्यावान साम्यावान करना साम्यावान करना साम्यावान करना साम्यावान करना साम्यावान साम्यावान करना साम्यावान करना साम्यावान करना साम्यावान करना साम्यावान साम्यावान साम्यावान करना साम्यावान करना साम्याव

शिखर राजनय की लोकप्रियता के कारण

शिखर राजनय के प्रचलन के पीछे निम्नलिखित कारणों का योगदान रहा है

- समार व्यवस्था मे क्रान्तिकारी परिवर्तन एव अभूतपूर्व विकास विशेषकर हवाई यात्रा की उपलब्धि
 - 2 युद्ध के विनाशकारी प्रमाव से भानवता को बचाना
 - 3 संयक्त राज्य अमेरिका व सोवियत रूस का विश्व शक्ति के रूप में महत्व और
 - 4 संयक्त राष्ट्र के सम्मेलनों के माध्यम से व्यक्तिगत सम्पर्वः में अभिवृद्धि ।

शिखर राजनय की विशेषताएँ

(Aspects of Summit Diplomacy)

शिखर राजनय की विशेषताओं को निम्नलिखित रूप से रखा जा सकता है

- 1 इसमें पाज्य या सरकार के प्रमुख द्वारा मीति निर्धारित और व्यक्त की जाती है। दिरोत मीती समस्त्री मुख्य निर्णय यही लेता है। उदाहरण के लिए समुक्त राज्य अमेरिका की विदेश मीति के महत्वपूर्ण निर्णय किसी न किसी राष्ट्रपति के मान के साथ जुड़े हुए हैं। इस प्रकार अनेक मीति समस्त्री वक्तव्यों के साथ एक राष्ट्रपति का मान जुड जाता है जैसे मुनरो सिद्धान्त द्वारा किसान के पौदह विद्धान्त टाफ्ट का डालर राजनय स्कानेट की आध्ये पढ़ीसी की मीति, चार स्वतन्त्रतारी आइजनहावर सिद्धान्त तथा प्रेक्षनेव प्रीकान अपित है।
- 2 मुख्य कार्यपालिका द्वारा राजनयझों से व्यक्तिगत पत्र व्यवहार किए जाते है। यहाँ हमारा सम्बन्ध तार शुमकामना एव शोक सदेश जैसे औपयारिक पत्र व्यवहारों से नहीं है।
 - । कों एम पी राय वही पू 196 197

तो है ही किन्तु इनके अरिशिक्त मी मुद्ध्य कार्यप्रतिका व्यक्तिगत किंव रेकर पत्र व्यवहार रही है तथा राजनय को प्रमादित करती है। दो राज्यों में साधर्य होने की स्थिति में तीसरे व्या की मुख्य कार्यप्रतिका हारा म्यास्थता ना कार्य किया जन्ता है। उदाहरण के लिए. XO के कस-ज्यापान साधर्य एव गोरको साधर्य के समय अमेरिकी राष्ट्रपति वियोदीर करणेटर व्यक्तिगत हस्तरेण किया था। अन्य असासे पर भी इसी प्रकार व्यक्तिगत की देकर पूर्णितीयों ने पुत्रपति सरकारों से पत्र-व्यवहार लिए। हितीय विरायदुद्ध के समय रूजवेस्ट या चर्चित के बीच 1750 समाचारों का और रूजवेस्ट स्था स्टातिन के बीच तगनग रीन में पत्र वा अदिन प्रति होंग विरायदारों में स्थापन प्रति कि स्थापन प्रति होंग कि प्रत्य अधिक होने के स्थापन प्रति होंग विराय स्थापन प्रति होंग किया अधिक रोज होंग के प्रत्य स्थापन प्रति होंग किया अधिक रोज होंग के प्रत्य स्थापन प्रति होंग किया अधिक रोज होंग के प्रत्य स्थापन प्रति होंग किया स्थापन किया शता है। शिख्य स्थार एर ये एजनिक प्रतास निरन्तर बढ़ेत जा के हैं।

3. व्यक्तिगत राजनियक प्रतिनिध : कभी-कभी मुख्य कार्यपालिका द्वारा विदेशों में पना व्यक्तिगत प्रमाद रदाने तथा दिन्ति सुदगाएँ प्राप्त करने के लिए विरोत राजनियक दिलिये नियुक्त किए जाते हैं। इस प्रकार के सिखर राजनिय की एक महत्वपूर्ण कमजेरी रहे हैं कि इससे विदेश नम्बत्स विदेश से से से से साम प्रमुक्त कर ति है। एक मुख्य नम्बत्स विदेश से साम प्रमुक्त कर दिला हो। ये मुख्य नम्बत्स कि से स्वत्स के विदेश साम मिल्य कर हो जाते हैं। वह सुख्य कर विदेश दूर कर दिला कर कर से हैं। वह से साम सम्बत्स कर हो से से स्वत्स कर से साम सम्बत्स कर हो से से स्वत्स के स्वत्स के स्वत्स कर से साम सम्बत्स के से स्वत्स के स्वत्स के स्वत्स कर साम सम्बत्स के से स्वत्स के स्वत्स के स्वत्स कर साम सम्बत्स के से स्वत्स के स्वत्स के स्वत्स कर साम सम्बत्स के से स्वत्स के स्वत्स के स्वत्स कर साम सम्बत्स के स्वत्स के स्वत्स के स्वत्स के स्वत्स कर साम सम्बत्स के स्वत्स के स्वत्स के स्वत्स कर साम सम्बत्स के स्वत्स के स्वत्स सम्बत्स के स्वत्स स्वत्स के स्वत्स सम्बत्स के स्वत्स सम्बत्स के स्वत्स स्वत्स के स्वत्स सम्बत्स के स्वत्स स्वत्य स्वत्य

4. अन्तर्गाष्ट्रीय पात्राएँ : शिखर राज्यय के अन्तर्गत राज्य की मृत्य कार्यातिका देशों की अनीरामृतिक पात्रा एवं सम्य दिशेंद पात्रत्य में करती हैं। ये काल के राज्यय हा सावस्यक अन पत्र गई हैं। इन पात्रकों हारा दिश्मों के प्रात्तिमा सम्पर्क दराए जाते दिया जनतव को प्रत्यादित किया जाता है। जिस क्ष्य में दिश्मों ने स्वान्गत जा क्यान्त एवं ग्रादर किया जाता है जससे अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध पर्माण प्रत्यादित होते हैं। एक देश का जन-जीवन दिश्मों अगन्तुक से प्रत्यादित होता है रहा स्वय स्वय आनुक्त को भी प्रमृतित करती है। इस प्रकार अन्तर्गाद्धीय प्राव्यकों से दिश्म-सन्दर्गों का रूप निर्वार्गित होता है।

5. प्रीक्षर-सम्मेलन : मुख्य कार्यप्रीतका के व्यक्तिगत राजनय का एक दिवतित राज रायर-सम्मेलन है । द्विवीय दिरद-पुद्ध के बाद से दो या अधिक राज्यों या सरकारों के अध्यक्षी का एकतित होना एक सम्पारन बात हो गई है। अन्तर्राष्ट्रीय समस्यकों के सम्पान व्यापित-सामित की स्थानना के लिए अनेक सम्मेलन आयोजित किए जाते हैं जिनमें राज्यों की मुख्य कार्यप्रीलकार्य नाम लेती हैं।

शिसर राजनय के लाम या समर्थन में वर्क

(Advantages of Summit Diplomacy)

रिखर राज्यम के लानें को निम्मलिखन रूप से दिख्लीहत रूप छा सकता है— 1. इससे राज्याच्याँ, स्थानमनियों कथना सर्वाय क्षीकरियों के व्यक्तित सम्बन्ध

1, हतत राज्याच्या है ने प्रात्तिक व्यव त्याच्या व वक्र स्था के व्यास्त्र त्या स्थाप प्रतिष्ठ और नैत्रीपूर्ण करते हैं, फलस्ततप यो देशों की सरकारों और रुनहा के कारणी संस्कृतों में स्थारा करते हैं।

- 2 जिसी समस्या पर राज्यस्था सुरत्त् आपसी विधार विमर्श करवे समस्या का समया। विवासी वा प्रधास वर सकते हैं। सुरत्ता निर्णय लिए जा सकते हैं क्योंकि योटी के तित जवस्थित रहते हैं जिनके हाथ में निर्णायक सक्ति भी होती है।
- शिखर राज्यय द्वारा शिक्षाचा रुप में समझौता वर लिया जाता है और विस्तार सम्बन्धी वार्य हिये राज्ययिक स्तर पर छोड दिया जाता है।
- 4 यदि परम्परागत राज ारिक तरीवाँ वा मार्ग अवरुद्ध हो जाता है तो उसका समाधान शिरार राजनय द्वारा शीमतापूर्वक विया जाता है।
- 5 शिरार राजाय वी ओर सारे ससार का ध्या आकर्षित रहता है तथा उसकी गरिविधीयों एव उपलिशियों का विच्य राजािति पर त्वरित प्रभाव पड़ता है।
- 6 शिख्द राजोता अपो व्यक्तिगत सम्पर्वो को पत्राधार द्वारा और भी बढ़ा सकते हैं जिससे भविष्य में समस्याएँ पैदा हो न हो अचवा गम्भीर न बो।

सिरार राजाम ने दिरोपी सिराले टेडलेस्टा ों भी यह स्वीवार निया है कि सिरार राजाय में अनारोष्ट्रीय विवादों ने सम्माता वी लगा प्रतीत होती है और उसके द्वारा हरा दिया में आरायक जा सम्मीत अर्जित वर रे वा अमास मिलता है। शैयर वा मत है कि सारयाओं वी अटिलताएँ और बदती हुई बहुपतीय समझीरी वी आवस्यकताएँ सिरार राजाय द्वारा ही सुलझ सकती है।

रीखर राजनय के टोब या विरोध में सर्क

(Disadvantages of Summit Diplom ic))

प्रव्यात सेखक देरव्ड फिल्लान वा मत है वि आधुक्ति प्रजातन्त्रीय राजनाय का वह स्वरूप जिताने राजनीतिष्ठ व्यक्तिगत रूप में बार्ताओं में माग से राजनियक व्यवस्था का मयकर अम्पास है। तिखर राजाय के जो दोब है अमबा उसके विरोध में जो तर्क दिए

- जाते हैं वे मुख्यत ये हैं— 1 यदि राज्यप्यक्ष या प्रधानमन्त्री स्वय ही विदेश मन्त्री या राजवीय प्रतिनिधियों का वार्य सम्पन्न करने लगे तो इससे नियमित विदेश सेवाओं का मेरेल गिर जाता है।
- 2 कभी बभी इसने िर्णय अस्पीर्य जल्दमाजी म से लिए जाते हैं। शिखर सम्मेलन प्राय दो अथवा तीन दिन के लिए होते हैं और बभी कभी तो एक असवा दो या कुछ पण्टों के लिए ही होते हैं। इतना अल्प समय तो दिन्ती भी सामान्य समस्या के लिए ते कम है तो जटिल समस्याओं के समयान वे लिए तो निर्धात रूप से ही कम है। आ देशे सम्मेलनों में लिए जाने वाले जिससे में परियन्तम नहीं होती हैं यही कारण है कि अधिकार शिखर सम्मेलन समस्याओं वे समयान से असफल रहते हैं।
- 3 शिखर राम्मेलों में राज्याच्यां विदेश मन्त्रियों आदि का जो अतिशय सम्मान होता है इतसे चनके अहकार और घमण्ड में वृद्धि होती है और दिदेक कम होता है। उस शांतावरण में लिए गए गिणंय कलदायक कम सिद्ध होते हैं।
- 4 जल्दी निर्णय लेने के कारण यह सम्भव है वि मुख्य कार्यपालिका को विधाराधीन विषय पर पूरी सूचना प्राप्त न हो सके !

- 5 सिय दातीं कत्तों के रूप में मुख्य कार्यपालिका व्यक्तिगत रूप से देंच जाती है तथा अन्तिम निर्मय उसे मानना ही पढता है ।
- 6 इस राजनय में यह जोखिम है कि यदि मुख्य कार्यपातिका अयोग्य तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्विच वार्ता के क्षेत्र में अनुनिज हैं तो गम्भीर राष्ट्रीय अहित हो सकरा है ।
- 7 शिखर राजनय पूरी तरह से खुला नाटकीय तथा समाधार पत्रों पर अधारित होता है। फलस्वरूप मुख्य कार्यप्रतिका के व्यक्तित्व पर कीयड छात्रते जाने की सम्मादना बनी रहती है। इसके विपत्तित यदि इसमें गोपनीयता बरती जार तो मुख्य कार्यपालिया की मीति रिक्षति कर रियायतों के प्रति सप्टेड से देखा जाता है।
- 8 शिखर राज्यम में मुख्य कार्यपातिका के स्तर एव सम्पान की समस्या भी जरज़ हो जाती है। इसके अन्तर्गत बढे राज्य के अध्यक्ष को एक ऐसे सच्चरण राज्य के ऐसे पदायिकारी से मिलना पड़ला है जो मुख्य कार्यपातिका होते हुए भी जसकी अपने देश की राजनीतिक व्यवस्था में जलना सम्मान एव प्रतिच्या नहीं होती है।
- 9 शिखर राजनय का सबसे गम्मीर दोष यह है कि यह गलत आशाओ एव शाव देश की नुष्य कार्रपालिका राजनय में सक्रिय हो जाती है तो महत्वपूर्ण हाया निर्मायक परियामी की आशा की लाती है। ऐसा न होने पर जनता की आशाओं और महत्वपाल देशों में पर जनता की आशाओं और महत्वपाल देशों को गम्मीर अग्यात पहुँचला है। विरोधी दल इसका राजनीतिक लाम घटाते हैं।

शिखर राजनय की कुछ रून्य कनियों की ओर डॉ राय ने इस प्रकार सकेत किया है....

10 राष्ट्राण्यक्ष प्रधानमन्त्री आदि शिखर राजनय का उपयोग अपनी प्रतिष्ठा बदाने एव अपना विश्वव्यापी स्थान बनाने के लिए करते हैं न कि सहदोग और समस्याओं के समभान के लिए। इस राजनय वा उपयोग प्रवार के लिए मी किया जाता है। ऐसी स्थिति मैं शिखर सम्मेलन एक महत्याकरी नेता के हम्यों में रिज्य प्रप्त वरने का सचन बन जाता है न कि न्यायोधित समझौते वा काग्रर। शिखर राजनय का उपयोग मतनेदों को अधिक प्रकट कर देता है। इन्हें बुलाने से जो कार्स्सए जासन होती हैं वे सायद ही मूरी हो पती हैं।

11 कनी बनी एक परा इस बर से कि वहीं दह शिखर सम्मेलन वी असफलता के लिए बदनम न ही जगर ऐसी पूठ व सुनियाएँ वे देता है जो उन्हें दिमान से सीवने पर बद कनी नहीं देता । इसमें समय व धन दोनों वा ही अस्वयम होता है। दीन रस्क के मत में "यह शिखर सम्मेलन समय क्या शिक ने उस नहीं बिन्तु से हटा देती है जिसे हम बिल्कुल ही नहीं छोड़ सकते।" बनी कमी नेता अपनी प्रतिष्ठा के जाने के मय के बराय अपने उस में करोर हो जाने हैं और शिखर राजनय इस बराय असकर रहता है। प्राय्य यह देखा गया है कि सम्मेलनों में निर्मय हो ते शिए जाने हैं परन्तु समय को कमी के बराय अपने विस्तृत बर्मान का कार्य उपीनस्य अधिकारियों पर छोड़ दिया जारा है जो अधिकारत एक्सत नहीं हो पति हैं।

12 शिखर रुपिकारियों की अनुपरिवाति में राज्य में लिए छाने वाले निर्मायों में देरी होती है । अनुमानतः यह कहा छा सकता है कि रुपिक समय तक दिदेश मन्त्री की अनुपरियति उराके विमान को उसके योग्य नेतृत्व से विवित रखेगी,परिणामत निर्णय प्रक्रिया में देरी लगेगी। सकट के समय युरन्त निर्णय क्षेत्रे के स्थान पर विदेश मन्त्री के लीटने का इन्तजार करना पढ़ेगा।

- 13 यह मान्यता कि शिखर शाजनय के माध्यम से शाज्याच्या आदि एक दूसरे के मित्र रो जाते हैं. ठीक नहीं है। क्या दो या तीन दिन का सम्मेलन इन्हें एक दूसरे के इतने निकट ता सकता है कि इनमे मित्रता स्थापित हो जाए ? यह तर्क कि इत प्रकार से शिखरे सम्मेलनों में जाने से राज्याच्या आदि उस देश के उसके मागरिकों को जान लेता है जीक प्रतीत नहीं होता है।
- 14 शिखर सम्मेलन के पूर्व उसकी सफलता के लिए कभी-कभी छोटे सम्मेलन आयोजित किए लाते हैं जिनमें निम्म स्तर के अधिकारी माग लेते हैं ! मे महीनों चलते हैं परन्तु किर मो कोई निर्धाय में ती को और अपने में मुद्दे करोतां करना पहता है। इनके असफलता मूल सम्मेलन को भी स्पागित कर देती है। निकल्तान व्यक्तिगत स्तर पर वार्ता का विरोधी था। उसने वस्तीय की लिय बताते के निकट से देखा था और दर उस सबसे असमुद्ध था। ईस्टर (Sir William Hayler) भी हिस्त सम्मेलन का विरोधी था। उसका मान था कि यदि सामस्य के मुस्त्रमाने की किसी पड़ स्त्रमें होती हो। वार्ती बेकार है यदि यह इस्पा नहीं है सो वार्ता वर्षा है। है है इत्तेरन सो शिखर बार्ता का कट्ट विरोधी था। उसका सह स्त्रमें सो अपनी पुत्तक में एक अध्ययन का शीक्ष है। आभीच और पानिज उम्प्रस्तरीय सम्मेलनों का जोदिम (The Menace of Inumate Top Level Conferences) रखा था। उसका सो निर्धायक सा सा कि शिखर सम्मेलन कभी भी निरिचत निर्धय पर नहीं पहुँच सकते हैं।

शिखर राजनय की सफलता के लिए सुझाव

सिखर राजनय की आलोधनाओं में बजन है लेकिन इसकी उपयोगिता को भी नकारा ना सकता। यदि कुछ बतों का विशेष ध्यान रखा जाए और आवरयक पूर्व तैयारी की जाए तो सिखर राजनय के बहुत हैं एयरीनी पैरिणान निकल सकते हैं । इतिहास भी इस बात का सात्री है कि अनेक असतों पर सिखर राजाय के कारण सकट के बादल छटे हैं। सोवियत स्त्त और अमेरिका के सीय जो छाट लाईन जुड़ी थी वह सिखर राजनय का ही परिणाम थी और उसके फलराकर किया हैन जुड़ी थी वह सिखर राजनय का ही परिणाम थी और उसके फलराकर किया मी ती हित्तध्याणी सकट अयदा युद्ध की सम्मावना के समय दोनों देशों के सार्वीया नेता परस्पर अधिकाब सप्पर्क स्थापित कर अवस्था के प्रतिकास स्थाप के स्थापित कर अवस्था के स्थाप स्थाप के अस्तान के बाद रिखरी में मीलिक परिवर्तन आ गया है। वर्तमान में समुक्तप्राज्य अमेरिका ही विश्व की एकमान महासारित रह गई है और शीतमुद्ध समाप्त हो एता है।

शिखर वातोओं की सफलता के लिए निम्नलिखित आवश्यक शर्तों का होना आवश्यक माना जाता है

 इसकी सावधानी और सतकंता के साथ पूर्व तैयारी अपेक्षित है। पूरी तैयारी के बाद सपत्र होने वाली वालीओं की असफलता की गुजायश बहुत कम रहती है।

84 राजनय के सिद्धान्त

- (2) सिखर दातों की सफलता के लिए राष्ट्राध्यक्षों के दागित पैर्य और सहनशैलता की भी अपेक्षा रहती है। अगर राष्ट्राध्यक्षों के स्वनाव में उतारलापन क्यावा तुनुकिनिजाणी है तो सम्मेलन असफल की जायेगा। अत राष्ट्राध्यक्षों में दिवेल और मरिपल्यता की स्थिति की स्थिति प्रकार सम्मेलन को मर्फन बना मकली ने
- (3) राष्ट्राध्यमं को उन्हीं दिक्यों पर शिखर वार्ताएँ सम्पादित करनी चाहिए जिन पर रिखर वार्ता से पूर्व ही व्यापक सहमति हो गई हो अबदा उस पर सहमति होने की समावना हो । अगर इस मानसिकता के विपतित कार्य किया गया तो शिखर सम्मेलन असकल को जायोगा ।
 - (4) शिखर सम्मेलन में पारित किये जाने वाले प्रस्तादों और उसके बाद जारी की जाने वाली संयुक्त विइप्ति पर विशेषझों की राय को महत्व दिया जाना चाहिए !
 - (5) विशेषज्ञों की राय लेकर तैयार किये गये प्रस्तारों को शिखर सम्मेलन में माग लेने बाते दूसरे राज्य को सेके जाने चाहिए ताकि उस दिश्य पर पर्यान्त दिवार दिश्तर्श हो सके, और उस पर उठने वाली जादियों का निराकरण किया जा सके । इसमें शिखर वर्ता की सम्प्रदान की सम्प्रदान कर जाती है।
 - (6) शिखर सम्मेलन की सकलता के लिए दिशेषज्ञ राज्नियकों की सेवा लेना मी अमिरहार्य कन जाता है। ये दिशेषज्ञ राजन्त्रियक राष्ट्राध्यक्त को सही राय दे सकते हैं। कत शिखर सम्मेलन की सकल्या में अनुनवी और दिशेषज्ञ राज्नियकों वी सेवा का मी महत्वपूर्ण स्थान करता है।
 - स्थान होता है।

 (7) शिखर सम्पेलन की सकल्ता के लिए यह मी अवश्यक दन जाता है कि यह शांत
 - स्थान और सद्भावनपूर्ण बातादका में आयोजित किये जाएँ । (8) राष्ट्रायम्हों के शिखर सम्मेलन से पूर्व समिव और मन्नी स्तर पर वार्लाई आयोजित
 - कर लेंगी पाष्टिए, जिससे कि इसकी सरनता के लिए टोस अध्येप रोधार हो जाता है। (9) शिखर सम्मेलनों का आयोजन करना अस्यन्त जीखिममरा होता है। इसकी असकतता पर समस्या और भी जटिल हो जाती है, और राष्ट्रों के आपसी सर्व्यों में और
 - असकतता पर समस्या और भी जटिल हो जारी है, और राष्ट्री के आपसी सन्यों में और भी कटुता ठा जाती है। अत अत्यन्त अपदाद दाली पीरिस्थिति में ही इसला आयेजन किया जाना चाहिए।

सम्मेलनीय राजनय (Conference Diplomacy)

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में जन अप्तेरुचि के दिशास के साथ ही सम्मेर्तनेय राजनय का प्रदुर्गन हुआ। "सम्मेरलीय राजनय याद का सर्द्रम्यम प्रदेग 1920 ई में ब्रिटिया प्रधानमंत्री तायर्व जार्ज के महिन्दर्ज के सदस्य तार्ड देनी (Lord Hanky) हात अपने भाषा में किया गया जिसका शीर्षक हो 'सम्मेरल हारा राजनय' (Diplomacy by Conference) था। ब्रितीय विस्तव्युद्ध के बाद सम्मेरली हारा राजनिक व्यवहार का सम्बदन एक आन साह में कृषी । दर्मामा में तस्त्र में प्रेरण न्यार्थक और क्षेत्रमें अपने अस्तर्राष्ट्रीय

सगदनों के मुख्यालय स्थित हैं।

सम्मेलन राजनय अर्थ एव महत्व

(Meaning and Importance of Conference Diplomacy)

वर्तमान मे अन्तर्राष्ट्रीय सर्व्यों के सम्रातन में इस राजनय का महत्व निरन्तर बदता ही जा रहा है । आयुनिक युग "सम्मेलन द्वारा राजनय का युग है। यह राजनय की मुख्य प्रक्रिया बन गया है।

सम्भेल । राजनय को बहपदीय राजनय (Multilateral Diplomacy) कहा जाता है !

सम्मेदलीय राजनय द्विपरीय राजनय के परम्परागत तरीकों से स्पष्टत नित्र है। राहर्टी रेगेला के कथनानुसार 'सम्मेदलीय राजनय राजनियक सन्धि दातांओं को एक तकनीक है तथा राजनय के अन्य समी पहलुओं को मीति प्रक्रिया के असक्य जटित नियमों से आबद रहती है।" सम्मेदलीय राजनय की मृतपूत विशेषताएँ यदाि इतिहास मे पहले से ही प्रचित्त रही हैं किन्तु जैसा कि निकल्सन का कहना है प्रथम दिख्युद्ध के बार यह अनुसान किया ज्याने लगा कि अन्तर्राष्ट्रीय राजायिक कार्य प्रदृत्ति गील मेज समाध्यो द्वारा सम्पन्न की जाए।" होर्ड हैन्सी ने भी इस विशार का समर्थन किया है। उनके प्रतृत्तारा सम्पन्न की जाए। "हार्ड हैन्सी ने भी इस विशार का समर्थन किया है। उनके प्रतृत्तारा

न केवल प्रमुख शांतियों के बीथ है वरन छोटे राज्यों के बीव भी जारी प्रकार प्रयक्तित है। राज्यव का सामान्य मार्ग दिशेश विमार तथा उनके द्वारा नियुक्त राजदूत है। इस सरत सामान्य और सीधे मार्ग को न अपनाकर राज्य हुन्दें पीछे छोड़कर समितनों ह्वारा राज्यव का मार्ग अपनार्त है। सामान्यत राज्यों के मार्ग साम्यच नोट्स के आवान प्रदान में जब नेट्स के आदान प्रदान में देशों हो जब जिटित सामस्याओं के निरावस्य के के प्रकार के आदान प्रदान में देशों हो जब जिटित सामस्याओं के निरावस्य के विद्या प्रकारित वार्ज में यह नीटित के स्थान प्रसान प्रकार सामान्य के निरावस्य के विद्या प्रकारित वार्ज में यह नीटित के स्थान पर सामान्य की सामायात वीत जाति है।

सम्मेलनीय राजनव से अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान किया जा सकता है और अन्तर्राष्ट्रीय सीहाई की दृद्धि हो सकती है। उसाकि हैकों के मदों में "सम्मेलन द्वारा राजनव के दिवेरपूर्व निकास से युद्ध की रोकथाम की सर्वोत्तम आज्ञा की जा सकती है।" इसके दिवरीत समुक राज्य अमेरिका के दिया सरीवर कीन एवीसन का मत या कि युद्धोत्तार काल में अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन बहुत हद तुक टकराव को समाप्त करने के साधन के रूप में नहीं रहकर उसे धादू रखने के साधन के रूप में रह गए हैं।

अनेक क्षेत्रीय तथा अन्य प्रकार के समृह जैसे नाटो (NATO) अमेरिकी राज्यों का सगठन (OAS) तथा यूरोपीय एकता अन्दोलन असलग्न राष्ट्रों के आन्दोलन आदि को मी सम्मेलन के राजनय के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में जब से जनता रुधि लेने लगी है तब से सम्मेलन का राजनय अधिक लोकप्रिय बन गया है। अब सयुक्तराज्य अमेरिका जैसी महाशक्ति और अन्य बड़े

भ्रायक त्यांकप्रय बन गया है । अब संयुक्तराज्य आपका जरा नहाराक्ष्य आप अर्थ .* Dipolarasy-by-conference-1x-1x-th, open-cd dipolaratic agentiations and like all aspects of diplomacy is surrounded by numerous and complicated rules of procedure

 [—] Roberto Regala
 Tis was left after the world was of 1914 18 that of plomatic intercourse would hence forward be conducted atmost entirely by round table conference — Harold Nicolson

राष्ट्र भी छोटे राज्यों की अवरण को महस्त देन लग है और इनके समर्थन की आदराकर महसूस करने लगे हैं। सम्मेलन का राज्यात समुख निर्येचन एवं क्रिया को प्रयोग सरक दिनेच होत्रों के बीच सहयोग में दृष्टि व सता है। उदाहरा के लिए, जाटो की एक महस्त्या उसलीय यह है कि इसने मानिकरणेंने सीनिक सहयोग का विकास किया है।

सम्मेलन के राजनय का एक दूसरा दिकास समाज की मान्यना का दिकास है। यह यूरोपिय अर्थिक समाज राया इससे सम्बद्ध निकारों की प्रकार इसा प्रेस्सादित दिया गया है। सम्मेलन के राजनय ने ही ससरिय राजनय की जन्म दिया है जो छाज के राजनिक हैन की एक महत्यानी जिल्हण है।

सम्मेलन का राज्यब हरूरा युला राज्यब हेरा है। जिस प्रकार खुले सन्द्रीहे खुले मैं ही प्रतर्पित किए एग्त है। इससे यह सम्मादन रहती है कि सम्मीदान देगी पत्ते के हिंदों का नुस्तान हो और उस सम्मेलन या सगढ़न का नुस्तान हो जिसमें कि ये किए गए हैं। कमें बनी दार जिल्दा और अस्मादी को जनग सी ऑदी से अप्रेहत रखना अध्या सन्द्रा जाने हैं क्योंकि इससे सम्मया स्वयू होगी है और दिवदणूर्ग सनस्य पर दिवार दिनमें अधी रहत दिया जा सकता है। सम्मेलन के राज्यब हो कमें कमें प्रवार के लिए प्रमुक्त किया पाना है। यह प्रदृत्ति खरनाक है स्वयंकि इससे हर देश अमर्ग श्रीक ब्वारी और उन्यू की श्रीक के कम सम्मेल प्रप्रास करता है।

सम्मेलन के एजनय की अनंक सीमाएँ हैं। राजनय के इस रूप का सम्मान इसिएं किया जाना है क्योंकि यह एक ऐसी प्रतिया दिखाई देती है पीनी किसी राज्य की व्यवस्थानित के अधिरान में रहती है। विन्तु व्यवहर में किसी व्यवस्थानिक के अधिरान राया मध्या राज्यों के सम्मेलनों में पायों अरूप रहती है। दूसरे इन राज्यों के प्रतिनिधी स्वतन्त्र एपोट नहीं होते अपने उपने सरकारों के निर्देशनों से बैंध रहते हैं और सनका कम होता है कि वै अपने राज्य के हितों की तथा एवं अमिनुद्ध की।

सम्मेलनीय राजनय का ऐतिहासिक दिकास

(The Historical Development of Conference Diplomacy)

यादी प्राचीन करते से ही कचारिय सम्बद्धों को सम्केलों की सहरण से म्यूर और नैत्रीमूर्ग बराय जन्म रहा है हया किचारिय सम्बद्ध के कर में प्रम्य महदूद के बर से ही इसका प्रयोग सम्बद्धा है। है दिहा सेक दृष्टि से सर्वत्र्यात बा सम्मेलत हीत वर्षीय युद्ध को सम्बद्ध करते के लिए हुआ बा और इसके की मास्त्रमा 1648 है ही सेक्टलेखा सचि सम्बद्ध हुई सी। वेस्टरेजिया क्येंग्रेस (The Congress of Mesphalus) में विनिन्न दोगों के सेक्को राज्यात सम्बद्धित हुए से जो सूर्येत के प्रतिक रूपने दिक हित का प्रविचित्त करते थी। इस क्येंग्रेस के नित्य पास्तर दिवा में स्वर्ध बाद लिए गए। किसी राज्याती राष्ट्र हात कराजे राष्ट्रों पर इनको ज्या नहीं समा है सेस्टर्जिया क्येंग्रेस में "स्वत्र्य वर्षा हुए दोग दो महन् बहुष्ट्यीय समित्री सम्मान्दित की जिन्होंने यूर्गोनीय कराजेंग्रीय सम्बद्धों की सुद्ध व्यवस्था को देवानिक स्वर्धा है। "188ी रहासी में उपनिवेद्यत एवं सम्बज्याद के दिस्तर के समा ही दिश्व के राज्यों है पूरी कम होने सी ट्या उनके बीब इन सम्बद्धों पर नियमन करने के लिए समिर सम्बन्धी सम्मेलन आदि का प्यवहार सामान्य बन गया । सम्मेलन व्यवस्था जो वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय सगठन का सम्मवत बहुत ही विशिष्ट और लोकप्रिय लक्षण है इस अवधि मे पर्यान्त विकसित हुई ।

प्रथम महायुद्ध से पहले जो प्रमुख सम्भेतन हुए उनमे 1899 तथा 1907 के हैं। सम्मेदन विशेष सत्ववपूर्ण हैं। प्रथम हैंग सम्मेदन (1899) के सदस गार्जों ने अन्तर्शर्प्रीय विश्वयं के सानिपूर्ण सामाण के लिए उस निर्णय पहित एर अधिक स्त्र दिया और वहे सामाण सहसति को आधार बनाना चाहा। फलस्वरत्य हैग में विवाचन के स्थायी न्यायालय की स्थापना हुई। दिवीय हैग सम्मेदन (1107) ने मुद्ध वे नियमों के निर्यारण पर गागीर विधार विभाव गया और तर्वत्यं से यह अपेया की गई कि वे पुद्ध से स्थापने कि लिए तीसरे पद्धा की मध्यस्थता स्वीकार करें। बलादे के अनुसार दिनित्र कानियों के सावयूद हैंग ध्यदस्था ने सर्वव्यापकता की मृत्ति निदित्र थी। दिवीय सम्मेदन में ने पर्यूप्त के स्वावयुद्ध के स्वावयुद्ध होंग ध्यदस्था ने सर्वव्यापकता की मृत्ति निदित्र थी। दिवीय सम्मेदन में ने पर्यूप्त के प्रतिनित्र कि हित्त होंग ने स्वयुद्ध कर स्थापन के स्वावयुद्ध के स्वयुद्ध सम्बय्यों के खत्य स्वयुद्ध के स्वयुद्ध साम्येयों के सित्राय स्वयुद्ध के सम्योव्ध ने स्वयुद्ध के स्व

दिरद्वस्त या सप्तरत राष्ट्री हुए। अपने इगको क शानिपून सन्यान के लिए सिद्धाना के दिक्त की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। हम व्यवस्था ने युद्ध के परित्यान की आरायवहरा की ओर तथा बहुतानीय व्यवस्था के अन्तरीय के अन्तरीय के तराव्य हराओं के दिख्य की ओर तथा बहुतानीय व्यवस्था के अन्तरीय प्राप्त मुख्य का बार्च कराओं के दिख्य की की तथा हम सम्मानों की प्राप्त मुख्य का बा को परित हम करियों, दोककार अदि का प्रयोगक के प्राप्त मुख्य का। सन् 1907 में हम-सम्मेन की परित कराव्य की सम्पाप्त की स्वाप्त हम्म स्वाप्त की स्वाप्त की स्वाप्त की स्वाप्त स्वाप्त हमार स्वाप्त की स्वाप्त की स्वाप्त स्वाप्त हमार स्वाप्त स्वाप्त की स्वाप्त करने की स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त की स्वाप्त की स्वाप्त स्व

प्रयम महायुद्ध की समारित के बाद सबसे बढ़ा और पाटिल प्रथम शानित की स्वार्ध यदस्या करने का बा। युद्ध के बाद रान्ति की व्यवस्या स्वानित करने के प्रशन की जिटला दा अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि जाई युद्ध सदा चार दर्व में सुमान हो गया था. दहाँ दिन्त्र दहाँ के साथ रान्ति-सन्दियाँ करने में पाँच दर्ब का समय सारा। नित्र और सह राष्ट्रों ने 28 एन. 1919 को जर्मनी के रूच दर्शय की रूचि 10 निटन्स, 1919 को ब्रस्ट्रिय के रूप सेंटर्जन की सन्ध 27 नहम्बर, 1919 को बलेरिया के रूप नद्दरी की सन्दि 4 जून 1920 को हमरी के सन्द ट्रियनों की सन्दि, 10 क्रमन्त 1920 को टर्की के रूप हेंद्र ही रूप हथा 23 ज़र्ल हैं. 1923 को रोहाने ही रूप समान ही। ये रूपियाँ 6 बगत. 1924 को लागू हुई । उसके बाद ही सारे सहार में पुरु दिविदद् रान्ति स्वादि हो सकी। इसी बेंब मधाना-महासागर में रुवि रखने बाते उपने का एक सम्मेलन 1921-22 के रीटकात में वरिएटन में हो चुका था। इस सम्मेलन में समिलिट होने वाले राष्ट्रों ने सुदूरपूर्व में रान्ति स्यापित रखने के लिए कुछ सन्धियों की । 1919 में की गई दर्सय की ਦੀ ਸ਼ ਜੇ ਵੇਲਾ ਵਾਵ ਜੋਂ ਵੀ ਸੁई ਚਸਟੇਠ ਦਵੀ ਦਵਿਧੀ ਡਾਰੀ ਦਰ੍ਹ ਸਮ ਜੋ ਵਾਜ਼ਿ-ਦਵਾਈਟਾ (Peace Sentement) कहल दी है। सन् 1919 के बाद 20 वर्ष तक कर्यांत् प्रथम महायुद्ध की सन वि से द्विटीय महायुद्ध के अलम्ब काल तक अन्दर्शाष्ट्रीय राजनीति के क्षेत्र में जिटनी मी महत्वर्स घटनाएँ घटित हाँ, एनका प्रत्यक्ष या बारत्यक्ष रूप से इन द्वान्ति सचित्यें के सक्ष गहरा सम्बन्ध द्या ।

यति सम्मेन (Peace Conference, 1919) के दिए ग्रांस की राज्यानी देखि को पूना गान करों के ग्रांस ने पून में काड़ी गान दिया था शर्म के काइनामें का प्रदिश्त करों में इंद्र के काड़ी गान दिया था शर्म करों में इंद्र के किया है। इस प्रतिक्ष में क्षा में ने देखा मिन प्रतिक्री को ही आतीनत किया गा। जो चन्न इस पुत्र में परित्र हुए से, उन्हें नहीं दुल्या गा। वनकी बेदन वने सम्प्र प्रतास कर प्रतिकृत का प्रतास कर प्रतिकृत का प्रतास के प्रतास कर प्रतिकृत का प्रतास की प्रतिकृत के अदरत नहीं किया प्रतास कर प्रतिकृत का प्रतास की प्रतिकृत के अदरत नहीं दिन का प्रतास की किया गा। उन्हें उन्हें के उन्हें के विकास का प्रतास की प्रतास क

पुद्ध के बाद शानित और शानित के बाद युद्ध—यह मनुष्य के दिकास क्रम का इतिहास एरा है। 1919 के शानित सम्मेदन में राष्ट्रसाध के प्रारुप को भरीकार किया गया और 10 कनवरी 1920 में इसे क्रियानियत किया गया और राष्ट्रसाध अतिहान के आधा। जानगर 02 वर्षों की शानित के बाद द्वितीय महायुद्ध का विश्लेष्ट हुआ। द्वितीय महायुद्ध काल में विश्लित महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेदन हुए जिन्होंने केवत युद्धकारिन घटनाओं में अधितु युद्धोत्तर विश्लेष की प्रामादित किया। 25 और 1945 से 25 जून 1945 तक सान फ्रांतिसको सम्मेदन हुआ जो सत्तुक राष्ट्रसाध की क्यापना से सम्मेदन को नवतमें विश्लेष के 46 राज्यों क प्रतिनिध्यों ने मान दिल्या। ई भी बैज ने इस सम्मेदन को नवतमें नहान अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेदन कहा है—जैसा न तो कभी हुआ था और न ही मतिष्य में होने की सम्मादना थी। इसके बाद अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेदनों अथवा सम्मेदनीय राजनाय अधिकाधिक लोकवित होना गया और आज अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेदनों का बढ़ा मान राजनय के इस स्वरूप पर दी अप्रापित है। सस्य समय पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेदना को स्वर्धा मान राजनय के हस स्वरूप पर देने की तिए निम्नालित

फेनेदा सम्मेलन (1954) पेरिस सम्मेलन (1960) आदिस अवाबा सम्मेलन (1963) केरेक्स सम्मेलन (1974) हेलिसकी सम्मेलन (1975) कोलन्यी सम्मेलन (1976) रवाना सम्मेलन (1979) नई दिल्ली सम्मेलन (1981) मेलडोर्न सम्मेलन (1981) मैद्धिड सम्मेलन (1991) और काराकस सम्मेलन (1991)।

. सम्मेलनों का सगदन अचवा सम्मेलनों का आयोजन और अन्त

राजनदिक सम्मेलनों का अयोजन किस प्रकार होना है जनकी कार्य प्रणानी किस प्रकार तथ की जाती है और सम्मेलनों की सम्मित कैसे होती है साम विश्व को सम्मेलन के निर्मातों या दृष्टिकोण की जनकारी केसे हो पाती है इस पर ठॉ राम ने अपना सुगवित अयान आयान स्पता किया है—

"राज्यों के मध्य मतमेदो को दर करने अथवा समस्याओं के समाघान के लिए कोई भी राज्य इन पर विचार हेतु अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन बुला सकता है। इससे पूर्व कि आयोजक राज्य निमन्त्रण मेजे निमन्त्रित राज्य की प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से उक्त सम्मेलन के लिए सहमति लेना आवश्यक है । साथ ही सम्मेलन मे विद्यार किए जाने वाले विषयों पर भी सहमति ले ली जाती है। निमन्त्रण पत्र राष्ट्राच्यल, दिदेश मन्त्री आदि के नाम से भेजा जाता है। इसमें सम्मेलन के बलाए जाने के कारण, उसके उद्देश्य तथा कार्यक्रम का विवरण होता है। कभी कभी निमन्त्रण पत्र मेजहान राज्य के स्थान पर अन्य राज्य भी भेजते हैं। विषय और ससके महत्व के आधार पर ही राज्य तय करते हैं कि वे सम्मेलन में भाग लें अजात नहीं । राज्य निमन्त्रण को अस्वीकार कर सम्मेलन में भाग लेने से मना भी कर सकते हैं । सम्मेलन मे अनुपस्थित होने के बाद भी राज्य इसके निर्णयों की सस्तृति कर सकते हैं। सम्मेलन मे भाग लेने वाले प्रतिनिधियों को अधिकार पत्र अथवा प्रत्यय पत्र सम्मेलन के अधिकारियों के समझ प्रस्तत करने पडते हैं। इन्हें वे सभी राजनयिक अधिकार तथा उन्मक्तियाँ प्राप्त होती हैं, जो राजदर्तों को प्राप्त हैं। सम्मेलन की प्रथम समा में एक समापित तथा एक सचिव चुना जाता है। यह प्राय आयोजक राज्य का ही होता है। यह केवल एक परम्परा है जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय विधि के अनुसार किसी भी प्रकार की अनिवार्यता नहीं है । अप्रत्य आदि की व्यवस्था प्राय. वर्णानुक्रमिक ही होती है । सम्मेलन की कार्य-प्रणाली के सम्बन्ध में पहले से ही तय कर लिया जाता है । यह एक मान्य नियम है कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में प्रत्येक राज्य का एक मत होता है मले ही प्रतिनिधि मण्डल में कितने ही सदस्य क्यों न हों । उदाहरणार्थ संयक्त राष्ट्र की आम सभा में प्रत्येक सदस्य राज्य के पाँच प्रतिनिधि तथा पाँच वैकल्पिक प्रतिनिधि होते हैं किन्तु वे मत एक ही दे सकते हैं। सम्मेलन के स्थान का चयन तीन आधारों पर किया जाता है। प्रथम समस्याग्रस्त स्थान के निकट जैसे मोरकों सकट के निराकरणार्थ 1906 का अलजीसिरास सम्मेलन । द्वितीय महाशक्ति के आधार पर जैसे 1908-1909 का लन्दन नादिक सम्मेलन अथवा वाशिंगटन का 1921-1922 का सम्मेलन । तृतीय एक तटस्य स्थान पर जैसे जेनेवा में हुए कई अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन ।"

"सम्मेतन के प्रारम्भिक काल में माचा प्रायः फ्रेंच ही हुआ न्भरती थी। बीसवी शताब्दी की माचा अंग्रेजी बन वाई है। सम्मेलन के आयोजन के पूर्व हैं यह सय कर दिया जाता है कि सम्मेतन में किस माचा का प्रयोग होगा। समुक्त राष्ट्र में पाँच माचाओं—अग्रेजी, फ्राँसीसी, कसी चीनी व स्पेनिश—को मान्यता दी गई है। किसी भी सदस्य को इन सम्भेतनों में स्वीकृत पाँव माचाओं में से किसी भी एक माचा में भाषण देने व सुनने का अधिकार है। जटिल समस्याओं पर विचारार्थ सम्मेलनों के कार्य की सुरियापूर्वक चलाने के लिए तथा समस्याओं पर विचार होतु सम्मेलनों का कार्य कई समितियों में विचाजित कर दिया जाता

इन्हों के प्रतिविदनों पर मूल सम्मेलन विचार करता है। सम्मेलन में पूर्ण विचार-विमर्श के परचात् विमिन्न प्रस्ताचों को बहुमत के आधार पर स्वीकार करके कुछ मिर्गय से विर जाते हैं। ये निर्णय सम्मेलन के अपन में अनिस्म प्रमन्न (acte (inale) के रूप में प्रकाशित किए जाते हैं। सम्मेलन के पूर्व की पूरी वीचारी आयोजक राज्य के कानिख अहिकारियों

। हो एन यी सब वही, पन्छ 187 88

द्वारा की जाती है। सम्मेलन की सफलता अध्याय असफलता इस पूर्व तैयारी घर हो निमंद करती है। दिख्यात विश्वर सजदूत विकटर केलेजती का मत है कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों को बुलाने के पूर्व उसकी तैयारी की आवसक है। समृद्ध स्वयन्त्र में सुद्ध स्वाक्त के रावद्ध हुम हिम्म सुक्त स्वयन्त्र स्वयन्य स्वयन्त्य स्वयन्त्यस्य स्वयन्त्र स्वयन्त्यस्य स्वयन्त्यस्य स्वय

सम्मेलनीय राजनय के गुण

(Merits of Conference Diplomacy)

सम्मेलनीय राजनय को युद्ध रोकने का महत्वपूर्ण उपाय माना गया है । लॉर्ड हॅंकी राया अन्य ने सम्मेलनीय राजनय के निम्मलिखित गर्णों का उल्लेख किया है—

- ! इसमें मान लेने वालों की सख्या कम होने के कारण अनीपचारिकता का निवांह किया जाता है। यह भी देखा गया है कि सम्मेलनों में सदस्य राष्ट्रीय खायों को छोड़कर अन्तर्राष्ट्रीय सख्यान की और जन्मख होते हैं।
- 2 सम्मेलनीय चालन्य की प्रक्रिया में लगीलागन होता है। विभिन्न चाल्यों के प्रतिनिधियों को परस्पर विचार विगर्दा का अच्छा अवसर मिलता है। गत्यावरीयों को आगने-सामने बैठकर सलझा तिया जाता है।
- 3 तमी सम्मेलनों में विदेश मन्त्रियों या राज्याध्यक्षी या प्रधान मन्त्रियों का व्यक्तिगत स्पार से माग देना सम्मद नहीं हो पाता अतः कभी कभी राजदूर ही अपने देश के मिलिधि के रूप में सम्मेलन में माग देते हैं । उपच स्तरीय अधिकारी के नेतृत्व में विशेषक्ष में सम्मेलन में माग देते हैं । दिमित्र राज्यों के एक ही विषय के विशेषकों के सामृहिक विचार-विशासे से विश्वास और मातृत्व की मावना पनपती है और सटीक निर्णय देने की सम्मावनार्ण बदारी हैं ।
- 4 सम्मेलन में मान लेने वाले सदस्य प्राय एक दूसरे से परिधित रहते हैं। प्रमुख सदस्यों के बीच व्यक्तिगत निज्ञता रहती है। इससे अस्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के समयान की उदित एचण्डीम व जाती है। निकल्सन भी हमी विद्यारमार का सम्योख स्था। उसका स्था बा कि बहुत से प्रमुख्यान ने केस्तर एक दूसरे को जान जाते हैं वसन् वे एक दूसरे के निज्ञ व विस्थातमात्र भी बन जाते हैं। इजबेहन और चर्मित के मध्य दिश्वास व निज्ञता सम्मेलनों में मध्यान के सही सुनक्त पार्ती कभी कभी सम्मेलनों होता सुनक्त जाती है।
- 5 सम्मेलनों की कार्यवाही गोपनीय रहती है सथा इसके परिणामों को ही प्रकाशित किया जाता है।
 - । जो एम पी शय वही, पुन्त 187 88

97 राजनय के सिद्धाना

- 6 मुम्मेलनों में बार बार मिलने से परस्पर स्थायी विश्वास और सहयोग की वृद्धि होती है।
- 7 सम्पेलनों में दिप्तित दिरंपी के बीच सम्प्रजस्य का प्रयास किया ज'ता है इसलिए अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना को प्रेप्तसहन मिलता है।
- 8 सम्मेलनीय राज्यय से समय दी मी बचत होती है। आज दूरावासों के बार्य इतने अधिक बढ़ गए हैं कि यदि वार्ताओं का कार्य मी इन पर छोड़ दिया जाए हो इन पर

इतने अधिक बढ गए हैं कि यदि वर्ताओं का कार्य मी इन पर छोड दिया जए तो इन पर कार्य का बोध भी बढ जएगा तथा शिम्न निर्मय केने के मार्ग में अदरोप आएगा। राष्ट्राव्यत्यें के बीध होने बाते ये सम्मेलन कम समय के लिए होते हैं अत इसमें शीम निर्मय किये जा मकते हैं।

त्त्य जा सकते हैं।

9 'जिन राज्यों के तत्वादधान में ये सम्मेलन होते हैं फर्ड अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक
में एक महत्त्यूर्ग मुनिका अदा करने का मैं का मिलता है। सम्मेलनीय राजनय प्रानतन्त्रीय
य्यवस्या के अनुक्त्य है। इसमें छोटे राज्यों को भी बड़े राज्यों की मीं ते समनता के स्तर
पर विदार प्रकट करने का एक अच्छा अदसर नित्ता है। इस प्रकार सम्मेलनीय राजनीति
का महत्त्वप कार्यों कि

10 सम्मेलनीय राजनय खुले राजनय को सम्मद बनता है अत. खुले राजनय के अनेक गुणें का इसमें समादेश है।

 वर्तमान परिस्थातियाँ में सम्मेलनीय राजनय एक वास्तविकता दन गया है ! सम्मेलनीय राजनय के टोड

सम्पलनय राजनय क दाव (Demerits of Conference Diplomacy)

सम्पेतनीय राजनय के दोनों को निम्नलिखित रूप से रखा जा सकता है— 1 सम्पेतनीय राजनय में गोपनीयटा का बाताबरण रख्ता है। इससे सदस्य राज्यों

के मन में अदिखास की मादना पनपती है तथा सन्धि दाती का मार्ग दुर्गन बन प्राप्त है । 2. सम्मेलनीय राजनय में अनेक गुस्त बतें समय से पहले ही खुल जाती हैं जिससे

सियाँ एवं समझौतों सी कार्यन्यति के मार्ग में बच्चा आती है। 3 राजनिक समझौतों में शीध निर्मय से लिया जाता है। जिस समस्या सो राजनिक समझौता वर्ती के मध्यम से दस दर्ष तक भी नहीं सुलझाय जा सकता उसे राज्यध्यक्षी

समझें जा दर्जी के मध्यम से दस दर्श तक भी नहीं सुलझाय जा सकता उसे राज्यध्यों के मिलने पर एक ही दिन में सुलझा लिया जाता है फलत. व्यवसायिक राजनपड़ों का महत्व घट जाता है।

4 सम्मेलनों में बार बार निलने पर राजनयहीं में परस्तर ईप्यां और वैननस्य बढ़ने की सम्मावना अधिक रहती है। छोटी छोटी व्यक्तिगत नाराजगियाँ अनेक बार राष्ट्रीय हित के लिए घटक बन छाती हैं।

के लिए घटक बन जाती हैं। 5 सम्बेनमों में जब दिनित्र प्रधानमन्त्रियों एवं दिदेश मन्त्रियों के बीच मैत्री एवं सीहार्य की घटनमें बड़ जाती हैं तो के अध्यन में ऐसे मार्यों के बीच मैत्री एवं दिहार

की मादन एँ बढ जाती हैं तो वे आपत में ऐसे दायदे त्या सन्धियों कर लेते हैं जिनको वे व्यवहार में पूरा नहीं कर पत्ते, फनत. सम्मेलनीय राजनय का महत्व कम हो जाता है।

6 सम्मेलनों में की गई सिन्धाों की कार्यन्दित में अनिश्चल रहती है क्येंकि वे जनमत की सही परीक्षा किए बिना ही सम्पन्दित कर ली जाती हैं। यदि उनको जनता अस्वीकार कर देती है तो वे निर्ध्यंक बन जाती है। वसांग्र की सन्धि को अमेरिकी राष्ट्रपति वृडरो विल्सन द्वारा स्टीकार किया गया था किन्तु वहाँ की कोंग्रेस ने उसे अस्वीकार कर दिया। परिणामस्वरूप संयुक्तराज्य अमेरिका राष्ट्रसम् का सदस्य नहीं बन सका था।

- 7 सम्मेल ों में दो राज्यों का मनमुदाव या खिवाव घटने की अपेशा अधिक बढ जाता है। वे इस अवसर का प्रयोग एक दूसरे पर कीचड़ उछालने में करते हैं। फलत अन्तर्राष्ट्रीय सदमावनायर्ण वातावरण को हानि पहुँचती है।
- 8 सम्मेलनों में माग लेने वाले प्रति।िधि अपने व्यक्त कार्यक्रम में से धोडा शि समय दियार विमर्श के लिए दे पत्ती हैं रुमा समियों की गहराई के बारे में सन्तुलित ढग से नहीं रागि पत्ती । प्री िकल्यान के मतानुसार शानितकाल में विचार विमर्श की शीपता लागप्रद होने की अध्यान प्रतिष्ट कर जाती हैं।
- हान का अपना शामध्य स्व प्रातात है।

 9 अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में गुटस्ची होने के बाद सम्मेतनीय राजनय का कोई उपयोग
 नहीं रह गया है। विवारवारा अर्थव्यवस्था एवं राष्ट्रीय हितों का विरोध और अनेक पूर्वाव्रह होने के कारण राम्मेतनों में अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर विधारों का स्वस्थ आदान प्रदान राम्मव नहीं हो पाता है। प्रयोक यह सम्मेतन का दुरुपयोग अपने राजनीतिक प्रयार के विश्व करने तालाता है।

राफलता की शर्ते (Conditions for Success)

सम्मेलनीय राजनय की एक अलोधनाओं में पर्याप्त सत्यता होते हुए मी अब पुरानी व्यवस्था की ओर लीटना सम्मव नहीं है। अत आवश्यकता हम बात की है सम्मेलनीय राजनय को सफत बनाने के लिए एथित परिस्थितियों अपनाई जाए। इसके सफत सथातन के लिए विधारके द्वारा निम्निविधत सम्राज प्रताज किए गए है—

- [सम्मेलन को सफलता के लिए यह उपयुक्त है कि सभी प्रतिनिधि मूल बातों के सम्बन्ध में पहले से ही सहमत हो जाएँ तथा एक दूसरे के दृष्टिकांण को मली प्रकार समझ लें। इस स्वर्णिम नियम को ध्यान में रखकर किए गए सम्मेलन प्राय सफल हो जाते हैं।
- 2 सम्मेलन में माग तो व ले प्रतिनिधियों के बीच परस्पर आदर एवं नित्रता की मायना का विकास होना चाहिए। मानवीय सम्बन्ध के पहलू हमेशा महत्वपूर्ण होते हैं।
- का दिकास होना चाहिए। मानवीय संच्या के पहलू हमेशा महत्वपूर्ण होते हैं। 3. सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिप्रिपियों की सख्या अपिक नहीं होनी चाहिए। कम प्रतिपित्त मुनी प्रकार विचार विमर्ण कर सकते हैं तथा अनादरयक विरोध पैदा होने की

सम्भावना नहीं रहती । 4 सन्य वार्ताओं में आवश्यक गोपनीयता का निवीह किया जाना चाहिए । समय से

- पूर्व तथा अनुधित रूप में किसी बात का प्रकाशन होने से वह हानिकारक बन जाती है।
- 5 सम्मेलन मे भाग लेने वालों को स्वय की भाषा मे ही विवार प्रकट करने चाहिए ताकि स्पष्ट रूप से वे प्रत्येक बात को गनश्रा सके । अच्छे दुमाषियों की व्यवस्था रहनी चाहिए ताकि अन्य माण भाषी लोग उसे सही अर्थ मे समझ सकें ।

The six should be uncorrect to suppose that these meetings are intended to serve the purpose of negot a on they are exercised in foreign propagands and do not even purport to be experiments in diplomatic method
 — Harold 's colson.

94 राजनय के सिद्धान्त

सम्मेलनीय राजनय का प्रचलन और प्रमाव हमेशा एक-सा नहीं रहता है दरन् परिस्थितियों के अनुसार घटता बढता रहता है।

व्यक्तिगत राजनय (Personal Diolomacy)

दर्तनाव युग में अन्तर्राष्ट्रीय सनदाव्यों के सद्याप्त करने में व्यक्तिगत राज्यय का महत्व मी निरन्तर बदता जा रहा है। व्यक्तिगत राज्यय उसे कहते हैं जब राज्ययिक सिय दर्ताओं में एक राज्य के दिरोमान्त्री, प्रधानमन्त्री तथा राज्यप्यम प्रस्क्र कर से माग त्येत हैं। राज्यय का यह रूप बहुत समय से प्रचलित है किन्तु आज्जत इसका प्रथल-दर गाय है। अनेक महत्वनुत्र प्रस्तों पर देश के उत्तरदायी नेत्रजों हात निर्मय दिए जन्ते हैं। जेनेदा मम्मेलन बान्ह्रींग सम्मेलन अल्जीयर्स सम्मेलन तथा अन्य छनेक शिखर सम्मेलन व्यक्तिगत राज्यम के चराहरान हैं। डिलीय विस्तयुद्ध के सम्माय तथा उसके प्रस्त्त विजित्त देशों के दिवेशनको अन्तर्राज्येण प्रस्तों पर दिशा दिनजों के दिन्द निर्मत रहने हैं। प्रस्ता ने

बगलादेश एवं शारानियों की समस्या के सन्दर्भ में दिन्त्रि क्यांटिप्रांत नेन्त्र्यों ट्या प्रतिनिधि मन्दर्स को अन्य राज्यों में मेणा था, जो देश का प्रमादश्यती तरीके से पत प्रस्टुत करते हैं। इससे राष्ट्रों के अगसी सत्य मनुद दन जाते हैं। व्यक्तित राजन्य में आवश्यकतानुसार दूसरे प्रतिनिधियों का भी सहयोग सिया जा

करता है। इतता एड्रा कर उनका तथा नृद्द कर जाउं है।

व्यक्तिगत पानना में आवाद्यकरानुतार दूसते प्रवितिधियों का भी सहयोग तिया जा
सकता है। ऐसा करने से प्रधानमन्त्री और दिदेशमन्त्री का कार्य हरका हो ज्या है और
समय की बस्त होगी है। व्यक्तिगत राज्यय के सम्प्रीकों का दिवार है कि इसके हात ऐसी
समयाओं का समयान किया जाता है जो राज्यदाई हात सम्मान सम्पत्ती से ती सुरुहाती

जा सकती हैं। यह कहा जाता है कि ससदानक प्रजानन के पुत्र में स्थासों पर निर्मर
रहना विदेत नहीं है। यह कहा जाता है कि ससदानक प्रजानन के पुत्र में स्थासों पर निर्मर
रहना विदेत नहीं है। होदस से सीतपुद्ध की समादि में अमेरिकी राष्ट्रपति सेनाल स्थान
और जार्ज दुस तथा सेदियन नेता निवाहत गोर्सप्येद के शैव के व्यक्तिगत राजनय का
प्रमुख हच रहा।

आलोबकों ने व्यक्तिगत राजनय को हुन बताया है। इनका कहना है कि प्रधाननन्त्री और दिदेश मन्त्री अदि सम्बन्धरीय नेटाओं का कार्य नीचि बनाना है, समझैचे करना नहीं। यह कार्य राजनयब दिशेरहों हास समझ किया जाना चाहिए। सम्बन्ध नेना प्रायः स्थिति को दिस्पात होकर देखते हैं और इसलिए सनके हांच की गई सन्धियाँ राष्ट्रहित को पूरा नहीं कर राजी। हो। निकल्सन ने व्यक्तिगत राजनय का दिनेच किया है।

सर्वाधिकारवादी राजनय (Totalitarian Diplomacy)

20वीं राताची में राज्यय के इस नए रूप का दिकास हुआ। इसमें प्रज्जानिक सरीकें के स्थान पर तानाशासी तरीकें अपनाए जाते हैं। देश के राज्यय का सदावन उच्चस्तर के हुए गानाग्य व्यक्तिमें हारा किया ज्जा है। ये नेटा प्रचार और प्रमार के मण्यम से क्षमी मस्ताविकाओं और वासरिक तस्यों को जनता से प्रिमार स्थाविकाओं और वासरिक तस्यों को जनता से प्रिमार स्थाविका है। इस प्रकार के राज्यय से हफ प्रमुख दिर्मार के प्रमुख से किए मुख्य दिर्मार के प्रमुख से किए मुख्य दिर्मार के प्रमुख्य से किए मुख्य दिर्मार के प्रमुख्य से स्थाविका है—

- (क) इस राजाय मे विवास्तार्य को अमार बाग्या जाता है और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए जातीय बढण्यन भौतिकवाद एवं सैनिकचाद आदि का सहारा लिया जाता है।
- (छ) सर्वाधिकारवादी राजन्य का ल्ह्य शानिपूर्ण अन्तर्वद्वीय सम्बन्धे वी स्थापना करना गृही होता बदम् अपनी विद्यालयात (Moology) वा प्रसार करना होता है। इस स्वय वी पूर्ति वे लिए विदेशों में विशेष दल्ले वा निर्माण पोषण एव समर्थन किया जाता है।
- (ग) सर्वाधिकारवादी राजायण राजाय के सामान्य शिवमो का पालत केवल तभी तक करते हैं जब तक कि उनके स्वामियों की योजता से मेल खाते हों।
- (प) ये खुत रूप में घीषणा करते हैं कि किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय सन्धि या समझौते को
- इष्णानुसार सोंडा या अस्वीकृत विया जा सक्ता है। (ड) इन राजनयडों द्वारा प्रधार विया जाता है कि साम्यवादी राज्यों तथा पूँजीशदी
- राज्यों के बीध संघर्ण सदेव रही वाला तथा वभी न मिटो वाला है।

 (घ) अन्य देशों के भित्रतापूर्ण व्यवहार को ये देश उनकी कमजोरी मानते हैं और विश्व सास्था को अपने प्रधार का केन्द्र बना सेते हैं।

सर्विधिकारवादी राजन्य के पीछे विधाल्यात और रोजा वो शति रहती है। विधारवों का मत है कि एक रूप में इन राज्यों में राजाय का प्रमाव रहना है। इनना वहना है हि राजन्य का आधरण बेयत तोची राज्य है जब दो राज्यों वे बीच कुछ बातों पर मेंत अथवा सहमति हो। शीतपुद्ध के व्याताव्यक में राजनिक साम्ब्यों वा निर्मेट नहीं हो पाना।

खुला राजनय और गुप्त राजनय (Open and Secret Diplomacy)

अभुषिक युग में यद्यपि गुप्त और खुले दोनों ही राजाय का उपयोग होता है तथापि राजनय का इतिहास गुप्त रूप से खुले राजनय वी और रहा है।

सता राजनय (Open Diplomacy)

बर्तमान में युक्त राजनम की प्रवृति प्रमक्तित है। आज राष्ट्री द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जो राधियों और समझौते तथा राजनीयक य्यवहार किया ज्वला है उसकी जानकारी जनसामारण को प्राप्त होती है। प्राप्त सभी प्रजातात्रिक राष्ट्री द्वारा खुले राजनम का सहारा तिया जाता है। सयुक्तराज्य अमेरिका येट ब्रिटेन और और मगरत जैसे लोकतात्रिक राष्ट्री ने अपने प्रजातत्रीय सर्वियान के अमारा पर खले राजनम को अपनाया है।

खुले राजनय से तास्पर्य है राजनय का जन आकॉलाओं से प्रमापित और सथालित होना । नैतिक और आदर्शात्मक आधार पर ही इसका समर्थन किया जाता है।

प्रथम दिखयुद्ध के बाद से ही इस प्रकार के राजनय का संसर्थन किया जाने लगा है। अमेरियी राष्ट्रपति दुकरो दिल्यन के पीदह सिद्धानों में पहला यही था कि समी शानिपूर्ण सन्तरीते खुले रूप में किए जाने चाटिए तथा राजनय का संधालन जनतान्त्रिक

जैसे साप्यवादी विचारपात को आधार बनाकर सोवियत साथ तथा सात चीन आदि में राजनय सचालित किया जेतत है। सन् 1991 में सोवियत संघ का पतन डो गया। तरीके से बहुमत की राय के अनुसार किया जाए। श्री विल्सन ने खुली यातीओ तथा विदेश सम्बन्धों पर प्रजातन्त्रीय निधनन्त्रण पर बल दिया। इस विलसोनियन राजनय (Wilsonian Diplomacy) का अर्थ था वातीओं का खुला स्वरूप और शक्ति संघर्ष के स्थान पर सामूहिक सुरक्षा, जो प्रजातन्त्रीय व्यवस्था से नियन्त्रित हो।

रूसी लेखक अनाटोलीव (K. Anatoliev) ने अपनी पुस्तक आधुनिक राजनय (Modern Diplomacy) में यह दावा किया है कि सोवियत सरकार ने शान्ति के आदेश (Decree on Peace) में 'प्रकट रूप से किए गए प्रकट समझौते के सिद्धान्त को सबसे प्रथम प्रतिपादित किया था । उसी ने ही समस्त वार्ता को खुला और आम जनता के समक्ष रखने का दृढ उद्देश्य घोषित किया था। इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर जार तथा रूस की अस्थायी सरकार द्वारा की गई समी सन्धि व समझौते प्रकाशित कर दिए गए थे । सरदार के एम पणिकर ने 1956 ई में प्रकाशित अपनी पस्तक राजनय का सिद्धान्त और व्यवहार में अनजाने ही अनाटोलीव के इस मत की पुष्टि की है। द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् से ही वार्ताएँ खुले रूप मे होने लगी हैं। सयुक्त राज्य अमेरिका का विदेश मन्त्री जेम्स ब्रायाँ तो 'मत्स्य कटोरे के राजनय' में विश्वास करता था अर्थात जिस प्रकार से कमरे के मध्य मेज पर रखे गोल काँच के बर्तन में तैरती हुई मछली को सभी देखते हैं ठीक इसी प्रकार राजनियक वार्ताएँ भी सभी को दिखती व मालुम होती रहती हैं। आज अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में पत्रकारों, रेडियो व टेलीविजन प्रतिनिधयों को आने की छट है। सयक्त राज्य अमेरिका के विदेश सचिव डॉ हेनरी किसिंजर ने एक बार कहा था कि वे तथा राष्ट्रपति निक्सन काँग्रेस के साथ सहयोग की नीति अपनाएँगे तथा विदेश सम्बन्ध जहाँ तक सम्भव हो खले में ही किए जाएँगे।2

खुले राजनय के पक्ष में निम्नतिखित सर्क दिए जाते हैं---

 आदरयकता के समय जनता द्वारा धन और जीवन का बितदान किया जाता है इसिलए सरकार द्वारा उन्हें सभी अन्तर्राष्ट्रीय सिन्धयों एव समझौतों से अवगत रखना पाहिए !

- 2 प्रजातन्त्रात्मक सरकार जनता के प्रति उत्तरदायी होती है। इस उत्तरदायित्व के निर्वाह के लिए जनता को तथ्यों से अवगत रखना अनिवार्ग है।
- 3 यदि राजनियक कार्यो पर जनता का सरक्षण एव नियन्त्रण रहेगा तो राजनीतिश विनाशकारी युद्धों का वातावरण नहीं बना सकेंगे तथा जनता को जबरदस्ती युद्ध में नहीं झाँका जा सकेगा !
- 4 खुले राजनय की व्यवस्था में भी महत्वपूर्ण विषयों पर व्यक्तिगत रूप से विचार-विनर्श किया जा सकता है और समझौता हो जाने के बाद उसे जनता की जानकारी हेतु प्रकाशित किया जा सकता है।

শুদা খালন্য (Secret Diplomacy)

गुप्त राजनय के अन्तर्गत किए जाने दाले अन्तर्राष्ट्रीय समझौते तथा सन्धियौँ गुप्त रखी जाती हैं । चनको सामान्य जनता के सम्मुख प्रकाशित नहीं किया जाता । राजनय का

12. को एन भी राथ वही, पृथ्व 175 76.

मह रूप प्राय सा गारी देशों में अपनाया जाता है किन्तु यह वहीं तक सीमित नहीं है। प्रमा विश्वयुद्ध के समय मित्र राष्ट्रों ने इटली तथा अन्य शान्यों से गुप्त सिध्यों में अनेक करें किए लाफि उनके तटस्य श्वा जा सकें या अपने पदा में कार्यरत किया जा सकें। इन गुप्त सर्नेपार्धों के वारण पेरीस को शानित सामेतन सकत न हो सका। मित्रता एवं सहयोग के लिए वी जाने वाली अनेक समिद्धों में गुप्त प्रावधानों का रामावेश होता है। सई 1939 का इटली जर्मत्री का समझीता अगस 1939 की कल जर्मत्री की सिध गुप्त राजनाय के ही परिमास थे। सन् 1945 के याल्या समझीते में गुप्त प्रावधानों की जानकारी होने पर अन्तर्स्ट्रीय असन्तर्भव का सुन्यात हुआ।

गुप्त राजनय के पटा में प्राय निम्नलिधित तर्व दिए जाते हैं—

। एक सफल राजनय का गुप्त रहा। अधियर्थ है।

2 गुप्त रूप से किए गए समझैतों में सैदेबाजी अधिक खुलकर वी जा सकती है तथा राष्ट्रीय हित वी रता के लिए अधिक एपयोगी निर्णय लिए जा सकते हैं। खुले राजनय में जनता वी आलोधना के मय से राजनयड़ा निर्णय लेने में मी हिपकिचाहट दिखाते हैं।

3 यदि भुष्त राजनय का आधरण न किया जाए हो राजनयशों को प्रधार मे रुधि लेनी होंगी तथा वे अपने कर्तव्य मार्ग से हट जाएँगे। उनको जनना के बणिक दुराप्रहों से मी मगदित होना पढ़ेगा।

4 खुले राजनय की समस्याओं का निर्धारण गुप्त राजनय में ही है। युले राजनय के अत्यार्थत पत्रकारों सींकरों व प्रमुख अधिकारीओं द्वारा समय समय पर दी जाने वाली प्राप्ता एक रहते होंगे कार्य समय पर दी जाने वाली होती है। ये सूधन पर राष्ट्री के क्यूय मान्यों को कल्यू क्या देती है जैसा कि पेन्द्रापान पेपर्स (पत्रकार केत रण्डरसन द्वारा प्रकाशित पेन्द्रापान पेपर्स) के कारण मारत पेपरिका के अध्या अमेरिकी वाईस एडिपरेस्त के सरस्य के कारण जप्पात अमेरिका के सम्बन्ध बदु हो गए थे। गुप्त राजनय मे इस प्रकार का प्रपानी उत्तरा प्रवास के स्वयं के कारण प्राप्त अमेरिका के सम्बन्ध बदु हो गए थे। गुप्त राजनय मे इस प्रकार का प्रपान की उत्तरा प्रवास के स्वयं निर्धा की स्वयं निर्धा का प्रवास की प्रवास की प्रवास की स्वयं में स्वयं निर्धा की स्वयं निर्ध क

गुप्त राजनय बनाम खुला राजनय

(Secret Diplomacy 1/s Open Diplomacy)

'पुरू पाजनध बनाम धुता राजनध का विवाद आज भी बना हुआ है। पुण राजनध के समर्थकों का साद है जूदे राजनध में वार्तकार तमीले नहीं होते। एक बार एक आमार बिन्दु बनाकर वार्तकार पीछे नहीं रट पारे हैं उन्होंकी धनकी प्रतंक कार्यकारी विवाद नायकर वार्तकार पीछे नहीं रट पारे हैं उन्होंकी धनकी प्रतंक कार्यकारी विवाद नायकर वार्तकार के स्वाद के अलगान हरती हैं किन्तु इस मत के दिकदा एक प्रत्य कर उठता है कि क्या समी पूछ कार्यों हरती हैं उन्हों के स्वाद करने स्वाद के स्वाद

िरास में न दिया पर सिर्धी पर म परमा न दिया पर द्या दर्दय मन्यानी से यह अनुनव न दरन दिया पर हि द मी निराय हन में सहायह है। करन हमी मन्याने स्वाय है सहसे हैं। करन हमी मन्याने साम में देश मी करिया पर है। करन हमी के दिना में स्वयो देश है द्या पर के साम कर माने देश मी कि दिना में स्वयो देश है द्या पर के साम कर पर साम हो है। यह में स्वयो देश है द्या पर के साम कर पर साम हो पर पर का माने हमी हमी है। पर हो हमारी भी पर हो है। पर हो साम साम पर दिदेश मीन हो पर है पर हमारी भी पर हो है। पर हमारी पर हमें है है हमा दिरोग पर पर हमारी हमारी हमारी है। पर हमारी हमा

(Upan Curatum sectally series at) करत ये व हो। सुने रजनव एव गुरु राजना देनों के एक में निवारों ने हर्क दिए हैं, किन्तु देनों की ही बानी कीनों हैं। सुने राजना के कर्मन में दिए जने बने वर्क कार्काठ प्रदेव होते हुए में एकस्पीय होते हैं। एक जीए क्या कमा में हैंगरीतक ने कहा था कि "तम्म कनुन्द यह बहुदा है कि सुने में बहुई मीराम नहीं तहती।"

बार में बहुत से दिवाकों का दम मान मत है कि प्रज्यानमान एत्या हुन। हेया न दो कारावा है केर न है उसमें है। पान द्या परिमा के महानुतार ज़मदा हा गए। इसमें है कि मार्मा के परिमा में पर दोशों के लिए नेटकों को समाद दे हहता जुए में कि हुन के कि मार्मी है हो टेटियन के पूर्व पर किए जुने कि

दुकानदार जैसा राजनय बनाम यौद्धिक राजनय (Shop-keeper Diplomacy v's Warrior Diplomacy)

डेट डिटेन इन्छ बन्दर गर स्टब्स्य को दुबनदर रोल स्टब्स्य वह जात है। में तिकलान के नहपुर वर्ष के स्वत्य में दे सनी दिर्मिन्दर्ग गई करते हैं पो स्थान के लिए सम्मीन हैंगे हैंगे। क्षित्र स्वाप्त के लिए सम्मीन हैंगे। क्षित्र हैंगे। क्षित्र स्वाप्त के लिए सम्मीन के लिए हैंगा। स्वाप्त स्वाप्त हैं दूसों सम्मीन के स्वाप्त में स्वाप्त स्वाप्त हैं हमा के सम्मीन करते हैं। दुस्त स्वाप्त के प्रमान में में मोजन करते हैं। दुस्त स्वाप्त के स्वाप्त के हिन्द हैं हमा हमें सक्त स्वाप्त हैं कि उत्पाद के स्वाप्त हमें हम्मीन करते हैं। दुस्त स्वाप्त के स्वाप्त के हिन्द हैं हमा हमें सक्त स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त हैं है। दुस्त स्वाप्त के स्वाप्त हमें स्वाप्त हमें सक्त स्वाप्त स्वाप्त

¹ Fadilyadsor Dynam p 112

के स्तेज नहर के विवाद में ग्रेट ब्रिटेन को अपनी सेनाएँ पीछे हटा है। पढ़ी क्योंकि अप वह सर्वाधिक शक्तिशाली राज्य नहीं था। उसे संयुक्तराज्य की बात मानने के लिए बाप्य होना पड़ा। संयुक्तराज्य की आवाज का प्रमाव केवल इसलिए होता है क्योंकि वह शक्तिशाली है। सन् 1991 में समुक्तराज्य अमेरिका के नेतृत्व में 28 देशों की बहुराष्ट्रीय सेनाओं ने इसक को निर्णायक रूप से पराजित किया था। संयुक्तराज्य अमेरिका अपनी सर्वोच्य सैनाक को निर्णायक रूप से पराजित किया था। संयुक्तराज्य अमेरिका अपनी सर्वोच्य सैनिक शांधि से ही इस खाड़ी युद्ध में विजयी हुआ था।

राजनय का अन्य रूप यौदिक (Warnor) है। यह समझौत में विश्वास नहीं करता तथा युद्ध के शातावरण को अधिकाधिक चमेजित करने के लिए सदैव प्रत्मशील रहता है। कुछ विश्वायकों में ऐतिहासिक संप्यों के आधार पर यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि इस प्रकार के राजनय का समझौक राजय अन्त में स्वयं नष्ट हो जाता है। उसे कोई सन्तीयजनक सफलता प्राप्त नहीं हो पाती है।

दुकानदार फैसे तथा यौद्धिक राजनय के बीघ अनेक निजताएँ हैं एव परस्पर विरोधी विगेषताएँ हैं। प्राय यह देखा जाता है कि सिकासों देश यथारियति के समर्थक होते हैं और दुकानदार फैसे राजनय को अपनाते हैं किन्तु कम-शकि-सप्पन्न राज्य यथारियति व्यवस्था को चुनैती देते हैं तथा चसे बदलने का प्रयास करते हैं । ये विद्वक राजनय का समर्थन करते हैं। यह नियम पूरी कजोरता के साथ लायू नहीं होता स्थेकि अनेक शक्तिशाली राज्य यौद्धिक राजनय का आवश्य करते हैं तथा अनेक कमजोर राज्य दुकानदार जीता राज्य शक्तिक राजनय का आवश्य करते हैं तथा अनेक कमजोर राज्य दुकानदार जीता

राजनाय के हुन दोनों रूपों का आधार तत्कालीन परिस्थितियाँ राज्य का स्वरूप एव उसकी विधारपारा होती है। दोनों रूपों की सफलता किसी राज्य के अनार्राष्ट्रीय स्तर लया उसकी सरोह पर निर्मर होती है। राजनय के हुन दोनों रूपों में मुख्य अन्तर निम्मलिखित हैं—

(क) दुकानदार जैसा राजनय हुद्धिपूर्ण समझौते करता है जबकि यौद्धिक राजनय का समझौते में विश्वास नहीं होता क्योंकि इससे यथास्थिति को बदला नहीं जा सकता ।

(य) प्रमुखपूर्ण राज्य स्थारियत व्यवस्था से सन्तुष्ट रहने के कारण अन्तर्राष्ट्रीय सन्वन्दां में शांकि-प्रयोग को पसन्द नहीं करते। वे दुकानदार को तरह प्रत्येक दिवाद को बातपीत द्वारा सुरक्षाना चाहते हैं। इसके विपरीत ग्रीडिक पराज्य के समर्थकों के भतानुसार स्रोकि-प्रयोग के निमा एकने तरदों की पूर्वि नहीं हो सकती।

(ग) दुकानदार जैसे राजनय में अस्पष्टता पाई जाती है। उसके समझौतों का कोई स्पष्ट उदेश्य नहीं होता। यद्धप्रिय राज्य प्रत्येक बात को प्राय स्पष्ट रूप से कहते हैं।

(घ) दुकानदार जैसे राजनय के समर्थक राज्य यमास्थित विश्व य्यवस्था से सतुष्ट एक्टी है। वे स्पष्टत यह नहीं जान पाते कि उनकी आवयस्कारों करा है। दूसरी और सीदिक राजनय के सामर्थवों के कुछ निरियत त्वय होते हैं। वे वर्तमान य्यवस्था को बदल कर अपने अनुकूत बनाना माहते हैं तारिक अपने दिशों को ग्राप्त कर सकें।

(ह) चौद्रिक राजनय अपनाने वाले देश प्रायः गरीब शक्तिहीन एव असन्तुष्ट होते हैं। शक्ति के अमब में उनको राजनियक सफलताएँ कम प्राप्त है। पीष्ठी हैं। विश्व-समाज में उसका स्तर अधिक ऊँगा नहीं रहता। यही कारण है कि वे यथास्थिति को बदलने के लिए

I(X) राजनय के सिद्धान्त

युद्ध और संघर्ष का सहारा लेते हैं तथा अवैद्धिक समझेले हारा आगे बढते हैं। युकागदार कैसे राजनय के सन्धंक राज्ये का स्वमाद एवं कार्य इसके विपरीत होता है।

স্থাৰ দ্বাৰা বাজনত (Diplomacy by Propaganda)

अज्वल राजनय में इसार का पर्याना महत्व बढ़ गया है। चुजनियक निर्मयों को जानी अनुकूत बनने क लिए इत्येक देश प्रमार शकनीक का प्रयोग करता है। देढियों देजीरिजन भेता आदि सामगी द्वारा एक विशेष नीति के प्रसानें मंतान्वरण नता है। जीर्ज भी एतन की मानदात है कि प्रयार राजनय का एक सज्जा स्वियान (Conscious Wcapon) है। दिस्माई ने इस हियायार का प्रयोग बजी सक्तता के नाम किया था। बाद में यह व्यवस्था सामान्य बन गई त्या अनेक देश हर्ग अपनाने लगे। प्रमार और प्रयासन राजनाक के लिए दो रूपों में उपयोगी होता है। एक इसके द्वारा सम्ब्रतीय पर विधार कार्य योग्य गताल्यन तैयान किया जाता है और दूसरे, साझौदा गर्ता के समय चसे अपने हित की दृष्टि से मोको का प्रयास किया जाता है।

संयुक्त यः सहमिलन राजनय (Coalition Dipiomacy)

सहीतन का सामान्य कर्ष १—किसी चौराय के लिए दूसतों के साथ निलंकर एकदा कायन करा लेता ! भारत में सहाठ क्रयाब सहीतलन क्रयाब सादिद सरकारें दिनत वर्षों स एक्टों में ननती ज्यादी हैं और जुलाई, 1979 में देखाई सरकार के एनन के बाद चीयती बागार्सिक की जो सरकार दर्जी यह सामुक क्रयाब सहीतलन स्वकार (Coalution Government) का उदाहरण चा ! दर्रमान में भी चारत्यान, केरल, और परिधानी बागाल मं सर्वित मरकारों कर्षों कर ना है है । साझों में सहीतलन की प्रक्रिया नहीं में पुरानी हैं लिलना कि न्याब राष्ट्र ! किसों माना बाजु से एसा चरते क्रयाब युद्ध में दिवार प्राप्त करते क्रयाब प्रनान कार्यिक लाम उत्तरे की खोराबों से प्रतित होकर राष्ट्री में सहीतला की प्रक्रिया होती रही है! मेरामा गाँची का पुत्रस्तान करते के सिए पृत्यस्तर मंद्रियान में वितित्र चार्युश राष्ट्री से सहायक्षी यो भी ! राष्ट्री सानुस्ता के लिए पृत्यस्तर में प्रक्रित ने सहीत्रन के लस्यों को बह अकेला पूरा नहीं बर सकता हो शिक्ष समर्थन के लिए में दूसरों से सहायता होते हैं। इस प्रकार दूसरों के साब निरुक्त एक निश्चिय अध्या समान छोटय के लिए वे एवला कामण कर लेते हैं।" राजनीति हासत्र की भाग में इस तकनीक अध्या मिलन को 'स्पुक होना या सहित्यन (Coatinon) की सहा दी जाती है। 128ी मताबदी में और दिशेकर दिवीय मताबुद के सह राजनिक भितिष्ठीयों अकेले-अकेले चादू की न होकर सामृद्धिक जूटों में साजित सामृद्धे की हो मा है हैं। अन्तर्विध राजनीतिक जगत में एकाकी राजनिक किया का आप के सामृद्धिक सुर्वों में साजित सामृद्धे की हों में साजित सामृद्धे की लें में सामृद्धिक सुर्वों में सामृद्धिकर करम करना होता है। सामृद्धिक सुर्वों में सामृद्धिकर करम करना होता है। सामृद्धिक सामृद्धि

सामुहिक सुरक्षा की खोज (Quest for Collective Security) ने भी राष्ट्रों को इस बात के लिए प्रेरित किया है कि वे सहमिलन के राजनय को अधिकाविक प्रोत्साहन दें। प्रयम महायद्ध के बाद फ्रॉस ने जर्मनी के विरुद्ध अपनी भावी सरहा की खोज में सहभितन राजनियक प्रयत्नों को बहत तेज कर दिया था और संयक्त राष्ट्र संघ चार्टर ने सामहिक सरक्षा सम्बन्धी जो व्यदस्या है उसका प्रमावी क्रियान्दयन क्षमी सम्भव है जबकि सहभिलन का राजनय प्रभावशील होता हो । सुरक्षा के अतिरिक्त विश्व राजनीति का स्वरूप भी आज ऐसा हो गया है कि बिना मित्रों के सहयोग के एक राष्ट्र अपने को सबसे अलग-थलग पड़ा पाएगा । इससे भी सहभितन के राजनय को प्रोत्साहन निला है । सन 1971 में भारत और सोदियत संघ के बीच जो 20 वर्षीय मिनता और सहयोग की सन्धि हुई वह सहमिलन राजनय की एक विशेष उपलब्धि मानी जा सकती है। युद्ध के समय पश्चिमी यूरोपीय राष्ट्री ने जो क्षेत्रीय सगठन बनाए--उनमें सम्मिलित होना सहिमलन के राजनय का ही स्वरूप माना जाएगा । सधिमलन के राजनय रे बड्पडीय राजनय का और बहपडीय राजनय से सहमिलन के राजनय का दिकास हुआ है अर्थात् दोनों एक-दूसरे के पूरक अथवा सहयोगी है। आज इस बात से इन्कार करना कठिन है कि राजनय सगठनात्मक रूप लेता जा रहा है--एकाकी राजनय का महत्व घट रहा है और समी समस्याएँ अन्तर्राष्ट्रीय अथवा क्षेत्रीय चलझनें बन गई हैं जिनके समाधान के लिए सम्मेलनीय राजनय बहुपसीय राजनय सहमिलन राजनय शिखर राजनय आदि का विकसित होना स्वामाविक है। क्षेत्रीय सगठनाँ के अन्तर्गत सक्रिय राजनथ को राजनीतिक क्षेत्रों में प्राय सहिमल का राजनय (Ccoluon Diplomacy) कहा जाता है। राष्ट्रमण्डल (Commonwealth) में सक्रिय राजनय सहिमलन राजनय ही है। राष्ट्रमण्डल के सदस्य-राज्यों के अध्यक्षों ने स्वीकार किया है कि "आपसी परामर्श राष्ट्रमण्डल का जीवन रक्त हैं" (Consultation is the life-blood of the Commonwealth) । अरब सीम यूरोपीय आर्थिक सहयोग सगठन यूरोपीय ससद नाटो

102 राजनय के सिद्धान्त

सीटो यूरोपीय साझा बाजार और खाडी परिषद् आदि के अन्तर्गत जो राजनिक क्रियाएँ चलती रहती हैं वे सहनिलम राजनय की प्रतीक हैं।

सहमिलन राजनय का मूर्त्याँकन

सहिमलन राजनय की सकनीकी इस बात को सम्मव बनाती है कि दिश्व के देश आपसी समस्याओं का समाधान आपसी परामशं से करें । पारस्परिक दिवार दिमशं के मध्यम से क्षेत्र दिशेष के देश अथवा दिश्व के दिनित्र देश किन्हीं समस्याओं के सम्बन्ध में एक सामान्य दक्ष्टिकोण का विकास करते हैं जिससे व्यापक हित के लिए सामान्य चेटना जावत होती है और अन्तर्राष्ट्रीय विदेक को प्रोत्साहन मिलता है । सहमिलन राजनय के फलस्टरूप हम राष्ट्रवाद से ऊपर सठकर अधिराष्ट्रवाद (Sunta national) की और बढ़ें । सहिमतन के राजनय ने दिख में शक्ति सन्तुलन बनाए रखने में मदद की है। सहिमतन के राजनय के विकसित होने के फलस्दरूप दिकास-सचनों में दृद्धि हुई है और छोटे छोटे राष्ट्र अपने क्षेत्रीय आर्थिक संगठन बनाकर अपने त्वरित आर्थिक विकास को प्रयत्नशील हैं। पश्चिमी यरोप का बहुत ही अत्यकाल में जो यद्योत्तर पनर्निर्माण हो सका उसके मल में सहिमलन राजनय ही सत्तरदायी रहा है । सहिमलन राजनय के माध्यम से न केंद्रल क्षेत्रीय समस्याओं के समधान में बल्कि दिख समस्याओं के समधान में सामान्य दिएकोग पनपने लगा है। नि:शस्त्रीकरण कैसे किया जाए इसकी सीमा क्या हो। इसके स्तर क्या हों-इन बातों पर मतनेद हो सकते हैं लेकिन सहमिलन राजनय ने यह स्पष्ट कर दिया है कि इस बात पर सभी देश सहमत हैं कि नि.शस्त्रीकरण आदश्यक है। जो मतनेद हैं उन्हें भी सहनितन के राजनय द्वारा कम किया जा रहा है। सयक राष्ट्रसथ सहनितन के राजनय का सदाहरण प्रस्तत करता है और हम इस बात से इन्कार नहीं कर सकते कि इस दिश्व संस्था के मध्यम से राजनदिक क्रियाओं का संस्थाकरण (Institutionalisation) हो गया । सहनितन के राजनय के माध्यन से हन अन्तर्राष्ट्रीय बन्दक तथा एकीकरण की दश में आगे बढ़े। यदेव ने इसके लिए जननानस तेजी से तैयार हो गया है जिसका एक प्रमान युरोपीय समद की स्थापना है। युरोप एकीकरण की दिशा में बढ चुका है। सहिमलेन के राजनय में कतिपय दोव ही हैं। ये दोव सभी प्रकार के हैं जैसे ससटीय राजनय के हैं। गटरन्दियों के कारण दिख शान्ति की समस्या उलझती जा रही है। क्षेत्रीय सहनितन के राजनय ने शीत यद को सहारा दिया है और क्षेत्रीय स्टार्यकों को आगे बढ़ाया है। दिश्व के दिनित्र रूप परस्पर सहसिलन के राजनय में सलग्न रहते हैं। इस प्रकार अलग-अलग गुटों में अलग अलग सहनिलन के राजनय ने एक दूसरे के प्रति तन व और अदिश्दास को बढावा दिया है। सहनिलन के राजनय का उपयोग उसी सादधानी से करना चाहिए जिस सारवानी से संसदीय राजस्य का अवदा राजस्य के किसी अन्य स्टब्स कर ।

पुराना राजनय (The Old Diplomacy)

सामान्य अर्थ में राज्यय उतना ही पुराग है जितना राज्य का दिवास है, किन्तु राज्यों के कीव स्थापित प्रक्रिया एवं स्वीकृत तरीकों से शानिरपूर्ण सम्बन्धों का निर्दाह अधिक पुराना नहीं है। यूरोप में यह 15दीं शताब्दी के अन्त में विकतित राज्य व्यवस्था की देन है। इस प्रकार राजनय का इतिहास 500 वर्षों का इतिहास है। प्रारम्म में इसका विकास मूरोप महाग्रीम की परिप्रे में गीमित रहा किन्तु 1914 के बाद इसके क्षेत्र और प्रकार में नवीनता का सूत्रमात हुआ। पुराने राजनय कात (1500 1914) में अन्तर्राष्ट्रीय राजनय मुख्य कप से अपने पित्र बनाने और दूसरों के मित्र तोढ़ने का कार्य करता था। इतने पर मी यूरोपीय राज्य परस्पर मित्रता और प्रनिचापूर्ण व्यवहार करते थे। तरकातीन राजतनीत एक कुसीनतनी व्यवस्थाएँ परिचर्मी पूरोप की एकता की मानना से प्रमादित थी। श्री के एम पनिकार के कथनानुसार 'पुराना राजनय मित्रतापूर्ण मानवित तथा विनम्न करता थी। यह परिस्पिक सिर्कण्ता के अध्यार पर सथातित किया जाता था।

पुराने राजनय की प्रक्रिया सम्य राज्यों के सम्बन्धों के सदातन के तिए श्रेन्छ थी। यह संहदस्तापूर्ण एवं सम्मानजनक तथा निरन्त एव क्रमिक थी। इसमें आन और अनुभव को मरत्व दिया जाता था तथा सद्दिरदास सदिग्नता एवं स्पष्टता को सदिय वार्ता का आवश्यक ग्रुण माना जाता था। पुराने राजनय की जो बुराइयों बताई जाती है वे वास्तव में गानत दिरेश नीति की बुराइयों हैं। पुराने राजनय में सदिय वार्ता की प्रणाती दोषपूर्ण नहीं थी। प्री निकल्सन की मान्दता है कि यह अग्रुनिक प्रणाती की अपेक्षा अधिक कार्यकुशत थी।

पुराने राजनय की विशेषताएँ

(Characteristics of the Old Diplomacy)

- प्रो. हैरल्ड निकल्सन ने पुराने राजनय की पाध विशेषताओं का उल्लेख किया है। ये क्रमश निम्नलिखित हैं—
- 1 यूरोप की प्रभुता पुराने राजनय काल में यूरोप को सभी महाद्वीपों से अधिक महत्वपूर्ण माना गया। इस काल में एशिया तथा अधीका को सम्राज्यबाद व्यापार एवं वर्ष प्रधात के तिए उपयुक्त केत्र माना जाता था। अमेरिका 1897 तक अपने महाद्वीप में सीमित रहा और पृथकतावादी अध्या अत्याखतादी नीतियों अपनाता रहा। इस काल में कोई मी युद्ध छस समय तक बढा युद्ध नहीं माना जाता था जब तक कि 5 यूरोपीय महाशक्तियों में से कोई एक माम नहीं में यूद्धीय राजयों हाता ही अन्तर्राष्ट्रीय शासित और युद्ध साम्यवी प्रस्ता का कि 5 व्यूरोपीय महाशक्तियों में से कोई एक माम नहीं में यूरोपीय राजयों हाता ही अन्तर्राष्ट्रीय शासित और युद्ध साम्यवी प्रस्ता का स्वाप्त की स्वाप्
- 2 महाराकियों और छोटी शकियों में भेद पुराने राजनय के अनुसार यह माना जाता था कि महाराकियों के दिन और दायिल प्यापक होते हैं। उनके पास अधिक आर्थिक और सीमिक शिक्त होती हैं इसीलए वे छोटे राज्यों को अपेवा अधिक नरवापूर्त हैं। छोटे राज्यों को अपेवा आधिक नरवापूर्त हैं। छोटे राज्यों के अपेवा आधिक नरवापूर्त हैं। छोटे राज्यों को साथ सुराने और कच्छे मान के सीती के आधार पर निशियत किया जाता था। छोटे राज्यों का अत्यर क्याप्त माँ ११। पुराने राजनय काल में छोटी शकियों के हित मत एव समर्थन महाशक्तियों के निर्णयं के। कटाधिए ही बदल पार्ट में थे।
- 3 महाशक्तियों का दायित्व इस काल मे महाशक्तियों का यह उत्तरदायित्व था कि छोटी शाक्तियों के आधरण का मिरीक्षण कर और उनमें शानि न्यापित करें।' ओटी राजियों

Hence old d plomacy was a friendly, human and politic art, carried on with much fineness and a great deal of mutual joleration.
 K M. Panikkar.

Harold Vicolson The Evolution of Diplomat c Method p 73 76

10→ राजनय के सिद्धान्त

के दीव समर्प होने पर महाशिव्यों हरान्येप करती थीं । इस समय को महाशिव्यों का सम्बद्ध दनने से रोकने का परा प्रयास किया जाता था ।

4 स्वादमायिक राजनियक सेवा पुरने राजनय की एक अन्य विश्वता यह थी कि प्रत्येक सूर्योग्ध देश में बहुत कुछ एक दोनी स्वादमायिक राजनियक सेना स्वापित की गई थी। ये राजनय अधिकारी दिदेशी राज्यानियों में अपने देश का प्रतिनिधित करते थे। दन्ती प्रिया अनुप्त राया ज्यादमें में पर्याच समानना रहती थी। इसना एक दिश यार्ष बन जाता था। उनकी सरकार का लग्य बाहे कुछ मी हो विज्ञा वे राजनय का उदेश्य शानित दी एम मानने थे। साथि वर्षाओं में ये स्वादमायिक राजनयम पर्याच लगावारी सिद्ध हुए इनके स्वादमायिक आपरा। का एक जीता मानदान होना था राया थे यससम्बव भागित साथ को लगावार स्वादमी

पुरने राज्यस के दरिवों के अनुसार सीध दार्ग करने वाले राज्यसम को समय की करी नहीं रहते से ! इस बान ने दोनों यहां की सहकार सिधा पर जाना मा साफ कर देगे सी ! यदे सीध दार्ग से बांई गिरोपों देश हो जाना सा तो दाना को कुछ माना के लिए रोज दिसा जाता सा ! जाना से जो समझेला होजा सा वह जानामां का परिण्या ने हेकर समाप्त सोच दिसार एवं गामीर जिसा जिसी का परिण्या हुना था ! उदाहरा के लिए 1907 का जाना करने अभिमान्य एक दर्व तीन यह के जिसार दिसा का परिण्या सा !

पुराने राजनय के दोर (Defects of Old Diplomacs)

पुराने राजना में गमीरता दुद्धिमा गोमर्जयन परिन्कार अदि गुण के साथ कुछ दोव मी थे। इस व्यवस्था ने अनेक दुरद्वारों को प्रोत्सरिक किया। इसकी प्रमुख कार्यका यह की जारी है कि इसने गुप्त सर्वियर्धों को प्रोत्सरिक किया। निर्मिष्ट कर विश्वसर्विक कन्त्रों के प्रमास में गोमर्जयता की प्रवृत्ति जिलतित हो गई। एक्स प्रस्पीवर्ग केसा कार्याण्य व्यक्ति भी ऐसी गुप्त मनिवर्धी में उत्तक जाते थे जिनका व सत्तवन नहीं कर करने। हैस्टर् निकल्सन के कथनानुसार "गुन्ध वायदों को प्रोत्साहित करने वाली विश्वसनीय मन्धि वार्तार्ए आज खुले राजनय से भी दुरी होती थी।" ¹

पुराने राजनय से नदीन में राक्रमण (Transaction from Old to the New)

1 तालाशाही राजनय जब पूरोप हम्या एशिया के देशो में निरुकुश राजतन्त्र था ता सारा राज्य एव उसके निवासी सम्माट कींजी सम्पति माने जाते थे। शासन के अन्य मामतों की मौरी विदेश मौरी एव राजनय पर मी जाती की इच्छा संपोद्ध रहती थी। छोते के भुई पेंदहवे कस की सम्बाधी वैचयीन तथा गासत के मुगल सम्बाद अपने देश के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बयों का स्वय समावन करते थे। इन देशों में आने वाले दिदेशी राजदूरा, के लिए यह अनिवादों था कि वे राजां के विश्वसम्बाग कुष्ण भाजन एव स्टेशमाजन हो।

an or negot ation nat gradually adjusted used to dranges of positical conditions

— Harold Vicolson

 [&]quot;Confidential negotiations that lead to secret plodges are viorse even than the televised diplomacy that we enjoy to-day
 " and negot attom has gradually adjusted uself to changes in political conditions.

इसके लिए दे अथक प्रयास करते थे। इसके अंतिरिक्त दे अपने राष्ट्रीय हिंदों की साधना . के लिए कई प्रकार के उदित और अनुदित कार्य मी करते थे. पैसे—रापकीय कामारानी को चुरा लेना राजा के जियलने या चच्च रूपिकारियों को रिश्वत देना अपने दिराधी अधिकरियों को हटदा देना या प्रतिकत राजा को हटाने या हत्या करने के घटपात्र में सहायक बनना तथा अपने अनुकुल व्यक्ति को राजसिहासन पर बैटाना अदि। इस प्रकार के राजनय को दुदा राजनय (Boudoir Diplomary) कहा जाता है।

फ्रॅसीसी माना के राज्य बढ़ा। का अध सम्मान्त महिला का निर्मी कम होता है। इस प्रकार बुदा राजनय का आशय उस राजनय से है जिसकी समी बार्ले सामाझी के निजी रुस में बली जरी थीं। सभी सन्धि बलाई एवं निर्मय यहीं किए याने थे। किन्तु मर्ण राजदर्ती का यहाँ तक पहुँदना सरल नहीं था। भारत के मुगल सम्राप्त से अपना समर्थ तिद्ध करने के लिए अंग्रे ने सन्देशदाहक अनुनय दिनय से वाम लेते थे। साथ ही दे मौका देखकर छल क्यट दिखासघात झूठ तथा बढयाजें का मी खुलकर महारा लेन थे।

2. सैदिधानिक राजनव सन् 1815 ई के बाद निरक्श समादों का प्रमादी दीन होना प्रसम्म हो गया। उनके अधिकार समद एवं कार्यकारिंग को सीच दिए गए यो सन्दिजन क अनुसार इसका ज्यानेग करती थी। ये सम्याएँ राज्य द्वारा तिए गए निपयों को भी अर्थन धें कि कर सकरी थीं। सन् 1905 में उन्हें के दिल्यन द्वितीय तथा रूस के उन्हें ने किन्हैं हु में एक गुरू मैठी भिन्न कर ही। एवं वे अपनी राज्यानियों को दायम क्षण हो उनके दिदेश मन्त्रियों न इस सन्धि के अस्टीकार कर दिया। घराद्व, दोनों राजाजों को नीया देखना पढ़ा। इस प्रकार 19⁴⁶ शहाब्दी के प्रारम्भ में ही यह माना जाने लगा था कि दिसी एक व्यक्ति के दिवार एवं मादनाओं हारा उसके देश की दिदश मीति का निवास अन्दित है।

यह सब है कि 1914 रक दिख के राज्यों की दिदेश मीदि एवं राजनव पर समक रपाओं का प्रमाद रहा। इंग्लैंगड़ के एडर्ग्ड सरम तथा महारानी रिक्ट्रीरिया ने अपने देश की दिदेश नीति तथा राजनय पर अपनी छाप लगा रखी थी। इसो प्रकार हेनरी सातम मी दिदेश मीति और राजनय पर अपना नियन्त्रण रखना था। इन सदाहरणों के हाते हुए मी राजनय की मूल प्रवृत्ति से परिवर्णन शुरू हो गया था। इस घर अब कायकारियाँ और समद का प्रमाद बदला जा रहा था।

पराना राजनय उस समय की राजनिक परिस्थितियों, विदारों और आदमों से प्रमानित रहता था। उद इन राजनीतिक गद्धतियों में परिन्तन होने थे तो कुछ समय बाद राजनय का रूप मी बदल राजा था। कारा यह है कि कोई मी राजनय रूब रक ही प्रमादराती रहता है जब तक उसे देश की सम्बन्ध राजि का दिशास और सहारा प्राप्त होता है। 197 क्षेर 20दे शर्रीदियों में एवं राज्य ब्यान्या रागि से बदल रही दी हो राजनद में में परिदान अने लो है

I The the earlier years of numetourth correspond was stall considered granting that the whites emotions or effections of and values should determine the pourty of their our mines."

^{2.} Thus when dinning the course of the 12th century the old theones of diplomary agreement to be adopting new shares in were in fact not the diplomitiests who were undergoing a change of heart but the polinical systems which they represented." — Hurold hierdisce

नवीन राजनय (The New Diplom icy)

प्रथम विश्वयुद्ध वो नवीन राजाय ये श्रीगनेश ना युग मात्रा जा सकता है। इस नए युग में पुरा रोजानय की समस्त विशेषताएँ गीम बा गई। पुरा रोजानय की सम्मदेत का मुख्य कारण यह है कि पूर्व और परियम के बीम अन्तर बहुत बढ़ गए है। उनवे राज गितिक मान्यताएँ आर्थिक विशास और जीवा का रहन बहुत बढ़ गए है। उनके है।

नए राजनय के दो भाग

(Two Categories of New Diplomacy)

अधुनित राजनय को विचारनों ने बाल की दृष्टि से दो मागों मे विमाजित किया है। प्रथम माग में 19वीं शताब्दी सक वा राजाय और द्विसीय माग मे 1914 के बाद के राजनय का नमावेश किया गया है।

19वीं शताब्दी तक का राजनय 19वीं शताब्दी में ओक राजनीतिक परिवर्तन हुए और इनके साथ ही राजनय के बरस्त राया क्षेत्र में भी परिवर्तन होते रहे । इस काल में राजाय वा मुटार केंद्र मुंगर ही रहा । इस समय विश्व के अधिकाँस देश प्रजात ज्ञ वी और अप्रसर हो रहे थे इसलिए राजाय में भी नई दिशाएँ खोजी जाती। इस काल के राजनय वो जिल तत्वों ने प्रणपित किया वे मुख्यत निम्मलियित थे

- 2 जनमत का प्रभाव जनमत की मादना के विकास के साथ साथ जनमत ने देशों की विदेश गीतियों को प्रमाणित करना प्रारम्भ किया। राजनाय पर जनमत का प्रमाण पढ़ने तथा। निकल्सन के कथानानुसार नगर तथा पुरती राजनाय के सक्तमन कत के भीय जनमत एक महत्वपूर्ण तत्व रहा है। 'राजनाय पर जनमत के प्रभाव को कैनिंग तथा पामसीटन ने स्वीकार किया। पामसीटन को कहना था कि जनमत नेनाओं से भी अधिक शांति शांती होता है। यह सांगोनों और गेलियों से भी अधिक शांति प्रसाण कर सकता है। जनमत का प्रमाव बढ़ने का कारण यह स्वयन्ध के कारण यह स्वयन्ध के कारण यह स्वयन्ध के सांगानों और गेलियों से पी अधिक शांति शांति प्रसाण करें स्वयन के सारण यह स्वयन्ध है कि सांगान स्वयन्ध ने स्वयन स्व

[&]quot;Public up n in became an ever increasing fact r in the transit in between the cld diplomacy and the new — Harold N collon

शमेरिकी राष्ट्रा ते दुढ़रो दिल्सन ने रंग सन्दियों दो थी उनको अमेरिकी कांग्रस ने सन्दरन नहीं थी कारण यह था कि सन्धि करते समय राष्ट्रपति ने शत माननाओं का सनुवित प्रयान नरीं रखा। एत यह हुआ कि राष्ट्रसाध के जन्मदाता दिन्सन का देश राष्ट्रसाथ का सदस्य ही नहीं बना।

3 यात्रावात के सपनों में सुधार असनिव युग में यात्रायत के द्वतगमी सपनों के दिवास ने राजनय को पर्यात कप सं प्रमापित किया है। इतर निकल्पन के कमन्तुसर साप दे इंजिन बेतार के तर वायुग्गन तथा दूरनाव में प्रमाप राजनय के प्रयाद कर बहुग्गन तथा दूरनाव में प्रमाप राजनय के प्रमाप ने हैंने के कागा राजनयां को अपनी दृद्धि के अनुसार ही निर्मय लेने हैं है थे और प्रात्येक राम्य के तिए वही जतरदायी होते थे । वर्तमान परिचारीयों में वे आवश्यकता के समय अपनी सारकार सं मीप सम्प्रक स्थापन वर मनते हैं। आजकत दूर्व की योग्यता और दुग्तरा न पुराने समय जैसा महत्व नहीं है। इसके जवजूद मी राजपूत के अनुगढ़ रहमाव विदेशना सरावार न जिंदी की उपयोगित है।

बीतार्सी हाताब्दी का राजनय अब अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध यूरोप तक ही सीमित नहीं रहे हैं द्वितीय विश्वयुद्ध के चाब एशिया ल्या अफ्रीका के नवीचित र ज्यों की मूमिक अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में पर्याचा महत्वपूर्ण बन गई है। अनेरिका और जापान ने अब अपनी पूथकतवादी नीति त्याग कर विश्व राजनीति में सीक्षेय की तेना प्रारम्म कर दिया है। राजनय के पुराने न्या में इस परिदर्तन के चींब कारण है—

1 स्युक्तराज्य अमेरिका का दिख को महाराक्ति के रूप में अन्युद्ध हुआ त्या तेटिन अभेरिको एज्यों ने मी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीयि में रुचि तेना प्रारम्म कर दिया है कतत अब अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध तथा राजन्य का केन्द्र यूगेप से हटकर अन्य महाद्वीपों में दिखर गया है।

2 एशिया तथा अर्ज्ञका के देशों को स्थानजात प्रत्य हुई तथा वे मी अपने अण्यो क्यार्यभूति रामव का एक अनिता मा माने लेगे। प्रस्म दिण्यदुद्ध से पूर्व एणान के जिरीक्ष किती एरियाई देश का अन्तर्राष्ट्रीय शानति की मान मही था। दिवर रामय पर न रो उनकी कोई स्थाति थी और न ही उनकी आदाज को नोई स्थल क्या एणा था। प्रधम दिख्यदुद्ध के बद स्थिति में परिवर्तन आया राम राष्ट्रद्भी थीन अञ्चानित्तम इटन और इंट्रक और दिश्याई देश राष्ट्रस्था के सदस्य बन गए। इतिय दिख्यदुद्ध के बद एरिया के अतेक देशों को रुद्धनाय प्राप्त हो गई। ये समुन्त राष्ट्रस्थ के सदस्य बन गए राष्ट्र क्या के सदस्य बन गए राष्ट्र का प्रतिकृत प्रस्ति में इनकी आवाज का महत्य बट गया। प्रभिद्ध इंटिइसकार अपन व्यवस्थी के स्थान के सदस्य बन गए राष्ट्र व्यवस्थी के का क्या है कि 1919 से रुद्धने वेदल 16 छोटे रच्य गमनित्तम् वेदल राज्य ते में समा तेने से । इनकी से 15 यूरीपीय देश से। सम् 1919 के कर यह सच्या बटकर 47 हो गई। इनसे से केदल 22 ही यूरीपीय देश से। सम् 1919 के कर यह सच्या बटकर 47 हो गई। इनसे से केदल 22 ही यूरीपीय देश से। स्वर्त्य प्रभाव सम्बन्धों के इस नए बटकरमा में एशिया के देश यूरीपीय अथवा अनीदी राजनिकट देंद पेथों के अवाई मान नहीं रह

3 नदीन राष्ट्रतय के उदय का रीसरा कारण पुराने शक्ति सन्तुलन का नष्ट होना था। शक्ति सन्तुलन में परिदर्दन आने के कारण राज्यों के परस्परिक सम्बन्धों में परिदर्नन हुआ। ट्रिटलंग तथा उसके सहयोगियों की पराजब के बाद संसार सण्ट रूप से दो सैद्वानिक गुटों में विगाजित हो गया। पूर्वी एशिया में साध्यवादी थीन का उदय हुआ। इन गए परिवर्तनी से मुक्त विश्व के राजनय का स्वरूप बदलना भी श्वामाविक था।

- 4 सीदियत रच में ट्री वाली महार क्रिन्त के बाद लेगिन तथा जाके स्विधियों ने रूसी राज्यमिलेटानारों के गुरा अनिलेखों को प्रकाशित किया । इस प्रवार नोपनीय सिन्ध वाली का प्रकाशन करके एक नए राज्य का सुव्यनत किया गया . ओक देशों ने जारगारी रूस के साथ जो सन्धियाँ वी थीं वे जाकी जनता के सापने प्रकट में मूर्ग प्रता गुरा साथियों के प्रति विभिन्न देशों की सरकार एवं जनता थेकड़ी परने लगी।
- र द्विगीय विश्वयुद्ध के बाद प्रारम्म दों। काले घोतायुद्ध ने ससार को स्वय्टत दो हिंगीरत मैं दिमालित कर दिया। इसमें से प्रारोक सिरिट दो प्रकार के राजनय का प्रयोग करता प्रा—एक शिदिर के साथ राज्यों के साथ राज्य इस दिश्विर के साथ विशोग वाज्य इस परिवर्षित सन्दर्भ में पुराना राजनय सम्मातीत बन गया। बन् 1991 में मे रोवियताना के अवसान के साथ ही संयुक्तराज्य अमेरिका ही विश्व की एकमान महाशक्ति रह गई है और शीलपुद्ध की समापित हो गई। इससे मी राजनय के रवरूप में परिवर्तन आगा अपरिहार्य है।

नवीन राजनय की विशेषताएँ

(Characteristics of New Dinfomacy)

- श्री के एम पिकर ने नए राजनय की पाँच मुख्य विशेषताओं का उल्लेख किया है—
- (1) नदीन राजनय के अन्तर्गत एक देश अपनी बात को समझाने के लिए अन्य देश के शासकों से ही नहीं दरन दहाँ की जनता से भी अणिल करता है।
- (2) विरोधी राज्य की सरकार को बदनाम करने के लिए छराने लड़में को तोड़ मरोड़ कर रहा। जाता है। तथा दोवारोपण किया जाता है।
- (3) अपने गज्य की जाता का बिरोगी शान्य की जनला से सम्पर्क तोड़ दिया जाता है। केवल अधिकारी स्तर पर ही शाजनिक सान्यव कायन रखे जाते हैं। साम्यवन्धी चीन सथा तानासाही पाकिस्तान हात भारत के प्रसान में हुसी प्रकार की मीती अपनाई है। (विशेषी राज्यों के साथ प्रत्यन सम्पर्कों को कम मे कम कर दिया जाता है तथा किनी मी संस्कृति के साथ आक्रमणकारी मान्ना में अधिक से अधिक सते लगाई जाती हैं।
- (5) प्रत्येक राज्य अपने विरोधी पटा को आतिकत करने की दृष्टि से अस्त-शस्त्रों पर बहुत सा धन खर्च करता है तथा हड्तालों, सम्पेल में और आन्दोलनों का आयोजन करता है।
- है। स्पष्ट है कि आधुनिक राजाय का स्वरूप अपने पूर्ववर्ता राजनय से पर्यादा मित्र है। आजकत अन्तर्राष्ट्रीय राषन्यों में एक नई पद्धति का विकास हो रहा है।

पुराने और नए राजनय में अन्तर

(Difference Between Old and New Diplomacy)

पुराने और नए राजनय के बीच लहर एवं प्रक्रिया की दृष्टि से कुछ अग्रलिखित अन्तर

(1) सस्य की दृष्टि से पुराने राजनय (1500 से 1914 तक) का मुख्य बरेरय नित्र दनना और दूसरे के निजें को तोहना था ! नए राजनय ना लय इसके साम साम राज्य की प्रारंगिक, राजनीतिक तथा आर्थिक अध्यन्दा भी सुख्य करना है। अपूरिक राज्य में यह माना जाता है कि राज्य की सुख्य के लिए देवत विदेशी सेनाओं से उदारा नहीं रहता कर आर्थिक और राजनीतिक मोर्ची पर नीज दर हो सहसा है। अगर एक राज्य सदैद दूसरे राज्य की राजुदिरोंची परिदिचों पर नजर रखता है तथा जनते निक्रत नने का प्रवास करता है। आजकर राजनय का मुख्य व्यक्तित देश के व्यक्तितिक होने की राज करना है। व्यवसाधिक राजनय का के अन्तर्राह्मि जीवत कर सा मिन्न का मिन्न का मान्य का पारंगितिक होने के साथ साथ अर्थिक मी है। (2) सद्व्यवहार की दृष्टि से-पुराने राजनय में पत्र व्यवहार तथा दूसरे दिवार दिन्तों में साथ तथा हिएन सा मान्य का प्रवास कर प्रवास का प्रवस्त का प्रवास का प

अनेपचरिक नेतरोत को सर्दया अनाव पाचा जाता है।

(3) क्षेत्र की दृष्टि से: पुराने राजनय का क्षेत्र सीनित था। यह देवत यूरेनीय राज्यें,
सपुक्ताज्य अनेरिका व जामान दक ही चैनित था। जाज इसका दिस्तार दिख दे छोटे
से छोटे राज्य सक है। दिश्व-पाजनीत में तिए जाने दाले निर्नय महाराष्टियों की इच्छा से
नहरू छोटे एक्यों की इच्छानुसार तिए जाते हैं। इस प्रकार नए राजनय का क्षेत्र
अन्यना व्याप्त हो गया है।

बड़ी दर्शता के साथ की ज़री थी और छेसने पारस्परिक सहिष्णुरा बरही ज़री थी।" इसके दिगति तथा राजनम् अपने दिरोप की कह रूप में प्रतिक करार है तथा सन्य-सन्य पर अशिष्ट भाषा का प्रयोग भी करता है। जाज शिष्टाचार की भाषा का युग नहीं रहा। दिरोधी के सच्च नम्रतापूर्ण व्यदहार को सामान्य जनता दिश्तास्पत समझती है। अज

(4) वरीके की दृष्टि से : पुग्ते राजनव का व्यवहार करिवादी और पुगते वरीके से सव्यक्तित होटा था । अद यह सिद्धान्त और वरीके पुगते और देकार हो चुके हैं । अज के राजनवड़ों के सम्पर्कों की नई पद्धतियों का दिकास हो गया है ।

(5) गोपनीसदा की दृष्टि से : पुराने राजनय के अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय सन्धियों और सन्दर्भते पुर हुआ करते थे । प्रशासकों द्वारा पुरा रूप से धूरे देश को दुख शताँ से कैंच दिया एना था। सोदेश्यत साथ में साम्पदाद का उदय होने के बाद पुरा निर्देशों का युग सन्ताल हो गया और इसके स्थान पर खुती सन्धियों होने तागी। सचुक्तराज्य अमेरिका के राष्ट्रपतियों ने खुते डग से किए गए खुते करायें का सम्पन् किया तथा दिश्द के राज्यों ने इसे मान्यता यें।

(6) बन समर्क की दृष्टि से : पुराने राजनय में मुख्य कार्यकर्ता राज्यें की सरकारें होती मी किन्तु नए राजनय में जनता प्रत्य कम से माग लेती है। जन-सम्पर्क के लिए रेडियो, समामार पन्न, मॉल्ड्रीकि-समाजन और का सहारा सिया जाता है। आजका प्रेम तथा सुबना ड्रिन्म राज्यूत के कार्यात्य का एक बारस्यक कम बन गया है। कुछ राजयूतें में सीस्ट्रिक सकदाी मी रखे जाते हैं। (7) व्यक्ति पत्तरवादित्व की दृष्टि से पुरारे राजाय में राजदृतों का व्यक्तिगत पत्तरदावित्व अधिक होता था। उस समय तक वातायत और सथार के तत्तानों का विकास मही हो साम्य भा जता में अपनी सरकार से प्रभारतों मान किए दिना ही व्यक्तिगत सृद्धमूद्ध तथा योग्यता के आधार पर कार्य बस्ते थे। आजबत्त व्यतायात एव स्थास के हुतगामी साधनों ने यह सम्ब बस्त दिया है कि राजदू दिन्ती भी समय अपनी सरकार का निर्देशन एव पद प्रदर्शन प्राप्त बस्त स्वर्थ है। इसस्तिये आज वे राजनयन्न अपने कार्यों के लिए पूर्ववत्र व्यक्तिगत उत्तरदावित्व बस्त नहीं करते

सॉस्कृतिक राजनय (Cultural Diplomacy)

अति प्राचीन काल से ही विषय वे सभी देश सीरवृतिक शाजनय का रहाशा लेते रहे हैं । सीरकृतिक शाजनय एक उच्च कोटि की कला है । सभी देशों की विदेश मीति में सीरकृतिक सब्दों का मरत्यपूर्ण स्थान होता है । मरतीय सीरकृतिक मरियद् जो विदेश मन्त्रालय के प्रशासनिक नियन्त्रज ने अचीन काम करती है अय देशों के साथ भारत के सीरकृतिक सम्बन्ध विविद्याल करने के लिये एक प्रमुख एजेमी के रूप में कार्य करती है।

अणु युग की राजनीतिक व सैकि जिल्लाओं के काल में सौस्कृतिक राजनय अपतांचीं में सम्बन्ध में नहीं असमा को जम्म देता है। जो असपतांचीं में सबसी यह सहसीम को निक्क स्वार्त में बहुन के स्वार्त में अस्त में की स्वार्त में अस्त में स्वार्त में अस्त महत्त मूर्ण है। भारत जैसे राष्ट्र सौत्कृतिक राजना के से अस्त महत्त में अस्त प्रति में अस्त महत्त कुछ रिक्ष स्वार्त में अस्त का उर्चेस अस्त मारिक के स्वार्त अस्त मिल के प्रति का स्वार्त में अस्त में अस्त मारिक के स्वार्त में अस्त अस्त के उर्चेस अस्त सोत्त के स्वार्त अस्त सोत्त में अस्त अस्त में अस्त मारिक में अस्त मारिक मारिक में अस्त में अस्त में अस्त मारिक में अस्त में अस्त मारिक में अस्त में अस्त मारिक में अस्त में अस्त भी अस्त भी अस्त भी अस्त मारिक में अस्त में अस्त में अस्त में अस्त में अस्त मारिक में अस्त मारिक में अस्त मारिक में अस्त मे

रिद्रियो भारको रेद्रियो प्रीकिंग भी भी शी धाँयस ऑफ अमेरिया वॉयस ऑफ जर्मनी तथा आत इण्डिया रेद्रियो आदि के माध्यम में राज्य अपने अपने देश की सत्कृति का दूब खुलकर प्रचार करते हैं। बार्रिक फिल्म सामारोह सागीत व मृत्य भण्डितयों का मेजा जाना सांकृतिक राजन्य मक ही एक मार्ट है। सावास्त्र मंद्रिक स्वायस्त्र में सिद्रामा में अपने देश की एक विशेष प्रतिमा स्थारित करने में सहायक होते हैं। ये नवीन दूत का कार्य

[ा] और एम भी शास यही प 210

करते हैं। श्रांस व अमेरिका के मध्य बढते हुए कटु सम्बर्धों को कम करने के लिए ही दीमाल ने सींस्कृतिक राजनय का सहारा दिखा था। 1963 में राष्ट्रपृत्ति केनेडी व उनके परिवर को इच्छा पर 'मेनातिसा' के थित्र को अमेरिका मेजा गया था। इससे प्रेरित होकर जैसा नेम्यू में न्यूयार्क टाइम्स में नदीन राजनय के सामनी पर एक लेख में लिखा था कि ''लिया कला छाज नदीन राजनय का एक रास्त्र बन गया है।' 'इस प्रकार सींस्कृतिक राजनय जाज सनी देगों की विदेश नीति का अनिक यह है।' विस्तारी मी सींस्कृतिक राजनय जाज सनी देगों की की दरेश नीति का अनिक यह है।

युद्धपोत राजनय (Gunboat Diplomact)

यक्ष्पोत राजनय के कुछ चदाहरण

- (1) क्रन 1875 में जब फ्राँस ने करनी सैनिक शक्त को पुनर्गतित करने का प्रयस्त किया जो जर्ननी के दिस्तार्क ने करने प्रधान सेनायित बेन मोटके के परानर्श पर निवाक पुद्ध (Preventive War) का बातादरेग बनाकर फ्रांस को युद्ध न करने देने में सकला प्राप्त की।
- (2) सन् 1911 के आगादीर सकद के समय युद्धरोठ चलनव का सजलतापूर्वक प्रयो किया गया । उपनी नविष्ठ चाहता चा कि छोत मोहाती में अपना प्रमाद करा 1 करा जने क्याट दिलेयन केसर ने अपने नौडीनिक चहाल पेन्सर को आगादीर में तगर हालने का आदेत दिया महिक फीम पर सैनिक दसर हालकर और्तनी काची आफ कर दिया गये। यदादि केसर को अपने करिया में पूरी सफलता नहीं मितती, तिकिन इस युद्धरीत चालप्र के कारता है। कोसे केमल्य क्या करायों को प्रोजने बदल गरिनाया अवस्था मित गया।
- (3) सन् 1971 के भारत-पाक पुद्ध के दौरान अमेरिका ने अपना साददाँ नौतीनक बेहा त्या उसका एकनान परमानु शक्ति चातित दिनन बाहक इन्टप्टाइज बगत की खाडी में इसतिये नेज ताकि भारत को अमेरिकी सैन्य शक्ति से प्यमीत कर दिया जरा।

अमेरिका के इस कार्य के पीधे राष्ट्रपति निक्चन का उरेरय मारत में मनीवैज्ञानिक मय पैदा कर, अपनी डाजि का दर दिसाकर पाकिस्तान के साथ मुद्ध को बन्द करवाना था। क्योंकि उसका नित्र मुद्ध में हार रहा था। विद्यास पत्रकार जेक एन्वरसन (Jack Anderson) हारा प्रकासित दस्तादेजों के अप्राप्तन ये पता पत्रका है के समुक्त पाज अमेरिका एक मेर तो मारतीय नी सैनिक पतिचिधों की नाकेबन्दी करना चाहता था तथा दूसरी और मारत व रूस ने यह बता देना चाहता था कि आवस्यकता पढ़ने पर अमेरिका अपनी सैनिक सिक्त भी ज्यापी कर सकता है। बाधिगटन दिस्त मारतीय राज्यत तस्तिकान को के कहे विरोध मारत में देसाव्याची अमेरिकी विरोधी प्रदर्शनों और रूसी नाविक बेढे की बगात की वाही में उपस्थिति के परिणामन्वरूप अमेरिका को अपने नाविक बेढे की हटाना पड़ा। यह अमेरिका के मुद्धपेत राजन्य की सर्गान्य पत्यान्य थी।

(4) सन् 1991 ई टे खाडी युद्ध में भी अमेरिकी नौ सैनिक बेडे की अहम् मूमिका

ये उदाहरण स्पष्ट करते हैं कि अनेक राज्य युद्ध का उरेख न होते हुए भी दवाव के लिए शक्ति प्रदर्शन का उपयोग करते हैं और इस प्रकार युद्धपोत राजनय का आश्रय तेते हैं। प्रजीसवी सतान्यी के अन्त तक युद्धपीत राजनय काओ बदनाम हो युका था और प्रथम महायुद्ध के अन्त तक खुनाप्रय हो गया था पर द्वितीय महायुद्ध के बाद के पुग मे इसका प्रयोग पुन बढ़ गया है।

राजनय मे नई तकनीके और नए विकास

(New Techniques and Recent Developments in Diplomacy)

राजनय पर एक गुग की राजनीतिक सामस्याओं मान्यताओं एव अन्य परिस्थितियों का प्रमाव पड़ता है और तद्नुसार राजनय के सिद्धान्त और व्यवहार में अन्तर आ जाता है। अज राजनय पर जनमत का नियन्त्रण है। यह वित्त एव अर्ध्यवस्था से प्रमावित होता है तथा दिज्ञान के नए अविकारों ने इसकी तकनीकों में परिवर्तन किए हैं। राजनियक आधार की दिप्टि से महत्वपूर्ण विकास एव तकनीकों निम्मतिथित है-

(1) उत्तरांष्ट्रीय सगठन राजनय का व्यवहार पहले व्यक्तिगत स्तर पर होता था किन्तु आज सामृहिक रूप से एक अन्तरांष्ट्रीय यह पर मी सम्मद है क्योंकि 1920 के बाद रसापित राष्ट्रसाय स्वकुक राष्ट्रसाय एव राष्ट्रमण्डल जैसी अन्तरांष्ट्रीय सरस्याओं ने विशव के विभिन्न उपयोग को एक जगड़ बैठकर विषार विनार्ग करने का अवसर दिया है।

(2) प्रमातान्त्रिक नियन्त्रण प्रजातान्त्रिक देशों में यह माँग की जाती है कि विदेश नीति एवं सारीय बातों पर जनता के प्रतिनिधियों का विस्तानण रहना चाहिए। राजनयङ्ग विदेश मन्त्री तथा राजनय के अन्य अभिकतां जन प्रतिनिधियों के प्रति उत्तरदायी बनाए जाएँ तथा उन्ती के विस्तान्त्रण में रह कर कार्य करें।

(1) वाणिज्य का महत्व अगुनिक राजनव में वाणिज्य को केन्द्रीय स्थान प्राप्त है वैसे व्यापारिक दितों का राजनव पर कुछ प्रमाव तो प्राप्त में ही रहा है। सामज्यादी हेगों ने व्यापारिक हितों की सिद्धि के लिए ही अपने जपनियेश बसाये थे। 19यी सतावी के कपु राज्य वाणिज्य सहस्वी (Commercial Ausche) नियुक्त करने लगे तथा राजनिक

114 राजनय के सिद्धान्त

सम्पर्जे में व्यापारिक हितों का भी ध्यान रखा जाने लगा । आजकस वाणिज्य दूतीय सेवा (Censular Service) अधिक सगठित एव विधिवत् रूप से सचातित है । विनिन्न राज्यें द्वारा अन्य राज्यों की राजधानियों तथा प्रमुख व्यापारिक केनों में अपने वाणिज्य दूत नियुक्त किए जाते हैं। इनका कार्य अपने द्रेश तथा देशवासियों के व्यापारिक हितों की रक्षा तथा अनिवृद्धि करना होता है। पद के अनुसार इन वाणिज्य दूतों को चार श्रीणयों में विमाजित किया जा सकता है—

- (i) महावाणिज्य दूत (Consul General)
- (n) वाणिज्य दूत (Consul)

को ही इन पदों पर नियुक्त किया जाता है।

- (III) उपवाणिज्य दूत (Vice Consul)
- (iv) বাणिज्य अनिकर्त्ता (Consular Agents)

(4) मुद्रा और वित्त का महत्व - अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार विस्तृत हो जाने के कारण मुद्रा और वित्त की समस्या प्रमुख बन गई है। इसके सम्बन्ध में विभिन्न देशों ने अपने राजदूतावारों में वित्त सहपारियों (Financial Attache) की नियक्ति की है। वित्तीय मामलों के विशेषश्रों

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति का दर्पण होते हैं। इसिलए राजदूत को अपने स्वागतकर्ता देश के सभी प्रमुख समाधार-पत्रों का अध्ययन और विवेचन करना घाडिए। प्रकाशन के कार्य में राहायता के लिए राजदूतावास के साथ एक सूचना विमाग की स्थापना और पत्र-सहबारी की नियुक्ति की जाती है। पत्र-सहबारी में रख आशा की जाती है कि वह स्थानीय पित्रकाओं में प्रकाशित लेखों को पढ़े मनन करे और अजुवाद करें। (6) प्रधार के अन्य साधनों का महत्व : नए राजनय में प्रधार का महत्व बहुत बढ़

(5) समाचार-पत्रों का महत्व आयुनिक युग के नारद, समाचार-पत्र एक देश की

(6) प्रवार के अन्य साधनों का महत्व : नए राजनय में प्रचार का महत्व बहुत बढ़ गया है । प्रमार द्वारा एक देश अपने किसी प्रश्न पर पहले से ही अनुकृत अन्तर्राष्ट्रीय बात कर सेता है । विभिन्न राज्यों ने संयुक्त राष्ट्रसम्भ को अपने प्रचार का माध्यम बनाया है । आजकल महासमा और सुरता परिषद् की देकते में दिए गए माचलों का सदेश्य सान्ति की स्थापना न होकर अपना प्रचार तथा विरोधी पक्ष की आलोधना करना होता है ।

त्या न होकर अपना प्रचार तथा विराधा पक्ष का आलामना करना रेडियो और टेलीविजन द्वारा प्रमावशाली प्रचार किया जाता है !

अधुनिक राजन्य में प्रवार का एक नया सरीका यह अपनाया जाता है कि सरकार स्वय ही अपने कार्यों की आलोधना और टीका टिप्पणियों समाबार-एत्रों में प्रकाशित कराती है ताकि उस सम्बन्ध में जनता के रुख का अध्ययन कर सके। इस तरीके को राजनिक

(7) अटकतबाजियाँ : नए राजनय में अटकतबाजियों का भी महत्व है। साधारगत. अटकतबाजी सामाधार-पन्नों के माध्यम से की आती है. पन्ना इसका छोरय दुस्ते के मत को प्रमादित करना न होकर परखना होता है। यदि जनमत खस बात को स्वीकार करें तो दिदेश मन्त्री या राजद्व सारी जिम्मेदारी से बचते हए यह धीचणा कर देते हैं कि उन्हें

इस विषय में कुछ पता नहीं है। यदि लोग इन अकालों की सराहना करें तो दिदेश मन्त्री अगो इटकर उस दिशा में कदम उठा सकता है।

राजनय पर प्रभाव ढालने वाले कुछ नए विकास (New Developments Responsible for Changing Role of Diplomacy)

wise developments responsible for Changing Role of Diplomacy) आज राजनंव द्वारा विश्व राजनीति में उस कार्य का सम्पादन नहीं किया जा रहा है

क्षण भारतमा द्वारा । वश्य राजनीति म एवं काथ का सम्पाद न गृहा क्या जा रहा है जो दिख युद्धी के पूर्व हैता था । नीक्षणे (Mosgenbus) के मतानुसार "दितिय विश्ययुद्ध के बाद राजनाय अपना महत्व को पुका है । इतके कार्य अब कितने कम रह गए हैं उनने राज्य व्यवस्था के इतिहास में कभी नहीं रहे थे।" राजनाय का महत्व घटाने के लिए जन्दीने पीच कारणों यो उत्तरसारी वहत्या है। वे निम्म फ्रांतर हैं—

- । समार सामनों का विकास (Development of Communications)
- 2 राजाय का अवमूल्या (Depreciation of Diplomacy)
- 3 सरादात्मक प्रक्रिया द्वारा राजाय (Diplomacy by Parliamentary Procedure)
- 4 सर्वोध्य शक्तियाँ राजाय मे नवागातुक (The Super Powers Newcomers in Diplomacy)
- 5 वर्तमान दिश्व राजनीति का स्वरूप (Nature of Contemporary World Politics)

उपर्युक्त कारणों से राजनाय का व्यवहार कठिन और दुक्त बन गया है। एक और तो विनिन्न कारणों के फ़तरबक्तर राजन के गुग में दुक्तह बन गया है और इस्ती और उसकी आवरवकता जिजा आज के अगुभूग में दुक्तह बन गया है और इसती आदरवकता जिजा आज के अगुभूग में है उसती शायर ही किसी गुग में रही होगी। विश्व में शांति के लिए सदैव सामर्थ होता रहता है इस सामर्थ को सीतित एवं सन्मुलित बनाकर राजनाव हिंदर में शांति स्थापना का एक प्रमुख लागन बनता है। राजनाव के अगाय का अपे होगा पुरत सामन्य होंगा है। राजनाव के अगाय का अपे होगा पुरत सामा मानव-सन्म्यता और सस्कृति का चिताश। इस खरोर को टालने के लिए उन सत्यों की खोज करना आवश्यक है जो बतीनाव विश्व की परिधारियों में भी राजनय को ग्रन्स का साम बाता की राजनाव को गुन सामित करने के सित्त पहले सामी वार्यों को मित्रण होगा को प्रमुख सामित हमा की किए पहले विश्व होगा होगा जो है पुराने राजनाय के ग्रास के कारण माने जाते हैं। हेरोल्ड निकोल्सन (Harold Nicolson) के मता हुसार सीन ऐसे विकास है जिन्होंने राजनाय के विश्वाना एवं व्यवहार को प्रमाशित

- ा राष्ट्रीय समुदाय के प्रति बढ़ती हुई घेतना (Growing Sense of the Community of Nations)
- लोकमत का बदता हुआ महत्व (Increasing appreciation of the Importance of Public Opinion)
- ३ साधार साधनों का हुत विकास (Rapid Increase in Communications) मॉर्नेक्सो के मतानुसार आज की परिस्थितियों में एक देश को राजनय के सफल कार्यान्यदान के लिए मी नियमों का पालन करना चाहिए । इनमें घार मीतिक नियम निम्म प्रकार है—
 - राजन्य को आन्दोलनकारी विधारधारा से पृथक रखा जाए । इस नियम का उत्संघन करने पर युद्ध का खतरा बढ़ जाता है !

16 राजनय के विद्धान

- विदेश-नीति को राष्ट्रीय हित के शब्दों में परिमाषित किया जाना चाहिए तथा राष्ट्रीय शांक द्वारा उसे समाप्त किया जाना चाहिए !
 राजनय के लिए आवश्यक है कि राजनीतिक घटना-चक्र को दसरे देशों के
- दृष्टिकोण से देखा जाए।
- 4 एक राष्ट्र को उन सभी विषयों पर समझौता करने को तैयार रहना चाहिए जो ससके लिए अधिक महत्व के नहीं हैं।

समझौतों के सफल होने के लिए पाँच अन्य नियमों का पालन करना चाहिए जो इस

प्रकार हैं---

 समझौता करते समय कानून की तरफ ध्यान न देकर जनता के हितों का ही ध्यान रखना चाहिए।

- 2 ऐसी स्थिति में कमी मत रहो जहाँ पीछे हटने क्रे लिए तुन्हें अपमानित होना पड़े तथा आगे बढ़ने के लिए गम्मीर सकट का सामना करना पड़े ।
- 3 कमजोर मित्र राष्ट्र को अपने तिए निर्मायक बनने का अवसर न दो।
- 4 सरास्त्र सेना विदेश-नीति का साधन होती है, उसका स्वामी नहीं । एक विदेश-नीति जो सैनिकों द्वारा सैनिक कला के नियमों के अनुसार समासित होती है हमेशा युद्ध का ही कारण बनती है क्योंकि जैसा बीज बोया जाता है वैसे ही छल भी चरवने को निजते हैं।
 - पत्त हा उपन भा पथन का निलंद है।

 सरकार जननत का नेतृत्व करती है न कि गुलामी का। लोकमत के पीछे भागने
 वाले पाजनय में सफल नहीं है।
 भारते क्योंकि लोकमत दिदेकपूर्ण की अपेशा
 भारतनात्वक अधिक होता है।

राजनय का दंगल : असंलग्नता का राजनय. सहायता का राजनय, अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का

राजनय, राष्ट्रमण्डलीय राजनय

(The Arena of Diplomacy of Non-alignment, Diplomacy of Aid, Diplomacy at the International Organisations, Commonwealth Diplomacy)

राजनय का रूप देश की स्थिति दृष्टिकोण लक्ष्य एवं विश्व राजनीति में सक्रियता के अनुसार निर्धारित होता है। असलग्नता की नीति अपनाने वाले राज्य का राजनय विश्व की सभी महाशक्तियों के साथ मैत्रीपण सम्बन्ध बनाए रखने का प्रयास करता है जबकि सैनिक गठबन्धन में बैंघा हुआ राज्य केंद्रल अपने पक्ष के राज्यों के साथ ही निकट सहयोग स्थापित कर पाता है । महाशक्तियाँ द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति मे शक्ति सन्तलन बनाए रखने के लिए अधवा विरोधी के प्रसार पर रोक लगाने के लिए जरूरतमद राज्य को सहायता देने की नीति अपनायी जाती है। आज वे अन्तर्राष्टीय सगठन संयक्त राष्ट्रसंघ में समी राज्य जिस प्रकार राजनयिक आधरण करते हैं वह व्यक्तिगत राजनय से कुछ मिन्न है। राष्ट्रमण्डलीय देशों के राजनियक सम्बन्धों में व्यापारिक हितों की रक्षा एक भुख्य लक्ष्य होता है। इन सभी को हम राजनय के विशिष्ट रूप कह सकते हैं तथा इस अध्याय मे क्रमश इनका विवेचन किया जाएगा । ये हैं---

- (1) असलग्नता का राजनय
- (2) सहायता का राजनय
- (3) अन्तर्राष्ट्रीय सगठन का राजनय
 - (4) राष्ट्रीयमण्डलीय राजनय

असलग्नता का राजनय (Diplomacy of Non alignment)

असलग्नता की नीति द्वितीय दिश्वयुद्ध के बाद का विकास है । परिवर्भी गुट तथा साम्यवादी गृट के बीच शीतयुद्ध छिड़ने की स्थिति में कुछ राज्यों ने किसी भी गुट से सलग्न न रहने का निर्णय लिया तथा भारत के नेतृत्व में गुट निरपेसता की नीति अपनायी । किसी राज्य के साथ सैनिक गठबन्यन में न बंधकर असलग्न राज्य दोनों ही गुटों से अपना सहयोग बनाए रखना चाहते हैं तथा अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर दिना किसी पूर्वाग्रह के श्रीवित्य एव राष्ट्रीय-हित की दृष्टि से विचार प्रकट करते हैं।¹

असलनता एक सिक्रिय तटस्थता है। यह उस निक्षिय तटस्था से निज है जिसे अपनाने वाला राज्य अन्तर्राष्ट्रीय समर्थ के समय किसी भी एक के साय नहीं निस्ता तथा अपनी ही सीमाओं में सिमट कर रह जाता है वह चाहना है कि न तो स्वय अग को हुआर और न आग ही उसे प्रमादित करे। इसके दिपरीत असलग्न राज्य है हैं जो पहले से ही किसी एक के साय नहीं बैंधते (Uncommuted) बरन् अन्तर्राष्ट्रीय समस्या उत्पन्न होने पर न्याय का पड़ तेने की स्टतन्त्रता को सुरक्षित उपते हैं। सक्रिय तटस्थता या असलग्नता की नीति का अनुसरण मारत एशिया और अफ्रीका के अनेक राज्यों हात किया जा रहा है। प्रारम्भ में इस नीति को सायवादी और पूँजीवादी दोनों ही गुद्धी ने गतत बताया था। स्टालिन का कहना था कि ''जो हमारा नित्र नहीं है यह दुश्तन है।'' ऐसा ही मत सकुत्य उप का था। अमेरिकी दिदेश मन्त्री जैंन फास्टर बदेस ने यह नत प्रकट किया कि तटस्थता अनैतक है। बाद के अनुनन से दोनों पुटों को सही दिस्ति का झान हो गया। यहाँ हम

असंतन्न राजनव का औदित्व

(Justification of Non-aligned Diplomacy)

मारत ने असलग्न राजन्य का अनुशीलन निम्नलिखित कारणों से किया है-

- भारत दिख-शान्ति की स्थापना के लिए प्रयत्नशील है। यदि वह किसी गुट में शामिल होता है तो अकारण ही दिख में द्वनाव की स्थिति को बढ़ादा मिलेगा।
- 2. गुट निरपेश रहकर ही भारत युद्ध को टालने में अपने प्रमाव का प्रयोग कर सकता है। किसी गट में शामिल होने के बाद उसका यह प्रमाव समाज हो जाएगा।
- असलग्न राजनय अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में विवारों की स्वतन्त्रता का चोतक है।
 प नेहरू के शब्दों में "किसी भी गुट में शानिल हो जाना अपनी राय को बलिदान करने के समान है।"
- 4 भारतीय राजनय पर यहाँ की चौन्योतिक, ऐतिहासिक, परम्परागन एव सस्कार विचयक परिस्थितियों का प्रभाव है। अपनी सस्कृति एव अतीत की परम्परामें के कारण यह दूसरे के दृष्टिकोग को समझना, निम्मंत्र विचार और साहस, कारसरमान, निर्मावना एवं सिह्माता आहि गुगों से प्रेरित है। असलन राजनय इसी का प्रतिकल है।
- 5 असलम् चाजनय भारत के राष्ट्रीय हितों के अनुकूल है। मारत को अपने आर्थिक दिकास की योजनार्यों को सफल बनाने के लिए विदेशी सहयोग की आरायकता है। यह सहयोग असलम्बा की नीति अपनाने पर पर्याच और सारतता से निल सकता है। इसके लिए किसी एक देश या गुट पर अवलियत रहने वी आरायकता नहीं है जिसके कारन आरा-सामान को मी प्रका समता है।

 - 2. Thomas A Bailey The Art of Diplomacy

6 भौगोलिक स्थिति के कारण भी भारत इस नीति वो अपन्नाने के लिए प्रेरित हुए है। यह यदि पश्चिमी गुट के साथ सन्धियों करना पाहे तो कस तथा पीन की भौगोलि निकटना के कारण ऐसा नहीं कर सकता और साव्यवादी देशों के साथ उसकी सैनिव समियों इसलिए नहीं हो सकती थी क्योंकि वार्या मौंस्कृतिक परायराओं ने अनुसा वह सितास्त्रक एव इमनकारी नीतियों का दिल्ली शुन है।

असलम्न राजनय की छपयोगिता (Utility of Non aligned Diplomacy)

हाते कही जा सकती है...

ऊपर वर्णित असलान राजनय का औदित्य उसवी उपयोगिता का भी परिचायक है इस राजनय का अनुशीलन कर एक राज्य ा केवल अपने राष्ट्रीय दित की सिद्धि करत है वसन विश्व शान्ति में भी योगदा। करता है। इसकी उपयोगिता के सान्त्य में निन्निर्सिक्ष

। असालान राजनय ने दोनों विरोधी विन्तु शक्तिशाली गुटों को निकट लाने महत्त्वपूर्ण योगादान किया है। प्रारम्भ में समुक्तराज्य अमेरिका यह गाराता था कि जो साम्यवा का विरोध करने में उसका साथ लाने देता वह उसका शत्रु है। किन्तु शीध ही उसे य आत हो गया कि अमिक नित्र करनों पर अधिक काटिलाएँ उपरिक्षत हो जाती है। उसे विवादस्त क्षेत्र या राज्य को यदि राज्य बना दिया जाए सो अन्तर्राद्धीय तत्त्वव पर्याव पर्याव पर जाता है। ऐसे क्षेत्र कहाँ विश्वी के नित्र मारी होते वहाँ विश्वी के शत्रु भी नहीं होते सीवायद को समाध्य करने में असरतान्त्रमा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

2 मुटनिरपेशता की 'तिति एक व्यावहारिक' विकल्प है। इसे त्यागने का अर्थ है किसे सैनिक गठबन्धन में शामित होगा। राष्ट्रीय दित की दृष्टि से परिता यही है कि किसी गुर के साथ न 'वेंचा जाए और तटस्थ रहकर अवसर के अनुकूल आवरण किया जगर। 3 असरान राजनय के दोहरे लाग है। एक और तो मुद्धायुन राज्यों द्वारा सदस्य

3 अरातरान राजनय के दोहरे लाम है। एक और तो मुद्रमञ्चत राज्यों द्वारा तटरर राज्यों के अधिकारों का सम्मान किया जाता है और दूसरी और तटरस राज्यों का या दायिवत हो जाता है कि वह मुद्रमृत्त राज्यों के प्रति तटरस नीति अपनाए।
4 अरातरान राजाय प्राय कमजीर राज्यों के लिए श्रेष्ट माना जाता है। इन राज्ये

की शक्ति एव साधन खोत इतने नहीं होते कि किसी पदा के साध साधर्ष में उत्तक्ष सके स्पेन स्वीडन सधा विद्युजरलेण्ड दोनो महायुक्तों के सामय तदश्य रहे। इनकी दूरदर्शिता कुसल राजनीति भौगोलिक रिश्वति तथा सीमान्य के कारण महायुक्तों की लपटे इनको नर्ह धू सक्ती। इनको दोगों पत्तीं का सार्योग तथा सहायता प्राप्त होती रही तथा नित्र यने बिन की इनको मिन्न राज्यों के साम प्राप्त हो गए।

असलन्त राजनय की समस्याएँ

(Problems of Non aligned Diplomacy)

असलग्न राजनय की कुछ समस्याएँ मी हैं जिनका निराकरण करना अंति आवश्यत है। कमी कमी तो इनके कारण एक राज्य असलग्न राजनय को छोड़ने का निर्णय से में लेता है। समस्याएँ अप्रलिखित हैं—

- ! असलग्न राज्नय दोनों पतों की नित्रता प्राप्त करने के प्रयास में दोनों की ही नित्रता से वरीत हो जाता है। दोनों पत असलग्न राज्य को दिरोपी का प्रथम सहयोगी मानने लगते हैं। यही लारा है कि वे आवश्यकरा के समय उसकी सहायता करने में मकोन करते हैं।
- असलग राजनय को प्रायः अनैतिक मना जाता है वर्षों के ऐसे राज्य की कोई निश्चित विधारधारा नहीं होती। उसके निश्चित मित्र और शत्रु नहीं होते। वह अवसरवादी बन जाता है तथा अतीत के सम्बन्धों को मुला देता है।
- 3 दुइकाल में यदि ऐसा राज्य तटस्य बना रहे तो इसमें आततयी को सहायता निलेगी, उसका पक्ष दूब होगा। जब असलान राज्य दोनों पहाँ में ही एक जैमा साबन्य रखना धाहते हैं तो वे प्राय्य एक पक्ष की कीमत पर दूसरे पहाँ को अनजाने में सहायता पहिंचते हैं।
- 4 असलम्न राजनय की एक अन्य समस्या यह है कि विवारों में तटस्यता रखना असम्बद है। आज के प्रजारान्त्रिक राज्यों को दिख की गढ़िष्वियों से उदासीन नहीं रखा जा सकता। सन् 1939 में हिटलर का आक्रमा प्रारम्म होने पर अमेरिकी राष्ट्रपति क्रॅंक लिन की स्कावेल्ट में कहा था कि "यह राष्ट्र तटस्य में तथ्यों को ध्यान में रखता है। तटस्य को अपना मसिकक्ष और येतना इन्द्र करने के लिए कहा जा सकता है। 1
- 5 असलान राज्य आवस्यवरा के समय युद्ध के लिए रीयर नहीं हो पाता ! वहाँ की जनता के मानस में यह बात पक्षे रूप में जन जारी है कि उन्हें शान्त की मीति अपनानी है युद्ध में नहीं पढ़ना है हाथा किसी भी सीच सगठन के साथ जिलना राष्ट्रीय हितों के प्रतिकृत है। ऐसी स्थिति में समस्या तब उत्पन्न होती है जब ऐसा राज्य स्थय सशस्त्र आक्रमान में कैस लगर।
- 6 सन् 1991 में सोवियत सप के विघटन के बाद शीतमुद समाप्त हो गया, और सपुक्त राज्य अमेरिका ही विश्व की एकमात्र महाशक्ति रह गई है। अक्त असलान राजनय की प्राथिकिता के आंगे भी प्रान राषक दिन लगा गया है।

सहायता का राजनय (Dinkmacy of Aid)

काजी लम्बे समय से राज्य आर्थिक सपनी को, राजनी के एक आ के कम में अपने चरेरामें की प्रत्येत के लिए उपयोग कर रहे हैं। राजनी के अर्थिक सपनी का उपयोग कर रहे हैं। राजनी के अर्थिक सपनी का उपयोग को से क्षेत्र में इत नहीं है। फ्रींस त्या कस के ज्या सीय को सम्मा करने के लिए फ्रींस सरकार ने करा कर कर के लिए से सरकार ने किए के स्वा प्रत्येत अर्थिक सरकार ने लिए एक सिंग में सार्थीक करणा में थी, जिसका उपयोग एक्टा रेडों पर फ्रींसेनी प्रमान बढ़ाना था। किसी मी राष्ट्र के चरेरामें में राष्ट्रीय आर्थिक विकास को अर्थिक पिक महत्व दिया जाता है जर किसी मी देश की दिशेस नेति सत्राक्त आर्थिक विकास को अर्थिक पिक प्रत्येत हैं। यूकीन स्वेक ने अपनी सुस्तक आर्थिक दिवास का राजनाय (The Diplomacy of Economic Development) में बहाना है कि आर्थिक राजनाय दिन पर दिन महत्वपूर्ण

1 The Public Papers and Addresses of Franklin D. Roosevelt, 1939 p. 463

बनता जा रहा है। यह निर्विवाद है कि किसी भी देश के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध उसकी अपनी आवरमकाओं से प्रमावित रहते हैं। इस प्रकार बहे स्तर पर पान्यों को सहायता अन्तर्राष्ट्रीय पाज तिति का एक अभिन्न अग बना हुआ है। यही कारण है कि आज आर्थिक तथा व्यापारिक राजनय पर अधिकाधिक जोर दिया जाता है।

जब एक राज्य अपने नित्र बनाने के लिए अथवा शत्रुओं के प्रसार को तेकने के लिए दूसरे राज्यों को यन, अन्न मशीन शरू आदि को सहायता देशा है तो हो से सहायता के राज्यन अथवा आदि जी है। हो सहायता के राज्यन अथवा आदि हो जहां है जहें के हरित्र स्वयं प्रयोग में जी विनाश हुआ उपने हैं हिल प्रयोग में जी विनाश हुआ उपने के हिल अराज्य हुआ था और कुछ ही वर्षों में यह शीरायुढ का अग बन गया। भहायता के राज्यन आर्थन हुआ था और कुछ ही वर्षों में यह शीरायुढ का अग बन गया। भहायता के राज्यन आर्थन हुआ था और कुछ ही वर्षों में यह तरी तरीह के उपने के निव्य है विश्व एक में और इतने सहाया उपने हिला हुआ है कि उसके विकट डालन साम्राज्याद ('Dollar Impenalism') और 'दौलर राज्यम्य ('Dollar Diplomacy') शब्द का प्रारंभ राष्ट्रपति है किंद के कारता है। 'दौलर शाजराव ('Dollar Diplomacy') शब्द का प्रारंभ राष्ट्रपति है किंद के कारता (1909-1913) में हुआ था।

सरकारी लोकोपकारी कायों का प्रारम्भ प्राय अपने ही देश में होता है परन्तु बाह्य देशों में देगोरकार, राजनाय का एक रहरूर है। दितीय महायुढ़ के बाद हुआ यह कि सूरीय का आर्थिक पूनर्तिमांग विकास और एकोकरण करने के लिए परिवामी शाकियाँ हारा जो प्रस्ताव किए गए उन्हें विभिन्न कारणों से सीवियत रुस्त तथा उसके साथी राष्ट्रों का अस्तिकार कर दिया गया। अस्तरकार ऐसा कोई सामान्य कार्यक्रम निर्मारित नहीं किया जा सका। जिसके हारा गूरोण के सभी राष्ट्रों का आर्थिक विकास हो सके। अत दोनों हैं। पात्र असने-अपने गुढ़ के देशों के आर्थिक पुनर्तिमांग के लिए अलग अलग प्रेजनार्थ कानो लेगे। परिचानस्वरूप यूरोणीय महाद्वीप विमाजित हो गया लया होगीय आयार पर हतिपूर्ति के प्रसात किए गए। संयुक्त पाज्य अमेरिका वाम्यावाद के विकड़ परे संगनाजों को आलगता के लिए बड़ा उपयोगी समझता था। अल 1951 के पारस्परिक सुरक्षा कानृत (The Mutual Security Act) में यूरोण का आर्थिक और राजनीतिक संघ बगाने के लिए अमेरिका हारा

सार्यप्रमा 1947 में मार्गाल योजना (Marshall Plan) के सामने आई। इस योजना को सौर मुद्देन प्रस्त पूरोप का पुनरुद्धार कर उसकी साम्ययाद से बचाना था। परिवधी होने में मार्गाल योजना का उसलाइयुक बचागा किया। दिने और मिर्क की पहल पर पूलाई 1947 में पेरिस में 16 गूरोपीय देशों उसलेब्द प्रगीय आइंदिया। बेल्वियम केमार्क प्रीस आयरलेफ्ट इटली नार्वे सक्तमबर्ग परीवन दिल्वप्लेक्ट पूर्णाम जीवरलेक्ट और उसलेक्ट में सिमितियों का एक चाम्येनन हुआ। इसमें एक यूरोपीय आर्थिक सहस्योग समिति (Commutec of European Economic Cooperation) की स्थापना की गई और यूरोपीय पुनरुद्धार का याद पर्योग सहस्योगास्यक कार्यक्रम रीयार किया गया। यूरोपीय अर्थिक सहस्योग सोसि में समुफ प्रप्य अमेरिका को एक रिपोर्ट ऑरित को। इस प्रसाव के प्रदेश्य (Mouve) की याख्या करते हुए दूर्वन में कहा—'भेरा प्रस्ताव यह है कि अमेरिका चन 16 राज्यों को, जो चरी की तरह स्वटन्त्र सम्बाओं की सुरक्षा एवं राष्ट्रों के बीब स्थापी शन्ति के लिए दढ सकल्प हैं। उनके पनिर्नान कार्यों में सहायता देकर दिख-शन्ति एव अपनी सरहा में योगदान करे।" महात योजना को जो अधिकृत रूप से प्रोपीय रिलीक प्रोग्रन (European Relief Programme) के नम से प्रसिद्ध हुई, बाँग्रेस ने स्वीवृद्ध कर दिया । 3 क्ट्रेल 1948 को काँद्रेस ने विदेशी सहायता अधिनयन परित कर मार्सल योजना को नर्त कर प्रदान किया और इसको कामान्तित करन के लिए परोपीय वार्थिक सहदोग सग्जन' (Organisation for European Economic Co-operation) की स्यापना की गई। मर्शत योजना सम्सानिक कटनी दिक इटिहास की सर्विक दितवस और दग-प्रदर्शक घटनाओं में से एक थी. जिससे सेवियद सस और परिचन का दिरीय पहले की अपेक्ष और भी अधिक तम्र हो गया । इस योजना के अन्तर्गत बार वर्षे (1947-1952) में उमेरिका ने युरोप को लगनग 11 निलयन डॉलर की सहायदा दी। इस योजना के कारन एक ओर तो परिदर्न यूरोन कार्यिक पतन और सन्पदादी कांपात्य से बच गया द्वारा दसरी और संयुक्त सूज्य अनेरिका पश्चारप जगार का सर्वमान्य नेटा बन गया । अनेरिका ने यरोपिय देशों को आर्थिक सहयदा देते हुए यह शर्त लगाई थी कि दे बपनी सरकारों में साम्यदादी दत्यों का सन्मलन करेंगे। मार्थल योजना एक प्रकार से टर्नेन तिहान का ही दिवनित रूप की जिसने दुनैन तिहाना में प्रदिपदित 'अदरेव की नैंडिं को दीन प्रकार से आगे बड या—() जहीं दूरीन सिद्धान्त में अलग-सलग राज्यों को सहस्या देने की व्यवस्था की गई थी, वहीं मार्चल योजना में यूटेन को सनग्र सन से सहस्या की व्यवस्था की गई। (b) मर्चल योजना ने 'सदरेप की मेरि' में सर्चिक एत को मती प्रकार स्पन्न कर दिया I (m) इसके द्वारा पहली बार अमेरिकी अर्थिक सहायदा को एक सहयोगी एड कोलनाब्द्र रूप दिवा गया ।

परिवर्ती यूरेन में मर्टात सेपना के द्वारा बढ़ते हुए राजनीतिक प्रमान को देखरे हुए एस मी पूर्वी यूरेन के लिए मोलोटोर योजना बनाने के लिए मज़हर हुआ और 1949 में मारकों में मारकारिक आर्थिक सहराद-भरिवर्द की स्थानना की गई। उस सम्ब निषय ही संविद्युत कह अपने प्रिम्नणू एट्टों को कुछ मदद हो नहीं दे सहा, लेकिन दह जो रोचा कर पहा या उसमें हुछ कमी जनर हुई। पुरानी अपनियद्ध अर्थव्यवस्था के स्थान पर पूर्वी यूरोन के एक्टों में एक अर्ड-एज्डीय नियोजन किया गया, लेकिन इसने परिवर्ग रहीन के अर्थिक सहस्रों को मुकारण नहीं हो सहा।

यूरेर के अर्थिक सहरोग का नुकारण नहीं है सका।
परिवारी यूरेर के जोशानुत सीनित दायरे में सीडियन सत हारा बदरेवक कार्यर हिंदी
के बदद्दुद मार्रेस योजना को विरोध कहता प्राप्त हुई। इस प्रोप्तन के कारा परिवारी
यूरेर में कार्यिक पुर्निमांग के नये युग का स्कृतन हुए। की राजारें में कारानी सहरोग की एकता की मादन का नाबर हुए। । दूसरी सरक पूर्व पूर्वेश और परिवारी यूरेर के ग्रीय विरोध की साई नहीं। यूरेर की एकता के पुराने आदर्श का स्वान एक नई बास्टिकटा ने रही थी—उन्हों कटननिटक संग्रहरों की बास्टिकटा।

द स्व वक्ता तर हो। यान्यता कार्यात्र्य (Four Pour Programme) के मायान से मी दूरित सरकर ने चार-सूत्री कार्यक्रम (Four Pour Programme) के मायान से मी पहत्त्वात के राजना को कार्रो बढ़ाया। बीत में साम्याद की दिज्य से कमेरिका को यह अग्रका के गई कि दिख के करता दिक्कित देश साम्यादी अगर के साम देख हिस हो। सकते हैं। अत ऐसे प्रदेशों में साम्यवाद के अवरोध लिए 20 जनवरी 1949 को टूमैन ने 'चार सूत्री कार्यक्रम (Programme) की घोषणा की—

- (i) संयुक्त राष्ट्रराध का पूर्ण समर्थन
- (ii) विश्व के आर्थिक पुनरुद्धार के कार्य चालू एखना (iii) आक्रमण के विरुद्ध स्वतन्त्रता-प्रेमी राष्ट्रों को सुदृढ़ बनाना एव
- (IV) अल्प-विकसित देशों के उत्थान के लिए प्राविधिक सहायता देना ।

अमेरिकी काँग्रेस ने 1950 के अन्तर्राष्ट्रीय विकास अधिनियम (Act for International Development) द्वारा इस कार्यक्रम को स्वीकार कर तिया । रिचर्ड स्टेमिस के मार्चो में 'यह कानून अभिकी विदेशा मीति का एक महत्वपूर्ण मीत का प्रयश्य सा।' इस योजना द्वारा प्रथम बार तकनीकी सदायता प्रदान करने की आवस्यकता पीरे-धीरे बदने लगी क्वाँकि अर्द-विक्तित देशों की आवस्यकताएँ बहुत अधिक भी सया इसके द्वारा अमेरिका के राष्ट्रीय तितों की तान्या कोसी थी।

संपुक्त राज्य अमेरिका ने राहायता के राजनय द्वारा द्वितीय महायुद्ध के हुरना बाद, साम्यवाद के प्रसार को रोकने में बहुत कुछ सफरता प्राप्त की। द्वितीय महायुद्ध की समाधित के हुरना बाद के काल में यदि कर दाण्य साम्यवादी नहीं को तो हुनका क्षेत्र अमेरिकी सहायता को था। दिदेश साधिव डलेस ने एक बार कहा था कि यदि हम यह सहायता नहीं देते तो निरियत ही हम बारों ओर से साम्यवादियों से पिर जाते और हमे जीदित रहने के हिए भी प्रयास करने पड़ते।

ारिए मा प्रधान करने पढ़े के बाद पाहायता के राजनय ने इस प्रकार अपने पैर जना तिए। इसमें साम्यवादी राज्यों ने अपने प्रसार के लिए तथा अनतार्यहीय साम्यवाद के त्वस्य की प्राप्ति के लिए विधिन राज्यों की सराज्यों अपने प्रसार के लिए तथा आनतार्यहीय साम्यवाद के त्वस्य की प्राप्ति के लिए विधिन राज्यों ने अपने आदारों की राज्यों के त्वस्य का प्रसार को रोजने के लिए राज्यों को सहस्यता प्रधान की शेनों के प्रदेश कर का साम सामिति कीए जाने की हो की की का का का कि का साम का राजन्य तोगों के उदर के माध्यम से उनके मित्रक पर अधिकार करने का प्रयास है। यह साजग सामें के उदर के माध्यम से उनके मित्रक पर अधिकार करने का प्रयास है। यह साजग सामें (Enlightened Self nucrest) का लेख उत्तरका है (आनेतिको राष्ट्रपित केनेकी ने 1963 में कोडिस के साम्य अपने दिखार का का करते हैं। अनेतिको राष्ट्रपित केनेकी ने 1963 में कोडिस के साम्य अपने विधार का करते हैं। की साम्य अपने विधार का करते हैं। की साम्य अपने विधार का करते हैं। की साम अपने के साम्य अपने विधार का करते हैं। की साम अपने का साम सामें राष्ट्रपित केने हैं। विश्वस्था का करते हैं। की साम अपने का साम सामें राष्ट्रपित कि की की साम अपने का साम साम राष्ट्रपित कि ति की विधार का करते हैं। विश्वस्था का का सामें राष्ट्रपित कि ति की विधार का करते हैं। विधार का का से साम सामें राष्ट्रपित कि ति की विधार का का साम राष्ट्रपित कि ति की विधार का का सामें राष्ट्रपित कि ती है।

भारत प्रेसे अद्धिविकरित अध्या विकाससील देश विदेशी पूँजी अपवा विदेशी सहायता के माध्यम से अपने आर्थिक विकास को बीत करने का प्रयत्न करते हैं लेकिन इस खात पर अधिक निर्मात के आर्थिक और राजानिकि क्यों की खात है है। दिनों पूँजी देश में राजानीविक हरतरोग को साथ लाती है। मासे मात्रा में आर्थिक सहायता देने बाला देश आर्थिक प्रमुखन के साथ साथ राजानीविक प्रमुखन को भी बढ़ाने का प्रयत्न करता है। दिसी सहायता के कारण करक को योजना नीति प्रमाविन होती है। एवी विदेशी स्वायत

1 Public Parers of the President of the United States—John F Kennedy, 1963 (1964) p 25

के कारण सर भित करना पढ़ता है। दिरकों सह प्या देश की मुख्य के लिए सकट भैदा कर करती है। जब सहदक्त में अवनक दिनेरी सहक्या बन कर दी क्या है कीर दिनेते भूति के अवस्थित आपता से देश के लोग की मुख्य को स्वरण पेया हो जाता है। दिनेते हैं के उपलिश अगता से देश के अधिक दिन लेगेन का स्वन्य पैदा है। स्वर्ष हैं के अवस्थित आपता से देश के अधिक दिन लेगेन का स्वन्य पिता है। इसके कार्य के में कार्य में सामी दिनेरों को बनी किया के अधिक दिन के अधिक देश के अधिक देश के अधिक दिन के अधिक देश के अधिक देश के अधिक देश के अधिक देश के सिक्त के साम के स

वर्ष अर्थों में कार्य की सहस्या दिरेशी सहस्या का सबसे प्रमुख व महत्वपूर्ण करत बन गया है। यर जनता के स्तर पर प्रवार का एक अन्ना मण्यम है क्योंके यह 'जन-जन का राजनय' (People to Diplomacy) है। संयुक्त राज्य अमेरिका ने 1954 में 'कार्यन के लिए कायात्र प्रेयम (Poot for Peace Programme) कारण किया था। कहन से प्रित्व देशों को खायात्र उनकी अपनी स्वानीय मुद्रा में बेसे क्याया बना में दिये जाते हैं। प्राय-राज्य राजनीतिक होरेश प्रार्थ के लिए खायात्र होते हैं।

विदेशी सहायवा के लक्ष्य (The Objects of Foreign Aid)

(The Objects of Foreign Aid

एक राज्य द्वारा विदेशी सहायदा के राजनय का अनुसीलन कुछ लक्ष्यों की प्राप्ति के तिए किया जादा है । संयुक्त राज्य क्रमेरिका के सन्दर्भ में वे लक्ष्य निन्दलितित हैं....

1. चट्टीय हित की मूर्ति : चतुन चाम हात अन्य चामों को इसीनए स्टायदा की एनी है ताकि वहीं चतुन चामा के अपिक, चामनिक तया अन्य दित सुरक्षित रहें। त्रिस चामा में करोड़ी बीलर याद किए जाते हैं करते यह आरा करता सम्मानिक है कि दिख-चामनित में बह सरयोग्यूरी मीति अन्य एगे। चतुन्य व्यावस्था कर चाहती है कि चसकी सम्बद्धा पान करते तहा एन्या पर्कत एक को कियी प्रकार प्रोत्तहता न दें।

2. सामावी प्रसार रोजना : कामावी प्रसार के लिए जनुहुत कुने गोगी, जीवा, कसलोर तथा निकरण है। जो राज मुद्दान कारावराओं के लिए कमुत्त कर रहा है रह साम्यदाद की जोर सुमाना से हुक जाना है उद्धा सहुत्वाच्य हाता हुन कमारी से पिहेन पानों सो जाने देंगे पर वहे होने के लिए सर्गाण वी जाने गही। इनने साम्यदाद का प्रमार होने से करा और सर्गक दिख्य परिस्ती गामों को प्रोत्यादी हुद हुई। परि स्हारत न दी जार हो समुक्त एक को नाम सा है कमार्सपूरी साम्यदादी कारोजन हुछ के नहीं देती पर प्राण्याद्वार को कमीरक सो कमार्सपूरी साम्यदादी कारोजन अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करना पड़ेगा । सन् 1991 में सोवियत संघ में सान्यवादी व्यवस्था के परान ने इस मय को समाज कर दिया ।

- 3 अर्थस्यवस्था के सन्तुतन के लिए समुक्तरान्य अमेरिका ने औरोगिक प्रगति द्वारा अपना पर्याप्त उत्पादन बढ़ा लिया है। इस समस्त उत्पादन की खगत देश में नहीं हो पाती अतः विदेशी बाजारों की खोज की जाती है। यह जरुरतमद देशों को इस शर्त पर सहायता देता है कि वे अमेरिकी माल की ही खरीददारी करें ताकि समुक्तराज्य की अर्थस्यवस्था सन्तिति बनी रहे।
- 4. अन्य पार्च्यों की मित्रवा प्राप्त करने के लिए : अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में सहयोग मैत्री और तीहाईसूर्य बताबरण अनिवार्य हैं। यह मित्रता आदरकता के समय साहास्ता हैने पर ही प्राप्त को जा सकती है तथा एक समुख्य राज्य ही मैत्रीयूले सबस्य कारम स्वद्या हैं। है। अतः विदेशों को सहायता देकर समुक्तराज्य अमेरिका विषय में अपने पत्त को सबस्य करने में प्रधानमील रहता है। उसे इस साधन से शीतमुद्ध के समय अनेक मित्र बनाने में काफी सहायता मित्री है।
- 5 देश-रक्ता के लिए अनिवार्य वैदेशिक सहायता का राजनय सयुक्तराज्य के असितव एव सुरक्ता की दृष्टि से भी उपयोगी था। चौतियत सथ के असितव के समय उसका किरोगी पदा पर्याप साता था। उससे तरुके अथवा बचाल के लिए एक कुरात राजनीति की आवश्यकता रही। सयुक्तराज्य को अपने बचाव के लिए किलेबन्दियों करनी पढ़ी। दिदेशों को सहस्यता प्रयान करके एक राज्य की मित्रता जीत लेना स्वकृतराज्य की आवस्था के लिए अक्टना उपयोगी है। सौदिवसाण के पता के सहर यह सकर सम्माव हो गया।
- 6. व्यय अधिक नहीं है: विदेश सहायता के राजनय का नामर्थन करते हुए यह कहा जाता है कि समुफाराज्य अधीरका को साम्यावारी आक्रमण के तिरुद्ध अपनी स्ता के तिए देदिश सहायता की मीति अपनानी भड़ेगी। इस कार्यक्रम पर होने वाला प्यय इसकी उपयोगिता को देखते हुए अधिक नहीं था। 1963 में विदेश सहायता के तिए अतिरिक्त 600 मितियन औतर की मौग करते हुए राष्ट्रपति के नेही ने कार्यक्ष में कहा था कि 'पियर के दिकासातीत देशों को सक्तिशाली एवं स्वतंत्र नमाने के तिए यह मात्रा चलनी भी मही है जितना कि यह देश तिपरिटक, क्षेम आदि भीजों पर प्रतिश्वं व्यय करता है।' राष्ट्रपति केनेडी के समय काँग्रेस द्वारा प्रतिश्वा के तिए तमान चलनी भी मही है कितना कि यह देश तिपरिटक, क्षेम आदि भीजों पर प्रतिश्वं व्यय करता है।' राष्ट्रपति केनेडी के समय काँग्रेस द्वारा प्रतिश्वा के तिए तमान 50 मितिया औतर प्रतिश्वं स्ता करता है।' राष्ट्रपति केनेडी के समय काँग्रेस द्वारा प्रतिश्वा के ता सम्बन्ध सामर्थाक की तिए स्वतंत्र अति स्वतंत्र स्वतंत्र प्रतिश्वा कर समय काँग्रेस द्वारा प्रतिश्वा का सम्बन्ध सामर्थाक की तिष्ट स्वतं विक्रा पति स्वता के तिए स्वतंत्र स्वतंत्र के तिष्ट स्वतंत्र स्वतंत्य स्वतंत्र स्वतंत्र स्वतंत्र स्वतंत्र स्वतंत्र स्वतंत्र स्वतंत्र

विदेशी सहायता का रूप (The Form of Foreign Aid)

संयुक्तराज्य द्वारा विदेशों को दी जाने वाली सहायता का रूप सम्बन्धित देश की आवश्यकता पर निर्मर करता है। प्रायः जिस प्रकार की सहायता संयुक्तराज्य देता है वह निम्निलिवित में से किसी एक रूप में या एक से अधिक रूपों में होती है—

- (1) किसी राज्य को नकद मुद्रा के रूप में ऋण देना ताकि यह अपनी इच्छानुसार अमेरिकी सत्पादनों का क्रम कर राके ।
 - (2) किसी राज्य की जनता देः मरण-पोषण के लिए खाद्यात्र भेजना ।

126 राजनय के सिद्धान्त

- (3) सान्यदाद का मुकाबला करने के लिए एक राज्य को आवश्यक शस्त्रों से सुसज्जित करना ।
- (4) िकती राज्य को समर्थ और स्वतन्त्र बनए रखने के लिए वहाँ के औद्योगिक दिकास में सहयोग देना स्था इस हेतु आवश्यक तकनीकी झान एव मशीनें उपलब्ध कराना । (5) यदि किसी राज्य में घरेलू उत्पादन की व्यवस्था न हो सके तो दहाँ निर्मित माल
- प्री पाद क्या राज्य न परसू ज्यादन के व्यवस्था न है। स्थ ता पहा साम्य सार्व भैजना । ये विदेशी सहायता के मुख्य रूप हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षा, सरकृति एवं मनोरपन

ये दिदेशी सहायता के मुख्य रूप है। इसके अतिरिक्त शिक्षा संस्कृति एवं मनोरंजन आदि क्षेत्रों में मी सहायता दी जाती है।

विदेशी सहायता की समस्याएँ (The Problems of Foreign Aid)

संयुक्त राज्य द्वारा दी जाने वाली विदेशी सहायता का एक दूसरा पहलू भी है। आलोचकों द्वारा इसकी मात्रा औवित्य एवं अन्य प्रकार की आलोचनाएँ एवं समस्याएँ मुख्यतः निम्निविदित हैं—

- 1 आलोचरों का कहना है कि दिदेश सहायता के रूप में अब तक काफी घन दिया जा चुका है किन्तु यह मुख्य रूप से अविवारपूर्ण योगदान ही माना जा सकता है। इस सहायता का अधिकाँश माग अपने चहेश्य को पूरा नहीं करता और इसलिए चाष्ट्रीय हित में नहीं है।
- 2 जालंचवने के नतानुसार दिदेशी सहायदा के रूप में दी जाने वाली राशि बहुत अधिक है। पाँबर्ट मर्पी के रूपमानुसार अमेरिका जब एक बार मीति निर्दारित कर लेता है। सेता रिप उस पर आने वाली लागन की और नहीं देखता। बान 1948 में यूमोस्साविया क्या पर्टालिन के बीच मतमेद बढ गए तो समुक्त राज्य में यूमोस्साविया को सहायता देने की नीति अपनाई। उसने इराजी सहायता दी कि उसके उदेश्यों तथा नीयत को भी सन्देह की टिप्ट से देखा को लगा।
- 3 आलोधकों के अनुसार विदेश सत्यात का कप गतत है। उसका लगभग एक तिहाई भाग शस्त्रों एव लोहा इस्पात आदि के रूप में दिया जाता है ताकि साम्पदाद से सड़ा जा सके किन्तु ये हीययार अनेक अवसरों पर साम्पदादियों के हम्यों में महुँच जाते हैं। कभी कभी ये हिययार सीचे तानाशाहों को मेजे जाते हैं जो इनका प्रयोग अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए करते हैं। ये तानाशाह शासक अपनी जनता का दमन करने में इस सहायता का सम्योग करते हैं।
- 4 अमेरिकी प्रस्तप में दिदेश सहायता की एक अन्य आलोबना यह है कि यह गतत देशों को दी जाती है। पोतैन्व तथा यूगोरतादिया को पर्यंत्र सहायता दी गई है जो पहते से ही साम्यदादी शासन के अधीन थे। जिन राज्यों ने पूजीवादी व्यदस्था को नष्ट करने की शास्त्र से रखी हो छन शबुओं के हाथ में बन्दूक सींपने की सार्थकता पर सन्देह किया जाता है।
- 5 दिदेश सहायता के राजनय के बिरुद्ध यह कहा जाता है कि विदेशों की मित्रना खरीदी नहीं ज्य सकती। सन् 1945 के बाद सयुक्तराज्य ने फ्राँस को भारी सहायता दी किन्तु जनरल दगाल के नेट्ल में प्राँस ने सयुक्तराज्य को जानदृष्ट कर खायत पहुँचाया।

मिस वे राष्ट्रपति गासिर तथा इटोशिया वे सुबुर्ण ने गारी मात्रा भे अमेरिकी सहायता प्रहण की विन्तु अमेरिका विरोधी भीतियाँ अपगाई और खुलकर विरोधी प्रयार किया। 6 विदेश सहायता के रूप भे दिए जाने वाले हथियारों के प्रयोग पर सामाराज्य

7 समुताराज्य अमेरिया खाड़ी वे देशों को इसलिए सहायता देता है ताथि इस क्षेत्र के तेल मडारों पर उसवा नियत्रण रहे। सन् 1991 का खाड़ी मुद्ध इसी उदेश्य को ध्यान में स्वकट सन्द्रा गया।

अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का राजनय (Diplomacy of the International Organisations)

यांना। दिश्व की बदलती हुई परिस्थितियों में अन्तर्राष्ट्रीय सगराजी और सम्मेलनों में पाज पाव वा महत्व बढ़ गया है। समार सामते के विशास औद्योगिक झाँ दि प्यापिक एव विशोध साम्बर्धों के प्रसार सामित की अवस्थाय ता और सम्म मुद्ध के स्वतरे के समय अन्तर्राष्ट्रीय समस्यारें वाई अधिक बढ़ गई हैं। होके समया। के निय 19वीं सामधी के परम्परागत तरिने असामधिक बा गए हैं। इनने यदारि गीमित कप में अपमाया जा सबता है। किन् ये परमा गया विस्तर करो करें हैं। अप अन्तर्राष्ट्रीय मामेलों का प्रसान हुआ साकि अमसी इमाहों पर विषय विभार पत्र मामहोता यांगों का प्रसाव पारित विद्या या सके। हमा प्रमादी में प्रस्तराची को क्रियानिया करो की कोई प्यवस्था गरि भी। यह बार्य व्यक्तिगा राज्यों को ही करा पहला था अन अन्तर्यस्थीय पारणों के अवस्थरकती अनुस्व सी गई। इसके माध्यम से सर्ज्यों के अध्यक्ति सम्बन्धों की अने समस्याधी का

अन्तर्राष्ट्रीय शगठनों के रूप

(Two I orms of International Organisations)

मोटे रूप से अत्तर्राष्ट्रीय सगाउनों में हो गामों में मंगीकृत विया का सकता है—सामान्य तथा विशेषद्वा । सामान्य अनार्राष्ट्रीय सगाउन में होते हैं की विश्व सानित की समापना का स्थास करते हैं तथा सामृदिक सुरक्ता व्यवस्था को मोतातिक करके कर्ष सुद्ध करते हैं । औक स्वन्यक्षाओं आदर्शनादियों एवं राजगितिकों हारा इंग्वर समर्थी किया जाता है। इन सगाउनों की योजनार्थ प्राचीनात्त से ही मत्सूत की जा रही है किया इसे व्यवसारिक रूप भागित सामृद्धीय राज्य व्यवस्था है विकास के बरहा है दिया जाता। ये सामान्य अनार्याद्धीय साम्य (The General Organisations) सम्हत्यय अध्यवा समुक्त का स्विद को मीति अनार्याद्धीय हो सबसे हैं इस्तर अमेरिनी राज्यों के समान्य स्वार्यक्ष समिद्ध की 128 राजनय के ठिद्धान्त

रहता है। ये निजतपूर्ण तरीकों से राजनीतिक दिदादों को दूर करने के साय-साय अनेक आर्थिक काननी सामाजिक और मानदीय समस्याओं का सम्मान में करते हैं।

राज्यों के गैर-सज्मीतिक रुपया तकगीकी प्रवृति के अगसी सम्बन्धों का दिदेवन करने के लिए दिरोष अन्तर्राष्ट्रीय अमिकरमों की स्थापना की जाती है। इन सगठमों की गृजन अन्तर्राष्ट्रीय साथ (Dinons) के रूप में की जाती है तथा इनको सगठन साथ सूची सस्या समाज परिषद् बोर्ड कमीतन समिति समुदाय आदि नामों से जाना जन्ता है। आज ये सभी विदेशीकृत अन्तर्राष्ट्रीय सगठन कहे जात है।

राष्ट्रीय सन्प्रमुवा और अन्तर्राष्ट्रीय सगदन

(National Sovereignty and International Organisations)

अन्तर्राष्ट्रीय सगठनों के मार्ग में सदाधिक उल्लेखनीय बाता सम्प्रनुता की अदयारण है। सिखान कर्म में इसे पूर्ण मना जाता है किन्तु व्यवहार में इस पर अनेक सीमार्ग त्या हिस्सान करने के उप राज्य अपनी और से किन्ती अन्तर्राष्ट्रीय अमितरान की म्यापना वर्ग है तथा उसे निर्देशन, प्रत्या या नियमन की सिक्ता देते हैं हैं ते वे उस सीमा तक अपनी सरकार की कार्य करने की स्वतन्त्रता को सीनित करते हैं। इस प्रवार सम्प्रनुता और अन्तर्राष्ट्रीय सामान प्रत्या सामान प्रत्या के सामान प्रत्या की सामान प्रत्या का सामान प्रत्या की सामान प्रत्या का सामान सामा

अन्तर्राष्ट्रीय सगठनी का इतिहास

(History of International Organisations)

अन्तर्राष्ट्रीय सगठमें का इतिहास चाष्ट्रीय राज्यों की स्थापना के बाद ने प्रारम्भ हुआ है । इसे काल क्रमानुसार निम्मलिखित शीर्रकों में विमालित किया एग सकरना है—

1. प्रयम दिन्दुद्ध से पूर्व : 19वी राताची में अन्तर्राष्ट्रीय सरकार के चार ताली—व्यवस्थातिक कार्यस्तिका, प्रशासन और न्यायानिका का दिवास हो रहा था । व्यवस्थातन का कार्य प्रात्मिक स्तर रह दिनेत्र अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनी संहार हुए । । अन्तर्राष्ट्रीय प्रशासन हुए । । अन्तर्राष्ट्रीय प्रशासनिक सारवा हुए क्या के अन्तर्राष्ट्रीय प्रशासनिक सारवा हुए क्या के अन्तर्राष्ट्रीय प्रशासनिक सारवा हुए क्या के अन्तर्राप्ट्रीय प्रशासनिक सारवा हुए क्या के अन्तर्राप्ट्रीय प्रशासनिक सारवा के दिश्य में वार्य दिया । 19वी राताची के न्याय तक सारवा के अन्तर्यक त्याने का कार्य दिया । 19वी राताची के न्याय तक सारवा के अन्तर्यक कार्यों का सारवा हिस्सा । अन्तर्यक त्याने का कार्य दिया । पर्वाप्ट्रीय कार्यों के स्वार्य प्रशासनिक अन्तर्य का गया । इस नाय के कुण सत्तर्यक्षीय सारवा हुए अन्तर्यक सारवा हुए अन्तर्यक सारवा हुए किन्तु अन्यर्य है कि 1804 से 1854 तक देवन सारवा अन्तर्या हुई किन्तु अन्यामी 25 दर्यों से अन्य सारवारित तिर एए ।

1 कुछ रहनेकोर रूप ये हैं (1) Intermetabl Buras of Meetins and Manages (1974). (2) Intermetabl Linos for the Protection of Industrial Property (1977) (3) The Intermetable Europe for the Publication of Castons Tariffs (1977) हरने हैं। 1890 से प्रथम विश्वयुद्ध के प्रारम्म तक 23 सघ और स्थापित हुए तथा इस प्रकार कुल योग लगमग 50 हो गया।

अन्तर्राष्ट्रीय न्यायिक सरवाओं का विकास 19वीं शताब्दी में सबसे बाद में हुआ।
प्रारम्भ में साण्यों के आमसी दिवादों को समामीता वार्ता या पाप फैसले द्वारा सुलझाने का
रिवाज था और इस हेतु सिद्धानगौंप्रक्रियाओं तथा यन्त्रों का विकास किया पाया था। 19वीं
राताब्दी में पाप निर्णय के आयार पर लगामा 300 सान्धियों की गई। इन सनी में किस्ती न
किसी प्रकार के याय निर्णय का उपल्लेख था। सन् 1899 में प्रथम होग सान्ति सम्मेवल
दुलाया गया। इसमें न्यायाधिकरण के रूपायी न्यायालय की क्षापत्रा की गई जिसी होग
न्यायाधिकरण के रूप में जाना जाता है। द्वितीय हेग सम्मेवल (1907) में इस न्यायाधिकरण
के के सरप्याण पर चिवार किया गया सवा इसे राज्यों के विवादों को सुनने और निर्णय सेने
की सरिक्षण पर चिवार किया गया सवा इसे राज्यों के विवादों को सुनने और निर्णय सेने
की सरिक्षण पर चिवार किया गया सवा इसे राज्यों के विवादों को सुनने और निर्णय सेने
की सिक्ष प्राप्त हो गई। राष्ट्रसाय की स्थापना के बाद भी यह न्यायाधिकरण कार्य करती
रहा । सन्त् 1907 में पीच अमेरिकी राज्यों ने न्याय के केन्द्रीय न्यायाविकरण कार्य करती
रहा । सन्त् 1907 में पीच अमेरिकी राज्यों ने न्याय के केन्द्रीय न्यायाविकरण कार्य करती
राज्य ने इसके निर्णय को अमान्य कर दिया।

2 साष्ट्रसाय (The League of Nations) प्रयम विश्वयुद्ध के बाद विश्व में ग्रामित स्थापना के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय सागठन की आश्ययकता गम्मीर रूप से अनुप्रव में जाने लगी। कुछ अन्तर्राष्ट्रीय अधिकरण युद्ध के समय भी कायम थे किन्तु जर्ने अधिक व्यापक और प्रभावशारी बनाने का विचार किया गया। युद्ध के बाद पेरिस के सामित सम्मेलन में राष्ट्रसाय की आधारितता रखी गई। राष्ट्रसाय के घोषणा पत्र में एक परिवद तथा एक सम्रा के लिए व्यवस्था थी। इनके अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय न्याय के स्वाची न्यायातचा और सोधालय का प्रावधान भी था। साथ ने दो विश्वयुद्धों के बीध अस्पन महत्वपूण कार्य किया किन्त् यह इसके गिर्माताओं की भ्रमताक्रीताओं को पूरा नहीं कर सका।

शब्द ध ह सक्त गंगाआज का नहरावकताका का पूर्व गर्भ र प्रकार राष्ट्रसाय का महत्वपूर्व जियान न्याय और प्रशासन के क्षेत्र में रहा । अन्तर्राष्ट्रीय न्यायात्त्व इसका महत्वपूर्व अग है। इसे विश्व का प्रथम श्यायी न्यायात्त्व माना जा सकता है। इसके सविधान पर 59 राज्यों ने हस्ताक्षर किए और अन्य 51 साज्यों ने इसे स्वीकार किया। 1922 से 1940 तक इसके 49 अधिवेशन हुए जिनमें इसने 60 अन्तर्राष्ट्रीय विदादों की सनवाई की। अपने कार्यकाल में इसने 32 निर्णय 137 आदेश और 27 एतानी दिए।

अन्तराष्ट्रीय कार्यों का यह विवरण न्यायालय को अद्वितीय स्थान प्रदान करता है। प्रशासन के क्षेत्र में भी राष्ट्रसंघ की प्राप्तियों उल्लेखनीय थीं। एक स्वतन्त्र इकाई के रूप में इसका संपिदालय सार्वमीन वस्तुगत और राष्ट्रीय स्वार्यों से अधूती सस्था बन

रूप में इसका सिधवालय सार्वमीम बस्तुगत और राष्ट्रीय स्वाया से अछूती सस्या बन गया ! इसके कर्मचारी कार्य के आधार पर 11 से लेकर 15 अनुमाणों में सगठित किए गए । 3 महायुद्धों के बीच सन्धि बार्ता और पच निर्णय दो महायुद्धों के बीच राष्ट्रसध के

3 महायुद्धा क बाच सान्य बाता आर पथा निगम वा नार्श्यक्ष क बाच राष्ट्रका क बात प्राप्त के अतिरिक्त पदा निगम और सन्धि बातों के लिए पृथक् नगान्तों का भी सहयोग लिया गया। युद्ध से भयमीत सतार के विद्यार्थ के बालि पूर्ण समायान हेत्रु विभिन्न सिन्धा में बालि पूर्ण समायान हेत्रु विभिन्न सिन्धा में सान्य प्राप्त के साम द्वारा की साम द्वारा की गई सिक्तरियों के आधार पर

क्तर-पूरीय दिरची को मुल्ड ने के लिए लगत 1200 संन्यामें की गई । इनने लेक ने सन्य रीती महत्त्रमूम कीयाँ में थीं। 1933 में 20 कोरिकी चार्यों ने एक पुढ़ दिरोपी सन्य की। 1928 में कोरीकी दिश्त सरिद केरोंग ने पुरानी सन्यामें के स्थान पर 27 पद निर्मा सन्यामें की। वे पुजा रूप से पूरेप और कार्यों के साथ की गई सी।

4 संपुक्त राष्ट्रस्य की प्यत्स्या राष्ट्रस्य द्विटीय विरायुद्ध को रोकने में असम्बर्ध । इसकी अन्योक कम्योधीयों तथा अस्य कराने ने द्विटीय विरायुद्ध का प्रत्स किए। अस राजनिक सम्योधीयों हो तेकने के लिए एक अधिक सम्योधीयों देशों के सम्योधीया देशों साम्यावन में साम्यावन की प्रोप्त के देशा कर्मा की साम्यावन में साम्यावन की प्राप्त के सम्यावन की साम्यावन की इसके व्यवस्था की साम्यावन की साम्यावन की इसके साम्यावन की साम्यावन की इसके साम्यावन की साम्यावन की

समुक राष्ट्रसम् के संगठन के राजनीकि तथा मेर साजनीतिक दोने है। प्रवाद के जा है। इसके राजनीतिक का महत्त्वन की सुद्धार जिय है। प्रदासन का कार्य विशेष्ठ क्या है। इसके दान कि ति कि उत्तर है। वह स्वाद मिश्र क्या कि उत्तर है। वह स्वाद विशेष्ठ क्या कि उत्तर होंगे के उत्तर होंगे में कर कि प्रवाद मात्र को सहत्व है। वह सुद्धा संवय विश्व के मुख्य की तर्दि हारा सम्बन्ध किया गाँ है। सुद्धा परिवद का मुख्य क्या हानी रह व्यवसा की सामन करना है। सम्बन्ध के मुख्य कर की पूर्ण करने के कार्य का स्वाद की सामन करना है। सम के मुख्य कर की पूर्ण करने के कार्य का स्वाद की सामन करना है। सम के मुख्य कर की पूर्ण करने के कार्य का स्वाद की सामन करना है। सम के मुख्य कर की पूर्ण करने के कि विश्व प्रसाद कर की पूर्ण कर करने की सामन की की विश्व प्रसाद की सामन करने की सामन करने की सामन करने की सामन की

संपुत्र राष्ट्रस्य के ते राजनीयिक अर्थ में न्यास परिस्टू अधिक और सामणिक परिस्टू अन्तर्राष्ट्रीय स्थानन्य देया नीयत्त्य है। ते राजनीयिक पृत्रीय के कार्य सरस्य त्या नीयत्त्य है। ते राजनीयिक पृत्रीय के कार्य सरस्य त्या नीयत्त्य है। ते कार्य सरस्य त्या ते ति राजनीयिक पृत्रीय के कार्य सरस्य राजनीयिक है। इसने में दुण नाजीयिक हैं—जैसे अन्तर्राष्ट्रीय प्रता तुष्ट कर्य है। इसने में दुण महिने हैं के त्या त्या तुष्ट प्रता देव प्रता देव प्रता हुए प्रता है त्या त्या तुष्ट प्रता है। क्षा के नाजीय कारणीयिक स्थानिक हैं क्षा त्या ते हैं कि नीय कारणीय कारणीय हैं हिन्स सामणि हैं हिन्स सामणि हैं हिन्स कारणीय कारणीय कारणीय हैं हिन्स सामणि हैं हिन्स कर सामणि हैं हिन्स सामणि हैं हिन्स सामणि हैं हिन्स के त्या सामणि हैं हिन्स के त्या सामणि हैं हिन्स सामणि हैं हैं हिन्स सामणि हैं हिन्स सामणि हैं हिन्स सामणि हैं हैं हिन्स हैं हिनस

अन्तर्राष्ट्रीय सगठनों की सरचना एवं कार्य संचालन

(Structure and Operation of International Organisations)

अन्तर्राष्ट्रीय सगउनों की सरमना अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेतनों की अप्रेक्षा अधिक औपचारिक होती है। ये गिरन्तर कार्यस रहते हैं इससिए इनके दीये एव प्रक्रिया को सरमाज रूप दे दिया गया है। अन्तर्राष्ट्रीय सगउनों में एक सरकारी यन्त्र रहता है, इससिए प्रक्री रक्ता कानून पर आधारित होती है जिसमें इसकी शक्तियों आन्तरिक दीया तथा बाहरी सान्य्य आदि का उस्तेख रहता है। इन कानूनों को अनिसामय (Conventions), समझीता (Agreements) घोषणापत्र (Covenant), अधिकारपत्र (Charter), सरिधान (Constitution) आदि नामों से सम्बोधित किया जाता है। इनमें आवश्यकतानुधार संशोधन पर परिवर्तन होते रहते हैं।

सामान्य कार्य (General Functions) अन्तर्राष्ट्रीय सगठनों के सामान्य कार्य उन श्रांकियों एय उत्तरदायितों पर निर्मे हैं जो विमिन्न शाज्यों द्वारा सीचे जाते हैं। इन कार्यों का सान्यत्य राज्यों के समस्त पारसरिक सान्यत्यों से रहता है। इनके क्षेत्र में श्रानित स्वापना सुख्ता एव आपसी विवादों के निरदारे सान्यत्यों मामाने सामितित हैं। इनके अतिहित्त के अनेक आर्थिक सामाजिक तथा अन्य विषयों से भी सान्यत्य रखते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय सागठनों के इतिहास का अवलोकन करने पर सात होता है कि इन्होंने कृषि, प्यापार विता श्रिक्षा, विद्वान सहतृति, कानून न्याप सामाज-प्यवस्था, स्वास्थ्य यातायात, सामार आदि विषयों में उललेखनीय दोगदान दिया है।

सामान्य सरचना (General Structure) शाज्यों के आपसी सम्बन्धों का सद्यालन करने वाले अन्तर्राष्ट्रीय सगठनों की एक प्रमुख दिशेषदा यह है कि इसमें निरन्तर कार्य करने वाला एक स्थायी यन्त्र होता है। इसकी सरचना का रूप इसके लक्ष्य क्षेत्राधिकार तथा भाग लेने वाले राज्यों की सख्या पर निर्मर करता है। सामान्य रूप से अन्तर्राष्ट्रीय सगतन के तीन भाग होते हैं—(i) सगतन की नीति निर्धारित करने के लिए एक समा होती है जिसे विधायी शास्त्रा कहा जा सकता है । इसमें विमिन्न प्रश्नों पर विधार-विमर्श तथा बाद-दिवाद होता है और सगठन के सिद्धान्तों एवं विनियमों की व्यापक रूपरेखा तैयार की जाती है। यह कार्य महासमा समा सम्मेलन आदि द्वारा किया जा सकता है। इसकी बैठकें साम्यिक रूप से अथवा आवश्यकतानुसार होती रहती हैं। (n) प्रशासनिक शाखा द्वारा सगठन की निर्धारित नीतियों को कार्यन्वित किया जाता है। यह प्राय एक स्थायी निकाय होता है । इस शाखा को ध्यरी समिति अथवा संविवालय आदि नामों से जाना जाता है । यह शाखा सगठन के लिए सामान्य लिपिक सम्बन्धी या प्रशासकीय कार्य सम्पन्न करती है। यह सम्बन्धित प्रकाशनों को प्रसारित करती है। कार्यवाही की सूची बनाती है तथा आय-थ्यय के बजट का प्रारूप तैयार करती है I (nt) मध्यवर्ती अग—कुछ अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरणों में कार्यपालिका एव व्यवस्थापिका शाखाओं के बीच एक मध्यवर्ती अग होता है जो नियमानसार स्थाया प्रकृति का होता है।

सामान्यतः उक्त तरीके से ही अन्तर्राष्ट्रीय सगठनों को गठित किया जाता है किन्तु कुछ अभिकरणों की सरचना मित्र प्रकार की भी हो सकती है। उदाहरणस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय बैक तथा अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोव निगम प्रकृति के होते हैं तथा इनको व्यादसायिक चटोगीं के रूप में संगठित किया जाता है।

सदस्यता (Membership): अन्तर्पाष्ट्रीय सगवनों की सदस्यता इस बात पर निर्नर होती है कि वह सगवन सरकारी है अर्द्ध सरकारी है अपदा गैर-सरकारी है। साम्रारमाद पार्च्य को ही सरकारी अनिकरन में माग लेने के योग्य माना जाता है किन्तु इस गिरम के अपदा भी हैं। विस्त स्वास्य सगवन अदि अनिकरणों में सहयोगी सदस्य भी शामित किए जाते हैं। अस्तर सरस्य सगवन अदि अनिकरणों में सहयोगी सदस्य भी शामित किए जाते हैं। अस्तर्पाष्ट्रीय अन-सगवन में केदत राज्यों के ही सदस्य होते हैं किन्तु वे सरकार प्रश्नय और मव्युक्त का प्रतिनिधित्त करते हैं और प्रत्येक प्रतिनिधि को पृथक मतदान का अधिवार होता है।

अन्तर्राष्ट्रीय सगठनों वी सदस्यता के मुख्यतः दो रूप हैं—(i) सार्वनीनिक सदस्यता, और (ii) प्रित्मित स्वस्यता । क्रोक सगठनों की सदस्यता सार्वमीनिक होती है, ऐसे—सपुत राष्ट्रस्य परमा एसके कनिकरण । इसकी मैतिक सदस्य सख्या 51 मी प्रा तद में बदकर 1992 तक 166 हो गई । इसके दिपरीत, सपुत राष्ट्रस्य के कुण सगठनों में कार्यात्मक अयदा मीगितिक दृष्टि से सादस्यता मर्यादित होती है, ऐसे—अन्तर्राष्ट्रीय सीधियकीय सस्यान में 225 सदस्य होते हैं पो अधिकार कनाडा, सपुत्तराज्य बनेशिका त्या परिसमी यूरोप के राज्यों से लिए एती हैं। हेशीय अनिकरणों को मीगितिक परिधि में रखा परिसमी यूरोप के राज्यों से लिए एती हैं। हेशीय अनिकरणों को मीगितिक परिधि में रखा परिसमी यूरोप के राज्यों से लिए एती हैं।

प्रतिनिधित एवं सवदान (Representation and Voting): अन्तर्राष्ट्रीय आवरन में सम्प्रमुख को स्वीकार करने के कारन दो सिद्धानती का प्राप्नुमांव हुआ है—प्रतिनिधि की समानन और मददान प्रक्रिया में सर्वसम्पति । कोई राज्य अन्तर्राष्ट्रीय सामन्यों में आभी स्वतन्त्रता को इतना सीमित नहीं कराज चाहता कि किसी निर्मय को अस्पैनून करके भी असके पानन के किए बाग्य हो।

राष्ट्रतम में तिद्धान्त. समानता और सर्दसम्मति को मान्यता यी गई तथा व्यवहार में समझैत्त्वादी दुरिकोन करनकर हिसदनीय व्यवस्था की गई। सम्हतम की सान में भी सभी छोटे-वहे राज्यों को एक जैसा मतिनिष्यत दिया गया और सुराध परिवर्द में महासच्यिय हम प्रतिनिष्द करम रहा। इस प्रकार महासच्या में साथ के एक क्या पर प्रमुख पर्य का अदसर दिया गया और दुसरे कम में छोटी शक्तियों की समानदा प्रदान की गई।

सपुछ राष्ट्रसय की रक्ता में राष्ट्रसय के अनुसर का लग्न एटाया गया ! महासाना में इसके.मिनियलऔर महाना की समाना उड़ी गई.है। मुख्या परिवह में पीन महार टियों वो साई सहस्वता और निवेष पिशर प्रदान किया गया है। इसमें मदाना प्रदेश खरार बता दी गई है। महासाम में सर्वसम्मति के स्थान पर बहुन्य का निरम स्वीकार किया गया है। मुख्या परिवह में सभी महत्वपूर्ण प्रस्तों पर स्थाई सदस्यों की स्वीहृति कादस्यक मनी गई है।

क्नेरिटी चान्यों के सगठन (CAS) में सदस्या क्षमेरिकी महद्वीप के राज्यों के दिल है। इसमें सदस्यों की समानदा एवं बहुनत के नियम को क्यन या गया है। सन् 1948 में जब अमेरिकी राज्यों के सगठन का चार्टर बनाया गया तो पूर्ण समानता का सिद्धान्त स्वीकार किया गया। चार्टर में भी मतदान की समानता का उल्लेख कर दिया गया है।

प्रसासनिक अभिकरणों के सम्बन्ध में स्थिति नित्र है। अनेक अभिकरणों में प्रतिनिधित्व की समानता है और प्रत्येक सदस्य राज्य का केवल एक प्रतिनिधि शामित किया जाता है। अन्य अभिकरणों में मितिनिधी की सिज्या तो सो या दीन तक है किन्तु माठान का अधिकरा एक ही है। अन्तर्राष्ट्रीय अम-सगठन में प्रत्येक राज्य अपने चार प्रतिनिधि मेज सकता है और प्रत्येक सदस्य मत देने का अधिकारी होता है। इस प्रकार इसमें राष्ट्रीय समानता का निर्वाठ किया माह !

स्थाई मुख्य कार्यालय (Permanent Head-quarter): द्वितीय दिश्यपुद्ध तक संयुक्त राज्य अभैतिका विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय साग्वर्गों का मुख्य कार्यालय था। आजकल अधिकार स्थानन असिकारी ने अपने केन्द्र प्रास्ट तटस्य राज्यों में स्थापित कर लिए हैं। ऐसे केन्द्र स्विद्युज्यतेष्टर, बैल्जियम हार्केय्द तथा स्वीदन में स्थित हैं। प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय न्यायाधिकरण एव न्यायालय है। में स्थापित किए गए हैं। अन्तर्राष्ट्रीय अप-सगवन का कार्यालय जिनेवा में है। अपनी मोगीलिक स्थिति के कारण यह स्थान अन्तर्राष्ट्रीय सगवनों की क्रियाओं का मुख्य केन्द्र बन गया है।

संयुक्त राष्ट्रसंघ में राजनयंत्र के कार्य

(Diplomat's Role in the United Nations Organisation)

संयुक्त राष्ट्रसाय की स्थापना के बाद राजनय की प्रणाली और तकनीकों पर ध्यापक प्रमात पढ़ा है। समस्त अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार पर इस विश्व संस्था का प्रमाव है तथा प्रत्येक प्रांटे या बढ़े राज्य के कार्यों के सन्दर्भ में इस सस्या के प्रत्येक प्रत्येक प्रांटे है। प्रत्येक सदस्य प्राप्य इसमें अपना प्रतिनिधि-गण्डल पेजता है। इन प्रतिनिधियों का यह कर्षय्य है कि वे केवल अपने प्राप्ट्र हिता की दृष्टि से ही न सोधे वरन विश्व सामित और अन्तर्राष्ट्रीय सुरत्या की दृष्टि से विचार करें। परस्परागत राजनय के अनुसार एक राज्य केवल उन्हीं विवयों से सम्बन्ध रखता था जो उसके राष्ट्रीय हिता को प्रमावित करते थे किन्तु अब इस विश्व-समाजन के मध्य पर पाज्य देशे विश्वयों पर भी बहत्त करता है जिनका उसके राष्ट्रीय हिता से प्रस्तावन कोई सम्बन्ध नहीं होता। आजा एशिया, अधीका शैर अभेरिका के राज्य विश्व-गानित करते हैं

संयुक्त राष्ट्रसम् में एक राजनयन्न को "वल नहासकियों के विधारों को ही प्रमादित करने की मित्ता नहीं रहती वरन छोटे पारणों का भी प्यान रखना होता है क्वॉकि ये पारण सािठ-सन्तुवन को प्रमादित करते हैं। दितीय विश्वयुद्ध के परमाद स्वतन्त्र हुए विकासतीय राज्य बढ़े पारणों से अध्ये सम्बन्ध बनाने के लिए सभी राजनिक जपायों का उपयोग करते हैं। ये अपने विकास कार्यों के लिए अपने पारणों से आप के राजनिक कार्यास करते हैं। अाज के राजनयन्न की मुख्य समस्या केवत्य युद्धों के रोकना मही है वरन, अन्य राज्यों के साथ मधुर समस्यों की साथाना भी है तािक विश्वय में सुप्यवस्थ्या की स्थापना हाता स्वय लामानिक हो तथा आप की स्थापना भी है तािक विश्वय में सुप्यवस्थ्या की स्थापना हाता स्वय लामानिक हो तथा आप के पारण की स्थापना हाता स्वर्ण हात्त्र में सुप्यवस्थ्या की स्थापना हाता स्वय लामानिक हो जाता अपने पारणा हाता करता है जी साथा करता है हो हो कि सह स्वर्ण का स्वरुक्त में सुप्यवस्थ्या की स्थापना हाता स्वरूक्त हात्त्र अपने पारण की स्वर्ण का सह हात्रिक हो जाता है। कि वह स्वरूक्त पार्क्तम में की द्वाया करता है हो।

महासम्बर्ध में सहितन एवं समूद राजनद

(Diplomacy of Coalitions and Groups in General Assembly)

महरमा एक संसदीय निकाय की सीति है क्योंकि वहाँ एक ब्रास्टिक्स दर्श य-ब्यास्पा (Embrone Park-neam) प्रनारी खडी है। जिस प्रकार करी राजदीरिक दहतें की दैद्दीके सहन्नत के दनन का बहुदन सदन सन्द्रा जात था. वहीं दख संदन प्रदर्शन में राजों के हिन्दा सन्हें की महिरिद्रोपों को करी-करी इस बद्धार पर कोटा जात है कि दे दुन सर्वार्ज हरिद रिरहान (Sellish Section) Immed) के लिए रैटिंग किहानी का देनियन का देरे हैं। किर से इस प्रकार का करेर क्यार संदुक्त राष्ट्रस्थ में बारीयल दहीय बारता के समय में दिरुपर्ट हुए बहिस्सेटिस्सं हैं। न केरन बन्दर्राष्ट्रीय क्षेत्रल बन्दि राष्ट्रीय राज्यों की ब्यान्यतिकारों में में इस प्रकार की एटिरियेर समाय है। संदर्भ रहतंत्र में स्थाय-एक शिला एक-दर्श से निर्दे रहे हैं। क्लें स्मारकों केर प्रार्ट पर मिला सम्मामहीत होटा रहा है। दमें पहले स्वितिदार समय पर योजनानुसार परमाई किया लाहा है हो करो कर्नुपर कि कर में प्रान्धे हैं। यह प्रक्रिय करी सही है। यह बासरह नहीं है कि इस प्रकार हा. स्त्रा-स्टीत स्टेड दिल-स्टारेट के जनस सम्बद्धों से है इनकट स्पर्देश हो। बारिकारक समान्य कीर बान बार्जे पर भी बार-बीट बानटी खाटी है। बारहर में यह एक सम्भय कुटरीतिक प्रयास होटा है कि मारम्यीक विकार-परन्ते हाय एक-दूरी हो हन्द्रने का प्रयन किय जार काने पर में नियों और कब हततों हो प्रयूरित किय जुन्द रुदा सूददर्कों का बादरन प्रदान किया जार I

पुर हमा दुरावा के कराने त्या कर । भारतम में राज्यें के स्पृत (Groups), सामिन या गढ़ब्यन (Costions), दुर (Birs) करि तिस्ता स्टीय सार्ट हैं। करोदसों के कपूतर सामिन, सपूरों की समझे की एरिटिपेटों के यतसकार मासन हमा किसी तिस्स निर्मय किया राज्यें की समझे की स्थाप कर की देश से स्टेडिंग से समाहत प्रोर करों है। मासना की सम्मीटिक प्रकृति के करना ही ऐसा होते हैं।

Sydney D. Bailey: The General Assembly of the United Nations, p. 21.

महासमा और समुक्त राष्ट्रसम्य के अन्य अमों के विनित्न चुनायों के सम्बन्ध में शब्दों के अधिकाँस महासमाधी चुनाव प्रतिनिध्यानक विद्याना पर अध्यक्ति को हैं। मुंबित ने न्युक राष्ट्रसम्य के प्रदेशक सम्मे महासमा के सभी सदस्यों का प्रदेश सम्भव नहीं हो सकरा अंत सीमित सदस्यता के निकाय या समृह हस तरह स्थापित कर दिए जाते हैं कि उनसे अपने अपने सम्मूर्ण पहीं का प्रतिनिध्यत हो।

सपुक राष्ट्रसाय में विभिन्न प्रकार के सहयोग समूहों और सगठनों का विकास होता है। इनने सदर्थ सहिमितन (The Adhoc Coaltium) होता है जिसका कम या अधिक समय के लिए समस्या दिशेष पर विधार दिमते के लिए निर्माण होता है और जब हद समस्या समान्त हो जाती है अध्यवा उसका स्वरूप बदत जाता है तो वह तदर्थ सहिमितन (Adhoc Coaltium) समान्त हो जाता है। उपहाइण के लिए, स्पेनिश मात्रा मात्री प्रतिनिधि अनेक सार इस हिस्से प्रस्पार समृत्य हुए हैं कि उसुका प्रस्तुपत्र को कार्यवासे में स्पेनिश मात्र के प्रयोग के दावे पर आवाज बुतन्द कर सकें। इसी प्रकार कोरिया युद्ध के समय उन 16 राज्यों ने कोरियाई प्रश्नी पर एक दूसरे के साथ सहयोग किया जिन्होंने कोरिया में समुक्त राष्ट्रसाधिय सैकिक कार्यवासी में मात्रिया था।

महासमा में राज्यों के दूसरे प्रकार के सगठन या गठनयान (Ccalition) का जदय तब होता है जब कुछ राज्य नियमित या जीन्यमित रूप से काकस (Caulus) में मिसते हैं ताकि वे सामान्य दित के मामतों पर आपस में विधार निर्मा कर सर्क दिना इस ता पर वयननबद्ध हुए कि वे एक होकर कार्य करेंगे। नेटिंट अमेरिकी तज्य आको एतियायी समूह जिसमें अरब और अमीकी जय समूह में शामित है तथा पाटु मण्डल इसी प्रकार के साथ या समूह माने जाते हैं। इन समूहों के अपने कुछ सामान्य सगठनारूक तक्षण हैं। ये महासमा के अधिवेशन में प्राय कुछ सप्ताहों में एक बार मिसते हैं तथा वर्ष के रोष माग् में और भी कम एकत्र होते हैं। इन समूर्त के अध्यक्षता बारी वासी से होती है। ये किसी भी सदस्य द्वारा उठाये गए किसी भी समझे पर विधार विभन्न करते हैं।

संपुक्त राष्ट्र अध्या महासमा के अन्तर्गत पूर्वी यूरोप के जो साम्यवादी राज्य है वे अपने को एक समृष्ट (Group) की बजाय गृष्ट (Bloc) कहना अधिक पसन्द करते थे। अब इन देशों से साम्यवाद समाप्त हो गया है और अब इनमें में बहुदसीय संकार्गक व्यवस्था कार्य कर रही है। यदापि दोनों अब्दों में कोई खास अन्तर प्रतीत नहीं होता तथापि ब्लाक राब्द से कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि स्ताक रूप में सगाठित राज्य एक व्यवस्थित आधार पर केवत आपसी विधार विभव्त ही रहे क्लाक रूप में सगाठित राज्य एक व्यवस्था आधार पर केवत आपसी विधार विभव्त ही रहे के स्ताव परिवार के अनुसार "राज्यों का बह समृह एक स्ताक है जो काकत में निविधत एक से सिता है और जिसके सदस्य काकत में सिर्ण गए गिर्णयों के अनुस्था महारूमा में अपना मतावान करते हैं। इस परिमाण के अनुसार तो महारूमा में केवत एक ही सच्चा ब्लाक दिखाई देता था और वह है सेवियत स्वाक। सेविन 1991 है में सीविधतों संघ के विधारन के बाद यह स्वाक समाजत हो गया

136 राजनय के सिद्धानी

महासमा के प्रस्तावों में राज्यों की निम्नलिखित चार श्रेनियों का उल्लेख रहता है अर्थात् महासमा में राज्यों की चार श्रेनियों प्रमुख हैं—

- 1 लेटिन अमेरिकी राज्य (Laun Amencan States)
- 2. डाहीकी एव एशियाई राज्य (African and Asian States)
 - 3 पूर्वी यूरोपीय राज्य (Eastern European States)
- 4 पश्चिमी यूरोपीय एवं अन्य राज्य (Western European and Other States) राज्यों की इन क्रेनियों के अलग अलग अलग क्र-दूसरे के सत्य मिलकर समय समय पर विभिन्न सदस्यों की दस्टि से विभिन्न समुद्र विकसित होते रहते हैं।

राष्ट्रमण्डल के जो राज्य संयुक्त राष्ट्रसंधीय महातमा के सदस्य हैं उनमें दैवारिक स्थया मोमीतिक एकता नहीं पाई जाती लेकिन राष्ट्रमण्डल का सदस्य होने के नचे व्यवहार में वे एक-पूसरे के प्रति स्वानुमूति रखते हैं। प्रमुक्तकलीय राज्य अधिकाँगत विदिश राज्योतिक परम्परखों से प्रावित रहे हैं और उनकी मण्य अधेकों है।

उल्लेखनीय है कि कोई भी क्षेत्र या मत समूह महासमा के मतदान को लगातार प्रमावित मही कर सकता। राजनीतिक एद कूटनीतिक दस्तर में आकर अनेक छोटे राष्ट्र अपना ट्रिटिकोग बदलते रहते हैं। महासमा में मतदान में विजय प्राप्त करने के लिए स्थायी सहसीगियों के अतिरिक्त अन्य राष्ट्री पर मी निर्मत करना पढ़ता है।

महासमा में सदस्य राष्ट्रों पर अनेक तरह के प्रमाव भी पढ़ते हैं। बढ़े राष्ट्र, जिसमें अमेरिका की भी गाना की जा सकती हैं अपने प्रमाव को बनाए रखने के दिए अससर्थिय पहासियों को असनते हैं। नरेदित, अदिकसित प्रमाव क्ली-क्ली हिम्म-स्कूरों को अस्ति सहायता कम करने या समायत कर देने की धमकी दी जाती है। दर्तमान में सबुक राज्य अमेरिका के ही दिश्व की एकमान्न महासक्ति रह जाने के बारण महासमा में उसकी स्थिति और मूनिका सर्वोधीर कम यह है । महास्वाम में छोटे पहड़ भी अपने राज्योतिक प्रमाव, दिश्व में उनकी प्रतिख्वा व उच्च कोटि की कूटनीति से अपना प्रमाव प्रदर्शित कर सकते हैं। सहस्य-पाष्ट्रों का प्रतिनिधित्व करने दाले व्यक्तियों का प्रमाद भी सबुक राष्ट्र की प्रतिख्वा

स्रक्षा परिषद में निषेधाधिकार का राजनव

(Veto Diplomacy in Security Council)

संपुक्त राष्ट्रसंघ के बार्टर के अनुखेद 27 में सुरक्ष परिषद की भतदान प्रणाली का वर्षन है जिसमें असावारण कथना सारनूत (Substantive) मामलों में परिषद के 10 सहस्वों के स्वीकारात्मक मतों के साथ 5 स्वायी सदस्यों का नव सामिल होना आवश्यक है 1 इन 5 स्वायी सदस्यों में ने पढ़ि कोई भी सदस्य अपनी असहस्वी प्रकट को अथवा प्रमाल के विरोध में मतदान करे तो प्रसाव को स्वीकृत नहीं समझा जाता। बार्टर में परिषद पर सावारण और असावारण कार्यियों में स्वतन्त करने वाली कोई व्यवस्था नहीं दी गई है अक्ट जब यह प्रमाल करता कि वर्ष में मानल सचारण या प्रक्रियात्मक (Procedural) माना जाए अववा असावारण (Substantive), तह बोहरे निषेद्यविकार (Double Veto) वा जाए अववा असावारण (Substantive), तह बोहरे निषेद्यविकार (Double Veto) वा

। श्वमस्त्वा गैतम सङ्ग्र राष्ट्र राष्ट्र ३५-३६

प्रयोग होता है अर्थात् पहले तो निषेधात्मक मतदान द्वारा किसी प्रश्न को असाधारण विषय बनाने से रोका जाता है और तत्सरमात् मत्स्ताव के दायित्यों (Obligations) के दिशे में पून मतदान होता है। जीन तथा एडटर्ड ने इसे म्यन्ट करते हुए तिखा है कि सोमावर्ती मामतों में यह मिर्प्रमार्थिकार प्रमा उठता है कि क्या विषय साधारण (Procedural) है और क्या स्तत ही यह गिर्प्रमार्थिकार का विषय है। द्वारत्वर में इसी निधान के निषेधाधिकार को दोहरे निष्प्रमार्थिकार में बदल दिया है। पहले तो एक नकारात्मक बोट दिया जाता है जिसमे सुरक्षा परिषद् किसी विषय को साधारण न मान से और उसके बाद दूसरे येट द्वारा निषेधारिकार का प्रयोग कर प्रस्ताव को विकल बना दिया जाता है।

जिस समय संयुक्त राष्ट्रसंघ के घार्टर का निर्माण किया जा रहा था उस समय निषेधाधिकार पर काफी विद्यार विमर्श हुआ था । तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट का विचार था कि यदि स्थायी शान्ति की खोज करनी है और सयक्त राष्ट्र जैसी अन्तर्राष्ट्रीय सस्था को सफल बनाना है तो यह कार्य महाशक्तियों के पूर्ण सहयोग से ही परा हो सकेगा । दुरदर्शी रूजवेल्ट ने यह अनुमव कर लिया था कि सोवियत सघ अथवा संयुक्तराज्य अमेरिका जैसे महानु राष्ट्रों के लिए किसी भी ऐसे सगठन में भाग लेना सम्बद नहीं होगा जिसमे अन्य राष्ट्र केवल अपने बहुमत के बल पर महारातियों को कोई कार्य करने के लिए बाप्य कर दे। इस प्रकार की स्थिति को रोकों का एकमात्र उपाय निषेधाधिकार था। यह स्पष्ट था कि महाराक्तियों को जनकी इच्छा के दिरुद्ध जबरदस्ती किसी भी कार्य को करने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता था क्योंकि इसका परिणाम स्वय अन्तर्राष्ट्रीय सगठन की समाप्ति हो सकता था। इन्हीं सब बातों पर विचार करके संयुक्तराज्य अमेरिका ने यही उधित समझा कि वह निवेपाधिकार सम्पन्न अन्तर्राष्ट्रीय सगठन को ही स्वीकार करेगा और यदि इसमें निकेशाधिकार की व्यवस्था नहीं होगी तो वह सगठन का सदस्य नहीं बनेगा। परन्तु निषेपाधिकार का प्रबल समर्थन करते हुए भी अभेरिका इस अधिकार को सीमित रखना चाहता था । वह इस बात के पक्ष में था कि विवादों के शान्तिपूर्ण समाधान और नवीन सदस्यों के सगठन में प्रवेश पर निवेधायिकार की व्यवस्था न की जाएं लेकिन रूस इसके लिए सहमत नहीं था । वह निवेपाधिकार को असीमित रखना घाहता था । रूस को यह जानना था कि परिचमी राक्तियों ने विवसता के कारण ही जर्मनी के विरुद्ध उसके साथ सहयोग किया था अन्यथा वास्तव में दोनों के बीच मौलिक सैद्धान्तिक मतमेद थे । रूस को आराका थी कि यदि भविष्य में सुरक्षा परिषद में परिषमी शक्तियों का प्रमुख होगा ती वे बहुमत के आधार पर स्वेष्णापूर्वक व्यवहार कर सकेंगे। अत उसने अपने हिताँ की रखा के लिए निषेपाधिकार पर बल दिया और कहा कि या तो सुरक्षा परिवद के स्थायी सदस्यों को यह अधिकार दिया जाए अथवा समुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना ही न की जाए । अन्तत यही निश्चय हुआ कि निषेधायिकार असीनित रूप से प्रदान किया जाए किन्तु इसका प्रयोग अत्यावश्यक परिस्थितियाँ में ही हो ।

संपुक्त राष्ट्रस्य के चार्टर के निर्माताओं का दिचार था कि महाराकियों का युद्धकालीन सहयोग विश्व सस्या के मय पर भी जारी रहेगा लेकिन शीध ही उनकी आसाओं पर नुश्रावात हो गया। मयकर शीलपुद्ध चानू हो गया और महाराकियों ने खुतकर अपने निर्माधिकार का प्रयोग प्रारम्म कर दिया। एक अध्ययन के अनुसार 12 दिसन्दर 1971 तक अकेला सोवियत स्ता ही 108 बार निरंपायिकार का प्रयोग कर चुका था जर्शके अप्रेल, 1982 के प्रथम सरवाह में अमेरिका ने अपने निरंपायिकार का प्रयोग 30ई बार किया । वुलतालक दृष्टि से ब्रिटेन, फ्रांस और सान्यवादी भीन ने इस अधिकार का प्रयोग बहुत ही कम किया है। सोवियत स्ता का तर्क था कि सुरक्षा परिवर्द में पिटारी शक्तियों के बहुतत के मुकाबते अपने हितों की रहा करने का उसके पास एकमात्र उपाय निरंपायिकार और विरोधी प्रतावों को रह करना है। सोवियत सच के विश्वटन के बाद सभी गणराज्य स्थानी सहत्या के तर रहना ही है। सोवियत सच के विश्वटन के बाद सभी गणराज्य स्थानी सहत्या के तिथ अपना वादा कर रहा है।

निषेप्रायिकार के राजनय के प्र्य और दिस्स में बहुत कुछ कहा गया है । दिस्स में कहा गया है कि इसने सदस्यों को समानता का स्तर देने सम्बन्धी सपुष्ठ राष्ट्रसयीय सिद्धान्त का उल्लाधन किया है। इसके कारण सुरक्ष परिवन् शानित और सुप्ता की यतस्य के अपने वासितों का समुचित रूप से पालन करने में असमये पही है। मुत्रूर्य गडातिय द्वित्व स्वा के स्वाची निष्पायिकार के राजनय के कारण नमुसक बन गई है महाराधियों के सच्यं हाता प्रधायतस्य कर दी गई है। मुत्राध परिवन्द के स्वाची सदस्यों ने इसका प्रदोग अपने निज्ञ राष्ट्रों को सस्या देने के तिए किया है। इसके कारण मुख्य परिवन्द में जो गतियों उत्पन्न होते हैं उनने दिश्व राज्यों की सामूहिक मुख्य ध्वास्था में आस्था बनामा गई है। बीटो-राजनय के दुरुपयोंग के कारण कई स्वतन्त याष्ट्र अनेक वर्षों तक दिश्व स्वाच के सम्बन्ध के साम्य के साम्य के सदस्य मही बन सके । आतोषकों का आयोप है कि निष्पायिकार हाता स्वाधिकी के सदस्य हो बन सके। आतोषकों को आयोप है कि निष्पायिकार हाता स्वाधिकी के सदस्य कराष्ट्र करना स्वाधित्य प्राप्त हो गया है।

निषेपायिकार की आतोबनाओं में दाजन है तथानि कुछ व्यावहारिक रायों की वर्षेक्षा करना अज़िवत है। त्रिषेपायिकार की व्यरक्षा को समाप्त करने में जो खतरी मिहिव हैं वे इस व्यवस्था के कायम रहते के खतरों से कहीं अधिक मध्यवह हैं। किसी भी अनतर्राष्ट्रीय समया के कायम रहते के खतरों से कहीं अधिक मध्यवह हैं। किसी भी अनतर्राष्ट्रीय समया के सकता राज्य के सकता सकी अकतर्य के सहयों के सकत्य सकी सकता में माण नहीं लेना भाईगी जिसमें अप्य देश केदल अपने बहुतत से वन्हें कोई कार्य करने कर तथा कर है। इसे रोकने का एकमाज व्याया निषेपायिकार ही है। सूनेन के राज्यों में ए ई न्त्रीवेस का कहना ही है कि "मतिक्य के नियम का जन्म अनतर्राष्ट्रीय जीवन की वास्तविकताओं से हुआ है। यदि 5 महान् राज्य किसी मतत्वे पर पाणी नहीं होते हैं तो चनमें से किसी के विरुद्ध शक्ति का प्रयोग एक बड़े युद्ध की जन्म देया। सपुक्त राष्ट्रक्षय की स्थापना इसी सम्मादना से बचने के तिए कह भी है"

निषेप्राधिकार असहमति सूदक तथान है, म कि इसका कारण, अद्ध निरेप-व्यवस्था के समाप्त कर देने से महाश्रातिम्यों के मतनेद दूर नहीं होंगे और न ही इससे कोई बढ़ा लान होगा। यदि निषेप्रमिकार की व्यवस्था न मी होती तो मी सुरखा परिषद में गत्यावरीय ज़राम करने की दूसरी दुनियाँ निकासी जा सकसी यी और उनवा भी ठठना ही दुरुपयोग किया जाता जिन्हा बतैनान निषेप्रपिकार व्यवस्था का किया जा रहा है।

यह कहना अविशयोकिपूर्न है कि निषेष पिकार के प्रयोग के फलस्टरूप सुराग परिषद् का काम ठाप हो गया है। अब तक का अनुमद सिद्ध करता है कि निषेप शक्ति का इतना अधिक प्रयोग होने के कारण कोई अनतांद्रीय निर्मय लेने में इसने अधिक बणा नहीं उत्ती है। जिन निर्णयों के लेने में यह बायक बना है जनके कारण विश्व शामित के लिए किसी प्रकार का खतरा पिदा नहीं हुआ है। इसके विश्वति निर्मयाधिकार अन्तर्राद्धीय विश्वादों को सानियूर्प प्रणामी हारा युर्धानों में सहायक हुआ है। जब कमानी के प्रमान पर पुरक्षा परिषद् में ब्रिटेन व अमेरिका ने खुलकर पाकिस्तान का समर्थन किया और निर्संज्यतायूर्वक न्याय का मला पीटा तब सोवियत रूप के निर्माणिकार के प्रयोग ने विवर्धि को सम्मालने में और न्याय की एक करने में साहाया प्रदान की।

यास्तव में निषेपायिकार संघ के विभिन्न पत्ती में सन्तुतन कावन एकने में सहायक सिद्ध हुआ है। यदि निषेप व्यवस्था न होती तो संयुक्त राष्ट्रतय पूरी सरह एक गुट विरोष का शस्त्र बन जाता जिसे अपनी मनमानी करने को पूरी छूट मिल जाती। निष्कायिकार के अमाब में सवाफ राष्ट्रस्थ की भी यही स्थिति होती जो राष्ट्रस्थ की हुई।

िनेदेपाधिकार को अनेक स्वस्थ परम्पाधी के विकास और व्यावहारिक करनी ने पूर्विया कुछ कन प्रमावसाती बना दिया है। सादित के लिए एकता का प्रसाव धार होने के बाद से अब न मो यह अधिकार कोई नया अनतिहीय सार्थ देवान करता है और न आगे बढ़ाता है। इसके होते हुए भी महारामा द्वारा अनेक कार्य सम्पादित किए गए हैं। सानित निर्देशन आयोग सास्तृहिक स्वयाय संगिति आदि की स्थापना द्वारा महारामा ने सामृहिक सहारा व्यवस्था की निर्मेश के स्थमान से मुक्त करां का प्रमाव दिया

उपयोगी यह होगा कि नई सारस्थता और शानियुप्त समझीतों के सान्यय में शो निवेपायिकार औशिक है अल समाप्त होना चाहिए। परन्तु शानित मण और आक्रमण की रिचालि में सिनिक कार्यवाहि के लिए इस अधिकार का प्रयोग कायम रखना चाहिए अन्यया अनेक सम्मीद और नवीन सारमाणी उपयास हो जाएँगी

राष्ट्रमण्डलीय राजनय

(Commonwealth Diplomacy) को सरोग में 'राज्यपटन' कहा जाता

ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल को सदीप में 'राष्ट्रमण्डल' कहा जाता है। इसमें वे राज्य सामिल हैं जो कभी ब्रिटिश साम्राज्य के भाग थे। राष्ट्रमण्डल अनुमानत एक धौधाई मूखी पर फैला हुआ है। इसकी वर्तमान सदस्य सज्या 40 से भी अधिक है जिनमें तीन धौधाई से सी जानित क्षेत्र विकाससील राष्ट्र हैं। इसके सदस्य राज्य विभिन्न शासन व्यवस्थाओं द्वारा प्रमानित क्षेत्र हैं।

राष्ट्रमण्डत के सदस्य जैसे ग्रेट ब्रिटेन कनाडा आस्ट्रेलिया न्यूजीलैण्ड मारत पाकिस्तान श्रीलका पाना मतेशिया आदि। ये राज्य अपने बाह्य सम्बन्धों के लिए पूर्णरूपेण स्वतन्त्र हैं। ये अन्तर्राष्ट्रीय सबयों में पूर्ण स्वतन्त्र हैं। ये अन्तर्राष्ट्रीय सबयों में पूर्ण स्वतन्त्र हैं।

राष्ट्रमण्डलीय देशों के आपती सम्बन्ध

(Intra Commonwealth Relations)

1926 के आही जन्मेजन में न्तापनजानी समुदायों को परिमाशित करते हुए यह कहा गया था कि ये बसी आनतीरिक और बाह्र मामसों में त्यायरता रखते हुए भी ताज के प्रति सामान्य स्वामिमीठ रखते हैं। रान् 1949 में प्रधानमन्त्रियों की बैठक में भारत ने यह भत फुकट किया कि वह गए सरिवान के आधान स्वतन्त्र समयु गणराज्य होने जा रखा है किन् वह राष्ट्रमाहल में रह कर ब्रिटिश राजा को स्वतन्त्र राज्यों की प्रतीक तथा राष्ट्रमाहल का रुप्यक्ष मानेगा। बाद में समय समय पर दूसरे राज्यों ने नी ऐसे ही निर्मय लिए।

स्पष्ट है कि राष्ट्रमन्डल के सभी सदस्य राज्य पूर्ति. सम्रमु हैं। वे अपने ब्राहरी या आन्तरिक मनलों में किसी के अपीन नहीं हैं और स्वेष्ण से ब्रिटिश रण्ट्रमन्डल की सदस्य हारा करते हैं। गाराज्यों के अतिरिक्त अन्य राष्ट्रमन्डलीय सदस्य दूसरे राज्यों के सन्य यस्द्रहार करते सेनय शारी पदवी ग्रहाग करते हैं। मारत पिकस्तान, पाना यदि गाराज्य अपने अस्तार्ष्ट्रम पत्र व्यवहार्थ में किसी पदवी का प्रयोग नहीं करते। गाराज्यों के अदिशक्त अन्य राष्ट्रमन्डलीय देशों में गहनेर जनरल हारा ब्रिटिश सन्नाट् के प्रतिनिधित की व्यवस्था केवल अपिय रिक्ता मन्न के है। यह गवर्नर जनरल नाममन्न की कार्यमनिस्ति के स्वर्य के अर्थ सकते निर्दृति बिटिश सहरात्री हारा सम्बन्धित राज्य के प्रयाननन्त्री वी सिकरिश एक की जारी है।

राष्ट्रमञ्डलीय देशों में राजनयिक प्रविनिधि

(Diplomatic Agents in the Commonwealth Countries)

जुताई 1947 में राष्ट्रमाडलीय सामन्यों का कार्यालय गीवत दिया गया। इसरी अध्यक्षण राष्ट्रमाडलीय सामन्यों के राज्य सचिव को सीमी गई। इस दिनाग का जतरयादित प्रेट दिटन और राष्ट्रमाडल के सहस्यों के सामन्यों का समन्यय कर सहस्य राज्यों के सामन्यों को नियमित करना है। यदि सचिव चारे तो राष्ट्रमाडलीय मन्त्रियों से प्रत्यक्ष समस्या कायन रख सहता है।

एक राष्ट्रमावतीय देश का दूसरे राष्ट्रमावतीय देश में प्रतिनिधित करने वाल उपिकरी राजदूत सामनी न कहा जाकर सम्बाह्म कहा जात है। राष्ट्रमावत के सभी सदस्य अपने आपती हित के मानतीं पर परस्यर दिवार वितरों करते हैं। दे किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय प्रानृ पर एक्नत होन्छ दोने का प्रयास करते हैं।

राष्ट्रमाबतीय देशों में निद्गुल राष्ट्रपुलों का पर पाण्युलों और अन्य राज्यपिक मेरीनीयों से नित्र नहीं होता। हुए ऑप्लारिकाओं को एंडकर अन्य सार्थी कार्यल्यों सार्या पाज्यपिक सिरोप पित्र और उन्युक्ति पाज्यपुलों के समन हेरी हैं। इसमें मुख्य अन्यर एक दो नाम का ही है। राष्ट्रमाबतीय देश अपसा में नित्र राज्यपिक मेरीनीयों का आपन प्रदान करते हैं, उनको उष्टापुल कहा जाता है। दूसरा अन्यर यह है कि राज्युत की निर्मुल के समय वसे दिया जाने नता पत्र प्रत्य (Letter of Codence) कहा जाता है। किन्तु उष्टापुल के सन्दर्भ में हसे आयोग पत्र (Letter of Commission) वहा जाता है। यह पत्र स्वस्तर करते नता प्रता क्षा करता है। वसे अन्य राज्युले की समस्त विशेष प्रिकर पत्र पत्रपूरी की मान्निक्ता करते तहाता है। उसे अन्य राज्युले जैसे समस्त विशेष प्रिकर पत्र उन्तरिक्ती पत्र पत्र करते करते तहाता है। उसे अन्य राज्युले जैसे समस्त विशेष प्रकर

क्षन्य देशों से सम्बन्ध

(Relations with other Countries)

राष्ट्रमाइत कोई अनार्गस्त्रीय सस्या नहीं है। इसके दिवरीत यह एक स्टटान राज्यें को सस्या है जो सामान्य हित के दिवयों पर स्टेब्झा से दिवार विमश एवं आपसी सहयोग के लिए मिलते हैं। राष्ट्रमण्डल का सदस्य बनने पर किसी राज्य की आन्तरिक नीति एवं दिरोग सम्बन्धी पर कोई मितिक्य नहीं लगाता । ये राज्य गैर राष्ट्रमण्डलीय राज्यों से समियां कर सकते हैं तो बारा राजनरिक सम्बन्ध स्थारित कर सकते हैं। वे ऐसे देश के साथ मी समिय बातों कर सकते हैं जो राष्ट्रमण्डल की नीतियां अथवा राष्ट्रमण्डल के किसी सदस्य की नीतियों का विशेषी हो। यह साथ है कि राष्ट्र मण्डलीय राज्यों के कुछ वर्षक लक्ष्य और महरवाजीक्षाण्ड ऐती हैं किन्तु वे अपने दित में कुछ भी करने के दिल प्रवानक होते हैं। राष्ट्रमण्डल के सदस्य किसी राज्य से कोई भी समित्र करने के लिए रवतन्त्र हैं। पाविस्तान नीतिक सगठनों का सदस्य रहा है जबकि भारत रीतिक गठनयानों का कटु

राष्ट्रमण्डल के सदस्य विश्व सगठन में स्वतन्त्र अस्तित्व रखते हैं। मारत 1919 में अधिराज्य-स्तर न रखते हुए भी राष्ट्रसम का सरस्य मन गया था। इसी प्रकार कनाडा दक्षिणी आगीका ऑस्ट्रेसिया आदि राज्य भी इसके सदस्य बन गए थे। सन् 1945 में साक्ष राष्ट्रसमा की धोषणा होने पर भारत और दूसरे राष्ट्रमण्डलीय देश इसके मीतिक सदस्य मान लिए गए थे। राजनय की दृष्टि से एक उल्लेखनीय तथ्य यह है कि राष्ट्रमण्डल में यद्यपि बिटिश साम्राज्य के मृतपूर्व प्रदेश हैं तथापि इससे उनकी साम्रमृता पर कोई औष मस्त्री असी।

राष्ट्रमण्डल के सदस्य राज्यों की सींध करने की ग्रीफ पर कोई भयांदा अथवा प्रतिबन्ध नहीं है। प्रत्येक राज्य एक सम्प्रमु के रूप में किसी भी राज्य के साथ समिबद्ध हो सकता है अयदा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेदन में प्रतिनिधित कर सकता है। राष्ट्रमण्डल कोई ऐसा केन्द्रीय साधकारी यन्त्र नहीं है जो किसी सदस्य राज्य को किसी अन्य राज्य के साथ समिबद्ध होने के लिए साध्य कर सके अध्या किसी समिब को तीड़ने के लिए नजबूर कर सके।

शब्दमण्डल की नीतियों की क्रियान्तित

(Implementation of the Commonwealth Policies)

राष्ट्रपण्डल की समस्त गीतियाँ सदस्य राज्यों के प्रधानमन्त्रियाँ विन मन्त्रियों एवं विदेश मन्त्रियों के सामितिक सम्मेदलों द्वारा क्रियानिय की जाती है। इन सम्मेदलों में सामान्य हित के प्रस्तों पर विधार विमर्श होता है तथा कार्यवाही हें तिर्माय लिए जाते हैं। इन निर्मायों के लिए साधारणवा सर्वसम्मति आवरयक मानी जाती है तथा दिविट्य के कत्र्यनानुसार "जिन प्रस्तों पर सर्वसम्मति प्राप्त नहीं होती वे बाद में विधार के लिए स्थागित कर दिए जाते हैं। समय बीतने के साथ परिस्थितियों एवं मत बदल जाते हैं और पूर्ण सर्वसम्मति सम्मद हो जाती है। ऐसे निर्मय ही मित्रवापूर्ण सामृहिक कार्य को प्रोत्साहित कर पति है।"

नीति निर्धारित करने के बाद सदस्य राज्यों हारा उसे क्रियानित करने के लिए कार्यवाही की जाती है। वर्यसम्मति से स्वीकार होने पर मी पढ़ि कोई सदस्य हुस नीति को क्रियानियत नहीं करचा तो हसे लाष्ट्र करने के लिए कोई उनाम नहीं है। यावहरू में जब कभी ऐसे असरस आते हैं सो से प्राय सदस्य राज्यों के विरोध एवं अस्वीकृति का कारण बन जाते हैं तथा कभी कमी सो इनसे राज्यों के आपसी सम्बन्धों में मी कटुता उत्यन्न हो जाती है। विभिन्न राज्यों द्वारा व्यक्तिगत रूप से अपनाई गई विरोधी नीतियों के कारण भी विवाद हो जाते हैं। इतने पर भी राष्ट्रमण्डल एक महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है तथा

१४२ राजना के मिटान

इसके कछ सदस्यों के दिल्कोण में मौलिक अन्तर रहते हुए भी यह अन्तर्राष्टीय सहयोग की दिया में जन्मेखनीय ग्रोगटान करती है। वास्तव में राष्ट्रमण्डल सहस्य-देशों के नेताओं के विचारों के आदान-प्रदान का स्पर्धांगी

मद्य प्रदान करता है। इससे अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रमण्डलीय मामलों में उनके बीच अधिक सदमाव और सहयोग उत्पन्न होता है। एक बार इस छोटे, पर अपेक्षाकृत अधिक संगठित मद पर आम सहमति प्राप्त हो जाने के बाद अपेशाकत बढ़े अन्तर्राष्टीय सगदन जैसे संयक्तराष्ट्र में अधिक प्रमादशाली दग से कार्य किया जा सकता है। राष्ट्रमण्डल के विकसित

देशों की उपस्थिति इस सम्बन्ध में उपयोगी है क्योंकि 1973 में ओदावा में हए राष्ट्रमण्डल के शासनाध्यक्ष सम्मेलन से. यह औपचारिक विचार-दिमर्श की बजाय राजनीतिक और आर्थिक विषयों पर उपयोगी व अधिक व्यावहारिक विचार-विनिमय की दिशा में प्रयत्नशील है। इसका मध्य उदेश्य दिकसित और दिकासशील देशों के बीच अन्यायपर्ण आर्थिक

दिवमताओं को दर करना है।

राष्ट्रमण्डल के समय-समय पर शिखर सम्पेलन आयोजित होते रहते हैं। इन सम्पेलनों

से दिश्व समस्याओं के समाधान में काफी सहायता मिलती है।

आधुनिक राजनय मे प्रचार -युद्ध और शान्ति के दौरान राजनय

(Propaganda in Modern Diplomacy during War and Peace) Diplomacy

राष्ट्रीय दित के सायन के रूप में प्रयार एक बहुत ही प्रमावसाओं सहन है। इसका दो रूपों में मस्तर है। प्रथम को यह कि प्रयाद हारत राष्ट्रीय दित के अन्य सायन फंसे राजनय आर्थिक सायन साम्राज्याद युद्ध आदि को अधिक साम्रत्यापूर्वक तथा अदिक प्रावद्भार्य रूप से प्रयुक्त किया जा सकता है। दूसरे प्रयाद स्वय में भो इतना सक्रिय तथा मेंतरक्ष्म एए प्रमाय डासने वाला होता है कि दिना इसके माकिमाली चरुप के कोई भी देश प्रपत्ति नहीं कर सकता और न वह दिवर समाज में उपम्य स्वत्त हो प्राप्त के सकता है। आज के प्रजातन्त्र के युग ने मी प्रधार के महत्व को कई नुमा कर दिया है क्वोंकि पर्वमान युग में अपनी नीतियों के प्रति दूसरे देशों को साक्रिय सदमावना प्रयाद करने के लिए इतना पर्याप्त नहीं है कि आप का देश के सामन के कुछ व्यक्तियों को प्रयाव करने के तथा इसने घर से व दरन्त प्रधार के समस्त सामनी द्वारा छन देश की जनता को प्रमादित किया जता है। अपने देश की नीतियों के क्या में जनमत तैयार करके ही उस देश की सरकार को अपने प्रस में के

प्रधार के प्रभावशाली थन्त्र कोई सुनिश्चित नहीं होते दरन् समय की आवश्यकता एव नदीन अविकारों के प्रवार से उनका प्रमाव एव महत्व घटता बढता रहता है। आज के युग में प्रेस देखियों टेलिफोन टेसीविजना सस्ती पत्रिकाएँ समाधार पत्र घलशित्र आदि साधनीं को प्रधार कांग्रे में प्रयात किया जाता है।

प्रचार का अर्थ (Meaning of Propaganda)

"बीसवीं सदी में प्रधार राष्ट्रीय नीतियाँ का नुष्य सायन न गया है।" प्रवार का अर्थ सामान्यत चन कार्यों एव व्यवहारों से हिस्सा अत्ता है जो अन्य व्यक्ति को अपना पक्त समझाने और तदनुकूल आधरण कराने के तिए सम्पन्न किए जाते हैं। जोलेफ फ्रेंबित के कथनानुदार "प्रधार का अर्थ सामान्यत ऐसे किसी भी व्यवस्थित प्रयास से तिया जाता है

Palmer and Perkins International Relations p 125

हो एक िसरे मर्चरणिक होस्य के लिए किसी उन-सन्दूर के मित्रक, महत्तको एवं वार्टी की मनदित करने हेनु किया जगा ।" प्रवार अपने आम में अध्या या दुत नहीं होता वान् नैतिक दृष्टि से निष्ण्य होता है। उसका होस्य अध्या और दुरा योगी प्रकार का हो सकता है। प्रचार हाता अनेक होगों के दिला और दिनाय को एक राथ बदलने का प्रमाय दिया जाता है। वार्त्त्र मर्क (Chailes Bud) के क्यमत्तुमार "प्रचार का वर्ष एक बढ़े जन-सन्दूर पर सुनियोणित एवं अदिस्तित क्या में सुक्रायों का प्रयोग करता है लिक वन होगों के दृष्टिकोंन को नियम्बित दिया जा सके और उनसे मनमन्त्र व्यवहरू कात्या जा सके !" प्रवार व्यक्तिमार में हो सकता है और सम्यूटिक में। योगी सियमीयों में यह एक सर्वाट पर स्ववहरू प्रवार हमान हेना है। इसके माम्य सिक्ती होत के जनना को इच्छानुतृस्त बदला जा सकता है। इस प्रकार प्रचार के अर्थ में दीन बातें उत्स्वित सेय में किया जाता है, और (आ) यह जननत के दृष्टिकोग अयदा कार्यों को प्रमानित करने के लिए किया जाता है,

प्रचार एदं राजनय (Propaganda and Diolomacy)

राजनय के शास्त्रपार में प्रचार एक महत्वपूर्ण हथिया है। अमेरिकी राष्ट्रपटि मजदेन्द्र ने एक बार पत्रकार सम्मलन को सम्बेचित करते हर कहा था कि प्रवार-मान्त्री को समादार-पत्रों में एक तथा के रूप में नहीं प्राप्त रूपना चाहिए । तथाँ तथा प्रवार-सामग्री में अन्तर होता है। प्रचार के लिए टर्ब्यों को होड-मोड़ कर प्रस्तुत विया जाता है। प्रचार का अर्थ है जानहरू कर दुखों पर अरत्य का लेप बदाना । चन्द्रीय हित के अनुमार एक देश का राजनय जब अपने निजों और राजुर्जी का दयन करता है दो प्रदार-यंत्र उसका नुष्य सहयक बनदा है। इसके सुध्यन से नित्र-राज्य के प्रति सदनादनाएँ व्यक्त करने त्या रत राज्य के प्रति दिव जालने में सरिय रहती है। प्रवार हारा करने दिरोपी पट को दिस के बन्द राज्यों में बदलन दिया जाता है। उनकी दुस्दीर पर कालिख लग्न कर प्रस्तुत. किया जाना है, उसके नेक कार्यों के लक्ष्यों की ब्याउया स्वर्चार्ज़ रूप में की जाटी है त्या उसके हिटों को आयत पहुँचने के प्रत्येक अवसर का संप्रधेग किया बन्दा है। दून्नी और, नित्र बनाने, बदाने और बनाए रखने के लिए भी प्रवार साधन को अपनाया जला है। दसरे राज्यों से नैत्रीपूर्व सम्बन्ध बदाने में प्रचार-यन्त्र राजनयह की कदन-कदन पर सहयह करता है। प्रचारवर्ता द्वारा निजी रूपदा सम्मदित निजी के छोटे वार्यों की भी बदा-चढ़ा दर प्रस्तुत दिया जाता है और उनके पतन कार्यों की और से और बन्द कर ही जाती है क्यदा रनती बाज्य होड-नरेड कर की जही है। इस प्रकार प्रचार हारा रहनायह का कार्य साल बन करा है। प्रचार की सहायदा से दह किसी राज्य के सम्य सम्य के लिए रद्रदर्ज बटावरम दैयार करता है। सन्धि में बचनी इच्छानुसूल करों स्टीकार करता है दया सचि को प्रमाधी बनाने के लिए स्टबेश और दिवस में जननद हैयार करता है।

डायुनिक सदार सधारी द्वारा बढ़े जन-समूह को स्थान की दूरी होते हुए मी एक हम्य सिमोपित सिया का सकटा है। रेडियो, टेलीपिजन डाप्टि में विश्व के समी देशों की अस्पन्त निकट ला दिया है। इन सामर्गे द्वारा एक निज या शत्रु राज्य की न केवल सरकार को वरन वहीं को जनता को भी सम्मीदित और प्रमावित किया जा सकता है। द्वितेय विश्व पुद्ध के समय जाजी जर्मनी ने शत्रु राज्यों की जनता को प्रमावित करने के लिए अनेक एन सरीकों का आदिकार किया था। कहा जाता है कि उस समय नाजी सम्पर्य में मेलने वाले इतने रेडियो स्टेशन पैदा हो गए थे कि उनके प्रसारण केन्द्र का पता लगाना भी दुष्कर था। गोबिस्ता (Mr. Goebbles) गाजी प्रमाय यन का मुख्य सामात्व था। उत्तरें रोहस्य के अनुकृत प्रमार की अलग अलग कलानीकों का आदिकार किया। गाजी रेडियो तथा प्रेस का अनुक्त प्रमार को कार्य अलग अलग कलानीकों का आदिकार किया। नाजी रेडियो तथा प्रेस का प्रमार का कार्य व्यवस्थित रूप में किया जाता था। इसमें से कुछ बातें स्वया होती थी कुछ का उदेश्य जर्मनी समा उससे नित्र राज्यों की जनता के मनोबल को जी था उटाना होता था तथा शेष का उदेश्य उसमें राज्यों की जनता के मनोबल को जी था उटाना होता था तथा शेष का उदेश्य शत्रु राज्य की जनता के मनोबल को सी या उटाना होता था तथा शेष का उदेश्य शत्रु राज्य की जनता के मनोबल को सी सा

दरअसल प्रमार रूपी यन्त्र के सहारे कूटनीति कई बातें व्यक्त करती है जिनमें कुछ का चरिस अपने देश और अपने मित्र राज्य की जनता के मनीतत को जैसा दाजाना होता है कुछ का चरिस्य मात्र प्रज्ञ की जानता के मनीतक को विराम होता है कुछ का चरिस्य प्रत्य में का जुलाने में बात कर प्रत्य के दूसरे देशों को मुतादे में डातकर चनकी सहागुमूरी अर्जित करना होता है तम कुछ का चरिस्य साद बात को सामने रखकर अपना एक मजदूव नवाना होता है। अपनीर्दिश्च पाजनीरिक मात्र साद विश्व करनीरि में मात्र के महत्य के सावन्य में एकमा है। प्रत्य होती में मात्र के महत्य के सावन्य में एकमा है। प्रतिक्ष विद्यान हैंस जो मॉर्गियों ने प्रचार को मनीर्देशानिक युद्ध (Psychological War) की सियति माना है। उन्हों के महत्यों में "मार्गेदेशानिक युद्ध अपवा प्रया कूटनीरित तथा नेया बता वृत्वीय सित्र मित्र किया विद्याय विदेश मीति अपने चरेरवों की प्राप्ति का प्रयान करती है।" आधुनिक युग में प्रचार का महत्व हतना बढ़ गया है कि कूटनीरित और युद्ध के बाद इसे ही राष्ट्रीय नीति की पूर्वीय नीति की पुरीय सित्र भारती है। इसका स्थानित हीती की प्राप्ति मात्र करता बढ़ में प्रयोग किया जाता है। करता स्थान हीत की प्रत्येष स्थान किया जाता है। करता स्थान हीत की प्राप्ति के साद इसे ही राष्ट्रीय नीति की पुरीय सित्र भारती का स्थान होता है। इसका स्थानित हीती की प्राप्ति का स्थान होता है। इसका स्थानित हीती की प्राप्ति का स्थान होता है। इसका स्थानित हीता की प्राप्ति में प्रयोग किया जाता है।

राष्ट्रीय हित में वृद्धि के लिए प्रधार (Pronavanda for Promotion of National Interest)

प्रधार एक ऐसा साधन है जिसके चरेरयों का क्षेत्र बहुत विरक्ष है। ह्यान के क्षेत्र में इसकी पहुँच है। यही हमाग्र सम्बन्ध प्रधार के केवल चली करा ने है जो अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों पर प्रत्यक अध्या अग्रस्क रूप से प्रमाब उत्तरने से समर्थ देता है। विज्ञानी स्ताध विकन का कपन है कि 'प्रधार का रूप माहे कुछ मी हो अध्या इसमें किसी भी तकनीक को अपनाया गया हो इसका मुख्य चरेरय नीति एव राष्ट्रीय रूपयों की प्राप्त होती है।' अन्तर्राष्ट्रीय एपनतिक को प्रमासिक करने वाला प्रधार केवल एक देश की सरकर हाता हो किया जाता हो ऐसी बात नहीं है। गैर सरकारी नजेतों से भी प्रधार के रूप का प्रयोग हो सकता है। अनेक व्यक्ति व्याचीरिक हित जसव्या सम्पन इस प्रकार के कार्य में सहयोग दे सकते हैं। विशेष हाजनीविक स्वत दूसरे देश में प्रधार हाथ प्रधार के रूप के

¹ Morgenthau op cit, p 339

समर्थन प्राप्त करते हैं। समय के अनुसार प्रचार के अमिनव साधनों का विकास होता रहता है।

प्रधार के छोरमों पर यदि हम विचार करें तो ज्ञात होगा कि मूलरूप में सभी प्रधार सम्बन्धी कार्य राष्ट्रीय हित को ध्यान में रखकर ही क्रियान्वित किए जाते हैं। ऐसा निम्नालिखत रूपों में किया जा सकता है

प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय समझौते जिस समय होते हैं उनको अपने हित में मोड़ने के लिए एक देश प्रचार का सहारा ले सकता है।

दूसरे, किसी समस्या या विशेष प्रश्न पर विधार करने के लिए कोई सम्मेलन बुलाने हेतु उपयुक्त वातावरण तैयार करने के लिए भी प्रधार का सहारा ले सकता है।

तीसरे, प्रचार द्वारा विधारपारा का प्रधार भी किया जाता है। एक देश के राजनीतिक्र सदैव इस बात के लिए प्रस्तनशील रहते हैं कि जिस विधारपारा पर उनका देश आरुढ़ है. उसी को दूसरे देश भी माने क्योंकि मैत्री एव सहयोगपूर्ण सम्बन्धों का वृढ आधार विधारों की एक्सा होती है।

धीये प्रचार का सहारा अपनी राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय नीतियाँ पर समर्थन प्राप्त करने के लिए भी किया जा सकता है।

राज्य के चरेरयों की प्राप्ति के लिए प्रधार दस्तुतः बहुत ही प्रभावशाली साधन है। नाजी जर्मनी की राजनीति पूरी तरह प्रधार पर आधारित थी। प्रधार को समय के रूप में प्रभुवता देते हुए हिटलर ने लिखा था, ''प्रधार एक साधन है और जिस चरेरयों की प्राप्ति करनी है, चती सन्दर्भ में प्रधार को जीकना है। इसे इस प्रकार व्यवस्थित करना चाहिए ताकि यह चरेरयों की प्राप्ति के योग्य बन सके और यह बिल्कुल स्पष्ट है कि सामान्य छोरयों का भहरत जावरयकताओं के अनुसार बदलता रहता है, इसलिए प्रधार का आनारिक रूप भी तदनुसार बदलता रहता चाहिए।'"

प्रचार के महत्व को स्वीकार करते हुए अनेक राजनीतिझों और विचारकों ने इसे न केवल राष्ट्रीय हितों की अमिवृद्धि का बल्कि राष्ट्रीय शक्ति का भी एक तत्व भागा है। पानर एव पॉकिस ने तिखा है प्रचार राष्ट्रीय नीति के सन्दर्भ में अधिकायिक आक्ष्यक होता जा का है क्योंक इससे राज्य में सगीठित जनमत का निर्माण और विदेश में अपने हितों में वृद्धि होती है। बीसवीं शताब्दी में प्रचार राष्ट्रीय नीति का एक परिपश्च सामन बन गया है। आसुनिक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक रामंत्र पर यदि राज्य प्रचार यन्त्र का सहारा न से और प्रमावसाती क्ये में स्वार नीति का अनुशीलन न करे तो वह निस्तन्देह मारी कठिनाईं में क्या सकता है।

विदेश-नीति के साधन के रूप में प्रचार (Propaganda as an Instrument of Foreign Policy)

महाराजियों द्वारा प्रचार-यन्त्र को उनकी दिदेश-गीति के स्वतन्त्र साधन के कथ में अपनाया जाता रहा। शीतपुद्ध के समय दिश्य-राजनीति में गुटबरियों थी और प्रत्येक गुट या शिदिश अपने हिंती की प्रांति के लिए प्रचार के साधनों का प्रयोग करता रहा। दूसरे गृट को कमजोत बनाने के लिए, उसके सहस्त्रीगियों को तोड़ने के लिए, अपने पस को भजबूत बनाने के लिए और अधिकाधिक देशों को अपने शिविर की ओर खींमने के लिए प्रधार तक गोंकों को चतुरावें और कुश्तरता के साथ प्रधाग में लाया जाता रहा। इस तम्बर्य में में यह उपलेखनीय है कि प्रधार विदेश नीति के अनेक साधनों में से एक है। इसके लक्ष्यों को चुपरिमाशित करके नियोजित रूप से शानित का प्रधार करना चाहिए। दिश्त नीति के दूसरे साधनों के साथ भी इसका छवित सम्बन्ध होना चाहिए। स्पष्ट दिदेश नीति के लक्ष्यों के हिना एक प्रधारक छरेग्यहीन नैराक तम मीति होता है जो केवल सूबने से बचने के लिए हम्ध पर मारास है यह किसी टिशा में आगे नाई बदल

यह सच है कि सभी देश प्रधार साधन का प्रयोग अपने राजनीतिक छहेश्यों की प्रास्ति के लिए करते हैं। समस्त प्रधार का असरता होना आवश्यक नहीं है। प्रधार का छहेश्य विसी राज्य की सरकार को शिसाना या दबाग भी गर्टी है वस्तृ यह दूसरे राज्य के जनमत को अपने पढ़ में भी-ते का प्रयास करता है तारि पत्रके हितों ये। यहां हो सके। इस हेतु यह सम्बन्धित राज्य को पूरा राह्योग और समर्थन देता है।

युद्धकाल और शान्तिकाल मे प्रचार का राजनय (Diplomacy of Propaganda during War and Peace)

राजनय की दृष्टि से प्रयार के बंहु उदेश्यीय कार्य है। यह धार्षिक सामाजिक राजनीतिक आर्थिक आदि लक्ष्यों की पूर्ति का प्रयास करता है। मूलत सभी प्रयास सम्बन्धी कार्य राष्ट्रहित को ध्यान में स्वकर सम्पन्न थिए जाते हैं।

युद्धकाल में प्रचार का राजनय

युद्धकाल में प्रचार अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य करता है । युद्धप्रवृत्त राज्य अपने लक्ष्यों की दृष्टि से इसका प्रयोग करता है। रेडियो टेलीविजन तथा संघार के अन्य साधनों के माध्यम से युद्ध के समय प्रचार एक सहयोगी मित्र की भाँति सहायक बनता है। युद्ध प्रदृत्त राज्य सबसे पहले राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार वी सहायता लेता है ताकि अपने देश की जनता का प्रत्साह बढ़ा सके और उसके मनोबल को ऊँचा चठा सते । शत्रु राज्य के सन्दर्भ मे प्रधार वहीं की जनता के मनोबल को गिराने का कार्य करता है। वह राजु सेना के मनोबल को भी तोडता है ताबि उसे अपनी विजय के बारे में कोई आशा न रहे और विपक्ष की तलना में स्वय को कमजोर मानी लगे। प्रचार सहधन को अपनाते हुए एक राज्य अपनी सेना की चपलियों को बढ़ा चढ़ा कर बताता है और शत्रु सेना की कमजोरियों तथा हीन स्थिति का विस्तार से जल्लेख करता है। अन्तरांष्ट्रीय दृष्टि से प्रचार साधन द्वारा युद्धप्रवत राज्य वित्रव जनमत को अपने शान्तिप्रिय प्रदेश्यों और शत्र के आक्रमणकारी इरादों से परिचित कराता है। प्रधार के समस्त साधन विश्व के राज्यों को यह बता रे का प्रयास करते हैं कि राज राज्य अशान्तिप्रिय है आक्रान्ता है अन्तर्राष्ट्रीय कानून और समझौतों का उस्लघनकर्ता है और वह स्वयं विश्व शान्ति के दितों में तथा अपनी सम्प्रमुता और अखण्डता की रक्षा के लिए यह कर रहा है। प्रौ शुभाँ (Prot Schuman) के मतानसार यहकाल में समस्त प्रचार चार दिशाओं में निर्देशित होता है—(1) हम न्याय सगत हैं और शत्र पस अन्यायी और पापी है (2) हम मजबूत है और शत्रु कमजोर है (3) हम सम्राज्त है और शत्रु विमाजित है (4) हम जीतेंगे और राष्ट्र हारेगा।

148 राजनय के निद्धान

यद्ध के समय रूपन ए जाने वाले प्रवार की तकनीक के दो पहल होते हैं-प्रधारकर्त और श्रेता । श्रेटाओं को तीन नागों में दिमालित दिया जा सकता है-हात. निज्ञ श्रीर तटस्य । यह के समय अपनाए गए प्रवार-यन्त्र में इन दीनों की दक्ति से प्रयुक्त प्रयुक्त तरीके प्रयोग में लाए जाते हैं। बाज के समय युद्ध (Total War) के युग में प्रचार का महत्व बहुत बद गया है।

यदकाल में प्रचार के स्टेश्य का दिदेवन श्रीदाओं की दक्षि से दीन मानों में दर्गीकृत किया जा सकना है। टीनों स्थितियों में प्रवार के स्टेश्य निम्निनिखत होते हैं-

(क) घरेल मित्र और तटस्य बोताओं के लिए प्रचार के छहेरव म्दिया में ऐसे राज्यों से यदि सम्बन्ध बिगढ़ने की सम्मदना हो हो ऐसा प्रचार

दिया जाता है तकि इन्हें खदानक घड़ा न लगे। (2) सम्बन्ध दिगढने पर उसका उत्तरदादित्व एव दोष इसरे प्रष्ट का ही समझ

एए।

(3) जनता की इस प्रकार मीडा जाता है साकि वह अपनी इच्छा से कुछ मींगों की स्दीकार कर लें।

(4) भावी कार्यों के नैदिक औदित्य प्रदान करने के लिए अझरमूनि टैयार की जादी 21

(5) राज्य सरकार रूपने दादी एवं संपत्नियों को बढा-चढाकर बतादी है दाकि दह अधिक सम्मन और सता पान कर सके।

(6) एनटा में प्रचार हारा स्टॉन्निक पैदा की एन्ट्री है टॉक वह सरकार की नैटियों का अधिक सन्धीन कर सके।

(ख) रात्रु-श्रोदाओं के तिए प्रवार के चरेश्य

(1) प्रचार द्वारा यत्र-राज्य के नेटाओं के मनेबल को गिराया जाटा है और सनके द्वारा किए गए कार्यों की क्वान्ता को कम किया जाता है।

(2) प्रचार द्वारा यत्र की राजिहीनटा और दिरोध की निर्खकटा की प्रकट किया

ज्ला है।

(3) जनता में राज की सरकार के दिवद दिहाही मादना प्रोतसादित की जाती है।

. (4) ऐसे कार्यों की सम्मादनाओं को कन किया जाटा है जिससे सनु की शक्ति बढ़दी हो और दह परे निरदय के साथ एककृत होता हो।

(ग) अन्तर्राष्ट्रीय श्रोताओं के तिए प्रचार के चरेश्य

प्रचार द्वारा एक राज्य अन्तरंग्द्रीय समाज के अन्य राज्यों की सदस दन अर्थित

ररत है।

(2) दह रूपने यत् राज्य के प्रति शेटारों में शत्रदा और दिरोदी द्रिकोम रूपते

हरता है। प्रचार द्वारा अन्दर्रास्टीय औदाओं को यह समझाया उन्दर्भ है कि प्रचारकर्स सम्ब और उनदी में टियों का समर्थन करने पर क्या रूच मिल सकते हैं।

शान्तिकाल में प्रचार का राजनय

शान्तिकाल में प्रचार के मुख्य उदेश्य निम्नलिखित होते हैं...

- (1) अन्तर्राष्ट्रीय समझौते में मनवाही शर्ते स्वीकार कराने के लिए किया जाता है।
- (2) यदि किसी प्ररन या समस्या पर विचार करने के लिए सम्प्रेलन आयोजित करने की आवश्यवता हो तो इस हेतु उपयुक्त वातावरण तैयार करने के लिए प्रचार किया जाता है।
- (3) एक देश अपनी विचारपारा को दूसरे देश में फैलाने के लिए भी प्रधार यन्त्र को सक्रिय करता है। विचारपारा की एकरुपता के कारण अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और मैत्री की भावनाएँ विकसित होती हैं।
- (4) एक राज्य अपनी राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय नीतियाँ घर स्वदेश और विदेश के जनमत का समर्थन प्राप्त करने के लिए प्रधार करना है।

उपर्युक्त दिरतेषण से यह स्पर्य है कि प्रमार मानिर और युद्ध दोनों काली में महत्तपूर्ण एरेरमों की प्राप्ति का प्रमास करता है। राजनय की तकनीक के रूप में इसके प्रमोग के औदियर पर सन्देह नहीं किया जा सकता। इस सकनीक के हानि सामी पर कोई मत प्रकट किए बिना ही यह स्वीकार किया जा सकता है कि इस प्रमार से अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों ने कई दिलाएँ और उपयोगिता प्राप्त कर सी गयी है।

शाजनय, प्रचार सथा राजनीतिक युद्ध (Diplomacy, Propaganda and Political Warfare)

मानव सम्यता के प्रमाव से ही युद्ध समाज की एक अनित्र विशेशता बना हुआ है। वागर तथा परित्र के प्रमाव से ही युद्ध समाज की एक अनित्र विशेशता बना हुआ है। वागर तथा परित्र के स्वर्ध में "मानित तो एक अल्फालीन सन्धि प्रमाव कर के हेतु दूसरे को प्रोवधा देने को तत्यर है।" युद्ध केवल सेना हाना रिप्यरों से रण्डोज में ही नहीं लड़े जाते। युद्ध के अनेक रूप होते हैं। उदाहरण के लिए -(1) मनौद्धानीक युद्ध (2) वाराजीविक युद्ध का अनेक रूप होते हैं। उदाहरण के लिए -(1) मनौद्धानीक युद्ध (2) वाराजीविक युद्ध का स्वित्र हो। इसी हमाने हमाने

राजनीतिक मुद्ध भी राष्ट्रीय हित की अभिवृद्धि का एक प्रमुख साधन है। इसका उदेश्य यहले शत्रु को कमधोर मनाना। उसके मनोबल को श्लीण करना और शत्रु अथवा विरोधी राज्य में अध्यवस्था फैलाकर उदेश्यों की प्राप्ति करना है। सामान्यत ये ही कार्य कूटनीति प्रचार और अन्य साधनों के होते हैं तथापि अपनी प्रकृति और खरूर में ये राजनीतिक युद्ध से निन्न है। सामन्य प्रचार को हम राजनीतिक युद्ध की सड़ा नहीं देते, लेकिन प्रचार का उदेश्य यदि विरोधी राज्य को निर्देत बनाना बराना या पमकाना अथवा अपनी नीति मानने के लिए विश्वत करना है तो खर राजनीतिक युद्ध का अग बन जाता है। इसी प्रकार सामान्य कूटनीति भी राजनीतिक युद्ध के अन्तर्गत नहीं आती, पर ज्यों ही कूटनीति का प्रयोग उपर्युक्त चरेरयों की दृष्टि से किया जाता है तो वह भी राजनीतिक युद्ध की परिधि में आ जाती है।

सारोंश में कूटनीति या प्रचार या आर्थिक उपाय आदि को राजनीतिक युद्ध की परिषे में तभी तिया जा सकता है जबकि उनका छोरेय या परिणाम विश्वकारिता हो। कौन सी क्रिया सामान्य है अथवा राजनीतिक युद्ध का अग है यह उदेश्य पर निर्मर करता है। यदि गाजाबन्दी (Embargo) आर्थिक स्त्रोतों के सरसाग के तिए की महे है तो यह सामान्य क्रिया है लेकिन यदि इसका छोरेश विरोधी राज्य को आर्थिक वस्तुओं से यथित रखकर दुबंत बनाना है तो यही क्रिया राजनीतिक युद्ध के अन्तर्गत गिनी जाएगी। राजनीतिक युद्ध सैनिक युद्ध छिन्ने से समाय नहीं हो जाता अपितु युद्धकाल में प्रमार, कूटनीति. आर्थिक स्थान सभी राजनीतिक युद्ध के साधन बन जाते हैं और युद्ध में राष्ट्रीय हित के एस में सहायक होते हैं। अर. राजनीतिक युद्ध में प्रचार का महत्व निर्तिवाद है।

प्रधार के खपकरण (The Instruments of Propaganda)

वर्तमान में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में प्रवार के लिए मुख्यत निम्नलिखित उपकरणीं का प्रयोग किया जाता है—

1: उच्च प्रसारण शक्ति वाले रेडियो (Radio of High Intensity)

2 टेसीविजन (The Television)

टेलीविजन के आविष्कार ने प्रमार के क्षेत्र में क्रान्ति कर दी है। यह रेडियो से अधिक प्रमावसाती होता है क्योंकि असत्य्य लोगों को एक साथ सम्बंधित करते हुए टेलीविजन की सहस्यताती होता है क्योंकि असत्य्य लोगों के ग्रे क्या स्वाद्या है। किसासाति देशों में इक्रां की सहस्यता है। किसासाति देशों में इक्रां के सहस्यता है। किसासाति देशों में इक्रां अधिक प्रयोग न होने के कारण इसके प्रमाव का क्षेत्र सीमित है। यह विकासित राज्यों में महत्यपुर्ण मुनिका अदा कर रहा है। सन् 199) के खाड़ी युद्ध को टेलीविजन पर दिखाया गया था।

3 प्रेस तथा फिल्म (Press and Film)

आत के पुग में समापार पत्र देश विदेश की खबरों का प्रसारण करते रहते हैं। मातावित्रक देशों में प्रक का महत्व निर्विद्या है। सर्वाधिकारावादी राज्यों में प्रेस सामान्यत राज्यों होता है। कहा है। कहा है। महत्व के सामाज राज्ये में प्रक हिए एए सच्च और मत राज्य की राक्ति वृद्धि का कार्य करते हैं। यदायि इनमें प्राप्त स्वयन्त्र विपार राधा ईमानदारीपूर्ण मत का अमाब रहता है। व्यापि यह साथ है कि साम्यवादी साथ परिवारी प्रजातावित्रक राज्य दोनों है। अपने पत्रियों हम साथ की अपनी रहे।

राजनय में प्रेस के महस्य का मून्योंकन करना कियन है। प्रेस द्वारा एक राष्ट्र के जनमस्य की अगिव्यक्ति होती है। प्रेस जनमस्य निर्माण करने परिवर्धित करने तथा एक देने का कार्य भी करने करने हम्म एक देने का क्ष्रों से करने हम एक हम के कार्य भी करने हम एक हम की आसोचना शहनी पढ़ती है। एक प्रमादशाली समापार पत्र किसी मेता को चढ़ा या गिरा सकता है। ऐसी शिव्यक्ति में प्रदेश देश के राजनय का यह दायित्व है कि समय समय पर समापार पत्र कि करना करना है।

चाजनपड़ को दृष्टि से प्रेस के साथ साथ फिल्मों का भी उल्लेखनीय स्थान है फिल्मों द्वारा अधिक लोगों से सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है । युद्धकाल में शत्रु राज्य की जनता को फिल्मों द्वारा अनेक संध्यों से अवगत कराया जाता है किन्तु इन फिल्मों के निर्माता और निर्देशकों का नाम नहीं दिया जाता । इनका प्रेसय दूसरे राज्य की जनमत की मान्यताओं एव मुल्यों को बदलने का प्रयास करना होता है ।

4 शौरकृतिक आदान प्रदान कार्यक्रम (Cultural Exchange Programmes)

राजनम की आमुनिक तकनीकों में एक मुख्य सकनीक यह है कि एक राज्य सौरकृतिक कार्यक्रमों के आदान प्रदान हारा अपनी आनारिक गति और सारा के प्रति अपन सावचों की जनता है। आजका कर नारा किया जिया अपने प्राच्या करांचे की जनता है। आजका कर नारा किया अपने प्रयाद्ध करांचा की राज्य सावचें की अपना राज्यों की अपना की किया करने के लिए ऐसे कार्यक्रम अपनाती हैं। इन कार्यक्रमों के अपनाती निश्चा बढ़ाने के प्रयाद किया आदि होते की प्रमाद सावचा पर साविष्य राज्यों ती होता आदि होते की प्रमाद सावचा पर साविष्य राज्यों ती होता आदि होते की प्रमादा सावचा पर साविष्य राज्यों ती होता आदि होते की प्रमादाता व्यक्तियों को लेका जाता है। सौरकृतिक प्रतिचित्र पार्चित होते पर अपनी प्राप्ती और सम्पन्त करते हैं। सावची कार्यक्रम के अपनी प्राप्ति के स्वाच्या करता है। दोने एक दूसरे में अपने प्रति खानिमतिक और निष्ठा के स्वच्यों को प्रमादी के करता है। दोने होत के सुर्वाच के स्वच्यों के सावची करता है। हो ती है कार्यक्र की स्वच्यों के हैं। इस अपनी प्रति है सावचा के की को करता है। इस अपनी कार्यक्र के सावची की करता है। इस अपनी कार्यक्र के सावची करता है। इस अपनी कार्यक्र के सावचा करता है। हो के प्राप्ति के के कार्यक हो है। इस अपनी कार्यक्र के सावच्यों के सावचा करते हैं। इस अपनी कार्यक्र के अपने करते हैं। इस अपनी कार्यक्र के सावचा करते हैं। इस अपनी कार्यक्र के सावचा करते हैं। इस अपनी कार्यक्र के सावचा करते हैं। इस अपनी कार्यक्र करते हैं। इस अपनी कार्यक्र करते हैं। इस अपनी कार्यक्र करता है। इस अपनी कार्यक्र करता है। इस अपनी कार्यक्र करते हैं। इस अपनी कार्यक्र कर करते हैं। इस अपनी कार्यक्र कर करते हैं। इस अ

152 राजनय के सिद्धान्त

विकसित राज्यों द्वारा शोषण किया जाता है। प्रत्येक सौंस्कृतिक आदान-प्रदान का राजनयिक लक्ष्य होता है। वे विचारों को प्रभावित करने तथा प्रचार की सिद्धि के साघन बन जाते हैं।

5 आर्थिक और सैनिक सहायता (Economic and Military Aids)

वर्तमान में विकासशील देशों की सहाइता के लिए आर्थिक तथा सैनिक सहायता देने का तरीका अपनाया जाता है। उत्तत राज्य विकासशील राज्य की योजनाओं तथा आर्थिक क्रियाओं में कि ते तराता है। इस रुपि में स्पष्ट या अस्पष्ट रूप से राजनिथक तस्य निहित रहते हैं। प्रो मौनियों ने लिखा है कि 'आर्थिक और तकनीकी सहायता प्रमार से कुछ नित्र हैं। इसमें वायात करने की अरेशा काम किया जाता है। प्रमार के प्रमादयाली तरीके के रूप में इस प्रयास की सफलता के लिए दो बातें उल्लेखनीय हैं—(1) जो भी सैनिक या आर्थिक सहायता दो जाए उत्तका दीयेकाल में नहीं दरत तुरन्त लाम होना चाहिए तथा यह लाम प्रमावित राज्य की जनता की समझ में आना चाहिए और (2) यह सहायता रुप्पट होंगी वाहिए '" प्रयार-यन्त्र और सहायता कार्यक्रम दोनों ही परस्पर लाम्बेनिय होंदे हैं। प्रमाद हारा सहायता देने वाले अभिकरण को श्रेय प्रदान किया जाता है तथा इस्त

6, शान्तिकालीन प्रदर्शन (Peace-time Demonstrations)

शासिकातीन शांकि प्रदर्शन भी आजकत राजनय का एक महत्वपूर्ण तरीका बन गया है। इसे अपनाने वाला राज्य अनुविस्कोट एव सुरक्षा-प्रदर्शन द्वारा, चपग्रह छोड़कर तथा हाइड्रोजन बनों के विरूक्तेट द्वारा कमजोर एव तटस्य राज्यों को मित्र बनाने और वहाँ की जनता मे अपने प्रति स्वामिनिक पैदा करने का प्रयास करता है। इस प्रकार के प्रदर्शनों को सथार-सध्यमी द्वारा प्रसारित किया जाता है तथा रेडियो टेनीविजन समाबार-दर्शन समाधार-पत्र आदि द्वारा विश्व के देशों को मेजा जाता है। नए हथियारों का आविष्कार करके चनका प्रयार किया जाता है। इससे शत्रु-राज्यों के शिविर में आतक फैलता है तथा वित्र-राज्यों क स्वयम प्रथलन सोर्ड है।

प्रचार के त्रीके

(Methods of Propaganda)

जो तरीके यापार में विज्ञापन और प्रचार के लिए अपनाए जाते हैं वही तरीके राजनय में अपनाए जाते हैं । विज्ञापन की मीति अन्तर्राष्ट्रीय प्रचार में प्रमावित व्यक्तियों की माँग रुचि और उनके मनोविज्ञान का व्यान रखा जाता है। उनकी कमजीरियों इष्टाप्रओं तथा मय के अनुकूल प्रचार की तकनीके अपनाई जाती हैं। यामर रच्या पर्यक्रम ने प्रचार के तरीकों को चार शीर्षकों में वार्षिक्त किया है जो निम्नानसार है—

1. प्रस्तत करने की विधि (Methods of Presentation)

किसी बात को किस प्रकार कहा जाए, यह प्रचार की दृष्टि से दिशेष महत्व रखता है। एक राज्य केवल उन्हीं बातों को बार-बार दोहराता है जो उसके पक्ष में होती है और दूसरी बातों के तस्यपूर्ण होते हुए भी उनका उल्लेख नहीं करता है।

सत्य को छिपाना और असत्य को बढा-चढा कर कहना आधुनिक प्रचार का महत्वपूर्ण त्य्रण है। हिटलर ने तथ्यों को प्रस्तुत करने के सम्बन्ध में निम्नलिखित सुझाद दिए थे—

- प्रमार का लक्ष्य बुद्धिमान या समझदार व्यक्ति न होकर अल्पबुद्धि व्यक्ति होने माहिए । ऐसे लोगों की भावनाओं को जाग्रत कर चन्हें उत्तेशित कर देना शाहिए ।
- 2 विरोधी के पक्ष में कोई बात नहीं करनी घाटिए। उनके विपक्ष में ही सब कुछ कहना माहिए।
- पार्थर ।

 3 प्रचार करते समय केवल दो में से एक पक्ष चुनना चाहिए । अच्छा या बुरा सत्य या झव उपित या अनुचित आदि । दसरे शब्दों में बीच की कोई बात नहीं करनी चाहिए ।

4 प्रवार में साधारण झूठ का उपयोग नहीं करना चाहिए । झूठ इतना बड़ा और व्यापक होना चाहिए ताकि सुनने वालों को यह विश्वास ही न हो कि इतना बड़ा झूठ भी बोला जा सकता है।

कहा जाता है कि अब्राहम तिकन जिन दिनों वकातत करते थे एक न्यायाचीत ने उनके तकों पर आपित की और कहा "मि तिकन इस समय आप जो तर्क दे रहे हैं वे आपके द्वारा ही एक दूसरे केस में कल दिए गए तकों के विपरीत है।" इस पर तिकन का उत्तर था "माई तांठे हैं। सकता है कि मैंने कल जो तर्क एथे वे मसता ही किन्तु मेरे में तर्क पूर्णत तत्वर है। "अर्चन जानमां अब्राहम तिकन के इस तरार को प्यान में रखकर ही अपना कार्य करता है। वह उन सभी तायों को छिणा लेता है जो उसके मामते के विपरीत जाते हैं। प्रधार यन्त्र के कुराल उपयोग से दिस्मार्क तथा दिहतर ने कई बार अपने चोर्रस्यों को बड़ी सफलतापूर्वक प्राय कर तिया था। प्रस्तुतीकरण प्रधार के कई कर हो सकते हैं उदाहरण के तिल्द—

- (2) प्रचार में ऐसी घटनाओं एव प्रामाणों का अपने पत के समर्थन में उपयोग किया जा सकता है जिनका चरेराय कुछ और ही होता है किन्तु आप उनसे अपना चल्लु सीधा कर दोते हैं। हिटलर प्यूदियों के विरुद्ध जानेंनों में प्रमुक्ताना प्रास्ता था। उसने अनेक कहानियाँ तथा पुस्तके प्रस्तुत की और उनके आधार पर यह सिद्ध करने की घेटा की कि यद्दीयों लोग पूरी रिक्ष पर पाज्य करने की योजना बना पहें हैं। इस प्रमार का तत्कार परिणान यह का कि कदियों के प्रति ति कि प्रदेश ते ही तो की कि
- (3) प्रचार करते समय झूठ और धोखे का मार्ग सर्वाधिकारवादी और लोकतान्त्रिक दोनों ही राज्यों द्वारा प्रयोग में लाया जाता है किन्तु दोनों व्यवस्थाओं द्वारा किया जाने वाता ऐता प्रचार एक ही कोटि में नहीं रखा जा सकता। दोनों के बीच चरेरय का अन्तर रखता है। प्रजातान्त्रिक देशों का ऐसा प्रचार तानाशाही देशों की गुलना मे प्राप्त अच्छे छोरचों के लिए किया जाता है।
- प्रदेश्यों के लिए किया जाता है। (4) अटहाइमों के सरका रूप को भी प्रचार का विषय बनाया जा सकता है और यह भी सम्मव है कि प्रचार काफी प्रमावकारी सिद्ध हो।
- (5) प्राय झूटी और महत्वहीन घटनाओं को युद्ध का कारण बना दिया जाता है। सन् 1965 के भारत पाक बुद्ध में साध्यदादी चीन ने भारत पर मेडे घुराने जैसे महत्वहीन और

154 राजनय के सिद्धाना

अकर्षित कर लेता है।

मदे आरोप लगाए और ऐसा वातावरण इनाने का प्रयत्न किया कि वह जब चाहे तब भारत घर हमला कर सके l

2 ध्यान आकर्षित करने की तकनीकें

(The Techniques of Gaining Attention)

प्रचार का स्टेश्य दूसरे राज्य के मिसाक को अपने स्वार्ध के अनुरूप बनाना होता है इसके लिए सम्बन्धित राज्य का ध्यान आकर्षित करना परम आवश्यक है। राज्य की जनता का ध्यान आकृष्ट करने के लिए एक राज्य निम्नलिखित तरीके अपना सकता है—

1 सरकारी प्रयास एक राज्य की सरकार अपने राष्ट्रीय हित के अनुकूल अन्य राज्य की सरकार के सम्मुख दिरोम प्रकट करती है। सामयिक पत्रों और नेताओं के मार्चणों द्वारा सरकार अपना कख सम्बद्ध करती है।

2 शिक प्रदर्शन एक राज्य द्वारा अपनी जल यत और नम शिक का कुछ अवसरों पर प्रदर्शन किया जाता है ताकि दूसरे राज्य उसकी सैनिक शिक का अनुमान लगाकर तद्तुसार व्यवहार करें। शिक प्रदर्शन द्वारा एक राज्य अपनी मौंगों और हितों की ओर

विदेशों का भी ध्यान आकर्षित करता है। 3 राजनीतिक यात्राएँ राज्य अपदा सरकार के अध्यक्ष द्वारा विदेश यात्राएँ की जाती हैं। यात्राओं के समय दिए गए भावणी वक्तव्यों एवं संयुक्त दार्ताओं के प्रसारण द्वारा एक

राज्य दिख के समस्याओं के सम्बन्ध में अपना दृष्टिकोण प्रकट करता है।

4 रमनात्मक कार्यक्रम प्रचार के साथ साथ राज्यों को रमनात्मक कार्यक्रमों का आयोजन भी करना चाहिए। पामर तथा परक्रिस के अनुसार जह कोई राज्य रमनात्मक नैमित अपनाता है तो उसका प्रचार अधिकरण कमाजेर होते हुए भी दसरे राज्यों का व्यान

3 प्रतिक्रिया जानने का प्रयास (Device for Gaining Response)

प्रयार कार्यक्रम के प्रति देशदासियों की उधित प्रतिक्रिया जानने के लिए दिनित्र तरीके अपनाए जाते हैं। कुछ प्रमुख तरीके निम्मृतिखत हैं—

1 नार्ते का प्रयोग प्रचारकर्ता जनता से जो कराना चाहते हैं उसके लिए उन्हें दो चार शब्दों के कुछ नार्दी की कृष्टि करती होगी। ये नार्दे कुछ समय में लोगों के जीवन का अग यन जारेंगे और घर घर में गूँजने तरोंगे। ग्रीतगुद्ध में सीदियत सध्य ने अमेरिका के दिवद और अमेरिका ने साम्यवादी च्यदस्या के दिवद अनेक नार्दी का प्रयोग किया था।

2 प्रतीकों का प्रचलन व्यक्ति की मादनाओं को प्रचारित करने में नारों की मीति प्रतीकों का मी महत्वपूर्ण स्थान है। इस दृष्टि से देरवाचियों में मादनात्मक एकता लाने और राष्ट्रीय नीतियों का समर्थन करने के लिए किसी विक्र जानवर सकेत राष्ट्रपति का एव अप्य प्रशार के प्रतीकों का उपयोग किया जाता है। हिटलर ने स्वास्तिक को अपने नाजी दल का प्रतीक काचा। अमेरिकी झाडे पर चील का विक्र है तथा इसी प्रकार दूसरे देश मी अपने प्रतीक निर्वारित करते हैं।

- 3 विचारों का व्यक्तिकरण कुछ विधार व्यक्ति विशेष के नाम से जोड दिए जाते हैं ताकि जनका प्रधार करने में सुविधा रहे और जनता उस व्यक्ति में श्रद्धा के कारण इन विचारों को भी स्वीकार कर ले । उदाहरण के लिए साम्यवादी देश अपने सिद्धान्तों का प्रचार मार्क्स लेनिन माओ आदि के नाम से करते रहे । भारत में कछ विचार गाँधीजी और नेहरूज़ी के नाम से जोड़ दिए जाते हैं।
- 4 परिस्थितियों एवं दृष्टिकोणों का उपयोग एक कुशल प्रपारक नवीन परिस्थितियों और दृष्टिकोणों को अपने हिल के अनुसार मोड लेता है और उसी रूप में उनकी व्याख्या आर पुरिच्छापा के जिन्हा रहा व ज्युकार नाव त्या है कार उत्तर कर ने उपना व्याख्य करता है। हिटलर ने प्रधम विश्वयुद्ध के बाद जमिनी के अपमान होते आर्थिक मन्दी की स्थिति का लाम उठाते हुए अपनी शक्ति वृद्धि की और जनता का समर्थन प्राप्त किया। पामर तथा पर्राक्ति के मतानुसार प्रत्येक प्रधारक प्रधलित दृष्टिकोण से लाम उठाकर उन्हें ऐसी दिशा में मोडने का प्रयास करता है जिससे उसका हित साधन हो सके।

4 स्वीकृति प्राप्त करने के साधन (Methods of Gaining Acceptance)

प्रचारक द्वारा प्रयास किया जाता है कि दूसरे राज्य उसकी मीतियों को यथासम्ब स्वीकार कर लें। ऐसा करने के लिए वह स्वय को प्रचार के साथ एकीकृत कर लेता है। प्रमावित लोग तभी सच्चे दिल से स्वीकृति प्रदान करते हैं जबकि उन्हें वह अपना ही विचार दिखाई देता है।

प्रदार पर स्वीकृति प्राप्त करने का दूसरा तरीका धर्म और जाति को प्रमावित करना है। इसके द्वारा दो राज्यों के लोग आपस में अपनाल की मावनाओं का अनुसव करते हैं और इसलिए वे ऐसे राज्य की नीतियों को स्वीकार करने लगते हैं।

स्पष्ट है कि प्रचार-कार्य को प्रभावशाली बनाने के लिए सजन प्रयास किए जाते हैं। यहाँ एक बात स्मरणीय है कि प्रत्येक प्रचार को विरोधी प्रक्रिया का सामना करना पडता है। विरोधी पक्ष न केवल उस प्रधार का समुधित उत्तर देता है वरन् उसे दबाने व कुथलने के लिए अपने प्रधार-सन्त्र को तेज भी कर देता है। प्रधार के क्षेत्र में प्रतिक्रिया और प्रतिस्पर्दा स्वामाविक होने के कारण दिरोधी प्रधार के खण्डन को प्रधार का ही एक भाग बना लिया जाता है। विज्ञान की प्रगति के साथ ही प्रचार के अभिनव साधनों का प्रचलन होता जा रहा है । परिस्थिति और आवश्यकता के अनुसार प्रयार की प्रक्रियाएँ और विधियाँ बदलती रहती हैं। ऐसा होना प्रचार-कार्य की प्रमावशीलता के लिए जरूरी है।

क्रमतनाली प्रचार की आवश्यकताएँ

(The Requisites for Effective Propaganda)

प्रचार को प्रभावशाली बनाने के लिए कुछ बातों का ध्यान रखना उपयोगी होता है। हमान पा प्रमाणकात कारा पा लाइ पुर बावा का व्याप एवना वर्षयामा हाता है। इसमें श्रीताओं की वर्ष मनोविहान तथा सामृतिक दृष्टि आदि का ध्यान एका जाता है। प्रमातित विश्वय को सरत और देखने सुनने तथा पढ़ने योग्य बनाया जाता है। ये सभी बातें प्रमार-कार्य को प्रमाणी बनाती है। ये मुख्यतः निम्मतिखित हैं—

1 प्रमार-कार्य की वस्तुगतता विभिन्न समाचारों और सूचनाओं को यथासम्भव तथ्यगर ह असार कार का प्रमुक्ति का अवसर रूप से प्रकट किया जाना चाहिए और ओताओं को स्वय हैं। निर्णय पर पहुँचने का अवसर देना चाहिए । सीधी और बिना मिलावट की बातें अधिक प्रमावी सिद्ध होती हैं। जो समाधार अमिकरण वास्तविक तथ्य प्रकट करता है वह शीघ ही लोकप्रिय हो जाता है।

2. बढ़ा डूठ और उसका दोहराव प्रयार को प्रमायी बनने के लिए कोई बढ़ा डूठ बेला जनता है और उसे क्षेत्र कर दोहरया जनता है। समन्य जनता ऐसी स्थित में यह समझने लगती है कि सम्मदन यह स्वय होगा। वहाँ समायर के दूसरे स्ट्रोर्स यर नियन्ना रखना जनते हैं जनते हैं निक प्रस्ता दिरोपी बार्च प्रचारत होने पूरे।

3 सरसता समान्य जनत के मिल्क पर सरस नारों का प्रमाद अधिक पढ़ता है। दह दिनेज राजनीतिक और अर्थिक निवासपाओं के सम्बन्ध में तर्क-दिदर्क सुनने की अपेटा सरस नारे सुनना अधिक पतान्य करती है जैसे—सीदेदत और चीनी प्रमार में यूजीमिटों के लिए प्रतिक्रेय क्यी काजुन्ता ताक्रान्यक्यी जैसे नारों का प्रयोग किया जाता रहा। दूसरी और परिवसी गुट अपने त्या अपने साथियों के क्षेत्र को स्टान्ज ससार काकर सम्बन्धित करते हैं।

4 रुपि एवं आरुषी। व्यक्ति को केदल दही बात प्रमादित करती है जो एसे रुपिकर लगती है। रुपि की बात प्राप्त बही होती है जो एक देश के हिन्दों से सम्बग्ध रहती है। उदाहरा के लिए एपिए। और उन्में का के राज्य अपने दिवास की बातों में अधिक रुपि लेते है। प्रधानकार राज्य अपनी बात कहने के साथ साथ औरता राज्य की सास्त्याओं में अपनी रुपि खान काला है।

र सन्दर्भ एव प्राचाणिकता ज़द बोई बाद आहारी से सुनद्भ में आ जारी है और उसके सम्बन्ध में कोई मन नहीं सहता हो सुनदे बादे अधिक प्रमादित होते हैं। जिटल और उसकी बादें बोई स्थाई जीर सादक प्रमाद नहीं हत्तारी हैं। स्टाट और प्रमाणिक बादें जीवाओं हार प्रदेशहर्ज जारी है और इसकिए उनका प्रमाद गारा और खातक होता है।

6 स्थानीय अनुनद एव दृष्टिकों से संस्करचा प्रत्येक प्रसार केदल लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए ही नहीं किया प्रणा बरन चरकी पीठत प्रतिक्रमा प्रणा करने के लिए सी किया चरण है। इसके लिए स्यानीय करियों, अनुनती और दृष्टिकों ने का ध्यान एखना करियाँ है। सीचेदल प्रमार में विकासिल देशों में एकरा, सानन सनस्थानों के योर में दिसनेशा केदा था। एसिया और अक्रीका में सान्यवादी प्रसार इसलिए प्रमाशकारी बन सना था वर्षों के चर्चन सम्यान्यवादी, मूंजीवादी और श्रीशाकरी नीचियों का दिशेय कर निवास का स्थान हिराया करना करना करा।

7 स्थित्व प्रसार कर्य हमेश एक पैसा नहीं एस्टा है किर भी समान श्रेणकों के लिए एक सी सम्मानकों पर स्थित हिमार प्रकट करने से व्यवहर में स्थित समस्वर्षे स्थात हो जरते हैं। शिल्टारा और स्थित्वा हिसी प्रमार को प्रमार को प्रमार ने नाने में स्थापी शिक्ष होते हैं।

शान्ति और युद्ध के दौरान महाशक्तियों के प्रचार यन्त्र (Propaganda Machinery of Great Powers during War and Peace)

प्रवार सम्मयी एक चेदान्तिक विदेवन के साथ सत्य प्रमुख राज्यों के प्रवार यान्त्रें का कार्य्यन करना भी चरपेगी होगा। यहाँ हम चतुक राज्य क्षेत्रीरम् और सीदेवत स्वयं के प्रवार यांना का उल्लेख करेंगे राजि राजनय में प्रवार के स्वराणिक महत्व को साम्रा ला सके। संयुक्त राज्य का प्रचार यन्त्र (Propaganda Machinery of U.S.A.)

संपक्त राज्य अमेरिका ने साम्यवादी खतरे का मुकाबला करने के लिए अपना प्रवाद यन्त्र तेज किया। प्राप्तम में संयुक्त राज्य मुनरो रिखाना का अनुसरण करने के कारण प्रयाद की आवस्यकता से अनुसिंध था किन्तु युद्धकाल की परिश्वितयों ने छसे प्रयाद के महत्त्व से अवनाद कराया।

दितीय विश्वयुद्धकातीन प्रचार युद्ध के समय संयुक्त राज्य ने दिदेशों में मनोवैज्ञानिक और पाजनीतिक युद्ध फेड़ों के लिए विशिव संस्थार गिरित की। इनके द्वारा जर्मन चरित्र को गिराने का प्रचास किया गया। युद्धकाल में मित्र शर्मों के दिव्यों स्टेशन प्रमान कर थी। ये मुख्यत तीन प्रकार के थी—जो स्टेशन जर्मन नागरिकों के लिए समायात और प्रमान प्रमान कर होते हो है उन्हें स्वेत स्टेशन (White Station) कहा जाता था। यूसरे प्रकार के दिव्यों स्टेशन मित्र राज्यों के होते हुए भी अपने आपको जर्मन प्रतिक करते थे। इनका प्रदेश युक्त के भाम में दालना और तम बात की प्रानवश्यों के लिए मित्र राष्ट्रों को प्रसार जान की की की प्रमान की स्वान और तम बात की प्रानवश्यों के लिए मित्र राष्ट्रों को प्रसारण सुनने के लिए प्रेरित करना था ये काले स्टेशन (Black Stations) कहताते थे। सितर यूर्स (Cicy) स्टेशन थे। जो न जर्मन होने का यात्र करते थे और न मित्र राष्ट्रों के होने का। युद्ध के अलिम दिनों में कुछ कमार्थिय जनतानों ने अधिम टैकों पर लाउडस्पीकर लगा दिए ताकि राष्ट्रों को कार्याक हरते हैं।

युद्ध में संयुक्त राज्य अमेरिका का प्रचार मनौदेशानिक युद्ध के प्रधास पूर्णत सफल नहीं हो सके । उनकी सभी नीतियों को शत्रु द्वारा पहले से ही अपनाया जा रहा था । मित्र राज्यों की असफलता के मुख्यत दो कारण थे—

 प्रारम्प में प्रधार के लिए जो उच्च स्तरीय योजनाएँ बाई गई थी उनको क्रियानित नहीं किया जा सका। यदि जापान के मनोबल को प्रधार द्वारा गिरा दिया जाता तो यही परमाण इम गिराी की आवश्यकता न होती।

2 सतुक राज्य ने अपने प्रयाद में जर्म है के सामान्य नागरिकों और प्रशासन में कोई ग्रेप्ट मही किया अत वहीं के नागरिक यह सोम्पेन तेनों के अमिरिका केवल माजी सरकार का नहीं बन्दा जानता का मी दुम्मन है अत उनमें नोजी प्रमातन का पूर्व समर्थन किया । नाजी प्रयाद यन्त्र के समातक गोयेबल्स ने कहा था कि यदि में शतु के यह में होता तो प्रयाप दिन से ही नाजीवाद के दिक्द लड़ने का नाय लगाता न कि जर्मन जनता के हिक्ट !"

मुद्ध के बाद अमेरिकी प्रमार ितीय विश्वयुद्ध के बाद समुक्त राज्य का प्रभार यन्त्र अधिक सक्रिय बन गया। वान् 1943 के रिमयमण्ड एक्ट के अनुसार अमेरिकी जनता और विश्व की जनता के बीद सद्भावना स्थादित करने का निर्णय दिया गया। वन् 1951 में विदेश विभाग के अत्यार्थत एक पृथक अभिकारक अन्तर्याष्ट्रीय शुक्ता प्रसारण (IIA) स्थापित किया गया। । अभारत 1953 को अमेरिकी राष्ट्रपति ने समुक्त राज्य सुधना अभिकरण (USIA) की स्वतन्त्र कार्याव्य के स्था में स्थापना की और इसे समुद्र पार के सूधना कार्यक्रम का एक्सर्यायिक सींधा।

सपुक्त राज्य सूचना अभिकरण ने अनेक देशों में अपनी सूचना चौकियों स्थापित की हैं। वह असाम्यवादी देशों के हजारों सभाचार पत्रों के लिए करोड़ों की सख्या में पर्य विशेष

158 राजनय के सिद्धान्त

सामग्री व्यग्य वित्र पोस्टर आदि मेजता है। वींइस ऑफ अमेरिका (Voice of Amenca) भी इसका महत्वपूर्ण भाग है। यह लगमग 38 भाषाओं में प्रतिदिन 24 घण्टे प्रसारण करता है। इसके अधिकारा प्रसारण केन्द्र साम्यवादी देश होते थे। तेकिन नब्बे के दशक में पूर्वी पूरोप से साम्यवाद के पतन और दिसम्बर 1991 ई को सोवियत साम के विचटन के बाद साम्यवादी शिविर की स्थिति में गुणात्मक परिवर्तन आ है। वर्तमान विचटन के सार्व्यादी शिविर की स्थिति में गुणात्मक परिवर्तन आ के केन्द्रत नहीं है।

अभेरिकी प्रचार का अधिकाँश माग प्रतिक्रिया के रूप में है। इसके अतिरिक्त दिदेश नीति की मुख्य बातों को भी प्रचारित किया जाता है। वर्तमान में सयुक्तराज्य अमेरिका के प्रचार में परमाणु हथियारों के निषेप और मानदाधिकारों पर अधिक बल दिया जा रहा है।

सौदियत सध का प्रचार यन्त्र

(Propaganda Machinery in U S S R)

हितीय विश्वपुद्ध से पूर्व सोवियत साथ के प्रधार का तस्य पार्टी तथा सरकार के तानाशाही नियन्त्रण को सगठित करना अपने कार्यक्रमों के अनुयायी बदाना तथा जनता को मातृपूमि के लिए दु ख उठाने, त्याग करने तथा प्राण देने के लिए वैयार करना था। यहीं जारशाही को उखाड फेंकने के लिए एक मुद्धा हियागार के रूप में प्रधार का प्रयोग किया गया था। क्रान्ति के अगुआ यह जानते थे कि शक्ति के अमाद में प्रधार ही उनका महत्त्वपूर्ण शस्त्र है।

विश्वयुद्ध से पूर्व प्रचार हितीय विश्वयुद्ध प्रारम्म होने से पूर्व सोदियत प्रचार की निम्नतिथित विशेषताएँ गीं—

- 1 यह प्रचार देश के सभी क्षेत्रों के सभी दगों को प्रमादित करता था।
- 2 साम्यवादी ने अपने प्रचार के लिए नहीन हार्झों का चयन किया । अपने पस में तथा विरोधी पस में अत्यन्त प्रमावशाली शब्दों का प्रयोग किया गया । बाद में ये शब्द साम्यवादी सत्तार में अत्यन्त लोकप्रिय बन गण ।
- 3 साम्यवादियों ने अनेक नए नारों तथा प्रतीवों का उपयोग किया, जैसे सितारा लाल और हथीडा व हैंसिया !
- 4 प्रमार कार्यों में अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी आन्दोलन को महत्व दिया गया । इस हेतु कामिण्टर्ग (Cominicm) आदि सत्याओं का गठन किया गया । यह सत्या दिख के अन्य देशों के साम्यवादी दतों को निर्देशन देने तथा छन्हें सोवियत साप के अनुकूल नीति अपनार्ग की देरण देने का कार्य करती थी ।

क्रिजीय निरमपुद्ध के बाद सोवियत प्रचार जब दूसरा विश्वपुद्ध समान्य हो गया वो सोवियत साथ के प्रचार की प्रक्रिया और वहंदगों में पर्यन्त अन्तर आ गया। उसका प्रचार अन्वर्राष्ट्रीय अधिक बन गया और यह शीत पुद्ध की दृष्टि से प्रेरित होने लगा। युद्धोत्तरकात में इसके प्रचार की निग्निविद्यत उल्लेखनीय विशेषतार्थ थी—

- 1 मुख्य रूप से अर्देविकसित या अदिकसित देश सेवियत प्रचार का क्षेत्र बन गए।
- 2 इस प्रचार में साम्यवादी जीवन के तौर तरीकों की प्रशास की गई और पूँजीवादी राष्ट्रों के अत्यादारों तथा शोषण का राक रचित छित छीवा गया।

आपुनिक राजनय में प्रचार—युद्ध और शान्ति के दौरान राजनय 159

3 विभिन्न देशों में साम्यवादी आन्दोलनों को उकसाया गया तथा उनका समर्थन किया गया।

4 सोवियत प्रधार ने सपुक्त राज्य द्वारा विनित्र देशों को दी जाने वाली आर्थिक और देनिक सहायता को उसकी साम्राज्यवादी नीति का प्रतीक बताया । पत्रों एव लेखी द्वारा इस बात का सुवक्त प्रधार किया ज्या कि अमेरिका स्वारत को मुलाम बनाना घातता है। 5 सोवियत स्वार्थ ने शानित का अभियान प्रारम्भ किया । उसने प्रचार द्वारा स्वदेश और विदेश को जनता को यह बताने का प्रधास किया कि यह शान्ति प्रेमी है और शान्ति स्वापना के लिए मिलानिकरण का पास तीता है।

दिसम्बर 1991 ई में सोवियत साथ विश्व मानधित्र से समाप्त हो गया है। अतिन राष्ट्रपति के रूप में मिखाइस गोबीम्योव ने अपने पर से खागापत्र देने की घोषणा की। सोवियत साथ के अवसान के सत्य ही प्रयार तत्र का एक अध्याय समाप्त हो गया। उपर्युक्त दिरारोषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि राजनव में प्रयार तत्र का अध्यन्त

महत्व है।

राजनय और महाशक्तियाँ—राजनय और अन्तर्राष्ट्रीय कानून

(Diplomacy and Super Powers : Diplomacy and International Law)

राजनय अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के शानितपूर्ण समायान तथा राष्ट्रों के मध्य सन्तुलन एवं मित्रता को बनाए रखने का एकमात्र सायन है। अत उपयुक्त हैं कि हम अमेरिका और सोवियत क्स—इन दो महाशक्तियाँ (Super Powers) के राजनय का अध्ययन करें। मध्यिक्यों का राजनय विश्वक के विभिन्न देशों के राजनय को प्रमावित करता है और यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि आज विश्व राजनय का सम्पूर्ण ताना-बाना इन महाशक्तियों के राजनय पर आदित है।

> संयुक्तराज्य अमेरिका का राजनय (Diplomacy of the United States of America)

संयुक्त राज्य अमेरिका विश्व का एक महानतम् प्रजातान्त्रिक राष्ट्र है जिसकी विशेश नीति की प्रकृति और व्यवहार का जिसके राजनय का सम्पूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर महत्वपूर्ण प्रमाव पडता रहा है।

प्रथम महायुद्ध के पूर्व अमेरिकी राजनय

संपुक्तराज्य अमेरिका का एक राष्ट्र के रूप में जन्म 1776 के अमेरिकी स्वातन्त्रय-स्वाम के फलस्वरुष हुआ था। अपने जन्म-काट की अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों से दिवस होत्य अमेरिका को इस गए पानदन्त्र की तरस्वात और पुचकतावादी मौतिक का सहात सेना पदा। 1797 में प्रम्य राष्ट्रपति वाशिगटन ने अपने विदाई-माणण में गृयकतावादी नीति का सम्बोकरण करते हुए कहा था—"विदेशों के सास्त्र्य में हमारे व्यवहार का महान् यह सिप्यक है कि हम एके साथ व्यापारिक सम्बन्ध तो रखें किन्तु वाजनीविक सास्त्रय व्यवहार का से कम सर्थे। हमारी सम्बी नीति यह है कि हम दिदेश के किसी भी माग के साथ स्थाई सचियों ने करें।" मुक्ति अमेरिका यूरीप के झगडों से विस्तृत पृषक् और तरस्य रहक अपनी उनति करना घाडा। था इससिए रसकी नीति को प्यवन्तावी कहरूर सम्बदित किया गाया। इस सन्दर्भ में यह व्यान देने योग्य बात है कि अमेरिका की यह पृथकता केवल यूरीप के मामतों तक ही थी। विसर्क करना मागि के सिप यह पृथकता नीति नहीं अपनार में परम्परागत पृथकतावादी गीति का परित्याग करने को बाध्य किया तो 1900 में धीन के बाक्सर विद्रोह में अमेरिकी सेनाओं का हस्तक्षेप हुआ तथा सामान्य सुदूरपूर्व के मामलों में अमेरिका ने गहरी दिलग्रम्थी एकट की ।

तटस्थता और पृथकतावादी अमेरिकी नीति को सिद्धान्त रूप में राष्ट्रपति जैकरसन (Jefferson) ने 1801 में इस प्रकार प्रकट किया---"सानिपूर्ण व्यापार सब के साथ झझट पैदा करने बाली सनिध्यों किसी के साथ भी नहीं।" इसका आगय यहि है कि क्रोनिका पुरोपीय देगों के साथ व्यापार करें लेकिन परोपीय साजनीति के फट्टे में न फैसे।

सन् 1823 ई में मुनरों सिद्धान्त (Monroe Docume) के प्रतिपादन से अमेरिकी दिरेस मौति और राजन्य के इतिहास में एक नये युग का सुत्रपत हुआ। सन् 1823 में जब प्रियोग और रुक्त के पवित्र साथ ने स्पेन में निरकुत्त शासन के विद्ध हुई क्रान्ति को कुपतों के बाद परोन के दिख्य आप्दोलनों को दूसरों के बाद परोन के दिख्य आप्दोलनों को दसना पाहा हो 2 दिसम्बर 1823 को तत्कालीन अमेरिकी शाष्ट्रपति मुनरों ने यूरोपीय राज्यों को अमेरिकी महाद्वीय के मामलों में हस्तवीय न करने की घेतावनी देते हर ऐतिहासिक प्रियोग आप्दोल में के स्वार्थ में स्वर्धाय के मामलों में हस्तवीय न करने की घेतावनी देते हर ऐतिहासिक प्रियोग की अमेरिकी महाद्वीय के मामलों में हस्तवीय न करने की घेतावनी देते हर ऐतिहासिक प्रियोग की

- "हम यह जता देना घाहते हैं कि यूरोपीय शक्तियों के युद्धों में हमने कभी माग नहीं लिया और न कभी भाग लेने का हमारा विचार है। हम इनसे सर्वधा प्रथक रहे हैं।"
- 2 ''हम अपनी शान्ति और सुख की दृष्टि से अमेरिका के किसी भी माग में यूरोपीय शक्तियाँ की राजनीतिक सत्ता का विस्तार नहीं होने देंगे और दक्षिणी अमेरिका के गणराज्यों की स्वतन्त्रता में किसी हसरक्षेप की सहन नहीं करेंगे।''
- 3 "अमेरिकी महाद्वीप का कोई प्रदेश मिक्य में यूरोपीय शक्तियों द्वारा उपनिवेशन (Colonisation) का क्षेत्र नहीं बनाया जा सकेगा।"

राष्ट्रपति मुनरो ने यह स्पष्ट कर दिया कि यदि किसी यूरोपीय राष्ट्र द्वारा अपनी प्रणाती को अमेरिकी गोलाई में फैलाने का प्रयत्न किया गया तो समुक्तराज्य अमेरिका एसे पूर्णत अमेत्रीपूर्ण कार्यवाही प्रमदेशा । स्पष्टत मुनरो सिद्धान्त पूरीपीय राज्यों की एक पेतादानी भी के के अमेरिका प्राद्धीयों में साम्राज्यावादी भेटाओं से दूर रहे । सास हो यह एक आखासान भी था कि अमेरिका भी यूरोपीय झगडों से अलग रहेगा । दूसरे शब्दों में मुनरो सिद्धान्त का अर्थ था तुस पृथक रहे हम भी पृथक रहेंगे । यह सिद्धान्त अमरीकी महाद्वीयों के मामतों में समुक्त राज्य अमेरिका की सर्वाच्यता के सिद्धान्त की पोषणा करता

मुनते सिद्धान्त सन् 1821 ई में अपने प्रतिपादन से प्रथम महासुद्ध तक पूचकतावादी गीति के साथ साथ शुवाक रूप से चलता रहा । अमेरिका के लिए इन दोनों आधारों पर अपित दिशे गीति व राजन्य का सामान सी वर्ष वक सुवाक सवाबन इसलिए सम्मव हुआ कि इस बीच विश्व में शानित सन्तुवन काना रदा जिनके तीन कारण थे— (1) अटलांटिक महासागर और अन्य समुद्धों में ब्रिटिश नी शक्ति के प्रधानता तथा ब्रिटिश अमरिकी मित्रला (2) यूरोपीय महाद्धीम में सिंकि सन्तुवन कायम रहना कथीकि नेपोलियन के बाद यूरोप में केंबर के अम्युव्धान से पाइले तक कोई देशों सीकि वर्षित हो है की समूर्य मुंदी में ब्रिटिश देशों से स्वर्ध के सार्व पढ़ियों से कहा के स्वर्ध पढ़ियां में हारी होती अथवा ब्रिटिश सामाज्य को हानि पहुँचाती तथा (3) यूरोप

162 *राजनय के सिद्धान्त*

या एशिया में किसी शांकि या शांकियों के ऐसे गुट का अमाव रहा जो सयुक्तराज्य अमेरिका अधवा दिशन अमेरिका को हानि पहुँचा सके । शांकि सन्तुतन के इन तीनों कारणों की समीक्षा करते हुए शूमैन का कथन है हि 'जब तक ग्रेट ब्रिटेन की शांकि सर्वोच्या बनी रही तब तक समुक्तराज्य अमेरिका पूचकताचादी नीति पर घतता रहा और इसके 'मनुकूल तटस्थता (Ncutrality) समुद्रों की स्वतन्त्रता (Frecdom of the Scas), तटस्थ देशों के व्यापारिक अधिकार्य सुदृष्पूर्व में सब शक्तियों को व्यापार के समान अवसर देने की मुक्त हार नीति (Open Door Policy) का समर्थन करता रहा !"

प्रथम महायुद्ध काल में अमेरिकी राजनय

सन् 1914 ई मे प्रयम महायुद्ध का आरम्म हो जाने पर सायुक्तराज्य अमेरिका के लिए परम्परागत पृथकतावादी नीति पर चलते रहना सम्मव न रहा । सन् 1901 मे रूजवेल्ट अमेरिका के राष्ट्रपति निर्विदित हुए और उन्हीं के समय से अमेरिका विश्व राजनीति में गरही रिघे ते तथा । इस समय एकाएक यह अनुमव किया कि वह वास्तव में विश्व की एक महान शांकि है जिसे विश्व की समस्याओं से विरक्त नहीं रहना चाहिए । इसके प्रयम शिकार लेटिन अमेरिका के पढ़ीसी देश ही हुए, यदापि साथ ही अमेरिका अन्य अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं मे नी किंग्र प्रवर्शित करता रहा । सन् 1905 में रूस रूपान युद्ध का अन्त कराने के लिए राष्ट्रपति रूपवेल्ट ने सकलतापूर्वक हस्त्येष किया । सन् 1905 में प्रणान सपर्व युद्ध हुआ अनेतिका ने इस मामले में मी मध्यस्यता की रूपा फॉब और जर्मनी में सीच बचाव कराकर यूरोप मे शानित को भग होने से बचाया । इसके अतिरिक्त रूजवेल्ट ने हेंग यस न्यायत्त्य का सम्बर्गन किया और रही दो कड़े अन्तर्राष्ट्रीय मुक्टने मेजें । लेकिन इसना होने पर नी अमी राक अमेरिका त्या को सुरेष के प्रगार्ड से दूर रखकर स्थासम्य सटस्थता की नीच पर ही उटा रहना वाहता था ।

सन् 1914 में प्रथम महायुद्ध ग्रिक्ते पर समुक्तराज अमेरिका ने यूरोप के युद्धों से

पूचर एटने की परण्यागत गीतें के अनुसार तटस्यात वो घोषणा की, प्रश्नि आरम् से ही यह भी अगास होने लगा कि अमेरिका के लिए इस युद्ध से पूर्पतः पूचरुएय अमारिका यह काला सम्पन्न गति सेगा। समुक्त राज्य अमेरिका का दिव मित्रपद्धों के दिजय में सीनिक्त या। जर्मनी वो दिजय से अमेरिका को न केवल मीर्मा अधिक हाति होती अपितु इससे युदेष का शिक समुद्धा सिक्त सम्पूर्त दिवा में जर्मनी के हाथे के को आवश थी जिससे अमेरिका वो सुराय भी सकट में यह सहती थी। इन सन्ति राष्ट्रीय स्वया में अमेरिका में इस प्राराण को सहत दिया कि सिन्दुराष्ट्री के दिवा सेनी या। इन सन्ति प्राराण में सहत प्रश्निय स्वया ने अमेरिका में इस प्राराण को स्वत दिया कि सिन्दुराष्ट्री के दिवा होती अपित्र होनी ही चाहिए। परितामस्वरूप अमेरिकी जनमानन में नित्रपद्धों के पत्त में बतादरण बनाया माया। अमेरिका ने बढ़े ही सकटाएस काल में नित्रपद्धों के पत्त में बतादरण बनाय माया। अमेरिका ने बढ़े हो सकटाएस काल में नित्रपद्धों के पत्त में पुढ़ होता होता। इससे वित्रपद्धों ने ने केवल असीनित मानवीय शिक ही नित्री, बहिक असीन वन खाद पदार्थ प्रश्नित और रह काल के मैरिक सेता की प्रश्नित में मूक्य स्वी करते हो है हित्ती असीक अमेरिका ने केवल असीनित मानवीय शिक होता प्रस्त में प्रस्त स्वी करते हो है हिता को प्रश्नित प्रमुक्त के काला के मैरिका सेता की प्रश्नित में मूक्त स्वी करते हो है हिता को पूप्त मित्रप्रपूर्ण के प्रमुक्त से करते हो है हिता को प्रार्थ में हम्म प्रस्त स्वी करते हो है हिता को प्रार्थ में प्रस्त स्वी करते हो हुई। क्रमेरिका को प्रार्थ माया अस्त कर चर्ची की महान प्रस्त करते को प्रार्थ माया अस्त कर चर्ची की स्वीपन प्रस्तुत की निष्य महा को प्रस्तुत करते की स्वीपन प्रस्तुत करते की प्रस्तुत करते के स्वीपन करता करते हो हमा स्वार्य करता करता हमा स्वार्य करता करता हमा स्वर्य स्वार्य करता हमा स्वर्य स्वार्य करता करता हमा स्वर्य स्वर्य करता हमा स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य से स्वर्य स्वर्य से स्वर्य स्वर्य से स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य से स्वर्य से स्वर्य स्वर्य स्वर्य से स्वर्य से स्वर्य से स्वर्य से स्वर्य स्वर्य से से स्वर्य से स्वर्य से स्वर्य

दिया। "तटस्पता की नीति अनेरिकी स्दायों की रहा में असमर्थ सिद्ध हुई थी, अत. प्रयकता

के स्थान पर यूरोपीय महासागर में भाग लेने की नीति अपनाई गईंगे' जिसके फलस्वरूप विजयी जर्मनी पराजित जर्मनी में बदल गया और 13 नवम्बर 1918 को जर्मनी ने बिना शर्त आत्मसमर्पण कर विराम-सन्तिय पर हस्ताक्षर कर दिए।

दो महायुद्धों के बीच अमेरिकी राजनय

प्रथम महायुद्ध के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति दिल्लान के चौदह सूत्रों को शास्ति-समझौते का राष्ट्रपति प्राथम साना गया। धेरित सम्मेलन मे एकत्रिक पाजनीतिकों ने दिल्लान के कारण ही राष्ट्रपत्त को स्तांक्ष्म ने स्तित्त के कारण ही राष्ट्रपत्त को स्तांक्ष्म ने स्तित के द्वारा ने साने स्तित के द्वारा न तो अमेरिका ने कोई मिजता-प्राप्ति का प्रयास किया और न ही कोई सत्त नगर। मार्च 1920 में सिन्दे में अस्तिम रूप से सत्तांक्ष्म किया और र कर दिया और नवसर 1920 में दिल्लान की जाड़ रिपोर्ट्सन ज्याचित का प्रयास किया और नवसर के प्राथम मित्र के प्राप्त मीति का अनुसरण करती रही थी। परिरिप्तियों से साज्य होकर ही अमेरिका युद्ध मं सामितित हुआ या मित्रपाष्ट्रों के सत्तक प्रयुद्ध-मधार तथा जर्ननी की नीति कुशतला की कमी ने अमेरिका को युद्ध मं परिर्प्ति की साम किया हुआ या सामित्रपाष्ट्रों के सत्तक पुद-मधार तथा जर्ननी की नीति कुशतला की कमी ने अमेरिका को युद्ध मं परिर्प्त की तथा अस्त के साम को स्ति का अनुसरण करती रही का अमित्रपत्र के सत्तक पुद-मधार तथा जर्ननी की नीति कुशतला की कमी ने अमेरिका को युद्ध परिर्प्त अमेरिका के साम को स्ति का अमित्रपत्र के स्ति अस्त अस्तिका को स्वाप्त के स्ति अस्त अस्तिका को किया रहना अस्ति के अमेरिका को स्वाप्त करता के स्ति के अमेरिका के कियार रहना। अस्त अमेरिका ने पुत्र अमित्रपत्र के स्ति का अम्तरप्ति में दिलससी तेने का अस्ति के अमेरिका ने पुत्र अमित्रपत्र को सुकर करता है स्ति का अम्तरप्ति में दिलससी तेने का अमित्रपत्र को सुकर कर के पुष्टकतावादी नीति का अम्तरप्त विधा ने अमेरिका ने पुत्र अम्तरप्ति को स्ति का अम्तरप्त विधा में स्ति का अमित्रपत्र को सुकर का स्ति प्रस्ता नीति का अम्तरप्त विधा स्ति का अमेरिका ने प्रस्त स्ति स्ति का अमित्रपत्त को सुकर को स्तरप्त विधा नीति का अम्तरप्त विधा सामित्रपत्त विधा स्ति का अमित्रपत्त स्ति का स्तरप्त सित्रपत्त स्ति का स्तरप्ति सित्रपत्त को सुकर कर के प्रस्ति सित्रपत्त सित्रपत्त सित्रपत्त सित्रपत्त सित्रपत्त को सुकर कर के प्रस्ति सित्रपत्त सित्रपत्त सित्रपत्त सित्रपत्त सित्रपत्त सित्रपत्त सित्रपत्त को सित्रपत्त को सित्रपत्त सित्रपत्

परमाने को अमेर के अमेरिको विदेश सीति और राजनाय को सटस्थता का पूरा जाम पहनाने की भेरता करते हुए दिल्लन हुग्त दिने गए वधनों और कामप्राध्यों से मैं अपने देश को मुक्त कर तिला है किन पूर्व करता हुए दिल्लन हुग्त दिने गए वधनों और कामप्राध्यों से मैं अपने देश को मुक्त कर तिला है किन पूर्व करता हुए दिल्ला हुग्त है सित की मुक्त कर दिला के सक्त दूर अमेरिका की कर विदेश के सार अमेरिका ने एक ऐसी सीति का पानन बित्या जिसे न्यार्थित तथा अन्य परिश्वतियों के बाद अमेरिका ने एक ऐसी सीति का पानन बित्या जिसे न्यार्थित करा या सकता है। यह एक ऐसी नीति थी जिसका उदेश्य उत्तरदादिक को वहन किए दिना प्रतिक और प्रतिकार की प्रतिक पान किन करते हुए सी सुवक उत्तर्थ प्रतिकार के भी भीत्रण करते हुए सी सुवक उत्तर्थ करते हुए सी प्रवक्त करते हुए सी प्रवक्त करते प्रतिकार करते हुए सी प्रवक्त करते प्रवक्त की सीत्रण करते हुए से अपने प्रतिक की भीत्रण करते हुए से अपने सित्य के प्रविक्त करते हुए से अपने क्षेत्र के प्रतिकार करते हुए से अपने क्षेत्र के साथ अपने सित्य से अपने साथ से देश में अदस्था करते हुए से अपने क्षेत्र में में स्वत्यक्त दिव्य से साथ से प्रवक्त करते हुए से अपने क्षेत्र में में स्वत्यक्त दिव्य से स्वत्य अपने से के साथ के साथ अपने से साथ से प्रवक्त में में स्वत्य के साथ अपने में के स्वत्य करते हुए से अपने से अपने साथ से साथ से अपने से स्वत्यक्त के से साथ के साथ अपने से साथ साथ से साथ से साथ साथ से साथ से साथ से साथ साथ साथ से प्रतिकार करते हुए से अपने से साथ साथ साथ स्वत्य से साथ से साथ से साथ साथ से साथ से साथ साथ साथ से साथ से साथ से साथ से साथ से साथ से साथ साथ साथ साथ से साथ से

सरका में सम्पन्न 13 सनदीलों से सलाम या और 1934 में अमेरिका अन्तर्राष्ट्रीय श्रम-सगठन का सदस्य मी बन ग्रम ।

नदम्बर 1933 में राष्ट्रपति रूपवेल्ट ने सोदियत सरकार को मान्यता प्रदान कर दी। दोनों राष्ट्रों के मारस्परिक कुटनैंटिक सम्बन्धों की स्थापना के साथ ही राष्ट्रपति कारदेल्ट और सेटियत मन्त्री लिटदिनेद ने रूपनी-रूपनी सरकारों के नाम पर प्रम किया कि (1) दे दोनों देशों के व्यक्तिगत जीवन की स्ट-व्यवस्था के अधिकार का आदर करेंगे और एक-दसरे के आरतिक मानलें में इस्तहेन नहीं करेंगे 1 (2) दोनों देशों में सरकारी कार्यों में लगे मगी कपिकारी और सरकार से सम्बन्धित समी सग्रतन किमी मी प्रकार की म्यप्ट और कम्पप्ट किया हारा दूसरे देश की शन्ति, उनति, व्यतस्था और सुरक्षा को हानि पहुँच ने का प्रयत नहीं वरेंगे ! (3) करने देश की क्षेत्रीय मीमा में किसी मी सराइन के निर्मात, निकस और वार्य की आजा नहीं दी जाएगी को दूसरे देश की सरकारी और हेर्ज़ य एकटा को खटरा प्रतित हो। (4) किसी भी ऐसे समूह या सगटन के निर्मान और उस समूह या साउन के प्रतिनिधे क्षितारियों के निवास पर प्रतिक्य लगाया उत्पाद जिनका स्टेश्य दूसरे देश वी सरवार को पलटना अददा उस देश की सामाजिक और राजनीटिक व्यवस्था में जबरदस्ती परितर्नन रूपने का प्रयत्न करना हो । राष्ट्रपति कजदेस्ट ने दिनियम बुनिट (William Bulliu) को मेरियत संघ में पहला राजदूत बनुया । मान्यता के उपरान्त मी मारवी और विधारत राजनय अधवा कूटनीति के क्षेत्र में स्टाने ही दूर रहे जिटने में पेलिक हेत्र में थे। दिल्यन दुलिट और जोसक देदिज की क्याक्ता में जो कर्यनन्दल मान्ही गर लेकिन चनमें रहित रतनाह की कमी थी। इस दे नर सोदियत-इमेरिकन सम्बद्धी को बढ़ा नहीं पार । वाकिएटन में सोदिय्त दूर दूरानोदस्की (Troyzpovsky) मी बनेरिका की प्रयवना की दीवार को हदाने में सकत नहीं हो सके। बलिट ऐसा महत्ताकारी राज्यत संदियत स्थ के साथ अच्छे सक्य स्थापित करने में सफल नहीं रहा।

अगस्त 1936 में राष्ट्रपति ने जीसक ई डेविज (Joseph E Davies) को मास्को के अमेरिकन राजदूत के लिए बुलिट के स्थान पर मेजा । राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने बुलिट की उपृथ्यल प्रकृति वो ध्यान में रखते हुए ढेविस को सोवियत अधिकारियों के साथ व्यवहार में प्रतिष्ठित रूप मे आत्मसयम और औपचारिकता का रवैया अपनाने की सलाह दी । नए दूत को यह भी कहा गया कि वह सैनिक और आर्थिक पहलू के रूसी शासन को शक्ति की स्थिति के प्रति आँखाँ देखी और व्यक्तिगत विचारों पर आधारित सूचना देने का प्रयत्न करे और यह भी पता चलाए कि यूरोपियन युद्ध होने पर सोवियत सरकार की नीति क्या होगी ?¹

एक राजनयज्ञ अथवा कूटनीतिज्ञ के रूप में अमेरिकन राजदूत डेविज मास्को में सफल रहा । उसे स्टालिन से मिलने का एक असाधारण विशेषाधिकार प्राप्त हुआ । स्टालिन डेविज वार्ता में रूस अमेरिका सहयोग और मतमेद के अनेक मुद्दों पर स्पष्ट दिधार विनिमय हुआ। लॅरिन्स स्टीनहार्ट (Lawrence Steinhardt) जो डेविज के बाद राजदूत बने मारको में अगस्त 1939 में ही पहुँच सके। अत एक वर्ष तक के समय के लिए मास्को में अमेरिकन द्वादास दिना किसी राजदूत के ही कार्य करता रहा । द्वितीय विश्वयुद्ध आरम्म होने के रामय क्स और अमेरिका राजनीतिक दृष्टि में अभी भी पुतने ही दूर थे जितने कि कूटनीतिक सम्बन्ध दार्ता के आरम्म होने से पहले या बाद में थे।

यूरोप में हिटलर की आक्रामक गतिविधियों ने स्पेनिश गृहयुद्ध में हिटलर और मुसोलिनी के खुले हस्तक्षेप ने तथा भीन पर जापान के आक्रमण ने रूजवेल्ट को यह विश्वास दिला दिया कि प्रयक्तावाद के विरुद्ध जनमत को जागत करने का समय आ गया था। फलस्वरूप बढ़ती हुई अन्तर्राष्ट्रीय अराजकता को दर करने के लिए 5 अक्टबर 1937 को राष्ट्रपति बब्दा हुई जनाराष्ट्राय जराजणा जा पूर करा च तर जु जबपूर्व 1931 जा राष्ट्रया रूजदेत्ट में क्रमेरिका के लिए तटस्वता के सिद्धाना को अरबीकृत किया और सामूर्टिक सुरक्षा के सिद्धान्त की प्रशस्त्र की । अपने इस माष्ट्रण में कजनेट्ट ने कहा—''सुटेरे राज्यों में आतक का राज्य स्थापित कर लिया है । इनके आक्रमणों को पृथकरावाद या तटस्ता से नहीं रोका जा सकता। अन्ततीगत्वा वे समुक राज्य को चुनीती देंगे। जब कोई ताक्रामक महामारी फैलती है सो समाज यह चाहता है कि इसके बीमारों को पृथक् स्थान में रखने की क्वारण्टीन व्यवस्था द्वारा महामारी को रोका जाए। अक्रान्ता राष्ट्रों को भी इसी प्रकार रोकना चाहिए।" वहाँ बहसख्यक पृथकतावादियों ने राष्ट्रपति की बड़ी असम्य माषा मे आलोचना की ।

अमेरिकी जनता की प्रतिक्रिया से जर्मनी और इटली में फासिस्टवादी शक्तियों को बड़ा प्रोत्साहन निला । जब डिटलर ने अपनी दृष्टि घेकोरलोवाकिया पर उत्तरी और म्यूनिख समझौता हुआ तो अमेरिका में भीषण प्रतिक्रिया हुई और रूजबैल्ट ने राजनय नीति मे परिवर्तन कर दिया जिसका उद्देश्य आन्तरिक सुधारों की अपेक्षा ससार मे सामृहिक सुरक्षा न पारवार कर हम्मा काराज उदस्य जागाहरू सुन्तार के अभाग तकार न कानुकूछ कुरता की नीति पर अधिक बल देना था। वास्तव में राष्ट्रपति कज्जेवर की पूर्वती पाराणा अस् और भी अधिक रपट और दृढ़ हो गई भी कि साम्राज्यवाद के बढ़ते हुए ज्वार के भीच तटस्थवादी नीति अमेरिकी हितों के प्रतिकृत थी। रूजवेस्ट को यह दिश्वास हो गया कि म्यनिख समझौते का अर्थ 'शान्ति' नहीं बल्कि युद्ध था।

[.] १ के के निश्चव इन्दुखना वही मृ140 50 2 डीएम पीरोंग वही मृ197

कुल मिलाकर दो महायुद्धों के मध्यकाल मे अमेरिकन बिदेश नीति और राजनय का मूल तत्व अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति से अलग रहता ही रहा । सयुक्तराज्य अमेरिका द्वितीय महायुद्ध मे तमी शामिल हुआ जब जापान ने पर्ल हार्बर पर 7 दितंपर 1941 को आक्रमण कर दिया। इस समय अमेरिकन राजनय का मूल मत्र खुला राजनय (Open Diplomacy) वा महाने उदारवादी अन्तर्राष्ट्रीयता (Liberal Internationalisation) के सिद्धान्त को जाम दिया।

द्वितीय महायुद्ध काल मे अमेरिकन राजनय

अमेरिका द्वारा जापान के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करने के साथ ही अब 'पुरानी दुनिया' तक सीमित युद्ध नई 'दुनिया' में भी प्रवेश कर गया और अमेरिका जैसा सबस तथा साधन-सम्पन्न राष्ट्र ब्रिटेन अर्डीस आदि मित्रराष्ट्रों के घड़ा में मैदान में आ गया । मरायुद्ध कात से अमेरिका ने अपनी महान् सीनेक शक्ति का प्रदर्शन किया जिससे शत्र-राष्ट्रों (लर्मनी जापान इटली आदि) की पराजय निश्चित हो गई । युद्ध के दौरान अमेरिका ने मित्रराष्ट्रों के पक्ष में अपने सीनिक मी झीके उन्हें सहसासन भी दिए और उनके लिए डालर की यैलियों में छोत दी । इस सीनेक और आर्थिक सहायता ने अमेरिका का सिक्षा जमा दिया और 'महायिक के रूप में उपय होने का उसका मार्ग प्रसन्त हो गया ।

महायुद्ध के प्रारम्भिक काल में रूस पर जर्मनी ने आक्रमण किया । पश्चिमी देश और अमेरिकन कूटनीतिज्ञों तथा सैनिक विशेषज्ञों मे अधिकाँश यह आशा कर रहे थे कि हिटलर कुछ ही दिनों में रूस पर सम्पूर्ण नियन्त्रण स्थापित कर लेगा । रूस में नियुक्त पूर्व अमेरिकी राजदूत जोसेफ डेविज ही ऐसा अकेला कटनीतिज्ञ था जो रूस की रिथति के इस परम्परागत विवेधन-से असहमत था। इस समय सोवियत अमेरिकन सम्बन्धों मे सबसे अधिक महत्वपूर्ण राजनियक तत्व रुजवेल्ट की जर्मन आक्रमण के विरुद्ध सहानुमृति थी । दाशिगटन में सोवियत दूत ओमॉस्की (Oumansky) और उपराज्य सचिव दैल्ज ने एक समझौता किया.... जिसके अनुसार अमेरिका की सरकार ने रूस को असीमित निर्यात और इंग्लैण्ड के साथ समानता का वचन दिया। वाशिगटन ने जर्मन आक्रमण में सीवियत स्थिति को सुदृढ करने के उद्देश्य से सभी व्यावहारिक आर्थिक सहायता प्रदान करने का दबन दिया। ऐसा संयुक्त राज्य की राष्ट्रीय सुरक्षा के हितों में किया गया। 14 अगस्त, 1941 को राष्ट्रपति रूजवेल्ट और प्रधानमन्त्री चर्षिल ने एक 'अटलाण्टिक चार्टर' की घोषणा की जिसमें मित्र-देशों के युद्ध के उद्देश्यों का वर्णन किया गया । इस चार्टर पर सोवियत स्वीकृति सितम्बर में मिली । सोवियत लोगों की वीरता ने युद्ध की अस्त-व्यस्तता में एक महान् सबि का उदय हुआ जिसका नाम संयुक्तराष्ट्र या । ग्रेट ब्रिटेन संयुक्त राज्य अमेरिका सीवियत संघ और चीन इस सधि के आधार स्तम्म थे।

सम्पूर्ण युद्धकात में राम्मेलनीय राजनय (Conference Diplomacy) चलता रहा। जनवरी, 1943 में कसास्तीका (मेत्री) में चर्चित कव्यदेल्ट और डिमाल का एक सम्मेलन इस्रा जिसमें घोषणा की गई कि उत्तरी आफ्रीका पर आक्रमण करने में पूर्व इंटरी पर आक्रमण करके उसे पराजित कर दिया जाए। अक्टूबर 1943 में मास्की सम्मेलन हुआ

। दी एम पी रॉय वही, पू 387

जिसमे पहली बार युद्ध के सम्बन्ध में औंग्ल समझीता सम्पन्न किया गया और निजराष्ट्रों ने सुधी पार्ट्स के सम्बन्ध में अपनी नीति की धीयणा की । सम्मेलन में सामुक्तराव्य अमेरिका इन्तेप्यक सकत करते साम पूर्वेप की समस्याओं पर विचार करने के लिए लन्दन में यूरोपीय परामर्शदाता आयोग (European Advisory) दिवार करने के लिए लन्दन में यूरोपीय परामर्शदाता आयोग (European Advisory) काधम उक्त के लिए लन्दन में यूरोपीय परामर्शदाता आयोग (European Advisory) काधम उक्त के लिए का अन्तर्शेश्व मान्यत नाने का निश्चय हुआ। यही सावत वाच में सावत कर लावत काधम उक्त के लिए का अन्तर्शेश मान्यत नाने का निश्चय हुआ। यही सावत वाच में सुद्ध को साव के लिए से निश्चय हुआ। यही सावत वाच में सुद्ध को साव में सुद्ध को सावत में सुद्ध को सावत में सुद्ध के लिए से निश्चय हुआ। यही सावत वाच में सुद्ध कुछ था। अमेरिका में हुआ असर पर सैनी-प्रदर्गन की सावत हुई थी दिवाला सावादित जोतेक देखिज में हिया या जो पहले सीचियत कास में अमेरिका चार्डाव्य हुई थी दिवाला सावादित जोतेक देखिज में हिया या जो पहले सीचियत कास में अमेरिका चार्डाव्य हुई थी दिवाला सावादित जोतेक में जब जोतेक देखिज पाटूवार या जो पहले सीचियत कास में अमेरिका चार्डाव्य हुआ में सावत में सीचियत सेनानियों को अद्धा-सुमन अपित किया सीचियत सेनानियों को अद्धा-सुमन अपित किया क्रिका सावता से स्वानिनाय के क्षित में सावता में सिवाल स्वान्ध के अपित करित का सीचियत सेनानियों को अद्धा-सुमन

नवन्तर, 1943 में काहिरा सम्मेलन में रूजवेल्ट पार्थिल और ध्यीगकाई शेक ने विधार-विधार्य किया और नवन्दर-दिसान्दर में तैहरान सम्मेलन में पार्थिल रूजवेल्ट तथा रूटामिन ने जर्मन सेनाओं के विनास को योजनार्ष तैयार की। इस सम्मेलन में ऑग्ट-सोवियत नित्रता के नेजाओं ने नाजी शासना के पतन को शीध लाने के लिए, अपनी नीतियों में सामजस्य स्थापित कर विस्ता। जुलाई 1944 में सपुफ राष्ट्रों का एक सम्मेलन ब्रिटेन तुक्त में हुआ जिसमें 44 राज्यों के प्रतिनिधि सम्मितित हुए। इसमें पुनर्नियाण और विकास के लिए अन्तर्राक्षीय मुधा-कोष क्यापित करने का निश्चय किया गया।

21 अगस्त से 7 दिसम्बर 1944 तक समुफराज्य अमेरिका सोवियत रूस ग्रेट ब्रिटेन और चीन के प्रतिनिधियों ने बारिंगटन के निकट डम्बर्टन ओक्स नामक स्थान में एकत्र होकर एक अन्तर्राष्ट्रीय मादी समठन—समुक्त राष्ट्र सथ को रूपरेखा के स्वान्य में विवार-विमर्ग किया और अनीर्प्यारिक वार्ता की। इस सम्मेलन के निर्णय अन्तिम नहीं ये यहारी सयक राष्ट्रस्य के बार्टर को बहुत कुछ आधार इसी सम्मेलन मे बना।

महायुद्धकारीन असिम महत्वपूर्ण सम्मेलन यास्टा (कृष्ण सागर में क्रीनिया प्रायद्वीप में) नामक स्थान पर फरवरी 1945 में हुआ। इसमें रुजवेस्ट पर्विक स्टारिन इंडन - मोलोटो आदि प्रयुक्त नित्त हुए । इस सम्मेलन में सुदूरपूर्व तथा मध्यपूर्व आदि कराम सम्मेलन स्थान में सुदूरपूर्व तथा मध्यपूर्व आदि कराम सम्मेलन स्वरं में पहत्वपूर्ण विचार नियम किया गया। युद्धकारीन सम्मेलनों में यास्टा का यह सम्मेलन सबसे महत्वपूर्ण वा क्योंकि इस सम्मेलन में द्वार सम्मेलन से महत्वपूर्ण वा क्योंकि इस सम्मेलन में क्या कियानों में यास्टा का युद्धेसार अस्तर्राष्ट्रीय सामग्रीत के आधारिताल पद्धी वहाँ पूर्वपी तरफ मित्रपार्ट्डी में आपसी समोदों को भी जन्म दिया जिसकों स्थर सीमा शीतपुद्ध (Cold War) गानी जाती है। यास्टा सम्मेलन के कुछ निर्णय जस सम्मय युक्त राज्ये गए और पूरा विवस्थ 1051 में सायुक्तराज्य अमेरिका के स्टेट विधार्टमण्ट में प्रकाशित किया।

8 *राजनय के सिद्धान्त* 25 उन्प्रेल 1945 से 25 जून 1945 तक सन्न प्र^{क्र}सिस्को में सदुन्त रण्ट्रों वा एक नंतन हुआ। यह सम्मेलन सप्तन्न रण्टसच वी स्थापना से सम्बन्धित था। इस सम्मेलन

न्तन हुआ। यह सम्मेलन संयुक्त राष्ट्रसय की स्थापना से सम्बन्धित था। इस सम्मेलन आरम्म होने से 13 दिन पहले राष्ट्रपति रूजटेट का स्वर्गदास होने के कारण एनके निर्माणन होने से 13 दिन पहले राष्ट्रपति रूजटेट का स्वर्गदास होने के कारण एनके निर्माणन होने से इस सगठन के प्रति अनेरिकी सरकार की प्रतिस्त्वता को रहेराया। स्वर्णटेट के नियन के बाद अमेरिकन दिवेश में ति और राजनय ने एक नया में इ या। रूजने 1945 को जर्मनी हारा दिना शर्त आसमस्त्रीं और युद्ध दिन्य सम्मि पर स्वर्णट रूपने के बाद यूरोप में युद्ध सम्म्यत ने गया। जुनाई अगस्त में पोटस्स (स्तिन) मेलन हुआ एनाई संयुक्त स्वर्ण राज्य अमेरिका संपित्त सथा और ग्रेट हिटेन ने अनेक राज्य मेलिन हुआ एनाई संयुक्त स्वर्ण राज्य अमेरिका संपित सथा और ग्रेट हिटेन ने अनेक राज्य मालिन हुआ एनाई संयुक्त स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्णन स्वर्ण स्वर्ण निर्माण स्वर्ण स्वर्णन स्वर्णन स्वर्णन स्वर्ण स्वर्णन स्वर्णन

र्मन सरकर के स्थापना हो जाने पर उससे शानित समझैते की महत्यपूर्ण सनस्याओं
र नी दिचर किया गया है।
रिविय किया गया है।
रिविय किया गया है।
रिविय महापुद्ध के शद क्षमीरकन राजनय

हितीय महापुद्ध के शद क्षमीरकन राजनय

वित्तीय महापुद्ध के सद्भिता को एक ऋगी राष्ट्र से ऋगदाता राष्ट्र का रूप दिया था और
रिविय महापुद्ध ने क्षमित्रीय दिवस को उसके आर्थिक प्रमुख से आद्यादित कर दिया।

प्राप्त स्पन्ध था कि महापुद्ध में क्षमीरको जो उसके आर्थिक प्रमुख से आद्यादित करा दिया।

प्राप्त स्पन्ध था कि महापुद्ध में क्षमीरको को उस भीर दिवास का समना नहीं करना पढ़त.

रिवाय अपने था कि महापुद्ध में क्षमीरको को उस भीर दिवास का समना नहीं करना पढ़त.

) नर्दे लेक्टरचीय सरकार को स्वीकृति दे दी और लच्चन हारा पुरानी मेदीन्ड की सरकार) दी गई स्वीकृति वाभित्त ले ली । मेटरह्न समा में "पीवा के प्रधासन पड़ोसी "स्लाव" ज्यों से निकाले गए जर्मन अल्पमलें के पुनर्मिवसा खर्मन युद्ध क्षमराधियों के मुक्टमें और

जिस लोकरनजवारी जगत का नेतृत्व पहले दिन ब्रिटेन के रायों में था वह अब समुक्त राज्य अमेरिका के हायों में आ गया। प्रत्येक देश एसकी सहायता पाने के लिए लालायित था। 28 अब्दूरन (1945 के अमेरिका के रात्कालीन पाइप्योह दिनेन ओसीकी विदेश नीति के जिल बारद सूर्ज (Points) की घोषणा की उससे यह स्पष्ट हो गया कि अमेरिका के सरावार्तन वा से प्रीप्त करने को घोषणा की उससे यह स्पष्ट हो गया कि अमेरिका अब नेतृत्व के से किए को प्रत्ये होना माने यह कह रहा था। कि उससे दिन को बायो दुवानों राया दुनिया में अपनी सरावार स्थादित करने का देकत ले लिया है। इन छोरमों में अमेरिका में माने एक हा हा था। कि उससे प्रत्ये हिन से मिल्यू है। इन छोरमों में अमेरिका के बातर सामाज्यवार की गूँच थी। अमेरिका अब पृथकतावारी नीति से बिल्यून हर पुका था अयोत अमेरिका ने अब राजनीतिक की को स्वीप्त होने हिन्स हर हो यह साम को अमेरिका के अब राजनीतिक की और आर्थिक हत्तवेष की मीति प्रत्या साम था। अत अमेरिका के में प्रत्य के प्रत्ये को साम को स्वीप्त के साम को सेवेगा। इसे अवरोध तर अमेरिका के मेरित निर्माण की साम या। अत अमेरिका के मेरित निर्माण की साम दी इसके करतवरण मार्गल स्वीप्त की साम को साम की साम साम अब साम की साम साम अब साम को साम की साम साम की साम साम की साम

अभारता कर पारण के पूर्व अपना करणा नेतृत्व स्थापित कर ही दिया सैनिक क्षेत्र में मी उसिन के तर किया सैनिक के त्र में मी उसिन स्वा को पूरी तरह एक महास्राक्त के रूप में मूर्तिशिक्ष करने के दिए अनेक राजनिक करन उठाए । अन्य देशों के साथ सैनिक सैनियों और पारस्यिक प्रतिस्ता कार्यक्र में मीदि प्रारम्भ की मई जिसके फासरकर अप्रेत 1948 में नाटी (NATO) की स्थापना हुई। इस सिय सगठन द्वारा अपूर्व राज्य अमेरिका परिवसी मूरोप के साथ सिनिक गठवस्पन में का यथा। इस सियं ने मूर्तियन देशों को एक सुखा अववन्य प्रदान किया तरिक से अपना आर्थिक और सैनिक विकास कार्यक्रम तैयार कर सके। इस सियं द्वारा अमेरिका ने यह दायित्व सम्मात दिया कि वह साम्यवाद दियोगी किसी भी युद्ध के तिए सर्वेद तैयार रहेगा। । नाटी फार्मूला का प्रयोग अपने कोर्म में मी किया गया। । सन्दो सर्दा की सैनिक स्वायत सैनी में मुक्त के तिए सर्वेद तैयार रहेगा। । नाटी फार्मूला का प्रयोग अपने सौ में भी किया गया। नाटी सरस्ता के सीनिक स्वायता वी गई।

तथा मिश्र देशों के साथ ने वा संस्था मिश्री चित्र कर में भूमिका निमाना आरम्प कर संतुक्त तथ्य, स्व में भी असीरिका ने सक्रिय चेतृत्व की भूमिका निमाना आरम्प कर दिया। यह सुरक्षा परिवर्द में कस दिरोधी सदस्यों का अयुवा वन गया और सहस्य राष्ट्र स्वय महासक्रियों के दान पेंच का अयावा इन गया। जब 1946 में मुक्त परिवर्द में भूमान सम्बन्धी विवाद प्रस्तुत हुआ तो अमेरिका और क्ला तथा उनके साथी सब्दू शीत युद्ध की विश्व सस्या में प्रसीट लाए। समुक सब्दू सच पर अमेरिका का प्रमान व्याप्त हो गया और सच के निक्रण में वस्तुत अमेरिका हारा ही यूनान को आर्थिक और सैनिक सहायता दी गई।

170 राजनय के तिद्धान्त

इस प्रकार अर्थिक सैनिक और राजनीतिक सनी स्तार्ग पर अमेरिका एक महराणि के रूप में उत्तर आयां और दह 'मुक्त दिश्व' (Free World) का एकछत्र नेना बन गए । महायुद्ध के बाद 'दूर्नेन युग (1945 52) और आइज्लाह दर युग (1953-60) में समुक्त राज्य अमेरिका की दिश्ता नीति और राजनय की मून बाता सारगर्नित रूप में प्रकट करते हुए को एन पी राथ ने लिखा है—

"टमैन सिद्धान्त की घोषणा, मार्शल योजना, ठाइएनहादर सिद्धान्त, सैनिक संगठन की नीते अदि के परिवाससम्य अमेरिका का अन्तर्राष्ट्रीय राजनीत में सक्रिय योगदान बदा । जब इसकी दिदेश नीति का स्टेश्य प्रशान्त महासागर से लागान को दर रखना था । द्वितीय महायुद्ध में शामिल होकर अमेरिका अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की तरगाँ में ऐसा चलझ जैसा रह पहले कमी नहीं चलझा था और एक बार चसने अन्दर्शस्टीय राजनीति में मार लेना शुरू विया तह से आए तक समने पीछे मुहकर नहीं देखा है। द्वितीय महायुद्ध के बाद के प्रयम निदेश सन्दिद जेम्स दाईन्स (James Byrnes) ने टीक ही कहा था कि "जिस हद तक हम सम्पर्ध दिख में कैल यह हैं उसे बोड़े ही लोग समझ सकते हैं।" 1940 से 1960 तक के दो दशकों ने अन्तर्राष्ट्रीय राजने ति में अदम्त परिदर्तन देखे । यरोपीय राज्य यदस्या इस दौरान समान हो गई और इसका स्थान दो महार कियों ने ले लिया। इनके हारा नेतृत्व ने दिख को दो धूरों में बँट दिया जिनका नेतृत्व ब्रमध्य सोदियत रूस और सपुक्त राज्य अनेरिका कर रहे थे। महायुद्ध के बाद के काल में अनेरिका दिख का सर्दोच्य र किराती राज्य बना । यह बासद में एक दिख राकि या जो दिख राजनीति, आर्थिक स्पिति और कैनिक रकि को प्रमदित किये हर था। हर्दर्ड दिखदियालय के प्रेकेसर डेनियत पेरीन के शबों में महायुद्ध के तुरस बाद का समय 'अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में अनेरिटी बात था। द्विटीय महायुद्ध की समाचि के परवाद संयुक्त राज्य अमेरिका एक महरकि के रूप में उनता। ग्रेट ब्रिटेन व क्राँस दीसरे स्टर के राष्ट्र रह गर। एर्ननी, इटली द जपान का कोई महत्व नहीं था। रूत जो स्दय एक महाराजि के रूप में उनता था, पूर्वी युरेप पर छा गया। इसी के सम्ब अनेरिता दो मल सिद्धान्तें से हेंच गया। ये थे सम्बद्ध का दिरोच और राष्ट्रीय सुरहा। सदल राज्य क्षेत्रीका की सम्पूर्न राजनीयक राजि सम्पद द के बढते प्रनाव को रोकने (Containment of Communism) में लग गई जिसका परिगान निकल-रीतपुद्ध । कसी सम्पदाद ने सपुछ राज्य डमेरिका को बच्य किया कि दह अपनी डेड सी दर्षे की वस परित्र परम्पच की, लिससे दह बन्दर्राष्ट्रीय राजनीति से सलग या. रखाड फेंके । सन्धियों की उसने एक शृखला ती स्थापित कर दी और दह सन्धि बन्धर्मे में फेंसता सलहता चला गया । अब ये सन्धियाँ ससकी रुक्ति का स्रोत बन गई । इनके परिनामस्तरूप बमेरिका ने दिख्यापी सैनिक कर्ड स्थापित कर लिए । कर अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध महार कियों के सम्बन्ध से प्रमादित थे । दो मार्गों में बैटा दिखाया की छाया में रह रहा या। सम्पदाद का दिरोध दया राष्ट्रीय मुख्य इसकी राजनीयक गृटिदिव्रयों के मूल आपर बन गए । मार्शत योजना, दुनैन किद्वान्त कदि युक्तियाँ इसी आपर पर निर्दित की गई थीं । एक सनय था एवं सम्बदाद-दिरोवी हर देश उनका नित्र था तथा ढलेस के मरानुसार जो उनके साथ नहीं या यह उनका रात्र या।

किसीय महायुक्त के परचाया जाही सायुक्तराज्य अमेरिका अपने अन्तर्रास्त्रीय प्रमाय को बचाने के लिए सिया सामजों का निर्माण कर रहा था यहि दूसरी और वह अगु युक्त के प्रधाय पर सामिय सामजें का निर्माण कर रहा था यहि दूसरी और वह अगु युक्त के भी सामधंक बन गणा था। इससे दोनों महाशीनों के नम्य आरितपूर्ण प्रतिरक्षा आरम्भ हुं है। अमेरिका ने यह भी अनुम्य किया कि विश्व सामित को बनाए रचने के लिए रूली सामान और प्रतिचा वो दिना आपात पहुँचाए रूली पढ़ा के सामझ प्रस्तावों को तयीशा रखना अगस्यक है। कैनेडी का त्रांत (1940 6) में अमेरिका में युक्त और सामजीत के मेरित का सुक्रपात हुआ। वैभेडी कुंग वी अमेरिती विश्व गिति को सुक्रपात हुआ। वैभेडी कुंग वी अमेरिती विश्व गिति को स्वच्यात के महिन का प्रयाद के सामजीत के स्वच्या पर साम ही साम्यवादी कारों के विरुद्ध गाहत और इदला की नीति का स्वच्यात के अविरिक्त गरीबी और अन्य शानसाहित्यों की शत्र है। अमेरिका को शाम्यवाद का अविरिक्त गरीबी और अन्य शानसाहित्यों की शत्र है। अमेरिका को शाम्यवाद का मुक्तवास कन के कामा साम विश्व के अग्रीक को साहित्य गरीक के साम का साम विश्व के अपिक को साम साम विश्व के अपिक क्या साम विश्व के सामक साम विश्व के साम साम विश्व करने के साम साम विश्व के साम साम के साम विश्व के साम के साम विश्व के साम साम विश्व के साम साम के साम साम विश्व करने के साम साम के साम विश्व करने के साम साम विश्व करने साम विश्व करने के साम साम विश्व करने साम

जीनसन शासाकाल (1964 68) में अमेरिकी राजनय की छवि धूमिल हुई। जीनसन शासाकाल में विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय मामरावाजी के प्रति अपनाए दृष्टिकोण के कारण न सिर्फ अमेरिका को काफी हार्गि हुई बस्कि उसे अपनी लोकप्रियाद से मी हाथ योना पढ़ा। बाद में इस स्थ्य को स्थय जीनसन ने भी स्वीवार किया।

निक्सन का कार्यकाल (1969) 1974) अमेरिका के इंदिसार में क्रानिकारी माना जाएगा क्योंनि उन्होंने साम्यावादी जाग्त में अमेरिका की विदेश नीति और कुटनीति को एक नई दिशा प्रदान की ! शिवानकाल में भीने के विरुद्ध अपने चूर्यवादी को छेड़कर उसके साथ अपने साम्यानी को मैत्रीपूर्ण बनाकर अमेरिका में अपने राज्याच को एक नाम मोड़ दिया। सूचीकाल से चाना आ रहा यिवानमा युद्ध उन्हों के कार्यकाल में सामान हुआ और शंकियात साथ के साथ नि महन्त्रीकरण वार्ताओं में काफी प्रगति हुई। दुंजीवादी और साम्यावादी जात् में 'साड अमेरिकट की सम्मावनाओं को जितना अधिक बल निश्तान के कार्यकाल में मिला राज्या पड़ते कमी नहीं निया था।

फोर्ड का शासनकाल (1974 76) विदेश नीति और राजनय वी दृष्टि से सामान्य रहा। इस के साथ कदम सुचार के प्रयत्न पाद रूरे भारत दिरोध में फोर्ड प्रशासन एक कदम आगे ब्रुट गंवा बाजा राजनय बसता रहा और विदेशमन्त्री किसिजर मीन की याजा पर गए और राष्ट्रपति फोर्ड ने जायान की याजा की। अमेरिका राजनय और विदेश नीति का यह एक खेदाजनक पहन्तु रहा है कि उसने विश्व के राष्ट्रीय आन्दोतनों और मुख्य साधनी को कमी सुद्धे दिल से सामर्थन मही दिया है। फोर्ड भी इसी नीति पर यहे। अमेरिका रोहिसाना और दक्षिण आजीका की रागोद समर्थक सारवारों का पक्ष लेता रहा। थे अम्बूट्स

172 राजनय के तिद्धाना

1974 दो सदुन्त राष्ट्र सच से दक्षियी अञ्चीका दो निकासिन करने के इस्ताद पर अमेरिका ने दौरों का प्रयोग किया । कार्टर युग (1977-1980) ने अमेरिका दिदेश सीवि और राजनद के होत्र में स्मृति

योग्य रूपल्डियाँ हासिल नहीं कर सका। यह अवस्य हुआ कि परिचन प्रिया और दियतन म के प्रति अमेरिका ने पहले की अपेक्षा अधिक व्यादहारिक दिएकोण अपनाया। एय-राष्ट्रपति दालर माडेल ने देलियान परिवन एर्ननी, इटली हिटेन, फ्रॉन और जापन की यात्रा में इन देशों से पारस्परिक सम्बन्धों के बारे में राजनदिक दार्टाई की। साथ ही परोपीय आर्थिक समुदाय और नाटो के साथ सम्बन्धों का जायजा लिए । इन्होंने इटली की जर्जर अर्थव्यवस्था में सुदार का शहर सन दिलाया और नाटो के प्रति डनेरिका की प्रतिबद्धता याल की । परिदन जर्ननी के नेटाओं से द्विपटीय और बहुपटीय ब्यापरिक सन्झेंते पर दर्टा त्या इ.जी.ट को परमान जनकारी देने के बारे में दिशेष दिवार हुआ। कार्टर प्रशासन बीन के साथ सम्बन्ध सुधार के लिए प्रयत्नशीत रहा और मारत के साथ उसके सम्बन्ध सामान्य बन रहे। बगस्त, 1977 में दिदेश-मन्त्री सङ्करत देना ने मीन की यात्रा की किन्तु राङ्ग्रान सम्बन्धी मतनेद के कारण अन्तर्राष्ट्रीय तथा हिन्हीय सहयोग के दिनित्र मुर्रो पर महैत्य नहीं हो सला। अनेरिका टाइदान से सम्बन्ध लोडने को टैयार नहीं हुआ और चीन के दिरोजी रदेंदे के कारत कर्टर ने यहाँ हरू कह दिया कि चीन को पूर्व मन्यदा देने में अभी दर्श लगें। | देन्त की यात्रा की सनावि पर कोई सदक दिइति प्रसतित नहीं की गई किर मी रेसा बटावल दिखाई देने लगा कि दोनों पर बन्दट टाइवन पर सनई दा कर लेंगे। देन्स के बाद कार्टर के राष्ट्रीय सरका सलाहकार ब्रिटिस्की ने पीकिंग की यात्रा की । दीन के प्रति नीति में एक महत्वपूर्ण परिवर्टन करते हुए कार्टर ने चीन को विनित्र किस्में के हियमते ह्या दिवृत आगदिक उपकरनों के निर्मेत पर लगे प्रदिश्यों में दील देने का निरवय किया । कार्टर प्रशासन, बारजूद सामयिक स्तार-धदाद और सनेजनाओं के सेदियत सब के सब अपने देश के उत्तरेतर सन्दर्भ तुकार के लिए सदेश्ट रहा। कर्टर ने अपने कार्यकाल के कुछ ही नहीतों में सस-अमेरिका सम्बद्धों का समीकरण बदल दिया। यद हरू सेदियत सम यह मानवर चल रहा था कि वह परमान अस्त्रों से अप्रता प्राय कर लेगा और अपने यहाँ के असन्दर्धों का अमेरिका की प्रस्तता के दिना दमन कर सकेगा। चसे कारा थी कि इस सबके बदलूद अमेरिका के अर्थिक सहयोग से लामानित होता रहेगा । बार्टर ने यह स्पष्ट कर दिया कि परमान अस्त्रों के बारे में दह सदित समानदा बहेगा और उनेरिका से उन्बेंक सहयोग स्वान्ति रखने के लिए सीदियत सब को घर में और बहर रूपना राजरण बदलना होगा। कार्टर की इस नीति ने सीदियत सब को दुदिया में इस दिया। निरास्त्रीकरन पर हुए सैदान्टिक सहमदियों के बदलूद दोनों पहीं में गमीर नदनेद बने रहे। अना में जून, 1979 में साल्ट-2 समझैदा हो गया, जिसे राजमीटिक क्षेत्र में अस्त्र-परिरीमन की दिशा में एक तीनित पर महत्वपर्ण सन्ति माना गया । अफगनिस्तान में से दियत इस्तक्षेप को लेकर संस-अमेरिका के बीच स्टारते सम्बन्धों में कुछ दनाद आ गया । त्यापि सनमें इसी स्थिति से दोनों ही महाशान्यों दशने का प्रयत्न करती रहीं. जिसनें कोई सदस्त्र टकराद हो छाए।

20 जनवरी 1981 को अमेरिका के 40 वे राष्ट्रपति के रूप मे शपथ लेते हुए रोनाल्ड रीगन ने कहा था— 'हम अपनी मित्रता उनकी सार्वमीमिकता पर नहीं थोपेगे क्योंकि हमारी अपनी सार्वमीमिकता बिक्री के लिए नहीं हैं । शेगन ने अमेरिका के प्रतिद्वन्दियों को कहा — 'शान्ति में उनका यकीन हैं शान्ति स्थापना के लिए वह बातचीत कर सकते हैं बलिदान कर सकते हैं सेकिन आत्मसमर्पण कभी नहीं करेंगे। रोनाल्ड रीगन की विदेशनीति और कुटनीि प्रारम्म से ही कटू और कठौर रही । रीगन के राजन्य का मुख्य लक्ष्य यह रहा है कि अमेरिका के प्रमाद क्षेत्र का विस्तार किया जाए पश्चिमी यूरोप की हर मामले में अमेरिका के प्रमाव क्षेत्र का विस्तार किया जाए परिवर्मी यूरोप को हर मामले में नीचा दिखाया जाए । रीगन ने न्युटान बम्ब के निर्माण का फैराला किया जिससे समधा विश्व स्तथ पह गया। वास्तव में शस्त्रीकरण के राजनय का हर दृष्टि से रीगन ने बहुत ही कृशल उपयोग किया। नवन्बर 1981 के अपने भाषण में राष्ट्रपति रीगन ने सोदियत नेता बेडानेव को अपनी चार सत्री निशस्त्रीकरण योजना मेजने का उल्लेख किया । अमेरिका की 'शस्त्रीकरण की नीति के प्रति यूरोप में जो असन्तोष बढ रहा था उसे शान्त करने के लिए रीगन ने यह माचण देने की कूटनीति अपनाई थी । अरब इजराईल के बीच कुछ बालों पर सहमति का बातावरण तैयार करने के प्रयत्नों में अमेरिकी राजनय का मुख्य लक्ष्य यह रहा है कि सोवियत संघ वहाँ किसी भी तरह का हस्तदोप न कर सके। सितम्बर 1983 में रूस द्वारा अपने सीमा क्षेत्र में दक्षिणी कोरियाई यात्री विमान को गिराए जाने पर रीयन प्रशासन ने रूस को नीया दिखाने और उसकी निन्दा करने में कोई कसर नहीं छोडी । प्रधार के कटनय का परा सहारा लिया गया और शीत यद का दौर इस तरह पन शरू किया गया कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक वातावरण अमेरिका के पक्ष में हो गया। अमेरिका ने विमानकाण्ड को इस प्रकार लिया मानो उस पर ही सीधा हमला किया गया हो। यात्रा राजनय और शिखर राजनय का मार्ग अपनाते हुए अप्रेल 1984 के अन्त में राष्ट्रपति रीगन ने पीकिंग की यात्रा की । पाकिस्तान को अपने पक्ष में रखने के लिए रीगन प्रशासन ने सहायता राजन्य (Aid Diplomacy) को परी तरह अपनाया है। रीयन प्रशासन की विदेश नीति और राजन्यिक गृतिविधियाँ इस उप महाद्वीप में मारत विरोधी रही हैं। सैनिक सहायता कार्यक्रम अमेरिका की विदेश नीति और राजनय का प्रारम्भ से ही अस्त्र रहा है तथापि रीयन के कार्यालय में इसे बेहद प्रोत्साहन मिला है। रीयन प्रशासन की कटनीति हर क्षेत्र में तनाव और अस्थिरता पैदा करने की है।

अपने शासन के अतिन यहाँ में शीन ने शीवियत सच के याथ सबच सुवारने की दिशा में संस्कारसम्बर प्रयत्न किये। शीवियत सच और यगुक राज्य अमेरिका के साथ परमाणु टियायों के परिमान की दिशा में अनेक वातीओं के दौर घटों। इस्तान हो गाँवी नवंबर 1985 में जेनेवा और अल्टूबर 1986 में आइस्तेण्ड की राज्यांनी चाइकजाविक में शीन और गोर्तायों के भी बिक्त सम्मेतन आयोजित हुए। इससे दोनों देशों के बीध सबचों में सुवार हुआ। शीलपुढ में कमी आई!

राष्ट्रपति रीमन ने मीन के साथ मित्रतापूर्ण सबयो का विस्तार किया । सन् 1984 ई भे सन्दोंने धीन की यात्रा की । दोनों देशों के बीच अनेक समझीतों पर हस्ताहार किये गये । रीगन प्रशासन ने एशिया में पाकिस्तान की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करते हुए उसे मारी मात्रा में रीनिक सहायता प्रदान की । इस रीनिक सहायता में एफ 16 लडाकू विमान और अवारस विमान जैसे सहारक विमान भी शामिल थे। इस अमेरिकी सहायता का भारत ने पोर निरोध किया और इसे अमैत्रीपूर्ण कार्यवाही माना ।

रीमन के कार्यकाल में सपुक्त राज्य अमेरिका ने विश्व में स्थित अपने सैनिक अड्डों और विशेषकर हिन्द महासागर में स्थित डियागोगार्सिया के सैनिक अड्डों का विस्तार किया। इस काल में जारी अटलाटिक सधि सगठन को भी सुदृढ़ किया। पाश्चाल्य यूरोपीय देशों और सपुक्त राज्य अमेरिका के बीच सहय अध्ये रहे। ग्रेट-ब्रिटेन सयुक्त राज्य अमेरिका के मान्य स्वयं अध्ये रहे।

परिचमी एशिया में संयुक्त राज्य अमेरिका ने अपनी परम्परागत इजरायल समर्थक नीति को जारी रखा ! श्री यासिर अराकात के नेतृत्व वाले फिलस्तीनी मुक्ति मोर्चे को अमेरिका द्वारा मान्यता नहीं दी गई।

मध्य अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका पर सयुक्त राज्य अमेरिका ने अपने वर्धस्व की नीति को बरकरार रखा। रीगन प्रशासन ने निकारागुआ के कोन्द्रा विद्रोहियों को भारी मात्रा में सैनिक और आर्थिक सहायता प्रदान की।

सुदूर पूर्व में राष्ट्रपति रीगन ने जापान और दक्षिणी कोरिया के साथ मैत्रीपूर्ण सबध बनाये रखने की नीति को कायम रखा ।

सपुक्त राज्य अमेरिका ने विकासशील देशों को आर्थिक सहायता देने के राजनय को जारी रखा लेकिन इसके मल में इन देशों की अर्थ-व्यवस्था पर वर्धस्य कायम करना था।

रीगन के कार्यकाल में संयुक्त राज्य अमेरिका ने संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रति नकारात्मक इंटिकोण का परियद दिया। यूनेस्को की सदस्यता छोड़ना रिक्तसीनी नेता यांक्तिर अराफात को संयुक्तराष्ट्र की महासमा को संबोधित करने के लिए 'बीसा' नहीं देना अराफात को संयुक्त-राष्ट्र संघ के खर्च के लिए धनराहि। देने आनाकानी करने जैसी घटनाओं के सदर्म में यह कहा जा सकता है कि रीगन प्रशासन का संयुक्त-राष्ट्र संघ के प्रति रहेया विरोधी रहा।

असलग्न आन्दोलन के प्रति भी रीमन-प्रशासन का दृष्टिकोण अच्छा नहीं रहा। उसकी इह घारणा भी कि असलग्न राष्ट्र सोवियत सघ के पिछलग्न हैं और वे संयुक्त राज्य अमेरिका के विरोधी हैं।

उपर्युक्त विस्तेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि रीगन के कार्यकाल में प्रमेरिकी राजनय सैनिक उदेश्यों की प्राचि में नगा रहा | समुक्त राज्य अमेरिका का रहा। न्यय ते बहुत वट गया | फिर भी सोवियत सध के साथ तनाव शैथित्य की प्रक्रिया के कारण शितपुद्ध में कभी आईं।

रीगन के परचात् जार्ज दुरा ने देश के 41 वें राष्ट्रपति के रूप में रापय ली ! उनके कार्यकाल में सयुक्त राज्य अमेरिका की विदेश नीति और राजनय की कविषय विशेषताओं को निम्नतिखित रूप से रखा जा सकता है

प्रथम संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ के बीच तनाव-शैथिल्य की प्रक्रिया जारी रही । सोवियत नेता मिखाइल गोर्बाच्योव और राष्ट्रपति जार्ज बुश के बीच वार्ताओं के ओक क्रम चलते रहे। सन् 1991 में मैड्रिड में परिवर्धी एशिया ही समस्या के सामध्या के सिर्प आर्योजित सम्मेदन में दोनों नेताओं में मान दिया। प्रस्तान हिप्यतों है परिवर्धित के दिस्तीमन के लिए मी दोनों देशों के बीच दिमित समझीते सम्ब्र हुए। सन्दुस्ती जार्ज दुर्ग ने सोवियत नेता मिखाइत गोर्बायों के अपना समार्थी दिया। अगस्त 1991 में वाद राष्ट्रपति मिखाइत गोर्बायों के लिए मान सम्बर्धित नेता अगस्त 1991 में वाद राष्ट्रपति मिखाइत गोर्बायों के ता स्वाप्त स्वाप्त

हितीय परिवामी एशिया में संगुक्त राज्य अमेरिका का वर्धस्व कायम रहा । सन् 1991 के खाड़ी मुद्ध में संगुक्त राज्य अमेरिका की विजय ने हस क्षेत्र में उसकी स्थिति को अस्पत्त पुद्ध करा दिया । संगुक्त राज्य अमेरिका के 'तृत्व में 28 देशों की बहुराष्ट्रीय रोगाओं ने हराक से कुर्वेत को नराज करनो के छोरण यो अमाकामती सैनिक कार्यवाही में 1 अमेरिका विमानों ने हराक पर भीश्माराम आक्रमण किये । परिनामस्वरूप इसक को पराजय का सामना करना पदा नुकेत को रहाज करा दिया गया । खाड़ी मुद्ध में संयुक्त राज्य अमेरिका की विजय ने शिक्ष राजनीति का स्वरूप ही करता हमा

तुरीय अरद हजरायल समस्या के समयान वी दिशा में भी समुक्त राज्य अमेरिका नै गमीरता से प्रयास किये। विदेशमंत्री जेम्स बैकर ने इस समस्या का समायान करने के लिए अयह प्रयास किये। यह उनके अयक प्रयासों का ही परिणाम था कि मैद्रिड में इस्तरायस्थियों और अरबों के बीच प्रत्यस्य वार्ता समय हो सकी। दोनों ही पतों के बीच खुलकर यालीए हुई और इससे मतमेदों को कम करने में सहायता मिसी।

चतुर्ध समुक्त राज्य अमेरिका ने परिचमी यूरोप के एडीकरण की दिशा में अपनी भूमिका का निर्दाह किया। जर्मनी के एडीकरण के बाद की प्रक्रिया में भी जार्ज बुश की महत्वपर्ण भिमका रही।

पयम् संयुक्त राज्य अमेरिका ने विवाससील देशों को आर्थिक सहायता देते समय मानव अधिकारों को मी एक पुरा बनाया । मानवाधिकारों का हनन करने वाले देशों को आर्थिक सहायता रोक दी गई।

चचन दिसम्बर 1991 ई. मे सोदियत सच के विघटन के परधात् रायुक्त राज्य अमेरिका ही दिश्व की एकमात्र महाराक्ति रह गया है। इससे दिश्व में शीतमुद्ध का युग समाप्त हो गया। नयस राष्ट्रपति जार्ज दुग ने गर्वोक्ति से कहा कि हम इस मुद्ध में विजयी रहे। निस्सदेह वर्तनान में सम्पूर्ण दिश्व पर समुक्त राज्य अमेरिका की धीपराहट कायन हो गई है।

सराम जार्ज दुरा के नेतृत्व में सयुक्त राज्य अमेरिका ने सपुक्त राष्ट्र सम के प्रति अनुकूत दृष्टिकोण अपनाते हुए इसे सभी समय सहयोग दिया। इसके नये महासंधिव बदरास पाली के निर्दाचन में भी सयुक्त राज्य अमेरिका की अहम् मूमिका रही।

अच्छम चीन और समुक्त राज्य अमेरिका के बीच मी सक्यों में उत्तरोत्तर सुपार आता भग्ना

भवम् प्राजं बुश ने मूतपूर्व सोवियत सप से असग हुए तीनों बाल्टिक गणराज्यों सेटविया सिधुआनिया और इस्तीनिया को तुरन्त राजनयिक मान्यता देने का निर्णय सिया (इनकं अलदा संपिद्धतं सम्र से अलग हुए अन्य 12 गाराज्यों को मी सदुक राज्य अमेरिका ने मान्यता दे दी। इतना ही नहीं सभी राष्ट्रपति बेरिस येल्टसिन के नेतृत्व में गठित 11 गणराज्यों के राष्ट्रमञ्जल को मी जार्ज दुश का पूर्व समर्थन प्राप्त है।

उपर्युक्त दिरलेषन से यह स्पष्ट हो जाता है कि अमेरिकी राजनय के दिविय स्वरूप रहे हैं और उस पर अनेक तत्वों का प्रमाद रहा है। इस दिदेशन का निम्नलिखित रूप से अध्ययन विद्या जा सकता है

प्रथम तन्य शैथित्य (Detente) और शन्तिपूर्ण सह-अस्तित्व का राजनय अभेरिकी राजनय की एक प्रमुख दिशेषण रहा है।

द्वितेय, रिकर सम्मेलनीय राजनय का प्रयोग नी अमेरिकी राजनय की एक अन्य दिशियता रही है। फ्रेंकिंग रूजवेत्य से लेकर ज्वार्ज दुश तक सभी राष्ट्रपरियों ने इस राजनय की अपनया है।

हुरीय समुक्त राज्य अमेरिका हारा अपने राजनय में प्रचार मध्यमी का खुलकर सहरा तिया गया है। एव पत्रिकाओं पुस्तकों और रेडियो प्रसारन हारा अपने यस का प्रचार किया जाता है।

बहुर्य सहयरा के राज्य के मध्यन से मी सबुक राज्य अमेरिका द्वारा अपने प्य में बत बरना तैयार किया जारा रहा है और सहायता प्राप्त करने बाते देशों की विदेशकीय को अपने पर में करने का प्राप्त किया जारा रहा है। सहायरा के राज्य को दबार के राज्य के कप में अपनाया जाता रहा है।

पदम् उपात्र के रजन्य परात्र का राज्य से भी अमेरिका ने अन्य देशों की दिदेशरीडि को प्रमादिक किया है।

षष्ठम, अनेरिकी राजनय पर जनमत का भी प्रमाद रहा है।

सल्म् यदमि सदुक राज्य अमेरिका प्रजातात्रिक राजनय का दावा करता है लेकिन व्यवहर में ससकी नीटियाँ तानशाही और राजवजनसक शक्तियों को सम्पृत देने दी सी है।

अध्यम् अमेरिकी राज्यय में उसकी मुखबर सस्या सी अई ए (Central Intelligence Agency) वी मी अव्यन्त महत्वपूर्ण मूनिका रही है। इस सस्या ने न बेदल ज्यमुंची के वार्ष का ही निर्वंद किया है अपितु उस पर यह भी आरोप रख है कि उसने राज्यों से अस्थिरता उदस्य करने के लिए उस राजनेनाओं को भी अपने मर्गा से हदाय है को अपने दरों का सहमन्ता के साथ नेनृत्व कर रहे थे। अब इस सस्था पर अपदस्या। और हदस्यों की साजनीत के कार्यन की ज्याप्त कर ने हो है है।

नंदम्, सपुक्त राज्य अनेतिका द्वारा युद्धपीत राजनय (War Boat Diplomacy) का मी सहस्य जिया जना रहा है।

ना सहसा लिय एटा रहा है।

दशम, मूरपूर्व अमेरिकी दिदेशमंत्री हर हेनरी वर्णसंगिर हारा अपनाये गये राजनय की जातन राजनयाँ की सका दी जानी हैं।

ग्यारहर्वे, राजनय के आरम्भिक काल में लूट प्रया (Spoil system) के कारण प्रतिकित राजदुर्वें की नियुक्ति नहीं होली थी, लेकिन कर कुराल और प्रतिक्रित राजन्यिक प्रतिनिधर्यों हारा ही इस कार्य का निर्वाह विचा जाता है। सुप्रशिद्ध और प्रतिष्ठित व्यक्तियों की भी इस पर्द पर नियक्ति की जाती रही है।

शोवियत राघ का राजनव

(Diplomacy of Soviet Union)

सन् 1917 में लेगिन के फेलूल में सोवियत सध में साम्यवादी हास्ति सफल हुई | पूँजीवादी देशों द्वारा इस क्रान्ति वो असफल बनाने के लिए समी समय प्रयत्न क्रिये गए |

दितीय महायुद्ध के पूर्व सक सोदियत राजनय हितीय महायुद्ध के पूर्व का सोदियत राजनय निम्नालिखित अवस्थाओं में से होकर गुजरा

समय अवस्था (1917 1921) सारत के हा प्रारम्भक धार वर्ष में सोधियत सारत ने का मुख्य तस्य देश में साम्यवादी सारान के मुद्द करना साथ दिव में साम्यवादी क्रान्ति का प्रमाद प्रसाद करना था। मार्थ 1919 में मारव में एक अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी सम्मेला आयोजित हुंआ जिसने दिव में साम्यवादी क्रान्ति का प्रमाद करने के लिए सोधियत साथ की साम्रवात से तुरीम अन्तर्राष्ट्रीय या बोधियां (Comintern) का मिर्गण विचा गया। तन् 1921 ई. राक सोधियत धिदशाति और कुटनीति का मुख्य प्रदेश साम्यवादी क्रान्ति का प्रमाद करने के लिए दिव के क्रानिकारियों और विद्रोहियों की सहायता करना था।

का प्रधार करना व तरह (वसन क लागानाश्चार आहे । विद्यार्थ का नहांचता वस्ता था। नहींन नामव्ययर्थी कर्सा ने सामि विदेशी ऋषों को मुक्तरों से इस्तार कर दिया। इससे साम्यवादी सरकार के अधिरिक्त विदेशी पूँजी से स्थापित औद्योगिव सरमानों क साम्याव्ययर्थी सरकार के अधिरिक्त विदेशी पूँजी से स्थापित औद्योगिव सरमानों क राष्ट्रीयकरण सर ब्लाइट स्टॉक कम्पनियों का साम्यायकरण विदेशी व्यापार पर राज्य का एकाधियर्थ स्थापित करना तथा व्यापारिक जहाउने का साम्यायकरण आदि ऐसे कार्य किये गए जिनसे परिधान से कहा के नामव्या स्टूत कटु एव शहुतापूर्ण की गए।

पारचात्व राष्ट्री द्वारा करा के गृह पुद्ध में मोलोरिक विरोधी बतो भी पुद्ध सामग्री की सहाराता और सीनिक हरत्यंत तथा करा के आर्थिक प्रतिरोध में गीति थी। सारचारियों में कार्यक्रत के आर्थिक प्रतिरोध में गीति थी। सारचारियों में कार्यक्रत के की में क्वारे को केवत के मन्तार देने में इन्लाह कर दिया। इन राष्ट्री में सिक्षिय सारावात पालर प्रतिक्रियात्वादियों ने बई जगह रहेत सरकार्द कार्यक्र कार्यक्र कर दिया। इन राष्ट्री में सिक्ष सारावात पालर प्रतिक्रियात्वादियों ने बई जगह रहेत सरकार्द के स्वयं कर स्वा । विज्ञात्व हुए अपीतु सीवियत सार का अन्त करने हे लिए करों ने वर्ष चार पर प्राचा में सिंद्रा होत्य की किस पर कार करने के लिए करों ने कोई बहाग होता प्रादिश था और विज्ञात्वों है। आर्थ सोले से स्वा प्रत्या मात्री कार्यक्र के स्वा मात्री प्रत्य कार्यक्रत कर स्व मात्र के मात्र कार्यक्रत कर स्व प्रत्य प्रत्य सामग्री प्रपुट मात्रा में पढ़ी थी। भित्र राष्ट्री को मात्र था कि यह दिशाल पुद्ध सामग्री करी कर्मनी के हाय न लग जाए। अत इस सामग्री को जानी से बचने के मात्र कर सामग्री करी करों के के किस कर सामग्री करी साम प्रदेश में स्व प्राची कर सामग्री करी के सिक्ष को साम प्रत्य के साम प्रदेश में साम प्रत्य के साम प्रदेश में साम मात्र कर साम प्रदेश में साम मात्र कर साम कर साम मात्र के लिए द्वार कर साम मात्र के साम मात्र कर साम मात्र कर साम मात्र कर साम मात्र कर साम मात्र साम मात्र कर साम मा

अन्त में बोल्लोविकों की विजय हुई । मित्र राष्ट्रों की राहायता मिलने के बावजूद क्रान्ति विरोधी प्रतिक्रियावादी अधिक दिनों सक मैदान मे नहीं टिक सके । बोल्लोविकों ने बहुत क्रूरता के साथ उनका दमन कर दिया। अक्टूबर 1920 में युद्ध समाप्त हो गया और 1921 तक रूस मे सर्वत्र बोल्सेविक शासन सुदृढ़ हो गया। मित्रराष्ट्री द्वारा क्रान्ति की कुचलने के सैनिक प्रयत्नों तथा आर्थिक प्रतिरोध ने रूस को उनका कट्टर विरोधी तथा अविश्वासी बना दिया।

सोवियत कस और पश्चिमी राष्ट्रों की इस घटती रस्ता-कशी में दोनों पक्ष बराबर रहे। न तो क्ती सायवादी विश्व-क्रमित के अपने स्वन्न को साकार करने में सफल हुए और न ही पश्चिमी राज्य सायवादी रूत को नष्ट कर पाए। हस तरह पुणीवादी और सायवादी शक्तियों का प्रथम संपर्ध अनिर्णात अवस्था में समारत हुआ।

दितीय अवस्था (1921-1934) रहात्मक पार्थक्य (Defensive Isolation) की थी। इस काल मे रूस ने आत्मरक्षा की दृष्टि से विनित्र शक्तियों के साथ सन्धियाँ सम्पत्र कीं उनसे व्यापारिक सम्बन्ध बढाए और दूसरे देशों में साम्यवादी प्रधार करना कम कर दिया । इस अवस्था में वह पश्चिमी देशों की अन्तरांष्टीय राजनीति से अलग रहा और उसने राष्ट्रसघ की सदस्यता भी ग्रहण नहीं की । इस अदिध में यद्यपि रूस ने पूँजीवादी राज्यों से समझौता करने की नीति का अनुसरण किया, परन्तु कोमिण्टर्न द्वारा अन्य देशों में साम्यवादी क्रान्ति फैलाने के कारण पश्चिमी राज्य रूस को अविश्वास व सन्देह की दृष्टि से देखते रहे । इसलिए संयुक्त राज्य अमेरिका 1933 से पूर्व रूसको वैघानिक मान्यता प्रदान करने के लिए तैयार नहीं हुआ । किन्तु उसकी अधिक समय तक उपेद्या करना सम्भव न था । रूस अब कोई सामान्य शक्ति नहीं रह गया था । वह अन्तर्राष्टीय क्षितिज पर एक महान शक्ति के रूप में उदित हो चुका था। अत जब रूजवेल्ट अमेरिका का राष्ट्रपति बना तो उसने सोवियत सघ को मान्यता प्रदान करने की दिशा में प्रयत्न शरू किए। लन्दन में विश्व-अर्थ-सम्मेलन (1933) के अवसर पर सर्वप्रथम अमेरिकी प्रतिनिधि दिलियम बुलिट और रूसी प्रतिनिधि लिटविनोव की भेंट हुई । इसके बाद दोनों में एक सन्धि सम्पन्न हुई जिसके द्वारा दोनों सरकारों ने एक-दसरे की प्रादेशिक अखण्डता की सरक्षा और विरोधी प्रचार करने वाले दलों के दमन का वदन दिया । रूस ने अमेरिका की ग्रह बात मान ली कि वह अपने देश में आने वाले अमेरिकी यात्रियों को धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान करेगा ! इस सन्धि का यह अनिवार्य परिणाम हुआ कि रूस की साम्यवादी सरकार को ससार की महान शक्तियों ने स्वीकार कर लिया ।

तीसरी अवस्था (1934-1938): इस क ल में रूस राष्ट्रसाय का सदस्य बना और सत्य डी उसने परिवार के साथ सहयोग करने की नीति अपनाई । राष्ट्रसाय में प्रदेश के बाद महं, 1933 में रूसने के प्रति हैं प्रति हैं प्रति के स्वार्थ में प्रदेश के बाद महं, 1933 में रूसने बार प्रीति के साथ मी नास्कों में अगाअन्य समझीते किए और दर्की तथा ग्रेटिन से पनिष्कत स्वार्थ साहित्क राज्यों के साथ मी नास्कों में अगाअन्य समझीते किए और दर्की तथा ग्रेटिन से पनिष्कत स्वार्थ मिल की मान की अगाअन्य समझीते किए और दर्की तथा ग्रेटिन से पनिष्कत स्वार्थ की मान मान मान मान सिंप के साथ मी उसकी सिंप हुई । इस तरह रूस में फ्रांस एवं चैकोस्तीविक्या के सावध्य से मानी आअन्य के विरुद्ध सावत सुद्ध किया । मार्च 1936 में बाडा मगीनिया के साथ एक पारस्परिक सहायता-स्विथ की गई सिक्का छोरा आन्तिक मगीनिया में जागन के प्रतिश्व को पीकना था। इस समय तक रूस दस्तत एक विशास एक विरुद्ध समय ना प्रकाण ने प्रतिश को पीकना

इन सभी समझीतों और सम्पियों से रूस की स्थिति पर्याप्त सुदूट हो गई। इस समय तक सायवादी कूटनीति ने एक और भी नया क्रांतिकारी मोड़ दिया। देश तथा विदेश दोनों में 1943-35 में कोम्पिटने में मकायक एक सवाल उठा। विदव क्रांति नीति के प्रतिकृत रूस ने पारपाय दोकतन्त्रीय प्राष्ट्री में साम्यवादियों को फ्रांतिस्ट शासन का दिरोध करने वाले मुर्ठिया दर्ती—उदारावादी सामाजवादी आदि के साथ मिलकर सपुल मोर्च कराने का आहवान किया। कलरावर्त्त अब प्रत्येक देश के साम्यवादी दर्तों ने अन्य प्रमातिशील तत्त्वों के साथ फासिस्टवाद के विद्यू सपुक्त मोर्चा स्थापित किया। वस्तव में क्ली विदेश मीर्च में यह दिल्लन नाय परिवर्तन था क्यांकि जो समाजवादी उदारवादी आदि उपर्युक्त सभी दल पूर्णवाद के विद्यू सपुक्त मोर्च 1934 के बाद अब साम्राज्याद के विद्यू विश्व किया। वस्तव में स्वापित के साथ का साम्यवादी करियू के उत्तर साम्राज्याद के विद्यू विद्यू सपुक्त साथ साथ अप साम्राज्याद के विद्यू विद्यू सपुक्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त के विद्यू विद्यू सपुक्त स्वाप्त के स्वाप्त स्वाप्त के अस्व स्वाप्त स्वाप

सन् 1934 से 1938 तक सोवियत रूस ने पारवात्य देशों के साथ सहयोग और मैत्री की तो अपनाई परन्तु व्यावकारिक दृष्टि से रुस और परियम के मध्य कोई वास्तरिक मित्रता स्थापित न हो सही । सीविवत तथा और परायप्त देशों में प्राथमिक अधिवाती की मानना थी । परियमी देशों की कातिस्त राध और परायप्त देशों में प्राथमिक अधिवाती की मानना थी। परियमी देशों की कातिस्त आक्रमणों को रुसी साम्याद को शंकिन में अधिक दिलयसपी थी। पहला अवसर इंटर्टी एदीसीनिया युद्ध का था। इसमें रुस से ने राष्ट्रस्त के माध्यम से मुसीतिनी के वर्ष से आक्रमण से अदिस अवसाना की स्था का भारतक प्रयस्त किया सीकान किटन और कीस ने प्रीवीतिया तथा राष्ट्रस्त की सित्र देशर में मुसीतियों की सो स्था । इस अवसर पर रुस से देश से की रुसीतियों की रहा की साथ से एक सन ने देश की रुसी की सीविवत अपने साथ अध्यापत में की का सरकारों में भी काशिस्टवादी को को जनतन्त्रीय सरकार को सहायता मेजी और ऐस्तों के य सरकारों में भी काशिस्टवादी के को ने सरायता सी। इस्टितन ने अपने चाराव्य में इस सरका का स्थाप्त स्थापत है। इस सरका स्थापत है। इस सित्र का स्थापत सीविवत सीव

पाँची अवस्था (1938-39) में रूस ने पश्चिमी राष्ट्रों से पृथक रहने एव सकटपूर्ण पाँची (Dangerous Isolation) को मीति अपनाई । सितान्य 1934 के गृतिख समझीते के बाद से ही रूस ने पहुत्तुत अपने आपको सकटपान स्थिति में पादा । रूस का कोई विश्वास्तान नित्र नहीं था। रूस के कोई विश्वास्तान नित्र नहीं था। रूस के कोई विश्वास्तान नित्र नहीं था। रूस हम कोई विश्वास्त्र नित्र नहीं था। रूस हम कोई पश्चिम कोतियों जनेंगी को रूस रूस आजनमा करने के लिए प्रेरित कर रही हैं। जब रूस पश्चिम की सरक से निरात्त हो गया तो उसने अपनी आत्म सामीत पूरी परपूरी से मैंजी के प्रयात होज कर दिए और अमस्त 1939 में जर्मन समझीता एक वज्यात के शामान था। पाग्याव्य ट्रीमों ने इस समझीतों का हिरोप किया।

यद्विप रुस ने जर्मनी के साथ अनाक्रमण समझीता कर लिया तथापि यह जर्मनी के इरादों को मीपकर स्वय को उसके रिवढ शांकिशाली बनाने के लिए निरन्तर दीयारी करता रहा। सिलान्य 1939 में द्वितीय महायुद्ध आरम्म है। गया। रुस महायुद्ध के आरम्भ से तदस्य रहा। किन्तु अपनी सम्पूर्ण कूटनीतिक शांक्यानियों के बाद भी वह जून 1941 में अपने ऊपर अर्मनी के आक्रमण को रोक नहीं सका। ऐसी सिथी में अन्तर्राष्ट्रीय रामध्य के अपिनेताओं के रूप में सीवियत नेताओं ने अपना पैतार्थ बदला और अप वे माजी जर्मनी के साहायक म होकर राष्ट्रवादी राजनीतिक मन गए तथा प्रजातनात्रारक दिदीन का समस्य करने तथा। 30 जुनाई 1941 को सोवियत रूस और अर्थ ने गढ़ पारस्थित करने तथा। 30 जुनाई 1941 को सोवियत रूस और ब्रिटेन ने एक पारस्थित सरायता

180 राजनय के सिद्धान्त

समझैता किया जो गई 1942 में औपचारिक ऑग्ल संप्वियत सम्ब के रूप में परिगत हो गया। 24 सितम्बर 1941 को संवियत सम अपनी विदेश गीति को राष्ट्रों के अलग्निर्गय के सिद्धानते हाग निर्देशित करता था और करता है। वह प्रत्येक देश की प्रवत्नता व प्रयेशिक अखान्ता के अधिकार की रक्षा करता है तथा उनके इस अधिवार को स्वेश करता है कि वे अपने उपयुक्त सामाजिक व्यवस्था एव सरकार का रूप निष्वत कर तें। जनवरी 1942 को संवियत रूप से स्वेश

जना जा सकता है। कई पर्देशकों का कहना है कि संविदत नेता जरफाड़ी साम्रज्यस्वी हस्तों से प्रेरित थे। इसका अर्थ यह नहीं है कि वे उनके पद कियों पर ही पल रहे थे हमार्थ जरफाड़ी हात संविदत कसी हितों का और जनता की महत्वकाँटाजें ना प्रतिनिधित किया जनता था। इसकिए उसे अपनाम जनता उपनेयी था। यह हात सस ने

साट्र विरोधी सथ में औपधारिक रूप से सम्मितित हो गया। मई 1943 ई में सेवियत सथ द्वारा औपधारिक रूप से कोभिगटर्न को समान्त कर दिया गया।

द्वितीय महायुद्धकाल में सोवियत राजनय युद्धकाल में सोवियत सप के लक्ष्यों को इसके सैनिक और कूटनीतिक कार्यों हारा ही

पहले तो उन प्रदेशों को प्रया करने का प्रयास किया जो जारास्त्री के समय दूनरे देगें हात ले लिये गए थे। सुदूर पूर्व में कर्सी जगानी मुद्ध में कर के करण जराइ में अनेक प्रदेशों पर से अधिकर धरे हिता था। इन प्रसादन दी चरेरा के समय सम्य सेंच्य की प्रदेश कर स्वेत के स्वेत कर करण कर से किया था। इन प्रसादन दी चरेरा की जो जारास्त्री सरकार हात करते की भी चेरा की जो जारास्त्री सरकार हात करती सम्प्रच्य के हित में निर्मेण्यत किए गए थे किया प्रमान नहीं किए जा सके। इन चरेरतों में पहला यह था कि यूरेण में प्रमान का क्षेत्र हतना अधिक बढ़ाया जर कि हते से मिर के से प्रसाद करती समार के दर्दे पर विस्ता की प्रताद कार्य के प्रसाद करती हता करती समार के दर्दे पर विस्ता की प्रताद कार्य के पर करती अपनार प्रमान के स्वाद पर सुदूर पूर्व में स्था विस्त में हर जगाह से विस्त साथ का प्रमान करता जगा। विश्व इस्ता प्रदेश दिदेशी साध्यवादी का यह कर्तव्य माना गया कि वह अपने पूरे प्रमान से प्रस्तेक से विस्ता सीनेक एव कूटनेरी का सम्यम्त करे। ऐसा करते समय यदि चसे अपने राष्ट्रीय सर्व्य कर्त्य क्यों तथा चरेरती सी अवहेलना में करती पर हर पर वर्षीय करती साथ चरित्र सी व्यव साका के करता पर हरी चर्मी करती साथ चरित्र की आता है।

संविध्य नेताओं ने हितेथ दिखपुद में यहापि विश्व सम्पदन्द का प्रधार किया किन्तु जनका मुख्य ध्यन्न संपित्त रूस की राजनैतिक शक्ति घर था। जनदेने सजगता के साथ अपने सैनेक एव कुटनैतिक कार्य को सम्पित्त किया। 22 जूर, 1941 की हिटलर का संपित्त कस पर आक्रमा हो गया और सम्पूर्ण फलिस्ट पूरेप संपित्त संघ के हिटलर का संपित्त रूस पर आक्रमा हो गया और सम्पूर्ण

देसे संपिदत नेराओं को दिदेशी सम्पदियों के प्रयासों पर अधिक मरोसा एवं दिश्वस नहीं या किन्तु किर भी वे प्रसारवारी कूटनीचि को बाजू रधना चारते थे। उनके दिए डिक्टिंग डिशवुद्ध सभी पुद्धों को मन्यन करने के दिए एक बुद्ध नहीं था बदल वह एक ऐटिंगिक संपन्त या जिससे दिख सम्पदाद की और मुद्द सके। स्टासित सहित समी साय जर्मन सेनाओं का मुकाबला किया। युद्ध के समय पारधात्य राष्ट्रों ने सोदियत सध के प्रति सहयोगप्रमक दृष्टिकोण नहीं अपनाया। उनकी जर्मनी और सोवियत कस दोनों के विनाश में कींग्रे थी।

दिसम्बर [941 में ग्रेट-ब्रिटेन के दिदेश सचिव एक्यारी ईडल मास्को गए और इस प्रकार संविदस क्रैताओं को परिवामी मित्रों के साथ एक्य स्तरिय सम्मेदल का प्रयम अवसर प्राप्त इस सम्प्र दाल सेना ने जर्मनी के सिंतिकों को मास्कों के दरवाओं पर रोक दिया मा ने सम्बेदन के ब्रीटिंग स्टालिन अपनी अनियम विजय के प्रति आरवस्त था। स्टालिन ने इस सम्मेदल में युद्ध के बाद की स्थिति पर विचार करने पर जीर दिया, किन्तु ईडन ने करा कि प्रति हिम्त सीमा सम्बन्धी प्रमाण पर वृद्ध के बाद की विचार करने करने करने के अदेशित विचार के समझत है। मई। 1942 में जब मोतोटीव ऑगल-सोवियत सीचे पर इस्तावर करने के लिए लन्दन गए तो उन्दोंने पुन सोवियत मीन को दोहाया। किन्तु ग्रेट-ब्रिटेन ने पुन- इसे मानने से भाग कर दिया।

सोवियत सच की युरोप में बढ़ी महत्वाकाँझाएँ थीं और ग्रेट-ब्रिटेन इनसे परिचित था। स्टालिनप्राड के युद्ध के बाद सोवियत सेना पूर्वी क्षेत्र में निष्क्रिय बन गुई और अब सोवियत सरकार को सफलता का महान आखासन मिला। उसने पश्चिमी शक्तियों की परवाह किए दिना ही पर्वी केन्द्रीय यूरोप में अपना प्रमाव क्षेत्र बढ़ाना शुरू किया । सोवियत महत्वाकाँकाओं से प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होने वाला पोलैण्ड था। पोलैण्ड की निष्कासित सरकार ग्रेट-ब्रिटेन में स्थित थी । उसका सोदियत संघ के प्रति पर्याप्त कट अनुभव था क्योंकि इसने 1939 में भोलैण्ड को नष्ट करने में भाग लिया था । सोवियत सघ ने यह प्रदर्शित किया कि यद के बाद घोलैण्ड के सगठन में उसका हाथ है और इसके बाद उसने सोवियत सेना के अधीन पोलिश क्रम के देशमूलों को मास्को में जमा किया जो साम्यवादी पोलिश सरकार की नामि का काम कर सकें । इसके अतिरिक्त सौदियत सघ ने चैकोरलाव यगोस्लाव और कमानिया की बिगेड भी गठित की जिसमें अधिकत सिपाहियों को भर्ती किया गया । मास्को ने लन्दन में किंग पीटर 11 के अधीन यगौरलाव सरकार से वार्ता जारी रखी और कैरों मे जॉर्ज दितीय के अधीन यनानी सरकार से भी सम्पर्क बनाए रखा । सोवियत सध ने लन्दन स्थित राष्ट्रपति एडवर्ड दीनस (Edward Venus) के अधीन युगोस्लाव सरकार से भी मित्रतापूर्ण सम्बन्ध कायम रखे । जुलाई और सितम्बर 1943 में स्वतन्त्र जर्मनी के लिए राष्ट्रीय समिति और जर्मन अधिकारियों का सघ मास्को में गठित किया गया । इसका निटेशन निष्कासित जर्मनों द्वारा किया जाता था किन्तु इनमें जर्मन अधिकारी भी शामिल थे । उस समय सम्पूर्ण जर्मनी या उसके किसी माग पर सोवियत सघ के अधिकार के आसार दर दिखाई दे रहे थे। उस समय मास्को में स्थित जर्मन समहों का तत्कालीन कार्य यह था कि जर्मन सिपाहियों को आत्म समर्पण के लिए समझा कर उनकी यद्ध-समता एव प्रवासों को कम किया जाए । अवसर आने पर इसका उपयोग जर्मनी पर सोडियत प्रमाव बदाने के लिए मी किया जा सकता था।

सीवियत नीति के असन्तुतन ने परियमी रातियों को भ्रम में डाल दिया तथा उनको सीवियत तस्यों के वास्तविक रूप का अनुमान नहीं हो सका। सीवियत सध द्वारा जो मी अप्रवासन दिए जाते थे उनको प्रारम्म में अमेरिका द्वारा ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया जारा था किन्तु प्रेट-ब्रिटेन के लोगों को जनके बारे में विश्वास कम था। सोवियत सघ का प्रसार यूरोप में होता जा रहा था किन्तु उच्च स्तर के अभेरिकी कूटनीतिकों ने इस शोर ध्यान ही गर्ही दिया। अभेरिकी सरकार एव जनता यह मानकर बस रही थी कि युद्ध के बाद पूर्वी-केन्द्रीय यूरोप में सोवियत सघ का प्रमाव होना ही चाहिए। उन्होंने सोवियत प्रमाव को इन क्षेत्रों में प्रजातन्त्र की स्थापना के विश्वीत नहीं भाना। उनका वर्क था कि यदि ऐसा कुछ होता तो सोवियत सघ हारा अटलान्टिक चार्टर एव समुक्त चार्ट्स की धोषणा में विश्वास हो क्यों किया जाता ? उस समय समुक्त चार्च अमेरिका में साम्यवाद एव सोवियत समावतों के कुछ ही ऐसे जानकार थे जो सोवियत सघ क्ष करार्दों को सन्देह की नजर से देखते थे। जनका विवाद या कि सोवियत सघ क्षप्त प्रकेश के मित्र कनाने पर जारे दिए जाने के पीछ कुछ रहस्य है और यह सम्पद्धा यह है कि उसके पढ़ीसों मो माम्यवाद येश वन जाएँ, क्योंकि सेनिन की दो गुट की विधायताया के अनुसार पूर्वीवादी-समाजवादी गुट तो कमी मित्र हो ही गुट की विधायताया के अनुसार पूर्वीवादी-समाजवादी गुट तो कमी मित्र हो ही गुट की सम्बत्धा एक राष्ट्र सोवियत सघ का दोस्त तानी वन सकता है जबके वह वाल इन्टर के नीचे आ जाए। सामान्यत समेरिकी सरकार एव जनता को सोवियत मेंगी में कोई शक नहीं था और सामान्य परिवामी हित के विषय उन्होंने ग्रेट हिटेन को सींप दिए।

तेहरान में 28 नवस्पर से 1 दिसम्पर 1943 तक तीन बढ़े राष्ट्रमध्याँ का प्रथम सम्मेलन हुए। पर्धिल रूजबेल्ट एव स्टालिन ने ईरान की राजधानी में पारस्परिक हित के विषयों पर विवार विमर्श किया।

जून 1944 में मित्र राष्ट्रों ने क्राँस पर आक्रमण किया । इस अदसर पर सोवियत रोना 1941 की सीना पर पहुँच गई तथा वहाँ से उसने पोलैस्ट रूमानिया तथा बास्टिक राज्यों पर अक्रमण करने का बार्टिक राज्यों पर अक्रमण करने का बार्टिक राज्यों पर अक्रमण करने का बार्टिक समया । सीवियत सुध ने जब इन उपराज्यों के स्था मानित सन्धियों की तो सिवम से नहीं पूधा गया । यह एक प्रकार से उनके गर्व के लिए गरारी चोट थी । इसने पर में इन देशों ने मित्रज्ञार की एकना की खारित इन घर अपने अन्दिर पान कर दी। इस प्रचार इन सनियंत्र वो गर्मा नित्रज्ञार प्रचार का सिव्यं यो मित्र नित्रज्ञार प्रचार का स्था मानित सामित्र के हैं जिनको मावी ग्रास्ति सम्बन्ध का स्था के से समझेते केवल अस्थायी प्रकृति के हैं जिनको मावी ग्रास्ति सम्मान में परिवर्तित किया जा सकता है। मारिवयी देशों ने इन उपराज्यों में सीवियत ग्रासितियों के सामित्र के स्था अस्था की । यह कार्य उन्हों के हैं हिस्ति बुद्धारेस्ट सीकिया एव दुद्धारोस्ट में नियुक्त अपने प्रतिनिद्धीयों के माजित

तया उनकी अवहेलना की जा रही है। सोदियत प्रतिनिधियों को मित्रराष्ट्र युद्धबन्द आयोगों का समापति बनाया गया क्योंकि सामान्यत स्वीकृत सिद्धान्त के अनुसार प्रमुख दायित्व उसी देश का मन्ता जाता है जिसने एक प्रदत्त क्षेत्र पर विजय प्राप्त की। उर्धों ज्यों क्रीवियत सेना पूर्वी केन्द्रीय यूरोप में बढ़ती गई त्यों ह्याँ स्तके नरसहार अल्पाचार बलात्कार एव अमानवीय व्यवहार की चर्चा बढ़ने लगी जो सोवियत सेना द्वारा विजित क्षेत्र की जनता पर किए जाते थे ! इस सम्बन्ध में एक उल्लेखनीय बात यह थी कि सोदियत सेना की सहायता से देशी साम्यवादी या तो मास्को से लौटकर अथवा भूमिगत क्षेत्रों से निकल कर सताधारी बनने लगे । सौवियत शक्ति द्वारा इस काम में इनकी पूरी सहायता की जाती थी । अमेरिका अभी तक भी इन घटनाओं से सचैत नहीं हुआ था किन्तु ग्रेट ब्रिटेन पर्याप्त सतर्क बन गया। चर्चिल ने पहले भमध्यसागर से यरोप पर आक्रमण का समर्थन किया था किन अब वह बल्कान में एडियाटिक सागर के शीर्ष पर मित्रराष्ट्रों की सेना रखने पर जोर देने लगा साकि पूर्वी केन्द्रीय यूरोप में सोवियल शक्ति को मर्यादित रखा जा सके । किन्त जो अमेरिकी जनरल मूमप्रसागर में कार्यवाही करने में रुधि नहीं लेते थे उन्होंने इस कार्यक्रम को रण नीति की दिन्द से अनुपयक्त एवं हल्का बताया । सब तो यह है कि प्रथम विश्वयद्ध के समय इस क्षेत्र में इटली की सेना को आगे बढ़ने की बजाय बरी तरह मार खानी पढ़ी थी। जब चर्चिल ने आइजनहावर के मुख्यालय में जाकर यह बात कही तथा इसके पक्ष में तर्क दिए तो इके (lke) ने कारा नहीं । वह दोपहर बाद तक नहीं कहता गया और अन्त में र्स्तने अपेजी साथ के प्रत्येक रूप में 'नहीं कहा ।

अत्त म एसन अग्रजी पापी के प्रत्यक रूप म महा कहा।

परिंद आपनी से ही हिम्मत हानने वाला नहीं था। उसने सिताबर 1944 मे दितीय

रोईक सम्मेलन (Quebec Conference) में रूजवेल्ट के सामने भी इस बात को रखा।

एसने इस पर कोई ऐतराज नहीं किया कि पार्थित अरुंता ही स्टालिन के साथ समझीता

कर ते। अक्टूस 1944 में पार्थित त्या इंटन मालकों गए। पार्डी उन्होंने पुर- पौरंपक के

प्रस्न को सुत्याने की बात कही। किन्तु रूसी तानाशाह अधिक से अधिक इस बत पर

सहमत हुआ था कि तन्दन के पोर्ली को राष्ट्रीय स्वतान्यता के लिए पोरिंगा कांशित में

प्रतिनिधित्त दिया जा सकता है। स्टालिन ने अन्य बिटिश सुझायों के हिम्म अपित के

अनुसार बल्कान में जरादायित्य का प्रतिक्ता के अधिश पर दिमाजन करना था। स्टालिन

ने यह प्रस्ताव किना किसी अपगी के स्वीकार कर लिया। चत्तरी एड्रियाटिक में ब्रिटेन के

में रहने की योजना को भी जराने इसी प्रकार स्वीकार कर लिया।

पर लीटने पर चार्यत ने देखा कि उसके स्वय के जनरल पूर्ण अमेरिकी शहायता के दिना इस कार्यवाही के करने के लिए उत्तुक नहीं थे। उन्होंने भी यह सुझाव दिया कि यह कदम फरस्री 1945 से पूर्व उठाना प्रमादकारी नहीं एहेगा। दिसम्बर 1945 में उसने इस कार्यक्रम का सहिष्कार कर दिया। इस तेन देन का एकमात्र कारया चर्चित को यह हुआ। कि पूनान में अपना प्रमाव बढ़ाने में वह सफल हो सवा। सोवियत सरकार ग्रंट ब्रिटन के साथ समझौते के परिणामक्कार केवल इतनी सीमित रही कि उसने बल्कान देव में आगे यहना रोक दिया। शोवियत सेनाएँ बेलग्रेड चुडापेस्ट और वासां होती हुई परिवम विदना एगा इतिन दो गेरी साथे वर्षी फरवरी 1945 में तीन रहों अर्थात् राजवेल्ट घरिल और स्टालिन का द्वितीय सम्मेलन याल्टा में हुआ। याल्टा सम्मेलन में वे एक दूढ लोकतन्त्रीय पोतंच्य के निर्माप ए राजनल हो गए। उसकी पूर्वें भीमा का निर्दारण कराने रहा के अनुसार हो कर दिया गया। उन्हेंने यह भी स्वीकार किया कि जर्मन क्षेत्र के उत्तर और परिचन के कुछ माग उसे नितने चाहिए। याल्टा घोषणा में अस्पर सामान्यताओं से परिपूर्ण होते हुए भी यह समाट दिखताई दे रहा या कि इंप्लिंग अमेरिका क्लान और डेनुवियन विश्वों पर सेवियन नेतृत स्वीवार कर सुर्वे हैं। परिचमी सर्वियों स्वाराता करना भी मान किया। एक गुन समाईते के अनुसार सेवियत साम ने समुक्तराज्य और येट दिन्दी के वान दिया कि हिटलर की पराजय के तीन महीने बाद यह जावान के विरद्ध युद्ध है सम्पित्तत हो जप्णा। अन्त में इसी साम में समुक्त राष्ट्रसाय की प्रेमना पर सी वार्तालय एका।

द्वितीय महायुद्ध के बद सोदियत राजनय

क्तस में मह मुद्द जिन करिन इसें का धैर्म्यूर्क सानता किया आर्थिक पूर्निमांन के विशाल कार्यक्रम चल्ट, अन्तर्राष्ट्रीय राजनित्त में विस्तारवादी मेंनी अपनाई शित मुद्द को अस्पना तीन्न बन्नकर और परिवर्त मार्यू को असने जब हटवार्य के अभो बूझा कर अपने राजनित्त रूपों को पूर्वि का मार्य प्रस्का किया। न्यानित जब रक्त जिरीत रहते संविद्यत नित्त भिरित्त प्रण्य हेन की सुद्धिका। नाम दुर्ग प्रदूष्ट हों । रेस्टिन्न ने मृत्युर्यन्न एक आजनामको गरिशित अर्थे क्षा स्वार्थ असरा स्था सम्बर्गत विरोधी नित्त का अनुसरान किया। पूर्वी पूर्व में अमने वसनों को सुठलकर संविद्यत प्रस्त कर विस्तार

¹ Palmer and Perkins International Relations p 616

किया गया यूनान के गृह युद्ध में साम्यवादियों की सहायता की गई टकी पर बासकोरस तथा डार्टनेतिक के जानवरूक्तपर्यों के साम्यव में मार्ट्ट्रेश के समझौत को इदलने के लिए दबाब हाता गया गार्ट्स योजना की सहायता लेना अस्वीकार कर दिया गया। ईरान से सीवियत सेमाओं के हटाने में दें लगाई गई टीटो को मारको के गुट से निकाशित किया गया कोदिया से दिन्द भीन में युद्ध हुए। इटादिल की इस आकामक नीति से परिश्मी राणियों सारकित हो गई और उन्होंने बढ़ते हुए सीवियत प्राया को रोकने तया साम्यवाद के प्रसार के दिरोध के लिए अनेक उपाय किए। दूनिन सिद्धान्त भारति योजना उन्होंक्त सन्धियाँ नाटी सचि परिश्मी यूरोध की एकता के लिए बनाये गए विभिन्न समाठन आदि स्टालिन की कोदोर नीति के प्रमावधानी प्रस्तुत्तर से हासके के काटन सीवियत कस की वैसी बदनानी हुई उसी बाद में आद्रजनहादर सिद्धान्त के प्रयोग से अमेरिका की हुई। एसिया और अठीका के नवीदित साझे के प्रति की स्वता की सिद्धा नवस्त रेखी हैं इसी उसी एक बड़ी सीमा तक हम ना चाई का समर्पन को दिया। तब्द रहेता से की कारण ही स्टालिन कर विरोधी समझता रहा। स्टालिन की अप्रवादी कोर नोति ने स्वय साम्यवादी पर में ककारी को परीयां समझता रहा। स्टालिन की अप्रवादी कोरोर नीति ने स्वय साम्यवादी पर में ककारी को पर कर कर दिया।

हितीय महायुद्धीतर काल में दो महाराहियों का खदय हुआ—सवुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत सथ । विश्व में शांकि के दो प्रमुख केन्द्र छमर कर सामने आए और सावराम 1954 55 तक विश्व में दृष्ट हि धुवीयता की स्थिति (Inght Bipolanty) का मोतवाता रहा। दोनों महाराहियों एक दूसरे की धोर प्रतिस्पर्यों वन गई और दोनों ही के नेवृत्व में दी विरोधी मुटों का निर्माण होता गया । महाराहियों की प्रतिस्पर्य विशेषकर यूरोप में बहुत ग्रीव इसे जिससे न केवल शीवयुद्ध में तीवता आई बिक्त प्रतिद्वनी चानियों और अनेक सीनिक गुटों का निर्माण मी दोनों में हुआ। सम् 1955 के प्रारम्भ में रिप्यति घर थी कि करों विश्व शासि और सयुक्त राष्ट्रसय की सदस्यता केवल 59 समन्तु एत्यों तक सीमित थी वहीं असेरिका और स्वयुक्त राष्ट्रसय की सदस्यता केवल 59 समन्तु एत्यों तक सीमित थी वहीं असेरिका और सिर्म एक और सथा कर और अपया राष्ट्र दुसरी और सगमग 60 से मी अधिक राज्यों के साथ देखें थे । सन् 1955 के सप्त दि धुवीयता शियिल होने लगी और पारा बहुकेन्द्रसाद (Poly-centresm) की और स्वन लगी।

प्रशित बहुक-प्रवाद (१००)-१-८०।।।। जा का स्वयन रहना है।
स्तिति की मृत्यु के बार कर्ती विदेश नीति और राजनय में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ।
स्त्री मीति फिर से दिकासोम्मुख बनी। स्टातिल के बाद तीन मुख्य माती ने सीदियत साध
की शिक को बढ़ा दिया। पहली बात बह थी कि पूर्वी पूरोप में सीवियत साधाज्य में स्थायित्व
आ गया। पूसरे सीवियत साध की आर्थिक क्या सीनिक शाकि तेजी के साम्य बदने लगी।
तीसरे कस के प्रदिश्ण शेष मं उपका प्रमाय बदने में मा। गय्यपूर्व दक्षिणी एशिया और
अर्था का विकासशील देश उसके प्रमाय बेत में आ गए। विषक का मन्तुलन एक फका
स्वाप्त कर के और खुकता नगर आया। स्टातिल के बाद यदारि सीवियत साधाज्य का
दिस्तार नहीं हुआ तथापि सीवियत साम की अन्तर्गाद्धिय सिथा हिस्ती प्रमायना है।
जितनी पहले कभी नहीं थी। स्टातिन के उस्तायिकारियों को जिल मुतियों का सामन

स्थापित्व पर पारचात्य मान्यता प्राप्त करना तथा जहाँ सम्मव हो सके वहाँ दिना सोवियत सुरहा को खतरे में आते देव की ग्राक्ति का विस्तार करना। स्टाहिन की उप्रतावादी कठोर वैदेशिक नीति के जो परिणाम निकले और पारचात्य देशों एव तटस्य दोंगें के उसले प्रतावादी कठोर मेंतिकियाएँ हुई उनके फलस्तरूप अब सोवियत राजनय का एक नवीन दिशा में उन्नुख होना स्वमाविक तथा अनिवार्य था। इसलिए स्टाहिन के अदिलम्ब उत्तराधिकारी मोलेकोद ने दिवगत नेता के अन्त्यंष्टि सस्कार में ही पोषचा की कि लेनिन और स्टाहिन की रिक्षाओं के अनुसार साम्यवादी तथा पूँजीपति देशों में शानिपूर्ण सह-असितल स्थापित करने के लिए पूर्ण प्रयत्न किया जाएगा। के की इस नई दिश्य नीति के सुखद परिणाम मी शी

सम्बन्ध में शान्ति-सन्धि हो गई। सोवियत सैनिकों द्वारा फिनतैण्ड के सैनिक अडडे छाली कर दिये गए। हिन्द-चीन की समस्या का शान्तिपूर्ण हल निकल आया। सोवियत सध ने युनान और हजरायल के साथ पुन कुटनीतिक सम्बन्ध स्थापित किए। युगोस्लाविया के

साथ कूटनीतिक सम्बन्ध फिरसे कायम हो गए । मोलेन्कोव के नेतृत्व में सोवियत रूसी लौह आवरण के सम्बन्ध में भी शिथिलता की नीति बरती जाने लगी। बाह्य दनिया से निकट सम्पर्क कायम करने का प्रयास किया गया। स्टालिन विश्व को दो दिरोधी गुटों में दिगाजित मानदा था लेकिन नई नीति के अनसार इसको शान्ति-सन्तलन की प्रक्रिया माना गया और इसे अपने पन में करने के लिए तटस्य राष्ट्रों की सदमावना प्राप्त करने की घेष्टा की गई। खरवेव काल (1955-1964) में सीवियत सघ की दिदेश नीति और राजनय ने अनेक नई दिशाएँ ग्रहण की । लीह आदरण की नीति चतरोत्तर शिथिल होती गई तथा 'यात्रा-कटनीति' का महत्व इंदता गया । पश्चिम के प्रति उप्र नीति का शनै शनै, परित्याग किया जाने लगा । सोदियत नेता शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की और अग्रसर हुए तथा दिवादी के शान्तिपूर्ण समाधान पर अधिकाधिक इल दिया जाने लगा । पर शीतपुद्ध का परित्याग नहीं किया गया । अनुकूल परिस्थितियों में शीतबृद्ध को उमार कर राजनीतिक और प्रवारात्मक लामों को प्राप्त करने के प्रयत्न चलते रहे । अल्पविकतित देशों को आर्थिक प्राविधिक और सैनिक सहायता देने की नीति अपनाई गई । इसमें उत्तरोत्तर विकास होता चला गया । सोवियत प्रमाद-विस्तार की उत्कच्ठा रखते हुए भी उपनिदेशदाद और साम्राज्यवाद विरोधी प्रचार को तीव कर दिया गया । सोदियत नीति यह रही है कि एशिया

संघ ने परमानु हिष्यार बनाने का महत्वाकाकी कार्यक्रम भलाया । इसी रुदय को ध्यान में रखते हुए निकासीकरण सामन्त्री रच-नीति रखी गई । बुस्पेव ने एशिया और अधीका के देशों तथा असरलन दिख (Uncommitted World) की सहानुमूति प्रान्त करने के लिए उपनिवेशादा और साप्राज्यदाद विरोधी प्रवार को भी तीव कर दिया । मीदियत संघ द्वारा उपनिवेशों तथा गुलान राष्ट्रों को स्वतन्त्र बनाने

और आफ्रीका की जनता की अधिकायिक सहानुमृति प्राप्त कर इन महाद्वीपों में साम्यवाद प्रवाद के अनुकूत बातावरण वैचार किया जाए। सोदियत शक्ति और प्रनाव-दिस्तार के गुठम आकर्षण केन्द्र चीन क्षेत्र रहे—एतिया अक्ष्रीका और सेटिन अमेरिका। गृज आयुर्धों में अमेरिका से समानता तथा उससे आणे निकल जाने के प्रयत्न अन्वरता चतते रहे। सोदियत के सभी प्रस्तायों और आन्योतनों को प्रबंत समर्थन दिया जाने लगा । खुरधेव के प्रसाद में
आने के पररान्त से एरियम और अप्रजिक्ष के अल्ल विकतित या अविकरित देतों के प्रति संविद्यत विदेश मीति और राजनय के निम्नितिरित प्रमुख लस्य थे—()मृत्यूर्ग उपनिवेशी अपया अर्थ-उपनिवेशी देतों के सन्देश एव राष्ट्रीय सम्मान को अपयी प्रकार से ध्यान में रखते हुए हमके प्रति पूरी वित्रता एव सीहार्द दिखाना (11) इन देतों के परियम के साथ अर्थात के कट्ट सम्बन्धी का कायदा उजते हुए हम्हें परियम से और भी विमुख कर देना (11) में केवल उपनिवेशादा-दिशेषी बन् जातियाद-विदेशी प्रवृतियों को भी उपाना (12) राजनीतिक सदस्यता की प्रवृत्ति को बदादा देना (12) औप्योगीकरण द्वारा उनकी अर्थाव्यवस्था को विकतित करने की महत्वाक्षीय को सहस्य देना हो सके भी सोवियत एव पास्पित्व व्यापार्थ के सम्बन्ध की अर्थ हुकता (14) परियम के विकद्ध उनके प्रसर्क प्रगढ़ को उकसाना (11) विदेशी पूँजी या सहायता उनकी रवतन्त्रता एव सामान के विकद्ध बता कर सन्देह की मावना उनारना साथ (11) यहित रामुख सीवियत स्ता के सिंत कैयत सम्पयद ही बहुत कम समय में ऐसी एपलियों को साकार कर सकता है।

हेझनेव यम (1964-1982) में खरचेववादी मीतियों को ही आगे बदाया गया शान्तिपर्ण सह अस्तित्व की विचारधारा को पृष्ट किया गया और साथ ही राजनय ने कछ नई दिशाएँ भी ग्रहण की । यात्रा-राजनय ने अधिक महत्व ग्रहण किया । सितम्बर 1965 में भारत-पाक संघर्ष का अन्त कराने में सत्त्वेखनीय प्रयास करने के उपरान्त दोनों देशों के बीच झगड़ा मुलझाने के लिए मध्यस्थता करने के लिए ताशकन्द सम्मेलन का आयोजन किया गया। रूस ने अपनी दिदेश नीति के इस नए पैंतरे ने समूचे विश्व को स्तब्ध कर दिया । सोवियत संघ ने इससे पूर्व अन्तर्राष्ट्रीय विवादों के समाधान में मध्यस्थता के सिद्धान्त को कनी स्दीकार नहीं किया था । पाकिस्तान के प्रति झकाव के रूसी राजनय को शीघ्र ही पून भारत के प्रति झुकाव में मोड़ दिया गया । सोदियत बगलादेश के सम्बन्ध में रूस का दृष्टिकोण मारत समर्थक था। बगलादेश के सकट के समय पीकिंग पिण्डी-वाशिंगटन पुरी के निर्माण की सम्मादनाओं और उससे उत्पन्न खतरे को देखकर मारत ने 9 अगस्त 1971 को सोवियत संघ के साथ मैत्री-सन्धि पर हस्ताक्षर किए। इस तरह भारत और सोवियत सध चीन-अमेरिकी सम्बन्धों में मदिष्य में उत्पन्न होने वाले परिणामों का मुकाबला करने के लिए और अधिक निकट आ गए । सुरक्षा परिषद् में भी रूस ने पाकिस्तान और उसके बड़े भारत आत्र कार्यक राज्य का गए। पुरस्ता नारत पूर्व ने ता राज्य का नाम्यापात विशेष कर्य आका अमेरिका वेदे मा मनसूर्यो पर धानी फेर दिया। युद्ध के दौरान उसने स्पष्ट धेतवानी से कि कोई भी दिशी ताकत हस्तयेप करने का दुस्साहस न करे। रूस धूर्यी यूरोप के साम्यवादी जनत पर अपना प्रभाव बनाए रखने की नीति पर चलता रहा ताकि वहाँ से पिक्रम गरोपीय राजनीति में प्रमावपर्ण दग से हस्त्रक्षेप किया जा सके। अत पूर्वी यूरोप के देशों में पनप रही सोवियत विरोधी प्रवृत्तियों का सामना करने के लिए उसने वारसा सचित सगठन को पहले की अपेक्षा और अधिक कठौर लया सुदृद बना लिया । रूस ने अमेरिका और परिचमी गुट के साथ अदसरानुकूल शीतयुद्ध को उमार देकर भी स्टालिन के समान स्थिति को बिगाइने का प्रयास नहीं किया । सीवियत करा ने अपना ध्यान यूरोप

और एशिया की और केन्द्रित किया लेटिन अमेरिका और अफ्रीका के सम्बन्ध में उसका राजनय दिशेष सक्रिय नहीं रही !

युद्धोत्तर अन्तर्राष्ट्रीय सम्बर्ध को जिल्लाकों में सोचित कूटतीत क्यी तक दिल्ली सकत और प्रनदत्ती रही चननी अमेरिकी कूटतीत नहीं। परिवर्गी एसिंग प्रदेश पूर्वी एसिया पूर्वी सूरेण आदि सती क्षेत्रों में सोचियत कस ने अपना प्रनय बदाया और अमेरिका तथा चसके सथी राष्ट्रों की सूरी देशों का सकता पूर्वक मुकाबना किया।

नदम्बर 1982 में संदियन राष्ट्रपति द्रेझनेद की मृत्यु के बाद उनके उत्तराधकारी यूरी आन्द्रोपेव (नदम्बर 1982-फरवरी 1984) ने रूपने बहुत छोटे कार्यकाल में ही भारी राजनिक कौरत का परिवय दिया। जनका छोटा कार्यकाल रुत्यविक तनारी से मरा क'ल रहा किन्तु उन्होंने ब्रेझनेद की नीतियों पर चलते हुए सीदियत जनना का दिग्दास अर्जिन किया। उन्होंने आपदिक निःशस्त्रीकरण प्रोप में युद्ध की आग्रका कम करने तया अमेरिका से सम्बन्ध सुवारने पर बन दिया लेकिन सत्य ही अमेरिका की राजनीतिक चुनै तियों का सराक्त उत्तर भी दिया। अभेरिका द्वारा नाटी की और से यूरीय में नए परमानु प्रदेपास्त्र लगाने पर एन्होंने यह स्पष्ट घेन्यनी दे दी कि सेवियत संघ मी सपयक जरारी कायदाही करेगा । यूरी अन्द्रोपीद ने चीन की और दोस्ती का हाय बढाने की कटनीटिक पहल की। चनकी दिदेश मैं ते और कटमैं ने एक मध्य लक्ष्य यह रहा कि मारत और क्त और निकट बार । शानियाँ सहब्रस्तित का सन्धंन करते हर बान्द्रोपीय ने सैमन प्रशासन की कृटिल कटनीहि का सफलटपूर्वक प्रत्युत्तर दिया। यूरी आन्द्रोनीय के सत्तरिकारी वैरनेंको (करदरी 1984-मार्च 1985) ने स्पष्ट कर दिया कि वे ब्रेझनेंद दया आन्द्रीपेट की नीति में परिदर्शन करने दाने नहीं है। घेरनेंटी ने कटोर और सदीने राजनप का करातदासदक चप्रदेश किया। चन्हें ने कहा कि वे इन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर सनी पर्दी के सच्च समनदा के खादार पर बाददीत करने को दैयार हैं। यद्वीप सेदियत सब रान्ति चाहता है तथापि वह न तो किसी की धनकी में आएगा और न इस्त्रास्त्रों में किसी देश के बढत लेने देगा। स्पष्टतः यह बात अनेरिका को चेत दनी थी। चेरनेंको ने कहा कि संविदत सप वर्तमान तनारों को दृष्टिगत कर उपने रान्ति प्रयासों की नीति जारी रखेगा। दर खास तौर से छेटे देशों की सहयटा करेगा । सन्होंने पुँजीवदी दिस्तर के दिन्द्ध रापर्व कर रहे लें में को भी से दियत समर्थन ए ही करने का आहर सन दिया। 27 फरदरी, 1984 को दैरनेंद्रो इस परिवर्ग देशों में सनस्याओं को सुन्छने के तिए नित दैटकर दिवार करने का प्रस्ताव किया गया, लेकिन अमेरिका और सबके साथी देशों की नीति सम्पदतः प्रतिहा क्रों और देखों की रही। खेलों हो ही शहनदिक हेतहरी और दहन के सन्न के रूप में प्रयुक्त किया गया । 19 डप्रेस 1984 को रूस न प्रयुन बार खर्मीका हारा ठोलियक चर्ट के चल्ल्यन को लेकर बहिन्दर की चेतरनी दी और लस ऐंजिल में जी डोलियक खेत हर उनका महत्व रूस और उसके राधी देशों के बहिन्दार के कारण निश्चित रूप से घट गया। दर्ज के राजनय के रूप में अस्त्र परिसेमन पर दिवार दिनरी हुआ। जनदरी 1985 में जिनेदा में दोनों महाशक्तियों के बीच अस्त्र परिश्लीमन दार्ग पुनः डारम हुई से कि नदम्बर, 1983 में मग हो गई थी।

राजनस और महाशक्तिली 190

11 मार्थ 1985 को मिखाइल गोर्बाच्योव घैरनेन्को के उत्तराधिकारी बने । तब से लेकर दिसम्बर 1991 ई तक का समय गोर्बाच्योव काल के नाम से जाना जाता है। इस काल में विश्व राजनीति में भारी परिवर्तन हुआ और उसका स्वरूप ही बदल गया। गोर्बाच्योव काल के राजनय की मुख्य विशेषताओं को निम्नलिखित रूप से रखा जा सकता है—

प्रथम गोबंच्योव ने ग्लासनोस्त (खुलापन) और पेरेस्त्रोडका की नीति को अपनाया (यह सोवियत कटनीति में भौतिक परिवर्तन था । इससे विश्व के सम्मुख सोवियत सदस्यों

से पर्दा हट गया । सोदियत संघ की वास्तविकता परे विश्व के सम्मख उजागर हो गई । दितीय मिखादल गोर्बास्त्रोव की सदारवादी नीतियों के कारण गोतियत मात्र से एक के बाद एक गणराज्य पृथक होते गये और स्वय छन्होंने छन गणराज्यों को मान्यता दे दी। तीनों बाल्टिक गणराज्यों लेटविया लिथुआनिया और इस्तोनिया ने सोवियत सच से अलग

11 गणराज्यों (केवल जार्जिया को छोडकर) ने एक ऐतिहासिक समझौता सपन्न कर के राष्ट्रमण्डल बनाने का निर्णय लिया । रूसी गणराज्य के राष्ट्रपति बोरिस येत्ससिन को इस नवीन गणराज्य का अध्यक्ष ीर्वायित किया गया । इसके साथ ही विश्व मानवित्र से सोवियत सध का अस्तित्व समाप्त हो गया। 25 दिसम्बर 1991 ई को मिखाइल गोर्बाच्योव ने सीदियत सद्य के राष्ट्रपति पद से त्यागपत्र दे दिया। इसके साथ ही एक यग की समाप्ति हो गई । अत मिखाइल गोर्बाच्योव की नीतियों को सोवियत संघ के विघटन के लिए सनरहायी सहराया स्ताना है। लतीय मिखाइल गोर्बाच्योव के नेतरव में सोवियत सघ ने पर्वी यरोप के देशों में सैनिक

होने की घोषणा की । 21 दिसम्बर 1991 ई को शोवियत सुप से अलग हुए 12 में से

हस्तक्षेप करने अथवा उन्हें सैनिक शक्ति के बल पर दबाये रखने की नीति का परित्याग कर दिया । परिणामस्वरूप इन देशों की जनता का अपने अपने शासकों के विरुद्ध जमा आक्रोश फूट पड़ा। इस कारण से पूरे पूर्वी यूरोप में साम्यदादी शासकों का पतन हो गया।

चतर्थ जर्मनी का एकीकरण मिखाइल गोर्बाच्योव की राजनियक शैली का महान

ल्हाहरण माना जायेगा । पद्मम् मिखाइल गोर्बाध्योव ने परमाणु हथियारों के परिसीमन करने तथा अन्य दिख सम्मयाओं के समापान करने के लिए अमेरिकी राष्ट्रपतियों सर्वश्री रोनाल्ड रीगन और जार्ज

बुश के साथ शिखर सम्मेलन के राजनय का सहारा लिया । इससे दोनों ही महाशक्तियाँ के सहयों में उत्लेखनीय सधार हुआ और विश्व से शीतयुद्ध का युन समाप्त हो मया । ब्रह्म मिरवाइल गोर्बाच्योव के कार्यकाल में सोदियत सघ और पश्चिमी यरोप के देशों

के बीच सबच निरन्तर संघरते गये। सप्तम, सोवियत संघ ने वारसा संघि संगठन को भग करने का निर्णय लिया तथा

अपने रौनिक य्यय में भारी कटौती करने का निर्णय लिया ।

अध्यम् चन् 1991 ई के खाड़ी युद्ध में सोवियत संघ ने सक्रियता से भाग नहीं लिया फलस्वरूप संयुक्त राज्य अमेरिका और उनके साथी देशों का पलंडा अत्यधिक भागे हो

गया (

यह विश्व राजनीति में सोवियत सध के समाप्त होने वाले दबदबे की पूर्व अवस्था थी।

इस घटना चक्र ने महाशक्ति के रूप में सोवियत संघ के प्रशांव को समाप्त कर दिया ।

नवन् निखाइल गोर्चाच्येव ने नी यात्राओं की कूटनीति का सहारा लिया। उन्होंने समुक्त राज्य अभीका सम्पदादी बीन मचत क्रीस तथा द्विटेन इत्यादि देशों की यात्रा की। इन यात्राओं से इन देशों में सावियत संघ के प्रति सदमादना में बिट हुई।

दरान्, संविद्यत संघ की नित सान्त की नीति रही। विश्व में सान्ति और सद्ग्यन की स्थापन करने में सद्गुक रच्छू संघ की महता को भी संविद्यन संघ द्वारा मान्यन दी गई। निस्सदेह निखाइल गोर्टाब्येच एक युग प्रवर्तक ये कैर उन्हेंने क्यानी विदेशनीति और राजान्य वो नई दिशा प्रदान की। सेकिन उनके कार्यकाल में ही सोदियत संघ का न करल दिश्व की महाराजि के रूप में महाराजि की रूप महाराजि के रूप में महाराजि के रूप में महाराजिक स्वाप्ति स

सन् 1917 से 25 दिसम्बर 1991 ई तक अर्थात् से दिवन सघ के दिघटन तक के राजनय के इतिहास को देखने पर निम्निन्डित प्रदक्तियाँ सामने आरी हैं—

प्रथम पूँपीयपी देशों द्वारा संविदन सब की स्वादन से ही उसका विदेश करने की नीने ने उसके राजनय को अधिरवसामां तथा कटोर बनने में महत्वमूर्ग सूनिक का निर्देश किया।

द्वितीय स्वय संविधत सच और पूरी यूरोप के देशों में सम्पवदी सता को सुरक्षित

रखना उसके राजनय का मुख्य उदेश्य रहा है। टटीय दिख के देशों में साम्यवादी दिवारपास का प्रवार प्रसार करना भी सेदियत

राज्य का प्रमुख रूस्य दिश्द में सम्पन्द का प्रकार प्रसार करना रहा। व्हार्य सेन्द्रियन सभ में मी महत्यक के राज्यम का खुतकर सहत्य हिया। असरान बाद दिनासरील देशों को इस सहत्यता के राजनय के माम्स से प्रमादित करने का प्रयत्न किया गया। सेन्द्रियत सभ में मध्यस्यता के राजनय का भी प्रयोग दिया।

पबम्, सेवियन सथ द्वारा शिवर सम्पेतन के राजनय का मी सहारा तिया गया । इससे संयुक्त राज्य अमेरिका के उत्य सन्यों को सुधारने में व्यापक रूप से सहायदा मिली राया शैराबद का बाराबार कम हुआ।

चटन, स्पेंदरत संग्र हर्ग गर्नेच्येद के शासन के घूर्व तक शक्ति के सारत्य का भी सहारा तिया गरा। पूर्वी यूरेष के उन देशों में सैतिक इस्तर्रेष किया गया जिनमें से दियत संग्र दिग्यी श्रीव्यी तिय दवा रही थी। इगरी चेत्रों स्पेत्रकार और मैतेन्द्र में इसी क्षाप्त पर इस्तर्य किया गया।

ब्रिटिश राजनय

(British Diplomacy)

प्रेट प्रिटेन का रोजकत लग्ना 9-301 कार्यल है जो सनूचे ससार की स्पताय होज का लग्ना 0.2 प्रतिक है। यह जीस को दो पीड़ारी, अभिका का 30वी, त्या सीचेल कर सा 180वीं मार्ग है। दिया राज्या के प्रतिक्त कर से उसका राज्यात वस्त्री दिये भीगोलिक रिस्ती समुद्र की कीठ रखा व्याप्त से प्रातिन रहा और आज भी ये हत उसकी दिदेश मीजि त्या उसके राज्या के निर्माण में महत्ती प्रत्य करें है। किर भी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीं के नये परिका ने क्रिया दिया मीजिय राज्या के गोती दिगा दी है। द्विते के राष्ट्रण करीय सहस्य कोरिया के साथ उसके विषेक्ष सम्माप्ता राजनय को गम्भीर रूप से प्रमावित किया है। पर मल रूप में ब्रिटिश विदेश नीति और राजनय ने अपनी ऐतिहासिक विरासत का परिलाम नहीं किया है। ब्रिटेन चारों ओर समुद्र से पिरा हुआ देश है अत अपनी रक्षा के लिए नाविक शक्ति पर आज भी वह पूरा ध्यान दिये हुए है। अतीत में 'समद्र की रानी (Queen of the Seas) होने के कारण ही ब्रिटेन एक सुविशाल साम्राज्य स्थापित कर सका था जिसके साथ जसके घनिष्ठ व्यापारिक और वाणिज्यिक सम्बन्ध थे । साम्राज्य की रक्षा व्यापार की निरन्तर वृद्धि अपनी समृद्धि एवं शक्ति को बराबर बनाए रखने हेत—ब्रिटेन ने एक नया आयाम अगीकार किया और दह था—शिक सन्तलन की नीति (Balance of Power) । अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए निर्मित इस नीति को ब्रिटेन ने आदर्शवादिता पट देकर विश्व को यह बताया कि सदेश्य सभी 'लघ राष्ट्रों की स्वतन्त्रता की रक्षा करना है' जबकि वास्तव में उसका खेश्य किसी भी एक राज्य को अधिक शक्तिशाली नहीं बनने देना था। उसके राष्ट्रीय दित की यह माँग थी कि यरोपीय महाद्वीप पर कोई भी राज्य इसना सशक्त नहीं दन जाए कि उसकी राति उसके राष्ट्रीय हितों तथा उसके व्यापार को चनौती दे। यदि कोई राज्य रातिज्ञाली बनता भी था तो ग्रेट ब्रिटेन उसके विरुद्ध अन्य राज्यों के साथ गुटबन्दी करके शक्ति सन्तलन स्थापित कर देता था। लई 16वे तथा नेपोलियन बोनापार्ट के समय फ्राँस तथा हिटलर के समय जर्मनी जब शक्तिशाली हो गए तो ग्रेट-ब्रिटेन ने इसी प्रकार की नीति का अनुशीलन किया । इस नीति के अनुसार ब्रिटेन ने अपनी अन्तर्राष्ट्रीय मित्रता एवं शत्रता के सम्बन्ध गतिशील बनाए रखे। यह कहा जाता है कि इ ग्लैंग्ड का कोई स्थायी शत्र या मित्र नहीं है केवल स्थापी स्वार्थ एवं उदेश्य हैं। इनसे अनुकुलता रखने वाले राज्य उसके मित्र बन जाते हैं सथा प्रतिकलता रखने वाले शत्र बन जाते हैं । अपनी आवश्यकताएँ ब्रिटिश दीप की रक्षा साम्राज्य की सरक्षा व्यापार एवं वरिंगज्य की छत्रति तथा औद्योगिक विकास—ये सब अतीत में ब्रिटिश नीति के महत्वपूर्ण उद्देश्य थे और आज भी ब्रिटिश विदेश नीति विचारों से नहीं वरन राष्ट्रीय हितों से प्रेरित है। बिल्जे से लेकर विल्सन और कैलेगहैंन श्रीमति शैचर और जान मेजर तक के सभी प्रधानमन्त्री इसी सिद्धान्त पर कार्य करते रहे है। सभी विद्यान इस मत से सहमत हैं कि ब्रिटिश राजनय के पीछे सैकड़ों वहीं का अनुभव है। यह दिश्व का सर्वोच्च राजनय है जिसकी अपनी विशिष्ट परम्पराएँ हैं। हैटर के अनसार "अमेरिकी राजनय की भाँति यह चालाक भयभीत करने वाला और फुहड नहीं

अस्त्रों की दौड़ विश्व शक्ति के रूप में उसके परामव आदि ने ब्रिटिश विदेशनीति तथा

अनुसार "अमेरिकी राजनय की भीति यह प्रात्मक मममीत करने वाला और फूहड नहीं है। यह फ्रांसीसी राजनय से अधिक महत्वपूर्ण तथा कम औपपाशिक है। परावर्षाओं पर आधारित होने के कारण बिटिश राजनय कदिवारी रहा है। इसका मीरिक अधार व्यापाशिक सिद्धारा है। एक मिरिकिर व्यापाशि की मीरित बिटिश राजनय की सांव है को कि मिरिका माजनय की सांव है को करकी विमाला मिक्कारदात राजा विस्ता के आधार पर जानी है। एक प्रांति है। एक मिर्कार के आधार पर जानी है। एक प्रांति है। एक मिर्कार के अधार पर जानी है। एक कि सांव है के अधार पर सदता है। कुफ विद्यानों को मीरिकाय पर के निद्धा है पर सुर्व भीता के आधार पर सदता है। कुफ विद्यानों को मीरिकाय पर के निद्धा है पर सुर्व भीता है।

^{1.2} डॉ एम **पी शाय वही पृष्ठ १**९०

³ Hayten Diplomacy p 42

192 राजनय के सिद्धान्त

लघीलेपन का भी कारण है। इस सन्दर्भ में सर चॉल्स ट्रेवेलियन का भी यही मत है कि ''द्विटिश जनता किसी दर्घटना के सम्बन्ध में तभी विचार करती है। जब कोई दर्घटना घटित होकर उसके समक्ष आए इसरो पर्व उस पर विचार नहीं किया जाता है।" हैटर इस मत से सहमत है। अवसरवादिता की इस नीति के बाद भी ब्रिटेन अपने हितों तथा अपनी स्थिति के प्रति यूर्ण रूप से सजग है। ब्रिटेन की EEC की सदस्यता इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। आर्थिक सहयोग के माध्यम से ब्रिटेन का राजनय विशवयापी है। आर्थिक सहायता और

तकनीकी सहयोग इस राजनय के प्रमुख अग हैं। ब्रिटिश राजनीतिज्ञ और कूटनीतिज्ञ बढे योग्य और प्रतिमाशामी होते हैं। उनका राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय राजनीतिक जगत में महत्वपूर्ण स्थान है। द्विटिश राजनय कुलीनतन्त्रीय रहा है और ब्रिटिश राज्दतों को प्राय सर्वत्र सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। ब्रिटिश

राजनय शालीन और संयमी है। ब्रिटिश राजनयज्ञ आत्मरलाघी न होकर प्राय पर्दे के पीछे रह कर अपनी महत्वपर्य मिनका निमाते रहते हैं और लोकतान्त्रिक आचरण तथा माण पसन्द करते हैं। निकल्सन का मत है कि ब्रिटिश दुतों को दो विरोधी दृष्टि से देखा जाना है। एक पक्ष इन्हें अकल्पनाशील अनिवृद्ध अकर्मण्य और सस्त मानता है दसरा पक्ष इन्हें पूर्ण जानकार दिश्वसनीय और सकट के समय शान्त मानता है। कुछ उन्हें कृदिल तो कुछ अन्य इन्हें नैतिकता का मूर्तांरूप मानने हैं। इन विरोधी दृष्टिकोगों के बाद भी इतना निश्चित रूप से वहां जा सकता है कि ब्रिटिश राजनय योग्य और कुशल राजदूतों के हाथों में है।

विदेशनीति और उसकी राजनियक गतिविधियाँ व्यावहारिक रही हैं।2 ब्रिटिश दिदेश नीति और राजनय में कम से कम दो क्षेत्र ऐसे हैं जो उसकी मृतमृत परिस्थितियों से निर्णायक रूप से प्रमादित होते हैं। नीति निर्माताओं को इन क्षेत्रों में वातावरण के प्रमुख तत्वों को ध्यान में रखते हुए निर्णय लेने होते हैं । ये दो क्षेत्र हैं—राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक कल्याण की देखमाल । प्रथम की दृष्टि से ग्रेट-ब्रिटेन नाटो सन्धि सगठन का सदस्य बना और सदक्त राज्य अमेरिका के साथ इसने विशेष सम्बन्ध स्थापित किए ।

इसका आधार आत्मनयम निष्कपट व्यवहार तर्क साख और मध्य मार्ग है । हिटिश

ग्रेट-ब्रिटेन हारा विमित्र अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों सनस्याओं कठिनाइओं और सधर्षों के सम्बन्ध में जो दृष्टिकोण अपनाया गया उस पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट हो जाता है कि ब्रिटेन के बाह्य वातावरण ने उसकी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति एव हितों पर गम्पीर रूप से प्रमाव द्वाला है। बाह्य वातावरण के प्रमाव से ग्रेट ब्रिटेन विश्व की महत्वपूर्ण समस्याओं में स्वय मागीदार बनता है । यह मागीदारी पुन उसके आन्तरिक सामनों स्रोतों से मर्यादित होती है । वर्तमान में ब्रिटिश विदेश नीति और राजनय का एक मुख्य उदेश्य अमेरिका के साथ

विशेष सम्बन्ध बनाए रखना है। सन् 1991 के खाडी-युद्ध में ग्रेट-ब्रिटेन ने सयक्त-राज्य अमेरिका का पूर्न साथ दिया था । राष्ट्रीय सुरक्षा एवं राष्ट्रीय आर्थिक कल्याण की दृष्टि से ब्रिटिश सरकार पर पढ़ने वाले दबावों ने ससे अमेरिका के साथ विशेष सम्बन्ध स्थापित करने के लिए प्रेरित किया है। इन चरेरयों की पति के लिए द्विटिश दिदेश नीति में समग्र-समग्र पर असगरसता एवं असगतियाँ भी दिखाई दी है। असगति का एक चंदाहरण यह है कि

। दर्शिय में राय वटी मध्य ३९०

2 दी एम भी राय दही, पुछ 400

एक और यह संयुत्त राज्य अमेरिका के साथ यथासम्भव घनिष्ठ राजनीतिक और सैनिक सम्बन्ध रखता है तथा दूसरी ओर यूरोपीय आर्थिक समुदाय के सदस्यों के साथ इससे प्रतिष्ठ आर्थिक संग्वत्य है। संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ ब्रिटेन के विशेष सम्बन्धों की एक विशेषता यह है कि ये सम्बन्ध आयन्त दीर्घकालीन है। दूसरे ब्रिटेन की दृष्टि से इन राम्बन्धों का मृत्य रौनिक प्रकृति का है और तीसरे यह इस प्रकार के सम्बन्ध हैं कि दोनों ही पदा डारा अर्थ अपनी दृष्टि से लगाते हैं। 19वीं शताब्दी हें अन्त में जब अमेरिका की शक्ति बढ़ी तभी से उसके सन्थ पनिष्ठ सम्बन्ध ब्रिटिश विदेश नीति और राजनय के मुख्य सिद्धान्त बन गए और संयुक्तराज्य के साथ संघर्ष को हर कीमत पर रोकने की चेष्टा की गई। द्वितीय विश्व यद्ध के समय जर्मनी के विरुद्ध अमेरिका से सन्धि तथा विश्व यद्ध के बाद विकसित संविद्यत साथ के साथ सामर्थ आदि की रिथति में यह स्वस्ट हो गया था वि अमेरिका और बिटेन वे बीच सन्धि सम्बद और आवश्यक है। बिटेन अमेरिका के साथ बहुप्शीय न'टो सन्धि सम्रवन मे शामिल हो गया और उसके बाद ध्यापारिक आर्थिक और अपशक्ति की दक्षि से दोनों राज्यों के बीध रिस्तर सम्बन्धों का विस्तार हुआ। ब्रिटेन के साथ सम्योग में अमेरिका की रुधि व्यवहारवादी रही है। ब्रिटेन के राजनियक और सैनिक क्षेत्री में अमेरिका के साथ पनिष्ठ सम्बन्ध हिटिश विदेश नीति का मुख्य उद्देश्य रहा है । इसी प्रवार पश्चिमी युरंप वे राज्यों के साथ पनिष्ठ सम्पर्क स्थापित करने में ब्रिटिश अधिकारिये वी रुचि रही है। ब्रिटिश राजनम के उपयोग का एक साधन राष्ट्रमण्डलीय व्यवस्था है। राष्ट्रमण्डलीय देशों के सन्ध ब्रिटेन के दिशेष सम्बन्धों ने ब्रिटेन को एक ओर अपना प्रभाव बनाए रखने मे तो दसरी भोर समुद्ये दिश्व के साथ निकट सम्पर्क रखने में सहायता दी है। राष्ट्रमण्डल की स्थापना के माध्यम से ब्रिटेन ने पुराने उपनिवेशों से सम्बन्ध (व्यापारिक और राजनीतिक ।तथा अन्तर्राष्ट्रीय जगत मे अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाए रखा है । ब्रिटिश विदेश सेवा का एक भाग राष्ट्रमण्डलीय देशों के साथ सम्बन्धों को देखता है। ये सम्बन्ध व्यापक है- आर्थिक राजनीतिक सामाजिक तीरकृतिक आदि। इसका दूसरा साघन है जासूसी। ब्रिटेश राजन्य भी अमेरिका व रूस की भीति जासूसी का उपयोग कर सूचनाओं की प्राप्ति करता है। स्मरणीय है कि सभी देश जासूसी का उपयोग करते हैं।

। को एथ पी राय वही पृथ्य 40%

194 राजनय के तिद्धान्त

राजनय और अन्तर्राष्ट्रीय कानून (Diplomacy and International Law)

अन्तर्रष्ट्रीय कनृत वे नियम हैं जिनके अनुसार सम्य स्वतन्त्र सार्वमनिक और स्वासी रच्या ग्रानिकत्त रथा पुढकाल में एक दूसरे के सम्य प्यवहर दरते हैं। इनका जपना विशिष्ट स्थान है। राष्ट्रों के नम्प राजनीतिक ग्राक्ति के लिए सार्थ पर परि कोई प्रतिस्था है। रे केदल अन्तर्रष्ट्रीय कानृत का। इन्तर्राष्ट्रीय कानृत मार्वमान रच्यों के आपसी सन्दर्भों का नियमन करते हैं अन्तर्राष्ट्रीय सनाज में सनके क्येकारों और कर्मवा की व्याख्या करते हैं तथा समके विश्वलों का सम्योवस्या करते हैं। ये कनृत कम्यान में अवस्था स्थापित करते हैं।

रजनय और अन्तर्पट्टीय कानून के मध्य महत्वपूर्ण मेद हैं। रजनय विगुद्ध रूप से साट्टीय हिलों को अनिर्देश का सपन है जबके अन्तर्पट्टीय कानून राष्ट्रीय वित से परे अन्तर्रपट्टीय कानून राष्ट्रीय वित से परे अन्तर्रपट्टीय कानून स्वत्या वो महत्व देश है। रजनय दह कता और सायन है जिसका उपयोग हिन्दी साच्या का करते की प्रश्ति राज्य अपने तस्तरी की प्रश्ति राज्य अपने तस्तरी की प्रश्ति का साव्या के का साव्या की का साव्या की का साव्या की का राज्यों के स्वय राज्ये कि अव्य राज्ये वित का अर्थक का परिवाद का साव्या की साव्या की साव्या की साव्या की राज्य का साव्या की राज्य का साव्या की साव्या का साव्या की साव्या की

रानिक प्रिनिचेदों के कविकार और सहस्तावरों अन्तर्रष्ट्रीय कानून का विषय हैं। राज्यिक क्रीकांओं की नियुक्ति वनके स्विकृति, प्रत्या पत्र अधिकार अभित्री, वन्तुकियों जारि अन्तर्रष्ट्रीय कानून से हो नार्योद्ध होंगी है। इस प्रकार कहीं राज्या राज्यें के मध्य सम्पर्ध को नियम के राष्ट्रीय विशेष का सहते करता है वहीं अन्तर्रष्ट्रीय कानून, जन्तर्रष्ट्रीय सम्पर्ध के नियमों का निर्योग करता है। राज्याय हाता राज्यों के कारती सम्पर्ध को सुनाने के तरियों एवं सिहालों पर विषय हिया कानून कर्याष्ट्रीय कानून, जन्तर्रष्ट्रीय साववा अन्तर्राष्ट्रीय कानून का विषय है। क्ला समुक राष्ट्रसाय में सदस्य राज्यों के प्रतियोधित किस प्रकार कार्य करते हैं वह राज्याद का विषय है। कल्तर्रष्ट्रीय कानून राज्याय के समन के सम में भी वस्तर्भी है। यह राज्यादिक लक्ष्यों की चर्मायों के लिए सप्य प्रसुत करता है। राज्यिकों के लिए सान्त्य सम्मा, प्रक्रिया सम्बन्धी कुरिया, सम्माने कुलने वा तरिया, दिवार तथा करते क्या समझीय करते के सादराओं कार्य वीच करते करते करते करता है। दिवार साम करता स्वर्ण करते के अपने रूक्यों को प्राप्त नहीं कर पातीं। सन्धि-वार्ता की प्रक्रिया और रूप भी अन्तर्राष्ट्रीय कानून द्वारा तथ किया जाता है। राजनथ के जरेरयों को प्राप्त करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय कानून पर आधारित तर्क प्रस्तत किए जाते हैं।

जब शाजनय अन्तर्राष्ट्रीय विवादों को तथ करो का प्रयास करता है तो अन्तर्राष्ट्रीय कानून अनेक प्रकार से जसका सहायक शिव्ह होता है। यह अन्य साज्यों में एक शाज्य के अभिकरणों की राश करता है। उसकी प्रोदेशिक अपन्यता की अभिवृद्धि करता है। अन्तर्राष्ट्रीय की नीति को प्रभावित करता है तथा राष्ट्रीय साम्वन्नता की अभिवृद्धि करता है। अन्तर्राष्ट्रीय विवादों को तथ करने के सभी सरीकों में अन्तर्राष्ट्रीय कानूना का अध्वनस्य किया जाता है। सारीय में यह का प्रा सकता है कि अन्तर्राष्ट्रीय कानूना साम्यन्त प्रथमी साम्यन्त है। यह एक दृष्टि से राजनय का परिणान भी है। अन्तर्राष्ट्रीय कानून का अधिकाँत माम विवाजों पर आधारित है। यह कूटनीति हाता की गई सा्येन सामित्रीय सामग्रत्य (दार्ताक्रिय की परम्पता को अपने प्रमान का आधार काता है। साम्यन्तिय साम्यन्त्र (दाराव्य (Conference Diplomacy) के निर्णय अन्तर्राष्ट्रीय कानून के सामन्यत्य त्यांकृत अग बन जाते हैं। कूटनीतिक पत्र व्यवहार्त एव औपपारिक प्रोयणाओं हात अन्तर्राष्ट्रीय कानून का विकास विमा जाता है। स्थाद है कि ये प्रनित्त एव स्वरंग का सहस्वक है।

राजनय की परम्पराएँ अन्तर्राष्ट्रीय कानून का एक महत्वपूर्ण सोत है। राजनयिक परम्पराओं से अन्तर्राष्ट्रीय कानून के विकास में जो सहयोग मिला है उसे विभिन्न उदाहरणों सहित प्रसात करते हुए डॉ. शील के आसोपा ने लिखा है—

सारत प्रस्तुत करत हुए डा स्थान के आपना ने तरण ह— "पानना में मूर्त करोति पूर्व ना पान ने अन्तर्राह्मीय कानून के विकास को सम्पद बनाया है। वर्तमान शताब्दी के छठे एवं सातर्व दशक में राजनय की नई राजनीकों को तेजी से विकास कुम है। प्रथम महायुद्ध के बाद कान्न्रेज कि स्टेनोर्सों पर प्याप्ता ध्यान दिया जाने तना । युद्धोतरहात में सी अनेक प्रयुद्ध व्यवसारी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेनतों के माध्यम से ही की गई है। पेरिस पीस सम्मेनत 1919, घाशिगटन सम्मेनत 1921, लोकानों सम्मेनता 1925 जेनता विकासरामांट कान्न्रेस 1932 स्था 1937 एवं द्वितीय सामद्वाद के स्थानत कार्यक्र सम्मेनत हारा सम्मेनता भागता सम्मेनता प्रथम सम्मेनता स्था 1945 में सायुक्त राष्ट्रसार के स्थापना के लिए सान क्रोसिसको सम्मेनता प्रथम सम्मेनता स्था 1945 में सायुक्त राष्ट्रसार की स्थापना के लिए सान क्रोसिसको सम्मेनत प्रथम स्थापना के लिए सान क्रोसिसको सम्मेनत प्रथम स्थापना के स्थापना के लिए सान क्रोसिसको सम्मेनत प्रथम स्थापना के स्थापना के स्थापना के स्थापना के स्थापना स्थापना के स्थापना स्यापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्य

¹ Quincy Hright International Law and the Littled Nations p 362

196 राजनय के शिद्धान्त युद्ध अपराधियां पर मुकदमें मानव-अधिकार, नर-सहार (जिनोसाइड) निषेधक आदि के

युद्ध अपराधिया पर मुकदम मानद-आधकार, नर-सहार (जिनासाइड) निषयक आदि विकास में राज्याध्यक्षों के बीच हुई इस व्यक्तिगत सहमति ने प्रमुख भूमिका निमाई।

राजनयिक अभिकर्त्ता और वाणिज्य दूत: श्रेणियाँ एवं उन्मुक्तियाँ; तृतीय राज्य के सन्दर्भ में स्थिति, राजनयिक निकाय, अग्रत्व का नियम, प्रत्यय-पत्र एवं पूर्णाधिकार

(Diplomatic Agents & Consuls . Their Classes and Immunities; Position in Regard to the Third State, The Diplomatic Body, Principle of Precedence, Credentials and Full Powers!

यर्तमान समय में अन्तर्राष्ट्रीय सबसों के साधारत में अभिकर्ताओं या प्रतिनिधियों की महत्वपूर्ण मृत्रिका होती है। राजनयिक अभिकर्ताओं का अर्थ ऐसे व्यक्तियों से हैं जो अपने राजय और स्वामकर्ता हाय्य के राजनीतिक सम्बन्धों का साधानत तम करते हैं। ग्रेस में हमको सार्वाजनिक न्या (आगाराहार प्रमित्तिक सम्बन्धों का तात है। एक राजनिक अफिल्तां का यह कार्यक्र है कि वह अन्य राज्यों से अपने राज्य के अपने सन्वर्गों का तथा अपने सावाजीत के हितों को प्यान रखें और सभी महत्वपूर्ण विषयों पर अपनी सरकार को प्रविद्वाद समुद्दाक करें हम अभिक्तांओं की सार्वायाक अनेक प्रात्तिकारीयों द्वारा त्री जाती हैं। स्थायों मिसान के अध्यक्ष के अविद्विष्क कमी कभी विरोध प्रदेशों के तिए अन्य राजनियक अभिकतों भी त्रियुक्त किए कार्य के स्थाय अभिकतों की सार्वाण किसी समार्थिक समय अथा किसी समार्थिक के सामय अपने सम्भन्न या सारावायक का प्रतिनिधित्व करते हैं।

198 ਹੜਕ ਦੇ ਨਿਵਾਜ਼

प्रसंक मनदर प्राप्त सरक राज्य दूसी राज्यों में कारे हैं है का प्रतिप्रीय करते के तिए राज्यिक करिकरों मेजर है और दूसी राज्यों के करिकर्टनों का म्हाप्त करता है. तिन्तु ऐसा करने के तिए एड क्यांक्रिय कानून की दूषि से बाजा मी है। राज्यिक करिकरों नेजरे की सम्प्राद सर्वे का करिकार हक वर्ड-स्कृत प्राप्त की है जा नहीं, इसका निवस्य रहन कर्ड-स्कृत राज्य तथा सक्से प्रमाणित करने साम के बीच होने दसी स्थाप राज्या है। वह रक्ष निक्र पर्याप्त करा ना पर रहर एक सर्वे विदेशों से व्याप्तिक स्थियों करने का करिकर था, किन्दु यह स्थापी दूर नहीं में व स्कृत

क्या सुन्न एक बनेरिक का रहुनी हिनेत की तहारी से एवड़ी की नियुक्त करता है। मार में यह रिज एड़नी के उस ने अपन मने इस प्रमुक्त की वर्षी है। समस्य व्यवस ने बनुसर अर्थेक देश की एजनी में हैरत एक साई राजनिक बनिकत निद्वन दिया परता है। दूब के सम्म देशमा निव एक का रिनिय एक इस्तान एक में दूबी पूछानुत एक की जनता के निर्मे की यह करता है। जिहास क इस्तान में में की बनाने को है कि एक दी यहि को एक में बनिक देशों की स्व

ਵਰ ਸਰੰਸ ਦੀ ਬੰਧੂ ਬੰਧਾਰ ਦਾਣ ਵੇਂ 15 ਪ੍ਰਦਾ ਹੈ ਘਾਲ ਦਾ ਜ਼ਿੰਦ ਸ਼ੁਕਾਣ ਦੇ ਹਨ ਸਟੰਸਾਨ ਦਾ ਬੰਧੂ ਸੰਧਾ ਬ੍ਰਾਂ (ਦੇਸ਼ ਸਘਾ ਦਾ ਇਸ ਯਾਣ ਵੈ ਯਾ ਬੰਦੂ ਉੱਟੇ ਦਾਣ ਜ਼ਿਲਦਾਈ ਹੈ ਭਾਸ਼ਤ ਦਾਰ ਹੁੰਦਾਤ ਦਾ ਬਾਲੇ ਦੇ ਜੋੜ੍ਹ ਦੇਸ਼ਾ ਇਸ ਯਾਣ ਵੈ। ਜ਼ੁਰਾ ਦਾਣ ਵਾਹਾ ਹੁੰਦੇ ਦਾਣ ਅਤੇ ਸੇਤੇ ਯਾਤੇ ਸਰੇ ਵੜ੍ਹੀ ਵੀ, ਭੇਜ਼ੀ ਚਾਲੇ ਧਾਲਾਇ ਦਾਲੀ ਹੈ ਜਾ ਜਿੰਦੇ ਬਾਲੀ ਵੈ। ਦਾਵਾਰਟ ਦੂਲ ਦਾਣ ਵਿੱਚ ਭੇਜ਼ੀ ਸੇ ਵੱਟੀ ਵ੍ਰਾਂ ਵੀ, ਭਜ਼ਾਦ ਬਾਲ

है बर्च केंग्रे के दूर केंग्रि बरहा है। न्दिर स्तीय इसका करना है। यह देर किंग्र

रमा अनेक देवों के जानहों का नागढ़ किया जाता है। किनू यह किन्ती देव में बानी जानहर नहीं मेजन है। साजनदिक अनिकर्ताओं की श्रीनियाँ (Classification of Diplomatic Agents)

दूरों को अनेक प्रकारों में प्रिनाचित किया गया है । माहीय विकास ने दूर की अवस्थकता पूर्व उपयोग्धित को स्तिवार करके उसकी के किया का उसकी हो प्रमुख मारीय अवस्थानों के तिका का का की यह का मान कहा गया है असी करके नाम

वार्त्यक प्रमुख्या के किया है। इस स्थान है। इस के क्षेत्र के क्षेत्र के क्षेत्र के क्षेत्र के क्षेत्र के क्षेत्र मार्टिय प्रमुख्यों के विकार के दिक्ष हैं है है मार्टिय के प्रमुख्य के क्षेत्र के क्षेत्र के इस के इस के स्थान से प्रमुख्यों के वस्त्रीय करते हैं। इस मान्य में प्रातिय की प्रमुख्य मार्टिय के स्थान के स्थान के स्थान की स्था स्थान की स्थान की स्थान की स्थान की स्थान की स्थान की स्थान की

मार्टिय नव : बीटिया ने मोप्या और बीटा में की दृष्टि से दूर्त हो हंग की होंग की होंग की हिम कि विकास है से हैं—जिन्हण्यों, मोनिया की मार्ग्यर () प्रमान के मी के दूरों में काम कर की हुए सोप्यर है होंगे हैं काम कर की हुए सोप्यर है होंगे हैं को साम कर की की मी पोप्यर में पार्टिय में हैं। प्रमान के मी के दूरों से साम के की की मार्ग्यर में पार्टिय मार्ग्यर में मार्ग्यर कर कि साम के मार्ग्यर में मार्ग्यर में मार्ग्यर मार्ग्यर मार्ग्यर मार्ग्यर में मार्ग्यर कर कि साम कर की साम कर की साम कर की है। काम कर है है। साम कर है है। काम कर है है।

दूसरी श्रेणी में राजदूतों के अधिकार सीमित थे और तीसरी श्रेणी के राजदूतों को केवल सन्देश बाहक मात्र मात्रा गया ।

कामन्दक में भी कीटित्य द्वारा प्रस्तुत दूतों के वर्गीकरण को स्वीकार किया है। इन्होंने दूतों के कर्मव्यों का विस्तार से उत्तरेख किया है। उनके भातृत्रार दूत को अपने और दूरिसे देशों के क्षिया स्थान अपने आज के प्रमाद स्थान के स्थान के स्थान के हमाद स्थान के क्षान करने प्रमाद करना पार्टिए उसे अन्य राज्य के विमिन्न अगों की वास्तविक प्राक्ति का परिवाद प्रमान करके अपने राज्य को बताना पार्टिए विदेशी राज्य के असनुष्ट वर्ग को अपने साथ मिला लेना पार्टिए आदि आदि ।

पार्म्सायस मिला लेना पार्टिए आदि आदि ।

पार्मसायस मत्र मी औपनेहम ने राज्यनिक दूतों के दो प्रकारों का उत्तरेख किया

है—(1) वे दूस राजनीतिक सचि वार्ता के लिए पेजा जाता है और (2) वे दूत जो समारोहपूर्ण कार्यों के लिए अध्या अध्याम में परिवर्त को सुमार देने के लिए अध्या आध्या में परिवर्त को सुमार देने के लिए अध्या जाते हैं। शिरीज राज्य समय समार पर दूसरे राज्यों की विशेष दूरा भेजते हैं जो राजनितक हार्ती वहीं हिया आदि ये भाग लेते हैं। राजनीतिक दूती को पूर्व मांगों में विभाजित किया जा सकता है—(1) स्थाई और अस्पाई रूप से किसी राज्य में समझीता सत्तां करने के लिए मेजे गए दूता हूता और (2) किसी कांग्रेस या साम्मेलक का प्रतिनिधीत्व करने के लिए मेजे गए दूता हूता और (2) किसी कांग्रेस या साम्मेलक का प्रतिनिधीत्व करने के लिए मेजे गए दूता हूता है कि पूर्व के राज्या के स्वत्य करने के लिए मेजे गए दूता हूता है कि है और हम पर के समी विशेषप्रीचलारों का प्रयोग करते हैं। आर इस पद के समी विशेषप्रीचलारों का प्रयोग करते हैं।

उत्तरेखनीय है कि मध्याकार सक साजदूरी की अंगियों नहीं थी। उत्त समय अध्यव की ध्वत्य की धीत परवें की आते प्रतरेख के मात्र का प्रयोग करते हैं।

उत्तरेखनीय है कि मध्याकार सक साजदूरी की अंगियों नहीं थी। उत्त समय अध्यव की ध्वत्य का स्वा का प्रति का प्रयोग करते हैं।

अध्येत के प्रायत्व के आधार पर है उनके महत्त तथा की जाती है। इसिलए राजदूर अध्य स्थान का प्रयोग करने के लिए अपनी चहुताई सीर्य पर ऐसर्ब का प्रयोग करते हैं।

की प्यतस्था थी और अर्थक देश का दूत अपनी सवारी और गांवी अपन देशों के दूत स आगे रचने का प्रयत्न करता था। यस समय यह विश्वास किया जाता था कि किसी देश विशेष में प्राप्त अग्रवण के आधार पर ही उनकी महस्ता तय की जाती है। इसिलए राजदूत रुख स्थान प्राप्त करने के लिए अपनी महताई ग्रीमें एवं एक्यों का प्रपेण करते थे। प्राथमिकता का निर्धारण सबसे पहले तीन के पीप द्वारा किया गया। उसके अनुसार स्वर्ण की ताह दिखानों वाले पीप का क्यान सर्वाचिर था। उसके बाद पीम के सबहट का स्थान था। सम्राद के जारप्रियश्ची तीनहीं केशों मे रखे गए। इनके यह प्राप्त पाना और पूर्वाताल के शासकों का स्थान था। यह वर्षीक्षण राज्यों द्वारा स्वर्णका स्वर्णका स्थान किया गया था अत अनेक राजदूत आपत मे इसी प्ररूप पर लड बैठत थे। ऐसे सम्पर्ध में कभी कमी हम्द्र युद्ध की स्थिति भी आ जाती थी। इस प्रकार दूलाया राजनीतिक के गए राजदूत के तन्दन आने पर उसके स्वागत के समय गाडियों आप पीम करने के देवाद को लेकर प्रमें स्वाम स्वेप के राजदूती ने इस्पन्न हो गया। शिसीसी पान का गाड़ी से धीप दिसा गया समा दो थे देश अमरिवीस का दिए एए। एक सीमक है। इस राज्य यसकी दी कि यदि लक्तर सिक्तर सिक्त स्वेप के स्वर्णहा के निवेदा न किया गाड़ से प्राप्त स्वर्ण के स्वर्ण करा स्वर्ण के स्वर्ण करा से गाई। सुई। 4ये ने इस कार्य से कर हो हो स्वर्ण के स्वर्णहा के निवेदा न किया गाड़ भी स्वर्ण करा स्वर्ण करा हो एक स्वर्ण के स्वर्ण करा हो स्वर्ण के स्वर्ण हो स्वर्ण के स्वर्ण करा हो स्वर्ण के स्वर्ण करा हा स्वर्ण करा स्वर्ण करा हम स्वर्ण कर चल दिन्दों का उन्तर करने के तिर तथा दिश्व के तती मार्ग त या गिरु करने कि तर तथा 1815 की दियन क्षेत्रेत न तथा 1818 की इस्त लें (Aux La Chapelle) क्षेत्रेत ने तिन्त्र प्रकार के दूर्ग ती तीन क्षेत्रिय तथा दरिवन का मन निरीवन किया दियाना क्षेत्रेत ने दूर्ग देंग तैन क्षेत्रियों का उन्तरेश किया। इस्ते प्रवेद राज्यों के दूर्ग को कोई स्थान प्राप्त नहीं था। एसत लें शैंपल की क्ष्रेत्र ने करती मार्ग (Ministers Residen) की नई की की दवन की। दूर्ग की दे दिनेत्र की यो मन्ति प्रव

1 राजदूत (Ambassadors)

19दी रहारी के उन्न तक और प्रत्या पर्यों में केनत राजून रहा का है प्रयोग करता या किनु बाद में वह करायाता और यूग राज्युन रहां का नी प्रयाग करता लगा। तम् 1891 से सहुछ राज्य अमेरिन राजून नार का राज्यिक उन्हिम्म की नियुक्ति की कार्या और इसलिए विशेष्टिन मेरी राज्ये को निर्माण राज्येक अभिकास मी निमालत के होने थे।

2. पूर्व अधिकारपुक्त मन्त्री और अस्पारण दृत

(Ministers Plenipotentiars and Envoys Extraordinars)

इसें दुसरे के में का राजरित की स्मारित की दे उस प्राप्त का स्तु के स्मीता है। दे उस प्राप्त का सम्प्र के स्मीता है। में इस राजरित की स्मीता है। में इस राजरित की स्मीता है। में इस के स्मीता है। में इस के स्मीता है। में इस की स्मीता है। में इस के स्मीता है। में इस की स्मीता है। से इस सम्मीता है। से इस स्मीता है। से इस सम्मीता है। सम्मीता है। से इस सम्मीता है। सम्मीता है। से इस सम्मीता है। सम्मीता है। से इस सम्मीता है। से इस सम्मीता है। से इस सम्मीता है।

किया जा सके। बाद में इसके साथ पूर्व अधिकारी शब्द का प्रयोग भी किया जाने लगा इन्हें प्रेषक राज्य समस्त शक्तियाँ प्रदान करता है।

3 आदासी मन्त्री (Ministers Resident)

यर राजनियक अभिकर्ताओं की सीसरी श्रेजी है। 1818 के एक्स तो रीमत वे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन से इस नए वर्ग का प्रास्त्र हुआ। यदारा में इनमें तथा दितीय कैले के दूर्तों में विशेष अन्तर नहीं है। इनका अधिक्य यह था कि ग्रेट क्रिटेन ऑस्ट्रिया फ्रॉर अन्द्र की नहरातिकों यह धारती थी कि उनके कथा निम्न शक्तियों के दूर्तों में अन्तर रहें तथा इनके दूर्तों को अधिक प्रतिष्ठा न दी जाए। इन दूर्तों को परमभेख के रूप में सम्बोधिर करने ही शिष्टला भी नहीं बरती जाती है। आजकत आवाती मन्त्री गियुक्त करने की प्रथ

4 कार्यद्रत (Charge D'Affairs)

इस वर्ग के दूत उपमुंक दूती की भीते राज्य के अध्यक्ष द्वारा दूसरे राज्यों के अध्यक्ष के लिए नहीं भेजे जाते बरन् एक राज्य का वितेष मजातय दूसरे राज्य के दिशे मजातय के लिए पंजता है। फला इन दूरों को दूसरों वो भीति दिशेष सम्मान विशेषाधिकार एव उम्महिजों, प्राप्त नहीं होती है। ये दत अपनी निपक्ति के प्रत्य पत्र पाज्य के अध्यक्त के

न सीप कर दिदेश मन्त्री के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। सारत में मिन्सको मगोलिया और इधियोपिया आदि राज्यों के कार्यद्त होते हैं। किसी देग में स्थित सभी दुर्तों को सामृहिक रूप से राजनयिक निकाय (Duplomatuc Copys) कहा जाता है। इनमें बरिज्यान दूत को डायन (Doyen) अथाया दूत शिरोमणि कहा जाता है। हो मेरिया राजनस्वत के सदस्य आयस में जिन दर्तों का आदान प्रदान करते.

हैं उन्हें उध्यायुक्त (High Commissioner) कहते हैं । भारत में वाणिज्य दूतों के अलावा राजदत उध्यायुक्त और दूतों की अन्य श्रेनियों विद्यमान है।

परापरागत रूप से राज्य ग्राय समान श्रेणी के राजनदिक दूतों का आदान प्रदान करते हैं। व्यवहार में इस नियम के अपवाद भी हैं। आजकत वह प्रायोग परापरा दूट पुकी है जिसके अत्मर्गत केवल बढ़े राज्यों हारा ही राजदूत मेजे जाते थे। अब किसी छोटे देश के लिए महाराधि हारा राजदूत नेजना एक प्रकार से छोटे राज्य के अहम् को समुख्य करना है।

राजदृत या मन्त्री के नीचे एक राजनियक विशन में सैकडो व्यक्ति कार्य करते हैं। आवरयकता के मृत्य मिरान के सरकारी और गैर सरकारी सरस्यों के बीध अन्तर किया जाता है। सरकारी तेंसे वर्ण बहे हिलाके सानी सरस्य प्रेक्त स्त्रमा करव्यक्र हारा मिर्गुम किए जाते हैं। गैर सरकारी सेवी वर्ण में रतोड़्या मानी तथा विराग के अधिकारियों के रोचक होते हैं। इनाने स्थिति के सत्यम में पर्यन्त विशाद हैं। और राज्यों में गीजन्य वश ही हाको राजनिक क्षेत्रिमण्डिक और जाई क्यांत्र विशाद की आती है।

राजदूतों के अप्रत्य का क्रम उनके आगनन को सरकारी सूचना की तिथि से निश्चित होता है। यह नियम वियना काँग्रेस भे नियंदित किया गया था। आजकल इस नियम का कई राज्य अनुसरण नहीं करते और वे राज्यूतों की ज्येखता उनके प्रमागणत्र उपस्थित 202 राजनय के सिद्धान्त

किए जाने की तिथि से निर्धारित करते हैं । भारत में इसी परम्परा का पालन किया जाता है ।

दूर्तों की नियुक्ति (Appointment of Envoys)

राजनयिक अभिकर्ताओं की नियुक्ति करते समय उनकी आदश्यक योग्यता और गुगों का निर्यारण प्रेषक राज्य स्वय करता है। यह ऐसे लोगों को दूत बनाकर मेजता है जो उसके राष्ट्रीय हितों की पूर्ति कर सके। दूसरे राज्य को यह अधिकार है कि वह कारण बताए दिना ही जन्म राज्य के प्रतिनिधियों का स्वागत न करें। दूतों की नियुक्तियों के सम्बन्ध में कुछ निम्मोद्वारियत उल्लेखनीय बातें महत्वपूर्ण मानी जाती है—

पूर्व स्वीकृति अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के इतिहास में कई ऐसे उदाहरण हैं जह एक राज्य द्वारा दूसरे राज्य के प्रतिनिध्यों का स्वागत नहीं किया गया। शन् 1885 में समुक्त राज्य अमेरिका ने मि कीले (Mr Keiley) को दूत बनाकर इटली मेजा किन्तु इटली सरकार ने उसका स्वागत नहीं किया क्योंकि 14 वर्ष पूर्व समुक्त राज्य अमेरिका में एक आम समा में बोलते हुए कीले ने पोप के प्रदेश के इटली में दिलय का विरोध किया था। इस प्रत्या में पत्र-व्यवहर में ऑहिट्स-हगति सरकार ने बताया कि दूसरे राज्यों को प्रतिनिधि भेजने से पहले वन राज्यों की स्वीकृति प्राप्त कर तेनी चाहिए। वन 1893 में अमेरिकी विदेश मन्त्रालय में राजदूत नियुक्त करते समय विदेशी सरकारों से पहले ही पूर्ण तिया कि बया उनको प्रसादित नामजद व्यक्ति स्वीकार होगा। तब से यह व्यवहार एक स्वीकृति नियम बन गया है। बर्तमाम में राजदूतों की नियुक्ति के पूर्व संबंधित देश से स्वीकृति प्राप्त कर ली जाति है।

महित्त पाजबूत: महिताओं को राजनियंक नियुक्त करने के साबन्य में दियारक एकमत नहीं है। इतिहास में महिता राजबूतों के उदाहरण सहुत कम मिलते हैं। सर्वस्तम प्रतिस के तुई मोदहवें में प्रतिस्थ में महिता राजबूत की नियुक्ति को थी। 18 की तथा 19यीं ताजिन्यों में महिता राजबूतों की नियुक्ति का कोई उदाहरण नहीं मिलता। प्रथम दिख्यपुद्ध के बाद सीवियत सथा संयुक्त पाज्य अमेरिका तथा भारत ने महिता राजबूतों की नियुक्ति की। मारत की श्रीमति रिजयालस्त्री पण्डित को सीवियत कस (1948–19), सयुक्त राज्य अमेरिका (1949-51) और मेट बिटेन (1954–62) आदि देशों में राजबूत बनाकर मेजा गया था।

सत्यय-पत्र (Letter of Credence): राजनयिक अनिकर्ता की निमुक्ति करते समय
राज्य के काम्य की कोर से मत्यय-पत्र दिया जाता है। इसमें यह सूचना रहती है कि अनुक
यक्ति को अनुक देग का गरबहुत हनया जा रहा है। प्रस्तय-पत्र के दो क्या डोले है—
(1) जून प्रस्तय-पत्र जो एक मोहरदल्ट तिष्ठाका होता है और (2) इसकी प्रतितिपि जो चुली रहती है। दूसरे देश में पहुँचने पर प्रतिनिधि जपने आगान की सूचना हैत विदेश मन्त्रालय को जपने प्रस्तय-पत्र की प्रतितिपि मेज देता है। मूल प्रस्तय-पत्र को एक विधिदत् समारोह में स्वागतकर्ता राज्य के अध्यत्र को अपित किया जाता है। कार्यद्व को दिए गए प्रत्य-पत्र पर विदेश मन्त्री के हस्ताखर होते हैं और इसे स्वागतकर्ता राज्य के विदेश मन्त्री को अपित किया जाता है। स्थाई राजदूत को अपने साधारण कार्य व्यापार सम्पन्न करने के लिए प्रत्यय एन के अतिरिक्त अन्य किसी अभिसेख की आवश्यकता नहीं होती किन्तु जब उसे कुछ विशेष कार्य सीपे फाते हैं तो उसे पूर्व अधिकार पत्र (Full Power) प्रदान किया जाता है। ये ताकियाँ सम्पन्धित कार्य के अनुकार सीनित अथवा असीमित हो सकती हैं। इस पर राज्य के अध्यत के स्वताहर होते हैं।

संपुक्त राजदूत साधारणत एक राज्य प्रत्येक राज्य के लिए अलग राजनीयक अमिकानी नेजला है किन्तु कुछ परिस्थितियों में एक ही व्यक्ति को कुछ राज्यों में दूत कर्म करने का उत्तरदाखिय सीधा जाता है। उदाहरण के लिए, मारत स्थित अमेरिकी राजदूत नेमाल में मी अमेरिकी राजदूत के कर्तव्य का पालन करता है। इसी प्रकार लक्टन में मारत का उच्चायुक्त आयरसीय्ड और स्पेन के लिए दूत का कार्य करता है। इसोस्ताविया स्थित मारतीय राजदुत यूनान तथा बन्मारिया के लिए मी दूत का कर्या करता है। इसी तरह स्थीवन में स्थित मारतीय राजदुत यूनान तथा बन्मारिया के लिए मी दूत का कर्या करता है। इसी तरह स्थीवन में स्थित मारतीय राजदुत देनमार्क और किनतेय्य के लिए मीस्सकों का पनामा के लिए और इस्ती का अस्वायिया के लिए दुर्ग का कार्य करता है।

प्रारम्भ में राज्य विदेशों में अपने एक से अधिक प्रतिनिधी नियुक्त करते थे। वर्तमान में मी ऐसा किया जाता है। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय ग्रेट ब्रिटेन ने सपुक्त राज्य अमेरिका में राजदूत के अतिरिक्त मन्त्री सरत के एक आधीक व्यक्ति भी नियुक्त किए। ऐसी स्थिति में एक को शरीक बनाया जाता है और अन्य सनके अधीतमध्य कार्य करते हैं।

विशेषधिकार एव चन्मुक्तियाँ (Provieges and Immunities)

वर्तमान में राजनियक प्रतिनिधियों को अपने कार्य एवं दायिकों को सम्पन्न करने के लिए अनेक विशेषाधिकार तथा उम्मुक्तियाँ प्रदान की जाती हैं। ये विशेषाधिकार रिवाजी एवं अमिसस्यात्मक कानूनों पर आधारित होते हैं। राजदूती के स्वतन्त्र कार्य मामायतन के लिए ही ऐसी व्यवस्था की जाती हैं। उम्मार्पभूष्ट मानून के मुख्य विभागक ओपनिश्चिम के कश्चनानुसार "गाजनिथक प्रतिनिधि राज्यों का प्रतिनिधित करते हैं और उनका गौरव होता है। वे अपने कार्यों को पूरी तरह हमेंसे सम्पन्न कर सकेरी जब उन्हें दिशेषाधिकार प्रदान किए जाएँ। "आजकत सामान्यत निम्निलिखित विशेषाधिकारों एवं उन्मुक्तियों को उधित माना जाता है—

व्यक्तिगत अनितकस्यता (Personal Inviolability)

राजनिक अभिकर्ताओं को उतना ही पवित्र माना जाता है कितना राज्य के अध्यक्ष के है अन्त उनको जीवन-प्यां की विशेष सुन्धिया दी जाती है तथा उन्हें स्वाग्वकर्ता राज्य के है अन्तु सिकालिकर से अदना रखा जाता है। राज्युत पर किया गया आक्रमण वाले के राज्य पर किया गया आक्रमण माना जाता है जो पुद्ध को कराज बन जाता है। राज्युत के दी गई सुरक्षा बिना रावें अध्यव पूर्ण नहीं होतो। यदि राज्युया कोई गेर कानुनी काय करता है तो स्वाग्यकर्ता राज्य आव्य स्वा के दिल कदम उठा सरका है।

प्राचीन भारतीय विवारकों ने दूत को शाशिरिक क्षति पहुँचाना नारना अथवा बन्धन मे रखना निन्दनीय कार्य बताया है। कौटित्य के अनुसार दूत चाण्डाल होने पर भी अवध्य 204 राजनय के सिद्धान्त

है। महामारत के शान्तिपर्व में भीष्म ने युधिष्ठर को बताया कि दत को मारने वाला नरकगामी

नहीं की जा सकती।

और भण हत्या के पाप का भागी होता है। आजकल अन्तर्राष्ट्रीय कानून और न्यायालयों

के निर्णयों द्वारा यह सुस्थापित हो घुका है कि किसी राजदूत को बन्दी बनाना तथा उसका माल जन्त करना अवैध है यहाँ तक कि रात्र राज्य के दत्त को हानि पहुँचाना भी उधित

नहीं है। यदि उत्तेजना में किसी दतावास को क्षति पहुँचाई जाती है तो सम्बन्धित राज्य को इसकी क्षतिपूर्ति करनी चाहिए।

स्पष्ट है कि दूत की अवध्यता का अर्थ उसे पूर्ण सुरक्षा प्रदान करना है। यही अनतिक्रम्यता होती है। इसके अनुसार दूत का शरीर इतना पवित्र माना जाता है कि कोई

व्यक्ति हिंसा या उपद्रव द्वारा उसकी हति नहीं कर सकता है। न्यायालय उस पर मुकदमा यला कर दण्डित नहीं कर सकते। दूत के सहयोगी व्यक्तियों और वस्तुओं को सुरक्षा प्रदान

की जाती है। उसका परिवार अनुबर वर्ग गाडियाँ पत्र ध्यवहार आदि अनितक्रम्य समझे जाते हैं। देश का दण्ड विभाग उस पर लागू नहीं होता है। इस सन्दर्भ में राजदूत का यह

कर्तव्य हो जाता है कि वह आत्मनियन्त्रण से काम ले और स्वागतकर्ता देश के कानून का

2 राज्य क्षेत्र बाह्यता (Extra Territoriality)

के विरुद्ध षडयन्त्र करता है तो वह अन्तर्राष्ट्रीय कानून का उल्लंघन करता है। उसके

आदर करे । लॉर्ड मेहोन के कथनानसार "यदि कोई दत स्वागतकर्ता राज्य की सरकार

विशेषाधिकारों की शर्त यह है कि वह अपने कर्तव्यों की सीमा का सल्लघन नहीं करेगा। यदि उसने ऐसा किया तो स्वागतकर्ता राज्य अपनी सुरक्षा के लिए आवश्यक कार्यवाही कर सकता है। यदि कोई राजदूत स्वय ही आग में कूद पड़े तो अनतिक्रम्यता का दावा नही कर सकता । यदि वह अपने को अनियन्त्रित मीड में डाल दे तो उसके अधिकारों की रक्षा

राजदत एव उनके परिवार के सभी सदस्यों को स्वागतकर्ता राज्य के क्षेत्राधिकार से बाहर रखा जाता है । उन्हें स्थानीय क्षेत्राधिकार से उन्मुक्तियाँ प्रदान की जाती है । यह अधिकार अन्तर्राष्ट्रीय कानून के क्षेत्र में एक नया विकास है। प्राचीन विचारको के लिए यह अनात था। पहली बार इसे ग्रीशियस की रचनाओं ने स्पष्ट किया गया। ग्री ओपनहींम के

मतानुसार राज्य क्षेत्र बाह्यता एक कस्पना मात्र है क्येंकि राजनयज्ञ यथार्थ में स्वागतकर्ता राज्य क प्रदेश में रहता है। वह राज्य के कानूनी दायित्व स मूक्त नहीं होता किन्तु वहां क न्यायालय के क्षेत्राधिकार से मुक्त रहता है। अनेक मामलों में यह सिद्ध हो भवा है वि

राजदूत को निवास स्थान सम्बन्धी उन्मुक्तियाँ प्रदान की जाती हैं । स्वागतकर्ता राज्य

राज्य क्षत्र बाह्यता कवल साहित्यिक अर्थ में महत्व रखती है। सन् 1934 में बर्लिन स्थित अफगान राजदत की हत्या हो गई। इस मामले मे जर्मन यायालय ने यह तर्व स्वीवार नहीं किया कि अफगान दतावास में घटित यह घटना जर्मन घटना से बाहर है। 3 निवास की उन्मक्ति (Immunity of Domicile)

की पुलिस न्याय'लय तथा न्यायालय का कोई कर्मबारी इसमे प्रदेश नहीं कर सकता। यदि इस क्षेत्र में कोई अपराधी प्रदेश कर जाए तो दूतादास के अधिकारियों का कर्तव्य है कि वे उसे राज्य सरकार को सींप दे। अपन इस विश्वचिक्तर का दुरुपयोग कर दूनप्यास अपराचियों के अंडडे नहीं बनन दिए जा सकते। ऐसा होने पर राज्य आवश्यक कार्यवारी

कर सकता है। मुझ्साल एव मोटर गैरेज को निवास स्थान का मान माना जाता है। निवास देव में राज्य के अधिकारियों का प्रवेश दुरावास के अधिकारी की अनुनति से ही होता है। अनेक बार दुरावास मान्या माने के हमुख्य अभराधियों को सरण देता है। मदि राज्य न्याधिक कार्यवारी के लिए उस अपराधी की मीन करे हो दुरावास का कार्यव्य है कि सरकार को सींघ दे। यदि सजदूत ऐसा न करे हो स्वागतकत्तां राज्य उसे शारीरिक हाति परिधान के अधिकार कोई मी कार्यवारी कर सकता है।

4 विदेशी दूतावास में शरणदान (Asylum Foreign Legations)

दूतावास में राजनीतिक अपराधियों को शरण देने के सम्बन्ध में दिवित्र देशों में असम-असम व्यवस्थाएँ प्रमित्त है। प्रारम्भ में अधिकाँस राज्यों के द्वारासों में ऐसी प्ररायदान परम्परा थी। आजकत यह केवल दक्षिण अमेरिका के राज्यों में है। दूतरे राज्यों में दूतावासों को यह विशेषाधिकार प्रारा नहीं है कि वे अपनी इमारतों में राजनीतिक अपराधियों के शरण दे सकें। यदि कोई राजदूत ऐसा करता है तो स्थानीय सरकार शक्ति का प्रयोग कर अपराधि को पत्रक सकती है। मानतीय दृष्टि से ऐसे लोगों को दूतावास में शरण दी जा सकती है जो उत्तरिजत भीव या गैर कामूनी कार्य करने वार्तों के आक्रमण से मयनीत हों। राजनीतिक अपराधियों को इस प्रकार की शरण दी जा सकती है।

5 फीजदारी क्षेत्राधिकार से उत्मक्ति

(Exemption from Criminal Jurisdiction)

राजनियक अभिकर्ताओं को स्वागतव र्ता राज्य के फीजदारी क्षेत्राधिकार से पूर्ण एन्युकि प्रदान की जाती है। कानून और व्यवस्था के नाम पर उनकी नरी नरी वनाया जा सकता और न युक्तिस द्वारा उनको पकड़ कर उन पर मुकदमा सलाया जा सकता है। इनसे यह आशा की जाती है कि अपराध न करें और स्वागतकर्ता राज्य के कानून का स्वेष्ध में पालन करें। ऐसा न करने पर उन्हें देवल पान्य को वादिस भेजने तथा उनके देश द्वारा दम्छ की व्यवस्था की जा सकती है। राजा या राज्य के विरुद्ध सब्द्रान्त में शामिल होने वाते दर्तों को स्वदेश वादिस जाने के लिए बाय किया जा सकता है।

6 दीवानी क्षेत्राधिकार छन्मुक्ति

(Exemption from Civil Jurisdiction)

द्वावासों के सदस्यों पर कोई दीवानी कार्यवाही नहीं की जा सबती है। उन्हें ऋण न चुकाने पर बन्दी नहीं बनाया जा सकता और न ही उनकी गाड़ियों धोड़ों तथा साज समान को जात किया जा सकता है। ग्रीसियस का कहना था कि ''चाज़्द की व्यक्तिगत सम्पति ऋणों की अदायगी या सुरक्षा के तिए न्यायात्वय या सम्भन्न पालों के अदिगत्ते से जवन नहीं की जा सकती !' यह विदेशाधिकार राजदूत को धिनामुक स्टकर कार्य करने के तिए दिया जाता है। ग्रेट ब्रिटेन में 1705 में एक कानूत बनाया गया जिसके अनुसार पादे राजदुत कर्ज अदा नहीं करता है तो उसके दिक्द सम्मन जारी नहीं किया जा सकता । यामुक राज्य अमेरिका में कोशिय के कानून होना राजदूत के दिक्द की गई कार्यवाह को अतारियानिक प्रोतिस्था में कोशिय के कार्यवाह की अद्यक्तियानिक प्रोतिस्थानिक के कुछ अपवाद भी हैं।

7. गवाही देने से उन्मुक्ति (Exemption from Witnessing)

चाजदूत को किसी मामले में गवाड़ी देने के लिए बच्च नहीं किया जा सकता। उसे गवाड़ी के लिए न हो दिनी न्यायातय में हुनाया जा सकता है और न ही घर जाकर कोई अधिकारी उसकी गवाड़ी ले सकता। में दे वह उस्त्र गवाड़ी देने के लिए सहस्त हो तो न्यायालय उसकी हमें का लाज उठा सकते हैं। सन् 1881 में अमेरिकी राष्ट्रपति गाराकीव्व की हत्या के समय देनेजुएता का चाजदूत वहाँ उपायित था। वह अपनी सरकार से अनुमति ग्राप्ट करके गवाड़ बन गया। वाजदूत वहाँ हो गवाड़ देने की प्रध्यंत्रा को तुकरा सकता है। सन् 1856 में हालेन्द के राजदूत में इतरा प्रकार से अनुमति श्राप्ट कर गया। वाजदूत वहाँ हो गवाड़ देने की प्रध्यंत्रा को तुकरा सकता है। सन् 1856 में हालेन्द के राजदूत में इतरा गवाड़ दे था। या, किन्तु अदालत में इसकी गवाड़ी देने से इनकार कर दिया।

8. पुलिस से चन्युकि (Exemption from Police)

राजदूत को स्वागतकार्ता राज्य की पुलिस के क्षेत्रधिकार से बाहर रखा जाता है और वहाँ की पुलिस के आदेश प्रव नियम उस पर कामकारी नहीं होते । दूसरी ओर जिन दिवसें पर पुलिस नियनना रखती है उन पर राजदूत मननारी नहीं कर सकता है। यह आशा की जाती है कि राजदूत उन सनी आहाओं प्रव नियमों का पालन करेगा जो उसके मार्ग में बचक नहीं है और समाज की सामान्य सुरहा एव व्यवस्था के तिए उपयोगी हैं। यदि राजदूत ऐसा न करे तो प्रेषक सरकारों से उसे विसस दुसाने की प्रार्थना की जा सकती है।

9. करों से उन्युक्ति (Exemption from Taxes)

स्थानीय सरकार राजदूत पर आपकर या दूसरे प्रत्यक्ष कर नहीं लगा सकती। वह स्वागतकर्ता राज्य की सम्भूता का दिश्य नहीं बनाय जा सकता। चससे मकता, दिज्य ही सकाई, नल सरी दीसाओं का मुख्य लिया जा सकता है। कुछ देती से सीज्यन्दरा की नहीं नहीं तिया जाता। दूसरे प्रकार के अप्रत्यक्ष कर लिए जा सकते हैं। दिवता अनिसमय में दूरों को करी से मुक्त राज्ये का सिद्धान्त सरीकार किया गया था। वहीं दुन पर लगू होने साते करों की सूची बनाई याँ। राज्युत एवं चसके परिवार के सहस्य व्यक्तिगत चर्याम के लिए जो चीज नैगाते हैं जन पर कोई सील-गुक्त अयदा सुँगी नहीं ली जाती है।

10. धार्मिक अधिकार (Right of Religion)

राजदूत को यर्निक क्षेत्र में स्रवान्त्रता प्रदान की जाती है। वह अपने दिश्यास के अनुसार पूजा और स्पासना कर सहना है। उसका यर्न स्थानीय पर्म और दिश्यास से नित्र है। सकता है। यह अपनी उपासना के लिए राजदूतातास प्रतिसर में ही मन्दिर, गिराजायर, मलिन्द अपि का निर्मान करा सकता है।

11. पत्र-व्यवहार की स्ववन्त्रता (Freedom of Communication)

राजन्यिक दूत को अपनी सरकार के साथ पत्र व्यवहार करने की पूरी स्वतन्त्रता प्रात होती है। स्थानीय सरकार द्वारा उसके पत्र-व्यदहरों का निरीक्षण नहीं किया जाता। 12 व्यवसायिक कार्ष (Business Activities)

कुछ लेखरों के महानुसार राजदूरों को व्यापारिक कार्यों को उन्मुक्ति नहीं देनी चाहिए। यदि राजदूत के पास उसके कार्यालय और निवास के अविरिक्त कोई शास्त्रदिक सम्पति है तो इस पर कर लगाया जा सकता है। एक राजदूत द्वारा निजी व्यवसाय किए जाने पर अमियोग प्रताया जा सकता है। अनेक विषायक इस मत का समर्थन करते हैं किन्तु समस्या यह है कि राजदूत की व्यक्तिगत सम्पत्ति और उन्मुक्ति के सीव अन्तर किस प्रकार किया जाए।

13 अनुघर वर्ग के लिए उन्मुक्तियाँ (Immunities for Retinue)

राजदूत को जो विशेषाधिकार सीचे जाते हैं वे एक सीमा तक उसके अनुषर वर्ग को भी प्राप्त होते हैं। इनने दूतावास में वाम करने वाले कर्मचारी दूत के व्यक्तिगत सेवक उसके परिजन तथा नीकर पाकर शामित होते हैं। राजदूत हास अपने अनुषर वर्ग की पूरी सूची स्वागतकर्ता राज्य के विदेश मन्त्रालय को सीची जाती है। इस सूची के अलाड़ा किसी व्यक्ति के कोई राजनिक विशेषाधिकार नहीं दिया जाता है।

राजदूत वी पत्नी या पति को एक सभी विशेषापिकार प्राप्त होते हैं। यदि राजदूत पाहे तो एसके पारिवारिक सदस्यों के विशेषाधिकार को निस्तत भी किया जा सकता है। दुतावास में काम करने वाते कर्मधारी परामार्थाता सचिव तथा सहधारी इत्यादि को दीवानी रूपा फोजदारी न्यायाराणों के वंत्राधिकार के मुक्ति प्रदान की जाती है। राजदूत के निजी नीकरों के सम्बन्ध में कोई सुनिशियत निश्च नहीं है किन्तु छन्डें प्राप्त धीवानी छन्नुक्ति और सीनित फोजदारी छन्नुक्ति प्राप्त की जाती है। राजदूत के सन्देशवाहकों को पूर्व दीवानी और फोजदारी छन्नुक्ति प्रयान की जाती है।

रातीय राज्य के सन्दर्भ में राजनियक अभिकर्ता की रिथति

(Position of Diplomatic Agent in Regard to Third State)

प्रत्येक राजनीयक अभिकर्ता को पद प्रद्रण के लिए जाते समय या अपनी सरकार को प्रतिदेदन देने के लिए लीटते समय तीसरे राज्य की शीमाओं में होकर जाना पड़ता है। अता प्रस्त यह उठता है कि इस तीसरे राज्य में राजदूत की रियति क्या होनी घाडिए। राजदूत को न केदल रास्ता पाने के लिए तीसरे राज्य से सम्बन्ध रखना पड़ता है वरन् अन्य हो विहासी में भी यह आरयक बन जाता है—

(1) यदि राजदूत एक रेसे युद्ध प्रवृत राज्य में है जहाँ अन्य राज्यों द्वारा सैनिक अधिकार किया जा पुका है (2) यदि तीवारे राज्य द्वारा उसके कार्य में हस्तकेप किया जाता है। तीतारे राज्य में इन राजनियंक अभिकतांओं की स्थिति से सम्बन्धित निम्मलिखित करों उत्तर्भतांची हैं—

शान्तिकाल में निर्दोष गमन (Passage in time of Peace)

जब एक राजनायिक अमिकती अपने राज्य से जाते समय या अपने राज्य को आते समय तीरारे राज्य में होकर गुजरता है तो उसकी स्थिति एव अधिकार कैसे होंगे इस सम्बन्ध में तिथारकों ने मित्र मत प्रकट लिए हैं। रसेलिंजिंग (Schmelzing) के कमानुसार 'राजदूत केवल तसी राज्य के प्रदेश में समस्त राज्यायिक दिशेषाधिकारों का उपगोग करता है जितने उसे मेजा गया है। अपनी यात्रा के दौरान वह जिन राज्यों में होकर गुजरता है उनमे वह अनिक्रिक्यरता या अन्य दिशेषाधिकारों का दावा नहीं कर सकता जब सक कि बहु के समझ्यू को अपना प्रकथा पत्र म दिखाए। तीसरे राज्य में से यात्रा करने वाल 20% राजनय के सिद्धान

राजन्यन एक सचारा व्यक्ति की नीनि होना है। घरमार के अनुसार रानिर काल में लेनेक राजदूर किन किसी बार के स्वान्त्रनामूनक हीसरे राज्य से गुगर सनते हैं तथा बुछ समय हिल्मा मी से सकते हैं। उसको निर्योग राज्यून की नीनि कावर कीर बुछ हिरोग्योकनु प्रयान किए जार है। यह एक राजनीतिक सैजना है बोद राजनीयक विस्ता

क्षण्यस्य स्मी राज्य इस बान से सहमा है कि उनके रणानियक प्रिनिप्ती क्षणा गन्त्य्य स्थान के न्य्यार्ट राज्यों में होना राज्यात्म्यात्मी एवं नियम का का सही। उन्हें सभी उपस्क सुनिप्ती केरि सीण्यम प्रवान विया करी। रणाव्हा क माण एक प्रमाणि होना बाति क्षणित स्मात प्रवास दिया गया हो। नियम गाज्य के होत्रीयनार में उन्होंने की रिट से इन होने सिरीयों में करार विया का साला है।

(1) जब एक दून अपने देश से जाने मनय या दश का निए अपने माया रीमर राज्य से गुजरता है (2) जब वह अन्यसक्तान हीमर राज्य का निमास रोगा है और (3) जब वह अपनी मारी से तीसरे राज्य से हकता है। अभिन विधान में राज्यून को कोई राज्यूनि मही दी जारी।

युद्धकाल में रमन का अधिकार (Passage in time of War)

गक राजदूत युद्धकाल में टीको राज्य में होत्यर गान कर सकता है अयता नहीं इस प्रस्त का नतर निम्नलिखन परिन्धितियों के अनुसार दिया जाता है—

2. जब स्वानकर्छा नज्य का तृतीय राज्य में पुत्र हो। राज्य 100 में जब स्वीति और पेरीन के बीच पुत्र प्रिक्ष हुआ सा हो स्वीतिन जन वाले प्रीतीनी राज्य प्रदेश पुत्र के प्रदर्शन में पुत्र में हुए बसी बाग निया गया। यह प्रीति की स्वान श्री इसी विदेश किया हो जब में से इस हमा पर्य कि उपद्रात के यह पहनीने होना साहित्य। स्वागायकार्ता राज्य पर सीसरे राज्य की सांस्त्र संनाओं का आक्रमण होने की स्थिति में में में में पल्लेपनीय हैं—(1) यदि आक्रान्य राज्य की सांस्क्रार राज्यानी से अपने देश के मिनी अन्य करने में पाली जाएं ती प्रान्त पर उच्चता राज्यानी में ही बना रहना प्रांतिए । इसका निश्यम यह स्वय और उसकी सरकार करेगी । (1) यदि स्वागतकारी राज्य पर सीसरे संज्य की सेनाओं का अधिकार है जाएं हो राज्युत का यह सांदित है कि उस नागन को छोढ़ दें । तदस्थ राज्यों के राज्युतों को भी ऐसी स्थिति में हटना पढ़ेगा जब तक कि उनकी सरकार नई सरकार से स्वीकृति प्राप्त । करते । सा 1914 में जब करनी की सांत्राओं ने तरज्यानों पर अधिकार कर हिया तो जनेया सरकार ने लग्जनमंत्र में आए करोंनी की सीनाओं ने तरज्यानों पर अधिकार कर हिया तो जनेया सरकार ने लग्जनमंत्र में आए करोंनी की और बैल्जियम के राजदुतों ने यापस जाने को कहा । जब 1914 में जनेनी की रोज्ञाओं ने बेल्जियम के अधिनीरा मांग पर कब्जा कर किया तो चले में चित्रयम की सरकार प्रांतिती प्रदेश में पत्ती मुझे और वहा दिखा अस्थ सिदेशी राजस्वती में भी सक्ता का भागन किया ।

सामान्य बाते (General Considerations)

एक राज्य को मेजा गया राजनियक अधिकतां अपनी सरकार हो अनुमति के बिना प्रकार साथ अप राज्य के विवादी में हराक्षेत्र करने का अधिकार नहीं रखता है। यदि वह सोतता है तो सवाप्तकारों राज्य या अपना राज्य अध्या दोगों उसहों रचय की सरकार से सिकायत कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त वे राजाधिक विशेषाधिकारों और उन्मुक्तियों की सीमा के अत्यार्थत एक्तर आवश्यक कार्यवादी कर सकते हैं। जब राज्युत अपने व्यापतकारी राज्य के अन्तर्वादी प्रमानकों में दराज है तत्वाता है। वर्ताने राज्य के सम्बन्ध में उसका कोई विशेषाधिकार नहीं रहता है। सन् 1754 में पोलैंग्ड स्थित क्रांसीसी राज्युत ने पोलेश्व तत्वा करते के युद्ध में सक्रिय भाग दिया था। उसे क्रिसेयों ने युद्ध करनी बना दिया और क्रांस द्वारा विशेष किए जंगी दर्जा है। उत्त करती क्रांसी स्था

राजनयिक निकाय

(The Diplomatic fludy)

राजनियक निकास एक देश के सभी राजनियक प्रतिनिधियों का लागूरिक नाग है। इसमे भिश्तों के सभी अप्यार पार्षद सविव और सहस्वारी शामिल होते हैं। इनिक अविरिक्त राजनियक कार्यालय से सम्बन्धित रामी कर्मचारी भी इसके माग होते हैं। कुछ देशों में राजनियक निकास की सूची समय समय पर प्रकाशित की जाती हैं। इसमें मिशन के सदस्यों की पनियों और समस्क पुत्रियों वो भी शामिल किया जाता है।

210 राजनद के तिहान

का सीकृति प्राप्त का लेटा है। एक राजनिक निरंत का अध्यक्ष किसी प्राप्त पर संयुक्त कार्यमारी में केवल रामी शामिल होता है जब सकड़ी सरकार समे अनुमति प्रयान कर देती है।

वरिल्हम राज्यिक प्रतियि की पानी को बोगी कहा पाना है। इसका कार्य समाहकार्त जाया के समुख राज्यिक निकाय की महिलाओं को परिषय देश होता है। जिस साज्यिक निकास का अध्याद करियादित है यह है उसकी महिलाओं के सम्पर्न में बोगी, का यह कार्य हिरोब महस्य सख्दा है। जिस राज्यों में राज्यिक निकाय के सरस्यों की साज्या करिल होती है द्यार करी सज्यु के समने बोगी हात राज्यिक निकाय की प्रतिक महिला का नामें बाराया करते की परस्या है वहीं बोगी का पद महस्यूर्ण कर जाता है। महस्तिक की परस्या के बहुतर किसी राज्यविक निकास के बाज्या की नहाममुख पत्ती का वहीं के हिरोह मानी की पत्ती द्यार राज्यविक निकास की का

अद्रत्व का नियम (Principle of Precedence)

खप्रत्य का अर्थ (The Meaning of Precedence)

इतिहास में अपन्य (Precedence in History)

दिवर बॉडेन टर्ड ईसई राज्यों के लिए अगर का लिस्स पंत हुता किया करा या 188 इस दूषि से स्वर की राज्य प्रकार चात पर हैना राज्य को कहा दूरी हितीय स्वर पर सार पेनाने के राज्य की राज्य दुरीय स्वत पर करता था। पीर के इस वर्षिकत से मी राज्य सन्तुष्ट गरी थे। अनेक बार करने मैच राजी रहिस्स विक्र करते थे। 16री और 17वी शताब्दियों के राजनयिक इतिहास में ऐसे ओक उदाहरण मिलते हैं । उस समय अग्रत्व के नियम के दो अन्य उल्लेखनीय परिणाम भी होते थे....

अग्रद के नियम के दो अन्य उल्लेखनीय परिणाम भी होते थे.... 1 राजदूत को अपने सम्प्रमु के गौरव तथा सम्मान की दृष्टि से तड़क भड़क प्रदर्शित करने में पर्योक्त व्यय करना पड़ता था। यह सब उसके स्वय की जेब से होता था। फल्स

जब वे संवापुक्त होते थे तो जन पर कर्ज का अत्यक्तिक भार हो जाता था।
2 अपनी बनावटी शान शौकत के कारण राजदूत निम्न स्तर के राजकर्मवारियो और
देदी गैर सरकारी व्यक्तियों से मिसना अपने सम्मान और शोभा के विपरीत मानते थे। वे
आवरयक सामग्री का सकलन केवल निष्यत स्त्रीत

सन् 1815 की वियम काँग्रेस में अग्रत्य के सान्दर्भ में कुछ निर्णय लिए गए थे। इसके अनुसार राजनियक वर्ग को कई नेमियों में मिर्माणित किया गया। किश्तित राज्य इन मिर्मारित केंग्रियों के अनुसार अपने अग्रत्य का गिर्मारण करने लो। सोवियत गया पे इस व्यवस्था से नित्र जून 1918 में अपनी सभी राजनियक दूरों को एक टी भेणी प्रदान कर दी और उन्हें पूर्ण निर्मारण मिर्मारियों कहा जो लगा। यह एक अकेती व्यवस्था होने के कारण यह नहीं तकी और सोवियत सथा को मेरी भी प्रदान वर्षीकरण अपनाना प्रदान।

विचार को बेस में यह निर्मारित हुआ कि आयत की दृष्टि से राजनिक प्रतिनिधियों की ग्राह भेगियों अपो क्रम से स्थान चाएँगी और प्रत्येक वर्ग के राजनिक प्रतिनिधियों ने पहले निपुक्त होने वाले को अग्रत्य पहले और बाद में निपुक्त होने वाले को बाद में प्रतान किया जाणा।

कियों जाजूत की मृत्यु, स्थानान्तरण और त्याप ५% की स्थिति में उसके अग्रत्य का प्रत्न अपिक जिटल बन जाता है। इस प्रत्न का समाधान अन्तर्पाद्धीय कानून की सारायता से किया जा सकता है। का अप्यत्य का निर्मय नियुक्ति की तिथि के आयार पर करते हैं तो सत्ते पुत्री का जायार का का का स्थान निया जाता है। उस देश में स्थित साभी राजनाद्धी में बरिष्ठ हों। के कारण उसे विशेष्ठ दूत या डोयन (Duyen) की उपाधि प्रदान की जाती है। आजकत अप्यत्य के नियम का महत्व पूर्ववत् मही है। यह परिवर्तन मुख्यत देश कारणी है हमा है—

(क) बन् 1806 में पवित्र रोमन साम्राज्य का अन्त हो गया तथा विश्व राजनीति में प्रमुतासम्पन्न राष्ट्रीय राज्यों का दिकास होने लगा। अब कोई राज्य किसी से केच या हीन नहीं माना जाता किन्तु प्रत्येक राज्य की बसनतता और राष्ट्रमुत्त का आदर किया जाता के साम्राज्ये के और याने निर्मन सभी राज्यों को समानता प्रदान की जाती है।

(व) दियान कोंग्रेस के बाद से सिपयों पर हस्तावर करने के लिए दिमित्र राज्यों के प्रतिनिधियों द्वारा एकींतरसा (Alucnose) का नियम प्रयवहार में साया जाने लगा। तह दुवार किसी सिंध की जिस प्रति पर कोई राजदूत हस्तावर करता था वह उसे दूसरे यह को देता और दूसरे राजदूत द्वारा हस्तावर की गई मित्र को अपने पास रखता था। इस प्रकार राज्यों के बीच समानता का दियार पनपने लगा। इसने पर भी समारीहे तथा सम्मेलनो आदि में आज भी राजदूत असाव्य आदि को उनके आव्य का ध्यान रखकर ही स्थान दिया जाता है। इस सम्बन्ध में प्रपर्वक देस की अपनी परम्परा व नियम होते है। जिन्हे दूसरे देश के उपनी परम्परा व नियम होते है। जिन्हे दूसरे देश के उपनी परम्परा व नियम होते है। जिन्हे दूसरे देश के उपनी परम्परा व नियम होते है। जिन्हे दूसरे देश के प्राचनाय के स्थान करता है।

वर्तमान व्यद्द्वर The Present Practice)

रार्थ-दिकं क्यावतांकों को दिनेत्र भीगतां होती हैं तथा प्रत्येक सेगी में बत्राय का नित्रवर्दा प्राप्त निर्माणि राज्यावत् के कोने की राज्योव सुनना के क्यार पर किया ज्या है। क्रिय देखने के मतानुसर बहुने या दिख्या का नित्रवर वस दिये के क्यार एन दियोजना बाहिए जब प्राप्तव्यक्ताय बचने प्रत्यनम्त्र प्रस्तुय किए गर हों।

पर देनेक उपयोगसामात्रकार प्राप्त के सामग्र का स्वर्गत हो ज्या है या सरकार रात लगति है तो स्वन्यस्था की नर प्रत्य-पन्न जारी किये जाते हैं। इसके राजनायाँ के ग्राप्त में काने की दिन्यों निम्निन्न होती हैं। इस यह सहस्या पटती है कि बचा इसके प्राप्त पर राजनायाँ के कारत या वरिष्ठा में करार किया जर। इस सम्बन्ध में दिन एकी घरने हैं है। इस सम्बन्ध में 8 मार्च 1818 में एक दिनद चलत्र हुआ था। मानला पड़ या कि केतिस राज्य में जो राजनाया बोधन था ससके राज्य की सरकार बदल गई और इस्तिए सससे ने पर मानला पड़ या कि कर उसकी दरिष्ठा समान्य हो गई तथा ससके पड़ सम्बन्ध में यह महाम्य हो गई है। यह सामग्र स्वार्त कर सम्बन्ध में पर मान प्रवर्ण में प्रत्य है। यह सामग्र से स्वर्ण के बाद हो गया है सत्य इस्त्र की राजनीयल सिक्स के स्वर्ण में के बाद हो गया है सत्य इस्त्र की राजनीयल सिक्स के क्या है। सामग्र से सत्य इस्त्र की सामग्र इस मान के दिन्यत सी। सन् सिक्स स्वर्ण के किया के काया में में एक सिक्स के सिक्स में के स्वर्ण में पेरिस में यह स्त्रीकर किया किया कि मह प्रत्य स्वर्ण 1848 हमा। 1852 में भी की राज की सिक्स मान करना है। यह सी स्वरत्य हमा सामग्र हमा हमा हमा ह

अप्रत्य के सम्बन्ध में प्रत्येक राज्य के समृत्यु के अपने नियन होते हैं। यदि दहाँ स्थित दिवेरी राज्यस्त्र कोई निम्न त्रियन स्वैकार कर से दो समृत्यु के नियन पर कोई प्रन्य नहीं पढ़ेगा। यदि अप्रत्य के समृत्य में कमी कोई सम्बन्ध स्वत्य होता है दो ऐसी स्थिति में स्वायकर्ती राज्य का निर्देश नग्य सम्बन्ध ज्या है।

जब चारपूर और चारपीय किसों के उन्य अव्यक्त को आसीवत किया जात है तो कर उनके समाप के अगर पर न्याप आद होता है। स्थाप का विश्वय स्वार्धिय नियमों के अगर पर किया परा है। स्वार्धिय ने स्वित्व के निश्चय स्वार्धिय नियमों के अगर पर किया जात है। स्वार्धिय ने स्वित्व होने या न होने की यह समाप्त होने या नहीं क्या दो होने मार्थित है का समाप्त जाता है जिन्नु परी किसी समाप्त के सामाप्त है की कहता में पर होने की समाप्त के बीच कहता में पूर्व है। समाप्त के बीच कहता में पर होने समाप्त है के समाप्त है। समाप्त की समाप्त है के समाप्त है समाप्त है समाप्त है समाप्त है। समाप्त की समाप्त है समाप्त है समाप्त है समाप्त है समाप्त है। समाप्त समाप्त है समाप्त है

राज्य के किसी समारे हों में राजनव्य की ब्रमुनियति को कमी-कमी पर्यादा राजनीदिक महत्त दिया ज्या है। सम् 1818 में प्रति के राजन के जन्मदिन-समारे में परिवार के राजदूत की ब्रमुनियति की जन्मदा में पर्यादा वर्षा रही दया वह बजुनन लगाया गया कि दोनों सरकारों के मैद सम्बंद हैं। एक राज्य की सरकार अपने राजदूत की यह निर्देश भेजती है कि यह अमुक समारोह में माग से। तान 1823 में ब्रिटेन ने अपने पेरिस स्थित राजदूत को पेरिनत्तुता में फ्रोंस की दिजय के समारोहों मे भाग रुतेने से रोक दिया था। जब राजदूत स्वागतकत्ती राज्य के सम्प्रगु से व्यक्तिगत बैठकों में निसतों हैं तो श्री अग्रत्व के क्रम का व्यान रखा जाता है।

সব্যথ-শঙ্গ एব पूर्णाधिकार (Credentials and Full Powers)

जब राजनयिक अभिकर्त्ता की नियुक्ति की जाती है सथा वह स्वीकृति योग्य प्रमाणित होता है तो उसे अनेक प्रमाण-पत्र दिए जाते हैं । इनमें प्रत्यय-पत्र (Leuer of Credence) सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है। इसमें यह बताया जाता है कि सम्बन्धित व्यक्ति मान्य प्रतिनिधि है। इस पर प्रेषक राज्य की मुख्य कार्यपालिका के हस्ताक्षर होते हैं तथा स्वागतकर्ता राज्य के अध्यक्ष को सम्बोधित होता है। कार्यवाहक दत (Charges D' Alfans) के सन्दर्भ मे इस पर विदेश मन्त्री के इस्ताक्षर होते हैं तथा वह विदेश मन्त्री को सम्बोधित किया जाता है। प्रत्यय-पत्र में दत का परिचय होता है उसमें उसके मिशन के सामान्य लक्ष्य का उल्लेख होता है. जसमें प्रेषक राज्य अपना परा विश्वास प्रकट करता है तथा स्वागतकर्ता राज्य से प्रार्थना की जाती है कि वह भी राजनय में पूर्ण विश्वास प्रकट करें । राजनयज्ञ के मिशन का औपचारिक कार्य तब प्रारम्भ होता है जब वह अपना प्रत्यय-पत्र स्वागतकर्ता राज्य के अध्यक्ष को अर्पित कर देता है। इस सम्बन्ध में विभिन्न देश अलग अलग प्रक्रिया अपनाते हैं किन्तु एक सामान्य व्यवहार यह है कि प्रत्यय पत्र स्वागतकर्ता राज्य के अध्यक्ष द्वारा एक समारोह में प्रहण किए जाते हैं। जब एक राज्यूत या असाधारण दूत नियुक्त होकर अन्य राज्य में आता है तो वह आते ही स्वागतकत्तां राज्य को अपने आगमन की सुधना तथा राज्यात्यस को अपना प्रत्यय-पत्र अर्पित करने की अभिलावा व्यक्त करता है। तत्पश्चात विदेश मन्त्रालय राज्याच्यक्ष के संधिवालय से बात करके इस कार्य के लिए तिथि समय तथा प्रक्रिया का उल्लेख कर देता है । स्वागतकर्ता राज्य का विदेश मन्त्री या अन्य अधिकारी अपने राज्याध्यक्ष को राजदत से परिधित कराता है।

राजतन्त्रात्मक राज्य को मेजे जाने वाले राजदूत वहीं के राजा की मृत्यु अयवा सरकार बदलने पर पट से हट जाते हैं गया उन्हें गुए प्रस्थय-पत्र जारी किए जाते हैं। गणतन्त्रात्मक राज्य में ऐसा करना जरूरी नहीं होता है। वहीं सम्प्रमुता जनता में निहित रहती है और इस्तिल्प राष्ट्रपति या प्रधानमन्त्री के बदलने पर नए प्रत्यय-पत्र जारी करना आवरयक नहीं माना जाता है।

आवाती राजनयह (Resident Diplomati) को दिए गए प्रत्यय-पत्र मे पूर्ण शक्तियाँ अथवा सचित-वार्ता का अधिकार शामिस होता है। पूर्ण शक्तियाँ (Full Powers) हारा उन सीमाओं को परिवाधिक किया जाता है जिनके अन्यानित राजनयह सचित्र वार्ता करने की समता रखता है तथा उनके कार्यों को उसकी सरकार हारा बायकारी समझा जाता है। प्रेरक राज्य अपने राजनयह के कार्यों के अनुसमर्थन का अधिकार अपने पत्त ही सुरक्षित रखता है। विशेष दुत के लिए उसके प्रत्यान्त को सांच पूर्णाति सुरक्षित एक अन्य पत्र (Letter of Patent) मी दिया जाता है। जब एक दुत अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे माग लेने के लिए किसी राज्य में नेजा जाता है तो उसे अपना शक्ति सूबक पत्र दहाँ की सरकार को प्रस्तुत नहीं करना पड़ता दरन प्रतिनिध परस्पर ही आदान प्रदान कर लेते हैं ।

राजनप्रक्षों को प्रेषक राज्य द्वारा कुछ निर्देश और अनुदेश मी दिए एन्ते हैं एकि चनके निशन का सही मार्गदर्शन हो सके । इसमें समय समय पर दृद्धि एव परिदर्शन मी किया जाता है। वे परिस्थित के अनुसार सामान्य ऊपदा दिशेष सिख्त अपदा सौदिक पुत्र अपदी सरकार नी अनुमति के सिना इनको प्रकाशित मुद्दी करानी सरकार नी अनुमति के तिना इनको प्रकाशित महीं वर सवता। कभी वनी दृत को दौ प्रकार के मिर्टेश दिए जाते हैं। कुछ निर्देश गुपत होते हैं त्या प्रदाश के मिर्टेश दिए जाते हैं। कुछ निर्देश गुपत होते हैं त्या अपनी अन्तर्भावों होते हैं जिल्हें अनुस्तर्भवीय सम्बन्धन में साथी दतों तथा स्थापकर्ता राज्य को दहाया जा सकता है।

राज्दुत को स्वदेश से स्वागतकर्ता राज्य तक पहुँचने के लिए पासपोर्ट दिया जाता है। इसके आपर पर मार्ग में अंगे वाले राज्य उसकी दिश्य स्थिति स पिरित हो रूपे हैं। वे उसे सुरता एव अप्य पुरिवार्ग में प्रदान करते हैं। पासपेर तज्दुत के साथ साथ उसके परिवार के सदस्यों को मी प्रदान करते हैं। राज्यवज्ञ को कुछ अन्य कागजत एवं अभिलेख भी दिए ज्येत हैं जिनसे वह स्वदेश एवं दिदेशों के दिशेश मन्त्रस्यों के सगठन नाथा कार्य का ब्राम प्रदान कर सके और अपने दरित्यों का सार्ग निहंद हुन सके।

राजनयिक मिशन की समाप्ति (Termination of Diplomatic Mission)

राज्निक निग्नन सरकार की भाँचे नहीं होते जिनका कानुमी अस्तित्व व्यक्तियों के दतने पर दी बना रहता है। इसत्वय में प्रत्य पत्र व्यक्तिगत आलेख होते है। इसत्वय पत्र व्यक्तिगत आलेख होते है। इसत्वय पत्र व्यक्ति हितान की समाध्येत सम्बन्धित राज्युत के मर जाने पर स्वदेश की सरकार इंग्य तम बच्च का बचन हुना लिए जाने पर हे जानी है और उसके उत्तराधिकरी इस्ता नम्म प्रत्य पत्र जानी किया जाना है। यह निर्माशत करने के लिए सुक्याधित निर्मा नहीं है कि दिशी सत्वार में कित प्रवस्त के परिवर्तन निमान की औव कि समाध्येत का करना बन जाने हैं दिशी समाधु की मृत्यु के बाद समाध्यात का प्रत्य पत्रों हो मंग की जाती है। अजबत संतिधानिक राज्यत्व या प्रजानक व्यवस्था की स्थापना के कारण स्थित में परिवर्तन आप हो।

प्रो ओपेन्डिम के महानुसार निम्निक्षित कारागें से दौत्यकार्य अथवा राजनय की समाप्ति होती है

1 मिसन का घरेरय पूरा होने पर दूस मण्डल को जिस चरेरय के लिए मेजा गया है उसके पूरा होने पर वह समाप्त हो जाता है। वई बर दूत किसी समारेह में माग लेने के लिए मेजे जाते हैं जैसे शादी दाह सस्कार राज्यितक सरकार के काम्य बदलने की सुमना देने सम्मेलनों या कॉंग्रेसों में राज्य का प्रतिनिधित्व करने, इत्यापि। यह कार्य सम्पन्न होते ही राजनियक निशन समाप्त हो जाता है किन्तु घर लौटने तक राजपूत के विशेष चिकार बने रहते हैं।

2 प्रत्यय पत्र की अवधि समाप्त होना यदि राजनयज्ञ को सीनित काल का प्रत्यय पत्र दिया गया है तो उसका निशन समय समाप्त होते ही समाप्त हो जाएगा । सदाहरण के लिए एक राजदूत को वापस दुलाने और नया राजदूत नियुक्त करने के अन्तराल में राजनयिक रूप से राज्य का प्रतिनिधित्व करने के लिए अस्थाई तीर पर किसी व्यक्ति को नियुक्त किया जा सकता है।

3 वपस बुलाना राजदूत को मेजने वाला राज्य उसे वापस भी दुला सकता है। इसकी विधि यह है राजन्यक अपने राज्य के अध्यव से बारस बुलाने (Pcc.all) का प्रस्तय पत्र प्राप्त करता है। इसे वह स्वाप्तकाल राज्य के अध्यव को अस्ति करता है। सदि वह कार्यदूत है तो यह पत्र उसे विदेश मन्त्री द्वारा दिया और तिया जाएगा। इस पत्र से सम्बन्धिय राजनयक को वापसी का पारस्त्र (Passport) मिल जाता है। उसके विशेषाधिकार घर

यापसी का काश्य राजदूत का त्याम १८ जरावी प अर्थ या प्रश्न एव यहणकर्ता राज्य के बीच मनपूरांव और तनाव की वृद्धि आदि कुछ भी हो सकता है। वापता सुदाने का एक अराण राजदमाड़ का दुपारांव भी हो सकता है। ऐसी स्थिति में स्थायतकर्ता राज्य अपनी प्रार्थना करता है कि राजद्यांक को वासस सुदा तिया जाए। यदि स्थायतकर्ता राज्य अपनी प्रार्थना पर जीर दे और प्रेषक राज्य राजनयन के कार्य को दुपारांग न माने तो जससे उत्पन्न तमान के कारण राजनीहरू सम्बन्ध टट जाते हैं।

- 4 दूस की पदोन्नति जब एक राजनवड़ अपने पर पर रहते हुए ही उच्चतर श्रेणी पर पदोन्नत कर दिया जाता है तो उसका मिशन एक प्रकार से सभाग्त हो जाता है और उसे नया प्रत्यम पत्र प्राप्त करना पडता है।
- 5 पद विमुक्ति यदि स्वागतकर्ता राजनयज्ञ को पद से हटा दे तो उसका मिशन समाप्त हो जाता है। इसका कारण राजनयज्ञ का दुरायरण अथवा प्रेषक एव ग्रहणकर्ता राज्य के ग्रीय सम्बन्ध विवाद हो सकता है।
- 6 पारपञ्ज की माँग वापस न बुलाए जाने पर भी एक राजनवात स्वागतकर्ता राज्य के व्यवहार से दु खी होकर स्वय पारपञ्ज की माँग कर सकता है। इसके परिणामस्वरूप राजनिक्क सम्बन्ध टट भी सकते हैं और नहीं भी।
- 7 युद्ध छिड़ना यदि प्रेषक और स्वागतकर्ता राज्य के बीध युद्ध छिड जाता है तो दोनों देश अपने राजदूतों को वापस सुला लेते हैं। वापसी पर रास्ते में उनके विशेषाधिकार बने रहते हैं।
- 8 सीरिधारिक परिवर्तन यदि प्रेषक एव स्वागतकती राज्य का अध्यक्ष सम्भान है तो उसके भरने या पद से हट जाने के कारण उसके द्वारा भेजा गया या स्वीकार किया गया राजनियक मिग्नन समाप्त हो जाता है तथा सभी राजनयजी को नए प्रत्यय पत्र प्राप्त करने होते हैं। उस समय तक उन्हें विशेषाधिकार प्राप्त रहेगे तथा उनकी विरिच्ता य्यावत् बनी उनेगी।
- 9 सरकार में क्रान्सिकारी परिवर्तन प्रेनक अथवा स्वागतकर्ता राज्य में क्रान्सिकारी अन्दोत्तन के परिणामस्वरूक यदि नई सरकार बन जार तो राजनयिक विश्वन समान्य हो जाता है। तमी राजनयङ्कों को नए प्रवच्च घन्न प्राप्त करने होते हैं। उसकी वरिच्ता यथावत् सन्ती रहती है। ऐसा भी हो सकता है कि क्रान्ति के परिणाम जानने के लिए न तो भर्

प्रत्यय पत्र भेजे जाएँ और न ही राजनयड़ों को वापस बुलाया जाए। ऐसी रिथति में राजनयड़ अन्तर्राष्ट्रीय परम्परा के अनुसार समी विशेषाधिकारों का उपमोग करते हैं।

10 राज्य का दितय यदि प्रेषक अथवा ग्रहणकर्ता राज्य का अन्य किसी राज्य में दितय हो जाता है तो उसके राजनियक मिशन सामार्ज हो जाते हैं। यदि दितय ग्रहणकर्ता राज्य का हुआ है तो दितयकर्ता राज्य समी राजनयक्षों को प्रदेश छोड़ने के लिए कहेंगा। ये राजनयक्ष अपने साथ अपनी सम्पत्ति ले जाएँग। यदि दितय प्रेषक राज्य का हुआ है तो साजनयक्ष यह देवा होती है कि दूतादास की सम्पत्ति किसे सौंपी जाए। यह राज्यों के तत्त्वाधिकार की समस्या है।

11 राजनयङ्ग की मृत्यु िस्त्रान की समाप्ति का एक अन्य कारण राजनयङ्ग की मृत्यु है। ज्योंही राजदूत की मृत्यु होती है उसके कागजातों पर तुरन्त मीहर लगा देनी चाहिए। यह कार्य स्वर्गीय राज्द्रत के दूरावास के ही किसी सदस्य द्वारा किया जाएगा। स्थानीय सरका द्वारा विशेष प्रर्थाना न की जाए।

यदाप राजनयज्ञ की मृत्यु के साथ मिशन समाज हो जाता है किन्तु उसके परिवार के सदस्यों और दूतवास के अन्य कर्मवारियों के विशेषायिकार उनके प्रस्थान करने तक बने रहते हैं। उनके प्रस्थान के लिए एक समय निश्चित कर दिया जाता है। स्वागतकर्ता राज्ये के न्यायालयों का राजदूत की सम्मानी और याकियों पर क्षेत्राधिकार नहीं होता। उससे मृत्यु कर की मैंग मी नहीं की जा सकती।

12 जासूसी के कारण जब दूतावास के कर्मचारी अपनी स्वतन्त्रता और उन्मुक्तियाँ का दुरुपयोग कर गुवाबर का कार्य करते हैं और स्वागतकर्त्ता राज्य की गुवा सैनिक सूचन एँ अपने चज्य को मेजते हैं तो उन्हें वायस बलाने की माँग की जा सकती है।

। राजनयिक भिरानों की समाप्ति के सदाहरण

(Some Examples of Termination of Diplomatic Missions)

उपर्युक्त कारमों में से किसी भी एक अथदा अधिक कारमों से राजनियक मिशन समाप्त हो जाते हैं । कुछ उदाहरणों द्वारा इसे स्पष्ट किया जा सकता है

1 दक्षिण अफ्रीकी सच ने वहाँ बसे हुए मारतीयों के साथ जातीय मेदमाव और ध्यापत की नीति बस्ती 1 मारत सरकार ने इसके दिख्द शिकायत की और 1946 में वहाँ से उच्च आयुक्त को दापस बुला किया तथा उसका कार्य एक छोटे पदायिकारी को सौंग दिया। बस्तुस्थिति चग्न होने पर 1954 में मारत सरकार ने वहाँ अपना दुलावास बन्द कर दिया।

2 जुलाई 1953 में मारत ने लिस्बन से अपना दूत वापस बुला लिया क्योंकि पूर्तगाल सरकार ने गोवा के प्रस्न पर समझौते की बात करना बन्द कर दिया था।

3 सन् 1809 में अमेरिकी सरकार ने वार्शिगटन स्थित ब्रिटिश दूत जेक्सन की वापसी की माँग की क्योंकि उसने एक मोज के समय कुछ आपत्तिजनक बातें कही थीं। ब्रिटिश सरकार ने उसे बप्पस बुला लिया।

4 सीवियत सघ ने 1952 में अमेरिकी राजदूत जींजें केनन को वायस बुताने की माँग को क्योंकि उसने बर्तिन में समाधाराओं के सवाददाताओं को कुछ ऐसे वक्तव्य दिए थे जो सोवियत सरकार के प्रतिकृत थे। अमेरिका ने वापसी के कारणों को पर्याप्त नहीं ससझा ! केनन वो यद्यपि दापस बुला लिया गया किन्तु कोई नया दूत उसके स्थान पर नहीं भेजा गया । दूतावास का परामर्शदाता ही यह कार्य करता रहा ।

- 5 सोवियत सप ने 27 जून 1963 को पीकिंग से मास्को स्थित धीनी दूतावास के सीन कर्ममारियों को यासन हुताने की मींग की करीं कि उन्होंने चीनी माणवादी दल के उस पत्र को रूस में दिवस हिस्स हिम्मा एका पत्र को रूस में दिवस हिस्स हिम्मा एका या 130 जुन को ये पीनी अपने देश को वापस पढ़ों गए।
- 6 अलूबर 1954 में सोवियत साथ की गुप्त पुलिस ने अमेरिकी दूतावास की कुछ दिवर्षों के पकड़ा जो मास्कों में गुण्डागर्दी कर रही थी। अमेरिका के विरोध पर सोवियत स्था ने मौग की कि अमेरिकी दूतावास के राहवारी की पत्नी श्रीमारी सोमस्टर्स के वादस बुला क्लिया जाए। यह मौग मर्गन्दलक होने के साम साथ अम्युपर्य भी थी।
- 7 2 जनवरी 1961 को क्यूबा के राष्ट्रपति किडेल कारत्रों ने अपने एक मावण में कहा कि 300 कर्मपारियों में से 80 प्रतिप्रत गुल्तापति का कार्य कर रहे थे। अत यह मीण की गई कि इनकी संख्या घटाकर 11 कर कि आये। शेष कर्मपारी 48 घटे के अन्दर वापस हुता तिए जाएँ। समुख्यराज्य अमेरिका ने यह अनुभव किया कि इतने कम कर्मपारियों से द्वारावास नहीं घल करता। अत उपने क्यूबा से राजनियक सक्य तीड़ दिया।
- 8 ढोबीनियन गणराज्य ने बेनेजुएला के राष्ट्रपति की हत्या के प्रयास में (24 जून 1960) सहयोग दिया था इरालिए अमेरिकी राज्यों के सगठन की विदेश मन्त्रियों की बैठक में यह निगचय किया गणा कि अमेरिकी महाद्वीप के सभी राज्य इससे अपने राज्यचिक सम्बन्ध तोई दें और इसका आर्थिक बठिष्कार करें। फलत सभी अमेरिकी राज्यों ने इससे अपने दील सम्बन्ध तोई दें और इसका आर्थिक बठिष्कार करें। फलत सभी अमेरिकी राज्यों ने इससे अपने दील सम्बन्ध तोई दिए।
- 9 इंडोनेशिया और फिलीपाइन दोनों रुज्य मलेशिया सघ के निर्माण के विरुद्ध थे इसलिए इस सघ की स्थापना होते हैं। उन्होंने इससे अपना दौरय सम्बन्ध तोड़ लिया।

वाणिज्य दूत (Consuls)

वर्तमान में राष्ट्रों द्वारा की गई सनियर्स व्यापारिक हैं। ये प्राय द्विपसीय होती हैं जिनसे राज्य एक दूतरे को अधिक से अधिक व्यापारिक सुनियार्ष देने का प्राथमान रखते हैं। इसी उदेरय से राज्य एक दूतरे देशों में वाणिज्य दूतावाग (Consultor office) खोतते हैं। आज राजदूती का एक मुख्य कार्य व्यापारिक गतिशियेसों में अभिकरि प्रवर्दित करना हैं। एक राजदूत का दो यहाँ तक कहना है कि एक समय या जब राजदूत राजाओं के साथ पूमा किया करते थे परन्तु आज हम पीजे बेचने वाले (Carpet begging salesmen) व्यक्ति बन कर रह गये हैं। राजन्य के प्रायमिक काल में जबकि राजदूत राजाओं का प्रतिनिधि होते थे वे व्यापार की वार्तिओं से दूर रहते थे। व्यापारिक काम करने में अपना अपमान समझते थे। यह वारतव में इतिहास की ओर लीटना हो गया है क्योंक राजना वैशिस की दूरीये व्यवस्था का प्रारम्ण व्यापार से की हुआ था।

को एम की शब वही पूच्छ 315

दमिल्य दूट सन्या की एडे न्ह्य युग ने निहित हैं । इटली, स्पेन और ह्याँस के व्यवस्थित नार्ते में व्यापरीयन दुनद हारा क्यन समियों में स एक या दी व्यापरियों को व्यापरिक दिवारों में यद नियन कर दते थे। इनको बारिज्य दत कहा जाता था। 15दीं रहादी में हालेग्ड तथा लन्दन में इटली के बीजिय दूत थे और ब्रिटेन के बीजिय दूत इटली हालैन्ड डेनमारू नार्दे अदि राज्यों में भी दिनाज्य दूत थे। बाद में यह प्रया कम हो गई। 17वीं शताब्दी में स्थापी दूतवारों की स्थापना के साथ-सम्थ दिनान्य दुवें के कर्य पर्यात घट गर् । राष्ट्रीय सम्मुटा की मान्यटा का दिकास होने के साथ ही इन दिनाज्य दुरों को अपने देशवनियाँ पर दीवारी एवं फीलदारी क्षेत्र विकार का प्रयोग करने की हन्नी नहीं दी गरी। 10ई शहादी में हन्नरेष्ट्रीय ब्यापर नौबातन एवं एहजारी हा दिहास हुड़ा। करता सरकारों को विभिन्न दूरों की सम्या का महत्व और सम्याभित मन्द्र में अने ली। रीप्र ही इनके दिवरों में पैर-राजनिक कार्यों का स्टारदिन्द सँचा जाने लग्न । उसके बाद इस सत्या का दिस्तार हुआ। आज ससार में दिनित्र है नियाँ के हरातें व निज्य दृत (Consuls) पाये जाते हैं। व निज्य दृत राजन्यिक सेदा का अनित्र क्षा है और सनका सददा ही महत्व है जिदना सहन्तवकों का। ब्राह्म के यान में क्षार्यिक राजनय (Economic Drytomacy) बन्दरीष्ट्रीय मन्दर्गी का एक बनिदार्य और महत्वपूर्ण का है दया लानग प्रत्येक देश के दिदेश मन्त्रालयों में क्रार्थिक व्यवस्था से समस्थित दिशे दिना छोत रखे हैं। मयुक राज्य कमेरिता में प्लाहन समिति (Plonden Committee) हा हो यह नत था कि प्रत्येक सलदत का ब्यामिक क्षेत्र में मी कार्य करने का अनुमर हेन्द्र चहिर्।

दिनिज्य दूर्वों का कानुनी स्तर और श्रेनियाँ (Legal Status and Classification of Consuls)

बिन्न पूर करने देश के दूसरे देश में तिपुछ दूर होते हैं मास्तु वे राज्यपिक मेटिपी नहीं होते हैं। इस दूर्त का कार्य करने एकु के बनिज्य-सम्बद्धी कार्य करता ह्या बनिज्य-दिरों का माहमा कार्य होता है कार्यिक इतका नृद्धा कार्य कार्य होता कर्मा कार्य होता है है है का मन्दिर्द्धा तिपी के कार्यात इसे बन्निज्य-दिरों की मुक्ता कार्य होता है इसक्ति, कन्टर्सिट्ट्सा तिपी के कार्यात इसे राज्यपिक प्रतिविधित की निज्या करना में बन्नर्सार्ट्ड्सा कार्य करते हैं। बनिज्य-दूर्तों के सम्बद्धा में क्वार्य हैं है विभाग-दूर्तों के सम्बद्धा में क्वार्य हैं कार्य होता कर सहा कार्य करते हैं।

यापी राजनीक एवं बािज्य क्षीकारी मून कर से जिन्न होते हैं ह्या सरकी कानूही प्रहृति में पार्ट जिलान हरती है जिस में कोक साजों में इल होटों कारों को इल ही व्यक्ति व्यक्ति में निलने का प्रधम किया है। सारहीक कविकारियों को बािज्य वृत्त की कुछ स्तित्यों में पार्टी हैं और बािज्य पूर्ट को लीज प्रपार्ट में सारहीक कविकारियों के कार्य दिए कोई है। यह प्रकार समा राज्य की महानी से किया कार्य है हिसमें कपिकारी को मेंगा का रहा है। येनों प्रभाग के कार्य समझ करते बाले कपिकारी का सरा दार करते के समस्य में मान्य्य एठ सकरी है।

Powden Common Repris pp. 55-63
 If G. Surie: An immodence to Immode pp. 449

- सन् 1963 के वियना अभिरामय के अनुब्धेद 9 के अनुसार वाणिज्य-दतों को निम्नतिवित 4 श्रेणियों से बॉल भग है
- (1) कींसल्स जनरल (Consuls-General) प्रथम श्रेणी के वाणिज्य दलों को कौसल्स जनरल कहते हैं तथा यह मुख्य वाणिज्य-दूतावास के प्रधान होते हैं।
- (2) कौंसस्स (Consuls) इस प्रकार के वाणिज्य दत दसरी श्रेणी मे आते हैं तथा कुछ नगरों में ये भी अपने दतावास के प्रतिनिधि होते हैं। परन्तु ये काँसल्स-जनरल के
- नीचे होते हैं।
- (3) बाइस कौसल्स (Vice-Consuls) ऊपर वाली दो श्रेणियों के नीथे होते हैं तथा बहुपा में कौसल्स-जनरल तथा कौसल्स के सहायक होते हैं। कुछ राज्यों में इनकी नियुक्ति कैंसल्स-जनरल द्वारा की जाती है।
- (4) कौंसलर्स एजेटस (Consular's Agents) कौंसलर्स एजेन्ट्रस सबसे निम्न श्रेणी के बाणिज्य-दत होते हैं तथा इनकी नियक्ति काँसल्स जनरल या काँसल्स के द्वारा
- की जाती है। वाणिज्य-दतों की नियक्ति बहुया राष्ट्रों के अध्यक्ष द्वारा की जाती है तथा ग्रहण करने वाले राज्य उन्हें एक अनमति पत्र जारी करके स्वीकार करते हैं।

वाणिज्य दर्तों के कार्य (Functions of Consuls)

- वाणिज्य दुतौं द्वारा सम्पन किए जाने वाले कामौं का निम्नतिखित प्रकार से उल्लेख किया जा सकता है
- (1) अन्तर्राष्ट्रीय कानन द्वारा निर्धारित सीमाओं के अन्तर्गत प्रेवक राज्य एव उसके राष्ट्रिकों के हिलों की प्रहणकर्ता राज्य मे रहा करना ।
- (2) दोनों देशों के बीच व्यापार को प्रोत्साहन करना और आर्थिक साँस्कृतिक तथा वैश्वानिक सम्बन्धों का विकास करना ।
- (3) प्रेषक राज्यों की सरकार के लिए प्रहणकर्ता राज्य के आर्थिक सौंस्कृतिक और वैचानिक जीवन के दिकास की परिस्थितियों के सम्बन्ध में प्रतिदेदन देना । रुधिशील व्यक्तियाँ एव फर्मों के लिए भी इसकी सधना देना।
- (4) प्रेवक राज्यों के राष्ट्रिकों का पारपत्र एवं यात्रा सम्बन्धी कागज प्रसारित करना और उस राज्य की यात्रा के इध्यक लोगों को बीसा तथा ऐसे ही दूसरे आलेख सौंपना।
 - (5) प्रेषक राज्य के राष्ट्रिकों की सभी वैध तरीकों से परी-परी सहायता करना ।
- (6) लिखित पत्रों को प्रमाणित करने वाले एव नागरिक पंजीकरणकर्सा के रूप में कार्य करना तथा कुछ प्रशासनिक कार्य सम्पत्र करना । ग्रहणकर्त्ता राज्य के प्रदेश में प्रेषक राज्य के राष्ट्रिकों के उत्तराधिकार सम्बन्धी हितों की रक्षा करना।
- (7) ब्रहणकर्ता राज्य के न्यायालयों एवं अन्य अधिकारियों के सामने प्रेवक राज्य के उन राष्ट्रिकों का प्रतिनिधित्व करना जो किसी कारणवश अपने अधिकारो की रक्षा करने में असमर्थ हैं। इस प्रकार ग्रहणकर्ता राज्य के कानून के अनुसार इन अधिकारों की प्राविधिक रूप से रहा की जा सकती है।
 - एस के कपुर अन्तर्राष्ट्रीय विधि, पृथ्व 283 84

- (8) प्रेचक राज्य के न्यायालयों के लिए प्रमान देने हेतु न्यायिक आलेखों अवर कार्यकारी आयोगों के रूप में स्थित सन्धियों या प्रहमकर्त्ता राज्य के कानूनों के अनुसार कार्य करना !
- (9) देवक राज्य की राष्ट्रीयता वाले जलपोतों उस राज्य में परीकृत यनों एवं पनदुवियों का प्रसावकों राज्य के कानुनी एवं विनियमों के अन्तर्गत पर्यवेक्षण एवं निर्देशण करना जहाज के कागजें की परीक्षा करना क्या जन पर मेहर लाजना , ज्या जा के वीराण पटने बत्ति किसी मी पटना की जीव पहलात करना, जहाज के मनिक, नौकर्षे एवं नादिशों के झानते की स्थासम्बद प्रेषक राज्य के कानुन के अनुनार तथ करना !

कनी कनी प्रेवक राज्य एक दानाज्य दत को तीसरे राज्य में अपने कार्य सम्पन्न करने की शक्ति भी सींप देता है। यह अन्य दोनों राज्यों की सहमति के बाद ही किया जाता है। दणीज्य दर्तों का कार्यक्षेत्र निरन्तर बढ़ता जा रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में इन्दि के साध-साथ वाणिज्य दुतों के अधिकार और कर्तव्य महत्वपूर्ण बनते जा रहे हैं। दाणिज्य दुव स्टक्ती राज्य की अधिक स्थित जसे देश में सम्बद्ध अधिक अटसरों सदार एवं यतायत जहाजरानी कीमलें व्यवहारिक प्रतियेगिलाओं वाणिज्य तथा और्योगिक सस्यानों आदि की सुदनएँ एकत्र कर अपने देश की सरकार को नेजला है। सरकार यह रिपोर्ट अपने देश के व्यापनियों को देती है। जिससे कि दे अपने आयन्त-निर्यंत के आदरयक निर्मय से सकें। विनिज्य दलें का कर्तव्य है कि दे अपने देश की व्यापारिक दक्षि के लिए नए बजारों की प्राप्त हेतु प्रयास करते रहें । उन्हें देखना होता है कि उनके देश के साथ की गई व्यापरिक सन्धियों का ठीक प्रकार से पालन हो रहा है या नहीं। किसी भी विजन दत का यह अत्यन्त अवस्थक और महत्वपूर्ण कार्य है कि वह देश के व्यापार को प्रोन्स हिट करे । अपने देश की कम्पनियों तथा स्वानीय और दिदेशी कम्पनियों के मध्य व्यापिक झगडों के समघान में मी दानिज्य दूत की महत्दपूर्न मूनिका होती है। राजदूत के अदिरिठ वानिज्य दत दिनित्र रूपों में अपने देश के नागरिकों को सहादता तथा मरहान देता है—ये है हस्तक्षर को प्रमानित करना. चन्हें शस्य दिलदाना. चनके दिवाही का पणीकरण करना. जन्म और मृत्यु का पर्णकरन करना आदि । दानिज्य दत उनके प्रदक्ता तथा पारिवारिक डॉक्टर व दरील की माँति है जो उन्हें सनय समय पर परानर्श देता रहता है। बस्क की मत है कि दिदेश में अपने देश का अवेला प्रदिनिध होने के कारण उसका एन संपर्क की कार्य महत्वपूर्ण हो जाना है। न्यून चिक रूप में यदि उसे 'जन-सम्पर्क अधिकारी' कहें ही अतिशयोठि नहीं होगी। यह दिदेशों में अपने देश के नागरिकों का नित्र दार्शनिक और मार्गदर्शक (Friend, Philosopher and Guide) होता है। इस प्रकार कान्सल में उन सर कार्यों को करने की येग्यता होनी चहिए जो एक ब्यापारी नगरिकदा प्रदान अधिकारी आप्रदासन अधिकारी येग्य प्रशासक रिपेटर, सूचना दिहरक दार्लकार, दवील आदि नै होती है। प्राप्त स्ट्रप्ट के नत में कान्सल 'Master as well as a jack of all trades होत्य चरिए ।

दाणिज्य दूरों के साथ-साथ उनहीं पतियों को नी महत्वपूर्त मूनिका का निर्देश करने पहला है । उन्हें एक पदये की सीति घर आए मुसीरत के मारों की कहनी सुनग्री पहली

। संस्मरीय सी. पृष्ट ३२५ ३०.

है बीमारों की देखमाल करनी पडती है आए दिन लोगों के झगड़ों का निपटास करना पहता है पर्यटकों आदि की समस्याओं का समाधान निकालना पहता है। उनका व्यवहार हर समय मुस्काराने वाली 'स्वागतव तो स्त्री (Recentionist) की मौति होता है।

वाणिज्य दतों के विशेषाधिकार एवं चन्युक्तियाँ (Privileges and Immunities of Consulc)

वाणिज्य दतों की रिधति राजनयिकों जैसी नहीं होती है। व्यवहार में कई राज्य विदेशी मणिज्य दतों को राजनिवकों जैसे विशेषाधिकार नहीं सींपते । इनको विदेशी राज्य द्वारा नियक किया जाता है तथा ग्रहणकर्ता राज्य स्वीकार करता है। ये नियक्तिकर्ता राज्य के एजेन्ट माने जाते हैं । वाणिज्य इस अपने पेषक राज्य का सभी अन्तर्राष्ट्रीय विषयों में प्रतिनिधित्य नहीं करते । हाको केवल सीमित कार्य सीचे जाते हैं जिनका जोश्य केवल स्थानीय होता है । जनकी सार्वजनिक प्रकृति के कारण वे जनसाधारण से मित्र माने जा सकते हैं। यदापि काननी रूप से दें किसी विशेषाधिकार का दादा नहीं कर सकते. किन्त जनसाधारण से वे भित्र क्षेत्रे हैं।

आर्थिक हितों की रहा करते हैं । रिदाज के आसार उन्हें विशेष शरक्षा प्रदान की जाती है ताकि वे अपने कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न कर सकें । उनका कार्यालय तथा आलेख कछ सीमा तक अनतिक्रम्यता एखते हैं। उपद्रव तथा अशान्ति के समय वाणिज्य दत पर किया गया आधात उस राज्य के लिए अपमानजनक माना जाता है। यदि वागिज्य दूर्त राजनयिक एजेन्ट मी है सो इसके लिए मुजावजे की मौग की जाती है। वाणिज्य दतों के विशेषाधिकारों का आधार कानून न होकर अन्तर्राष्ट्रीय सौजन्य है। दाणिज्य दतों के सम्बन्ध में विभिन्न राज्यों में की जाने वाली सन्धियों में भी इनके विशेषधिकारों

बाणिज्य दत्त अपने राज्य के सरकारी अधिकारी होते हैं। वे जराके व्यापारिक और

का उल्लेख कर दिया जाता है। इनके सम्बन्ध में निम्नालिखित बातें महत्वपर्ण हैं--1 व्यावसायिक और गैर व्यावसायिक वाणिज्य दुतों के बीच प्राय मेद किया जाता

- है । प्रथम श्रेणी वालों को अधिक विशेषधिकार भीपे जाते हैं । वांगिज्य दतों को स्थानीय दीवानी और फीजदारी क्षेत्राधिकार से उन्मक्त नहीं किया
- जाता किन्त व्यावसायिक वाणिज्य दतों पर फीजदारी क्षेत्राधिकार प्रायं गम्भीर प्रकृति के अपराधौ तक सीमित रहता है।

3 अनेक सन्धियों में यह प्रतिपादित किया जाता है कि वाणिज्य दतों के कागज पत्र अनुतिक्रम्य होंगे और उनकी जाँच नहीं की जाएगी। वाणिज्य दतों को अपने कार्यालय के

आलेख और पत्र व्यवहार अपने निजी कागजों से अलग रखने चाहिए। 4 दाणिज्य दत का भवन भी अनितक्रम्य माना जाता है । स्थानीय पलिस न्यायालय आदि का कोई भी अधिकारी वाणिज्य दूत की विशेष अनुमति के बिना हुन बवनों में प्रवेश नहीं कर सकता। वाणिज्य दत का यह कर्त्तव्य है कि हुन मुदनों में शरण लेने वाले अपराधियाँ

का संदर्भण कर दे।

। इसे एम भी साथ वही मुख्य 329 30

5 ब्यारमधिक विभिन्न दूती को प्राय समी प्रकार के करों और हुँगियों से मुक्त रख जात है। दे गहा के मय में न्यायलय में स्पत्तित होने के लिए बच्च नहीं है। दे करन प्रमानों को या हो लिखित नय में मेज सकत हैं अधद किसी आयेग द्वारा समके भदन मे गदाही ली जा सकती है।

6 समी प्रसार के सामिज्य दूत अपने मदन के दरदाने पर नियुचिकर्ता राज्य है हियार रख सकते हैं और महन पर राष्ट्रीय धाल कहत सकते हैं।

7 राजनीक एटेन्ट्रॉ ही मीति वारिज्य दूनावास के कविवारियों की प्रहानकों राज्य हारा दिशेष सुरक्षा प्रदान की जाती है और उन्हें आदर की दृष्टि से देखा जाना है। उनके हतीर, स्टटन्बटा और समानत पर होने बाते अक्रमान को रोकने के लिए समी चर्चिट कदम स्टाए जाते हैं। बारिज्य दूरावाम के सदस्य सनके परिवार और सेवी दर्ग ही प्रहमकर्ता राज्य के नियमें तथा कानूनों से कुछ रखा जात है। निवस की अनुमदि हिदेशियों का परीकरण और कार्य की अनुनति से सम्बन्धित नियम उस पर लागू नहीं है है

ŧ 1 8 सहस्रा काल में राजनीकों को अनेक विशेषिकार और उन्युन्तियाँ प्राप्त होती है हिन्दु बीजिय दुरों की स्थिति अस्यष्ट है। रिवारी अन्दर्राष्ट्रीय कार्तन का कोई नियन ऐसा नहीं है जो तीसरे राज्य को अपन प्रदेश में होकर विभिन्न दुर्तों को निकलने की अनुनित देला हो। यह विशेषधिकार अब स्टीकार कर लिया गया है।

बन्तिज्य दूरों के स्पर्देक अधिकार के बर्गन के साथ यह जानना सम्बन्ध है कि इनहा उपने। राने दाने द्वित्य दूतदात के समी सदस्यों का यह मैनिक कर्नेय है कि प्रहमकर्ता राज्य के नियमें और कानुनों का कादर करें। बनिज्य दूटवास के प्रदेश का प्रयोग देते रूप में नहीं करना चाहिए की बारिज्य दृत के कार्यों से असर्गत है। दिरे मधिक दें और चनुष्टियों का उपने । करने बाते बारिज्य दूर अधिकारियों और दूसरे होते हो है प्रहनकर्त राज्य के अन्तरिक मणलों में हम्मदेन नहीं करना चाहिए।

दानिज्य दूराशस की सन्तरित (Termination of Consular Office)

दनिज्य दूर का कार्यलय अनेक कारतों के समान हो सकता है। इनमें से दुग कारन सन्देशसद हैं एकी दूसरे कारन सन्देशहीन हैं। सन्देशहीन कारने में सामन्य क्षत्र हो मन्य हैं—बीज्य दूत ही मृष्यु बीत हुना लेन्द्र या पद हो ह्या देना, नियुक्ति हर्य एद स्टग्तकर्त राज्य के बीच युद्ध सिंह जाता बादि । जब दक्तिज्य दूत की मृत्यु है जार अचय देनों देहों के बीच दूद जिंद लाइ हो उत्तक प्रसान में (Antines) की न्यारीय अपिक पिर्वे हार नहीं प्रेर्डा कल चहिए। दे या हो दिएका दुहदास के किसी हर्मच है की देख-रेख में रहें अपना दूसरे राज्य के दणिका दूत को सम्मला दिए जार्डू, जब दक कि उसका उनरिक्षि न का जाए क्यर रान्ति न्यारित न हो जाए।

कुछ ऐसी परिन्यान्यों एवं कारण की है जिनके स्पन्यित होने पर कारिया दूर का रार्यलय बन्द मी हो सरका है और नहीं मी। जब समस्तित राज्य क्रान्ति, विदेह में अक्रमा के बारत दुनरे राज्य में मिने या उसके अधिकार में दला जाए हो बारिज्य दूर के कार्यालय का रहना या न रहना त्रिरियत नहीं होता। सामान्यतः वह समाप्त ही हो जाता है क्योंकि नई सत्ता परानी सत्ता द्वारा स्वीकृत वाणिज्य दल को प्राय स्वीकार नहीं करती **\$** (

राज्य का अध्यक्ष अथवा राजनीति व्यवस्था बदलने पर वाणिज्य दत का कार्यालय समाप्त नहीं होता । न तो नई नियक्तियाँ करनी पडती हैं और न नए प्रत्येय पत्र हेने एडते

वाणिज्य दुतों के सम्बन्ध मे 1963 का दियना अभिसमय अनेक नई व्यवस्थाएँ रखता है । सदक्त राष्ट्रसघ की महासभा के 18 दिसम्बर 1961 के प्रस्ताव पर वियना में 4 मार्च 1963 से 23 अप्रैल 1963 तक एक सम्मेलन बुलाया गया। इसमें पर्याप्त विधार विमर्श के बाद एक समझौता स्वीकार हुआ । यह वियना अभिसमय वाणिज्य दतों की श्रेणियाँ विशेषधिकारों उन्मक्तियों उद्देश्यों एवं कार्यसचालन आदि विषयों के सम्बन्ध से निगमन करता है।

राष्ट्रीय हितों की अभिवद्धि में राजनवर्कों का योगदान

(Role of Diplomats in the Promotion of National Interest)

राष्ट्रीय हितों की अभिवृद्धि को ध्यान में रखते हुए विदेश मीति के उदेश्यों तथा राजनय के लक्ष्यों की प्राप्ति का मुख्य उत्तरदायित्व राजनयज्ञों पर होता है। राष्ट्रीय हित का सरक्षण और सवर्द्धन बहुत कुछ इस पर निर्मर है कि उस देश के राजनयज्ञ कितने कुशल हैं। उनके कार्यों और महत्व को स्पष्ट करते हुए आचार्य कौटिल्य ने अपने विख्यात ग्रन्थ अर्थशास्त्र में लिखा है— 'अपनी सरकार के दृष्टिकोण को दूसरी सरकार तक पहुँचाना सन्दियों को कायम रखना अपने राज्य के हितों की यदि आवश्यक हो तो उरा धमका कर मी रक्षा करना मित्र बनाना फूट ढालना गुप्त सगठन बनाना गुप्तवर्ते की गतिविधियों के बारे में जानकारी करना जो सन्धियाँ अपने हित में न हो उन्हें निब्कल बनाना उस देश के (जिसमें वह नियक्त हों) शासनाधिकारियों को अपने पक्ष में करना आदि राजदत्त के कर्नया है।"

कौटिस्य ने राजदूत के जिन कर्तव्यों का उल्लेख किया है सामान्यत वे सभी आधुनिक राजनयडों के लक्ष्य हैं जिनसे राष्ट्रीय हित साधन होता है। हम उन्हें आधुनिक राजनयडों में सम्मिलित कर सकते हैं—सरकार के अध्यक्ष दिदेश सचिव तथा उनके विदेश अधिकारी दसरे देशों में स्थित राजनीतिज्ञ कर्मधारी वर्ग अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में कार्य करने वाले सैनिक तद्या अन्य विशेषक सेवी दर्ग आदि । इनके अतिरिक्त अन्य लोग भी होते हैं जैसे भ्रमणशील राजदर्व व्यक्तिगत प्रतिनिधि सैलानी लोग आदि । राजनय और राजनयज्ञों का आज स्थाई महत्व स्वीकार कर लिया गया है।

जल्य के नाम मात्र के अध्यक्ष जैसे ग्रेट ब्रिटेन के राजा या रानी भारत का राष्ट्रपति पार्च के नाम नाज कुष्पब्स करा महाकार कर राज्य वा पार्चा नारत के राष्ट्रपति आदि दिदेशी मामली में मूलत औपचारिक योगदान करते हैं। वे जब विदेश मन्या पर जाते हैं तो इनका इंदरेश मुख्यन चहुमाबना की अनिवृद्धि होता है। सरकारों के अध्यक्ष अपने देश के राजनय में व्यक्तिगत कर्ष में माग लेते हैं।

राजनयज्ञ के क्षेत्र में सर्वाधिक सक्रिय कार्यकर्त्ता विदेशी मामलों के राज्य सचिव होते हैं। विदेश सम्बन्ध उनका मुख्य कार्य है। वे जीदन भर राजनियक वार्ताएँ करते हैं अन्य देशों के दौरे करते हैं सम्मेलनों मे उपस्थित होते हैं तथा महत्वपूर्ण सौदेबाजियों की तैयारी करते हैं । वे अपने राज्याच्यकों को परामर्श देने के लिए उत्तरदायी होते हैं तथा विदेशी मामलों के सम्बन्ध में उनको सचित करते रहते हैं। अपने विदेश कार्यालय एव विदेश सेवा की बहत बढ़ी नौकरशाही पर शासन करना भी जनका उत्तरदायित्व है । वे मन्त्रिमण्डल तथा अन्य नीति सम्बन्धी बैठकों में उपस्थित होते हैं। सयक्तराज्य अमेरिका के विदेश संधिवों ने 1945 के बाद अपना अधिकौँश समय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में उपस्थित रहने में व्यतीत किया । अनुमानत यह कहा जाता है कि जॉन फास्टर डलेस (John Foster Dulles) ने अपने पाँच वर्ष के कार्यकाल में प्रति वर्ष एक लाख हवाई मील से भी अधिक यात्रा की । इतनी लम्बी यात्रा करके वे चाद तक जाकर वायस आ सकते थे । यही सारी यात्रा उन्होंने दनिया के अन्य नेताओं के साथ बातधीत के लिए की । विदेश सचिव डीन रस्क ने स्वय अधिक यात्रा करने की अपेक्षा यह उचित समझा कि दूसरे लोग ही वाशिंगटन आएँ। मूतपूर्व विदेश मन्त्री डॉ हेनरी कीसिंगर ने भी पश्चिमी एशिया में कैम्प डेविड समझौता कराने में अयक मागदौड की । उनके राजनय को 'शटल राजनय' की सङ्गा दी जाती है । दर्तमान अमेरिकी विदेशमन्त्री जेम्स बेकर ने भी खाडी युद्ध के पश्चात् अरबों और इजरायलियों में शान्ति स्थापित करने की दिशा में अथक प्रयास किया । परिणामस्वरूप सन् 1991 का मेड़ीड सम्मेलन सपत्र हुआ । जनवरी 1992 में वाशिगटन में फिलीस्तीनियों और इजरायितयों के बीच होने वाली वार्ता में भी विदेशमंत्री की चल्लेखनीय भूमिका है।

आज राजनय में सलग्न अनेक लोग ऐसे हैं जिनको हम व्यावसायिक विशेषज्ञ कह सकते हैं। इनमें हम नागरिक सेवकों एव विशेषज्ञों को सम्मिलित करेंगे जो दिदेश यूलावासों एव देश में विदेश कार्यालय में कार्य करते हैं। वे अधिकारी विदेशी सम्बन्धों के प्रसन्तित एव निर्देशन तैयार करते हैं। वे अध्यक्तरी प्रदेशन तैयार करते हैं। व्यावसाय क्रावेश हैं। वृद्धारें के अधीनस्य अधिकार करते हैं। वृद्धारें के अधीनस्य अधिकारियों के साथ विश्वार करते हैं तथा अन्तर्राष्ट्रीय साभेलतों में जाने वाले प्रतिनिधि मण्डल के स्टाफ का काम करते हैं। उनके कार्य मुख्य रूप से दो प्रकार के हैं—प्रमान्य यह कि अपने मालिकों के काम को सम्पन्न करें और दूसरा यह कि ये दूसरों के कार्यों का पाल लगाएँ। व्यावसायिक विशेषज्ञों का यह एक दल एक दिन में सगतित नी हो जाता। आज के युप की परिस्थितियों में का के बाय विदेश सेवा के विकास के लिए पर्यान्त समय एव अनुमव की आवश्यकता होती है।

सरकारें समय समय पर विशेष गुप्त दूत (Emissay) नियुक्त करती हैं जो महत्वपूर्ण अवसरों पर विशेष समझीतें करते हैं तथा सरकार का प्रतिनिधित्व करते हैं । अमेरिका के राष्ट्रपति फैंकिलन रूजवेत्दर ने हें तो हापिकस (Harry Hopkins) को अपना विश्वास प्रदान किया और राज्य सचिव तथा सम्वनित पंज्यानियों के राजदूतों को अवहेतना करके कई सार पर्वित्व और राज्य सचिव तथा सम्वनित गंज्यानियों के राजदूतों को अवहेतना करके कई सार पर्वित्व और राज्य सचिव तथा सम्वन्ध वातों के लिए भेजा । इसी प्रकार राष्ट्रपति आइजनहावर ने अपने माई निल्टन आइजनहावर को अनेक विशेष अवसरों पर प्रयुक्त किया । राजदूत एवरल ईरीन (Averell Hamman) को राष्ट्रपति दूनैन, कैनेडी और जॉनसन द्वारा अनेक विशेष अवसरों पर नियुक्त किया गया । ये सारी नियुक्तियों राज्य के अध्यक्ष के विशेष समस्या में गुप्त दूत राजदूत की अधेश अधिक कुशाल हो। किन्तु किर से सम्वावना यह रहती है

कि वह उस देश के राजदूत के प्रमाव एव सम्मान को कम कर देगा और ऐसी रिवाति में इस राजनीक का प्रयोग सालयानी के साथ किया जाना थाहिए। आज के जाटित बातावरण में राज्यों के आपसी सम्बन्ध गाजनीतिक आर्थिक सुरक्षात्मक एवं वैज्ञानिक अनेक विषयों से यक हो गए हैं। ऐसी रिवादी में यह रवामाविक है कि सरकारों

पि दक्षा-नेक अनक निष्या सं चुक्त हो गए हैं। एसा स्थात में यह चनात्रावक है कि सरकार के वितिज विभागों के सीवीन की मानेण में भान तेने का अवसर दिया जाए अन्तर्राष्ट्रीय मानती में साविक सिक्रय माग लेने यालों में सारास्त्र रोनाओं एव सुरक्षा सरकारों के सारस्य होते हैं। नाटो दोना के मुरक्ता सिक्रय साथ जनके अधीनस्य अधिकारी जब नाटों की देवकों में गए सुरक्षा प्रस्त्यों पर विभाग करते हैं हो एक प्रकार से राजनय में जलब जाते हैं। इसी प्रकार जब जन स्वास्त्य अधिकारी विश्व स्वास्त्र्य सायवन (W H O) की देकक में माग लेते हैं या राजकों के सीतिनीधि दिश्व सिक्र की भीतक में माग लेते हैं हो वो भी एजनव में जलब जाते हैं। इसी प्रकार से पारपशिक सुरक्षा सार्या स्वास्त्र की सिक्र में माग लेते हैं हो वे भी एजनव में जलब जाते हैं। इसी प्रकार से पारपशिक सुरक्षा सौरक्ष्रिक सम्बन्ध आधिक एवं सकनीकी सहायता कार्य आदि मी किसी न किसी प्रकार

सौंस्कृतिक सम्बन्ध आर्थिक एव तकनीकी सहायता कार्य आदि मी किसी न किसी प्रकार से राजनय से सम्बन्ध रखते हैं । जयर्थक विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि राष्ट्रीय हितों की अमिन्द्रिस में राजनियक

उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि राष्ट्रीय हितों प्रतिनिधियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है ।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन और कार्य-सम्पादन (International Meetings and Transactions)

वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में राजनियक प्रक्रियाओं का विशेष महत्व है । शान्ति प्रयत्नकारी और समुदाय निमात्री राजनयिक प्रक्रियाओं के माध्यम से ही अन्तर्राष्ट्रीय संघर्षों का रामन और दिखें शान्ति की स्थापना सम्भव है। राजयिक प्रक्रियाओं से आशय अन्तर्राष्ट्रीय वार्ता के उन सभी मॉडलों से है जिनसे राज्य पारस्परिक विवादों को सुलझाने आपसी सहयोग को बढाने और सामान्य खंदरयों के लिए आपसी सुझ-बुझ खत्यत्र करने को प्रयत्नशील रहते हैं । राजनयझों को प्राय सचि-वार्ताकार कहा जाता है जो अपनी वार्ताओं के माध्यम से विश्व के विभिन्न देशों के बीच सामुदायिक मावना जाग्रत करते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन राजनियक प्रक्रियाओं का ही मॉडल है और इतिहास इस बात का साक्षी है कि इन सम्मेलनों के माध्यम से कितनी ही बार संघर्षों को रोका गया है। विश्व-शान्ति को आगे बढाया गया है विभिन्न महत्वपूर्ण सामान्य निर्णयों पर पहुँचा गया है और कई दृष्टियों से मानव-जाति की समृद्धि का मार्ग प्रशस्त किया गया है । द्वितीय महायुद्ध के बाद आयोजित शान्ति सम्मेलनों में विश्व के राजनीतिक मानचित्र और सनादपूर्ण स्थिति को समाप्त करने की दिशा में जो प्रमाद ढाला वह सर्वविदित है। अन्तर्राष्ट्रीय कार्य सम्पादन के दो मोटे रूप हैं—सामान्य राजनियक मार्ग एव दिशिष्ट राजनियक कार्य के लिए प्रायः समी देश विश्व के दूसरे देशों की राज्यानियों में अपने स्थायी राजनियक अनिकर्ता रखते हैं। दोनों पर्टी के बीच राजनियक आदान प्रदान इन्हीं स्थायी राजनियक अमिकताओं के मध्यम से किया जाता है । स्थायी सामान्य अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क का दूसरा मुख्य स्रोत वागिज्य दूत होते हैं । दाणिज्य दूत सेदा यदापि राजनियक सेदा का ही एक रूप है किन्तु यह राजनीतिक स्तर की सेवा नहीं है। फिर मी अनेक राज्यों ने इन दोनों कार्यों को एक ही व्यक्ति में मिलाने का प्रयास किया है। राजनियक अधिकारों को वागिज्य दूत की कुछ राक्तियाँ साँप दी जाती हैं और दाणिज्य दतों को सीमित रूप में राजनयिक अधिकारियों के कार्य दिए जाते हैं। यह प्रबन्ध उस राज्य की सहमति से किया जाता है जिसमें अधिकारी को मेजा जा रहा है। दोनों प्रकार के कार्य सम्पन्न करने वाले आधिकारी का स्तर तय करने के सम्बन्ध में समस्या चत सकती है। इसके बावजूद भी दर्तमान समय की जटिल अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के समचान के लिए सामान्य स्थायी राजनयिक मार्ग या सूत्र अपर्याप्त सिद्ध हुए हैं अतः कुछ विशिष्ट राजनियक मार्ग भी खोजे गए हैं यदा—सम्मेलन, यात्राएँ आपसी पत्र-यदहार सन्धियों की दार्ताएँ आदि । हम यहाँ अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों पर दिशेष रूप से प्रकाश ढालेंगे ।

काँग्रेस तथा सम्मेलन (Congress and Conference)

अन्तर्राष्ट्रीय कानून की दृष्टि से बोवेस और सम्मेलन में मीतिक अन्तर नहीं है। दोनों में प्रमाणिकार प्राप्त प्रतिनिधि अन्तर्राष्ट्रीय विषयों पर विषयों निभक्त और सम्प्राप्त के लिए मिसते हैं। दोनों में में मानति हैं। दोनों में मानति हैं। दोनों में मानति हैं। सामित के लिए मिसते हैं। दोनों में मानति हैं। सामित के लिए मिसते हैं। कौमेंस शब्द का प्रमोग अतीत काल में उच्चाधिकारियों के रिंती समाओं के लिए किया गया था जो प्रावेशिक देवारों दे शांति स्थापना के लिए आयों दिस की प्रवेश 15% हैं। स्थापना के हिए सिमत की स्थापना के सिए सम्भेतन आयों जित किए जाते हैं उत्ती स्थापना के सिए सम्भेतन आयों जित किए जाते हैं उत्ती स्थापना के सिए सम्भेतन आयों जित किए जाते हैं उत्ती स्थापना के सिए सम्भेतन आयों जित किए जाते हैं उत्ती स्थापना के सिए सम्भेतन आयों जित किए जाते हैं उत्ती स्थापना के सिए सम्भेतन आयों जित किए जाते हैं उत्ती स्थापना के सिए सम्भेतन आयों जित किए जाते हैं उत्ती स्थापना के सिए सम्भेतन आयों जित किए जाते हैं उत्ती स्थापना के सिए सम्भेतन आयों जित किए जाते हैं उत्ती स्थापना के सिए सम्भेतन आयों जित किए जाते हैं उत्ती स्थापना के सिए सम्भेतन आयों जित के स्थापना के सिए सम्भेतन आयों जित के स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना के सिए सम्भेतन आयों जित किए जाते हैं उत्ती स्थापना के सिए सम्भेतन आयों जित स्थापना के स्थापना के सिए सम्भेत स्थापना स्थापन स्थापना स्थापना स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन

काँद्रेस तथा सम्मेलन में नाम के साथ साथ कुछ अन्य सूब्त अन्तर भी होता है जैसे—

1 प्रत्म में काँद्रेस का आयोजन प्राय तदस्थ प्रदेश में किया जाता था। इसकी
अध्यक्ता मध्यस्यों हारा की जाती थी। नम्न 1806 में पवित्र रोमन साम्राज्य के पान के बाद से पूर्व साग्राट का मुख्य प्रतिनिधि ही काँग्रेस की अध्यक्ता करता था। 19वीं सतान्यी में कोंग्रेस का आयोजन किसी सम्बन्धित राज्य में ही किया जाने कमा तथा उस राज्य के किसेम मन्त्री हारा कार्यकारी की अध्यक्ता को जाने तथा।

सम्मेलन के रूव में सर्वप्रयम अन्तर्राष्ट्रीय अधिवेशन यूनान सम्बन्धी विषयों पर लन्दन में (1827-32) आयोजित किया गया । सम्मेलनों का आयोजन हसमें माम लेने शादी किसी महासति के प्रदेश में किया जाता है संथा जसकी अध्यक्षता वहाँ के विदेश मन्त्री द्वारा की जाती है।

2 कांग्रेस में भाग लेने वाले पूर्ण अधिकार प्रत्य प्रवितिधि (Plenipotentianes) निर्णादक होते हैं तथा विवारणीन सालस्याओं पर वे रुवय निर्णय लेते हैं। दूसरी और सम्मेलन केवल परमर्थावता समूल का होता है। आर्थित के उद्युक (The Duke of Arge) के मतानुसार "कांग्रेस मूलत समझौता कराने थाला एक न्यायालय है। यह एक ऐसी समा है जिससे विवादपूर्ण विवर्धों को विधार विधर्म सथा आपसी समझौता हारा चुलाग्राया जा सकता है।"

आजकल 'कांग्रेस तथा सम्मेलन शब्दों का अन्तर समाप्त हो गया है। वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय मिलन को सम्मेलन (Conference) का नाम दिया जाता है तथा इनमें विमिन्न एक्तों पर विधार विमर्श कर निर्णय लेने का प्रयास किया जाता है।

सम्मेलन का स्थान

(The Place of Conference)

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करने के लिए स्थान का घयन अनेक सरीकों से किया जाता है। कभी इन्हें सम्मेलन का सुझाव देने वाले राज्य की राज्यानी में और कभी समस्या से सम्बन्धित राज्य में बुलाया जाता है। कभी इस हेतु एक ऐसा केन्द्रीय स्थान चुना जाता है जहाँ सभी पक्ष सुरियापूर्वक एकतित हो सकें अध्यता जहाँ निष्यक्षतापूर्व और शान्त वातावरण मे विचार विनिमय किया जा सके । जब किसी बहुपक्षीय सन्ति में परिवर्तन के लिए सम्मेलन आयोजित किया जाता है तो उसके स्थान का निश्चय पहली बैठक के स्थान के आधार पर या सन्ति में उल्लिखित प्रावसान के आधार पर या पूर्व सन्ति में व्यक्त सामान्य धारणा के आधार पर किया जाता है।

सम्मेलन की तैयारियाँ

(Preliminary Ground-work for Conference)

कोई भी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन केवल तभी आयोजित किया जाता है जब कोई ऐसी समस्या या विवाद उत्पन्न हो जाए जिसे सम्वन्धित पत्तों के आपसी विचार-विनर्श हारा मुलझाया जाना उपित हो। उदाहरण के लिए 1864 में जेनेवा सम्मेलन इसलिए आयोजित किया गया था ताकि युद्ध में प्रायल सीनिकों की स्थिति के समन्य में कुछ सामान्य सिद्धान्त निरुपित किए जा सके। विवटजत्तैण्ड ने इस सम्मेलन की व्यवस्था का उत्तरदायित अपने उपर लिया। इस सम्मेलन में स्वीकृत सिद्धान्तों एव समाधानों में आदरयलता एव परिस्थितियों के अनुसार कम्मा. 1865 (1906, 1929 हाथा 1949 में सप्तेषन किए गए।

सम्मेलन के लिए राज्यों को आमिन्तत करने स पूर्व सम्बन्धित सरकारें आपस में विचार विश्वर्य करती है। यदि सम्मेलन का आयोजन युद्धीरदान शानि स्थापना हेतु किया जा रहा हो । एसने सुद्धारत राज्यों के बीच युद्धितियान होता है। सम्मेलन से पहले ही यद निश्चित करने का प्रयास किया जाता है कि इसमें किन किन समस्याओं पर किस सीमा पर विचार किया जाएगा। यदि किसी प्रमाप स्तावती न हो सके तो उस पर प्रारम्भिक विचार विभाग जाएगा। यदि किसी प्रमाप पर सहमति न हो सके तो उस पर प्रारम्भिक विचार विभाग होता समझतेतापुर्य दूधिकोण अपनाया जाता है। यह प्रारम्भिक वैचारी अदस्या आवश्यक है क्योंकि कोई भी औषधारिक विचार-विनिमय उस समय तक करवायक नर्छं हो सकता जब तक कि उसमें मान केने वार्तों के विचार परस्यर विज्ञते न हों।

सम्मेलन के लिए विभिन्न राज्यों को निमन्त्रण प्राय एस राज्य की सरकार द्वारा दिया जाता है. जहाँ यह आयोजित किया जा रहा है आया जिसके हतावद्यान में आयोजित किया जा रहा है। तमी कभी निमन्त्रण की औपवारिकता का निर्दाह अन्य राज्य समित्रण किया जा रहा है। तमी कभी निमन्त्रण की औपवारिकता का निर्दाह अन्य राज्य समित्रण की कर देवी है। 1899 के हेग शानित सम्मेलन का प्रस्ताद रुस के सम्राद ने रखा था किन्तु निमन्त्रण नीरदिक्षण की सरकार द्वारा प्रसादित किए गए। सन् 1906 के अल्जीयर्स के सम्मेलन के निमन्त्रण भौरकों के सुल्तान द्वारा मेज गए थे जबकि इसका आयोजन रोज में किया गया था। सम्मेलने का आयोजन समुक्तात्रण साथ के अभी या दिशेष अनिकरणी द्वारा किया जाता है। ये सम्मेलन साथ के मुख्य कार्यात्रम में अयदा अन्यत्र हो सकते हैं। सन् 1946 में आर्थिक और सामाजिक परिष्ट द्वारा अन्यतर्द्वीय स्वारस्थल-सम्मेलन का अरोजन स्वार्थिक किया गया था। सम्मेलने के सुख्य कार्यात्रम के स्वराद के आराद रूप शान्यार्थियी और

सम्मेलन के प्रतिनिधि (Representatives of Conference)

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में राजनियक प्रतिनिधियों को प्रमुख शक्तिसम्पन्न प्रतिनिधि नियुक्त किया जाता है। जिनकी सहायता के लिए अन्य अधिकारियों की व्यवस्था की जाती है।

राज्यहीन लोगों के सम्बन्ध में एक सम्मेलन बलाया गया था।

अवसर और विचारणीय विषय के महत्व के आधार पर ही एक प्रमुख प्रतिनिधि के सहयोगियों की संख्या निर्धारित की जाती है। इन सहयोगियों में आवश्यक कानूनी या तकनीवें योग्यता सम्पन्न अधिकारी संशिव अञ्चावक आदि पंगिसित होते हैं। प्रत्येक नाज के मूर्पाधिकार प्राप्त प्रतिनिधि और उपांत्र समूर्य स्टाफ को जस संज्य का प्रतिनिधि सन्दल कहा जाता है। ये सभी एक साथ एक समूर्य के लग्न में देवते हैं। कभी कभी एक राज्य एक से अधिक पूर्व अधिकार प्राप्त प्रतिनिधि भी शिद्वात करता है।

पूर्ण अधिकार प्राप्त प्रतिनिधियों को जैसा कि इनके नाम से विदित्त होता है इनकी सरकार द्वारा पूर्ण अधिकार प्रदान किए जाते हैं। ये सम्मेदन के सदस्यों से सािच वार्ल कर अनिम समझीता कर सबसे हैं। जब कोई राज्य एक से अधिक पूर्ण अधिकार प्राप्त प्रतिनिधि रिपुष्ठ करता है तो वह जा सभी को पूर्ण शासियों प्रदान करता है जिनका प्रयोग वे पूथक रूप से अथवा सामूहिक रूप से करते हैं। इन्हें ग्रहणकर्ता राज्य द्वारा विशेषाधिकार सीचे जाते हैं। प्रेषक राज्य परने से ही प्रत्यक्ता राज्य को इनके नाम भेज देता है। बादि इन्होंनी यात्रा के बीच में कोई अन्य राज्य भी पढ़े तो उस राज्य की सरकार को भी मिशन के उदेश्व दी सुम्ता दे दी जाती है।

सम्मेलन की भाषा (Languages at Conference)

प्रथम विश्वपुद्ध से एहले अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में सामान्यता फ्राँसीसी मात्रा का प्रयोग फिया जाता था किन्तु से दिश्वपुद्धों के बीच अप्रेजी मात्रा का प्रयोग भी सामान्य के गया। सन् 1919 के देरिस ज्ञानित सम्मेलन और 1921 22 के व्यक्तिगटन सम्मेलन में आदेजी और प्रमित्तिती मण्या का अधिकृत प्रयोग किया गया था। राष्ट्रस्य के सामेलनों में मी इन दोनों मात्राओं का प्रयोग होता था। जब कुछ राज्यों का सम्मेलन किया जाता था। था। उनके दिए उन्हों में से किसी राज्य की मात्रा को कार्यवाही के लिए अपना दिया जाता था। आजकल सम्मेलनों में मुख्या अप्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता है। वैज्ञानिक सामनों की सहास्या से भाषणों का दूसरी भाषाओं में भी दुरना अनुवाह हो जाता है। यशुक्त माङ्गस्या के सम्मेलनों में अप्रेजी प्रशिसीत कही भीनी तथा स्पेनी आदि मात्राओं का प्रयोग किया जा सकता है। एनके अमितेल इन मात्राओं में प्राया किया निक्र को है। सन् 1954 के लन्दन सम्मेलन में अप्रेजी प्रशिसीत और जर्मन मात्रा का प्रयोग किया गया था। पान अमेरिकी सम्मेलनों मे स्पेनी मात्रा का प्रयोग किया जाता है किन्तु अगिलेख क्रांसीती स्पेनी और अप्रेजी मात्राओं

सम्मेलन का अध्यक्ष (President of Conference)

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का अध्यक्ष प्राय उस राज्य का मुख्य प्रतिनिधि होता है जहाँ सम्मेलन का आयोजन होता है और वह राज्य उससे माग सेता है। यह प्रतिनिधि प्राय उस राज्य का विदेश मन्त्री होता है। वियमा काँग्रेस (1814 15) में पूर्ण अधिकार प्राप्त फ्राँसीसी प्रतिनिधि के प्रस्ताव पर आस्ट्रीस्टाम के काज्यन्य मेटरनिख को अध्यक्ष पूना गया। रान्। 1855 की वेरिस काँग्रेस में आहिट्सा के प्रतिनिधि के प्रस्ताव पर फ्राँस के विदेश मन्त्री ने अध्यक्षता 230 राजनय के तिद्वाना

ही । सन् 1878 ही बर्रिन कॉउस में राज्युमार विस्कृत को अध्यक्ष चुना गया । किरी सम्मेनन में एक संअधिक व्यक्तियों को मी अमिक रूप से अध्यक चुना पर सकता है।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के अयाह का मुख्य कार्य यह है कि सम्मेलन के प्रारम्प में सनक एरेसमें तथा लक्षों पर प्रकाश कलते हुए कार्यवाही प्रारम्प करें अपने सिदियन्य के सदस्यों का निरुद्ध करें और सभी प्रतिनिधियों से और विकित कर से दिवार दिनार्थ कर सरका नव एते । इह सम्मेलन के दौरन बाद दिनाद को निर्देशित व निर्मान्तन करना है । अन्तिम हैका के ने स्थाह के कार्यों और सेटाओं के लिए सदस्यों द्वारा धन्यदाद का प्रमाद पारित किया करना है।

अग्रत्व

(Precedence)

अत्तरप्रीय सम्मेलन में ब्रह्मन की दृष्टि से क्रोड़ी दर्गाना के क्रम को क्रमर करमा एटा है। परम्पारत रूप से समले देटने का स्मान क्रमर अप्यस की दानि तम गर्में कोर होता है। काजरुक सम्मान व्यदास पह है कि लोग प्रिन्थिएगा करने दर्गाना के इस के ब्रनुसर फैटो हैं। अप्यस के निकट बैटने बाते व्यक्ति का स्मान या हो किया दिखें से निर्मेस किया एटा है ब्यदा उसके हिए लॉटी वाली एटी है। इन्द्रिंग्सम्बेल्स में ब्रह्मत एकों के निर्मिशिया के विभी करने के समर्थ के दिशे

सम्मेलनों की प्रक्रिया

(The Procedure of Conferences)

समेनने में कर्यर ही जी प्रक्रिय एसने हिस स्तीय दिस्स के कनुमार त्रिमील की जरी है। प्रक्रिय के तिस्स प्राप्त में ही निर्माल कर तिए एन्हें हैं। कमैन की मम्मेनन में सिरेय पूर्वे पर विधार दिन्छों वसने के लिए कला-कला समितियों में नियुक्त की जरी हैं। सिन्धियों करना सामये दुस्ती हैं और कार्यर ही के लिएम करती हैं। विधार दिन्छों के बाद वे करना मिटेयत समूर्ता निरुप्त के समुद्ध प्रसुद्ध करती हैं। व्यास करती के समय ये करनी एनमिटियों का में बचन करती हैं भी करता मूल प्रमेशन सिन्धिय ने प्रमुद्ध करती हैं। समिटि में एक प्रमेशिक (स्थाप्ताक्षा) दिस्कृत किया जा है को सिन्धि में होने बाते विधार दिन्छों को एक प्रमिश्त करता है। यह सिन्धिय करता है। यह सिन्धि के तिस्सी को मम्मेनन के मानने प्रमुद्ध करने बरना एक पुष्प प्रस्ता कर करता है।

सम्मेनन वस्ते कर्यों से ब्रुट्सर सन्य-सन्य पर देवके कादा स्टार्ट है। प्रयम देवक परियम स्मेन प्रति हैं। हैंदें है। इससे मुक्त अध्यक्त का दुनर, समिदियों के निर्देश स्विद का ननकरा अदि वर्ध कम्प्रीट होते हैं। इसके बाद समिदियों के प्रदिश्त प्रात्त काने स्था एना पर दिसर करने के हिन्द सम्य-सम्बद्ध पर देवके हैंनी हैं। यदें सदसों के दीम मिदियों के प्रदिश्त पर अदिक मन्देद नदीं होता हो समझे दिकतीयों को अमिन सिया में स्थानित कर दिया क्या है। यह स्थित सम्यन्त की देवकों में टीन बचने में होक गुजरी हैं। प्रयम्भ बचन में स्वीद का प्रमान देवर किया क्या है। दुसरें रादम में स्वीयन प्रस्तुत दिए जाते हैं और यदि बादरदक हो हो सह प्रमान की दुन समिति के पास मेजा जाता है। सीसरा दाघन औपचारिक प्रकृति का होता है तथा उसमे सन्धि को अन्तिम रूप से पूर्ण अधिकार प्राप्त प्रीनिवियों के हस्ताहर हेतु प्रस्तुत किया जाता है।

सभी महत्वपूर्ण सम्मेलनों में कार्यवाही का अमिलेख रखने पर विशेष ध्यान दिया जाता है। प्रारंक बैठक के समय सर्विय या सर्वियों द्वारा देवक की लिथि समय रचना पूर्ण अधिकार प्राप्त प्रतिक्रियों के नाम रचना मान तेने वाल नार्यों के मान आदि का जरकें के अधिकार करात्र प्रतिक्रियों के नाम रचना मान तेने वाल नार्यों त्याने प्रविदेशियों के कहासार रचनों जाते हैं तथा अध्यक्ष एवं सर्वियों के भी हस्तारा होते हैं। इसे प्राप्त अध्यानी वेठक में रचना और स्वीकार रिक्या जाता है। उब अध्यानी वेठक में स्वीय नीत्र होता अध्यानी वेठक में रचना और स्वीकार रिक्या जाता है। वाज अस्तिन रूप में शिव स्वीकार के जाता है तो जनका मुख्य की स्वार्ण के स्वार्ण स्वीयों स्वीय स्वीकार होता है तथा प्रतिक्रियों मान तेने वाले पूर्ण अधिकार प्राप्त प्रतिनिधियों मित्रित रोग या जाती है। अध्यक्त अभिनेत्र हो गया ही। सम्मेलन के प्रत्यक्त अभिनेत्र हो तथा है। सम्मेलन के प्रत्यक्त अभिनेत्र हो या अप्तार है। सम्मेलन के प्रत्यक्त अभिनेत्र हो तथा अप्तार है। सम्मेलन के प्रत्यक्त स्वीवेठक स्वयं का स्वार्ण हो सम्मेलन के प्रत्यक्त स्वार्ण स्वार्ण अधिकार प्राप्त के स्वर्ण में वितिरित किया अप्तार है।

सियमों पर हस्ताक्षर का क्रम अग्रेजी वर्णमाला के क्रम में रहता है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद इटली के साथ की गई शास्ति सरिय पर पहले पाँच महासांक्रयों (क्रमशा सोवियत साथ दिन्त संयुक्तराज्य अमेरिका भीन तथा फाँस) ने हस्ताबर किए शया उनके बाद अग्रेजी वर्णमाला के क्रम समी मित्र राज्यों एव सहयोगी राज्यों ने तथा सबसे अन्त में इटती ने हस्ताबर किए।

प्राचीन काल में सम्मेलन के कार्य का अधिकाँश माग अग्रत्व और औपचारिकताओं से सम्बन्धित रहता था। उससे यह निर्मय करना होता था कि समिय चार्ताएँ लिखिल हो अथवा मीखिक हो कुछ राज्यों को शामिल किया जाए अथवा नहीं किया जाए कुछ राममुत्रों की स्दिवियों को मन्यता दी जाए चा नहीं दी जाए आदि। इतिहास साबी है कि निजमेरेन (\superstant) कोंग्रेस (1676 79) में क्राँच और रचेन के बीच शानित समिय पर हत्तावर के तिए समिय की दो प्रतियों दीयार की गई धीं—एक क्राँसीसी भाषा में दूसरी रचेंगी भाषा में में उसरी रचेंगी भाषा में में उसरी रचेंगी भाषा में में उसरी रचेंगी भाषा में में अधिकार मारा स्थान के निकट मेज पर रख दिया गया। तीन फ्राँसीसी पूर्ण अधिकार प्राप्त प्रतिनिधियों ने एक दरवाजे से प्रदेश किया और उसी हमा दूसरे दरवाजे से स्पेन के तीन अधिकार प्राप्त प्रतिनिधियों ने एक दरवाजे से प्रदेश किया और उसी हमा एक जैसी कुसितों पर के और एक ही समय अपना अतिनिधियों ने प्रति रचेंगी के हत्यावर किए।

सम्मेदन में किन राज्यों को मान मेना प्राहिए यह प्रमन प्राय जाजा जाता है। 1919 के पैरिश प्रान्ति मम्मेदन के समन्या में प्रे एपरती ने तिला है कि प्रयम प्रमन तो इससे सम्बिधत या कि किन राज्यों को सम्मेदन में प्रतिनिधित्व दिया जाए। अन्त यह निर्मेश दिया गया कि इससे दे सभी राज्य मान से जिन्होंने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की यां अवधा-उससे नम्बन्द दिख्येन कर दिखा गया की हम ते कि त्या कि वास के दिखा गया कि इससे दे सभी राज्य कर दिखा गया कि इससे दे सभी राज्य की यां विकास के सिर्म कर वास विवादों में मानिक होने के लिए आपनिवत किया गया जिनके विशेष हित प्रमावित होते थे। विवीद विश्वयद्ध के बाद एक सम्मेदन की सभा का प्रमान अपन अपने का या उदा है। 18 प्रपर्दी । 1954 की बिनेत प्रति में प्रमेश सम्मेदन की स्थान के त्या प्राप्त वितर प्रसावित होते थे। विश्वयद्ध के बाद एक सम्मेदन की सभा का प्रमान का प्रमान अपने का यह उदा है। 18 प्रपर्दी । 1954 की बिनेत समें ते प्रमेश सम्मेदन की स्थान कि एप दिल्हर प्रमान किए गए।

सम्मेलन का सचिव (The Secretary of Conference)

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के कुछ उदाहरण (Some Examples of International Conferences)

यह चरपुरु होगा कि हन कल्चांस्ट्रीय सम्मेतनों और धनके कार्य सम्पदन की हुउ प्रमुख स्वाहरनों के परिपेक्ष में सनझें।

दिक्ता कौंग्रेस (The Vienna Congress, 1815)

नेपेलियन बेनापर के जीदनकल में लिस प्रकार उसके बार्यों का यूरोन के समी एड्रों पर गामीर प्रमान पहा, उसी प्रकार उसके पदन का भी उन तर पर गहरा प्रमान का। नेपेलियन के पदन ने यूरोन में लिन दिखा समस्ताओं और प्रमाने को लाम दिखा उसकी पृष्टानी में अभिद्राम की उत्तरात्री दिवारा में दूरियोंन राष्ट्रों का रहा महस्तात्री सम्मान (1815) में सम्प्रण हुआ जो दिवारा की दूरियोंन राष्ट्रों का रहा महस्तात्री बटारा के पुर्वा में 18 पुरा 1815 को नेपोलियन को अधिना का से पारित्य कर दिया गया और दूसरी कोर इस युव से कुछ दिन पूर्व से क्षेत्रित का से पारित्य कर दिया गया और दूसरी कोर इस युव से कुछ दिन पूर्व से क्षेत्रित को का निर्माय से हिए जिल पर 9 पुरा 1815 को दिन्ति राज्यों में इस्तार कर दिए। दिवारा कीर्य के इस्ती निर्माय से 19वीं रहान्यों की यूरोनेय पाजन-व्यवस्था (Sizzo System) की कमारविकार परी गई। सम्मेलन की प्रतिनिधी : इंटिस्स में इससे पहले कमी प्रमान ने स्वार्टिका परी गई।

 प्रसा का राजा प्रेडरिव विलयम सुतीय हार्ड वर्ग और पोनहुमोल्युरा को साथ लेकर आया था। पोप का प्रतिनिधि वार्डियल साल्ये क्रोंस का मात्री रोलेसे इमलैच्ड का विदेश मात्री वैसलने सभा सोनापति वैलिंग्डर आदि सम्प्रेतन में स्वपन्तिक है।

वैसलरे तथा से प्रपति वैलिन्टा आदि सम्मेला में उपरिशत थे। विवन्त कोमेस की प्रपुत्त समस्तारी विवान कोमेस के सम्मुख कुछ अस्यन्त गम्भीर समस्ताराओं के समस्तारा के गिराविशित प्रकार समर्थी थे

- राजस्था व राज्या व राज्याता व राज्याता वर्षे । नेपोलिया की सहायता करने यात्रे यूरोपीय राजाओं को विस्त प्रकार का दण्ड दिया जाए ?
 - 2 नेपोलिया वे मुद्धों ने यूरोप वे मात्रिवत्र वो ही बदल दिया था।
- ो रिसरी समस्या जाति की भावता की शी। यदापि प्रति से जाति समाया हो जुनी हो पिस्तम का भावता है गांचा भावता है यो स्वतान्त्रता समाता। आयुष्ट और क्यूप्रैसता के रिस्तान्त्रता समाता को स्वतान्त्रता हो। यो में में प्रत्य पुत्रे शे। वास्तिवा के अपनी में में स्वतान्त्रता हो। यो में में में प्रत्य पुत्रे शे। वास्तिवा के प्रति हों में स्वतान्त्रता कि स्वतान्त्रता है। यो प्रति हों से प्रति हों भावता है। यो प्रति हों से से प्रति हों से प्रति ह
- 4 सामेजन के प्रमुख धार्मिक और धराते सामधित सरगाओं की सामधित जा भी प्रमा बा। नेपोलिया ने मर्च को एक राजवीय सास्था का दिया था। नेपोलिया के मता के बाद अब चर्च की सामध्या पिर चपरिशा हुई। रिश्वण शासा की पुरावर्षाण के सामधी धराते सामधित सरमाओं और पीप की क्षी की पुरावर्षाण भी आवस्था भी।
- 5 कोंद्रेस के सम्मुख एक गम्भीर प्रशा यूरोप में शासि स्थापित करना और मुद्ध की सम्मालनाओं को पोक्रो का प्रपास कोलना था।

विका को मेश की कार्य प्रणासी पाणी विभाग को मेश एक पहारा सम्मेला का जिसमें पूरीय के साम्य का मिर्माण किया जाता का लेलिया इसकी मोई विशेषा कार्य प्रणासी मारी की रही कोई का पर मतावार कराये जारि की ही कोई ध्रावस्था की मारामरों में साम्यो की नीमार कर की लिए कार्य कारिय के साम्यो की मारामरों में साम्यो की नीमार्थ तक दे जाती की । मारामरा मारामरे से मारामरे की एक पाणी की । मारामरा मारामरे से मारामरे कार्य कार्य कार्य कर किए मारामरे की एक मारामरे कार्य का

सामेतन में फल आदित्या प्रशा और इंप्लैण है शांतिशाली प्रतिनिधि को चाहते थे हैं काता था। ये शांक ही अधिक से अधिक बूट का मात स्वक हरूप जा। का प्रत्य वर रहे थे। नित्त तो के दिवाना ताल पर एक दिए गए मे। दिवानी शांदु अपने रतार्थ में लिया से होटे सावने कर कोई सम्मान गहीं था। दिवानी है आवा प्रतान के प्रशा और मा। वर्गिया का कोई निशंत सामानि नहीं था। गेटपित ही सामेतन के प्रधान और मंत्री दोनों का बार्व वरता था। यह जिस वस से माहता वार्य मनात था। आदिद्वा प्रशा फल और विटेन हम चार मुंका सावनों ने आवा में मुता देवना वर दिवा था। सब भागतों पर वे पहले आपस में निश्चय कर तेंगे और कोंग्रेस के सम्मुख पश करेंगे। केवल फ्रोंस का प्रतिनिधि तेलेरा ही एक ऐसा था जिसे निर्देत राष्ट्रों की बिन्ता थी। वह एक परांजित देश का प्रतिनिध था इसिलए ऐसा होना स्वामादिक भी था। वह इन छोटे राज्यों की सहायता से अपने देश के हितों की रसा करना चाहता था। उसका आग्रह था कि कोंग्रेस का कार्य अन्तर्राष्ट्रीय कानून वे अनुमार होना चाहिए पर प्रशा का फानहुन्दोल्दत उसे जताब देता था। जिसकी लांग्रे उसका भेता वाताव में विजयों के प्रतिनिध अपनी तालक के कर पर मनामानी करने पर तुले हुए थे पर उनके स्वायों में टकराहट थी और तेलेरों इन मतमेटों से लान उठाने मे लागा हुआ था। उसने बड़े राज्यों को छोटे राज्यों के बारे में मनामाने निर्मय केने के अधिकार की मतनेना की और उनको आठ राज्यों की एक सिनित बनने के लिए राजी किया। ये आठ राज्य थे ब्रिटेन सत्त फ्रांस आहिंद्रमा मेने, प्रशा पुर्तगाल और स्टेफन। इसके अतिरिक्त विविध समस्याओं पर दिवार करने के लिए सा प्रशा पुर्तगाल और स्टेफन। इसके अतिरिक्त विविध समस्याओं पर विचार करने के लिए सा उपन समितियों का भी गठन हुआ। इसके अतन राज्यों के दिवारों को मुलझाने के लिए अलग अलग उस समितियों थीं। किन्तु हिन्त भी के राज्य चया चया समितियों और आठ राज्यों के निर्में की स्वरंत के है।

वियना काँग्रेस की इस दशा के कारण ही यह कहा गया है कि "दियना काँग्रेस काँई काँग्रेस नहीं थी उसके सिद्धान्त असगत थे और उसकी व्यवस्था परिस्थित को अस्त व्यस्त बनाने वाली थी। 'काँग्रेस का न काँई औपचारिक उद्यादन सनारोह हुआ या. न प्रतिनिधियों का विधिवत् स्वागत। एक सन्य सनी प्रतिनिधि कभी निले भी नहीं। उनके बीच अनेक सचियाँ हुई थीं और बाद में उन सदको निलाकर 1815 की अन्तिम सन्धि हो गई थी। यही काँग्रेस के कार्यों का 'सग्रह था।

कारेस के नागंदर्शन का सिद्धान्त सम्मेलन की कोई निरिचत कार्यविधि न होने के कारण अवसरवादी त्यान उठाकर अपने बच्च से कान कर रहे थे ! आदित्र्या प्रसा और इंग्लैंग्ड इस ताक में थे कि जटित दिश्यों का जल दिखाकर अपने नदायों की सिंदि करें ! फ्रींस को तेंदरों अपने प्रिप्ट स्वत्यान की आह में कुटित नीति किपाए हुए सा ! मेट्सदिख बड़ी सात्यानी से चर्ले यल रहा था जिससे आदिद्वारा की सीमाओं का विस्तार हो सकें ! प्रसा इंग्लैंग्ड तथा कस मी पात लगाए बैठे थे ! इस तरह आदर्शवादी नीति और अन्तर्राष्ट्रीय नियमों की आह में कूटनीति और सकीर्य राष्ट्रीय स्वायों के खेल खेले जा रहे थे ! समी अपना जल्ल सीपा करने में तभी थे और अपने कार्यों को न्यायोविध दशाते थे !

जना उन्हों पा अपने में तम वे अध्याद किया के नाम जब यूरी के राष्ट्र किसी निर्माय पर न पहुँच सके तो ऐसा प्रतीव होने लगा कि सम्मेलन असकल हो जाएगा और यूरीपीय आकाश में किस ते युद्ध के दादद सकता कि सम्मेलन असकल हो जाएगा और यूरीपीय आकाश में किस ते युद्ध के दादद सकता ति तमें ! ऐसी स्थिति की सम्मावना दिवाई देने आप असने ने विधानवीय सिहान्तीय पर निर्माव किया दिवान देनों ने निर्मावित करते हुए सप्ते मौतिक सिद्धान्तों की एकता स्वीकार की ! दिवाना काँद्रेस के इस प्रकार तीन मार्गदर्शक सिद्धान्त में ! प्रचम 'सिद्धान्त या न्यायदात अथवा वैधात (Legumuscy) का द्वितीय सिद्धान्त या (यूरीप में शक्त संत्र के) प्रकार तथा पराजितों को दण्ड दोने का पान में राष्ट्र के प्रकार तथा पराजितों को दण्ड दोने का पान में राष्ट्र के प्रकार तथा पराजितों को इन्ह दोने का पूर्वीय सिद्धान्त या यूरीप में शक्त सन्तुतन स्थापित करने का ! इन सिद्धान्तों को प्यान में रखते हुए कोंग्रेस ने विनिन्न देशी के लिए अतन अलग निर्मय लिए अथवा प्रादेशिक व्यवस्थाएँ की !

मूत्योंकन दियना सम्मेलन ऊँचे आदर्शों और पदित्र चरेश्यों की घोषणाओं के साथ आरम्म हुआ। सम्मेलन का आयोजन इसिंतर किया गया था कि यूरोपीय समाज का पुनर्निर्माण हो यूरोपीय समाज का पुनर्निर्माण हो यूरोपीय समाज का पुनर्निर्माण हो यूरोपीय समाज की स्थापना की जाए। लिकिन यह सब केवल दिखारे या कहने के लिए ही ठीक था अन्यया वास्तविकता इसके दिखारी थी। कांग्रेस के सांपित के ही गर्दी में 'कांग्रेस ने बढ़े बढ़े यह दो का प्रयोग चसे प्रतिविद्धा स्थान देने के लिए किया गया था जिन्तु वास्तव में दिखान में एकत्र राजनीतिकों का मुख्य चरेस्य दिखार दोशों का आपस में बैटवारा करना था। वास्तविक अर्थ में यह सम्मेलन यूरोप के शक्तिशाली समायें का प्रमेतता ही था। उन्हे अपने स्थानी का प्रमेत हो थी। उन्हे अपने स्थानी का प्रमाण था। अपनी स्वार्थ तिर्द्धित करने का सम्मेलन हो होने तिर्द्धित करने का समायें का समेलना हो होने हिस्स हो हो हो।

अनेक गम्मीर कमियों और आरोपों के यह भी मानना पडेगा कि वियना काँग्रेस से अनेक लाम भी हुए । यूरोप के इतिहास में काँग्रेस का जो महत्व है उसे कम करके नहीं आँका जा सकता । यदाँ से बरी तरह थके हुए यरोप मे शान्ति स्थापित करने मे यह काँग्रेस सफल हुई । वियना काँग्रेस का महत्व इस बात मे भी है कि यूरोप के इतिहास मे यह पहला अवसर था जब यूरोप के सम्पूर्ण राज्यों ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। इससे कम से कम राज्यों को यह तो अनुभव हुआ कि परस्पर मिलकर और बातचीत करके भी किसी समझौते पर पहुँचा जा सकता है। ऐतिसन फिलिप्स ने लिखा है कि 'वियना सम्मेलन के निर्णयों से 1815 से 19वीं शताब्दी का राजनीतिक प्रभाव आरम्भ हुआ और सम्पर्ण यरोप के प्रमुख शासकों का नदीन समाज के निर्माण के लिए एकत्रित होना नदीन परम्परा का द्योतक था । जर्मनी और इटली के एकीकरण की दिशा में भी दियना काँग्रेस ने कुछ महत्वपूर्ण कार्य अनजाने ही कर डाले । इस तरह काँग्रेस ने 19वीं शताब्दी के यूरोप के मव निर्माण की आधारशिला रखी जो इसकी एक महान सफलता थी। वियना काँग्रेस ने एक ऐसी व्यवस्था (यरोपीय व्यवस्था Concert of Europe) का निर्माण किया जिससे युद्ध रोका जा सके । इस यूरोपीय व्यवस्था को प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय सगठन कह सकते हैं। इसकी आदारशिला पर ही आगे चलकर राष्ट्रसंघ का निर्माण हुआ। इस संगठन के कारण ही यरोपीय राज्यों में सहयोग की मावना का विकास हुआ जो बहुत समय तक चलती रही । वियना काँग्रेस पर यह आरोप लगाया गया कि उसके निर्णय स्थायी नहीं हुए । इस आलोमना का उत्तर देते हुए प्रो हार्नशा ने लिखा है कि 'वियना सम्मेलन के प्रतिनिधि ईरवर के अवतार नहीं थे। जितना स्थायित्व मानव शक्ति में निहित है अतना ही स्थायित्व उन्होंने (दियना के निर्णायकों ने) देने का प्रयत्न किया था। अन्त मे यह कहा जा सकता है कि वियना सम्मेलन के साथ पुराने युग का अन्त और नए युग को आरम्म हुआ।

ਦੇਰਿਸ਼ ਨਾ ਝਾਵਿਰ ਸਮੀਕਰ 1919

(Peace Conference of Paris 1919)

28 जुलाई 1914 से प्रारम्म होने वाले प्रथम महायुद्ध का अन्त निजवाड़ी की विजय में हुआ 111 नवसर 1918 को युद्धिशत्म सचिप पर कार्यन प्रतिनिधियों और निजवाड़ी की लेवाओं के जनतल मार्शल कीच द्वारा इस्ताव्यर हुए । सस्त्रों का युद्ध से सम्पाद हो पत्रा किन्तु कूटनीलिक दाव पेची का युद्ध गुरू हुआ । अब सबसे बढा और महत्वपूर्ण प्रस्त शास्त्रि ही न्याई ब्रह्मा करना दा । एहं पुद्ध महाद्वार दर्षे हे समाद हुछ, वहाँ दिनिय देहें के सम्ब रान्ति सन्दियों करने में 5 दर्श का समय रूप गया ।

स्थात, मिनियी और समस्यार्थ, युव नामर होने यह मिन की एजानी हैरित को हिए सम्बाद समान हुए गया करिय मिन को एक है परिवार मिन के एक मिनेय करने में बढ़ी है रही हैं परिवार माने हैं है एक एक साम हुए गया करिय है यह उद्दे पर समान है एक एक से परिवार है कि उन्होंने हैं कि निज्य है कि मिनेय हिया गया है एक है कि परिवार है यह उन्हों के एक है कि उन्होंने हैं कि निज्य है कि मानेय है एक है कि परिवार है यह उन्हों के एक एक है कि उन्होंने हैं कि उन्होंने हैं कि परिवार है कि उन्होंने हैं कि परिवार है कि परिवार है है कि परिवार कि उन्होंने हैं कि परिवार की परिवार है कि परिवार की परिवार है कि पर

सहराक और परस्पादना नेजे थे। अनंत प्रतिनिध सम्बद्धों की साज्या सैकरों में थी। राजि-सम्मेतन का कार्य एवं गुण हुआ हो सकते सामने अनेक समस्याई विधान यीं

यह सनस्या छठ खड़ी हुई कि सीच प्राप्तिक होनी बहिए क्यदा करिन ?
 सम्मेलन में इतने प्रतिनिधि कार से कि सम्मेलन के कार्य का मुद्रान रूप से संवानन

समय नहीं या। उटा पहले 10 महत्यों की एक महिन्दू (Countil of Tan) उन्हों गई. किया बद में गई, 1919 में यह व्यक्तियों की महिन्दू (Countil of Forz) करें। में यह व्यक्ति अमेरिकी राष्ट्रपारित्यन्त प्रिटेश प्रधानक मानव करें, और का प्रधानकों की करेंसी और इससे का प्रधानकों का लोकों से 1 इसे वॉर्ड, और का प्रधानकों को सेंदी और इससे का प्रधानकों का स्वोत्तकों से 1 इसे यह यह (Big Forz) कहा गया 1 अग्रेस.

1919 ਜੋ ਕਾਵਜਾਫੇ ਦਵ ਜਾਵਦ ਵੇਦਰ ਜਾਣ ਜਾਣ ਜੋ ਉਸਨੇ ਵਾਜਾਵ ਫ਼ਿਲਜ਼ ਜਾਂਦਰ ਦੀ ਹੈ ਕੀਵ ਲਾਜੇਦੀ—ਬੁਝ ਤਿਵ੍ਹੀਂ ਜਾ ਦਾ ਜਾਣ। 3 ਲਾਜੇਦਰ ਨੇ ਜਿਹ ਜੀਦ ਦਾ ਸੂਵਤ ਫੁਜੰਧਰੂਰੀ ਸਮਝੰ ਦੀ ਜਾਂ ਨੇ ਬਈ ਤੋਂ ਜਿੱਥੇ ਸ਼ੁਰੂ ਜਿਹੜੇ ਜਾਂਦੇ ਜਾਂਦੇ ਜਾਂਦੇ ਜਾਣਦਾ ਜਾਂਦੇ ਜਾਂਦੇ ਜਾਣਦਾ ਜਾਂਦੇ ਵਾਲਾ ਜਾਣਦੇ

एक मिर व मार्केट वहाँ पर उसके बस्त्यम् या ! सन्दर्भ बहारता बहारोत् हुन्य सन्दर्भ वीत होत से वहार यह या !" 4. मेरित का सन्दिनसनेनन एक जिल्हा सेन्छा (Viscot's Ctrib) यी ! हर्नो

पेरिटिट राष्ट्री के प्रतिनिधियों को नाम नहीं होने दिया गया । इससे सम्मेनन में स्मेन कठितहरों देवा हुई । 5. पेसि के सामि-सामक कारी कार्यक्षकों का समुख करता बाहरे से । दे सामे

कर्यों से कारी-कारी देश के निर्शादक मनकरों को, जो बदले की मादना से सकता रहे थे. सनुष्य करना चारते से । बदा सम्मेलन में बागस में टक्साटर रहें ।

6 सम्मेनन के समने कोई सुनिष्टिद और स्टब्ट मोजना नहीं थी।

7 सम्मेलन का सगठन यहा दोषपूर्ण था। इसकी कार्य पद्धति भी बहुत अपूर्ण थी। सम्मेलन के सभी महत्वपूर्ण निर्णय त्रिमूर्ति (विल्सा क्लेमेंसो लॉगर्ड जॉर्ज) द्वारा किए जाते थे । पूर्ण राम्मेलन का वार्य केवल इन निर्णयाँ पर मोहर लगाना मात्र था ।

8 अन्तिम कठिनाई यैयस्तिक तत्व (Personal Element) थी । विल्सन ऑयह जॉर्ज क्लेमेंसी और आरलैण्डों में विसी प्रकार की समानता न थी । अपनी अपनी उपली अपने अपने राग दाली बात थी । पेरिस सम्मेलन के चारों कर्णधारों के दिरोधी व्यक्तित्व और स्वमाव से शान्ति सम्मेलन में बड़ी बापाएँ उपस्थित हुई । सम्मेलन में आदर्शवाद और भौतिकवाद में संघर्ष चलता रहा । ऐसे वातावरण में किसी एक पक्ष की पूर्ण विजय सम्मव न थी अत दोनों पदों ने ही समन्वय की भावना अपनाई । फिर भी विल्सन के आदर्शवाद की अपेशा क्लेमेंसो का भौतिकवाद अधिक विजयी हुआ।

शान्ति सम्मेलन के मूल आधार शान्ति सम्मेलन का अधिवेशन आरम्भ होने पर यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि शान्ति रचना अर्थात् विभिन्न शान्ति सन्धियाँ का आधार क्या हो ? सम्मेलन पर एक और हो दिल्सन के आदर्शवाद का प्रमाव था तथा दूसरी और यूरोपीय राजनीतिज्ञ राष्ट्रीय हितों को प्रधानता देकर राजनीतिक यथार्थवाद का प्रतिपाटन करने पर तले हुए थे। ऐसे वातावरण में शान्ति रयना के एक से अधिक आधार निरुपित हुए और उन्होंने अपनी अपनी मुनिका अपने दग रो अदा की । शान्ति रचना के ये मल आधार जिन्होंने ज्ञान्ति निर्माताओं के निर्णयों को प्रमादित किया निप्नतिखित पहर थे

(क) अमेरिका के राष्ट्रपति विल्सन और जर्मनी का यह मत था कि शान्ति सन्धियाँ का आधार वे सिद्धान्त होने चाहिए जो विल्सन ने युद्धकाल में प्रतिपादित किए थे। युद्धकाल में विल्सन ने चार बार सह राष्ट्रों के युद्धोदेश्यों की व्याख्या की थी। पहली बार 8 जनवरी 1918 को काँग्रेस के समझ भाषण करते हुए उसने अपने चौदह सूत्री कार्यक्रम को पेश किया था । इसके बाद 11 फरवरी 1918 को काँग्रेस के ही साधने सबने अपने चार सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया । इसके उपरान्त 4 जुलाई 1918 को उसने 4 तस्यों की घोषणा की और फिर 27 सितम्बर को 5 व्याख्याओं की स्थापना की ।

(ख) इन्तैण्ड फ्राँस इटली आदि मित्रराष्ट्र युद्ध के समय ही वी गई गृप्त सन्धियाँ के आचार पर शान्ति समझौते की रूपरेखा निर्धारित करना चाहते थे।

(ग) शान्ति निर्माताओं द्वारा प्रतिपादित नियमों को रूस की साम्यवादी क्रान्ति ने भी बढा प्रमावित किया । वे रूस को अन्तर्राष्ट्रीय जगत मे बढिकृत तथा अछत रखना चाहते दे । सम्मेलन के प्रत्येक निर्णय पर रूसी क्रान्ति का अझात मय छाया हुआ था ।

(घ) स्वतन्त्रता के लिए राष्ट्रीयता की भावता का विकसित होना भी समझौते का एक महत्वपूर्ण आधार रहा । राष्ट्रीयता की मावना ने इस सम्मेलन के अनेक निर्णयों को प्रमायित किया ।

अमेरिका ब्रिटेन फ्राँस और इटली के राष्ट्रीय हिलों ने सम्मेलन पर निश्चित रूप

से अमिट छाप छोडी । (च) अन्त में ब्रेस्ट तिटीवस्क की सन्धि का भी पेरिस सम्मेलन पर व्यापक प्रभाव पडा !

अध्यक्त और समितियाँ सम्पेलन का अध्यत क्लेमेंसो को चुना गया। यह एक औपचारिकता थी कि जिस देश में सम्मेलन हो उस देश का प्रधानमन्त्री या अधिकारी को

सम्मेलन का अध्यक्ष धुना जाता है। इसके अलावा क्लेमेसों का व्यक्तित्व बहुत ही प्रमावशार्ल था। अत जसी की अध्यक्ष्म से प्राप्ति सम्मेलन वा सारा कार्य सम्पन्तित हुआ। महत्वपूर्ण विषयों की जींच के लिए तथा प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के लिए अनेक समितियाँ बनाई गई। इन समितियाँ में अनिवार्य रूप या हिटेन संयुक्तराच्य अमेरिका प्रांस और इटली के प्रतिनिध्म रहते थे। इनके अलावा इनमें अन्य देशों के भी प्रतिनिधि सम्मिलत थे। इन विशेष समितियाँ की सार्या 52 तक हो गई थी। मुख्य समितियाँ युद्ध के जतरवादित्व हातिपूर्ति की समस्य अन्तर्राष्ट्रीय श्रम विधान व्यर्मनी के जपनिवेशों का केंद्रवारा बन्दरमाही ला सार्गी विशेष इस सम्बन्ध में भी एक समिति बनाई गई। इस समिति का अध्यक्ष स्वय अमेरियी राष्ट्रपति दिल्लान था। इनके अलावा अन्य अनेक समितियाँ अपनाई गई जो सिय के विविध विषयों से सम्बन्धित थीं। इनका प्रतिवेदन काफी महत्वपूर्ण होता था। इससे शान्ति सम्मेलन का कार्य इस ही सकत हो गया।

मूल्योंकन पेरिस के शान्ति सम्मेलन द्वारा शान्ति की शर्ते पाँघ सान्धियों में रखी गई जिनके नाम इस प्रकार हैं वसीय की सीध आदिद्रमा के सच्च सेम्ट जर्नन की सान्धि बल्गेरिया के सच्च न्यूडली की सीच हगरी के सच्च द्विमनो की सन्धि और टर्क के सच्य संद्र की सीच। इसमें कोई सन्देह नहीं कि जर्मनी के साथ सीच ही प्रस्तावित शान्ति सम्मेलन की महत्वपूर्ण सक्वतता थी।

पेरिस के शान्ति सम्मेलन ने युद्धों को समाप्त करने के लिए लडे जाने वाले युद्ध के बाद दिभित्र सन्धियों द्वारा शान्ति स्थापित करने का प्रयास किया लेकिन मानद जाति का यह दुर्माग्य था कि यूरोप का राजनीतिक वातादरण निरन्तर विस्फोटक होता गया राष्ट्रीय विद्वेष की अग्नि सलगती रही अल्पसंख्यकों के हितों के लिए की गई सन्धियों की शतों के प्रति कोई वचन नहीं निनाया गया और अन्तत 1938 में ससार को द्वितीय महायुद्ध की विमीपिका का शिकार इनना पढ़ा । पेरिस की शान्ति सन्धियाँ इसलिए सफल रहीं कि प्रथम तो सम्बन्धित पक्षों ने सन्धि की शतों के पालन का उत्तरदायित्व नहीं निमाया द्वितीय फ्रॉस में क्लेमेंसो सरकार का पतन हो गया और सम्रवादी पोऑकार सरकार सत्तारूढ हुई जिसने प्रारम्म से ही ऐसी नीति अपनाई कि जिसके फलस्वरूप सन्धि की शर्त बेकार हो जाएँ और फ्रॉस को खुलकर जर्मनी से इदला लेने का मौका निले । दास्तव मे फ्रॉस की राजनीति में पोआँकार का पुन प्रदेश यूरोप के लिए अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण सिद्ध हुआ । इस सम्बन्ध में शान्ति सन्धियों से अमेरिका का सम्बन्ध विकोद भी बढ़ा घातक सिद्ध हुआ ! सन्धियों को ससार के एक महानतम् देश के समर्थन से वीवेत हो जाना पड़ा और उनको कार्यीन्वि करने का भार केवल उन्हीं लोगों पर रह गया जो प्रतिशेध की आग में जल रहे थे । यह कहना सर्वथा उपयुक्त है कि यदि सन्धि की शतों का सभी पत्नों की और से उदित पालन हुआ होना तो पेरिस वी शन्ति सन्धियों की यह दुर्दशा न होती जो बाद में हुई ।

5 मार्च 1945 को संयुक्त राज्य अमेरिका रूस ब्रिटेन रूचा चीनी गणतन्त्र की और से याल्टा सम्मेलन के निगय के अनुसार 45 अन्य राष्ट्रों को आमन्त्रित किया। पोलैण्ड को

रौनफ्राँसिस्को सम्मेलन, 1945

आमन्तित नहीं किया गया क्योंकि धार प्रस्तावक राष्ट्र उसे मान्यता प्रदान करने के प्रश्न के विषय में राहस्त नहीं हो सके। आमन्तित करते समय सम्बन्धित राष्ट्रों को सुदित भी कर दिया गया था कि प्रस्तादित सम्मेलन में सायुक्त राष्ट्र के निर्माण के सम्बन्ध में यास्ट्रा सम्बन्ध में सायुक्त राष्ट्र के निर्माण के सम्बन्ध में यास्ट्रा सम्मेलन के गिर्मयों पर विषय किया जाएगा। साथा ही आमन्त्रित तराष्ट्रों से अपने विषय भी मेजने का आग्रह किया गया था। सम्मेलन 25 अप्रेल 1945 को तैनाओंतिरकों में प्रारम्भ हुआ। सम्मेलन ने २६ राष्ट्रों के प्रतिभिक्त सम्बन्ध मान्यत्व हुआ। सम्मेलन ने २६ राष्ट्रों के प्रतिभिक्त सम्बन्ध मान्यत्व स्वयं प्रशास के स्वयं प्रशास अन्तर्वा हुआ। अन्तर्वा प्रशास सम्बन्ध मान्यत्व ही भी सम्मावन की साथा है। असिय में हो। की सम्मावन सी।

सम्मेसन की कार्यवाही, राष्ट्रों का राजनय सैनफ्रांसिस्को सम्मेलन के कार्य निव्यादन सम्मेलन में बड़े तथा छोटे राज्यों के राजनय और सम्मेलन के परिणाम आदि पर डॉ रामसखा गीतम ने अध्या प्रकाश डाला है

सयक राष्ट घार्टर का निर्माण करने के सम्मेलनों के उदेश्य की पर्ति के लिए अनेक समितियाँ एव आयोगों का गठन किया गया । सम्मेलन मे भाग लेने वाले सभी राष्ट्रों को अपने विचार प्रकट करने एवं अपने संझाव प्रस्तत करने का परा अवसर प्रदान किया गया। अन्त में निर्णय एक विशेष बहुमत द्वारा लिए गए जिससे यह आमास हुआ कि सम्मेलन द्वारा बड़े राष्ट्रों की भी उपेक्षा की जा सकती है। यहाँ पर यह बात अवश्य ही स्पष्ट की जानी चारिए कि कोई भी निर्णय रूस ब्रिटेन अमेरिका चीनी गणतस्त्र एवं फ्राँस की इच्छा के दिरुद्ध सम्भव ही नहीं था । रूस एवं अमेरिका को विशेष स्थान प्राप्त हो गया था । इस सम्मेलन में अनेक कठिन समस्याओं का समाधान हो सका । सुरक्षा परिषद में मतदान पद्धति (निषेपाधिकार) अधिक महत्वपूर्ण विषय बन गया था । छोटे राष्ट्रों ने इस विशेष अधिकार को रोकने का बहुत कठिन असफल प्रयास किया । छोटे राष्ट्रों का मत था कि विवादों को शान्तिपूर्ण दग से सुलझाने के लिए एवं चार्टर में संशोधन करते समय निवेधाधिकार का प्रयोग नहीं किया जाना घाहिए । रूस याल्टा मतदान पद्धति में लेशमात्र परिवर्तन स्वीकार करने की स्थिति में नहीं था। रूस का विवार था कि घार्टर में संशोधन के लिए कठोर पद्धति ही अधिक हितकर होगी । रूस तो यहाँ तक कहता था कि किसी महत्वपूर्ण विषय पर विद्यार विमुश करने के लिए वीटो का प्रयोग होना चाहिए परन्तु ब्रिटेन फ़ाँस अमेरिका तथा चीन चार्टर को इतना कठोर नहीं होने देना चाहते थे । उन्होंने यह भी बहुत ही कठिनाई से स्वीकार किया कि केवल निर्णयों पर ही निषेधाधिकार का प्रयोग किया जाए । इस समस्या का अन्तिम समाधान अमेरिकी राष्ट्रपति दुमैन एव भारील स्टालिन के सहयोग से ही सम्भव हो सका।

महासमा की शांतियों के सम्बन्ध में भी कठिन विवाद था। क्या का विचाद था कि प्रहारमाः की मेरिटर की गुरुवा ने मान्नियात प्रमानी पर दिवाद करने का अधिकार नहीं प्रदान किया जाना चाहिए। वह चाहता था कि उत्त कार्य का जारदाशियक केवत सुख्ता परिस्तृ को ही शींचा जाए। राष्ट्रपति दूरीन इत दिवाद पर मार्गत स्वातिन से विचाद विचार करना चाहते से परन्तु राष्ट्रपति दूरीन के विचाद से सहस्त होकर क्सा के विदेश मन्त्री मोलोटोव ने अमेरिका का यह विचाद स्वीवाद स्वीवाद कर दिखा कि महस्तमा को भी सुख्ता सम्बन्धी विचार राष्ट्रों ने यह प्रयास मी किया कि मुख्य परिषद की सदस्य मध्या 11 में अधिक होती बहिए एवं वे अस्थायी सदस्यों की सच्चा में दृद्धि के यह में मी थे। बढ़े राज्यों के लिए यह दिवार विल्हेल मीलार योग्य नहीं या । सम्पद्ध सनहा अनुमान या कि सर्हे बर्दर के अन्तरन को दिशक्तिकर प्रान्त हो बहे हैं। उनमें किसी मी दरह के प्रतिदेवर से सन्ती न्धिति में धरिवर्दन हो सहद्रता है। इतना बदाय कहा का सकदा है कि छोटे राज्यों ने बर्दर में सामारम परिवर्तन अवस्य करा लिए जिसमें बादर में उन्हों नियरि कुछ मृद्ध हो मधी। सम्मेनन में बढ़े राष्ट्र छोट राज्यों की खुलकर स्टेश भी नहीं कर समरे थे। एक बान यह नी है कि सनी बढ़े राष्ट्रों में भी सनी प्रश्नों पर महैका नहीं था रिमने फलम्बनय छाटे चन्य या चन्द्र महत्त्वन की हिंत को बदार रख नहें क्येंकि एनको यह अनाम हो गया था कि बढ़े राष्ट्रों ने सुरक्ष परिषद् पर निष्याधिकार के कारण सन्यानं अधिनार कर तिया है। घेटे राज्यों के प्रवास से कार्यिक प्रवास गिक परिवर्द को छोटे राज्यों के लिए क्षीज चरमें है बतमा का सका। यह दिविंदद मता है कि छोटे राज्यों के सन्त दिरेब के बारन ही मुख्य परिषद् के निर्दि को पूर्वट्य बच्चकरी नहीं बनाय का सका। सूखा परिषद करने करिक में में निरहश नहीं हो सही एवं वह अपने निर्मार्थ को बाधकारी बनने में गर्दै लाद सकते की हत्या प्रास नहीं कर मही। यहनी शेटे राष्ट्र मुख्य परिवद वर कुछ बहुर लग सब्दों में सबस हो सके परना बढ़े राष्ट्रों के निरंप दिनार को परिनर्जित नहीं कर सके। रान्ति मा होने या रान्ति को खदरा एक होने की नियदि में सुका परिषद के रूपिक में के प्रयोग में उनके दिदेक के रूपिक में को चुनैनी नहीं दी जा चही। छोटे राज्यों ने बर्टर को हर्व से स्टीकर कर लिए बा। एनको दिखन बा कि बढ़े राष्ट्र छोटे राज्यों के हितें का दिश्य प्राप्त रहीं। मुख्यत सन दिनों यह कम्पन में नहीं की स मकी थी कि संपुत्र राष्ट्र का यूर राम्येत बढ़े राष्ट्र करने हितें की राम हेंद्र करेंगे एव घेटे राज्यें की पूर्वटम स्टेश कर दी सर्ही ।

सपुन चप्न के घोषण पत्र (सर्टर) को तिम सेन्द्रमेनिकों में दीवार किया गया था, 26 जून 1945 को उन्ह सम्मेलन में मा होने बन्ने समी 51 सत्यों के मुस्तिपीयों ने हरम्बा बर्फ स्विचा बन स्थित । सर्टर के अनुस्तर 110 में यह कहा गया था कि नम् विनेत्र मान कोनीका सीनी गरस्यत हथा होत स्वयों के क्यूनिया स्वयों की स्वयों हारा स्वीकृति प्रदान करने के उपरान्त धार्टर लागू माना जाएगा। 24 अक्टूबर 1945 तक यह सत सम्प्रत ही गई एव इसी तिथि को समुक्त राष्ट्र को प्राहुर्गत हुआ। । समुक्त राष्ट्र धार्टर ने दिला साजन को जन्म टिया वह राष्ट्र साथ से बहुत अधिक नित्र तो नहीं था परन्तु अनेक कारणों से विश्व के रानी देश राष्ट्रताय को स्तरण ही नहीं करना चाहते थे। राष्ट्रताय के साथ असफलता का करक जुड़ा था। जिससी सानी साबधित राष्ट्री ने एक नए विश्व साणक कर करना है अपरान्त समझा। दो महत्वपूर्ण शक्तियाँ कर एव अमेरिका जिनका सहयोग विश्व साथा की साकता है के अपरान्त आवश्यक माना जाता था। एक नए विश्व सामान के निर्माण के यह में थी। अमेरिका को यह भी मय था कि राष्ट्रताय की मुस्त्व कि साथ की साकता है है अरपना आवश्यक माना जाता था। एक नए विश्व सामान के निर्माण के यह में थी। अमेरिका को यह भी मय था कि राष्ट्रताय की सारच्या सी विश्व सीनिट उसी अस्टिका को यह भी मय था कि राष्ट्रताय की सारच्या सी विश्व होना एक था। राष्ट्रतया की मावना मात्र से असून का अनुमद कर रहा था। यदापि पुराने राष्ट्रताय के अनुमदों का उपयोग कर सम्मेतनों का साम बसाया जा सकता था। परन्तु पूर्णतया नया विवार एव नया सगठन अधिक शुन माना स्वा

जयर्युक्त विश्तेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि सी क्रांसिसको सम्मेलन ने सयुक्तराष्ट्रसध शी मीव ढाली जो बाद के वर्षों में विश्व में शान्ति-स्थापित करने की दिशा में एक महान् सगठन सिद्ध हुआ। सन्धियाँ एवं अन्य अन्तर्राष्ट्रीय समझौते, अविप्रतिपत्ति सन्धि, अतिरिक्त धाराएँ, अन्तिम अधिनियम, प्रामाणिक विवरण, अनुसमर्थन, सहमिलन आदि

(Treaties and Other International Compacts, Concordat, Additional Articles, Final Act, Process Verbal, Ratification, Accession etc.)

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के सवालन के लिए राज्यों के बीव अनेक सम्पियों एव समझौते किए जाते हैं। इनके द्वारा राज्य अपनी स्वीकृति से अपने हिए कानूनी अधिकार व कर्तव्य निपेदत कर तेते हैं। सचियों और समझौते अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था को बनाये रखने में महत्वपूर्ण मूमिका का निवाह करते हैं।

सन्धि एव अभिसमय (Treaties and Convention)

सनिप्रयों राज्यों के बीध होने वाली सहिदाएँ हैं। इन्हें ऐसे सनझीते कहा जा सकता है जिनके हाद्भाज्य आपस में कानुनी सान्यत्रों की स्थापना का प्रयास करते हैं। में ओपेनहीन के अनुनार "अनतर्राष्ट्रीय सनियारों वे परस्परार्थ या सहिदाएँ हैं जो दो अयवा दो से अपिक राज्यों के बीध चारस्परिक हित के विनिन्न विषयों से सान्यत्र निर्मारित करते हुए कहा गया है कि "सनिय सनझीते का एक ऐसी औपवारिक लग है लिसके हारा दो या अधिक राज्य आपता में अन्तरिक्षीय कानु के अपीन सान्यत्र निर्मार्थ हैं। प्राप्त कि सिंह हिला सान्यत्र करते हैं। प्रस्त पित हिला सान्यत्र अपना सान्यत्र करते हैं। प्रस्त पित हिला हिला हो हो हो सान्यत्र सान्यत्र सान्यत्र सान्यत्र करते हैं। प्रस्त प्रस्त हिला हो सान्यत्र करते के सिंह के अपनार्थ के आपता है अपनार्थ के अपनार्थ हो सान्यत्र सान्यत्र सान्यत्र करते के सिंह के अपनार्थ हो सान्यत्र करते के सिंह के सान्यत्र सान्यत्र सान्यत्र सान्यत्र हो हो सान्यत्र सान्यत्र करते के सिंह के सान्यत्र सान्यत्र सान्यत्र हो हो सान्यत्र सान्यत्र सान्यत्र सान्यत्र सान्यत्र सान्यत्र सान्यत्र है। सान्यत्र सान्यत्र सान्यत्र सान्यत्र सान्यत्र सान्यत्र सान्यत्र सान्यत्र है। सान्यत्र के सान्यत्र अपितक्र सान्यत्र सान्यत्र सान्यत्र सान्यत्र सान्यत्र के सान्यत्र अपितक्र सान्यत्र सान्यत्र सान्यत्र के सान्यत्र अपितक्र सान्यत्र सान्यत्र सिंद सान्यत्र के सान्यत्र अपितक्र सान्यत्र सान्यत्र कि सान्यत्र के सान्यत्र सान्यत्य सान्यत्र सान्यत्य सान

मोटे तीर पर अन्तर्राष्ट्रीय सन्धियाँ व्यक्तियों के बीच होने वाले समझेतों से समस्वता रखती है। सन् 1829 में अमेरिका के मुद्रम न्यायवरित जीन मार्गल ने कहा था कि 'सन्धि अपनी प्रकृति के अनुसार राष्ट्रों के बीच टोने वाला एक नास्त्रीता है।" यह कथन अधिकाँश दिप्तीय समझेती पर दिशेष रूप से लागू होता है।

सादिक दृष्टि से सन्धि शब्द के अंग्रेजी रूपान्तर ट्रीटी (Treaty) को ट्रेटर (Traiter) शब्द से लिया गया है जियाका अर्थ है समझीता करना । सजनय और अन्तर्राष्ट्रीय कानून के साहित्य में सन्धि शब्द का प्रयोग व्यापक तथा सीमित दोनों अर्थी में किया जाता है। "संभि की प्रकृति बाय्यशरी होती है। आजकत कायवारी अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों का उल्लेख करने के लिए विभिन्न शब्द प्रयोग में लाए जाने लगे हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों का एक अन्य महत्वपूर्ण प्रकार अभिसमय (Convention) है जिसे सेटिन मात्रा के शब्द कन्वीसीय (Convention) से स्थित गया है। इसका अर्थ है समझीता। वह पर प्राया उस समझौते के लिए प्रयोग में आता है जिसमें माग लेगे साते अनेक देश होते हैं और प्राया कानून निर्माण की मुक्ति के होते हैं। आजकत अनेक विश्वसी पर बहुप्यीय असिसमय सम्पादित हुए हैं जैसे साहारता और ओदोगिक सम्पत्ति की रसा तेत से समुद्र का दूषण हृषि सफाई मीटर सातायत गमन की स्वतन्त्रता नागिरक उद्वयन समुद्र पर जीवन की स्वतन्त्रता अन्तर्सन्त्रीय प्रदर्शियों आर्थित

सिंध और अमिसमय दोनों सन्द बहुत कुछ समानार्थिक हैं इसिल्ए दोनों पर एक साथ विधार करना सुविधाजनक होगा । दोनों पढ़ी की परिमाध इस प्रकार नहीं की,जा सकती कि दोनों में सातारिक अन्यति होडाया जो सक्ते आ इन दोनों का कहुत कुछ समान अर्थ हैं। सिधायों अपने सीमित अर्थ में औपयारिकता का साधन होती हैं। प्रारम्भ में सिध्यां राज्य के अध्यक्षों हारा की जाती थी किन्तु अजवलन ये राज्य तथा सरकारों के बीध की जाती हैं। हिसी व्हास्त्रक के बहुत रहीना सिधायों के अनेक दावास्त्रम मिल्टो हैं।

सन्धियों के उद्देश्य (Objects of Treaties)

सिथारों का उदेख राज्यों के हित से सम्बन्धत कोई मी दिश्य हो सकता है। स्थियों हारा राज्यों को बतिएय अधिकार और कर्सव्य प्राप्त होते हैं। इन दायिनों की प्रकृति सन्धि के अधिक्य का अधार होती हैं। अनुधित दायिक हातने वाली सन्धि अदीम मानी जाती है। सन्धि के एंट्रेस्ट की इन्हिंद से निमानिश्चित को उत्तर्खनाय हैन

! एक सन्धि इसमें सम्मिलित राज्यों को ही दायित्व साँपती है तथा इन्हीं पर ये दायित्व बाव्यकारी रूप से लागू होते हैं। ये राज्य दूसरे राज्यों को मी कुछ कार्य करने के नियर ऐतित कर सकते हैं।

2 सांध्याँ अन्तार्राष्ट्रीय कानून का अग होतो है क्योंकि सामान्य एवं विशेष दोनों प्रकार की सांध्याय द्वारा राज्यों पर बायकारी आधारण के नियम आसीपत किए जाते हैं। कोई एवं राधि के दायिकों का उल्लापन नहीं कर सकता। यदि नदीन वाधि के दायिक यूर्डिसका सांध्ये के दायिकों से नित्र या विश्तरीत होते हैं तो सम्बन्धित राज्य उसका विरोध कर सकते हैं। सन् 1878 में कस ने टकी के साथ सानन्दीकेनों की शानि संध्ये की। यह सांध्ये परिस की सांध्ये 1856 और लन्दन अमिसमय 1871 के विश्तरीत थी इसीलिए ग्रेट ब्रिटेन ने इसका दिनेश किया। १४४ राजनय के सिद्धांत्री

3 सन्ध के उद्देश्य सयक राष्ट्रसच के चार्टर के दायित्वों के विरोधी नहीं होने चाहिए। सहि होनों के बीच दिरेच होगा तो चार्टर की घारा 103 के अनुसार चार्टर की घाराएँ मानर होंगी । इस प्रकार चार्टर के दादित्व सच्चतर हैं ।

4 सन्ति का लक्ष्य प्राप्त किए जाने द्रोग्य हो । असम्मव दायित्वों को सन्धि का लक्ष्य नहीं इनाया जा सकता है। यदि ऐसा किया जाता है तो कोई भी पक्ष सन्धि का उल्लंघन कर सकता है। काननी रूप से ऐसी सन्धि करता है तो वह बच्यकारी मानी जा सकती

है। यह सब है कि इस प्रकार की अनेक सन्धियों अतीतकाल में की गई हैं किन्त ये सन्धिकर्ता पक्ष पर बच्चकारी नहीं हो सकती। राष्ट्रों द्वारा बहुया इनका उल्लंघन किया जारा है।

सन्धियों का वर्गीकरण (Classification of Treaties) अन्तर्राष्ट्रीय सन्धियों को उद्देश्यों की दृष्टि से अनेक मागों में दर्गीकृत किया ज सकता है। अधिनहीन ने सन्धियों को दो दगें में दिमाजित किया है—(1) दिनित्र राज्यों के आयरा

के सामान्य नियमों को निर्यारित करने दाली सन्धियाँ । इन्हें कानन निर्माता सन्धि मी वह जता है। (2) इस दर्ग में उन सन्धियों की गणन होती है जो किसी अन्य एदेश्य के लिए की जाती हैं। सन्धियों का यह दर्गिकरा सैद्धान्तिक रूप से गलत किना व्यादहारिक दृष्टि से महत्दपर्भ है।

भारतीय राजशास्त्र के दिहान कामन्दक ने अपने ग्रन्थ कामन्दकीय मीतिसार में 16 प्रकार की सन्धियों का उल्लेख किया है। ये हैं-द्व्य सन्धि सन्तान सन्धि कपाल सन्धि उपग्रह सन्धि, नित्र सन्धि हरि"य सन्धि भूमि सन्धि आदि । कौटिल्य के मुलानसार सन्धिर्म के चल और स्थादर दो दर्ग होते हैं। चल सन्धि में शप्यपूर्दक उसके पालन का इत लिया

जाता है किन्त स्थादर सन्धि में उनके पालन के लिए किसी की जमानत ली जाती है। प्रसिद्ध दिहान हालै उ ने विषय की दृष्टि से सन्धियों को पाँच भागों में दिमाणित किया है--राजनीतिक सन्धियाँ व्यापारिक सन्धियाँ सामाजिक सन्धियाँ दीवानी न्याय सम्बन्धी

संस्थियों एवं फीजदारी न्याय दिवयक सन्धियाँ । सन्धि के इन रूपों के अतिरिक्त वास्तरिक व्यवहार में निम्नलिखित रूप भी प्रचलित है.... । द्वि पक्षीय सन्धियाँ जब कोई दो राज्य आपस में सन्धि करते है हो दह इस श्रेपी में आती है। ऐसी सन्धियाँ निजी समझौता होने के कारण प्राप अन्तर्रप्रीय कानून की परिच में नहीं आरों तो भी चन दिवदों पर नियमन की दफ्ट से उल्लेखनीय है जिनके

बारे में अन्तर्राष्ट्रीय कानून मौन है। 2. बहुपतीय कानून निर्माता सन्धियाँ ऐसी सन्धियाँ में अनेक राज्य माग लेते हैं। ये सन्पर्य दो प्रकार की होती हैं-राज्यों के आर्थिक व सामाजिक हितों पर दिवार करने वाली सन्धियों द कानून निर्मता सन्धियाँ । ऐसी सन्धियाँ राज्यों के अधिकारों द कर्तव्यों को पारिमानित करती हैं तथा उनके दिरेची दादों के बीच सामजस्य स्वादित करती हैं। सदाहरण के लिए. 1815 की दियना काँग्रेस का अन्तिम अधिनेदम (Final Act) रीय है।

समस्त यूरोप का कानून बन गया । सन् 1899 और 1907 के हेग सम्मेलन मी कानून निर्माता सन्धियाँ थीं । राष्ट्रसध का घोषणा यत्र और सदक्त राष्ट्रसध का बार्टर अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्थापन के महत्वपा सदाहरण है।

- 3 सान्ति सन्धियाँ युद्ध समान्त होने पर शान्ति सन्धियों की जाती है। प्रायोन काल में यह परम्परा थी कि हात हुआ राज्य विजेता राज्यों हात राय की गई शती पर हतावार करने के लिए सम्प्र होता था। श्रीमित्स ने इन सन्धियों को प्रश्तित स्वाया है। वेदिल के मतानुसार ये सन्धियों तभी शार्यक हो सकती है जब उन पर राज्यों का विश्वास हो। सान्ति सन्धिय एक प्रकार है हो हुए राज्य हात जीते हुए राज्य को दिया गया दुद्ध का हजीता है। इस सम्बय में समी्य की समित्र का उपराल्य गीता वार्य प्रत्य का हजा है।
- े भारण्टी देने वाली सम्पर्यो सन् 1920 में राष्ट्रतय की स्थापना से पहले विचारकों ने ऐसी सम्पर्यो की वृद्धि की समस्या पर विचार किया था। इन सम्प्रियों द्वारा विशेष राजनीतिक स्थित स्थापित की जाति है। कुछ गर्यों को ऐसी सम्पर्यो हात स्वरस्या की ग्रास्टी दी जाती है। सम्पर्य के सामी यहां सम्बन्धित राज्य की तदस्थता का सम्मान करते

सन्धियों के प्रमाव (Fifects of Treaties)

अन्तर्राष्ट्रीय समियमें का व्यापक प्रमाद होता है। ये केवल समिकतां पतां को ही नहीं वरन् दूसरे पतां को भी प्रमावित करती हैं। समियमें से अन्तर्राष्ट्रीय राजातिक व्यवस्था तथा अन्तर्राष्ट्रीय कानुन दोनों ही प्रमावित होते हैं। समियमें के प्रमाव को निग्नतिवित रूप में विकरित किता पार मकता है

- 1 समझौता करने वाले पहां सनियाँ का प्रत्यक्ष प्रमाव समझौता करने वाले पढ़ों पर पड़ता है। वे सिया क्षेत्र प्रवासनों से हाय हो जाते हैं और उन्हें ययावत कियानित करते हैं। क्रियानिति की दृष्टि से सिया के महत्वपूर्ण तथा गीण मार्गों ने अतर किया जाता है। सिया की हायवकारी शक्ति उसके सभी मार्गों पर समान रूप से लागू होती है अत हुसे सद्मावना के साथ क्रियानित किया जाना चाहिए। यदि सन्य का कोई पढ़ा उसकी किसी धारा विशेष के सम्बन्ध में हस्तावरा करते समय सहमत न हो हो परा पर वह धारा लागू नहीं होते।
- 2 सिम्फर्ता राज्यों की जनता अन्तर्राष्ट्रीय सन्ययाँ राज्यों के बीध होती है और इतिहार ने राज्यों पर ही लागू होती है। राज्यों की जनता से उनका सीचा सर्क्या नहीं होता ! केती किसी अन्तराष्ट्रीय सीच्ये में राज्ये के ज्याधारायों अधिकारियों आदि के सम्बन्ध में मी प्राययान होते हैं। सम्बन्धित राज्यों को इन प्राययानों को अपने राष्ट्रीय कानून के अनुसार क्रियानित करना चाहिए । इसका सरीका प्रत्येक राज्य का प्रयक्त होता है।
- 3 सरकार के परिवर्तन का सन्धियों पर प्रभाव सन्धियों केवल समझीता करने वाले स्वा ए ही बायजनी होती हैं। यदि किसी साँचि से सम्बीयत राज्य की सरकार बदल जाए तो नियमनुसार मरिच की सम्बाही शक्ति उनतीतित सरकार पर मी प्रमाव रहेगी। हसी प्रकार जब साविधानिक सरकारों के मन्त्रिमण्डल बदल जाते हैं तो पूर्व मन्त्रिमण्डल हारा की गई साँचियों कमार्थी रहती हैं। बदि कोई गई सरकार पूर्वर्वी सरकार हाता की गई आर्थीयों का अपनीत करती हैं। तो अन्तर्राईय जगान् में उनकी साविधान करता है तो अन्तर्राईय जगान् में उनकी साविधान जाती है। इसलिए सरकार का रूप पदाधिकारी निदान्त अध्यय गीरित बदल जाने पर भी अन्तर्ताईयोव सर्पियों का प्रमाव स्थावत कायम रहता है। जिन सर्थियों में सरकार के एक परिकेश रूप की अनिवार्यता होते हैं यह सरकार पर स्वा

4 तीसरे राज्यों पर प्रभाव अन्तर्राष्ट्रीय कानून में स्पष्टत यह निर्धारित करने वाल कोई नियम नहीं हैं कि दो या अधिक राज्यों के बीच की गई सन्धि जन राज्यों पर का प्रमाद डालेगी जो समझौत में शामिल नहीं हैं। उनीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में अनेक सन्धियों में तीसरे एक को लागानित करने का रूख समय कर दिया गया था। उनमें यह नी प्रार्थणन या कि तीसरे इच्छुक राज्य मूल सन्धि के सदस्य बन सकते हैं। ऐसा होने पर उन्हें समल काननी अधिकार प्राप्त हो सकते थे।

नियमानुसार स्रिय का सम्बन्ध केदल समझीता करने वाले पर्सो से होता है। तीसरे राज्यों पर केदल विशेष परिस्पतियों में ही सचित्र अपना प्रमाव डाल पाती है। तीसरे राज्य अपनी स्पष्ट या अस्पष्ट स्वीकृति प्रदान कर सन्यि के दादित्वों और अधिकारों में बन्ध जते हैं। सन् 1903 में सयुक्तराज्य अमेरिका और पनामा के बीच एक सन्यि सम्पन्न हुं जिसके अनुसार पनामा नहर को समी राज्यों के व्यापारिक जहाजों एव युद्धपोतों के लिए खुली रखने का प्रावधान किया गया था। यह सन्यि यदापि दो राज्यों के बीच की गई थी किन्तु इसने तीसरे राज्यों को भी प्रमावित किया।

जिस प्रकार साधारणत सम्पियों तीसरे राज्यों को लाम अधिकार नहीं देतीं उसी प्रकार उनके कपर कोई दादिव्य भी नहीं आतीं । समय के अनुसार इस नियम में परिदर्शन आता जा रहा है। राष्ट्रसध के घोषणा पत्र में समय को अधिकार दिया गया था कि वह गैर-सब्दर्श के बीद होने वाले दिवादों के सन्वन्य में अपने प्रमाव का प्रदोग करे। सपुक्र राष्ट्रसध के धार्टर की धारा 2 में स्पष्ट उल्लेख है कि सच को ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए जिसमें गैर-सब्दर्श सज्य मी अन्तर्राष्ट्रीय शानित और सुरक्षा के लिए सच के सिद्धातों के अनुसार कार्य कर सके। इस प्रकार सामान्य हित की दृष्टि से अन्तर्राष्ट्रीय सन्धियों और समझैते तीसरे पत्र को भी प्रमादित कर सकते हैं।

5. अन्तर्राष्ट्रीय कानून पर प्रमाव : विनित्र सचियों के महत्वपूर्ण प्रावधानों को अन्तर्राष्ट्रीय कानून में भी स्वीकार कर लिया जाता है और वे उसके अग बन जाते हैं !

सन्धियों की रचना एव व्याख्या

(Construction and Interpretation of Treaties)

अन्तर्राष्ट्रीय सन्धियों की रचना का कर सदस्य-राज्यों के दृष्टिकोग एव तस्यों द्वाव निर्मारित होता है। सचिय के तस्य और असिमायों की जातावारी के लिए समय-समय पर चसकी व्याख्या की जाती है। जर्ती समिव की रातें विशेष और सम्बद्धित होती हैं तहीं व्याद्या की कोई आवश्यकता नहीं रहतीं और सम्बद्धित राज्य उन्हें स्वीकार कर तेते हैं है। यदि सचिय के किन्ती प्रावधानों पर कोई सन्देह या उनमें अस्पब्दता होती है तो उसकी व्याख्य की जाती है। अन्तर्राष्ट्रीय कन्तृन में सचियों की व्याख्या के लिए अनेक नियमों का दिवान हुआ है। कुण सचियों में तो व्याख्या के तहीं का री उन्दर्श्य तर दिया जाता है अन्यया मान्य नियमों के अत्यार पर व्याख्या होती है। व्याख्या के कुष्का नियम निम्नितिद्धित हैं—

- 1 सिय के प्रावधानों को साहित्य और व्याकरण के निसमों के अनुसार बनाया जाना चाहिए) पदि सिय की भाषा अस्पट या सन्देहजनक हो तो उसकी सही व्याव्या के लिए आत्परिक और बाह्य परिणानों के मापदान्द्र की सहायरण तो जानी चाहिए। सिया की तर्कपूर्ण अर्थ हैने वाली व्याव्यार्थ ही मान्य हो सकती हैं।

- 2 सन्धि की व्याख्या का उरेश्य उसके रधनाकारों के अनिप्राय का पता समाना है। अटा जब शब्दों की व्याख्या की जाए तो सन्धि के उरेश्य तथा प्रसग को व्यान मे रखना यादिए। सन्धि की व्याख्या समय के अनुकल को जानी घादिए। केवल एक माग को अन्य मार्गों से पथक करके देखना अन्यस्ति है।
- 3 य्याच्या करते समय तकनीकी शब्दों का तकनीकी अर्थ लिया जाए और साधारण राब्दों को सन्धिकराँओं की आकक्षाओं के आधार पर समझा जाए ।
- 4 सन्धि की व्याख्या इस प्रकार की जाए ताकि सम्बन्धित पक्षों की स्वतन्त्रता बनी रहे और उन पर कम से कम दायित प्रदे !
- रहें और उन पर कम से कम दादित पढ़ें ! 5 दो उपयुक्त व्याद्याओं में से उसे प्राथमिकता दी जाए जो सम्बन्धित पक्षों के लिए लायदायक हैं ! सन्धि की व्याद्याओं में की जाए जो सनके किसी बाय को व्यक्तिक किट
- न कर दें।

 6 सन्पि की व्याख्या करते समय उन राजनीतिक एव आर्थिक परिस्थितियों को घ्यान
 में रखना चाहिए जिसके अन्तर्गत सन्धि की गई है।
- 7 अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के मन में सन्धि की व्याख्या करते समय इस तथ्य पर बल दिया जाना चाहिए कि सचि की शतें प्रमावशाली एव उपयोगी सिद्ध हों।
 - व जाना माहिए कि साथ का रात प्रमापराता एवं उपयोगा 8. सचि की खदार दृष्टि से व्याख्या की जानी चाहिए I
- 8 सच्य के। उदार दृष्टि स व्याख्या का जाना चाहर ।
 9 सपि को जिस देश में लागू किया जाये वहाँ के स्थानीय प्रयोग सहयी व्याख्या को स्वीकार किया जाना चाहिए ।
- 10 सचि की न्यायपूर्ण और निकापट व्याख्या की जानी चाहिए ! सन्धि की घाराएँ (Clauses in a Treaty)

प्रत्येक अन्तर्राष्ट्रीय सन्धि में मुख्यत निम्नलिखित बाते होनी धार्डिए-

- 1 मूमिका-इसमें सन्धिकर्ता राज्यों के अध्यक्षों अथवा सरकारों के नाम होते हैं और सन्धि का स्टेश्य तथा सन्धिकराजि के सकत्य का उल्लेख होता है।
 - 2 सन्धि की प्रमुख धाराएँ।
- 3 तकनीकी अथवा औपमारिक विषय या सचि की क्रियानिवि से सम्बन्धित औपमारिक पाराएँ जैसे-लेख की तारीख समय भाषा विधादों का समध्यान, संशोधन, पजीकरण और मूल लेख की रखा आदि।
 - 4 हस्ताव्यर तथा उनके स्थान एव दिनाक को औपधारिक रूप से प्रमाणित करना।
- सन्धि रचना के चरण (Stages in a Treaty)
 - अन्तर्राष्ट्रीय सनियाँ अपनी रचना और क्रियानिति की दृष्टि से अनेक सोपानों मे होकर गुजरती है। इसकी एक लब्बी प्रक्रिया होती है। उचित प्रक्रिया को अपनाने के बाद है। एक सचिव के प्रत्यानों को बायकारी माना जाता है। प्रोप्क्सर स्टार्क ने सन्धियों के प्रमुख चरण निम्नितियित रूप से निगाए हैं—
 - 1 सम्बिकतांकों की नियुक्ति (Accrediting of Negotiators): सिय करने वाले राज्य इस हेतु अपने प्रतिनिधि नियुक्त करते हैं। इन प्रतिनिधियों की शक्तियों का स्पष्टत उल्लेख कर दिया जाता है। राज्य का अध्यक्ष अथवा विदेश मन्त्री सन्धि-वार्ता में माग लेने

दाने प्रतिनिधि को एक अपवारिक लेख प्रदान करता है जिसमें प्रतिनिधि के स्ता और श्रीप्रमें का स्वस्ट उल्लेख होता है। उसे पूर्व शिक्ष्यों का लेख कहा जना है। प्राधिन परस्पत के अनुसार सचिव दर्श करने बाते प्रतिनिधिर को क्याबराधी सम्प्रमेंन्न करने के श्रीप्रमें दो जरी थीं। उस सम्प्र राजा का निर्धाय जिसमा होता था और राजा का प्रतिनिधि होने के नाते सचिवकरों को पूर्व सर्विप्रमें प्रतिनिधित करी था। उस समय परन्यत और समय के प्रीमे सचन थे इसलिए प्रतिनिधि कपनी सरलार से निकट सम्पर्क नहीं रख पार्ट था। इस समय और परिस्थितियाँ बदलने के बनारा अब सिधी में परियोग का गया है। प्रतिनिधित्र के निन्म अनितन नहीं होता और अनुसम्पर्धन दी परस्परा बस्तिविक दन गई है।

3 इस्त्यार (Signatures) प्रतिनिधियें की सहन्ति क बाद एवं सभी क' बन्दिन प्रकार सिंदर है। एक समय की स्थान पर एक-दूसरे की उपस्थित में हस्त्यार एक उन्हें है। सम् प्रतिनिधियें को एक समय की स्थान पर एक-दूसरे की उपस्थित में हस्त्यार करते वहिंदर हिस्स्य हमें के बाद बुध सीयर्ट प्रनावकर बात गाउँ हैं कियु बच्च में सधि करने वाले देगों की व्यत्य विकार्ण के ब्रमुसामर्थन की बादरशकत रहते हैं। सचियों बीं ब्रमुसाम प्राय में हर बार रहते हैं हिन्तु पढ़ रूप्य ब्रोक मस्त्य में रावन साम हुध सीयों के ब्रमुसाम मां से एक प्रतिनिधियें के हस्त्यार होने पर बस्पाई कम साम लाहू कर दिया एता है। एक रूप्य की सहस्य ब्रम्म प्रतिनिधि के हस्त्यार हो एनों के बाद में बिदे सीया की बारिकार का सकती है। एक हान के हिए, समुक्तार की सीनेट ने राष्ट्रपति

सपुकर ज्यं क्रिंगित संपुक्तापुरूष का सदस्य नहीं बन सका या।

4 अनुसमर्थन (Ractification) एक सीचे या क्रिन्सम्य पर इस्टब्स्टर करने कें
बद सचिकर्ण प्रिटिमी एसे कपनी मारवार के अनुसम्यन के लिए रूप्टेश मेरते हैं।
िन सचियों में केंद्रत हरमद्वार पर्यात मनो कर्ते हैं जन पर यह अनुसम्यन केंद्र पंपादीकरा है कर्ग है जिल्लु यह ज्यंच्यादिक्या का कहा सीच पदम का एक स्मृद्धि माम बन गई है। यदि कोई राज्य सचिव या कृतुसम्यंन्न प्रदान न करे रोज्य एउस पीचे सचि की हर्गों से बच्च गर्टी रह सकते। क्रनुसम्यंन्न की हर्गों के सम्बन्ध में दिनित्र सर्ज्य की सादिधानिक प्रक्रियाएँ अलग असग है। यह मुख्यत कार्यचालिका का निर्गय होता है और इसके लिए यह व्यवस्थापिका के दोनो सप्ताने से स्वीकृति प्राप्त करता है। ग्रेट ब्रिटेन का मंत्रियण्डत किसी ग्रीय का अनुवासका करने से यून साद की स्वीकृति लेता है और अमेरिकी राष्ट्रपति सीनेट के दो तिहाई बहुनत का समर्थन प्राप्त करता है। अनुवासमेन सिंध वा अस्पन्त महत्वपूर्ण माग होता है। इसकी विस्तृत व्याख्या के लिए निम्नलिखित सध्य अस्तेवसीय है—

अनुसम्पर्यन का औरिया किसी सिया का अनुसमर्थन कई कारणों से जियत माना जाता है। यह साथ है का जब तक किसी सिया वे ये से के सियान के अनुसार जियत साता हारा सिकार ने किया जात तथा तथा कर कारणे अध्यादिक वैद्या का अमान रहता है। सिया पर हस्ताव्यर करने और अनुसमर्थन करने के बीध कुछ समय रखा जाता है तात जिस पर सती प्रकार विचार किया जा सके। इस कारन ने सास्य और जनमत की राय भी स्पष्ट हात हो जाती है। अनुसमर्थन का औरियर मुस्तिए है क्योंकि-सिल, कुछ कार को जन लेखों पर पुर्विचार का अवसर मिलना चाहिए जिनके हारा जस पर अनेक दायित व्यादे कारी पर पुर्विचार का अवसर मिलना चाहिए जिनके हारा जस पर अनेक दायित व्यादे कारों सा होने का अनुसमर्थ कारों के अनुसार सरकार को सरी बढ़ होने से पूर्व सास्य अध्या जाता का समर्थ कारों के अनुसार सरकार को सरी बढ़ होने से पूर्व सास्य अध्या जाता का समर्थ कारों के अनुसार सरकार को सरी बढ़ होने से पूर्व सास्य अध्या जाता का समर्थ कारों के अनुसार सरकार को सरी बढ़ होने से पूर्व सास्य अध्या जाता का समर्थ के स्वीकार के अनुसार सरकार को सरी बढ़ होने से पूर्व सास्य अध्या जाता का सम्याग होने की प्रतिकार की स्वीकार के स्वीकार कर छन्दे मार्थिय कारों करने के प्रतिकार साथ करने के ति समर्थ कारों करने हिसा साथ करने के ति साथ करने हैं।

अनुसम्बर्गन के दिए समय इस सम्बन्ध में अन्तर्राष्ट्रीय कानुन मीन है। यदि सचिकत्तां एसौं ने कोई समय निर्धारित नहीं किया है तो परस्पर बातचीत द्वारा उपपुक्त समय तय किया जा सकता है। यदि समय बीतने के बाद भी अनुसमर्थन न किया जाए तो सचिव को अस्वीकार समझा जाता है। अधिकाश सचियों में अनुसमर्थन के लिए अपेक्षित समय स्पष्ट कर दिया जाता है।

अनुसमर्थन की अस्वीकृति किसी सन्धि का अनुसमर्थन करना एक राज्य का आवश्यक दायित्व नहीं है। कुछ लेखक मैतिक आधार पर अनुसमर्थन को आवश्यक बताते है किन्तु कन्तृत दिरोपी नैतिक दायित्यें का मून्य आँकना कठिन है। एक राज्य द्वारा इन कारांगों से अनुसामस्त्र अस्रीकार कर दिया जता है प्रतिनिधियों द्वारा उनके अधिकारों का अतिक्रमां प्रतिनिधियों को किसी तब्य के सास्त्रय में जानदृष्टकर बोधे में राज जन सचि का एतन असमन्त्र होना और सचित्र की कुछ हातों के बारे में प्रतिनिधि की असहंसते। व्यवहर में अनुसाम्येन पूर्वत एक राज्य की इच्छा पर निर्मर करता है। ब्रायसी के कथनानुसार अपने पूर्णिक तर्यों द्वारा हस्तास्त्रर की गई सचित्र का अनुसाम्येन करना राज्य का कानृत्ते कथरा नैतिक कर्तव्य नहीं है। यह एक अस्पत्त गनीर करम है और इसे हल्टेपन से नहीं तेन प्रतिरु।

अनुसम्पंत का रूप अन्तर्राष्ट्रीय कातृत हारा अनुसम्पंत वा कोई रूप नियारित नहीं किया गया है। दह व्यक्त अयदा अवस्त किसी भी रूप में दिया जा सकता है। जब एक राज्य अनुसमर्थन किए दिना ही किसी सन्त्रिय को क्रियान्दित करने सत्तरा है तो पर व्यक्त अनुसमर्थन कहा जन्म है। व्यक्त अनुसमर्थन के अन्तर्गत सम्बन्धित राज्य के अव्यक्त और दिदेश मन्त्री के हन्म्यस्य युक्त एक आलेख तैयार किया जन्म है। सनी सम्वन्धित राज्य के अवस्त्र आलेख वो परस्यर आदान प्रदान करते हैं। आलेख में कभी कभी सम्बन्धी सर्विय के अकारस सेत्यब्द कर दिया जाता है और कभी केदस वीक मूनिका सन्त्रिय की स्वस्त्रा सेत्यब्द कर दिया जाता है और कभी केदस वीक मूनिका सन्त्रिय की स्वस्त्रा

और हस्तरूरकर्त प्रतिनिधियों के नाम ही दिए उनते हैं।

अनुसमर्थन आहिक क्षया सहार्य नहीं होता अनुसमर्थन वी प्रकृति के अनुसार यह या हो दिया जएना क्षयत अस्तिक र किया जएना । आहिक क्षयता सहार्य अनुसमर्थन देना क्ष्यंद्रिन है। यद राज्य अनुसमर्थन के समय हिय का रूप बदतने की मेध्य करता है तो यह अनुसमर्थन न देने के समन है। यदि दिए गए सुमार दूसरे प्रकृत को सर्वकार कर दिए ज्याँ हो यह एक नई स्विय हो ज्यापी अनुसमर्थन नहीं होगा। जब सनी प्रकृत एक सन्य को स्विकार कर रहे हैं और कोई विशेष राज्य को अरून सर्वकार कर रहा है तो यह स्थिती कास्त्याज्य बन जाती है। ऐसी स्थिति में सन्य तो अपने पूर्ण रूप मही स्विकार होती है किन्तु वस दिशेष समस्या कर दादित्व सम्वयित राज्य पर नहीं होता।

अनुसमर्थन का आदान प्रदान अनुसमर्थन के लेख पर सन्धि के एमें द्वारा हरनाथर करना त्या में हर लगाना ही उसे बच्चकरी नहीं बना देश हरना उसे या हो किसी निर्देश स्थान पर जना करना पाहिए अबदा सम्बन्धित एसी के बीच उसका आदान प्रदान किया जाना वाहिए।

अनुसमर्थन का प्रमाय अनुसम्भन द्वारा ही एक सीच मान्य बनती है। यदि एक प्रस् सचि को स्टैकर काली और दूसरा एम स्टैकर न करे हो सचि समान्त समझी जारी है। अनुसम्भन ही सोचे को बप्पकरी बनाता है इसलिए अनुसमर्थन के बाद से ही उसे प्रमायशानी माना जाएगा। इस प्रकार से सचि के क्रियान्यमन की दृष्टि से अनुसमर्थन का सर्वाधिक महत्व है।

 कुछ शातों को ही स्वीकार करता है तो यह अभिसामता कही जाती है। प्रो ओपनहीम के मतानुसार दोनों का यह अतर केवल सैद्धातिक है और राज्यों के पारस्परिक व्यवहार मे इसका समर्थन नहीं मिलता। सर अनेंस्ट साटों के कच्यनानुसार आज इन सब्दों के बीच कोई अत्तर नहीं रह गया है।

सिप वार्ती में माग लेने वांले राज्य सहिमलन हारा केवल सभी उसमें शामिल हो सकते हैं जब सर्थिय में एस प्रावस्था हो। कभी कभी सिप में यह व्यवस्था की जाती है कि सहिमल में सार हो सहिमल माने समय हो सर्थना कराई अधील सहिमल माने सार हो कराई अधील सिप के की गई नाटो (NATO) सिप की प्राया 10 में समुक्तराज्य अभीरेका को इस्ती मिन होने के लिए आमंत्रित किया गया था। कभी कभी सहिमलन दिना किसी मिनन्त्रण सामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया था। कभी कभी सहिमलन दिना किसी मिनन्त्रण अधीरेका को इस्ती में हो जाता है। उद्यवहण के तिए समुक्त प्रमुक्त मान्द्रस्था जन सभी सामुक्त स्वावस्था की प्राया थे में उत्तरेख है कि "समुक्त राष्ट्रस्था में सदस्यता जन सभी सामित्रिय राज्यों के लिए खुती हुई है जो स्वीमन चार्टर के सामित्री को स्वीकार करते हैं और इन सामित्री को पूरा करने के लिए इच्छुक साथा प्रीया है।"

जब एक राज्य सहिमितन हारा किसी सचि में शामित होता है तो उसे वे सभी कर्म्य तथा अधिकार प्राप्त हो जाते हैं जो मीतिक सदस्यों को प्राप्त हैं। सहिमितन किसी मी समय समय हैं यह माना जाता है कि सचि के प्रमायसीत होने के बाद सहिमितन हो सकता है किन्तु आज ऐसा कोई नियम नहीं है। अनेक बहुप्तीय अभिसमय सहिमितन की व्यवस्था होने के कारण श्री सार्थक बन पाते हैं।

- 6 सान्य का सागू होना (Coming into Force) सन्यि स्वीकृति से सम्बन्धित सामी औपसारिकताएँ पूरी होने के बाद वह उसी दिन से सागू हो जाती है जिस दिन उस पर हस्ताव्यत किए जाते हैं। ऐसा प्राप्त पर स्वित्यत हैं। हो हा कर अनुसम्बन्धिक करता आवस्यक न हो और अनुसमर्थन करता आवस्यक न हो और अनुसमर्थन करता आवस्यक न हो और अनुसमर्थन करता आवस्यक में एस परित होने पर तागू होती है। ऐसी मी प्रध्यस्य की प्राप्तकी है कि एक राज्य में संधिन के सब लागू किया गाए। एव बर्ची अवस्यक व्यवस्थान हो जाए। सर्थी सागू होने ही आवस्यक सत्तों का सन्धि में उत्तेख कर दिया जाता है। उदाहरण के लिए तोकानों सन्धि (1925) में यह सर्त थी कि सायुस्तम में जनेनी के प्रदेश माने पर ही इस साथि को का प्रिया जाए।
- 7. पारीकरण और प्रकाशन (Registration and Publication) स्तिये के पारीकरण प्रवास प्रकाशन की आदरशकता गुन्द समिन्धी तथा वित्तीय दृष्टिकोणों के कारण अनुमव की गई। शाष्ट्रस्त्राय के प्रीत्मा पत्र की सात 19 में यह कहा गाया था कि "पत्र के सदस्य-पार्थी हारा इसके बाद की गई प्रस्टेक स्त्रीय को अन्तर्राष्ट्रीय साधिवातय में पार्थीकृत किया जाएगा। इस प्रकार पर्योक्त किया जाएगा। इस प्रकार पर्योक्त किया जीरा इसके हारा यसासमय शीध ही प्रकाशित किया जाएगा। इस प्रकार पर्योक्त किए निता कोई सी सार्वीय काव्यक्रानी स्त्रीई हों। "इस प्रवास के अन्तर्यात 1944 तक 4822 सिप्धी एम अस्तर्याद्वीय समझतिरे पर्याकृत किए सार्थ के सार्वीय शी हों। इस प्रकार के सार्वीय शी हों। इस प्रकार काव्यक्र सार्वीय हारा सार्थ के दूसने सार्वाय या पैर सार्थ्यों के साथ की सार्वी शी हानका प्रकार पर्यक्र सार्थ सार्थी सार्थ की सार्थी कुल सार्वीय या पैर सार्थ्यों का सार्वीय के प्रति एक्ट सार्वीय सार्थ की अनुसार सार्वी स्थियों एस सामझीतों

हा स्थित्स्य में पर्यकृत दारत एवं सके प्रवादित वान्य क्रीतार्य हो गाम है। जिन स्थिपों को मार्गकृत नहीं किया गाम कहें नोई मी प्रसावमी में दुवार सकत है। बान के हुए में पूर्व स्थिपों का प्रवास नहीं है। उन्हें विश्वयन्ति के निर खदरताव मान जात है। कार्यकृत स्थिपों को संसुक्त समुद्राय के कियी बात के समुख प्रमानों के स्पार्ट प्रसाद नहीं किया जा सकत है

8. क्रियरिटी (Application) । स्पी क हिन्दे बता में बहिन बता उन्हों क्रियरिटी है। इसके निर् सन्द्रोंट कान बने ताओं के बादूनों में सीच के बादूना परिस्टेंन हिर् कहा है। बन्हों पूर्व सीच समीच्य राजों पर को बच्चित बनाई है उन्हें

राष्ट्रीय कानून के बल यह ही पूछ किया जाता है।

9 स्पे का का . स्पार्क दृष्ट से स्पी क नुष्ट मागनम्बदर, स्पी की हुक सार्कों, स्पी की क्रिन सार्वों क्रीर स्पी पर पूर्णिकवियों के इसकार समितित होंटे हैं।

रूपियों की समावि (Termination of Treaties)

अन्तर्रपूरित स्पीतों अनेव प्रवार से प्रमार्थन बना जाते हैं। दिवारणें द्वारा स्वितें की समादि या प्रमार्थन होने के तर्रासों को दो मार्ग में वर्षांत्रत दिवा गया है, प्रमार दें तर्रोंके जो स्वितर्श राज्य के कार्य से सम्बन्धित है तथा द्वितीय दे तर्रोंके प्रमार्थ कर्यां, कार्य से हिन देन प्रमार्थ मार्ग होने क्षारी स्वितें के कार्यों का सम्बन्धित.

1. चन्न की कराजि (Expiration of time) : एक वर्षित जिरते वारण में निर् की जाते हैं वाले पूज होने पर यह कान्य की जाति । कुछ क्षिपों में यह प्राच्यान पर है कि बहुक घटना के घटने पर यह कान्य होती। जब वह घटना घटनी है हो की कान्य हो जाते हैं।

2. समय पूरा होने पर (Felliment of the Object) : तुम्र समित्यों एक निर्माधि समय हक ही यपिन बानती हैं। यह उनके हुए करने गृह द्वित्य नहीं एके हो समित्री समय हो जाती है। यह समि का स्वय पूरा होने की मित्री है। कलकारीन स्टेर्स के निर्माणी मुन्तिम पर है यह व्यवस्था लगा होती है।

3. परस्पीय स्पीड्रीत हाय (By Methal Consent) : कर्पनिक्रण प्रमृति की स्पीद पराम्पीक स्पीड्रीत हाय सम्पद है जनते है। इसके दिए सम्पद कर से पीपार मी तो जा नहती है। समित की मानित उस सम्पद हो हो जहीं है जर समित के प्तर उसी दौरात के हिए कोई मूर्व समित कर सेने हैं। मानित दस सम्पद हो सम्पद हो जहीं है जर कोई पर समित के क्षानित करने क्षानिकारों का सामा कर देता है।

4. वरस्यवन की घोषण (Despoistion) : स्वीप के बहें को यह व्यक्तिकर है कि दे वरस्यन की घोषण करने सीच के वरने दास्त्री को स्वयंत कर दे 1 हुए घोषण के कर्मात हुए एन निष्के के बुद्धा कर की यह पुरस्त देश है कि दह सीच से चुद्धा है होता सहता है। स्पापात सीच में इसके लिए प्रत्यान होते हैं। वस्त्रीयर्थंप है कि केवन कस्पापी पहुन्ति की स्त्रीयों को है। इस प्रवार कोवल वर सकता है। स्पापति क्या स्त्रीतिक सीचीचों इस प्रवार को होते हैं। अवसायन की घोषणा से सम्बन्धित धारा होती है। कुछ समय के बाद कोई भी राज्य उसे त्याग सकता है। इसके लिए प्राय एक वर्ष की सीमा रखी जाती है। जब किसी सम्बन्ध अवसायन की घोषणा एक के बाद एक पत्त करता घटना जाता है और उसका घालन करने वाले राज्यों की सख्या निरन्तर घटती जाती है तो सन्धि प्रभावहीन बनकर स्वतः समाप्त हो जाती है।

5 आवस्यक रातों का अभाव (Lack of Certain Fiscential Conditions) कुछ समियों में पतों को यह अधिकार दिया जाता है कि मूलमूत परिस्थितियों न रहने पर वे अवसायन की घोषणा कर दें। यदि उन शतों का अनुपालन न हो तो सन्धि समाप्त हो जाएगी।

6 राज्य की समाप्ति (Drssolution of State) यदि द्वि पक्षीय सन्धि करने वाले पर्यों में से कोई भी एक पदा समान्त हो जाए या हार जाए अथवा दूसरे राज्यों में विलीन हो हो लाए तो यह सन्धि समान्त हो जाएगी। उदाहरण के लिए समुक्तराज्य अमेरिका ने ही 605 में द्विपोली के साथ सन्धि की। 1911 में इटली ने द्विपोली का अपने राज्य में बिलय कर लिया। फलता यह सन्धि समान्त हो गई।

- 7 सन्पि की परिस्थितियों में परिवर्तन (Rebus Sic Stantibus) इस सिद्धात के अनुसार जब सन्धि करते समय की परिस्थितियों बदल जाती हैं तो सन्धि समय हो जाती है। प्रस्तेक साध्य में यह एक निहित्त कर्त इसती है कि वह स्थावत परिस्थितियों कर तह है। प्रस्तेक साध्य में यह एक निहित्त कर्त इसती है कि वह स्थावत परिस्थितियों कर तह है। साथ हो की हो कि तह साथ है। यदि किसी कारणवश परिस्थितियों गन्धीर रूप ये बदल जाएँ तो सन्धि प्रमावहींन बन जाएँ गी। कोई भी राज्य इस अप्राय पर सन्धियों के वार्षियों से पुटकारा पा सकता है। परिस्थितियों में इतन गर्मार परिस्थित मा कर्म हो होता है।
- 8 जतरकातीन निरर्धकता (Subsequent Violence) एक सन्धि जिम्रत होते हुए भी कुछ परिस्थितियों में कालान्तर में अनुसित बन तकती है। ये परिस्थितियों में कालान्तर में अनुसित बन तकती है। ये परिस्थितियों हैं—(A) जब एक राज्य को अपन स्वाच्ये के तिवस हो जए तो अन्तर्वाद्धीय करानु के अनुस्था समित्र के दायित्व उत्तराधिकारी राज्य पर नहीं आते। सन्धि अपना कानूनी प्रमाव वो देशी है। (B) जब सित्य के दायित्व को सारपुत करना असम्भव बन जाए तो समित्र अध्येम मानी जाती है। विद्या दिव असम्भवता अस्थायों है तो सन्धि काम्पर परिस्था (C) जब सित्य के एक परिस्था के प्रमाव की स्वाच्य तिवस किए विना ही प्राप्त किया ता सकता हो तो सन्धि अध्येव बन जाती है। (D) यदि सन्धि का चरेष्य (O)bçcl) ही समाया हो जाता है तो सन्धि अध्येव बन जाती है। उदाहरण के तिए यदि सम्बित्य होने होण के बारे में की गई है और वह हीम जुल हो जाता है तो सन्धि
- 9 रह हो जाना (Cancellation) कोई भी समित कुछ विशेष परिस्थितियों में रह की जा सकती है । ये परिस्थितियों इस मक्तर है—(() अन्तर्पाष्ट्रीय कानून प्रमाविशति है अत यह समन है कि एक समित जब की गई थी तह वह अन्तर्पाह्मीय कानून के अनुक्क सी किन्तु कुछ समय बाद असात बन जाए। थिसति की यह असानि सात्रि को एर करने का असार बन सकती है ((()) जह समित्र का एक एक उसानि सात्रि को एर करने का असार बन सकती है (()) जह समित्र का एक एक एक प्रमान के ने प्रमुख की जानी चाहिए। होती है कि वह उसको रह कर दें। यह इच्छा उपयुक्त मनम ने प्रमुख की जानी चाहिए। यदि ऐसा नरी किया गया हो यह अधिकार कि नहां का है। और सम का मान सा

254 राजनय के किसाना

देवा है कि दे सन्तूर्ण स्वीव का बहिकार कर दें। (iii) यदि सचि में क्रमित कियी एक राज्य के स्टर में कन्तर का जन्म है दो वह तमीय रह हो जन्मी। यदि राज्य कमके प्रमुख्य को दे और क्रमित राज्य बन जार दो स्वस्ते मानविव्य सचिय कानव हो जारानी। (iv) यो देवों के बीच मुख शिक्ष जाने पर समझे सचियाँ बहुत कुछ समानव हो जन्मी है।

घोषणाउँ (Declarations)

कोरेनरिन के स्टानुसर घोषण का दुसरा कर्म एकाटीय घोषणाओं से है को दूसरे राजों के करिकरों कीत करोंजों को रहत करती है। ऐसे घोषणाओं में दुइ की घोषण, पुढ़ाना राजों हार प्रतिकृत देनपुत्रों की घोषणा, दूरीय स्तात हरना कर्म ऐसे रहते की घोषणा, इतन्ति को शामित दिया का सकता है। इसका दोन्या कर्म ऐसे घोषणाओं से रिया करता है किनतें कोई राज्य करने करीन के ब्यारतर का सम्बोक्तत एवं के विषय पूरी राजों के समुद्रा इस्टर करता है करवा हुए हिससे पर करने दुरिक्ट प्राथ कर कर के स्थान करता है। इसनें से दूसरे और टीसरे एकर की घोषणाई समिती के सनकर नहीं मानी का सकती।

चार्नुक दीनों प्रशास की घोषाने करी महतानों कर्नारंक्षीय समझीत मही करी. भी और वर्गत क्या कोई साथ या अनिसम्य को मी मोड़ दिया करना था अवता घोषाओं की दिनों कीय या अनिस्त्रय का मान बता दिया करता था। 24 जुल है, 1925 की दर्ज के लाय की वहीं लोगाने की स्थिय के स्थ्य घार घोषाने की गई जिनका सम्या पूर्ण में हुम्मिन सम्योत, न्यापास सह और मानई की दे था। 16 जुलाई, 1926 को देंद्र विदेश और पूर्ण के बीच की जा और मोधानन की स्थिय संस्थान की एक घोषाना संपुक्त की गई। वस्पादिनेत (Authorities) विदेश में कर्न्यक्तिय स्थापनय की यह मानदा सी कि यह घोषा से सम्बिद्ध स्थिय का है प्रशासन है और इस्टिंग् इस्टेंग सम्बद्ध में स्थात विदेश स्थापना के सम्बद्धित स्थापन है और इस्टिंग् इस्टेंग सम्बद्ध में

घोषण एवं का प्रयोग करने की सामग्री हाथ किए गए छोटे मेटे समग्रीते के लिए मी किया जाता है। पूर्व नियद करियाम का सरीपत प्रमीत मंत्री की क्रियानिट ह्या मन्य पासन का निमान करने के लिए ऐसी घोषणाई की जाती है। इनना कनुमार्यक किया में नहीं होता है। मानू 1928 की काल म्हानी घोषणा का कनुमार्यन महि किया या बाती के हेट प्रिटेन की एवं ना के कनुमार प्रमान का कनुमार्यन की किया या बाती के हेट प्रिटेन की एवं ना के कनुमार प्रमान पर कनुमार्यन की स्वार्थ की काल महान्यन की स्वार्थ की काल महान्यन ना होने पर भी वह कालकारी है।

रामझौता (Agreement)

जिस प्रवार 'पोणणा शब्द का प्रयोग वहुं अधी में होता है जसी प्रकार समझीता सब्द भी विभिन्न अपनी में प्रमुक्त दिया जाता है। सामाय अपों में यह दो दिनों के मिदने का प्रतिक माना जाता है। हम तर्म के स्वी से अधिक अन्तर्राचेद्रीय व्यक्तियों (राज्ये) का मितना समझीता होता है। समझीती बायकारी और अस्यध्वकारी दोनों ही प्रकार के होते हैं। मयदित अपों में नमझीता शब्द सम्बन्धित पार्थों को कानूनी अधिकार को स्वत्त होते हो है कि मयदित अपों में समझीता शब्द सम्बन्धित पार्थों को कानूनी अधिकार कम औरपार्थित होता है। समझीता को होता है कि सुध्ये को अध्ये साथ कम औरपार्थित होता है। समियों की मानि समझीता भी राज्य के अध्यक्षी संख्यें अपयोग सरकारों के बीच दिया जा सकता है। सज्य के अध्यक्षी के स्वत्त संख्यें को जा सहस्वार्थों है होते सुध्यें यह समझीत का उत्तहरण ग्रेट हिटेन और सूधीयों वहुं सा समुदार्थ के बीच मां अधीत। 19 जून 1951 को उत्तरी अटलाटिक स्विध के देशों की सेमाओं के स्तर सम्बन्धी समझीता संज्यें की स्वतार्थों के सेसा की सोचाओं के स्तर सम्बन्धी समझीता संज्यें की स्वतार्थों के बीच को समझीत समझीता संज्यें के समझीता है। सा समझीता मां जान कि स्वतार्थों के सीच का मां महुक समझता करता है। समुक्त समझीता संज्यें के स्वतार्थ विभे के सीच क्षा महुक समझता है। समुक्त स्वतार्थों के सीच है। समझता सहक समझता स्वतार्थों के सीच सा प्रकृत को सा सुक्त समझीता समझता समझता सहका सहकार की सहनित हो जाती है। 14 दिसान्य 1946 को समुक्त समस्तर्थों के सीच सा था। 15 दिसान्य 1946 को समझता हुआ था। 15 दिसान्य 1947 को अपुक्तराज्य अमेरिका और समझता हुआ।

सामग्रीते को कभी कभी प्रबन्ध शब्द से भी सभ्योधित किया जा सकता है। यह समग्रीते का ही फ़ासीगी रूपानार है। बुछ विधारकों के मतानुसार प्राव्य को अपेशा सामग्रीता अधिक विधिवत है किन्तु नार औरट सार्टिक के मतानुसार प्राव्य को धिया सी है। सामग्रीते के तिरा कुछ अन्य शब्द भी प्रमुक विश् जाते है। कभी कभी सामग्रीते प्रार्थ है। सामग्रीते के तरिश कुछ अन्य शब्द भी प्रमुक विश् जाते है। कभी कभी सामग्रीते धारा राज्यों के सरकारी विभागों के बीध में सम्प्रत होते हैं। ये अन्तर्विभागीय सामग्रीते अन्तर्राष्ट्रीय कात्र प्रतिभागि भी सामग्रीते भी सम्प्रत होते हैं। उपार्य के सामग्रीते भी सामग्री से भी स्थान स्थान सामग्रीते करने की शांकि देता है विन्तु प्राय ये सामग्रीते किसी सन्धि अन्तर्वार्थ में अन्तर्वार्थ मान्य को सामग्रीते करने की शांकि देता है विन्तु प्राय ये सामग्रीते किसी सन्धि अन्तर्वार्थ में के अन्तर्वार्थीय सामग्रीते करने की शांकि देता है विन्तु प्राय ये सामग्रीते करने की आर्था संस्था सामग्रीते के अन्तर्वार्थ में स्थान क्रान्थिय सामग्रीते करने की अन्तर्वार्थ में स्थान क्रान्थ के अन्तर्वार्थ मान्य सामग्रीते करने की उसने सामग्रीते करने की उसने सामग्रीते की सामग्रीतो की की हता सामग्रीतो की की हता से अन्तर्वार्थीय सामग्रीतो के देता सामग्रीतो की से के के अन्तर्वार्थीय सामग्रीतो के से उसने सम्बन्धित सामग्रीतो की से को के सम्बन्धित सामग्रीतो की हता सम्बन्धित स्थान सम्बन्धित स्थान सम्बन्धित स्थान सम्बन्धित स्थान सम्बन्धित स्थान सम्बन्धित सम्बन्धित सम्बन्धित सम्बन्धित सम्बन्धित स्थान सम्बन्धित सम्

दिदेशाधिकरण (Protocol)

दिदेश पिकरान के अप्रेली कामता प्रोदोकों को लेटिन तथा यूनती मनामी से दिया गया है। इसना मून म्यूं इस ऐसा रिजरत है जिसमें सावनारी अनिवेधों को स्वा गया हो। राजपिक हिन्स ने यह उस रिजरत का प्राप्ति है जिसमें किसी सम्मेल की कार्रदाही का दिवान रखा गया है। यह गब्द दिदेश मन्त्री के सावनारी पत्र-व्यवहर में अपनार जाने वाले प्रितेश राजपिक अनिलेखों, जीत-समियाँ, अनिसमयँ, घोषमामी अनुमार्थों प्राप्ता मंत्री का प्राप्त निरीवत करता है। प्राप्त में यह एक व्यक्तिगा के स्वा में है जिसना कार्य सम्मियत कार्यों को दीवार करता है। प्राप्ति में यह कार्य दिदेश विकान और सचि एवं राज्यिया हिन्सों हात्रा मिनकर सम्प्र हिया जाता है।

सम्प्रते की दृष्टि में विदेश विकास शब्द प्राय ऐसे सम्प्रीतों का घोटक है ऐं सिय या अनिमय की अपेश कम और विकार है है । दर्गना व्यवहार के अनुसार अपेक महत्व वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय सम्प्रीते इसी अपी में रिमिट्स होते हैं एवाइसा के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्वायन्य की स्थापना करने वाला 16 दिसम्बर 1920 का दिदेश विकार अयदा 2 अगर 1943 के वर्षन-मामेलन की कार्यवर्षियों का दिदेश विकार, अपि । अनेक बार यह एवित मना जाता है कि एक बहुम्प्रीय समिय या अनिसमय सम्प्रदित होने के बाद मन, घोषणाई और सम्प्रीते मी मूल आनेख के साथ ही जोड़ दिए जाई तथा सर्वे अनिम दिदेश विकार में अनिलेखित कर दिया जार और उसे सम्प्रीते का माग बना दिया

दिदेग विकरणों इता बहु परीय अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्शित में स्वोधन किया जात है अध्य चनका सनय बढ़ाया जाता है। राष्ट्रस्य का घोषण-पन दिन्न दिदेश विकरणों इति समोपित किया गया। इसी प्रकार द्वि-परीय समियों के साय भी समिय की सरायदा सरीयन या जर्म स्पष्ट करने के लिए दिरोग पिक्ता महाना किया जाता है। 16 जनवी, 1953 को सामाजिक बीमा पर आप्त-दिरस अभितमय के साथ दिदेशायिकराम सलम दिया गया। गीन दिवसों से सम्बन्धित दिरोश पिकराम ग्राम, स्वियों के साथ सलम्म विचा ज्या। गीन दिवसों से सम्बन्धित दिरोश पिकराम है। प्रायः स्वियों के साथ सलम्म विचा ज्या। गीन दिवसों से उन्हें है। 1923 को दर्शी के साथ दी गई लोसने की साथ सिन्न दिवसों पर हिटोश पिकराम सम्बन्ध किया है।

यों या करिया का तिवार प्रकार मन्त्र शिंद की विकार महानी मी कमी-कमी विदेश विकार पर सहानी मी कमी-कमी विदेश विकार पर सहानी मी कमी-कमी विदेश विकार महिला होंगे कि हमाने की ब्याजा के लिए एक सीना को सीनावह करने के लिए सीना-कारोग के बार्य का अनिसंव रहने के लिए साम-कारोग के बार्य का अनिसंव रहने के लिए राजनिक सम्बंदी को पुन स्वानित बाने के लिए एक सीय को जारी पर बीनावी की सीनावी का को प्रमी विदेश की कमी को जारी की लिए दिया विदेश पित हमाने की पर बीनावी के लिए दिया विदेश पर सामने की प्रमी विदेश की सीनावी की सीनावी का सीनावी की सीनाव

सम्पर्को का दिनिमय (Exchange of Notes)

समझैता वरते समय दिदेश मन्त्री औरवादिक सथ से आदर में सम्पूर्ण का दिनिम्य वरते हैं । ये अपनी सरकारों की और से पत्र-व्यवहर करते हैं । अवसी राजनवड़ों की भी इस प्रवार वा अधिकार रोता है। दो राज्यों के बीघ वी गई अधिवास सरियाँ में इसी प्रिप्तेया को अपाया जाता है। सम्पर्ते का विभिन्न करने के लिए पूर्ण सरियार होना अधिवाय गी है और न ही सम्पर्ते के विभिन्न हमेता असुनामनेन का विश्व रोते हैं। बभी बभी अभुभामी अधिवार्य मान लिया जाता है जैसे 15 जनवरी 1923 को जर्मनी और रपेन वे सीच थिए गए सम्पर्ते के विभिन्न पर दोनों पर्यो वा अनुसामधेन जल्ही था।

साम्यर्ज वा विभिम्म सामारणत विश्व वस्तु पर मीलिक विचार दिनमं के बाद विचा जाता है दिन्तु क्रमी हमी यह ऐसे पत्र ध्वस्तार का परिणान होता है जिसमें स्वतार कर पार्टन में हो। सामार्थ्य स्वयाने वह में त्र स्वयाने पत्र दिन स्वयाने पत्र दिन स्वयाने पत्र दिन स्वयाने स्वयाने के सिम्म कर दिमा मान्य है। साम्यर्थ्य के दिन स्वयाने के हिम कर कर में त्र स्वयाने के स्वयान के स

अविप्रतिपत्ति सन्धि

अदिप्रीपिति रापि राजा और पीप के बीच हो। वाले समझैते को कहा जाता है। इसना अदेश्य राज्यीया राज्य में शेमन कैसीतिक चर्च के दियों वी रत्ता करना है। इन समिद्रां वी न्यादिक प्रकृति विवादपूर्ण है। पॉपिसे (Faochile) के मतानुसार आवेप्रतिपति साथि का रूप दसरी साथियों से समता रखता है किन्तु धरेश में धनते किन्न है।

अतिरिक्त धाराएँ (Additional Articles)

अतिरिक्त धाराएँ ये धाराएँ हैं जिन्हें किसी क्षम महत्व के विषय के सम्बन्ध में या एक प्रावणाः की हार्त के रूप में अन्दार्राष्ट्रीय समझीते के साथ सरस्य किया जाता है। इन पर मूल स्थित के साथ हरसायार विष जाते हैं। 9 जातरी 1922 को महत्त्रात्व्य अविरिक्त और वे जुएता के बीध विगिषिद्ध समित्र के शाय अविरिक्त धारा जोड़ी गई जो इस प्रकार थी— 'यह स्वीकार किया जाता है नि इस समित्र की आदाका अथवा क्रियानित्रि के सम्बन्ध में समझता करने शाने प्रकार के साथ अविरक्त करने माने प्रकार किया जाएगा।

कमी कमी अतिरिक्त पारा को परिशिष्ट के रूप में एखा जाता है किन्तु ऐसा कम किया जाता है क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय समझीतों के अधिकाश परिशिष्टों को समझीते का भाग ^{२६}४ *र ननद के तिद्धान*

ही मन एना है इस्तिए इने सलगा किया पान है। अरिश्त पाएर बनी बनी सीय के बाद मी तय की जानी है और कमी सरकारों के सम्बंदों को मी अदिशिक पार बढ़ दिया पान है। ऐसी सिनों में इन पर अनुसामिन ऐचिक है। कमी कमी अरिश्तिक पास्त्री की माम्म इन प्रोस्टों की प्राप्ति अनुपूत्रक अनिसम्दों, मामक्रीमों में दिदेन विकासों के माम्मान में ही पानी है। एवं बनी बक्त पार मामिक सम्बंदों में परिदर्नन किया जाना है से उनके हिए एक अनिक्षित पर स्थान का प्रदेश किया पान है।

अन्तिम अधिनियम (Final Act)

किना क्यि एन प्राप्त हिसी काइत या सम्मेलन का की चित्र दहाया या सिट्स का होना है। इसों एन सम्प्रियों या की नमर्यों का कार्यक्र निर्माशित के साथ एक्सेय होना है। यो को मांचल इसा की कार्नी हैं। इस प्रकार के क्यित्यत पर हान्यद्व करने का क्यां पर कार्न होना के इसने एक्सियों का स्थियों के स्मित्र कर दिया है। इसके किए करना से हान्यदा करण को है। सन् 1899 के होग शासि सम्मेलन में इस कर पर मिद्या निर्माशित करना है कर्यान्त के क्यान्त परिचारों का एक्सेय करने दरने परिचार के क्या कहा एए। एस सम्बद्ध हो क्यान क्ष्मियन कहना एक्सिय साहा गर्म

कीन क्षेत्रिया को एक क्ष्मित्रम या साथि के लिए क्ष्मोणित असराष्ट्रीय सम्मेलन की प्रिज्ञियों का किलेख कहा पर सकता है। इसमें सम्मेलन का परेश्य, इसकी शिट्यों और बाद नित्य के लियों का किलेख दिया है। सम्मेलन में प्रसूत्त प्रस्तानों, किन किलाशिं की सोनाकों का सस्येख किया चाल है। इस यह मार सेन बादे प्रतिविधीं का हतनार होने हैं किल्ल एक के अनुसाधन की कार्यस्तान नहीं होती।

सामान्य अधिनियम (General Act)

साम्य अपियान को एक स्पेश या जीतनय में मुख्य जराग नहीं किया जो सामा 1855 के बहिन सम्मेशन के सामाय अपियान में जिल्हा घोषा को से एक ही परिवर में हिने कर दिया गया को दे इस्टिए एसे सामाय अपियान कहा गया था। इसे हमार 1815 ई की पर नाहेस के जीनम अपियान के परिवर्ग में वह स्थान स्थान की की सामाय की स

प्रामाणिक दिदरण (Process Vebal)

इस पर का प्रयोग कार्यनिकों के अभिवारिक अभिवारि के हिए किया पास है।
भिन्मय पान अपना कर प्रशासिक सम्बोगों के अभिवारे के हिए में इस शब्द का प्रयोग होगा है। किसी कांत्रमाय सासेवन में यूपा शिक्ष्मियों के अधिशत का शुमानिक भिन्मा के नाम से सम्बोगिन किया पास है। यब कसी किसी साथी या अभितार पर अनेक राज्य हरानार करते हैं या अनुसार्य में देरे हैं हो चन कारण हिसी का अभिवारिक अमिलेख तैयार विचा जाता है। प्रामाणिक विवरण और विदेशाधिकरण में बहुत कम अन्तर होता है। धन् 1892 में इस्ती सच्चा रिवट्जरतेण्य के सीच ज्यूरिक में हुए व्याजारिक समझीते को प्रामाणिक विवरण का जटाहरल मा ग्रा जा सकता है। इसके लिए सामान्यत अनुसमर्थन का आदराकता नहीं होती।

अस्थायी प्रणाली

(Modus Vivendi)

अस्यायी तथा प्राविधिक रामधीतों के लिए इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। ये समझौते कुछ समय बाद अधिक रथायी एव दिस्तृत समझौतों में परिवर्तित हो जाते हैं। इ मिं कमी कमी ऐसे समझौते भी शामिक होते हैं जिन पर दोनों पतों ने इस्ताहार किए हीं अपया जिन्हें अभिसाय कहा जा सके किन्तु प्राय सायओं के दिनियम ही इनकी अंगी में आते हैं। अस्यायी प्रणाली पर अपुसामर्थन की आवस्यकता नहीं होती है।

16 अप्रैल 1930 को ग्रेट ब्रिटेन और सोवियत संघ के बीच ऐसा ही अस्थायी समझौता हुआ था।

विशेष समझौते

(Special Agreement)

ये ऐसे समझीते होते हैं जिनमें विवादपूर्ण विषयों को न्यायिक समझौते या प्रय फैरालें
के लिए सीराने की व्यवस्था होती है। अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय की सालिये की मारा 40 (1)
के अनुसार न्यायालय के रामुख ऐसे मामले मस्तुत लिए जा सकते हैं जिनके सबस में
लियेस समझीते के अन्तर्यात विवादपुर्ण विश्यों को म्यायालय के समझ करने को व्यवस्था की गई है। ऐसे विशेष समझौतों में यह भी जल्लेख कर दिया जाता है कि न्यायाजिकरण की निमृति वित्त प्रकार की जाएगी जसे कौन कीन सी सीचारी दी जाएँगी जसका स्थान कही होगा जसते कैंगरती मात्रा का प्रयोग होगा आदि। अन्तर्रालेखी विधि आयोग की तिकारित (1953) के अनुसार पूर्व सामझौते के अनाव में सामनित पत्नों को पच गिर्गय से पूर्ण विशेष समझौता करते समय यह जल्लेख करना चाहिए कि विवाद के विषय न्यायाजिकरण की रचना के तारीन पत्नी को सख्या न्यायिकरण का स्थान आदि व्या होगे। इस समझौते में न्यायाजिकरण पर लगा होने बाते कानून जराकी सिक्यों प्रक्रिया गणपूर्ति

राजनयिक सम्पर्क की भाषा एवं अभिलेखों का रूप

(Language of Diplomatic Intercourse and Forms of Documents)

समी राज्येक इसती में प्रवृक्त मिद्द करने उपने पूर दानां हैं पर तिरोध पान दियां जगा है। राज्येद की नाम कर एक दिनेया मार हेगा है। है एक निक्कता शिक्षाओं शोक्षां आते के मानुकार राज्येकित माम कर रही कि हैं हैं (ह) दह नाम दिन्द प्रमें। राज्येदन अपने दाहाना पान्य आदार में मारे हैं। यह माम मेरिन, प्रेष कपर अपने में से कोई मी है मामते हैं, (ह) दे इस्त अपना दानांग को प्रार्थणनाम से दिनों कार्यों में प्रवृक्त होने जा रहे हैं रहा, दिनाम एक तिमा कर्य होगा है और कर साम्प्रीतिक स्थापनी क किए का प्रमाण प्रदेश हैं (ग) मेरिन या बहुत करन अपने, दिनारे के स्थापनी करने का प्रमाण है (ग) मेरिन या बहुत हुए कहा-मुन सेने हैं, दिन में होगा सम्पर दिनों पूर कड़ीन कर्यों का प्रदार्थन की होगा पानां में स्थापना करने हुए देने हमें का प्रमाण का जाने हो जी का मानुसाण को दूसने का का की प्रमाण निवास की हमें जिनका राज्येकित प्रसाण सी दृष्टि से कम्पन कर्यु कर्य दिकाना है।

राजनीक करहर में मचों का इरदा मान्य है कि बुध दिसाओं से राजना में प्रीतामा में इसे क्षी को नार करने दूर की है। मर कॉन्स मेंट्रो के मानुनार, "पानन सराज राजों के देव कीकरी-मनारों के कादान में बुद्ध कीर सपूर्व का प्रतेन हैं। एपर सामान में नाजनीक मारा (Dylomatic Language) को वर्ष कमार्यों मारा पाकनाय माना करदा नामार्यों काम किया कमाई किया दूरमार में या वर्ष बुटरीरी मारा का द्वीरान नरह है। मानुरीक मारा का मी।

राजनिक भाषा : अंद्रेजी, लेटिन, फ्रेंच (Diphmate Language : Forgish, Latin, French)

अनर्राष्ट्रीय ब्यहर में अवस्थित होन नकतें का विशेष मद हो प्रयोग होता स्ट है--

^{1 &}quot;To record to be such a flow guarded under summer as the distribution of processing and minimized to see sharp things to each other writined becoming generalization or ampoint." —More Med. 4 Ecology.

लेटिन भाषा: यूरोपीय राजनय के प्रारम्य से ही समस्त राजन्यिक क्रियाओं में मुख्यत लेटिन भाषा का प्रयोग दिन्या जाता था। यह न केवल सीतिक विश्वार-दिमां के लिए केरन तिरित समार्थक के दिए भी प्रयोग में ताई जाती थी। वार्तालाप और तिरिद्धत समार्थक के दिए भी प्रयोग में ताई जाती थी। वार्तालाप और तिरिद्धत सम्पर्क के प्रयान स्थान लेटिन भाषा का और दितिय स्थान फ्रेंच भाषा का था। 17वीं जातादी तक सम्पर्धती सार्थिय केरा अपनिद्धित सम्पर्क प्रवाद तिरित्म भाषा के माण्यम से होते थे। उद्यानाय की गई केरटकेदित्या की सार्थिय (1648) का प्रारम्भ की गई केरदकेदित्या की सार्थिय (1648) का प्रारम्भ की शह हातास्थ लेटिन भाषा में की हुए। इसी प्रस्तुत 1674 की औरन-द्वस्त्र स्थान स्थान की सार्थ केरदिन भाषा की सार्थ केरदिन भाषा के एकारिकार 19वीं शताब्दी के स्वताद तक रहा। फ्रेंच भाषा : उत्तरेखनीय है कि 17वीं और 18वीं शताब्दी के ही की इस मार्था क्रमा

फ्रेंच भाषा: उन्तरेखनीय है कि 17वी और 18वी शताब्दी में ही फ्रेंच माचा क्रमत तीटन की समता प्राप्त करती जा रही थी। उच्चारण के लिए 1677-18 की सीद्या फ्रंच माचा में की माई। रुता के चीदन स्मान्न ने सती प्राप्त मिक्स माच्या के मध्यम के रुप फ्रंच भाषा को अपनाया। 18वीं शताब्दी के मध्य तक राजनिक सम्पर्क में फ्रंच माचा के प्रमुख स्थान प्राप्त हो गाया। इसके दो कारण थे—() फ्रेंच भाषा का शब्दकोत साथन था और (त) यह भाषा राजी मूलेपीय देशों में पड़ने लिखने में लोकप्रिय थी। एस्ततासेदेल की कीदेश में क्रेंच माचा को मान्यता प्राप्त हुई। इस समय तक क्रेंच भाषा हसनी लोकप्रिय के गाई थी कि प्रार्थक मुरोपीय राज्य के नागरिक अपनी मात् भाषा के साथ फ्रंच भाषा के राई थी कि प्रार्थक मुरोपीय राज्य के नागरिक अपनी मात् भाषा के साथ फ्रंच भाषा के रो-चार शब्दी का टूटा-फूटा प्रयोग करना प्रश्नतीय समझते थे। सम्मान्त और कुलीन व्यक्तियों के रिस्ट फ्रंप माचा का पर्याप्त क्षान अनिवार्य समझा जाता था। अग्रेयी भाषा : ब्रिटिश साप्राप्त का विस्तार एव क्रिटन के अन्तर्राष्ट्रीय प्रमाव तथा

थ्यापार में वृद्धि होने पर अंग्रेजी माना का ची भाग्योदय होने लगा । ग्रेट ब्रिटेन ने अन्तर्राष्ट्रीय होज में अपना प्रमत्त बढ़ाने के साथ-साथ अग्रेजी भाषा का प्रमाय भी बढ़ाया । इस कार्य में वह काफी सफल हुआ । इस प्रकार अग्रेजी माना का राजनियक सम्पर्क के माध्यम के रूप में प्रभाव 19वीं शताब्दी के आरम्प में हुआ । प्रारम्प में अप्रेजी मुख्यत ऑग्ल-स्कॉटलैण्ड करवानों में प्रथक होती थी। सन 1800 में लॉर्ड ग्रीन बिले ने निदेशी दतों से मिलने तथा प्रजन्माकार करने के लिए फ्रें च भाषा के स्थान पर अंग्रेजी भाषा को अपनाम । उस समय के बाद से अंग्रेजी को पाजनय में क्रमशः महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता गया । लॉर्ड कास्टलरी एवं लॉर्ड कैनिना राजनियक उद्देश्यों के लिए अप्रेजी भाषा के प्रयोग पर जोर देते थे। अप्रेज राजनीतिकों द्वारा विदेशी सम्प्रमुओं को लिखे गए पत्र एवं दूसरे कांगजात मूलतः अंग्रेजी भाषा में होते थे तथा छनके साथ-साथ अन्य भाषा की मान्य प्रतिलिपि सलग्न की जाती थी । संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाठा के विश्व रंगमंच पर आने से राजनीयक सम्पर्कों में अग्रेजी माना का महत्व बढ़ गया । सन् 1919 के पैरिस शान्ति सम्मेलन में अग्रेजी को फ्रेंच भाषा के बराबर का अधिकार मिला। इस सम्मेलन की समस्त सन्धर्यों एव घोषणा-पत्र अपेजी और फ्रेंच भाषाओं में तैयार किया गए । ज्यों-ज्यों एशिया और अफ्रीका महाद्वीपों में ब्रिटेन तथा फ्राँस का प्रमाद बढ़ता गया त्याँ त्याँ राजनयिक सम्पर्क के लिए अप्रेजी और फ्रेंच भाषा अनिवार्य बनती गई । साम्राज्यवादी काल में राजनयिक सम्पर्क के लिए अग्रेजी

राजनिक सम्पर्क की पाया एवं अभिलेखों का रूप 263 Government would feel bound carefully to reconsider their position) तब इसका आराय यह होता है कि मित्रता शत्राम में परिवर्धित हो जाएगी।

4 यदि कोई राजनयड़ा यह कहता है कि 'उसके देश को अपुक विषय में स्वतन्त्र कार्यवाही करने का अधिकार है' (To claim a free hand) तब उसका अर्थ होता है कि राजनियक सम्बन्ध तोड़ दिए जाएँगे अथवा दूसरे पहा की नीति को असफल करने के लिए

समुधित कदम उठाए जाएँगे।

5 यदि राजनयह यह कहता है कि "धरिणामों का उत्तरदायित हम नहीं सेते" तो हसका अर्थ यह लगाया जाता है कि ऐसी घटना उमारी जा सकती है। जिसका परिणाम यह का रूप यारण कर से।

6 जब कभी कोई देश नम्रतापूर्वक निवेदन करके यह स्पष्ट करता है कि अमुक परिपन्न का उत्तर एक निश्चित दिन तथा समय तक मिल जाना चाहिए तो इस कथन का अर्थ दूसरा देश अट्टीनेटन के रूप में तेता है। इसके ठुकराए जाने का परिणाम बहुमा मुद्ध की प्रोचना होती है।

प्राचना होता है। 7 जब सरकार द्वारा यह कहा जाए कि दूसरे राज्य के कार्य को वह अमैत्रीपूर्ण समझती है तो इसका अर्थ होता है कि इस कार्य का परिणाम यद भी हो सकता है।

है तो इसका अर्थ होता है कि इस कार्य का परिणाम युद्ध भी हो सकता है। सक्षिप्त कथनों के लाम (Advantages of Understatements)

सांक्षित कथानी का राजकीय आवरण की दृष्टिर से महत्वपूर्ण स्थान होता है। इनसे कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी शिष्टतापूर्ण एवं सीन्य शावावरण बनता है तथा जन-साधारण में अनावश्यक एतेन्जना मही फैतती। शिष्ट सब्दों में शानिपूर्वक एक राजनश्यक अपनी शरकार के अनैकीपूर्ण शियानों का प्रस्तृत कर देता है। ये सहिष्य कथान शावावरण की एतेन्त्रनार्थण बनने से से केते हैं। ये निकल्सा के बानावार इस स्पत्यक्षता स्थान

को उत्तेजनापूर्ण बनने से रोकते हैं। म्री निकल्सन के मतानुसार इस परम्परागत सचार व्यवस्था का लाम यह है कि इसके द्वारा जो नरम वातावरण तैयार होता है उसमें एक राज्य किना उपीजना के भी मुन्नीर सेवावनी दे देता है। इससे राष्ट्रों को अपनी स्थिति के प्रति अन्य राष्ट्रों की प्रतिक्रिया का भी पता चल जाता है।

सांक्षित कमनों के दोष (Disadvantages of Understalements)
सांक्षित कमनों के अनेक दोष उजागर हुए हैं। इससे सकटपूर्ण रिचलि में भी इस
प्रकार की उत्तिकों सर्वसाधारण को ध्रम में ढाल देती हैं। जनता यह समझने लगती है कि

देश के सामने कोई गम्भीर सकट नहीं है तथा दूसरे राज्यों से उनके राज्य के सम्बन्ध स्तेहपूर्ण और मैत्रीपूर्ण हैं। जनतन्त्र में जनता की यह असास्थानी सतरनाक बन जाती है। सब्दों को तोड़-मरोड़ कर कहने से उनके अर्थ के बारे में मी दुख्यि। उत्पन्न हो जाती है। कहा कुछ जाता है और वास्तव में उसका अर्था कुछ और समझ लिया जाता है। असास्थानी के कारण अनेक अर्थों का अनर्थ हो जाता है।

कहा कुछ जाता है जार पास्त्र ने उपलब्ध क्या कुछ करने के कारण है। के कारण अने क्यों का अगर्थ हो जाता है। पाजनयत्त्रों की भाषा में सक्षिपा कथानों का आधिक्य होने के कारण ही इसे एल और पीखे का कार्य समझा जाने लगा। जिसे हम आम व्यवहार में असरय माणण कहते हैं उसे

घोखे का कार्य समझा जाने सगा । जिसे हम आम व्यवहार में असत्य माषण कहते हैं उस राजनियक व्यवहार में शिष्टता और सौजन्य कहा जाता है । लोकप्रिय कहावत के अनुसार एक राजनयज्ञ सम्मावित कार्य के लिए कहता है अवश्य हो जाएगा और असम्मव कार्य हे हिए कहत है 'हे ज्यूपा किन्तु वह नहीं होगा हकों का प्रयोग करी नहीं करता। यदि करता है तो वह राजनवड़ नहीं है। यह रिण्टत और स्वीदि व्यवहार आजनत अपने महत्त खेते जा रहे हैं। जनता हुगा दिवस नीति के सकलन में अधिक दिक होते होने के करता पर आवस्तक हो गया है कि राजनवारों के हकों और कार्यों में समस्य रहे। जनता पर तो यह दिवस होना परित करता हो होने के स्वीद परित कर रोजने के स्वीद परित कर रोजने के समस्य की स्वाप्त कर से ही होने के समस्य की स्वाप्त के सहा दिवस होना स्वीद परित करता की स्वाप्त की सहा होना स्वीद परित करता की स्वाप्त की स्

स्त्य है कि बावकर सहित क्यन की प्र्या को प्रोड का रहा है और बहिरसे कि चूर्य क्यने का बतन बढ़ता का रहा है। इस परिश्न के औदि पा के सम्बग्ध में दिवाक एकनत नहीं हैं। सहित क्यने की पासता के पदानियों का बहता है कि बरिन्द कर्टु एवं क्लेक्नमूमा मान का प्रदेश द्वारमान्य दोना क्या नहीं है तथा इसके स्वान पर सम्बग्ध एवं एवं क्या स्वार सम्पत्ते हुए क्या के स्टित क्याने के बर्ध से परिष्ट करमा का मानिए कि वह सही सुरक्षी की दूर किया का सहें।

राजनपिक शब्दादली (Diplomatic Phrases)

- 1. सहितेतन (Accession) : अन्तर्रष्ट्रीय सनीयते में महित्तन की एठ पाप में जोड़े दी जाती है तकि सनिय करों में हा निस न होने कमा एक मी बाद में सहमें प्रतिन हो सके ! नियुक्त राष्ट्रसाय के बादी के अन्तर्राष्ट्रीय न्यायत्य के नाय देन शिवक मानान नो साथ के साथ पदस्यों ने सीकार नहीं हिया है हिन्तु जो हात्य दीक समझ्य है यह उपनी स्थिताहरा सके साथ में अविनाद कर सरका है!
- 2. मर्वेक्य (Accord) : कम महत्व के कमार्राष्ट्रीय हिस्सों पर साथि न क्य वर्षे मर्देक्य द्वारा मुक्तक तिया जन्म है। वदाहरण के लिए जन स्वास्थ्य पर मर्देक्य (Accord on public health) कार्ष ।
- ा परमाधितियन (Acte Final) : सम्मेलन या क्रियेन के अन्त में प्राय उन्हीं सम्बा कर्ष्यकी का करेंग दिया जन्ता है। इसमें स्टिश्त केंग्र सम्मेलन की सहसी हरूहरायन क्रियों अने हामित होते हैं।
- 4 बड़ी दिण्यं (4d Referendum); जब किही सीच दर्ज में राजनीक प्रतिनिध प्रस्तादों को स्टीकार कर लेटा है किन्तु उन घर अन्तिम स्टीकृष्टि न देवर अपनी सरकार
 - 1 "Accession is the term on or to the long recognised graduate when his a rate which has not suched a tream man subsequently become a gain to at."

 —See Execut Summ
 - 2 "Final act (Acts Feath is result) a formal expenses or surrour of the proceeding of contents or confirming enoughning the traces or convenient dates to at the result of its delibertures or local develop to be described."——So Francisco.

की स्थीकृति के लिए सुरक्षित रख लेता है तो उसे अग्ने विद्यार्थ कहा जाता है। इस प्रक्रिया से स²या की अन्तिम स्वीकृति का अधिकार हाथ में आ जाता है।

- 5 समनुमोदन (Agreement) जब एक राज्य द्वारा विदेशों में अपना सजदूत नियुक्त किया जाता है तो उसके साम्बय में सम्बयित राज्य की शय अनयिकृत रूप से जान की जाती है। यदि विदेशी शासन को कोई आयति नहीं होती तो सम्बयित व्यक्ति को समन्मोदन प्राप्त समया जाता है।
- 6 राज प्रश्नय (Asylum) जब एक देश के राजनीतिक अपराधी अपने देश से माग यर अन्य देश अथवा वर्षों के दूरावास में शरण से सेते हैं तो उसे राज्य प्रश्नय या राज्य शरण मी कहा जाता है।
- 1 सहचारी (Attache) राजदूत के काम में हाथ बैंटाने के लिए और सुविधा की दृष्टि से विशेष विषयी पर सलाह एवं सहायता देने के लिए विशेष विषयी पर सलाह एवं सहायता देने के लिए विशेष विषयी पर सलाह एवं सहायता देने के लिए विशेष आधापिक कार्यों में सहायता देता है प्रेस सहचारी (Commercia Attache) जो सभावार पत्रों में प्रकाशित सारों का अध्ययन करने एवं पूचन एकत्रिता करने का कार्य करता है। प्रत्येक सहचारी हो सत्येक सहचारी हो सारों का सहचारी हो सारों के सहचारी को उत्यों के अनुवार तमन से सम्मीवित किया जाता है।
- 8 दूतावारा मेरा (Bag) राजदूत द्वारा अपने देश के लिए लिखित प्रतिदेदन तथा अन्य सन्देग मेजे जाते हैं। इनको विशेष सन्देशवाहक द्वारा विशेष कांक के दोते में ते जाया जाता है। इस ठाक येंते को कोई खोत नहीं सकता।जिस दिन यह येदा लाया अथवा ते जाया जाता है जो प्रण्यावारा में ढाक दिसस (Bag Day) कहा जाता है।
- 9 मीढिक अधिकार (Belligerent Rights) मुद्ध में सतान नाज्यों को अन्तर्राष्ट्रीय कानून के अधीन कुछ निरोध अधिकार और कर्ताव्य सीचे जाते हैं । इन्हें टीढिक अधिकार की सड़ार दी जाती है। इन अधिकारों की एक तन्त्री सुधी है। उदाहरणाय मुद्धाप्रहृत राज्य को यह अधिकार होता है कि यह अपने राजु के तदों एव बन्दरगाहों पर धेरा ठाल दे। इस प्रकार यह जावेकन्दी बरके छन्न राज्य से व्यापारिक सम्बन्ध समाप्त कर देशा है।
- 10 सार्यण सस्थि (Captiblations) ये वे सार्थियों है जिनके अन्तर्गत समर्थण की सतें नितित होती हैं। प्राधीनकाल में क्षेत्र हंगाई प्राधीनका में क्षेत्र हंगाई प्राधीनकाल में क्षेत्र हंगाई प्राधीन में सह गए थे। उनके होती की रखा के लिए सीति सम्पन्न हंगाई उन्हों में पे इसीई दाव्यों में में इसीई दाव्यों की प्राधीन में प्राधीन के लिए अधिकार एवं उन्हीं होता प्राधीन वन्तर तरीं। उपराद्धार के दिखाई माई । इस प्रकार को लीपयों को समर्थण माधित (Captublation Treaty) की सम्रा दी माई। उत्तरनुखाद शक्तियों का उपयोग करने वालों को समर्थण माधित थे। (Captublation Treaty) की सम्रा दी माई। उत्तरनुखाद शक्तियों का उपयोग करने वालों को समर्थण माधित थे। (Captublation System) कहा गया।
- 11 युद्ध का कारण (Casus Belli) जब कोई राज्य किसी दूसरे राज्य के विरुद्ध उत्तेजनात्मक रार्यवाही करे और उसके आधार पर दूसरे राज्यों को युद्ध की योषणा करने का न्यायपूर्ण अधिकार प्राप्त हो जाए तो वह युद्ध कारण कहताता है। पामसंटन ने इसे

परिमापित करते हुए उसे ऐसा मामला बताया है जिसके आधार पर युद्ध करना उचित हो। रान 1991 में इराक की हटपर्मिटा की नीति के कारण खाडी यद अपरिहार्य बन गया था।

12. महामन्त्रालय (Chancelleries and Chancery) - प्रारम्प में चाँसलर या महामात्र के सचिदालय को चॉसलरी कहा जाता था। आजवल इसका अर्थ दे मन्त्री तथा कर्मनारी हैं जो दिदेश मीति को नियन्त्रित करते हैं अथदा सम सम्दर्भ में सलाह देते हैं। घाँसलरी किसी राजनियक प्रतिनिधि के कार्यालय को कहा जाता है जिसमें प्रथम द्वितीय

और ततीय स्तर के सचिव तथा अन्य सहायक लिपिक शामिल होते हैं। 13 सम्मेलन और काँग्रेस (Conference and Congress) - अन्तर्राष्ट्रीय कानून की दर्दि से इन दोनों ही शब्दों में कोई अन्तर नहीं है। दोनों का प्रयोग अमेद रूप से किया लाता है। कॉर्येस जब्द सम्मेलन की अपेल अधिक व्यापकता का प्रतीक है अन्यया दौनों

में दिशेष अन्तर नहीं है । दोनों का आयोजन अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर दिधार दिमर्श एव ਕਿਹਾਂਹ ਨੇ ਕਿਹ ਰਿਹਾ ਦਾਨਾ है।

14 कार्यदत (Charge de Affairs) - कार्यदत एक देश के दिदेश दिमाग द्वारा मेजा जाता है और दूसरे देश के दिदेश दिमाग द्वारा परिगृहित किया जाता है। कार्यदूर्तों को राजदरों के समान सम्मान प्राप्त नहीं होता । अन्त कार्य नार सम्मालने के लिए अन्तरिमकालीन कार्यदत नियक्त विष जाते हैं । इसके लिए परिगहनकर्ता राज्य का समनुभोदन प्राप्त करने की आदायकता नहीं होती । जब एक राज्य दसरे राज्य से अपना असन्तीय या रोप प्रकट करता है तो दह लम्दे समय तक अन्तिरमकालीन कार्यद्रत की ही नियक रहने देता है।

15. दिवाधन सदित् (Compromis D' Arbitrage of Compromis) : जब दो राज्य अपने किसी दिवाद को समझौते के लिए साँप देते हैं तो इस समझौते की प्रविचा का जो नियम-पत्र रौयार किया छन्टा है उसे दिदाचन सदित कहते हैं।

16 अदिप्रतिपत्ति सन्धि (Concordat) • जद पीप द्वारा किसी राज्य के सन्प्रम् से

सन्धि की जाती है तो उसे अदिप्रतिपति सन्धि कहा जाता है। 17. अभिसमय (Convention) यह एक कम महत्व की सन्धि होती है जिसे राज्यों

के सम्प्रमुखें के बीव सम्पन्न न किया जाकर शासने द्वारा किया जाता है। 18. राजनविक निकाय (Corps Diplomatic) : विसी राज्य की राज्यानी में रहने दाले दिनित्र देशों के राजदूतादासों के राजनियक कर्मचरियों के समस्त समूह को राजनियक

निकाय कहते हैं। इनका मुखिया दरिष्टरम राजदत होता है और उसे दत दरिष्ठ (Doyen) की सड़ा दी ज़ती है।

19. राष्ट्रों में अथवा स्पष्ट भारा में (Fn Clair) • यदि कोई राजनयिक तार साँकेतिक माषा में न मेजकर सधारन माषा में मेजा जाता है तो इसे रयन्त माषा में मेजा गया तार मानते हैं।

20. कार्यानुमति (Frequatur) : जब एक देश हारा नियुक्त दणिज्य दूत को दहीं के राष्ट्रित अधिकारी द्वारा स्टीकृति प्रदान की जाती है तो उसे कार्यान्त्रीत कहते हैं।

21. प्रत्यर्पण (Extradition) : यह एक एसी सन्ध होती है जिसके अन्तर्गत वर्ड राज्य आपस में यह समझौटा करते हैं कि यदि एक राज्य का अवरची दसरे राज्य में प्रदेश करेगा सो दूसरा राज्य उसे पहले राज्य को लौटा देगा। ये सन्धियाँ राजनीतिक और धार्मिक अपराधियाँ पर लाग नहीं होती।

- 22. पूर्ण शक्ति या पूर्णाभिकार (Full Powers) जब कोई राजनयिक प्रतिनिधि या अन्य अधिकत्ती विश्वी सम्थेतन या काग्रेस में प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजा जाता है हो उसकी सरकार उसे पूर्ण शक्ति प्रतान करती है जिसकें अधीन वह किसी समिय या अभिसमय विशेष पर अपनी सरकार की और से इस्ताअर करने का अधिकारी बन जाता है। इस पूर्ण शिक का कोई निष्टिवत स्वरूप नहीं है।
- 23 गुराष्ट्रप प्रयोग (Good Offices) हो दितेथी राज्यों के जय समझैता कराने के लिए जब सीरारा राज्य दोनों पढ़ों के साथ अपने अपछे सम्बन्धों के कारण दोनों के बीच तन्देशबढ़क का कार्य करता है तो उनके इस कार्य को सुसल्य प्रयोग कहा जाता है। इसमें और मध्यस्थता में यह अनार है कि मध्यस्थता में जध्यस्थ व्यक्ति या शासन को स्वय सचि वातों में माग लेना पड़ता है किन्तु सुसल्यन प्रयोग में ऐसा मही किया जाता।
- 24 निर्माप गमन (Lassez Passer) जब एक राज्य के कर्मचारी राजदीय कार्य से दूसरे देश को जाते हैं तो छक देश के राजदूशवास से उनकी सुविधा हेतु अपने देश के मुगी अधिकारियों के नाम एक सिकारियों पत्र लिखा जाता है ताकि सीमा प्रदेश के समय उसकी ततायों न सी जाए। इस पत्र को व्रिस्थामन पत्र कहा जाता है।
- 25 टिप्पण (Notes) पाजपिक दूत द्वार विजी सासन को तिली है।

 25 टिप्पण (Notes) पाजपिक दूत द्वार विजी सासन को तिली है।
 सन्देश को टिप्पण कहा जाता है। ये टिप्पण तीन प्रकार के होते हैं—(क) सामूहिक टिप्पण
 (Collective Notes)—पत्र किसी दिवस पर अनेक राज्यों के राजनिक प्रतिनिधि समुक्त
 रूप से हरासार करते हैं तो वह सामूहिक टिप्पण कहताता है। प्रकार प्रतिनिधि पर अपने हरताक्षर करता है। इन सभी प्रतिनिधिय को मिताकर सम्बन्धित टिप्पण
 के सम्बन्ध प्रस्तुत किया जाता है। (व) एकस्मान टिप्पण (Idenuc Notes)—ऐसे टिप्पण
 के सन्देश प्रतिनिधियों का एकसा होना आवारक करते हैं किनु जनका प्रारास एक जैसा
 होता हो। उन्हें नित्र नित्र समर्थों पर प्रस्तुत किया जा सकता है। (ग) मीदिक टिप्पण
 (Verbale Notes)—इस टिप्पण पर हस्ताक्षर नहीं किए जाने किया इसके अन्य में सीजन्य
 स्वार्क्त क्रिया जाता है।
- 26 विदेशाधिकरण (Protocol) , प्रारम्म में किसी समझौते के रिकार्ड को विदेशाधिकरण कहा जाता था ! यह सन्िय अथवा अभिसमय से कम औपधारिक था ! आजकल अभेक महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय प्रसरिदाएँ इसी रूप मे तैयार की जाती है !
- 27. प्रतिबंदक (Rapporteur) जब किसी सम्पेलन की समितियाँ अथवा छपसभितियाँ किसी प्रतिनिधि को मूल सम्मेलन में उनका प्रतिदेदन प्रस्तुत करने के लिए

^{1 &}quot;This is one addressed by the representatives of several to a government in regard to some matter in which they have been instructed to make a joint representation. It involves close relations between the powers whose representatives sign it." —Sw Ernest Sation

चुनती हैं तो उसे प्रतिवेदक कहा जाता है। यह अपने नाम के अनुसार मूल सम्मेलन में समिति का प्रतिनिधित्व करता है।

28 क्षेम गमन (Safe Conduct) एक व्यक्ति को ससके देश के शत्रु राज्य में होकर दिना किसी रोक टोक के गमन की सुदिया को क्षेम गमन वहा उपता है। इसे निर्दाय गमन की भी सज्ञा दी उपतो है।

29 अमैत्रीपूर्ण कार्य (Unfriendly Act) जब एक राज्य दूसरे राज्य के कार्य के युद्ध का कारण मनना है तो उस राज्य से अपना दिरोध प्रकट करते हुए स्पष्ट कर देता है कि अमुक कार्य अमैत्रीपूर्ण है।

30 एकपरीय घोषणा (Unilateral Declaration) कमी कमी कुछ राज्य एक सैद्धान्तिक घोषण द्वारा अपने अधिकारियों या नीति की स्थापना करते हैं। इसकी सूचना बाद में अन्य राज्यों को मेजी जाती है।

31 अभिताबाएँ (Vocus) जब दिशी सम्मेलन हारा अपनी सन्धि के साथ गाडी मार्गदर्शन के लिए कुछ स्थिन पेंगे जोड़ दी जाती हैं तो उन्हें अभिलाबा कहा जाता है। 1899 के हेग प्रान्त सम्मेलन ने ऐसी 6 अभिताबाई ब्यूक्त की थीं। सन्धि पर हस्ताव्य करने वाले राज्य इनसे बच्चा नहीं होते क्याँकि आधिर ये अभिलाबाहें हैं होती हैं।

32. राजनियक अस्तस्यता (Diplomatic Illness) ज्य कोई राजदूत अथवा सीय वर्ता करने दाला किसी समा अथवा उत्सव में जाना नहीं चाहता तो वह बैमार होने का इसाम वहा जेना है।

33 स्मराग पत्र (Memorandum) यह रच्यों और उन पर आयारित तर्छे को टिप्पा चेंसा ही येंग होता है। यह टिप्पा से विशेष नित्र नहीं होता है। योगों में अन्तर यह है कि इसके प्रत्या और अन्त में सीज्या पूर्ी शब्दी की अवश्यकता नहीं होती और न है इस पर हताइयों की आवशकता रोजी है।

सम्प्रमुर्जी एव राज्याच्यर्सी के दीय पत्र व्यवहार (Correspondence between Sovereigns and Heads of States)

जब राज्यें के साम्रमु एक दूसरे वो अविकृत रूप से सार्याचित करते हैं त' वे पुरा के लिए Sur My Brother लिखन सास्त्रीत व्यक्ति के साथ सिसत अपने तक सास्त्रय करते हैं। किसी महरानी या साज डी के लिए Madam My Sisted सार्य्या कर प्रत्ये हैं किस करते हैं। किसी महरानी या साज डी कर अपने एक एक एक के तम में महर दत्ता है और अपने नसरद बातों को Majesty Alterse Royale इत्यादि परिवर्ध साम्ये पित करता है और अपने नसरद बातों को Majesty Alterse Royale इत्यादि परिवर्ध साम्ये चित करता है। पत्र का अन्त करते समय मैत्री मूर्ण अभिव्यक्तियों का प्रयोग किया जाता है। पत्र का अन्त करते समय मैत्री मूर्ण अभिव्यक्तियों का प्रयोग किया जाता है। पत्र का अन्त करते समय मैत्री मूर्ण अभिव्यक्तियों का प्रयोग किया जाता है। पत्र का साम्याद की साम्याद

जब सम्प्रदुओं द्वारा नित्ती गाप्तरूप के उच्च्यत के पत्र लिखा जला है ते यह अधिक औं चारिकता एवं सजादट के साथ लिखा जाता है। इसका प्रारम्भ सम्प्रदु के शाम और पद से होता है। सम्प्रमु इस प्रकार के पत्रों का लेखन साधारणत राजदूतों या मन्त्रियों के प्रत्यय पत्र उन्हे वापस बुलाने भूतपूर्व सम्प्रम् की मृत्यू वी घोषणा करने निर्वाचन पर बधाई देने आदि के लिए करते हैं। ऐसे पत्रों के अन्त मे दोनों राज्यों के बीच मित्रतापूर्ण सम्बन्ध बढ़ाने के महत्व पर जोर दिया जाता है। इन पर पाय किसी मन्त्री तारा पनिहस्तामा किए जाते हैं।

राजनयिक पत्र य्यवहार की अमान्यता

(Rejection of Diplomatic Communications)

राजन्यिक सम्पर्क की भाषा के दिवरण में एक उल्लेखनीय बात यह है कि एक राज्य कछ अवसरों पर विशेष कारणों से दसरे राज्य द्वारा भेजे गए पत्रों को अरवीकार कर देता है। वह पत्र में दी गई बातों को बिना कारण बताए ठकरा देता है। इस स्थिति की साहित्यिक व्याख्या करते हुए इसे पत्र प्रेषक को पत्र लौटाना कहा जा सकता है। ऐसे अवसर प्राय कम आते हैं जब किसी राज्य द्वारा दूसरे राज्य की डाक को अमान्य किया जाए। कभी कभी प्रेषित पत्र में आपत्तिजनक भाषा का प्रयोग किया जाता है सो प्राप्तिकर्ता राज्य उसे स्वीकार करने की अपेदा लौटा दें। वा निर्णय लेता है। इस निर्णय की दसरी स्थिति वह है जब किसी पत्र हारा पेचक राज्य ने प्राप्तिकर्ता राज्य के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का प्रयास किया हो । राजनियक इतिहास में पत्र अस्वीकार करने के ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं । सन् 1943 में स्टालिन ने धर्मिल को एक टेलीग्राम भेजा था जिसके रूप और विषय वस्त के आपतिजनक होने के कारण चर्चिल ने उसे स्वीकार करने से मना कर दिया और लन्दन स्थित सोवियत राजदत को एक लिफाफे में रख कर लौटा दिया । सोवियत राजदूत मौनसीर गोसेव (Monvicus Gouv.v) ने इसे पहचानते हुए कहा कि मुझे यह आपको सौंपने के लिए दिया गया है। तब प्रधान मन्त्री ने उत्तर दिया कि ''मैं मित्रतापूर्वक इसे अस्दीकार करता है।"

archill. The Second World War

कुछ महान् राजनयज्ञ : मेटरनिख, कैसल-रे, विस्मार्क, विल्सन, तेलेराँ, के.मेनन, के.एम.पत्रिकर,

राजनयज्ञों की यदलती हुई भूमिका

(Some Great Diplomats Matternich, Castle-reigh, Bismarck, Wilson, Tallaron, K Menon, K M Pannikar, Changing Role of Diplomats)

राजनमञ्ज के दायितों को सायत्र करने के लिए राजनमञ्ज में कुछ दिशेष गुर्गे बा होना वाँग्रनीय है। इसके अमाद में वह अपने कर्तव्यों व दायित्यों का समुचित निर्वाह नहीं कर सकेगा। प्रस्तुत अप्याय में हम कुछ महान् राजनमञ्जों के राजनम और उनकी महत्यपूरी मूनिका पर प्रकाश ढांतेंगे और सम्य ही राजनमञ्जों की बदलती हुई मूनिका को मी देखेंगे। हम इस बात पर भी दिवार करेंगे कि वाँग्रनीय गुर्गों की दृष्टि से राजनमञ्जों के लिए उपपुर्ण परसर्जा करा है।

मेटरनिख (Matternich)

आहिर्रमन चौसलर एक महन् कूटनी तिज्ञ था। वह असमाराग प्रिन्म का धनी था। नेपोतिसन बीनमार्ट को पर्याप्त करने में आहिर्या (आहिर्या हमारी) ने महस्यूर्ग नग्न तिया था अत पूरोप के पुनर्नर्मण के हमतों को तय करने के लिए 1815 में दिया में यूरोपीय राष्ट्री का सम्मेलन हुंग था और आहिर्युत्त चौसलर मेटरनिख ने अपनी वित्रस्मी पाजापिक प्रतिमा से सबको प्रमादित किया था। यह मेटरनिख ही था जिसने आहिर्या को इतना शक्तिशाली बना दिया कि यूरोप में मुन उसका वर्षस्त सम्मित हो गया। कोहिर्या कराये पर 1792 से 1835 तक क्रांसित हम्या और वाज्य था किया पर 1789 की क्रांसित के व्याप्त स्मित्र के सम्मित्र के स्मित्र वित्र के स्मित्र कि स्मित्र के स्मित्य के स्मित्र के स्मित्र के स्मित्र के स्मित्र के स्मित्र के स्म

मेटरनिख का जन्म मई 1773 में आस्ट्रिया के बन्दरेज नगर में हुआ था। उस^{हन} पिता पदित्र रोमन सम्बज्य का उच्चचिकारी और जर्मनी का जनीरदार था। फ्रॉस की क्रानित के साथ आतक राज्य और क्रानितकारी दलों के नृष्टास कार्यों में उससे क्रानित के प्रति असीम पृणा उत्तम्न कर दी थी। बाद में नेपोलियन ने उसके पिता की जागीर ग्रीन ली थी। इन कारणों से वह कट्टर प्रतिक्रियावादी और नेपोलियन का धोर विरोधी बन गया था।

विज्ञा समाप्त करने के बाद 1795 में उसका विवाह आरिट्रया के चौसतर क्रिन्स कॉलिय्ल की पौत्री के साथ हुआ। इस दिवह से उसकी राजनीतिक और सामाजिक प्रतिष्म में दृढि हुई। सन् 1801 से 1806 तक उसने विनित्र देशों में राजदूत के पद पर कार्य किया और वह हन देशों के शासकों व राजनीतिकों के सम्पर्क में आया। सन् 1809 में आरिट्रया का चौसतर (प्रयान मन्त्री) बन गया और 1848 तक उसी पद पर कार्य करता रहा। नेपोलियन की बारट्स पराज्य के बाद मेटानिख यूरोप की राजनीति का सर्वदार्थ बन गया। उसने यूरोपीय राजनीति में इतनी प्रमुख मूनिका निनाई कि 1815 से 1848 तक के यूरोपीय इतिहास का काल 'मेटरनिख युग के नाम से प्रतिक्ष है।

मेदरनिख क्रान्तिकारी भावनाओं का कट्टर रात्रु था । फ्राँस की क्रान्ति के दो महत्वपूर्ण सिद्धान्ती राष्ट्रीयता और प्रजातन्त्र को वह बहुत भयानक रोग समझता था ।

बह प्राय कहा करता था—"क्रांचित एक मयानक और विशाल दैत्य की मौति है जो समस्त सूर्पेव की सामाजिक और राजमीतिक व्यवस्था की मिश्त सकती है।" कैटरिनंथ की दृष्टि में "क्रांचित एक सब्दे हुए दुर्गेचयुक माँस के टुकडे से समान थी जिसको मस्त करने के लिए एक अयन्त गरम और लाल लोहे की आवश्यकता होती है।" मेटरिनंख को क्रांचित से अत्यान चिद्र थी। उसका राजनय इस दिया। १ था कि सम्पूर्ण यूरोप में क्रांचित सं पूर्व की रिथति पुन उत्पन्न करके पुरातन राजमीतिक "व्या की जाए। इस प्रकार से टक क्रांचित का म्यावन दिशीय। महरनित्व आह्रियन सम्मण्य की सुरक्षा करना करना परित्र कर्नाम समझ्या था वह हमी सम्मद्र था एवं प्रमित्ती क्रिय हुना प्रतिपादित सिक्याओं को कुचन दिया एए । नेदरनिव्व जनना था कि आहिद्रमा का सम्मण्य अनेक परियों का उन्मण्य है कीर एमें समझ्या का काना राम्य है कीर एमें समझ्या का काना राम्य है कीर एमें समझ्या का काना राम्य है कीर हो यह करी बदरंग नहीं था कि सर्वसाथ राजना राम्य निक्य कि क्षित्र प्रमान कर है कीर देश के समझ्या को अनित्र के मिल्य की स्थान के लिए मेदरनिव्य में एक ऐसी पढ़िया हमा कि प्रति स्थान के लिए मेदरनिव्य में एक ऐसी पढ़िया हमा कि प्रति स्थान कि स्थान की स्थान कि स्थान कि स्थान की स्थान कि स्थान की स्थान

इस नेटरनिख प्रगारी के दो साथ सन् थे— (1) बन्द्रिय में एक ऐसी खदस्या कायन की एए जिसमें हान्ति के दिवारों का प्रवीर असमय हो एए । मुँके एनंत्री और इटली पर ब्लिट्स्य का प्रमाद था, बट. वर्डे में

इन्टिकारी दिवारों का प्रवार रोका जाए ।

(i) पूरेप के किसी गण में क्रांतिर के सिद्धारों का प्रवर न हो। प्रगरिशेल प्रश्निष्ट कही भी सिर एटडें, तो उन्हें कुचल दिया ज्यार । इस प्रश्निष्ट के लिए नेटरिन्ड ने दिगर नेटेस में पूर्वियोग व्यवस्था की स्थापना कराई । वास्तद में यह व्यवस्था नेटरिज पदलि का एक क्रिनेक जगा थी।

मेटरनिख ने अपने प्रमान मन्त्रिय काल में प्रिणिया और अनुदारत का अनुकार करने की मैं वे अपनई और उसके प्रमाव के कारन आहित्य का साम्राज्य यूरेन ने अन्यत्व महत्वपूर्ण बना माना नित्ती मीति की व्याप्त्य करते हुए उसने एक बार द्वारित्य के प्रमान मन्त्री पानर्टन को लिखा था कि 'हम प्रतिप्तानक नीनी इसलिए अपना रहे हैं कि हमें बननकपी नीति अपनाने के लिए दिशा ना होना पढ़े । इसली यही निर्देश्व घाना है कि सुवार की मीनों को करना राज्य के तिए घाटक होगा।"

चुवार का माण को करना राज्य के लिए घटक होगा।" मेटिनिय का विश्वस था कि गृह मेंचे और विदेश मीचे को पूपक पूपक माँ देया का सकता। एक देश दी घटनाओं का दूसरे देशों पर मद बढ़दा है जट, मिसी देश में पटित घटनाओं को कोई देश दर्शक की मीची नहीं देख सकता। चनके, दर्शने के लिए सक्यों की मोमिनिय कर से हराक्षेत्र करना चारिए।

मेटरिनेख ने सबसे पहली कपनी व्यवस्था को सबसे पहले कपने ही देश में नह किया 1 1815 से 1848 टक रह अनिद्वया का नर्शनिकर नी प्रमान मन्त्री रहा 1 हैं करचे में अनिद्वया में यो सार टुर्म—प्रथम प्रतिस्थ (1835 ई. तेश) और फरिनेन्ड प्रमान (1875 ई. से 1845 ई. तक)। योगी सामये को उससे एक हो मीत्रे का पानन करने वा परानर्स दिया वह थी प्रयासियी (Sizzusquo) बनाए रखने की मीत्रे। इसके अपिता ससीद्रमा कार्य कार्यक्र के स्थार दिसारों के दमन और कट्टेर वियवज्ञ की की नीत्र करनाई। मेटरिनेख एक बहुत दूरदार्थ सामयेना था। उसकी एकमात्र अभिताम भी

नेपोलियन के पतन के बाद यूरोप में कोई भी राजनीतिज्ञ ऐसा नहीं था जो मेटरनिख वी बराबरी कर सकता। अतः विधान काँग्रेस में मेटरनिख ने आस्ट्रिया के गाँरव को बढाया। आस्ट्रिया का यह चाँसलर दियना काँग्रेस का समापति बना । दियना काँग्रेस के निर्णयाँ पर मेटरनिख का सबसे अधिक प्रमाव रहा । नेपे लियन के परामव के बाद भी उसके सिद्धान्तों का भय बना हुआ था । मेटरनिख समझता था कि यदि स्वतन्त्रता समानता और आवृत्व के सिद्धान्तों का बोलबाला रहा तो आस्ट्रिया भी उनसे प्रभावित हो सकता है अत इनके सम्मादित प्रसार को रोकने के लिए उसने दियना काँग्रेस में सब्रिय मुमिका निनाई । निरकुशता और न्याय्यता (Leg (macs) के सिद्धान्त पर बल देते हुए भी उसने यूरोपीय शिं सतुत्रन पर ध्यान रका तथा ऐसी नीति अपनाई कि सभी बड़े राष्ट्रों के स्वार्थों की दथासानव पूर्नि हो सके । मेटरनिख समझता थ कि बड़े राष्ट्रों में एकता बनाए रखने का यही मार्ग है। यह मेटरनिख की ही कूटनीति भी कि प्रांस की शक्ति बहुत हद कर सीनित कर दी गई और आस्ट्रिया तथा प्रांस के बीच ऐसी व्यवस्था कायम की गई कि फ्रांस के क्रॉतिकारी विधार आस्ट्रिया में न घुस सके । मेटरनिख की कूटनीति का ही यह जादू था कि आस्ट्रिया को लोम्बार्डी देनिस और डाबरीस्या मिल गए । यूरोप के अनेक राज्यों की सीमाएँ पूर्ववत् कादम रही प्राचीन राजवशों की पुनरर्थापना की तथा क्षतिग्रस्त राज्यों की हातिपूर्ति की व्यवस्था कराई कस के जार और प्रशा के राजा पर उसका जादू छाया रहा । उसरे जर्मन राज्य का सगठन किया किन्तु संघ का प्रधान आस्ट्रिया के राजा को बनाया गया । वास्तव में नियना काँग्रेस के उदेश्य और निर्णय अधिकाँशत मेटरनिख की बुद्धि की संपन्न थे ।

वियना काँग्रेस के निर्णयों को स्थायित्व प्रदान करने के लिए मेटरनित्व ने सपुक व्यवस्था की स्थायना की। चतुर्मुखी मैत्री को कार्यक्रम मे परियात कर दियाना उसकी ही अद्भुत समत्त थी। सपुक्त ध्वस्था के रूप में एक्त एंफ एक्स है जायर क्रिके वा निर्माण करना चारा था जो यूरोय में रायंत्र क्रान्सि की ज्यालाओं को बुझा दे। इस व्यवस्था के माध्यम से मेटरिनेख ने नेपोलियन के मुखे से जर्जरित यूरोप को शानि। प्रदान करने वी घेष्टा की। यह दूसरी बात है कि उसकी मीति से जो परिदर्तन हुए से स्थायी न रह सके क्योंकि उनमें उदार और राष्ट्रीय मावनाओं का अमाव था किर मी उसे यूरोप में 10 वर्ष तक शामि बनाए रखने से सफलता मिली।

नेपोलियन के मुद्धों से जर्मनी क्षत्र दिवत हो ग्रया था फिर नी दियना काँग्रेस में एसने अपने समर्थकों की सहायता से जर्मनी से 19 राज्यों का एक साम स्थापित किया 1 आहिरण सहाट इसका अध्यत बना 1 इसके साथ ही राज्य साथ में एक समर (Dict) की स्थापना की गई जिसमें जर्मनी के सती राज्यों हारा नियुक्त प्रतिनिधि भाग से सकते थे । यह व्यवस्था मेटरनिख की नीति के ही अनुकृत थी क्योंकि सत्तर सदस्य राज्यों के प्रतिनिध होने के कारण निरकुश शासन और प्रतिक्रियावादी शासन के समर्थक थे । येटरनिख ने हेस व्यवस्था की सहायता से प्रजातन के समर्थकों को करोर दण्ड दित्याकर जनकी भारनाओं को कुचल दिया। उसने 1819 में सत्तर का अधिवेशन दुताकर अपनी इच्छानुङ्गल दमनकारी कानून पारित कराके एन्ट्रेस प्रतिक्रा को कारण शासि से 1849 तक जर्मनी में उपनित्र के कारण शासि से 1849 तक जर्मनी में उपनित्र के समर्थ से जर्मनी के कुछ राज्यों के अतिरिक्त किसी मी राज्य में सोदियानिक शासन स्थापित न हो सका। मेटरनिख की दमनकारी नीति और कूटनिविक चालों से जर्मनी में उपदर्व व आन्दोलन तो मान हो गए दिनेक जर्मन प्रतार आदिया से प्रवार करने तमी में उपदर्व व

मेटरनिख की दमनकारी नीति से जनता ऊपर से शाना हो गई लेकिन मीतर ही मीतर क्रांति की आग सुलाती रही। प्रशा जर्मनी का एक शक्तिशाली राज्य था जो व्यापार और कला कौशल के क्षेत्र में आगे बढ़ा हुआ था। वहाँ मेटरनिख की दमनकारी नीति का प्रयोग विशेष फरहायक करी हो कला.

नेपोलियन की पराजय के बाद 1815 की वियना काँग्रेस ने इटली को किर छोटे छोटे राज्यों में विमक्त कर दिया। अब वहाँ मेदलीख की कूर स्वेच्यावारी और निरृद्धा में ति का मातन स्वाधित हो गया। नजता की राष्ट्रीय मावनाओं को कठोरला खेंक उचला जाने त्या। पिडमीण्ट और नेपन्स में विद्रोह हुए किन्तु मेटलिख ने स्त और प्रमा को अपनी और मिला लिया और ट्रोपो सम्मेलन से अनुमति प्राप्त करके विद्रोहों को कूरतापूर्वक दब दिया। कानिकारियों का करना करके उसने पुन निरृद्धा मातन स्थापित किया तिकन क्रान्तिकारियों की कार्योनित मातक गुन सस्तित उपमा कार्य मुल कप से करती रहि। अवसर निलने पर मोटेना टस्कनी चैल्याना आदि ने मयकर विद्रोह हुए। इटली के अन्य मार्गो में मेटलिख के प्रमाय के कारण शांगिन बनी रही। शर्मी मुन दमन निति के करण आदिद्र्या का सासन इटलीवासियों के लिए असद्धा हो गया। अत आदिऱ्यन फीजों को वहाँ से निकलने के लिए आन्दोलन हुआ जिसे अन्तत मेटलीख दवा न सका।

स्पेन में भी मेटरिनेख राजनय का खेल राष्ट्रवादी मावना को कुबलने का रहा। यूनानियों के स्वातन्त्रय आन्दोलन के विरुद्ध मी मेटरिनेख का घोर प्रतिक्रियवादी स्वव रहा। मेटरिनेख के प्रमाद में आकर ही जार ने यूनानियों की सहायता नहीं की। यूरेण के दूसरे राज्यों ने भी यूनानी जनता के अनेक स्वतन्त्रता संघर्ष में सहायता नहीं दी। मेटरिनेख ने कहा "एधड़व को घाहिए कि वह अपने करें सम्यता के दूसरे से बहुद कर भन्म कर मेटरिनय अपो राम्पूर्ण प्रपान मन्त्रित्वकाल में घोर प्रतिक्रियावादी बना रहा । उसने स्वय को नाद्मीयता और लोकतन्त्र का कहर घाउँ शिद्ध किया। कानियों को कुमलते के लिए और प्रगितिक प्रशृतियों के दमन के लिए उसने पूरोप के देशों के आनतिक मामलों में खुलकर माम दिया। लामना 33 वर्ष तक यह मामूर्ण पूरीप में पुलिस्तिन (Policeman) वी मूमिका वा विवाह करता रहा। जहाँ कहीं क्रांति हुई वह पुरन्त इन्डा लेकर पहुँच गया और क्रान्ति एवं न चे पत्ता को पूरी तरह हवा कर ही वहीं से तीटा। रूस का जार एतंक्ष्येव्हर प्रमाण और क्रान्ति एवं नव चेवाना को पूरी तरह हवा कर ही वहीं से तीटा। रूस का जार एतंक्ष्येव्हर मामले और प्रमा का सम्राद फेंद्रिक आरम्म में उदार मनोवृत्ति के शासक थे किन्तु मेटरिनय के प्रमाव में आरन ये शासक भी एती भी अपुरार हो गए।

सन् 1815 से 1848 तक मेटरनिख क्रांति के तत्वों का दमन करता रहा प्रस्तु 1848 की क्रांतिन में उपकी जड़ें हिला दी । 1848 की क्रांति का समामार सुनकर उसने कहा सा—"में एक पुनान हरीम हूं में मंति प्रकार जाताना हूँ कि साथ शेर आताय दोग में क्या अन्तर है ? यह रोग प्राण पातक है।" उसका कथन तीक ही था। मार्च 1848 में आदिट्या के शामद ने प्रसाद नो साहके "मेटरनिख का गारा दो के नात्वें से गूँजने लगी। आदिट्या के शामद ने प्रसाद कर मेटरनिख को परचतुत कर दिया। उसे जान स्थाने के हिए इस्टिंग्ड मागना पड़ा। इस प्रकार नित्तुत राजसतावादी मेटरनिख का करुणाजनक पनत में प्राणा

जसके कारणिक पतन के बावजूद मी इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह सरकालीन मूरोप का महानतम् राजनीतिहा था। उसके पतन के साथ ही मूरोपीय इतिहास का रह युग समाय हो गया जो दिवस करीय के साथ मारम्म हुआ था। मूरोपीय इतिहास का यह युग मेटराशि युग के नाम से जाना जाता है। इस सम्पूर्ण समय मे मेटरनिख केवल आस्टिया पर ही नहीं चरन समस्त यूरोप पर छाय रहा।

कैसलरे

(Castle-reigh, 1739 1822)

कैसलरे का जन्म 1739 में इस्तेण्ड में हुआ। इस्तेण्ड और आयरतेण्ड के विजय के समय वह इस्तेण्ड की और से आयरतेण्ड के लिए पोक्रेटरी नियुक्त था। रिस्ता आदि देकर आयरतेल्ड के होता को आयरतेल्ड और इस्तेण्ड के एकीलरण के लिए पीक्स करानों में चसका भी डाम था। वह कैमोतिक लोगों को हुछ अस तक धार्मिक स्वतन्त्रता देने के डक में था। यह हुग्छ समय के लिए युद्ध मन्त्री और किर बस्तियों का मन्त्री रहा। सन् 1807 में उत्तरे नेता का मुर्गतेशन्त किया परन्तु उत्तरेण हारा सेना का यह पुनर्निमांग पुरानी सेना के आधार पर ही किया गया था। सन् 1809 ई में उसने अपने पद से त्याग पत्र दे दिया और केनिंग से मुकाबला किया। 1812 ई में वह दिदेशी मन्त्री (Forcign Societary) बन गया और 1822 ई में आत्महत्या करने तक वह इसी पद पर रहा।

कसतरे एक बहुत हो बुद्धिमान व्यक्ति था जिसे काल्यनिक विधार पीखा नहीं दे सकते थे और जो सीचे बात की तह तक पहुँच जाता था। वेकत राजनीतिक दृष्टि से नहीं वरन् व्यक्तिगत रूप में भी वह बड़ा दीर और साहसी था। उत्तमे ही नेपोलियन के किब्द मित्रपार्ट्टी का माठित किया। मुख्यत उसी के प्रयत्नों से 'राष्ट्र्टों का मुख (Baltle of Nauons) आरम्ब हुआ। बाटरत् के मैदान में मेपोलियन को अतिम रूप से पराजित करने में ब्रिटिश सेना का निर्मायक हाथ रहा। पुनश्च नेपेलियन द्वारा आत्म समर्पण भी ब्रिटिश मी सेना के समक्ष ही किया गया। इन घटनाओं से ब्रिटेन की प्रतिष्ठा बहुन बढ़ गई और 1814 ईं मे यूरोग में होने वाले अवनर्पट्टीय सम्मेतन में रुसे वह स्वापनिता जो 1819 में सपुक्तराज्य अमेरिका को प्राप्त हुआ था। ही विद्यारण साठान ने लिखा है—

इन्तेण्ड को ऊँचे स्थान पर पहुँचाने का श्रेय लॉर्ड कैसलरे को है जिसके उच्च आदर्शों ठोस व्यवहार बुद्धि और राजनीतिक कार्यों को करने की ईरवरदस प्रतिमा ने उसे ऐसा करने में समर्थ किया। वड केवल अग्रेजी पार्तियामेंट और मन्त्रिमण्डल के कार्य करने वाले अपने सह कर्मचारियों का ही विश्वास्वात्र नहीं अपितु यूरोप पर के राजनीतिझों की इच्छा सम्मृतियों और विश्वास प्राप्त करने में सञ्चल स्था।

कसतर का यूरोप जाने और मित्र राष्ट्रों की पाजपानियों की यात्रा करने का एकमात्र एरेंग्य हुन चार नदे बड़े राष्ट्रों को सगदित करके नेपेलियन के मुकारते में यहा करना या। साथ ही साथ वह एक ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय सथ की स्थापना करना चाहता था जो यूरेप के राजा मित्री की समुख उपस्थित समस्याओं को सुतझा सके। कैसतरे के दिवार में राष्ट्रों की नैंति में मतमेदों को दूर करने युद्ध में विजय प्राप्त करने और इस प्रकार शांति स्थापित करने के लिए शत्रु के समने सामृद्धिक रूप में उपस्थित होने का सर्वोत्तन वर्ण करे बढ़े रहे राष्ट्रों के प्राप्त निवार्ष में दिवारों का दिश्वस्त और खुता आदान प्रदान था। बैसवी सदी में तो अन्य राष्ट्रों से क्यारी स्थापित करने के लिए कान्त्रकेंसे बुताकर योजगार्थ नामें का विवार कोई नया नहीं प्रतिकृति होता परनु कैसतरे के समय में ऐसा विधार क्रांति माथ देने वाले किसते को विवार कोई साम देश स्था होता समार्थ करने वाले किसते के समय में ऐसा विधार क्रांति माथ देने वाले किसते एक महान् मार्थ से कमत होते परनु कैसतरे के समय में ऐसा विधार क्रांति माथ देने करने कार के समय में ऐसा विधार क्रांति माथ देने कार के क्रांति करने वाले क्रांति करने वाले करने के समय में ऐसा विधार क्रांति माथ देने करने करने करने करने करने के समय से क्रांति कार के क्रांति करने वाले करने करने करने करने हमार करने हमार करने वाले करने करने करने हमार करने करने हमार करने

कैसलरे पार बढ़े बढ़े राष्ट्रों को परस्पर एक दूसरे के निकट लने के छोराय से ही पूरेंप गया था और दो मास के अन्दर अन्दर की गई मार्च 1814 ई की शामोर्ट (Chaumont) की सन्ध जसकी अस्दन्त महत्वपूर्ण और कर बढ़ी मारी सफलता थी। इस सिंध के हारा चारों राष्ट्रों में यूक को तब तक जारी रखने की प्रतिक्षा की जब तक प्रनित्त रासि के हारा चारों राष्ट्रों में यूक को तब तक जारी रखने की प्रतिक्षा की जब तक प्रनित्त रासि के लिए साला महार्ची में से प्रत्येक राष्ट्र में युक्त के लिए साला आप के लिए साला आप के लिए साला आप के लिए साला आप देना भी स्वीकार किया। यह समझीता बैस वर्षों के लिए स्था गया और मित्रार्युंगें ने बीस वर्षों तक फ्राँस के हारा शान्ति के समझती की शार्ती को रोहने का प्रयत्न करने पर सानुष्टिक रूप से यूरोप की और से प्रनेत के विरुद्ध तब्दों का वर्षन

दिया। इस र थि पत्र पर हस्ताक्षर किए जाने के कुछ समय परवात नेपीतियन को फ्रांस के सिहासन से उतार दिया गया और अब पेरिस ने समझीते की बातधीत आरम्म हो गई। वियना कोंग्रेस में इन्हेंग्ड ने आदित्या कस और प्रणा के साम कैनीपूर्ण प्रणिक अस्त

वियना काँग्रेस में इन्लैंग्ड ने आरिट्रया कस और प्रशा के साथ मैत्रीपूर्ण भूमिका अदा की। इस्लैंग्ड को इतने की स्थान पर पहुँचाने का श्रेय बहुत कुछ लॉर्ड कैसतर को ही या। जिसको न केवल ब्रिटिश ससद और मन्त्रिमण्डल का विश्वास प्राप्त था बर्टिक जिसे पूरीप के पाजनीतियाँ का विश्वास प्राप्त का करने में मैं सकतर ने महिला कार्यों कार्यों कार्यों के पाननीतियाँ का विश्वास प्राप्त करने में मी सकतरा मिती। नवन्य 1815 में श्रीति विश्वास ने स्टिश कार्यों के पाननीतियाँ कार्यों कार्यों में विश्वास किसी। इस सबिध की एक छोटी यारा पर वाद विश्वाद के समय कैसतर के अपनी योजना के ज़ियालक करने परे की कार्यों में विश्वास विश्वास किसी की हमस्त करने के विश्व यूरोप के साजनीतियाँ को समय समय पर मिलना चाहिए किन्तु कैसतर ने इस प्रारा का स्वरूप हों यह दिया और शब्दों तथा पानों की दृष्टि से उसी सहुत अधिक निवास दिया। अब धारा का ब्या रूप व न गया—

"इस सानिय को कार्यान्तित करने के कार्य को सरस बनाने और इसकी रक्षा करने के लिए तथा ससार के लिए हितकर खारी पहुंचे के मेल मिलाप को बदाने वाले साबचारों को और भी अधिक पूढ़ करने के लिए इस सानिय में मार रेने शाने पूछा देश कर सीकार करते हैं कि वे नियास समय के बाद सम्मेलन बुलाले रहेगे। अपने सामान्य हितों के बारे में विचार विभाग करने के लिए और समयानुकृत आवश्यक तथा लामदायक करम उठाने के लिए तथा देशों को पुन समृद्ध बनाने एव यूरोप में मानि कायम रखने के लिए सम्मेलनों में या तो इन राष्ट्रों के राजा अध्या उनके प्रतिनिधि माग सेंगे।"

कैसलरे के प्रयानों से सब्धि में प्ले धारा रखी गई वह यूरोप में शानि स्थापित करने की दिया में बड़ी देन थी। इसमें हमें राष्ट्रसार और सयुक्त राष्ट्रसार के धोषणा पत्रों की खलक मिलती है। यूरोप की सब्दुक्त प्रवस्ता की स्थापना मी इसी पार के अधार पर स्थापित हो सब्जी है। यूरोप की सब्दुक्त प्रवस्ता की स्थापना मी इसी पार के अधार पर स्थापित हो सब्जी हो सब्जी कि यूरोप के दियारों के इस सब्धि की धारा के अप्रास पर सामाप्त हो तरह साकार सुंखे हो सब्जी कि यूरोप के दियारों को इस सब्दि की धारा के अप्रास पर सामाप्त हो तरह साकार सुंखे हो स्थाप के अपुत्ता निधान के दिया करें को इस सब्दा के धारा के अपुत्ता राष्ट्र सामाप्त की स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप का प्रवस्त के अपुत्ता निधान के स्थाप के स्थाप का प्रवस्त के प्रवस्त के सुंखे राष्ट्रों से सामाप्त करने की होती थी सब्दा सामाप्त करने की होती थी सब्दा सामाप्त करने की होती थी सब्दी स्थापक करने स्थापन के स्थापन के स्थापन करने स्थापन करने स्थापन के स्थापन करने स्थापन स्यापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्था

278 राजनय के सिद्धान्त

निसंदेह कैसतरे सूरेप म स्थारी हा ते स्थारित करने में तो सरूल नहीं हुआ तथापि उसके सुझव ही रण्ड्राय के सदिया और स्युक्तराष्ट्राय के बार्टर के आधार को। कैसतरों की अध्ययन करने वाली हा है। किसतरों को किसते के किस्ता है। उसकी योग्यता का अनुमान तग्ग्या जा सकता है। कैसतरे की विदेश नीति नम की अपनी पुस्तक में दैक्टर ने कैसतरे को इंग्लैंग्ड के इतिहास में सर्वश्रेष्ठ दिदेश मन्त्री माना है। सीटन यादसन (Seton Watson) ने कैसतरे को इंग्लैंग्ड के इतिहास में सुर विदेश मन्त्रियों में से एक श्रेष्ठ वेश सम्बन्धी के दानों के सार्विदेश मन्त्री कर ही हों। से सुर विदेश मन्त्रियों में से एक श्रेष्ठ वेश सम्बन्धों की दानों वाला दिदेशमन्त्री कहा है।

विस्मार्क (Bismarck)

दिस्तर्क सम्रप्ट दिलियन प्रथम के शासनकाल में जर्मन साम्राज्य का माग्य दिवाता बना रहा और यह कहने में कोई अंदिरयों कि नहीं होगी कि कैसर दिलियम द्वितीय (1888 से 1918 तक) के सत्तरकट होने से पूर्व तक जर्मनी का शासक वास्तरिक रूप से मौसलर दिस्सर्क हो रहा। देश बी गृह और दिदेश नीति के निर्यारण में उसकी सत्ता और महता अमीनिक रही।

सन् 1871 से दिल्लार्क के सन्पूर्ग राजनय का लक्ष्य नदिनित जर्मन साम्राज्य को स्थापित और दृददा प्रदान करना तथा यूरेप में जर्मनी के वर्षस्य को बनए रहना था। जर्मनी का एकिलान करना तथा यूरेप में जर्मनी के वर्षस्य को बनए रहना था। जर्मनी का एकिलान करना कर पूरा कर मुका था और अब जर्मनी एक यून्दा (Sauzzad) राष्ट्र था अतः दिल्लार्क दुव की नीति को जर्मन साम्राज्य के लिए दित्रकर नहीं समझता था। इसलिए अपने शासनकाल में वह यूरेप में शानित बनाए रहने के प्रधानतीत रहा। यहांपी उत्तरी का निर्माण में साहता था। के प्रमीण का एकिकना सिर्माण के लिए सर्पाण नहीं बरिक्त कपन था। दिल्लार्क वाहता था कि पर्मनी का एकिलान सिर्माण में सिर्माण के राजनिक अध्यान दिल्लार्क वाहता था। कि पर्मनी का एकिलान सिर्माण के साम्राज्य के तिए पर्पाण करता सिर्माण के साम्राज्य की सिर्माण के राजनिक विद्यान नेटरिनीख में निर्माण के स्थान प्रधान में सिर्माण के राजनिक विद्यान नेटरिनीख के समान है दिल्लार्क का मी प्रधान यही रहा कि यूरेप में व्यापूर्व सिर्मी वर्ग रहे दह यह भी प्रात्ता था कि यूरेप की शानी मुख्यत्य दो कारों से माम हो सकती है—प्रथम फ्रांस की प्रतिक्षित को मरदान से एड डिलैय स्थान के आदित प्रथम की प्रधान की प्रयत्न से रहा करना है हिल्लार्क वास प्रथम स्थान सिर्मी के निर्माण के स्थान के स्थान स्थान सिर्मीत की रहा था अपने स्थान के स्थान सिर्मीत की स्थान करनी हित्रकी कर स्थान के कराल के अथवा कूटनीत के रह्म रहम प्रधान स्थान सिर्मीत की स्थान सिर्मीत सिर्मीत की स्थान के स्थान स्थान सिर्मीत की स्थान करनी है के स्थान के कराल के अथवा कूटनीत के स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान के स्थान स्थान सिर्मीत की स्थान करनी है स्थान के स्थान स्थान सिर्मीत की स्थान स्थान सिर्मीत की स्थान सिर्मीत सिर्मीत स्थान स्थान सिर्मीत स्थान सिर्मीत स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान सिर्मीत स्थान स्

- शैं सीना दिलार की नीति का परित्याम करके यूरोप में शानित बनाए रखी जाए टाकि जर्मनी का दिघटन न होने पाए और उसे दिकास का अदसर निले।
- ⁹ फ्रॉस को यूरोप के अन्य राज्यों से बिल्कुल अलग किया उन्ए।
- 3 यूरेप में 'स्यापूर्व स्थिति' (Status-quo) बनाए रखी ज्ल्ए।
- 4 जर्ननी को एक महाद्वीप्य (Continental) देश के रूप में प्रस्तुत किया उप सामाज्यवादी देश के रूप में नहीं।

5 इंग्लैण्ड आस्ट्रिया रूस और इटली—इन प्रमुख राज्यों से घनिष्ठता स्थापित की जाए, ताकि यूरोप में शान्ति और व्यवस्था बनाए रखी जा सके ।

6 फ्राँस को आन्तरिक रूप से भी निर्दल बनाए रखा जाए !

7 जर्मन विदेश नीति में पूर्वी समस्या को कोई महत्व न दिया जाए।

8 अल्तेस-लारेन से फ्रॉस का घ्यान इटाने के लिए उत्तरी-अफ्रीका में फ्रॉस की

औपनिवेशिक आकॉंडाओं को प्रोत्साहित किया जाए । अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में जर्मनी को सुदृद्धता प्रदान करने तथा उसका यूरोप में वर्चस्व

स्थापित करने के उपयुक्त उद्देश्यों से प्रेरित होकर बिस्मार्क ने अनेक उल्लेखनीय राजनियक कदम उठाए, जिनमें प्रमुख थे—(1) तीन सम्राटों का सघ (Dreikaiserbund or Three Emperors' League), (2) द्वि गुट निर्माण (Dual Alliance), (3) बर्लिन सन्धि एव तीन सम्राटों के सघ को पनर्जीवन (4) त्रि-गट या त्रि-शब्द सन्धि (Triple Alliance), (5) रूस के साथ मैत्री सम्बन्ध और पनराश्वासन सन्धि (Re-insurance Treaty with Russia). (6) बिस्मार्क इंग्लैण्ड सम्बन्ध के प्रयत्न (7) आस्टिया रूमानिया से मैत्री सन्धि और (8) पूरोपीय महाद्वीप तक सीमित दृष्टिकोण। तीन सम्राटों के सप (1873) के कारण फ्राँस रूस और ऑस्ट्रिया का मित्र बनने में असमर्थ हो गया । यह बिस्मार्क की एक सकल कृटनीतिक चाल थी । प्रो लैंगर के अनुसार तीन सम्राटों का यह सम विस्तृत यूरोप में क्रान्तिकारी आन्दोलनों के दिरुद्ध एक नदीन पवित्र मैत्री (Holy Alliance) थी जबकि एरिख आयक के मत में इसको नदीन पवित्र मैत्री मानना अतिशयोक्ति है।² इस सघ का तात्कालिक स्वरूप जो भी रहा हो। यह बहुत दिनों तक वैसा नहीं रह सका जैसा कि आरम्म में था। 7 अताबर, 1879 को आस्ट्रिया और जर्मनी के बीच जो रसात्मक सन्धि हुई उसे हि-गुट सन्धि कहते हैं। सन्धि पूर्णत गुज रखी गई। वास्तव में यह सन्धि मुख्यतया रूस के विरुद्ध और गीण रूप से फ्राँस के विरुद्ध रक्षात्मक सन्धि थी। बिस्मार्क की नीति से अन्तर्राष्ट्रीय गुट-निर्माण का वह सिलसिला शुरू हुआ जो प्रथम महायुद्ध के आरम्भ तक यूरोपीय कूटनीति के क्षेत्र में अपना विशेष प्रमाव जमाए रहा । 18 जून 1881 को बिस्मार्क के प्रयत्नों से एक बार फिर 'तीन सम्राटों के सघ या त्रि राज्य सघ को पुनर्जीवन मिला । इस सन्धि के सम्पन्न होने पर 1881 तक यूरोप में बिस्मार्क की स्थिति सुदृढ हो गई। सन्धि के तीन तात्कालिक परिणाम स्पष्ट दिखाई दिए—(1) यूरोप के क्रान्तिकारी आन्दोलनों के कर कान सारकात्रक भारतान राज्य विकास विद्यास के प्रतासकार कान्याका के विरुद्ध तीन राजतन्त्रों में एकता स्थापित हो गई (2) आस्ट्रिया एव रूस के शीय शान्ति सुरक्षित हो गई तथा जर्मनी अपने दो पड़ोसियों में से एक का चुनाव करने की कठिन रिथति से बच गया एव (3) रूस तथा फ्राँस के बीच मित्रता की सम्मावना समाप्त हो गई। 1885 87 के 'बलोरियन संकट के समय इस 'त्रि सम्राट् संघ' का अन्त हो गया। 20 मई 1882 को आस्ट्रिया जर्मनी और इटली के बीघ एक सन्धि हुई । इन तीनों देशों के गुट को त्रि-गुट सिंध [Tinple Alliance) कहा गया। यह सिसाई के कुटोबिक कमात का सबसे बड़ा नमूना कहा जा सकता है। इसके हारा दिसाई के कास्ट्रिया और इटली जैसे परस्पर दिलेकी राज्यों को अपना में मिलाए रखा और इस सरह फ्राँस को किसी भी राज्य

William Langer Luropean Alliances and Alignments p 25
 Arich Eych Bismarck and the German Empire, p 191

सन् 1871 से लेकर 18.8) तक बिस्मार्क यूरोपीय राजनीति पर छाया रहा लेकिन इस सम्पूर्ण समय में उसने यूरोप में शान्ति और व्यवस्था बनाए रखने का प्रयत्न किया । दिरमार्क ने कहा था— 'जर्म ही पूर्ण रूप से एक सन्तुष्ट राष्ट्र है । यद्यपि युद्ध द्वारा जर्मनी को राष्ट्रीय एकता और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रधानता मिली है किन्तु यदि जर्मनी पून यद्ध का मार्ग ग्रहण करेगा सो उसकी सारी सफलताएँ नष्ट हो जाएँगी । युद्ध होने से यूरोप की सारी शक्तियाँ सम्मिलित होकर जर्मनी के विरुद्ध खड़ी हो जाएँगी और फलस्वरूप जर्मनी की आन्तरिक सुरह्या भी जो उसके राजनीतिक विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है काफूर हो जाएगी । इसलिए जिस प्रकार कि आस्ट्रिया में 1815 के बाद मेटरनिख की यह नीति थी वि अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति बनी रहे जसी प्रकार 1870 से 1890 तक बिस्मार्क वी भी यही पित रही कि जर्मनी के हित में अन्तर्राष्ट्रीय यथास्थिति (Status quo) बनी रहे । बिस्मार्थ ने विया में संस्थापित शक्ति सन्तुलन में कई बार गड़बड़ की थीं वहीं बिरमार्क अब उस शक्ति सन्तुलन का सरक्षक था जो कानिग्रेज (Koniggratz) और सेडान (Sedan) में स्थापित किया गया था। दिस्मार्क को फ़ौस से डर था अत फ़ौस को कूट ीतिक दृष्टि से अकेला करने के लिए और जर्मनी को सुरक्षित बनाने के लिए बिस्मार्क में कुछ देशों के साथ दिस्तृत कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित किए और यह प्रयत्न किया कि जर्मनी के विरुद्ध किसी भी तरह का कोई गुट न बन सके । जर्मनी की शत्रुता फ्राँस से थी और बिस्मार्क की कूटनीतिक सफलता इसी में थी कि वह फ्राँस को कूटनीतिक रूप से अकेला कर दें । इस दिशा में उसने आस्ट्रिया से प्रगाद मैत्री स्थापित की और इटली को भी अपनी और मिला लिया सथा करा से भी मैत्री कर ती। उपर उसने ब्रिटेन से भी अच्छे सम्बन्ध बनाए रखे । फलस्वरूप बिस्मार्क अपने पतनकाल तक अपने छन छदेश्यों की रक्षा कर सका जो नवी । जर्मन साम्राज्य का घाँसलर बनते समय उसने अपने मन में सजोये थे ।

विस्मार्क ने जर्मनी के तिए एक गुत्धीदार सुरक्षा की व्यवस्था की जिसमें स^{िं}पर्यों और सन्धियों के विरोध में नई सन्धियों थीं। बिस्मार्क ने बड़ी बुद्धिमत्ता से इसका ताना बाना बुना फिर भी वह जानता था कि युद्ध को हमेशा के लिए नहीं रोका जा सकेगा अत उसने जर्मनी की रीनिक शक्ति को खूब बढ़ाया और उसे यूरोप के एक सबसे शक्तिशाली राज्य के रूप में परिणत कर दिया। बिस्मार्क ने अपने पतन के समय तक जर्मनी के प्रमृत्व की रदाा की अपनी सन्धि व्यवस्थाओं का संचालन किया अपने देश के विरुद्ध किसी शिक्तशाली गुट को उमरने नहीं दिया और यूरोप को स्थापित्व देते हुए अपनी पीडी मे शान्ति बनाए

रखी । यह सब कुछ होने पर भी बिस्मार्क की व्यवस्था में कुछ गम्मीर कमियों और दोष थे

जिनका दर्गन निम्नलिखित रूप में किया जा सकता है— जर्मनी आस्ट्रिया और रूस के गुट परस्पर दिरोधी तत्व थे अत रूस जर्मनी से निरन्तर दूर होता गया और आस्ट्रिया तथा रूस में तो मित्रता बनी रहने की बात ही नहीं

धी । (2) बिस्मार्क की व्यवस्था की आधारशिला कमजोर थी। उसने इंग्लैण्ड को उतना

अधिक महत्व नहीं दिया जितना देना चाहिए था। जर्मनी की सुरक्षा व्यवस्था में अथवा

२९२ राजनयं के तिद्धाना

र्ट्सने की मैत्री सन्तियों में इंग्लैंड का कोई स्थान न होना र्ट्सनी के लिए दुर्ग्या तिद्ध हुआ।

(3) दिस्क ने कुछ साथ के लिए प्राप्त का पृथक्षता कर दिया लेकिन उसने न ते प्रांस के होन हो दूर काने की कोशिश की और न उसका निशस्त्रीकरा। ही किया। फ्राँस के सच व्यदहर करने ने बिस्मक ने अदूरदर्शिन स कम किया यदि उसने अस्ट्रिय दी मति प्रांत के सम्यानी सदारता का व्यवहर दिया होता हो सम्मात प्रांत सेहन ही पराजय मूल राजा। दिसाके ने फ्राँस के निरुद्ध सन्दियों का जास खड़ा कर दिया, अट प्रम के में अपने किए मिन्ने की खोप कार्य वहीं मिससे असलेगला एमर्ने की

नुरुसन पहदा । (4) दिस्मार्क ने इटली को अपनी व्यवस्था में साहित स्थान नहीं दिया।

(5) दिम्मानं की सन्धिय सामात्मक थीं लेकिन एक दिस्पेटक दलाला में देनी पर्णे की सुभात्मक सन्धियों का अखना त्मक सन्धियों में परिणय हो जाना स्वामिक था। सन्दिय और मैत्री यूर्विय में पहले मी होती रहती थीं लेकिन निरेत्रकर युद्ध के समय। रान्ति के सनय एक देश के दूसरे देश के निरुद्ध हैयार करना अधह किसी देश की एक ही और निवरीन बनाना विस्माठ ने गुरु किया। परिमान यह हुआ कि विरोधियों ने दिसाठ की सीचमें के निरुद्ध प्रति सीचमें बना ही और इस प्रकार बीसी कान्यी के

प्रसम में यूरेप दो सैनिक पिटितें में निन्नित हो नदा। (6) मुद्र क्टर्नेदि (Secret Dip'ornacy) और मुद्र सन्धर (Secret Alliances) हात दिस्तक ने प्रोप के राजनीतिक दहालरा के कारकारी, अनिश्विलदाओं और

सन्देहें से इर दिया। जब टक दिस्पर्क जानी का बासला रहा सब बुध टीक से बलता रहा लेकिन उत्तरी नीतिये को उत्तर पिकारी मुदाम मार से नहीं चला सके। फल यह हुआ

ी दिसार्क के छात्रे ही सत्तरी व्यवस्या भी छित्र भाग होने सी। दिसाक के सत्तरपितारी उसनी नीरियों का अनुसान नहीं कर राके। इसका विराम यह निकल कि रूस वर्ननी में िपुख हो गया और फ्राँस के घन में युक्त गया। यह दिस्त के ही फ्राँस की एक की बनाई रखने और प्रांस रूस निलान होने देने के सानद ही दुखदादी परान्य ही।

दुडरो दिल्सन

(Il ordrow Wilson, 1913 vI)

हुडरे िल्हन एक मीम्पद्रक्ट और अदरागदी होने हुए मी लिकन के बाद सबसे و على معلى من المنابع المنابع

दिलान राजनीति रास्त्र का प्राच्यानक द्या। अतर्दद दह दिनक द्या। इसने अमेरिकी प्रतासन पर रिद् प्रच लिखे थे। उसने पूर्व किन्तु (0.1 Tectum ni) प्लेटो के दरनिक राम एक भी दर्श के रामुक्त के हत्ते का सामेर था। तिसन दी

में है वह सन्द के साथ अपने उत्तर दिल के योग्द हिन्द हुआ। दिलान शन्ति के राज्या में निश्यम करण था, मार्गादे को दार्ज के राजनद द्वारी

मुनझने का पन्दर था। यह बानानदी था। एव दूसी बार यह राष्ट्रानी चुना गया टर

चरो इस बात की गम्भीर विन्ता थी कि विश्व की ताावपूर्ण स्थिति को देखते हुए अमेरिका को सदस्थता के पायदान पर नहीं रखा जा सकता था। विल्सन शान्ति का समर्थक था। वह अच्छी तरह जानता था वि विश्व युद्ध में अमेरिकी प्रदेश से अमेरिकियों की विद्यारधारा दर्रान एव साहित्य पर युद्धवियता का भारी प्रभाव पडेगा । विल्सन ने अमेरिकी प्रस्तावो को शान्ति के लिए प्रस्तुत किया जिन्हे यूरोपीय शक्तियों ने अस्वीकार कर दिया। अमेरिका ने तटस्थता की घोषणा की । 4 सितम्बर 1914 को काँग्रेस के नाम अपने राजनयिक सन्देश में विल्सन ने कहा कि-- 'यह रिथति हमारे द्वारा निर्मित नहीं है लेकिन यह हमारे सामने है। यह हमें प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है मानो हम उन परिस्थितियों के मागीदार है जिन्होंने इसे जन्म दिया । हम इसका भुगतान करेगे यद्यपि हमने जानवड़कर इसे जन्म नहीं दिया है। ' अमेरिका महायद्ध से अछता नहीं रह सकता था फिर थी 1914 मे कोर्ड अमेरिकी नहीं जानता था कि उन्हें युद्ध में सलग्न होना पड़ेगा । जब जर्मनी की यू बोटों (U Boats) ने अधियन्त्रित युद्ध शुरू कर दिया तो जर्मनी के विरुद्ध अन्तिम शक्तिशाली तटस्थ देश अमेरिका भी युद्ध में प्रविष्ट हो गया । 2 अप्रेल 1917 को विल्सन ने काँग्रेस को अपना प्रसिद्ध सन्देश भेजा जिसमें उसने अपने देश को सलाह दी कि यह यदा में प्रवेश करे और विश्व की लोकतन्त्रीय शक्तियों की रक्षा करे। उक्त स देश में जसने कहा "जिन सिद्धानों को हम हृदय से घाडते हैं उनकी रहार्थ हम अवश्य लड़ेगे। हम लोकतन्त्र की रक्षा करेंगे। हम उन लोगों के अधिकारों की अवश्य रक्षा करेगे जो किसी न्यायपूर्ण सत्ता का आदर करते है और इस प्रकार अनुशासन में रहकर अपने शासन में कुछ अधिकार चाहते हैं। हम सभी छोटे राष्ट्रों के अधिकारों और स्वतन्त्राओं की आवश्यक रक्षा करेगे। हम अवहरा चाहेंगे कि सारे ससार में स्वतन्त्र लोगों को न्यायपर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त रहे जिससे रामी देशों में शान्ति और सरक्षा बनी रहे और इस प्रकार का सारा विश्व स्वतन्त्र रहे । आज अमेरिका के मौमान्य से वह दिन आ गया है जबकि हमारे नागरिक अपना एक और अपनी जिक पन सिद्धान्तों की रक्षार्थ व्यय करेंगे जिनके आधार पर अमेरिका का जन्म हुआ था जिनके आधार पर अमेरिका को सुख और समृद्धि प्राप्त हुई थी तथा वह अमून्य शान्ति प्राप्त हुई जिसे वह अत्यन्त महत्व की दृष्टि से देखता आया है।"

शान्तिप्रिय दिल्सन् विवशं था। अमेरिका के मविष्य के लिए यह अत्यन्त महत्व की बात थी कि उसे ऐसा व्यक्ति राष्ट्रपति के रूप में मिला था जिसने इस युद्ध के आपार को मोक्ष और सुप्रार¹ की सक्षा में परिणत कर दिया। 17 जनवरी 1917 के भाषण का एक

अश उसकी सम्पूर्ण मानवता के प्रति सर्वेदनशील विचारों को अभिव्यक्त करता है—
"दिना किसी पस की विजय के शान्ति प्रत्येक जाति के लिए आत्म निर्णय का सिद्धान्त
सम्पूर्णक व्यवस्था अन्य शुरूर्ण का प्रतिभीतन प्रत्यवाने वाली मुखियों का जनावन तथा

"बिना किसी पक्ष की विजय के शान्ति प्रत्येक जाति के लिए आत्म निर्णय का सिद्धान्त सामुद्रिक स्वतन्त्रता अस्त्र शस्त्रों का परिसीमन चलझाने वाली सन्धियो का उन्मूलन तथा आक्रमण की रोक के लिए सामूहिक सरक्षण की व्यवस्था।"

2 अप्रेत को दिल्सन ने कोंग्स के सामने उपस्थित होकर युद्ध की धोषणा करने की अनुमति मींगी। ''ह्वर महान झालिपूर्ण जनता को युद्ध की ओर—जो सबसे अधिक स्थानक और विध्वसक युद्ध हैं ते जाना मधावमी बात है। सम्पता स्वय भी सकट के महत्व में हुत रही हैं किन्तु न्याय झालि की अधेवा अधिक मृत्यवान है और दम ऐसी चसुओं के लिए लढेंगे जो हमें अत्यधिक प्रिय रही हैं। लोकनन्त्र के लिए, ऐसे लोगों के अधिकारों के लिए को शासन का इसीलिए मान करते हैं कि अपनी सरकार में उनकी सनदाई हो. छोटे राष्ट्रों के अधिकारों और स्दतन्त्रण के लिए लोगों को ऐसे संगठनों द्वारा दिश्व के स्पाप शासन के लिए जो सनी राष्ट्रों को शन्ति और सुरक्षा दिलाए और अन्त में सर्द दिख की स्दतन्त्र इना सके । ऐसे ही त्मेग कार्य को अपना जीदन और अपना सर्दस्य समर्थिन कर सकते हैं। इस अन्यान के साथ कि दह दिन आ गया है जब अमेरिका को अपना राठ और अपनी शक्ति अपने सिद्धानों के लिए जिन्होंने उसे जन्म और सख-शन्ति दी है जिसे स्तने सुरक्षित रखा है खर्च करनी चाहिए यानि ईरदर की क्या रही सो वह इसके अंटिरिक और कुछ कर भी नहीं सकता।"

युद्ध के पश्चान, बाहे दिल्लन को पराज्य का सामना करना पढ़ा हो और बाहे नामनात्र के दास्टिकरादादियों ने उसकी कट् आलोबना की हो। उसका भावन अनेरिकी इटिहास रद राजनीति को मोड देने दाल था। सतक इदय से निकलने वाले शब्द इदने मार्निक थे कि सारा राष्ट्र समझी आदान पर तानाशारी पर प्रजातना की इंदरता पर सन्धना की दिएय के लिए यद में क्द पड़ा। रमद पार के दशों में दह न केदल एक अदिरीय महापुरुष के क्तप में प्रकट हुआ बल्कि एक शिक्साली राष्ट्र के रूप में पहचाना जाने सगा, जो दिख में शनिरिप्रेय सुखद द व्यवस्थित जीवन की रहा के लिए अवतरित हुआ हो।

ਜੇਵਿਜ਼ ਵਰ ਕੀਵੇਟਰ ਨੇ ਬਣੀ ਜੋਂ—"ਬਲਿ ਕਵਿਸ਼ਾਇਨ ਬਲਿ ਬਲਿ ਵਿਜ਼ ਨਿਸੀ ਦਕਾਰਟ या सीमा के यह दवन राष्ट्रच्यक दिलान ने दिया था और राष्ट्र इस दवन की पूर्वि के लिए अदिलम्ब कार्यस्त हो गया । इसके पूर्व की किसी सरकार ने यद में इससे अधिक बदिनानी और कार्यसम्ता नहीं दिखलाई थीं । इसके पूर्व कमरिका बासियों ने भी ऐसी स्टू^{न्ड} राधन-रामकरा और अदिकार रहि दा प्रमादहारी प्रदर्शन नहीं किया था। विना दिल्य की शन्ति युद्ध का नात बन गया था। ¹

युख-दियम सन्धि के परवान दिल्लन जब अपने सचिव की सलाई न मानकर दिरान्य, 1918 में पेरिस शन्ति सम्मलन में पहुँदा हो ससला 'शन्ति के मसीहा' के रूप में स्वाग्रत हुआ। यूरेप में एस समय यह मादन दिएमान थी कि केदल दिल्सन ही ऐसा व्यक्ति है जो दिनित्र राष्ट्रों के राग द्वेष और उनकी ईव्यं-मावना से स्पर उठा हुआ एवं मानदहां का सक है। वट एवं यह दर्शनिक राज कपने तिहानों की पुलिक हम में लेकर चैनिक रकि से लैन सन्धि दी रतें निर्धारत करने काय हो मूरेप के लगे देरों में उतका अपूरपूर्व स्वागत हुआ। जब वह पेरिम पहुँचा ता प्रासीनी एसे देखकर आनन्द-दिनीर ही सर्वे । सडको पर अपर एन सनूही ने समझी स्तृति की और अखरारों ने ससके पुना न हिए। बन्दव में समी वी ऑडें चरवी क्षेत्र लगे थी। दिल्यी न्याय ही विकित दया ही और समान्य जन शकि ही आश हरते हैं।

मिलन इस सम्मेलन ने शामि का दीप बनकर आया था 1 वह नहीं चहता था कि मेरिस सम्मेलन 1815 के वियम बाँदेन समें निहित स्टार्यों का गढ़ बन साह ।

- । द्वी दावने स्ट्री दस्ट 🚁 र
- 2. रेस्टरक्योरक्टरक्टर १९१८मा एक स्टेस्टर्स्टरक कुट वर्गा । १. टेरिस एड क्टेंटर कुट स्टूट स्टूट स्टूटर वृद्ध

प्रिन्सटन में राजनीति दर्शन का यह भूतपूर्व प्रोपेसर एक प्रतिमाशाली वक्ता तथा आदर्शवादी विधारक था । वह कठोर विश्वासों का व्यक्ति था जिसमें राजनीतिक दुरदर्शिता तो ज्ञा कोटि की थी. लेकिन इतनी कट तिक योग्यता नहीं थी कि वह अन्य प्रतिनिधियों को पराजित राष्टों के साथ जहार व्यवहार के लिए तैयार कर सके। स्टेज़र्ड बेकर के शब्दों में "जिस किसी ने भी पसको (विल्सन को) काम करते देखा उसकी कभी हिम्मत नहीं हुई कि वह दिल्सन के रामक्ष अथवा उसकी पीठ पीछे निन्दा करने का साहस करता।" विल्सन का यह विश्वास था कि राष्ट्रसंघ की स्थापना से ही मानव जाति की रक्षा हो सकती है अस वह इसे सब शान्ति सन्धियों का अनिवार्य अग बनाना घाहता था । किन्त वह मानसिक दृष्टि से लॉयड जॉर्ज तथा क्लेमेसो के समान कुशाय नहीं था और अपने पूर्व किर्पारित विवारों पर विशेष रूप से भरोसा रखता था अत वह कूटनीति के क्षेत्र मे और राजनीतिक सौदेशजी के नी सिखिया के रूप में सिद्ध हुआ । उसके आदर्शवाद और राष्ट्रसंघ की स्थापना के अत्यधिक उत्साह का दूसरे देशों ने पूरा लाम उवाया। अन्य देश राष्ट्रसाध के निर्माण की बात मान ले इसके लिए विल्सन सब कुछ त्यागने के लिए तैयार था यहाँ तक कि राष्ट्रसच के लिए वह अपने 14 सूत्रों के अनेक सिद्धान्तों की अवहेलना करने के लिए भी तैयार हो गया। पाल बर्डसल (Pal Birdsall) के कथनानुसार वह हातिपूर्ति की समस्या के अतिरिक्त अ य प्रश्नों पर ब्रिटेन फ्राँस और जापान विल्सन से राष्ट्रसंघ के नाम पर प्राय अपनी अधिकाँश बाते सनवाने में सफल हुआ। घीनी जनता द्वारा बास हुआ शाण्दुङग का प्रदेश विल्सन के आत्म निर्णय के सिद्धान्त के आधार पर धी । को मिलन भाहिए था किन्तु विल्सन ने राष्ट्रसध की स्थापना के लिए अन्य महाशक्तियों का सहयोग प्राप्त करने की इच्छा से इसे जापान को देने का निर्णय किया। यह निर्णय स्वयमेव विल्सा द्वारा अपने सिद्धान्तों पर कुठारधात था । फिर भी पेरिस सम्मेलन मे यदि पराजितों के साथ थोड़ी नरनी बरती गई तो वह विल्सन के कारण ही । इसमें कोई सन्देह नहीं कि यदि विल्सन सम्मेलन में न होता तो लॉयड जॉर्ज और क्लेमेसो न जाने क्या से क्या कर देते।

286 राजनय के सिद्धान्त

विल्सन ही उनकी असीम आकॉझाओं पर अकुश लगाता रहा । यदि विल्सन न होता हो फ्राँस जर्मनी का नामोनिशान मिटाकर ही दम लेता ।

दिल्सन के दो चरेरच थे प्रथम न्यावपूर्ण समझौता जिसके अनुसार आल निर्णय के सिद्धान्त पर राष्ट्रों की सीमाओं का निर्यारण हो ताकि परस्पर शास्ति स्थारित हो रके । हितीय राष्ट्रसाय की स्थापना । पहले चरेरच में दह सकल नहीं हुआ क्योंकि जो शास्ति हो निर्मय के आधार पर या समझौता वार्ता की शासित । परन्तु जसे दूसरे चरेरच में सफलता प्रान्त हुई । राष्ट्रों के साथ का विचार मैलिक नहीं था और कई देतों में कई लोगों ने इस विचार को स्पप्ट करने में योगदान दिया था किन्तु जिस राष्ट्रसाय (League of Nauons) की असिम रूप से स्थापना की गई थी वह विचान की ही सुष्टि थी और उसके आदर्शों का मन्दिर था। ।

कुछ विद्वानों का विचार है कि विल्सन ने स्वय पेरिस में आकर एक मारी मूल की 1 यदि वह वारिमादन में रहकर ही अमेरिकन प्रतिनिधियों को आदेश देता रहता तो बहुत सम्मव था कि उसका प्रनाद अधिक व्यापक होता, पर विल्सन को सार्वाधिक विद्या राष्ट्रप्रध की थी और उसकी अमेरिका थी कि विश्व सस्या के विधान का निर्माण वह स्वय करें । लेकिन अमेरिकन सीनेट ने विल्सन के राष्ट्रसम् की सदस्यता के प्रस्ताद को नहीं माना । सन् 1918 में काँग्रेस के मुनावों में विल्सन विरोधी रिपस्तिकन दल को काँग्रेस के दोनों सदनों में बहुनत प्राप्त हो गया और सीनेट ने राष्ट्रसम् के विधान एव वसाँध की साधि को सीकार करने के मसदिदे को रह कर दिया । यह मानवता के एक महान् पैगन्द का द वस्तम परानव सा

तेलेराँ

(Tallaron 1754 1838)

फ्राँस में उत्पन्न अप्रणी चतुर व्यक्तियों में तेलेरों का स्थान प्रयम पिक में लिया जाता है। वह अन्तिकाल (1788 99) में बहुधर्षित प्रमुख व्यक्तित्व था। वह नेपोलियन के राज्य में तथा सम्राट के आतीन होने पर किसी न किसी पद पर काम करता ही रहा। वह समस्व वर्ग का था और चर्च का सदस मी था। एवं तिकार ने जिस निष्यरता से 1789 के पदासीन । दिसों का मूल्य कन किया है उनमें से केवल 15 को उसने सदाशारी धर्मियावारीयों में गिनाया है और रेहन अप्रित तथा तेलेरों रेसे वहें बढ़े धर्मियावरीयों में गिनाया है और रेहन अप्रित तथा तेलेरों रेसे वहें बढ़े धर्मियावरीयों में गिनाया है और रेहन अप्रित तथा तेलेरों रेसे वहें बढ़े धर्मियावरीयों की उसने निव्य की है। अनेक निव्यम लेखकी ने एवं तिकार के मूल्योंकन से सहमित व्यक्त की है।

तेतेरों बहुत बतुर और बत्तक व्यक्ति था राजनय का कुगात खिताड़ी था और परिस्थित्यों के अनुसार बाताड़ी से अपनी स्विनिमित्त बदत तेता था। वह अवसरवादी राजनय में दिशास करता था। अभिताकत ने राष्ट्रीय समा (नेरानत असेस्त्ती) के निर्मा के बाद जब 19 जून । ५७ को पार्टीयों ने ट्रारिय स्टेट के साथ मेर जाने वा फिसता किया ते आर्क विराध तेतेरों ने क्रान्दित को अपने पक्ष में मंडने का असकल प्रयास किया। में बादकुण प्रणास निर्मा हो बादकुण प्रणास किया।

। डेक्स्पते दरिष्टृभः

"19 जून को उग्र विधार दिसर्श के बाद पादरियों ने 137 के विरुद्ध 149 के बहमत से जिनमें छ बिराप एव आर्क बिराप थे जन साधारण के साथ बैठने का फैसला किया। 19 जुन क्रान्ति के इतिहास की निर्णायक तिथि कही जा सकती है क्योंकि इसी दिन पादरियों ने क्रान्ति की और मुड़ने वाला ऐतिहासिक कदम चठाया । कुलीनों में अमी भी प्रतिक्रियावादी तत्वों का प्रभाव अधिक था लेकिन उनमे फैली अव्यवस्था और फूट स्पष्ट होने लगी थी। एक दूसरे को घेतावनियाँ और धमकियाँ दी गई और कुछ ने अपनी म्यानों से तलवारे तक निकाल लीं। इस तनावपूर्ण स्थिति मे आर्क विशय तेलेरों ने क्रान्ति को अपने पक्ष में मोड़ने का असफल प्रयास किया। क्रान्ति के इतिहास में सेलेरों जैसा अस्ट एव अवसरवादी कोई अन्य चरित्र नहीं दुँढा जा सकता । टैनिक कोर्ट की ऐतिहासिक शपथ की पूर्व रात्रि (19 जून) को वह मारल (जहाँ इस समय राजपरिवार रह रहा था) आया तथा राजा से गुप्त मुलाकात की प्रार्थना की । धूँकि राजा उसे पसन्द नहीं करता था अतएव उसने उसे अपने माई की ओर भेज दिया। कॉत दे आरतुआ ने बिस्तर मे होने पर भी उससे मुलाकात की । तेलेरों ने 'समा के कार्यों को मूर्खतापूर्ण खतरनाक राजतन्त्र विरोधी तथा गैर कानू ही बताया और उसने उसे सलाह दी कि सरकार को दृदता का परिचय देते हुए एता जैनेरो (स्टट्स जनरल) को भग कर देना चाहिए।तेलेरों ने अपने समर्थकों के साथ मिलकर नया शासन स्थापित करने का प्रस्ताव भी दिया । परिवर्तित मताधिकार द्वारा नए निर्दायन की योजना भी उसने बताई । उसने इस बात पर रोष और खेद प्रकट किया कि निर्देल व्यवस्था ने राष्ट्र को सिए के हाथों में फैंक दिया है। काँत दे आरतुआ ने तरन्त लुई 16वें के कक्ष में जाकर सारी योजना उसके सामने रखी परन्तु राजा ने साफ इन्कार कर दिया । तेलेरों ने निराश होकर लौटते हुए इतना सकेत अवस्य कर दिया कि हर व्यक्ति को अपने हितों के अनुकूल परिवर्तित होने की स्वतन्त्रता है। उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट हो जाता है वि तेलेरों पर अवसरवादिता का आरोप लगाया जाता है।

तेरोते गुप्त और नाटकीय राजनय में कुशत था। उसका व्यवहार बड़ा नाटकीय और कमी रुमांदशाली भी होता था। वह पाका अवसरावादी था और मूर्तलापूर्य पालाकी के कारण वह लगभग 50 वर्ष रात फ्राँस की राजनीति से सम्बन्धित रहा। क्रांति काल में तेरेरों में न्यामीतिक पर्य का पिता नन्मा स्वीकार कर दिया और 20 करावी 1971 को उसका अन्य सीविधानिक विशामों का शुद्धि सरकार बड़े ठाड़ बाट के साथ किया गया। एक राजनायक और एक आध्यानिक अधिकारी गुरु—धोनों ही क्लों में तेलेरों ने अपना राजनीयक कौशत दिखाया। यह से जुनाई 1900 को सातीति के बचन को बंगोंति मनाई गई तो एक विशास चल समारीह का आधीजन किया गया और विरोप लबाद तथा सफेद चरून धारण किए तैरों के साथ धार्मिक गीत गाए। 114 जुनाई 1904 तेरों तेरेरों के साथ धार्मिक गीत गाए। 114 जुनाई 1907 की सितीय के साथ धार्मिक गीत गाए। 114 जुनाई 1907 की सितीय के साथ धार्मिक गीत

फ्राँस के महानृ राजनयज्ञ तेलेरों और फ्राँस के राजनय पर टिप्पणी करते हुए ठॉ राय ने लिखा है—

रिरालू और कैलियसे ने जहाँ राजनय के सिद्धान्तों की स्थापना की वहीं तेलेराँ ने फ्राँस की क्रान्ति तथा नेपीलयन के बाल मे राजनय का वास्तविक प्रयोग किया। तेलेराँ राज्य शिल्प का विशेषज्ञ था। यह उसकी राजनियक योग्यता का ही परिणाम था कि उसने यूरोपीय राज्य व्यवस्था का पुनर्निर्मान कर समुक्त यूरोपीय राज्य व्यवस्था का पुनर्निर्मान कर समुक्त यूरोपीय ती स्थापना की। तेलेरें एक कुरालं एव गिरावान वर्ताकार था। यह समस्या के समाधान के लिए अपनी सम्पूर्ण योग्यता ही भी कि उसने दिने था। यह तेलेरों की राजनियक योग्यता कुरालता और नियुन्ता ही भी कि उसने दिने और आदिह्या को रस्त तथी प्रशा का वर बैठावर प्रशास के हिंदों को अगा बढाया। यूरोपीय व्यवस्था का जो नया विश्व खींचा वह राजनियक इतिहास की बहुत सामकारी उपलब्धि है। नेपोलियन महान् तेलेरों का प्रशासक था। आज मी तेलेरों हात सिवित सामझी का अध्ययन किया जारा है। वरुष लोग दो सकत राजनिय और सेर्पेंग के समान्ये का अध्ययन किया जारा

इस प्रकार रिशलू से लेकर प्राँस की क्रान्त के काल तक क्राँस का राजनय यूरोप का पय-प्रदर्शक रहा है। निकस्सन के शब्दों में "फ्राँसीसी राजनय शिष्ट और सम्माननीय या।" यह सस्पर्सी और अनुक्रमीकि था। यह नैतिकता प्रयान या। यह शान और अनुमव को महत्व देता था। इसने यथार्थ को महत्व दिया। इसके अतिरिक्त इसने सद्भाव, स्पर्यता गैर परिशुद्धता को किसी मी दिश्दस्त बार्तों के लिए आवश्यक बताया। इस क्ला में सचि-रातों ने कता का क्या पारा कर लिया था। इस प्रकार एक सम्बे समय की राजनिक परम्पराओं ने फ्राँसीसी राजनय को यूरोपीय त्या विश्व राजनिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देने में सहाराता यी। सज्जवीं और अठलवारी शतायी के विश्व राजनय को फ्राँस हारा ही दिशा यो गई थी। निरन्तर प्रवासी के फ्लांस्वर प्राणित में सहाराता किसी

दी.के.कृष्ण मेनन (V.K. Krishana Menon)

प्रधानमन्त्री नेहरू के समय भारत के विख्यत विदेश मन्त्री दी के कृष्ण मेनन अपने समय के महान् राजनदात थे जो आदश्यकरानुसार मुख और युक्ते राजनय का प्रयोग करते थे थे और जिनके मानग की सूनि प्राय. बाद दिवाद मजियोगिना करती होती थी। डॉ पुष्पेश धन्त ने मारत और पाक राजनीयक शिल्पों के टकराद का वित्र सुधरियन करते हुए मेनन और मुझे के राजनय को प्रकट किया है।

सुरक्षा परिषद् में घन्टों बोलते-बोलते बेहोरा हो जनने के बाद कृष्णा नेनन रातो-रात करोडों भारतियों के लाइले बन गए थे। श्री दी के कृष्ण मेनन की दिस्तून बहुता पर किर मुद्दों की न टकीय और तीवेपन पर कुछ विश्लेषणत्मक टिप्पनियों डॉ. पूपेश ने दी हैं जो इस प्रकार है-

1 नेर्नन ने मानते के कानुती घर पर जैप दिया। जैसा कि कृष्य नेरान की जीवरी लेखक दी जे एस जीजों ने दिखा है—"कुछ लोगों का मानुत है कि मेनन कनुती बास की दात तिनासने तमे थे पर करनीर के साथ कानुती पबड़े इस व्यख्य जुड़े थे कि दियी ने वर्ले धुनेती नहीं दी।"

। पुष्पेर पन्त भरतीय राजनव वृ ९३-९५

2 अपने मचा के दौरन कृषा मेनन साग के नियमनुसार आवरत करने रहे। एव पित के अध्यक्ष ने उनके मचा को जारी रहाने में अठिव दिखाई हो मेनन ने बार्टर के अनुष्टि 32 वा हवल देते हुए व्यवस्थक नौक-झींक तो की पर अध्यक्ष की अनुसन्ति के लिए रहेने रहे।

3 मेनन की मात्रा अप्रजी बाद विवाद की आदर्श परम्परा के अनुसार सूम्य व्यायोगिन्यों से मरी रहती थी । यह उदाहरण काफी है---

मैं यह सोच सहता है कि पूत्रे मुनने वो यह म के बारा दे लोग वह हुन नहीं सुन एए जो तैने उठाय या या मैं की पैयरसन विक्सन (बिटेश क्रिनिटी) से अनुरोध करोग कि दे राष्ट्रकृत के अन्य सदस्यों के साथा यायीचित व्यवहार करें कम से बाम सार्विजिक में में पर

4 मेनन के मचा की ध्वी बाद दिवाद प्रतियोगिता वाली थी-

ेंहमने युद्ध दिरम रेखा के पार लोगों के उत्तीदन और पानिस्तानी अधिकारियों के अत्यादारों के खिलाक दहाँ के लोगों की स्वान्त्रमा के लिए कोई आवाद क्यों नहीं सुनी 7 हमने यह क्यों नहीं सुना कि इन लोगों ने 10 दवों से मतदान पत्र नहीं देखे हैं 7 अप्दी।"

5 अपने दिनेयों की कटुरम आलोबना करते हुए मेनन ने एक देलीकिजन साम्रात्मार मैं इन्ता भर कहा था। आक्रमाकारियों को आक्रमा का फल नहीं मोगने दिया जा सकता।"

मेनन राजनय में झूट का सहारा. तेने के घर में नहीं थे। उन्हें बिटिश प्रधान मन्त्री इंडन के फियापाख राजना से अवधि थे। कुण मेनन का समय का था कि साथ और दिराना झूट और मोखे से कहीं किया कार्यों है। सरव बार्गोंओं और सम्बन्धें में सुरीया उत्तर करता है जबके झूट यसे निक्य बनारा है। वास्तव में राजदूत का नैरिक प्रमाव ही एसनी सबसे प्रमावकारी सेम्पान है।

मेनन का दिरास था कि राजनयज्ञ की अपने राज्य के प्रति अदूर स्थानि के होन या रिए और राजदूत के इस बन का दिराना होना या रिए कि उसके देश की दिस्त मंत्री सही और स्थापिक है। उसे अपनी सरकर द्वारा मेरी गई अज्ञाजों के अनुसद कर वरणा या रिए, मते हो के उसके व्यक्तिगत दिवारी से किन्दी है जिल को न हो। राजनय में व्यक्तित दियारों का काई महत्व नहीं है। एक राजनयन का प्रयम कर्त्य आने देश की सरकार का सही प्रतिविधित करना है मते ही उसके व्यक्तिगत विमाय केसे ही क्यों न री।

कीसिंगर राजनय कैसे और वया ?

संपुक्त राज्य अमेरिक' के मूर्ण्य विदेशमध्ये को हेनरे विभिन्न कपने विदेश मौज्ञतकाल में विद्यादारण व्यक्ति रहे हैं। नोगों के अनुसार वह बहुत गुढ़ थे रहस्तम्य थे ये उनके दिनाग में बदा चन रहा है और बहर वह किस गठार आधान नव रहे हैं यें में राज्येल विद्यात जारी मुन्तित था। दूछ राजनीतिक प्रेणक रोग यह तक वहते हैं कि पहले निकास और बदा में पोर्ट प्रमासन के देंगान विदेश नीति के केवल वही प्रवान थे विद्यातनम युद्ध की समाचित आपरिक स्थियों पर सिम्पना के बारों में सहसे यहाँ चीन और अमेरिका में सामच्या परिवानरिया में शानित और रोडेरिया के मसले पर काली और गीरों के बीच वार्ता की गुरुआत कराने का श्रेय निस्सन्देह डॉ हेनरी कीसिंगर को जाता है। इन समस्याओं पर वार्ता करने या वार्ताओं का प्रस्थ कराने की उनकी कहीं कार्यरीती हुआ करती थी इस पर तरह-तरह की प्रतिक्रियाएँ और टिप्पपियों होती रही हैं। पिरिवर्गीराया की उनकी लगातार यात्राएँ तथा निस्स से इक्तययल सीरिया से इक्तययल के वीच उनकी दोकपूप और अन्तत दोनों में बातबीत कराने की उनकी राजनियक सुश्रुव्ध को राजनियक कार्यकुवालता का प्रतीक माना जाता है। जब 1969 में विचर्ठ निकसन वाइट हाउस में आ गए तो एक दिन हों हेनरी कीसिंगर विदेश मन्त्रात्वय के स्वागत कर्क्स में छंट थे। वियतनान के वारे में जीनका प्रताकन प्रताक्षत के अनुष्य वरस्तर्गदाता ऐवरेल हेरीमेंन से उनकी वर्ध मुझाकात हो गई। हैरीमैन ने घटते हो पूछा आपके च्याल में वियतनान समस्या कर तक निक्सन प्रताक्षत के कीसिंगर का बढ़ा हो आरवस्त उत्तर था। कम से कम 6 निक्सन प्रताक्षत के स्वाप्त के प्रतिक निक्सन प्रताक्षत के स्वाप्त के स्वाप्त निक्सन हैरीमैन से उनकी वर्ध मुझाकात हो गई। हैरीमैन ने घटते हैरी सुझाकात हो आरवस्त उत्तर था। कम से कम 6 निक्सन हैरीम की जारों हो को हो आरवस्त उत्तर था। कम से कम 6 निक्से है कि दस समस्या सुलझा में मार वर्ष लग गए अर्थात् 1972 के पुनाव से कुछा पहले ही यह समस्या सुलझा में मार वर्ष लग गए अर्थात् 1972 के पुनाव से कुछा पहले ही यह समस्या सुलझा में मार वर्ष लग गए अर्थात् 1972 के पुनाव से कुछा पहले ही यह समस्या सुलझा भए।

सन् 1972 का वर्ष राष्ट्रपति रिवर्ड निक्सन और डॉ हेनरी कीसिंगर दोनों के लिए महत्वपूर्ण था। इसी साल उन्होंने पीन और रस्त की यात्रारों की थीं। किसी अमेरिकी प्राप्नपति की पहली बार चीन की यात्रा को सम्प्रद बनाना (15 से 19 फरवरी, 1972) विलिय र वीन की यात्रा को सम्प्रद बनाना (15 से 19 फरवरी, 1972) विलिय र कर की ही बात थी। उन्होंने 1971 में अपनी मारत यात्रा के दौरान मारतीय नेताओं को इस बात का सकेत राक नहीं मिलने दिया कि वह पाकिस्तान जाकर पीन की राज्यानी पीकिंग कहान मर जाएंगे। जब उनके पीकिंग पहुँचने की खरद पहुँची सो केवत मारत ही नहीं बढिक ससार के सती देश मीचंड र एए। घारों और डॉ हेनरी कीशिंगर की राज्या और कूटनीति के चर्च होने लगे। दरअसल, विद्यतनाम वार्ता के दौरान फर्डोंने तत्कांतिग उत्तर विद्यतनाम के तो उक्क यो, बचान पहुँ जैसे नेताओं से जिस तर के गोपनीय और सार्वजनिक कर यो से विद्यान निवर्षा किया उनसे के कीशिंगर की राजनिक कुसतता का परिचय मिलता है। वियतनाम युद्ध को सम्मानजनक दग से समाप्त करने में निक्सन फ्रांचान को जो सफलता मिती उसे जो हैनरी कीशिंगर की सुवर्द्ध और दूरदर्शिता से से सम्मव बनाया गया। वियतनाम में शानित स्थापना के कारण ही डॉ हेनरी कीशिंगर और ती डक सो को नेतव शानिय पुरस्तार प्राप्त हुजा।

की बरु भी को नेवल साति पुरस्कार मागद हुआ ।

कार्यरीती की व्याख्या इस समस्या के समधान को तंकर डॉ हेनरी कीर्सिगर की

कार्यरीती की व्याख्या सुरु हो गई । तरागम सादे दीन सात की अवरिष में डॉ कीर्सिगर की

कार्यरीती की व्याख्या सुरु हो गई । तरागम सादे दीन सात की अवरिष में डॉ कीर्सिगर की

कार्यराना और कार्यप्रमाती का पता तो लग ही चुका था यह बात मी सामने आ गई कि

डॉ हेनरी कीर्सिगर तब तक अपनी कोई मंतिविधि सतह पर नहीं आने देते एक तक उसके

तिरिवत परिमान सामने आने की उन्हें उम्मीद नहीं होती । अपनी कार्यप्रमाती में वह हरें

सन्य गोमगीयता का निर्वाह करते रहें । वह यह नी चाहते थे कि दूसरा पत्न मी देती ही

गोपनीयता बरते । इस के में उन्हें यसासम्मव सहयोग नी मिलता रहा बाहे वह मसला

दियतनाम का हो चाहे निस्तान की चीन और सह यात्राओं का और बाहे परिवर्धीया

सन्या वार्ताओं का । अगर कहीं कीर्सिगर ने गचका खासा दो वह आरेता की समस्या

थी। यहाँ पर स्ताने नी देती ही नीरित अपनाई जिसके कि हेनरी कीर्सिगर अग्रदूत रहें।

जब अभोक्त को सिस्ती का जायका दिया गया तो दो कीसिगर के सलाहकारों ने पाया कि यही पर कपूत के सैनिक काफी बड़ी सादाद ने है और कपूता के सीनेकों का रहते आगमन रूस की दिदेश मीटी का प्रदिगास था दो कीसिगर है गासिपूर्ण देगा सिस्ति का अध्ययत किया। यदि यह ऐसा न करते तो अमेरिका और रूस क श्रीथ जिस भाईपारे की भावना अध्याद देती की बात करते रहे जनने रण्ट दरारें दिखने लगती। दरअसल इस सरह की असपट्टात को है कीसिगर को यूढ़ी माना जाता रहा।

राष्ट्रपति रिपर्ड निश्तन के दिमाग को समझने में डॉ कीसिगर ने कहीं पूरू नहीं की। अपने सामग्र ग्रह साल के कार्यकाल में जीसक की जिस कि दिना काम प्रताने में सार्य नहीं हो तहें है से उम्र के दिने सानिय कि उन्हें के सामग्र कि उन्हें की होता है के सानिय कि उन्हें के सानिय कि उन्हें की कीसिगर के कि उन्हें की कि उनकी कीम पता पता असम्मद नहीं तो कठिन अस्पर रहा डॉ है तमें कीसिगर हमेशा है अपनी काम पता पाना असम्मद नहीं तो कठिन अस्पर रहा डॉ है तमें कीसिगर हमेशा है अपनी काम पता पाना असम्मद नहीं तो कठिन अस्पर रहा है कि उनकी नीतियों में कहाँ किस प्रकार की खोल या पोल है और उन पर किस प्रकार का प्रहार किया जा सकता है।

निस्तान की पीन पात्र और उसके बाद अपनी पीप धीन यात्रओं के दीरान उन्होंने जो भी पीनी नेताओं से बात की यह दोनों देशों के परस्पर सम्बन्धों सक ही भीटे और पर सीनिय रही। वेशियार जानते थे कि ताहदान का नुदा पीनियों के लिए अक्स पुरा था अत उस मुद्दे को उन्होंने तब तक अदमा रखा और इसकी सहनति भी धीनी नेताओं से प्राप्त कर सी कि जब सक पाद-एन-लाई, माओरते दीन और रियर्ड निक्शन में बातपीत नहीं हो जाती इस प्रमु को ने उठाया जाए। दरअसत यह पूर्ण तिदेश मनियों के स्तप्त पर्व उठाया गया और जब इस पर धर्मा हुई तो उस पर अपनी राजनिक सीनों के स्तप्त पर मित्रिया में प्रतिक्रिया की। साहदान पर अत्तर सीन का अधिकार है। मीन और अमेरिका की इस निकटता से धीन सामुफ पाडू का सदस्य मन। सुख्या परिवर्ड की स्वाधी सदस्यता भी साहदान के स्वान पर साम्यवादी धीन को दी गई। औसिंगड इतने दूरदर्गी थे कि उन्हें यह समझने में किसी साद की शालनीति का घन पाना पुरिकार है।

धीन के साथ हो साथ वह सोवियत साथ से भी सहयोग रखना घाहते थे। जहाँ राजनीतिक स्तर पर उन्हें कम जरूरत है वही आगविक अन्तों के दोन में रूस के सहयोग की भी उन्हें कम जरूरत नहीं थी। बेसक अमेरिकों कों में कहा जाता है की की निर्मान ने अपने शाजनार से अमेरिका को विरव के दूसरे दर्ज के देश के तौर पर ला खड़ा किया है लेकिन स्थितियों का यदि विरतेषण किया जाए तो यह निश्चित है कि उनकी विदेश नीति कई मामनों में समर्थ और सफल रही। यह यात दीमार है कि विश्वासील देशों के प्रति उनका रदेवा अनुकूल नहीं रहा। लेकिन पश्चिमी देशों पश्चिमीशिया तथा आफ्रीकों देशों के प्रति उनकी दिदेश गीति को गए आयाम प्राप्त हुए। उनके सत्तर प्रयत्नों से हो सोवियत साथ आगविक अस्त्रों पर रोक सम्बन्धी पहला समझीता कित सालन । समझीता माना जाता है हुआ और दूसरे पर कम्पी लग्नी वातपीत हुई। जहाँ वो हेनरी कीतियार विवतनाम को भेता दुरवण करके हैं यहाँ अपनी एपलवियों में वह आगविक अस्त्रों पर रोक सम्बन्धी वातों को हम सत्वपूर्ण अवस्त्र ने देहें | निस्तादेह आपूर्णिक प्रमुण के क्या में जाना जाता है।

के. एम. पश्चिकर (K. M. Pannikar)

भारत के अधुनिक राजनयड़ों में सरदार के एम पत्रिकार के नाम का उल्लेख कदार किया जाता है जो धीन में लम्दे असे तक भारत के राजदूत रहे । पत्रिकार के अनुसार राजनयड़ "एक देश का दूसरे देश में स्थित और और कान्त" है। कोई मी देश अपने जाजनका के माध्यम से दूसरे देश की घटनाओं नीतियों और इंटिकोनों के बारे में बहुनूव्य जानकारी प्राप्त कर अपनी विदेश-मीति को आवश्यक मोड़ देता रहता है। बहुत से दियारकों ने पातुर्य, कुशतता करण आदि को राजनयिक गुन माना है जबकि पत्रिकर के अनुसार पूर्वता करण आदि से पूर्ण राजनय अपने तरदों की प्रति में बहुत कम सहायक हो सकरा है। कारना यह है कि राजनय अपने देश के प्रति दूसरे देशों की मुन कामना प्राप्त करने की इंग्लि देशों की मुन कामना प्राप्त करने की इंग्लि देशों की मुन कामना प्राप्त करने की दूसरे देशों की मुन कामना, प्राप्ति के लख्य की पूर्ति चार प्रकार से अधिक कथानी तरह हो सकती है—दूसरे देशा का देश पत्रि की नीतियों को दीक प्रकार से साथों और उसके पति सम्मान की मावना रखें वह देश दूसरे देशों की जनता के न्यायोवित हितों को समझे एर सर्वापति देशों की समझे एर सर्वापति देशों की समझे पर सर्वापति है साल्यों के असरियार जाड़ित है आपनी ती विरक्त समान में पत्र देश का नीति की असरियार जाड़ित है आपनी ती विरक्त समान में पत्र देश

पत्रिकर ने राज्य के प्रति स्वतिभक्ति को एक राज्यस्त्र का आदरसक गुन माना है। उन्हीं के राब्दों में—"पाज्द्वा को उस नीति को क्रियान्तर करना होता है जो उसकी सरकार निर्वारित करता है। ये उसके स्वय के परामग्री से नित्र हो सकती है क्योंकि दिन्ती रेग की सरकार हो पूरी स्थित से परिवित होती है क्यांकि राज्यां है। इसलिए जर उसे कर अपने विशिष्ट लक्ष्यों को हो जनता है। इसलिए जर उसे के उन अपूर्वरों को क्रियान्तित करना परवा है जो अध्यान्त्र कर से सरकार है क्यां के हिरुद्ध हो तो उसे सावन्त्र, प्रत्यात कथा में में मानित नहीं होना घरिए और किसी मी रियति में उसे सावनित्र तरहार को अपने वितर्दा नित्र के सावनित्र में का मानित स्वार्थ है कि उसके स्वयं के दिवर नित्र नहीं हैं।" अपरर्य राज्युत को किसी मी परित्रित में अपने देश से आए कट निर्देश नित्र में मुद्ध मानकर अपनी सरकार के व्यवहर का गतत अनुसान नहीं देना चाहिए मते ही उसके देश की दिदेश नीति स्वीकरारी राज्युत के एसल्य न हो।

के सार को धक्का पहुँचेगा। पत्रिकर जैसे विचारकों का मत है कि व्यक्तिगत जीवन की मौति

अन्तर्राष्ट्रीय जीवन में भी ईमानदारी सबसे अन्नरी नीति है।

प्रिकर जो स्वय एक सकत राजनीतिझ थे, तित्रयों के सातिय्य व सम्पर्क को राजनय का सहस्यक मानते हैं। सन् 1926 में फ्रांसिसी राजदूत दुनेस केमान ने, एक तेख में तिद्या था कि सम्मानीय तित्रयों का ससर्ग राजदूत के लिए लामदायक होगा। प्रिनिस् भारतीय विद्वान चानस्य राजदूतों की तित्रयों से सम्पर्क का दिरोधी था। सनी देशों में त्रित्रयों का प्रयोग राष्ट्रीय हित दुन्धि के लिए अति प्राचीनकाल से किया जाता रहा है।

1 Parenter The Proceples and Processor of Diplomacs pp 61-62.

भारतीय इतिरास के अति प्रायोगकाल वी विष कन्याओं का ऐसा ही प्रयोग था। प्रथम महायुद्ध के काल में माताहारी दिख्यत स्त्री जासूस थी। द्वितीय महायुद्ध काल में एक अमेरियी सबरा तिर्पेक (Cypher Clerk) गुरू कर स्त्री प्रयत्ति लहरी के प्रेम में फैसाकर रूजनेट और प्राप्ति के मया आदान प्रयान पुर कई पत्र दिखा दिए थे। वह लहरी वासती में में जर्मन जासूस थी। इस करके को इस अवसास के बारण सात वर्ष की साज मिसी थी।

परिवन के अनुसार एक आदार्ग शालदूत को अपनी सामलता पर गर्थ और असकलता पर मिश्र गरि देना पारिए। परिकर ने सामदूत के दो मूल कार्यों से सहसीत व्यक्त की है— म्यम अपनी सरकार को स्थापि कारिस्तारियों साथा करें की नीतिस से अवनात करण रखना। दितीय अपने देना की विदेश नीति के क्रियान्त्रयन के लिए देश से आई आझाओं का सामलतामूर्वक पाता करना। दिशी भी शालदूत की सामलता अववा असकलता का उत्तरसायित परा देश की अपनी दिश्य नीति पर होना चाहिए न कि राजनिविक पर करेंगी होता पार्ट्य कर के प्रावनिविक पर के सामलता कर कार्य कर के प्रावहित के अपनी दिश्य नीति पर होना चाहिए न कि राजनिविक पर करियों हो पार्ट्य का मान कि कार्यों के भीधे दस्तव का सबसे मयावद व अभिना सरका प्रावहित के अपन सरकी प्रावहित के साम्य स्वान के साम्य स्वान के साम्य सर्वी के साम्य स्वान के साम्य स्वान के साम्य स्वान सम्य है कि सामझीते के अपन सर्वी सामल सामल हो जाएं साम्य वर्ता के साम्यम से किसी सामझीते के अपन सर्वी सामल सामल हो जाएं साम वर्ता के साम्यम से किसी सामझीते के अपन सर्वी सामल सामल हो जाएं साम वर्ता के साम्यम से किसी सामझीते के अपन सर्वी सामल स्वान कार्य स्वान के स्वान स्वान

नरसिहराव का राजनय

जून 1991 ई के लोकसमाई चुनाव में काग्रेस (1) लोकसमा में सबसे बड़े दल के रूप में प्रश्न कर सामने आई। पत्तीव गाँवी के देहादमान के बाद नहिंदिहराव को दल का अध्यक्ष दमाया गाया। उनके जिल्ल में ही काग्रेस (1) ने लोकसमा के हितीय परण का चुनाव तहा । चुनावों के बाद उन्हें ही सार्वसम्मति से लोकसमा में काग्रेस (1) समरीय दल का विधियत जियों लिमीदित कियें जाने के बाद प्रयानभंदी पर की शप्य दिलाई गई।

प्रधानमंत्री के रूप मे नरसिंहराव ने भारतीय विदेशनीति और राजनय की शैली में कोई अधारमृत परिवर्तन मंदी किये हैं । उनकी राजनियक शैली की मुख्य विशेषताओं को निन्तिसिंतत रूप से विश्लेषित दिया जा संकता है

प्रथम उनकी नेतृत्व वाली सरवार असलगता की विदेशनीति पर बरकशर रूप से कायम है।

द्वितीय श्री नरसिंदराव के नेतृत्व में भारत विकासगील देशों की समस्याओं को प्रमावशाली दग से दिस्व रामस्य पर उजागर वर रहा है। वेशेजुएला की राजपानी कारावर से में ग्रुप 15 देशों के सम्मेलन में दिये गये अपने भाषण में श्री राव ने जिकासगील साड़ों के पदा को जीरदार वन से प्रस्तुत विन्या था।

तृतीय श्री नरिसहराव के नेतृत्व में भारत और समुक्तराज्य अमेरिका के सायन्यों में उत्तरोत्तर दग से सुधार हो रहे। होनों देशों के बीच पूर्व प्रचलित गलतफहमियाँ और कटता में भी बमी आई है।

[।] ही एम थी शत वही पुरुष 257

² Pannker The In plastia estDplamaypp 61 62

राजनयझ के लिए परामर्श (Advice to Diplomats)

प्रत्येक राजनयज्ञ को अपने कार्य एवं दायित्वों का निर्दाह करने की दृष्टि से विधारकों ने कुछ पतार्था दिए हैं। इनका अनुसरण करके एक राजनय अपने तहद की चपलिय सरतता एवं निषय के साथ कर सकता है। कुछ उत्तरेखनीय परामर्थ निम्मतिखित प्रकार से हैं

- 1 राजनयझ व्यक्तिगत गुनों से सम्पत्र क्षेत्रा चाहिए। उसमें वे समी गुन अपेक्षत हैं जो प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य करने वाले में होने चाहिए। उसमें बुद्धिमधा विद्वता सुप्त-पूत्र पातुर्य साहस लगन और अचक परिश्रम की समता होनी चाहिए। उसे अनार्याष्ट्रीय कानून और इतिहास का विरोध झान होना चाहिए।
- 2 राजनिक व्यवसाय में प्रदेश करने वाले प्रत्येक युवा व्यक्ति के लिए एक जितत रामर्श यह है कि उसे हुसरे को मुनना माहिए और स्वय नहीं श्लेलना माहिए। वह स्वय केवल इतना ही बोले जिलाना दूसरे व्यक्ति को सालेताला में प्रेरित करने के लिए आवश्यक हो। इस आवरण से वह अपने विरोधियों से अधिकाँश सुधनाएँ प्राप्त कर लेता है और स्वय के दृष्टिकाँग को उनसे गिणाए रखता है। ये सुधनाएँ वह अनेक जासून लगावन और मारी पन-पासि चर्च करने की प्राप्त नहीं कह सकता।

3 प्रत्येक राजनपड़ को सिद्धान्त रूप से शष्ट्र-हित की सुरक्षा पर सर्वाधिक ध्यान देना चाहिए। ऐसा करते समय उसे अपने सरविदेक से काम न तेकर अपनी सरवार हरा निर्मारित नीति का ईमानदारी से पातन करना चाहिए। यदि वह अपनी सरकार की नीति से सहस्त नहीं है तो उसे अपनी बात सरकार तक पहुँचा देनी चाहिए किन्तु विदेशी शासक पर अपने मततेद को प्रकट नहीं हैने देना चाहिए। राजनय हात अपने देंग को जो प्रतिवेदन मेजा जाए उसमें ईमानदारी और निक्यता की छाप झतकनी चाहिए। राजनयात को उदार इंटिकोण अपनाना चाहिए सा अपने प्रतिवेदन को अन्तिम सरग नहीं मानना चाहिए।

- 4 राजनयज्ञ को अपने देश की नीति और दृष्टिकोण से स्वागतकर्ता राज्य की सरकार एवं जनता को अवगत कराना चाहिए ।
- 5 राजनयह को स्वागतकर्ता राज्य पर अपनी आदते एव दृष्टिकोण लादने नहीं पाहिए वित्त यसासम्बद अपने परिग्रहणकर्ता राज्य के दृष्टिकोण के अनुरुप बन जाना चाहिए। उसे छोटी छोटी वार्ती में भी इसका ध्यान रखना चाहिए। उसे यहाँ की शावा चोलना सीखना चाहिए। उसे रखाँ की शावा चोलना सीखना चाहिए। उस एक राजनयहा अपने राष्ट्रीय दुराग्रहों को त्यान देता है तो परिग्रहणकर्ता राज्य की जनता और सरकार वसे अपना समझने लगती है।
- 6 राजनयङ्ग को अपने समस्त आवश्यक कागजात ताले-चाढी मे सुरक्षित रखने चाहिए किन्त अपनी इस सजगता से परिग्राहक राज्य को विरोधी नहीं बनाना चाहिए!
- 7 राजनयझ को चाहिए कि वह किसी सरकारी अनिलेख को कार्यालय से बाहर न जाने दे और विरोधी पक्ष द्वारा अधिक सावधानी से पढने के तिए खुता न छोड़ा जाए I

¹ Sir Earnesi Satow A Guide to Diplomatic Practice p 91 104

16 राजनयङ्ग को अपने विरोधी पक्ष को कमी भी दुर्बल मूर्ख या अज्ञानी नहीं समझना चाहिए । उसे उससे निरन्तर चौंकत्रा रहना चाहिए ।

17 राजनयझ को अपनी भावनाओं पर नियन्त्रण रखने का अस्यस्त होना चाहिए तािक उसके घेहरे को देखकर या वाणी को सुनकर उनके इदयगत मावों को माणा भ जा सके ।

18 उसे हमेशा लेखन कला में कुशत होना चाहिए क्योंकि प्रतिदिन उसे अनेक टिप्पनियों और प्रतिवेदन अपनी सरकार या परिग्राहक राज्य को प्रस्तुत करने होते हैं। विचार-अनिव्यक्ति की दृष्टि से उसे एक कुशत बक्ता मी होना चाहिए।

19 राजनयझं इतना कुराल हाजिर-जवार और तीवबुद्धि हो कि उसके उत्तर हमेशा उसकी सरकार की नीति के अनुसार अथवा अनुकूल रहे। यदि वह कमी ऐसा न कर सके की टाल देना चाहिए।

20 राजनयज्ञ का दृष्टिकौन उदार और इदय विशाल होना चाहिए। उसे अपनी भूल स्वीकार करने में किसी प्रकार का सकोव नहीं होना चाहिए।

21 प्रत्येक राजनयज्ञ को प्यवहार कुरात होना चाहिए। यह सामाजिक संमारीहों का आयोजन कर अनेक प्रस्तों पर अनीपचारिक बता कर सकका है और एक दूसरे को समझने की प्रत्यान कर सकता है। ये समझते हैं के प्रत्यान अध्यान मितनामा सुसाकृत शिन्ट एवं परिकृत करिय का हो। इस प्रकार के समारोही और भोजों का अपना मितनामा सुसाकृत शिन्ट एवं परिकृत करिय का हो। इस प्रकार के समारोही और भोजों का अपना मितनाम में स्वत्या है। जो कार्य घनटी विचार विचार के बाद भी मही हो पाते वे खाने की नेज पर आसानी, बीद जाती है। जोते हैं।

22 राजनसङ्ग की सफलता के लिए एक विशेष परानर्श यह है कि उसे अपने कान मैं हिज्यों से सहायता लेना चाहिए क्लेकि समाज में उनका एक विशेष स्थान होता है। वे मौदी-वातों और राष्ट्रीय हितों की पूर्ति में पर्याच सहायक सिद्ध हो सकती है। प्रकृति ने स्त्री को ऐसे गुगा हिए हैं जिनके कारण यह अनेक काउँन कार्यों को आसानी से कर लेती हैं। प्राप्तिन काल से ही अन्तर्रास्ट्रीय साचन्यों में हिन्यों का उपयोग होता आ रहा है चाणस्य ने चन्नपुत्र को अपने साम्राच्य की रहा के लिए हिन्यों की सरायता लेने को कहा था। गारत में दिव-कन्याओं का प्रयोग प्राप्तिन काल से होता आ रहा है।

23 राजनयज्ञ को अपने प्यक्तिगत दिवारों के कारण दूसरे पहा से किसी प्रकार की ईम्पों या देव नहीं रखना थाडिए। दूसरे पहा से विरोध प्रकट करते समय कटुता के स्थान

पर मधरता की जैली का सहारा लेना चाहिए।

24 मारतिय राजनयाइ सरदार के एम प्रक्रिकर ने व्यावसायिक दृष्टि से राजनयाक को प्तामर्था दिए हैं जो यदापि नैतिकता को कसीदी पर खें नहीं उतारते तथापि वे व्यावसायिक रूप से मारदायक हैं। उतारते मतानुसार राजनयाइ को यादिए कि वह अपने मतार्थ को जान-सायारण के हितों को कम दे केट जानता के समझ मत्तुन करें। दूसरों का समर्थ को जान-सायारण के हितों को कम दे केट जानता के समझ मत्तुन करें। दूसरों का समर्थ को आहत पत्र के कम में प्रकट करना माहिए। वास्तव में हिती चाहे किसी भी पत्र को हुई हो तैकिन लाग इसी मे है कि स्वय को आहत पत्र वाला पार्टी पार्टी को बदनाम करने के लिए उस पर चन सभी दुर्गुणों का आहत पत्र वाला पार्टी ए जो उससे स्वय में हैं।

25 व्यावहारिक दृष्टि से मैकियावती का यह परामर्श मी अनुकरणीय है कि यदि किसी को मलाई करनी हो तो उसे थोडी-थोडी मात्रा में करो और यदि अहित करना हो तो सब एक साथ कर डालो !

26 राजनयक्ष को अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर कोई प्रकाशन अनाम अथवा दूसरे के नाम से निकालना घाढिए । यदि कोई राजनयक्ष अपने अनुनवों को प्रकाशित करता है तो इससे दसरे राजनयओं के व्यवहार में कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं।

27 राजनयज्ञ को सन्धि-वार्ता को प्रभावित करने के लिए या गुरत सूचना प्राप्त करने के लिए रिश्वत का प्रयोग नहीं करना चाहिए। इसके अतिरिक्त मेंट देकर भी कोई कार्य मही करना चाहिए क्योंकि इससे उसका सम्मान गिरता है और अनेक अनावरयक आलोचनाएँ होती हैं जो अन्त में उसके राष्ट्रीय हितों के लिए घातक सिद्ध होती हैं। कुछ विचारकों का इस सम्बन्ध में यह मत है कि यदि एक राजनयज्ञ सद्भावना और मित्रता के रूप में कोई मेंट देता है तथा उसके बदले कोई गलत कार्य करने की मींग नहीं करता तो इसकी रिश्वन मती कहा जा सकता।

राजनयझ की बदलती हुई भूमिका (The Changing Role of Diplomats)

प्रारम्भ में राजनय पूर्ण सप से राजनीति और कानूनी विषयों तक् सीमित या और राजनीयिक सेवा के सदस्यों का प्रशिक्षण केवर अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क की शास्त्र तक सीमित सा। वर्तमान में राजनय का रूप विषय एव केव आदि बदत रहे हैं। उसी प्रकार राजनयक्ष के दायित्वों में भी अनेक परिवर्तन आ रहे हैं। आज के विश्व में कोई राज्य आत्मिनिरंग या अपने आप में सीमित नहीं रह सकता है। आजकत प्रत्येक राज्य की राजनीतिक, सामाजिक तया सांस्कृतिक परिस्थितियाँ दूसरे राज्यों को प्रमावित करती हैं। सम्मवत इसी कारण अन्तर्रार्थीय सम्बन्धी की स्थापना होती है।

प्रत्येक राजनयज्ञ इन सम्बन्धों को अधिकाधिक दिकसित करने का प्रयास करता है। ये कार्य राजनयज्ञ की दिनवर्धा में निहित होते हैं। दिश्व की आधुनिक एरिसिदियों में राजनयज्ञ की दिनवर्धा में निहित होते हैं। दिश्व की आधुनिक एरिसिदियों में राजनयज्ञ की रोधक दिनवर्धा के सुद्ध आग ये हैं (क) पिछते दिनों की घटनाओं, वातीलार्धे एवं विद्यात-दिमर्स्सों के साम्बन्ध में अपने पीमिदित्व (स्टेनों) को लिखवाना। (ख) स्थानीय सामायर-पत्रों में प्रकाशित किसी दिशेष महत्वपूर्ण प्रश्न के बारे में अपने पत्र-सख्यारी से सामायर-पत्रों में प्रकाशित किसी दिशेष महत्वपूर्ण प्रश्न के बारे में अपने पत्र-सख्यारी से सियार-विदर्श करना। (ग) अपने साकाश के देनीसानों या तारों का छत्तर देना। (थ) प्रपत्त सामायर साम्बन्धी कार्य निर्देशन करना। (थ) दिनित्र दिमार्थों से सम्बन्धित पत्रों का उत्तर स्वय दिखना। (थ) प्रेष्टा के समय आगन्तुकों में पत्रकार व्याधीय परेशान नागरिक आदि होते हैं। (ज) अपरान्ह में परिप्राहक राज्य के दिदेश मन्त्री से मेंट करना और वहीं से तीटने पर अपने वार्तालय की लिखित सुचना अपनी सरकार को भेजना। (झ) इस बीच प्राप्त टेलीग्रामों या तारों का उत्तर देना। इस प्रकार राजदूत की दिनपर्या से सम्बन्ध एवं दिवारों का निरस्तर आदान-प्रदान रहता है। वह परिप्राहक राज्य के के स्वर्ध करना को स्वर्ध के स्वर्ध के कार्य के स्वर्ध करना और वहाँ से स्वर्ध के स्वर्ध के निरस्त अदान-प्रदान रहता है। वह परिप्राहक राज्य के के बीच कर करना और वहाँ से स्वर्ध के स्वर्ध के स्वर्ध करना की स्वर्ध करना की स्वर्ध करना और वहाँ स्वर्ध के समय करना की स्वर्ध करना है। इस प्रवास की स्वर्ध करना है। इस प्रवास करना की स्वर्ध करना है।

राजनयञ्ज की भूमिका सम्बन्धी भारतीय विधार (Indian Ideas on the Role of Diplomats)

प्राचीन मारतीय राजवास्त्रों में राजनायतों के कायों का विशव विवेचन किया गया है।
प्रिस्त राजनीति सारांत्री वेदित्य या पाणवय के मतानुसार एक राजनायत्र के कार्य
गिम्मितियत हैं (1) अपने स्वामी का मत्येश दूसरे राजा के पास पहुँचाना तथा उसका
उसर अपने रवामी को पहुँचाना (1) सन्देशों का पातन करना (11) अपने राजा की शांकि
एव प्रमाय का प्रदर्शन करना (11) अपने निज्ञों की शृद्धि करना (12) अपुत्रों में फूट व्याला
स्था शात्रु के निज्ञों में मेर पैदा करना (12) शात्रु की सेना तथा गुप्तवर्श की जानकारी
रखना (11) अपने गुप्तवर्श के सवादों का सम्रह करते रहना (11) शात्रु की कमजोरी
देखते ही अपना पराक्रम प्रदर्शित करना (11) सार्थ क अनुसार अपने देश के बन्दियों को
मुक्त करना (3) औपनिवर्षक उपायों से शतुओं की हत्या करना आदि ।

कारों की उक्त सूची से स्पष्ट है कि उस रामय दूत का मुख्य कार्य अन्य राज्यों में जासूची करना होता था। व हर अपने राज्यों के हितों की रक्षा के लिए केवल राजनीतिक स्तर पर ही कार्यवादी करता था।

परिवर्तित कार्य (The Changing Role of Diplomats)

यतंमान काल में राजनयझी का कार्य क्षेत्र व्यापक बन गया है। उनके कुछ कार्य केवल परेलू प्रकृति के होते हैं तथा अन्य राज्यों से इनका सम्बन्ध नहीं होता किन्तु अधिकाश कार्यों का सम्बन्ध राज्यों के पारस्परिक सम्बन्धों को दृढ बनाने से रहता है। प्रो ओपेनहीम ने राजनयझी के कार्यों का उल्लेख करते हुए स्थाई एव अस्थाई दूतों के बीध मेद किया है। अस्थाई दूतों के कार्य निश्चित नहीं होते हमा वे उनकी नियुक्ति के उद्देश्य के आधार पर निर्पारित होते हैं। स्थाई दुतों के कार्य निम्मतियित हैं

1 अपनी सारकार की नीति की व्याख्या राजनयङ विदेशों से अपने राज्य का प्रतिनित्तित्व करता है। किसी भी प्रस्त पर राजनयङ कहा जाता है। किसी भी प्रस्त पर राजनयङ की राय उसके देश की राय मानी जाती है क्योंकि वह उसी की ओर से बोस्ती है। यह अपनी सरकार की राजनीतिक आर्थिक सौरकृतिक एव सामाजिक नीतियों का स्पर्टीकरण करता है। वह परिवाहक राज्य की सरकार एवं जनता के समुख अपने राज्य के राजनीतिक पृथ्विकाण वामाजिक परम्परा आर्थिक क्रियाएँ तथा सौरकृतिक पृथ्वपृत्ति के प्रज्यानिक पृथ्वपृत्ति के प्रस्ता करता है।

2 सारिय सार्ता राजनयझ परिप्राहक राज्य के साथ सरिय वार्ता करते समय अपने पाज्य का प्रतिनिधित्व करता है। यह विदेश में अज्य राज्यों के साथ मी सर्विय वार्ता करता है। इस करा में यह अपने राज्य के अध्यक्ष तथा विदेश मन्त्री का प्रवक्ता होता है। वह प्रथक राज्य को अपनी वार्ता का प्रतिदेश में जता है।

उ राष्ट्रीय हितों की रक्षा राजनयज्ञ की नियुक्ति इसलिए की जाती है कि वह विदेशों में अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करें। सरदार पत्रिकर के मतानुसार वह सकल विश्व के

म अपन राष्ट्रीय हिंतों का रक्षा कर । सरदार पात्रकर के नागुनार की हिंतों की रक्षार्थ नहीं बरन् अपने देश के हिंतों के सरक्षण के लिए भेजा जाता है। है। राजायक्रा को मावार पूर्वाग्रह एव मित्रता वे आवेश में नहीं बहना घाहिए वरन् अपनी सरकार के िर्देशानुसार कार्य करते रहना चाहिए।

- 10 नीति निर्माण में सहायक राजनयझ स्वय गीति निर्माण नहीं करता। वह अपनी सरकार तथा विशेषत विदेश मन्त्री द्वारा मिरिवादित नीति को वियानित करता है। यह अपनी सरकार को दृष्टिको का में मामित करता है। उसमानी स्वाप्त करता है। उसके देश के प्रति विदेशी सरकारों का दृष्टिकोण उसके स्वाप्त करता है। उसके देश के प्रति विदेशी सरकारों का दृष्टिकोण उसके स्वय है। उसके देश के प्रति नीत्र के प्रतिपादन में एक देश के राजनयझ की मुनिवा अध्यत्न। सरकपूर्ण होती है।
- 11 सुतीय राज्य के हिंतों की रक्षा विदेशों मे रिशत एक राज्य के प्रिणियादास अनेक प्रकार से सीरिये राज्यों में नेवा बन सबते हैं। यदि विजी राज्य का बारों अपना दुवादस निर्दे हैं तो यद अन्य राज्य के दुराज्यों से उदेश बी पूर्ति करता है। ऐसी रिश्ति में इन कार्यों वा दारिय तीगरे राज्य पर ही आता है। एक राजदूत को तीगरे राज्य के हितों का प्रितिचित्त करने से पूर्व अपनी सरकार की स्वीकृति प्राप्त बननी होती है। एक बार सामान्य स्वीकृति प्राप्त बन सेने होती है। एक बार सामान्य स्वीकृति प्राप्त बन सेने होती है। एक बार सामान्य स्वीकृति प्राप्त कर सेने के बार प्रस्तेक व्यक्तिगत सामें बताते वे समय स्वीकृति प्राप्त बनना जल्डी है।

युद्ध के समय सटस्य राज्य वा राजनयक्ष एक युद्धरत राज्य के हितों का प्रतिनिधित्व दूसरे युद्धरत राज्य में करता है। वर्तमान में रियटजरलैंग्ड आस्ट्रिया और स्वीडन द्वारा यह कर्णा सम्बन्धित किया जाता है।

राजनियक कार्यों की सीमाएँ

(Limitations on Diplomatic Functions)

राजनयञ्ज द्वारा सम्पन्न वार्य पूर्णरूप से असीमित नहीं होते । उनके कार्यों पर अनेक सीमाएँ तथा प्रतिबन्ध रहते हैं । इनमें से रूछ निम्नलिखित हैं—

- । राजनवात को अपने सब कार्य परिमाहक राज्य की सरकार के माण्यम से करने पारिए। उसे बटी के प्रेस से सीमा सम्पर्क रखने की अनुमति नहीं दी जाती। दह परिमाहक राज्य की सरकार से जो भी पत्र व्यवहार करता है उसे दिना यहाँ में राजना की पुर रिमेट्टित के प्रवासित नहीं कर राकता। यहाँ की जनता से मी राजनवात शीमा सम्पर्क रचारित नहीं राज सकता है। उसे राज्याच्या के माध्यम से ही जनता को सम्बोधित या सर्पित करना होता है।
- 2 राजनयन्न के कायों पर प्रत्येक देश के राष्ट्रीय कानून द्वारा कुछ सीमाएँ लगाई जाती है जो प्रत्येक देश में अलग अलग होती है। कुछ सीमाएँ अन्तर्राष्ट्रीय कानून सथा व्यवका हारी लगाई जाती है। इनमें कुछ सामानता दिखाई देती है। इत्तुमार राजनयन्न परिद्याहक राज्य के आन्तरिक सरकारों गानती में किसी प्रकार का इस्तरों गहीं कर सकता। वह वहीं के व्यवस्थापन एव प्रशासन में अपनी टींग नहीं अहा सकता और न ही व्यवस्थापिक या कार्यपातिका के कार्यों की रायंकनिक रूप से आनीमा कर सकता है। यदि वह वहीं की व्यवस्थापिक के कार्यों की रायंकनिक रूप से आनीमा कर सकता है। यदि वह वहीं की व्यवस्थापिक में प्रकट मत वी आनीमना करता है तो इसका कहा दिखेंग किया जाएगा। यदि वह अपने स्वत्य देवारों में न्यायालय के निर्मार्थ को गतत बताता है तो

विदेश-नीति एवं राजनय (Foreign Policy & Diplomacy)

दिदेश नीति एव राजनय दो ऐसे परिए हैं जो अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की गाँधी को आगे बहुते हैं। अगत समी राज्ये ती कोई न कोई दिरेश नीति होती है तथा उसे क्रियानित करने के लिए पत्नी के अनुकल पत्निय का आपराण करना पत्ना है। उसाजें की हूँ गोंध कि तनित होते हैं। इस गुण में कोई देश अग्य देशों की अवहेलना नहीं कर सकता। वह दूसरे देशों की सिपित दित दूष्टिकोंग आकलाएँ एवं स्तिक को प्राप्त में राजकर स्वय की दिसेश नीति निर्पेत कराजि है। इसा अप में कोई देश अग्य देशों की अवहेलना नहीं कर सकता। वह दूसरे देशों की सिपित दित दूष्टिकोंग अगलाएँ एवं स्तिक कराजिए होंगा करते समय वह दुण कार्य करने का तथा कुण पर प्रतिक्या लगाने ना निर्मय संस्ता है। सम्प्रमु होते दूर मी प्रत्येक राज्य संस्ता है। अगला प्रतिक प्रत्या से सम्प्रमु होते दूर मी प्रत्येक राज्य दिस आजा प्रतिक प्रत्या से सम्प्रमु होते हुए मी प्रत्येक राज्य दिस अगला मार्थिक होता है। उसाज प्रतिक राजक आयदार आयदार अगला होते हैं। इसा कार्य में राजनय उससका मुख्य सहायक सिद्ध होता है। राजनय हाता ऐसे समान और तरीके अपनए जाते हैं जिससे अन्य राज्यों के व्यवहारों को अपने दित के अनुरूत य सदला जा सकें।

विदेश नीति का अर्थ (The Meaning of Foreign Policy)

विदेश नीति का अर्थ किसी राज्य के ऐसे व्यवहार से है जिसके माध्यम से वह अपने दिवों की पूर्ति करता है। इसके द्वारा दूपरे राज्यों के व्यवहार में वींग्रीय परिवर्तन लाग जाता है। इस परिवर्तन के अंतिरिक विदेश नीति दूसरे राज्यों के कार्यों को विद्यार नीति करता है। इसके कार्या देश निवर्तन मी करता है। इसके का अर्थ दूसरे राज्यों के व्यवहार को अर्थन दितों के अवूरूप प्रधासम्बद्ध समाधीजित करना है। इसके लिए कभी तो अन्य राज्यों के व्यवहार में परिवर्तन करने को आवस्यकता होती है और कमी व्यवस्थित से स्वार्थ सिद्ध हो जाती है। इसके राज्य अपने आवस्यकता होती है और कमी व्यवस्थित से स्वार्थ सिद्ध हो जाती है। इसके राज्य अपने साहभ्य विदेश को व्यवस्थित है से वार्त स्वार्थ से वार्ष साहभ्य हिता है। वार्ष साहभ्य हिता है। वार्ष साहभ्य हिता है। वार्ष साहभ्य हिता है। वार्ष साहभ्य विदेश से वार्ष साहभ्य सिद्ध होने उपयोगी है तो इस देशा प्रधास करेगा। रास्प है कि विदेश नीति में एक राज्य की जन स्वार्थ की काम विवर्ण को अपने राष्ट्रीय हित की पूर्वि के चिर सभी कि वार्थों को सामित किया जा सकता है जो उसके राष्ट्रीय हित की पूर्वि के लिए अस्य देशों का सूरिवर्ता का काम हिता है। वहने की पूर्वि के लिए अस्य देशों का सूरिवर्ता का काम विद्यार वार्यावाद नगए रखने के लिए सवार्तित की

कर्म है। वेतिका प्रमा (Falls Groys) के मण्युमार कियो एक का मार कोई मानवा म राजने का जिपार में हम देश की विरोधनीय है। इस प्रकार विराधनीय के ये पान्यू हों है है कहान्यक और करामामार । यह एक देश दूरत दर के बादगर को करन कर्युम्ग बातने का प्रयास करना है हो यह सम्मापनाक विरोधनीय करनाया है। विपायना विरोध मार्ग में मार्ग प्रमाण करना है हो यह सम्मापना में प्रोधन करनी करता? व इस प्रवार से विरोध मीर्थ के सम्मापना से एक्ट्रों के बादगर में परिवार निर्माण करने क्षेत्र करना के बादगर को करना करने बादगर के क्षा करना के क्षा हमारा के क्षा करना के स्थार करने बादगर के क्षा करना है।

The stand is a first and by \$1 and the stand by a stand

दिदेश नीति के तत्व (The Elements of Foreign Policy)

प्रतिक देर की विदेशनीयि के विद्याल में विक्यितियाद वर्लों का प्रमुख कर स सो दान होता है

1. प्रदीव दिवा (दिवा मंदी के निमान में स्वापिक इस्मीप्रमंद राम प्रदीव दिवा है। उसके राम्ये के प्रदीव दिवा होते हैं जो उसकी मेमाने मामिल, प्रदीव ह्यार है। उसके राम्ये के प्रदीव है। उसके राम्ये के प्रदीव है। उसके राम्ये के प्रदीव है। उसके प्रदीव है। उसके

राष्ट्रीय दि दो राजधि का हुए सामा मित्र है। मुक्ति के क्षेत्र मय होते हैं यह स्तित मित्र की कर्षिक मीत्र गाणिक दक्ति मानता हुन्ति मोजित दक्ति देवनित्र मान क्ष्मारी करी। मुक्ति को देवित्र मानदा मानदा महान्या मानदानी मित्र में महान करते हैं। मान्द्रीय वित्र की मानदानी के नित्र राष्ट्रीय दक्ति को सामा के मान में मुक्ति किया जाती है। मानदानी की मानदान मानदान करते करता मित्र करता में प्रयत्तारील रहता है जिसके फलस्वरूप राष्ट्रीय शिंक प्रत्य करना स्वयनेव राष्ट्रीय हित सन जाता है। यसर्प्यवादी सिद्धात के प्रवर्तनों के मतानुसर शक्ति के रूप में परिमाषित राष्ट्रीय हित ही समस्य अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार का आपर है।

- 2 नीति निर्माता यह दिदेश नीति वा दूसरा तत्व है। राज्यों के पारस्परिक सम्बन्धों में नीति निर्माताओं के व्यक्तिस्त दिखार दृष्टिकोण आवादार्ग एव सून्यों का द्यंत्र प्रमाव हेटा है। दो राज्यों के नीति निर्माताओं के दृष्टिकोण की पत्ना ही जनते दिखीनी ती अपनाने को प्रेरीत करती है। वर्तनान में सद्यन्त्रण्य अमेरिका की विदेशानीति के निर्वारण में रुष्ट्रपति जार्ज दूश के दिवारों का अहम स्थान है।
- अ दिवर शानि एव स्वाधित्व प्राप्त प्रतिक देश की विदेश नीति दिवर शानि की स्वपना का प्रया त परती है। विवर शानि एव स्वाधित्व के कमाद में राज्य के किसी चरेरव ही उपलिख मान्य हार्य के आधार पर विदेक नीति करनाने वाला राज्य अधिक समय तक इसका अनुवालन नहीं कर सकता। आज प्रतिक राज्य आधार पर किस समय तक इसका अनुवालन नहीं कर सकता। आज प्रतिक राज्य आधार परित्र के साथ के गई सनिवार्य एवं सामर्थ तो का साथ के गई सनिवार्य एवं सामर्थ तो का साथ का स्वतार है। उसे दूसरे देशों के साथ की गई सनिवार्य एवं सामर्थ तो का साथान करना पदता है अपया उपली विद्यसनीयता सामान हो जाती है। विदर्भ साथ करना पदता है अपया उपली विद्यसनीयता सामान हो जाती है। विदर्भ साथ अपनी विदेश नीति में इनको समुनित स्वान देशों साथ अपनी विदेश नीति में इनको समुनित स्वान देशों है। इनकी अवदेशना करने वाला बढ़े से बड़ा राज्य की अपने राष्ट्रीय हितों पर कुठारायात

परातः । वीयास्पाता एव तिद्धातः प्रत्येक देश वी अपनी विवासपात होती है तथा आर्थिक अपने विवास प्रतिकृतिक समाठन अन्यार्गाष्ट्रीय सम्बन्ध आदि के प्रस्तों पर उसके अपने विवास होती हैं। इन्हीं से वह अपने राष्ट्रीय दितों. तस्यों एवं नीतियों के लिए निर्देशन प्राप्त करता

6 राष्ट्रीय चरित्र परायता एव आवायकताएँ किसी देश की विदेश नीति का निर्माण करने में उत्तवा राष्ट्रीय चरित्र परायता राष्ट्रा आवायकताएँ महत्वपूर्ण ततों का निर्माण करने में उत्तवा राष्ट्रीय चरित्र परायता राष्ट्रीय महत्वपूर्ण होता है। महत्व की कार्य करती है। मौगोतिक वातावरण मी इस दृष्टि से महत्वपूर्ण होता है। मात्रत की असलानता वो विदेशनीति के पीछे इस देश का भौगोतिक वातावरण मुख्य करने संस्थाक राष्ट्री है। पण्डित जाहरताल नेहरू ने कहा था कि 'एक देश की दिदेश नीति असिम कर राष्ट्र है। पण्डित जाहरताल नेहरू ने कहा था कि 'एक देश की दिश्च नीति असिम कर से एसकी अपनी परायराओं से स्वय के लहती से ताथा विशेषत स्वय के अतीत से जन्म होती हैं।

 ^{**}Accountry a fore gn pol cyultunately emerges f en is own trad one from is own urgea from as own objectives and more part cularly from a son objective and the son objective and son objectives and more part cularly from a son objective and son objectives and more part cularly from a son objective and son objec

विदेश-नीति के लक्ष्य (The Objects of Foreign Policy)

प्रत्यक देश की विदेश नीते हुए तियारित लस्यों की प्राप्त का प्रयान करती है। इन लस्यों का निर्यारण राष्ट्रीय दिन के अग्रत पर विच्या जाता है। किन्तु ये दोनों सन्तर मंठ नहीं है। प्रत्येक राष्ट्रीय दिन विदेश नीते का लस्य नहीं होगा है। के दल उन्हों सार्ट्रीय किटों को विदेश नीते का लस्य बनाय गाता है जो शत्या लिए मिस्पिटियों ने देश के उपलब्ध सम्प्रतों हात प्रत्या किए जा सहते हैं। विदेश नीति के लस्यों एद सम्प्रतों में अन्य करता अत्यत्त करित है। उपहरन के लिए, हुए लेखनों के मन्त्रनुनार प्रतिप्त विदेश नीति का लस्य है जबकि अन्य ने एसे विदेश नीति का सम्प्रत अन्य है। इने प्रकार राष्ट्रीय स्त्रान्यत्व एक दृष्टि से सर्वेच्या लक्ष्य है किन्तु अन्य दृष्टि से यह नगरिकों के विवान की नुदिगई प्रदान करने बाल प्रमुख सम्पन है। प्रत्येक देश अपनी राष्ट्रीय स्वरान्त्रना की रहा के निर्

हिदेश मीति का लक्ष्य एक नहीं होता बाल प्रत्यक देश एक ही समय में उनेक लक्ष्यों की पूर्वि का प्रयास करता है। इसमें हुए लक्ष्य ऐसे होते हैं कि एनें यह अपनी प्रतियों की एसा हेतु स्त्रीकार करता है। पीते किसी पूर्वाच्य को प्राप्त करता था दिवर साधन की सरस्यता प्राप्त करता। उन्य रुस्य ऐसे होते हैं जिनका सम्बन्ध पाष्ट्रीय सीमकों से बहर अनुकूत बटाबरण करने से होता है। इस्त्रीय की स्थापना को ऐसे लक्ष्य वा बदाहारा सम्य जा सकता है। इसी प्रवास उन्यास्त्रीय कानून एवं विश्व साधन को बडाबा देश की विदेशों मीति का लक्ष्य बना जरता है।

दिदेश-नीति एवं राजनय में सम्बन्ध : दोनों एक-दूसरे के पुरक

कत्यपुनिक स्वार-सावनें के दिवान के कारा दिदेश-मैं ते कीर राज्यप का सम्बय क्रिक प्रमिख हो गाम है। पुराने समय में राज्यपड़ों की पूर्व श्लिकस्त्र करवार सेंग्र ज्या था। वे स्वय ही महत्वपूर्व समियों, सम्बर्धी पर बर्गाओं में निर्माद केने से क्षार्थिक प्रदेक प्रस्त पर महत्वर की गाम जाना सम्बर नहीं था। किन्तु लगिन स्वय-सावर्ण के क्षार्थिक के बर राज्यपड़ की प्रदान्त्रों तथा निर्मीय की प्रमाशित करने की सम्बाद कर हो गाई है क्षार्थिक निर्माय सेन की शाम किया पिक प्रकार की महत्वर में निर्दिय है जगा जाना सहार व्यवस्था के कार्ता दिशेस-गीच एवं राज्यप्त का क्षार समीगी है। पर है। आज का राजनवात गिरनार अपी सरकार से सम्पर्क रखता है तथा दिशेष समस्या जुदाब हैंने पर तुरस्त उससे परामर्था प्राय कर सेला है तेस्टर विधर्मन (Lester Pearson) के मतानुसार राजनवा इस अर्थ में दिदेश नीते है कि आजकत नीति मिर्मात स्वय हो राजनिक रिन्नियोंची का बार्च करते हैं तथा स्वय अपनी नीतियों को कार्यस्त ये हैं इतिदेन रिखर सम्मेलनों या पिदेश मित्रवाँ के सम्मेलनों के सनायार सुनने में आते हैं। सन्य व्यवस्था और उससे अनेक राज्यों के साम्मेल होने से राजनवा को विदेश नीति से पूथक वरने वाला होत्र कम हो गया है। इस प्रवार वर्रमान सन्दर्भ में विधारवों का यह कहना प्रयोग्य सारे हैं कि दिदेश नीने व राजनव सन्तन्त्रीक हैं।

राज्यों की राज िि तथा उनकी दिदेश नीते का निर्धारण देश के राजनेता करते हैं और विदेश मीति का क्रियाचयन राजदूतों तथा अन्य राजनियक अधिकारियों द्वारा किया जाता है। राज्य की दिदेश नीति के निर्माय में उस राज्य की सामरिक स्थिति और सैनिक शक्ति का बड़ा योग होता है। प्राय कहा जाता है कि राज्य जितना अधिक संशक्त होगा उता। ही सकल उसका राजनय होगा । जब मीति निर्माता अपने उदेश्यों का निर्धारण कर टेने हैं और दिन चन चंदेश्यों की प्राप्त का प्रश्न छठता है तो यहीं से राजनय का प्रमाव दृष्टिगोपर होता है। विदेश नीति के क्षेत्र में राज्य की सक्रियता बहत कुछ कुशल राजनय पर निर्मर करती है। राज्य प्राय चार विकल्पों के आवार पर वार्य करता है राजनीतिक (राजनय) आर्थिक मार्थिजानिक और सैनिक । इन विकल्पें में राजनीतिक विकल्प को प्राय प्रमुखता दी ज्वती है। यसे समय और परिस्थित के अनुसार राज्य उपरोक्त में से कोई भी विकल्प अपना सवता है अथवा अनेक विकल्पों का समुक्त रूप में प्रयोग कर सकता है। राज्यों द्वारा प्रायः राज ितक अर्थात् राजनय के मार्ग का ही अधिकाधिक उपयोग किया जाता है और विदेश नीति का उदेश्य मित्र राज्यों की संख्या बढाना तथा रात्रु राज्यों की सच्या घटाना और महत्वपूर्ण बनाना होता है। राजनय के माध्यम से विदेश नीति के इन सहयों या उदेश्यों को प्राप्त किया जाता है। वास्तव में एक देश की कुशत विदेश नीति उस देश के कुशल राजनय का परिणम होती है। हम उसे दूसरे शब्दों में राजनय का कैशल कह सकते हैं। विदेश नीति और राजनय का सम्बन्ध इस रूप में भी घनिन्छ है कि आज के सुग में तब रिकी दृष्टि से घाहै अकेले विदेश दिमाग को विदेश नीति का निर्माता माना जाए लेकिन व्यावहारिक रूप में राजदूत इसके निर्माण में महत्वपूर्ण मूमिका का निर्वाह करते हैं। विमित्र राज्यों में रिथत राजदूत अपने प्रतिवेदन विदेश विमाग वो प्रस्तुत वस्ते हैं जो उन राज्यों के सम्बन्ध में नीति के निर्धारण में अपना पूरा महत्व रखते हैं।

इस पनिष्ठता का उन्हें यह नहीं है कि राजनय और विदेश नीते एक दूसरे के पर्याप है। इसके स्थान पर यह फहना उपयुक्त होगा कि विदेश नीते और राजनीति में घोली दानन ना साथ है और वे एक दूसरे के पूरक हैं। याजनय और दिदेश नीति को एक दूसरे के पूरक के रूप में प्रसुत्त करते हुए वी एम पी जाय ने लिखा है कि—

'राजनय स्वय में दिरेश नीति नहीं है। वास्तव में राजनय किसी मी देश की दिया नीति में क्रियानित करने वो क्रीय्या सच्या दिशा मीति के त्वस्यों की प्रतिक का सामन है। इनके मध्य मेद करने वासी दिनाजक रेखा खींगना अंति बठीन है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं क्योंकि ये एक सूतरे की सहायता के बीर पत नहीं सकते। राजनय दिदेश गीति का बढ़

दिदेश नीति और राजनय एक ही सिक्के के दो पहल हैं। सर दिक्टर वैलेजली का भी

साधन है जिसकी सहायता से अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की प्रक्रिया चलती रहती है । दर

करना उतना ही असम्भद है जितना नीति और कर्तव्य में ।

पडते हैं तथा आवश्यकता पडने पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों शिखर वार्ताओं आदि में लेना पडता है। डा हैनरी कीसिंगर विदेश समिद होते हुए भी एक मफल राजदत कार्य कर रहे थे। एक सकल राजदत के रूप में इन्होंने अमेरिकी दिदेश नीति के क्रियान में उल्लेखनीय योगदान दिया था। दियतनाम युद्ध की समाप्ति चीन द रूस के संच सन्दन्य परिवनी एशिया में युद्ध का अन्त और निम्न सीरिया जोर्डन के सच्च नए सन का श्रीगारेश इन्हीं के कुशल राजनियक प्रयत्नों का परिचाम था। हॉलैण्ड में तो दि दिमाग के किसी सदस्य अथदा राजदूत को ही विदेश मन्त्री बना दिया जाता है जो उ कार्यकाल की समाप्ति पर दापस दिदेश सेदा में आ जाता है । हीटल ने अपनी पुर डिप्लेमेसी के एक फुटनेट में 1861 में प्रकृशित एक प्रतिदेदन का उल्लेख करते उपर्यंक्त मत का समर्थन किया है। इस प्रकार जहाँ विदेश नीति राष्ट्रीय हित सम्दर्बन नीतियों का निर्धारण व निर्माण करती है, दहीं शतकार समूकी यारख्या और समूर, परिसि और आदश्यकतानुरूप उसके प्रयोग के सचालन की कार्यदिधि है। दैसे तो दिदेश और राजनय एक दूसरे से जुड़े हुए हैं परन्तु राजदूत स्वय दिदेश नीति के निर्माण में प्र रूप से कहीं भी सम्बन्धित नहीं होते । ये स्वय इसका निर्माण नहीं करते यदापि अप्र रूप से वे विदेश नीति के निर्माण अथवा उसे स्वरूप प्रदान करने में सहायक अवस्य हैं क्यें के कोई देश दूसरे देश के प्रति अपनी नीति का निर्माण उसके राजदूतों द्वारा वि देशों की राजधानियों तथा सयुक्त राष्ट्रसथ आदि अन्तर्राष्ट्रीय सगठनों के प्रमुख कार्या से समय समय पर भेजे गए प्रतिदेदनों के आधार पर करता है । बाइल्डस के शब्द

विचार है कि राजनय और विदेश नीति एक दसरे के पुरक हैं क्योंकि एक के सहयोग

दिना दसरे का कार्य नहीं चल सकता । राजनय का विदेश नीति से नित्र कोई अरि

नहीं । ये दोनों निलकर एक प्रशासनिक नीति का निर्माण करते हैं । नीति व्यह रघना निर्धारित करती है तथा राजनय चतरता को । पैडलफोर्ड और लिंकन का यही मत

उनके शब्दों में 'राजनय और विदेश नीति अन्योन्याश्रित हैं। इन दोनों के बीच स्पष्ट ि

मार्गेन्थों की भी ग्रही मान्यता है क्योंकि आज दिटेश मन्त्री प्रधान मन्त्री राष्ट

आदि व्यापक रूप से राजनय का उपयोग कर रहे हैं। इस प्रकार राजनय और विदेश

तथा राजदत और विदेश मन्त्रियों के मध्य भेद कम होता चला जा रहा है। मार्गेन्ये

ग्राब्टों में 'डिटेश मन्त्रालय के सच्च राजनयन अपने देश की दिदेश नीते को निर्व

करता है जिस प्रकार दिदेश मन्त्रालय दिदेश नीति का तन्त्रिका केन्द्र है. उसी प्र

राजनियक प्रतिनिध उसके दरस्य सुत्र हैं जो केन्द्र एवं बाह्य जगत में दोनों और

यातायात बनाए रखते हैं। सैदो भी दिदेश नीति और राजनय में भेद नहीं करता है। इ अनुसार डिप्लोमेटिस्ट' शब्द के अन्तर्गत सनी लोक सेवा अधिकारी आते हैं चाहे ये वि

विनाग के गृह क्षेत्र में कार्य करने दाले हाँ अधवा विदेश द्तादासों में । सैटो तो विदेश म

तक को मले ही वह राजनीतिज्ञ ही हो राजनय का एक अग मानता है क्योंकि उसे दिदेश मन्त्रियों प्रतिनिधयों राजदतों आदि से समय समय पर वार्ता समझैते आदि व

"मापि राजनियक अपनी अपनी सरकारों ही विदेश नीति वा आदश्यक रूप से निर्माण स्वय महि करते फिर भी समुद्र पार अपने अपने पदों से मेजे गए प्रतिवेदनों के माध्यमन्ते वे ऐसी नीति के निर्माण में अध्या पत्ते स्वरुक्त प्रदान करने में महत्वपूर्ण मूरिवा अदा करते हैं। ये प्रतिवेदन सादा ही विदेश नीति के निर्माण में मूलयान कच्चे मात के रूप में माने जाते हैं।" के एस पनिकार का भी यही सत है।

राजनय के क्षेत्र में सफलता राजदूत के गुण और योग्यता वे साथ साथ देश की विदेश नीति की बुद्धिमसा पर भी निभंर करती है। प्रसिद्ध विद्वान वै लियर्स भी दत द्वारा मेजे गए प्रतिवेदनों के महत्व को स्वीकार करता है जिसके आधार पर विदेश नीति का निर्माण होता है वर्षोंकि विदेश नीति में निर्णय लेवे का प्रगाद सम्बन्ध राजनय के एक प्रधान कार्य प्रतिवेदन देने व वार्ता करने से हैं । वैलियस के शब्दों में ग्रावि सभी सफलताओं या दिफलताओं का अन्तिम दायित्व देश में स्थित सम्राट एवं उसके मन्त्रियों का है तथापि यह उतना ही सत्य है कि ये मन्त्री विदेशों से प्राप्त सूचनाओं के आधार घर ही कार्य करते हैं तथा देश की सरकार पर एक प्रवद्ध राजनयंत्र का सम्मादित प्रभाव इहत दिस्तत हो सकता है। विदेश में कार्य वरने वाले अयोग्य व्यक्ति अत्यन्त ब्राह्मितापूर्ण निर्देशों का कोई उपयोग नहीं कर पाते तथा योग्य व्यक्ति अपनी सचनाओं एवं सझावों की यथार्थता एवं सर्कसगतता द्वारा अत्यन्त साधारण निर्देशों का उत्कृष्टतर उपयोग कर राकते हैं। अत राजनियक कार्यों का दायित्व देश में स्थित सरकार और उसके विदेश में स्थित सेवकों हारा लगमग समान रूप से वहन किया जाता है। इसी प्रकार सर्वाधिक सफल राजदत के लिए भी अच्छी विदेश नीति का निर्माण आवश्यक है । क्या मेटरनिख तेलेरों अथवा पानसेट अकेले ही अपने कार्यों में सफल रहे थे ? द्वितीय महायुद्ध के पूर्व जर्मनी और इटली में फ्रांस के राजदूत पानरोट ने अपनी सफलता को यह कह कर टाल दिया था कि वास्तव में तो मुख्य रूप से सूचना देने वाला अथवा सदेशवाहरू था । यह तो पानसेट की विनक्षता थी कि उन्होंने अपने को तुच्य प्रदर्शित किया दिन्तु यह सत्य भी है कि उस समय के फ्राँस की शक्ति व सफल दिदेश नीति उसकी वन सहायक नहीं रही थी। निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है "किसी देश को दूसरे देश के साथ सम्बन्धों में विद्वतापूर्वक विदेश नीति तथा निपुण योग्य कुशल एव विद्वतापूर्ण राजनय के मध्य उधित सामजस्य बैठाना ही पड़ता है। एक के उपित स्वरूप के अमाव में दूसरे का स्वरूप निश्चित ही विकृत हो जाएगा।" अत कुराल राजनय ही विदेश नीति के तस्यों को राजल बना सकता है।

राजनय और विदेश नीति में अन्तर

राजन्य और दिदेश नीति एक दूसरे के पूरक है तथानि इनमें विरोध भी है इनमें परस्पर महत्वपूर्ण अन्तर या मेद भी है। इस विकटर बैनेजानी के अनुसार "मंजन्य दिदेश मौती नहीं है वरन इसे क्रियानिवत करने वाता एक अभिकरण है।" राजन्य और दिदेश मौती के बीध साधन और राज्य का सम्बन्ध है। ये आर माइस्डम के मागुद्वाप "विदेश मौति के बीध साधन और राज्य का सम्बन्ध है। ये आर माइस्डम के मागुद्वाप "विदेश मौति को साधन की सम्बन्ध का मुख तत्व है जबकि राजन्य परेसी प्रक्रिया है जिसके हात इस मौति को समाजित किया जाता है। विदेश मौति की रचना केल व्यक्ति साधना

310 राजनय के तिद्धाना का रूप चाह कुछ भी हो किन्तु दिदेश नीति के मूल प्रश्नों का निर्मय उच्च स्तरीय अधिकार हारा किया जाना है और महत्वपूर्ण राज्यूतों का उसमें बहुमूल्य योगदान होता है। राजनय द्वारा दिदेश नीति को क्रियान्दित करने के लिए संदीदर्ग यन्त्र सौंपा जाता है। दिदेश नीति दैदेशिक सम्बन्धें की आत्मा है जबकि राजनय वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा दिदश मीति को सबलित किया जाता है। हैराल्ड निकल्सन ने राजनय और दिदेश नीति के अन्तर को सफ्ट करते हुए लिखा है कि 'राजनय और विदेश मीने दोनों राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय हिलें ने सानजस्य स्थापित करने का प्रयास करते हैं। दिदेश नीति राष्ट्रीय आवश्यकताओं की सामान्य दाराण पर अचारित होती है। जबकि राजनय कोई लक्ष्य न होकर एक साधन है। यह उद्देश्य नहीं दरन एक तरीका है। राजनय बुद्धि समझौता एवं हिलों के दिनिजय द्वार सम्प्रम् राज्यों के बीच प्रापुत संघर्ष पर रोक लगाता है। यह ऐसा अभिकरण है जिस मच्यम सं दिदेश मीति युद्ध की उपणा समझौत द्वारा उपने उदेश्यों को प्राप्त करती है। हैरल्ड निष्टल्सन ने राजनय को केदल शानिकालीन उपाय माना है जिसके अमञल होने पर मृद्ध छिड जात है। पामर तथा परकिन्स के मतानुसार युद्धकाल में राजनय समार नहीं हो जन्म दरन कि हम से कार्य करता रहता है। दिदेश नीति की नीति शाजनय का रदेश्य दयासम्बद शानिगार्ग साधनों स दश की रक्षा करना है। किना यदि अपरिहाय बन ज्यू तो राजनय सैनिक कार्यलाही को प्रत्येक महायता देकर दशा की मुख्या करने में योगदान करता है। युद्धकाल में राजनय के काय शानिकाल की अधेमा नित्र होने हैं। यदि एक राज्य अन्य राज्यों के साथ आने सम्बन्धों में सफलन प्राप्त करना चाहना है तो उसके

लिए सम्म राज्य और बुद्धियाँ ^{किने}र मीनि का सम्म देंछरीय है। जह दिदेश मीनि तया राजनय एक दूसरे के पूरक हैं दहीं इनमें दिरोप भी है। नाजन हिल के अनुमार दिदश मीने प्रकृति से ही सत्ता सुचक हैं एडकि राजन्य प्रयानन क्रियानिये है। दिदर नीनि दिदरों के साथ सम्बन्धें का मार है जब कि राजन्य वह प्रक्रिया है जिसके मध्यम स दिदेश मीरि क्रियाचिन की छारी है। यानर और छहिंस के शर्म में एक सार है तो दूसन उत्तरी प्रक्रिया। सर दिकार दैले न्ली नी दोनों के काय अनार को स्टीकार बारे हैं। इसके पर में प्यानय मीरि मही है। अपनु राव इस मिरि को कियानिस बानी हा संघन है " हनड हे पूर्ण हेसर पिरमन में " एक बार हहा था कि शासनय नीनि निर्माण नहीं कारी है। यह री जमका सम्प्रेचन तथा ब्याच्या कानी है।" इस के मार्गेन्से ने इस अल्ला के इस प्रकार स्वयंद्र किया है— 'दिदेश मन्त्रालय मीति निर्माण करने दाला अभिना है। यह निर्देश मीति वा मील्फा है जहाँ बढ़ा ससार से अनु द एकत्रिन किए पारे है तथा इनका मूल्याकन किया जाता है जहाँ निदेश मीनि निवारित होती है तथा छन अपने का निस्मरण होगा है जिनका राजनियक प्रतिनिध दामणिक निदश मीरि में रूपनर करते हैं। जबकि जिदेश मन्त्रालय विदेश का मरिनका है राजनियत प्रतिनिध इसकी अँखें कान, मुख अपुलियों तथा एक प्रकार से इसके प्रमाणित अदलार है।

मार्ग्नदो ने आने लिखा है कि "राजनियक प्रतिनिध देवल अंखें और कान ही नहीं हैं ए दिदेश नीति के तिन्त्रका केन्द्र को इसके निग्मों के सम्मदन के लिए बद्धा ससार की घटनाओं की सूबना देते हैं। राजनियक प्रतिनिधि मुख और हम्य भी है जिसके द्वारा किया केन्द्र से सतन अने के रहाँ एवं कार्य में रूपन्या होता है। निकल्सन में राजनप सर चार्ल्स वेस्टर ने अपनी पुस्तक राजनय की कला तथा प्यवहार (Art and Practice of Diplomacy) में दिदेश नीति और राजाय के मध्य अन्तर को स्वीकार किया है। वेस्टर के अनुसार राजनय युक्तेशत है हो विदेश नीति पृष्ट रचना । युद्ध कीरात है हो विदेश नीति पृष्ट रचना । युद्ध कीरात के अभाव में पृष्ट रचना का कोई महत्व नहीं है हमी प्रकार राजनय के अभाव में पिटरेश नीति मी प्रार्थ है। हमें यह स्वीकार करना ही पदेशा कि एक सकत एव योग्य राजनय के अभाव में एक उत्तम पिटरेश नीति मी असकत सिद्ध होगी। प्रार्थन मारतीय स्वेतक भी सम्

दुद्धि शस्त्र प्रकत्यडगो धन सवृतिक क ।

चार सामी दत मुख पुरध कोदपि पार्किव ॥ माध्य १/६३

अर्थात् राजा की दुद्धि उसका शस्त्र मन्त्री अय् ौति की गुप्तता कवय गुप्तवर नेत्र एव दृत मुख है।

इस प्रकार राजपूत की योग्यता है विदेश नीति को सकत बना सकती है। उसकी मूनिका संदेशवाइक से कदि अधिक है। मिनित विदेश नीति को यह दूसरों के समझ दैसरे रखता है साथ उसकी योग्यता और सफलता निर्माद करते है। इस प्रकार वह अध्यो विदेश नीति को सफत व असकत बनाने की हमता रखता है। साथ ही यह दूरी विदेश नीति के दूरे परिचालों को रोकने की मी हमता रखता है। एक योग्य और प्रक्रिया नीति के दूरे परिचालों को रोकने की मी हमता रखता है। एक योग्य और प्रतिक्शाती राजपूत अपने देश को सम्मान और प्रतिक्शा दिता सकता है। दिदेश नीति को सफतता राजप्य के उसन प्रयोग पर ही निर्मत करती है। खाउँसा में यह कहा जा सकता है कि किसी मी राज्य को यदि अपने देशिक सम्पर्यों में सफलता प्राप्त करती है तो दुविसामपूर्ण निर्मारित विदेश नीति और योग्य निपुण एव कुशत राजप्य का सम्पर्यों असकता स्वार्थ कर स्वार्थ है। कार्या के सफलता सफता है कि किसी मी राज्य को यदि अपने देशिक सम्पर्यों में सफलता प्राप्त करती है तो दुविसामपूर्ण निर्मारित विदेश नीति और योग्य निपुण एव कुशत राजप्य का सम्पर्यक्त स्वार्थक है।

विदेश-सेवा एवं विदेश-कार्यालय (Foreign Service & Foreign Office)

राजनय के समालन के लिए उपयुक्त कार्यालय एव सेवीवर्ग अनिवार्य है। इसके कार्य की प्रकृति के आधार पर सेवा की सर्वे और परिस्थितियाँ अन्य संवीवर्ग से मित्र होती है। सामान्य धारणा के अनुसार विदेश-सेवा को अत्यन्त आकर्षक और सम्मानजनक व्याप्त मान्य पारणा के अनुसार विदेश-सेवा को अत्यन्त आकर्षक और सम्मानजनक व्याप्त मान्य पारणा है। इसके सदस्य हाय के घोर रिपक्त होते हैं और सामाजिक रोति-रिवार्य में व्यस्त होते हैं। यह धारणा इस गलत विरवास पर अध्यारित है कि विदेश सेवा के सदस्य अधिकतर उच्च क्षेणी के वे लोग होते हैं जो अत्याहार की गर्मों में तथा सिव-वार्ताओं के व्याप्त सामिव-वार्ताओं के व्याप्त सामिव-वार्ताओं के व्याप्त सामिव-वार्ताओं के व्याप्त सामान्य सामिव-वार्ताओं को व्याप्त मान्य वार्ता के वार्त्य अध्यवाद इसी प्रकार का था। अभी भी कुछ लोग इन्हीं परम्पराओं को आदर्श मान्यक्त प्रवार्त है। किर भी वर्तमान में इस स्थिति में काली परिवर्तन आ गया है। आज विदेश-सेवा के सदस्य अभिजात्य अथवा धानिक वर्ग के प्रतिनिधि नहीं होते। वे विदेश सेवा के सदस्य होते हैं तथा परिवर्ग जीवन व्यत्तीत करते हुए अपने देश के लिए महत्वपूर्ण सेवार्य प्रवार्त करते हैं। विदेश-सेवा और विदेश-कार्यालय अथवा बातिक करते हुए अपने देश के लिए महत्वपूर्ण सेवार्य प्रवर्ग करते हैं। विदेश-सेवा और विदेश-कार्यालय क्ष्य जीवन व्यत्नीत करते हुए अपने देश के लिए महत्वपूर्ण सेवार्य प्रवर्ग करते हैं। विदेश-सेवा और विदेश-कार्यालय क्याप्त करते हुए अपने देश के लिए महत्वपूर्ण सेवार्य प्रवर्ग करते हैं। विदेश-सेवा और विदेश-कार्य व्यव्यक्ति करते हुए अपने दश्च के स्वर्ग में विदेश सेवार्य सेविंग करते।

समुक्त राज्य अमेरिका ने जह से अपने महाद्वीप और दूसरे द्वीपों के देशों से सम्पर्क स्थापित किया तमी से यहाँ विदेश-सेवा का महत्यपूर्ण स्थान रहा है। इनके कार्य एवं सेवा की शतें समय-समय पर बदतती रही है। इन पर स्थान का भी प्रमाव परकार है। कुछ सेवाएँ शानिपूर्ण एव आकर्षक स्थानों पर कार्य करती हैं जबकि दूसरी सेवाओं को जमदी क्षेत्रों मे कार्य करना पढ़ता है। विदेश सेवा के सदस्यों को ऐसे स्थानों पर भी देखा जा सकता है जहाँ युद्ध और क्रानियों आम बातें हों। एस्मर दिस्तरे (Elmer Plischke) के कथनानुसार "विदेश सेवा का जीवन हमेशा आरामदासक नहीं होता। इसके दिन हमेशा शानिपूर्वक कागज मेजने और रातें पढ़ी एव मोजों में व्यतीत नहीं होतीं।" विदेश मन्त्री हाल के कथनानुसार "विदेश सेवा के सदस्यों को मेलेरिया का अधिक अनुनव होता है।"

^{1 &}quot;Life in the foreign service is not always one of ease of peaceful pushing during the day and cock tail parties, dinners and dazzling social affairs at night." — Elmer Pluchke

अमेरिकी विदेश सेवा का योगदान (Role of the American Foreign Service)

संयुक्तराज्य अमेरिका की दिदेश सेवा के शदस्यों की शुक्ता संशस्त्र सेताओं के सदस्यों से की जा सकती है जो अपना जीवन अपने देश की सेवा में लगा देते हैं। इस व्यवसाय को पर्याप्त सम्मान प्राप्त है। अनेक महत्वाक्षीरी युवक और युवतियों इस व्यवसाय की ओर ईयों और आशायुर्ण पुरि। से देखते हैं। दिदेश सेवा के योगदान के सम्बन्ध में मुख्यत निम्नोतियित बातें कहीं जा सकती हैं—

- 1 विदेश सेवा के सदस्य विदेशों में अमेरिकी जनता और सरकार का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनको विदेश दिमाग की और्ख कान और मुँह कहा जाता है। समुद्र पार के देशों में ये सरकार की मुजा का कार्य करते हैं और उन्हीं के माध्यम से अमेरिकी नीति और प्ययहार कार होते हैं।
- 2 विदेश सेवा सरकार वी एक स्वतन्त इकाई है। यदापि इसके आन्तरिक प्रशासन पर दिदेश विमाग के ज्याब अधिकारियां का निरिक्षण रहता है तथा इसके प्रज्ञ व्यवहार प्रत्यक्त रूप से विमाग के साथ होते हैं किन्तु कानुत्ते कर थे यह विदेश विमाग की पर इकार्य मात्र नहीं है बरन् पृथक् विदेश सेवा है। कानुत तथा व्यवहार दोनों दृष्टियों से विदेश सेवा को दिशेबाधिकार की स्थिति प्रान्त है। यह बहुत कुछ आत्म प्रशासित है। कुछ । संस्था अपने विदेश के साथों और क्याब विदयों में प्रत्य विदयों में प्रत्य निर्माण स्वतन्त्र आत्र प्रतासित है।
- 3 विदेश सेवा एक दोत्रीय अभिकरण (Field Agency) है। अमेरिकी व्यवस्था में विदेश सामन्यों का साधानन राष्ट्रपति का मौतिक उत्तरपादिव और कार्य माना पत्ता है। विदेश समित्र पत्ता स्थान स्थान स्थान है। विदेश समित्र चलका मुख्य परानर्यदाता और प्रमुख एजेंट होता है। विदेश निमान विदेश मन्त्री का कार्यात्य होता है और विदेश सेवा चलका दोत्रीय अभिकरण है। वेदेशिक सामन्यों की सामान्य नीतियाँ विदेश सिवा और विदेश सिवा कार्यान्य स्थान के परामर्थ पर कार्येक्ष साथा प्राप्ता प्रमुख हारा निर्यार्थिक कार्यान्य विदेश सेवा इन नीतियाँ को ज्यांनिक करती है।
- 4 विदेश सेवा द्वारा विदेश गीति के स्वरूप पर अपास्वत करन से पर्यादा प्रमाय दाला जाता है। इसके सदस्यों द्वारा प्रस्तुत प्रतिदेदन विदेश गीति राष्ट्रपी गिणीयों का रूप जाता है क्योंकि उसके सहस्यों द्वारा प्रदेश सेवा के जसरायिक्तों का महत्व वढ जाता है क्योंकि उसके सही और निरिषत प्रतिदेदनों के आधार पर न्यायपूर्ण गीतियों और तस्वय निर्मारित किए जाते हैं किन्तु सापरवाहीपूर्ण प्रतिदेदनों के अधार पर न्यायपूर्ण गीतियों और तस्वय निर्मारित किए जाते हैं किन्तु सापरवाहीपूर्ण प्रतिदेदनों से अनेक राजनयिक कठिनाइयाँ जयत्र हो जाती हैं।
- 5 विदेश सेवा का स्थान एव दायित्व मुख्यत सेदा का है कार्यानियित का नहीं है। विदेश सीति को क्रियानियी विदेश सेवा के सरस्यों के अवितिष्ठ व्यक्तियों और अनिकरणों हारा भी की जाती है। राष्ट्रपति या दिश्त मन्त्री स्वय त्रिये वार्तिय स्थापित करते हैं। अनेक बार व्यक्त्यति अपना विदेश मंत्रिय प्रतिकित करते हैं। अनेक बार व्यक्त्यति अपना विदेश मंत्रियित निवास करते हैं या विदेश मन्त्री दूसरे राज्यों के विदेश मन्त्रियों से प्रतिक राष्ट्रपति अपना विदेश स्वर्णक स्थापित करते हैं। संयुक्त राष्ट्रस्था उत्तके विशेष अभिकरण तथा अन्य अन्तर्राष्ट्रीय साम्त्रकों में प्रतिनिध्यत्व की दृष्टिय सिंग के विदेश में कि अपना प्रत्यत्व की दृष्टिय सिंग की प्रतिका सिंग का उत्तक्तिया विदेश में विदेश मति सम्बन्धी निर्णयों की घोषणा प्रत्यत्व रुप से विदेश मति सम्बन्धी निर्णयों की घोषणा प्रत्यत्व रुप से विदेश मति सम्बन्धी निर्णयों की घोषणा प्रत्यत्व रुप से विदेश मति सम्बन्धी निर्णयों की घोषणा प्रत्यत्व रुप से विदेश मति सम्बन्धी निर्णयों की घोषणा प्रत्यत्व रुप से विदेश मति सम्बन्धी निर्णयों की घोषणा प्रत्यत्व रुप से विदेश समान्त्र सामित्र सम्बन्धी निर्णयों की घोषणा प्रत्यत्व रुप संविद्या स्वित सम्बन्धी निर्णयों की घोषणा प्रत्यत्व रुप संविद्या स्वित सम्बन्धी निर्णयों की घोषणा प्रत्यत्व रुप संविद्या समित्र सम्बन्धी निर्णयों की घोषणा प्रत्यत्व रूप संविद्या सम्बन्धी निर्णयों की घोषणा प्रत्यत्व रुप संविद्या स्वित सम्बन्धी निर्णयों की घोषणा प्रत्यत्व रुप स्वत्व स्वित्य स्वति सम्बन्धी निर्णयों की घोषणा प्रत्यत्व रुप स्वत्व स्वत्य स्वत्व स्व

314 *राजनय के सिद्धान्त* रेडियो अथदा समाचार पत्रों के माध्यम से की जा सकती है। उपर्युक्त विरतेषण से यह

रेडियो अधदा समाधार पत्रों के माध्यम से की जा सकती है। उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि सयुक्तराज्य अमेरिका की विदेशानीति के लक्ष्यों को प्राप्त करने में दिदेश सेवा का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

अमेरिकी विदेश-सेदा का विकास (Development of the American Foreign Service)

संपुत्तरच्य अमेरिका की विदेश संदा का सत्त्व दिकास होता रहा है जिस विभावितिक रूप से विश्वेदित किया जा सकता है

जन्म अमेरिका के प्रारंभिक हुरीहास में अनेक प्रमादशाली राज्यवाँ का योगान रहा है। उन्होंने अनेक विषम परिस्पितियों में जटिल समस्याओं के निराकरण के लिए उस्सेखरीय करम उद्दण्ड हरिलए इस लाल को अमेरिकी राज्यय का स्टर्गहास कहा जाता है। इस समय के राज्यवाओं में जीन एडन्सा जीन जे याँगार जिल्सान और तिलासिकी अपने उस्लेखनीय नवाओं में जीन एडन्सा जीन जे याँगार जिल्सान और तिलासिकी अपने उस्लेखनीय नवाओं में जीन एडन्सा जीन प्रारंभ के बार में अमेरिका में दिदेश सेवा का विकास योगी गति से हुआ। गुज़ है। 1790 में अमेरिकी कॉग्रंस ने राष्ट्रपति के दियों प्रतिनिधीयों पर मस्तीत हजार डॉल्स निवर्ष व्याव करने का अधिकार दिया। सन् 1818 में कॉग्रंस ने विदेश स्त्रीतिया हजार डॉल्स निवर्ष व्याव करने का अधिकार दिया। सन् 1818 में कॉग्रंस ने विदेश स्त्रीतिया और देतानी के विशेष राज्यिक पदी सी एक पृथक्त सस्या के रूप में प्रारंभ में मार्ग में प्रारंभ की पर विदेश सीता का प्रयस्थ था। इसी प्रकार वाणिज्य दूनावास सेवा भी एक पृथक्त सस्या के रूप में प्रारंभ में मार्ग में नी गई जो 1924 तक राज्यिक केवा सी नित्र रही। प्रारंभ में राज्यिक सेवा में तीन रही। प्रारंभ में राज्यिक सेवा में मित्र रही। प्रारंभ में राज्यिक सेवा में प्रारंभ प्रविचार हुवा और 1830 के अन्य राक संयुक्त स्वाच्य की गई। इस सेवा वीच गति से विवास हुवा और 1830 के अन्य राक संयुक्त सम्याव के नहीं में अभेरित का प्रारंभियत कर साज्यवाक करनिया सेवा सेवा में अभेरित का प्रारंभियत कर साज्यवाक करनी में अभेरित का प्रारंभियत कर साज्यवाक करनी में अभेरित का प्रारंभियत कर साज्यवाक करनी में अभेरित का प्रारंभियत करने प्रारंभ का सद्या कुता है भी भीरित का

1850 के मुपार र सन् 1812 के मुद्ध के बाद अमरिश की क्रीय मुख्यत. घरेलू मामलों में बेन्तित हो गई। चार्जमिक और वर्णमध्य दुतावारों में की गई मिदुकियों लूट व्यवस्था में में मिद्र हुई। एकत । १४३ में तत्वार्टिंग विदेश मन्त्री तिविगरटन ने जीव के बर चारप्रचित के समुख एक प्रत्येदन प्रस्तुत किया। उसमें यह सिकारिश की गई कि चारपूरी के प्रमुख एक प्रत्येदन प्रस्तुत किया। उसमें यह सिकारिश की गई कि चारपुर्धी और बण्णियक दूतों के देवन तथा अध्य सुरिवाओं में वृद्धि की ज्यार लोक कर्ते व्यक्तिगत आय पर निर्मर न पहना परे। इन सुकारी पर कीव्रेस ने बीस वर्ष बद दिवार किया और 1 मार्च 1855 तथा 18 अगस्त 1856 के अधिनयमों हारा विरोध सेदाओं के पद, वेतन मुखता देतन एक तर्वास आदि में सुधार किया।

गृहपुद और उसके बाद ' गृहपुद के बाद सपुक्त राज्य पुन. अपने आन्तरिक मनसीं की ओर केन्द्रित हो गया और सगम्म 50 वर्ष तक दिदेश सेवा में सुपन के लिए केई व्यवस्थापन नहीं हो सका। 1 मार्च 1893 के अधिनेयम द्वारा बोदेस ने पहली बार सम्पर्न सरीय राजदूर्ती की नियुक्त की अनुमति दी। इसे अमेरिकी राज्य के दिवसा को सीमा विन्क कहा जाता है। इससे पूर्व किसी भी अमेरिकी दूत को राजदूत नहीं कहा जाती था। सन् 1894 में राष्ट्रपति क्लीवलैण्ड ने फ्रांस जर्मनी ग्रेट ब्रिटेन इटली और रूस के लिए पूर्ण स्तरीय राजदत नियुक्त किए । इसी काल ने दाणिज्यक दतावास सेवा में भी ाष्ट्र पूज काराज काजाहर त्युक त्युक हार १ वर्षा करते । जानावाच्या पूजावर राज वा वा सुपार का अनियान पता । 6 फरवरी 1895 को कार्दपातिका आदेश द्वारा वाणिज्य दूरों की नियुक्ति के सान्त्य में हुछ व्यवस्थाएं की गई किन्तु व्यवहार में अमी मी लूट व्यवस्था रतारी रही ।

राष्ट्रपति टी रूजवेल्ट ने व्यापक पुनर्गठन और सुपारों की सिफारिश की। उसने राजनियन सेवा में योग्यता व्यवस्था को लागू किया। विदेश मन्त्री रूट ने उम्मीदवारों की परीक्षा के लिए एक परीक्षा बोर्ड की स्थापना की । बाद में काँग्रेस ने भी इसका समर्थन दिया । 5 अप्रेल 1906 को एक अधिनियम द्वारा वाणिज्यिक दुतावास सेवा की चयन व्यवस्था को पूर्णरूप से परिवर्तित कर दिया गया । राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने 27 जून 1906 को कार्यपालका आदेश द्वारा वाणिज्यक दूरों की नियुक्ति और पदोन्नति को 1833 के नागरिक सेवा अधिनियम के अधीन रख दिया । सन् 1909 में राष्ट्रपति टापट ने सभी राजनियक अधिकारियों को नागरिक सेवा का स्तर प्रदान किया । अब लूट व्यवस्था का अन्त हो गया और सेवीवर्ग का स्तर क्रमशः फैंचा उठता गया । 5 करवरी 1915 को काँग्रेस अधिनियम द्वारा इस व्यवस्था में और सुधार किया गया।

सन 1924 का रोजर्स अधिनियम प्रथम दिश्यपुद्ध के दौरान अमेरिकी राजनियक और दाणिज्यिक दूतावास के अधिकारियों के कार्य मात्रा और गण दोनों दृष्टियों से बढ गए । प्रारम्भ में अमेरिकी तटस्थ रहा किन्त बाद में युद्ध में शामिल हो गया । तटस्थ काल में अमेरिका के दतों ने विमित्र युद्धरत राज्यों के दौत्य कार्य सम्पन्न किए। युद्ध में जलझने के बाद भी अमेरिकी दत अनेक कार्य करते रहे । इसके लिए राजनियक और वाणिज्यिक दतावास में बिना परीक्षा के अस्थायी नियक्तियों की गईं। सेवीवर्ग की सख्या बढ जाने से अनेक गम्भीर कमजोरियाँ पैदा हो गई थीं। रोजर्स ने इस दिवय में रुचि ली। उसके विदेश मन्त्री से विधार करने के बाद इन सेवाओं के पुनर्गठन हेतु काँग्रेस में विधेयक प्रस्तुत किया जिसने 24 मई 1924 को कानून का रूप लिया । इस रोजर्स अधिनियम के अनुसार राजन्यिक और वाणिज्यिक दुतावास सेदाओं को विदेश सेवा में एकीकृत कर दिया गया तथा आपस में पद बदलने की सुविधा दी गई। सभी नियुक्तियाँ और पदोत्रतियाँ को केवल योग्यता पर आधारित किया गया । सभी कर्मचारियों को किसी विशेष पद का नाम न देकर श्रेणी में वर्गीकत कर दिया गया।

सन 1931 का अधिनियम और द्वितीय विश्वयुद्ध विदेश सेवा में आके सुधारों के बाद भी कुछ दोब कायम रहे । सन् 1928 में विदेश सम्बन्धों पर सीनेट की एक समिति ने इन दोषों पर प्रमाद ढाला । इसके निराकरण के लिए 23 फरवरी 1931 को मोत्तेस लिन्धिकम (Moses Linthicum) अधिनियम पारित किया गया । सदनसार दिदेश सेदा बोर्ड के सेवीवर्ग को पुनर्गठित किया गया और इसके सदस्य तीन वर्ष के लिए राजदर्तों के पद पर नियुक्ति के लिए अयोग्य टहरा दिए गए। वर्गीकरण व्यवस्था को बदला गया वेतन में युद्धि की गई वार्षिक छृटियाँ और मत्ते तथा अग्रिम वेतन देने की व्यवस्था की गई।

316 राजनय के सिद्धाना सन् 1927 में पूर्वक हिरेश सेता स्टून्टमरें ग किया गया । इनमें बागिज्य और कृषि विमागों को प्रतिनिधित दिसा गीड़ी । जुलाई 1939 को राष्ट्रपति रूजवेल्ट की पुनर्गवन योजना में अनिकरणों हो दिश्य सेवा के सण्यु संस्तु कि दिया गया । द्वितीय विश्वयुद्ध काल में सापीय प्रशासनिक दुवाइक्षेत्री सुद्ध पार्श्या खाएँ स्थापित की गई तथा इन्हें मूनि पहें (लेण्डलीज) युद्ध कार्य निर्माणी का निर्देश सार्ग्य पार की जासूसी एवं प्रधार और

अमेरिकी साँस्कृतिक सम्दन्धी कार्यक्रमों का सवालन आदि कार्यों का दायित्व सँपा गया। इन सभी कार्यों के लिए यह अनिवार्य था कि विदेशों में भारी सख्या में सेवीवर्ग रहे । साधारणत यह आशा की जा सकती थी कि विदेश-दिमाग एवं विदेश सेवा इन कार्यों का प्रबन्ध करेंगे किन्तु विदेश मन्त्री केरडेल हल के प्रमाव से यह निर्णय लिया गया कि मे दोनों इन उत्तरदायित्वों को न सम्मालें । इसके लिए कुछ स्वतन्त्र एव पृथक्अनिकरणों की स्थापना की गई। उदाहर के लिए आर्थिक सुरक्षा बोर्ड लैण्ड लीज प्रशासन यद सबना कार्यालय ऋण नीति सेदा कार्यालय आदि । इस व्यवस्था के कारण क्षेत्राधिकार प्रशासनिक एकता और नीति सम्बन्धी समन्दय की समस्या उत्पन्न हुई ।

विदेश सेवा के बढ़ते हुए दायित्व को पूरा करने के लिए अधिक सेवीवर्ग की नियुक्ति करना आवश्यक दन गया था। सन 1941 के मध्य में यह निर्णय लिया गया कि सकटकाल के लिए अस्यायी नियक्तियों की जए । ऐसी नियक्तियों को सहायक (Auxiliary) कहा गया । इन विदेश सेवा सहायकों (Auxilianes) का धयन सादधानीपूर्वक किया गया और योग्य अमेरिकियों को इसमें शामिल किया गया । इन सहायकों में दो प्रकार के व्यक्ति थे-विरोपझ तथा वनिष्ठ अधिकारी । दिदेशी विरोपझों में वे पुराने व अनुमदी व्यक्ति थे जिनको अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और दिल कृषि साँस्कृतिक सम्बन्ध आदि में विशेषज्ञता प्राप्त थी। इनको विशेष आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए नियुक्त किया गया । कनिष्ठ अधिकारियीं को आवश्यकतानुसार उपवाणिज्य दत के रूप में नियक्त किया गया । यहकाल में नई नियुक्तियों के लिए परीक्षाएँ नहीं ली गई थीं इसलिए पदोन्नत अधिकारियों के स्थान की पर्ति इन सहायकों द्वारा की गई।

1945 में जर्मनी और जपान के आत्मसमर्पण के बाद युद्धकाल के सकटकालीन अभिकरण समाप्त कर दिए गए । इन अभिकरणों के कुछ कार्य और सेदीवर्ग विदेश विभाग को सौंप दिए गए l युद्ध के अन्तिम दिनों में जब सहायक सेदा (Auxiliary) को हटाना अनिदार्य हो गया तो विदेश सेदा में मानद शक्ति को खपाने की समस्या उत्पन्न हो नई !

1945 और 1946 के अधिनियम 3 मार्च 1915 को अस्थाई क नून द्वारा विदेश सेवा में प्रशासनिक वितीय और लिपिक सेदीवर्ण की एक नई श्रेणी गठित की गई। येण्य सहायक सेवा के अधिकारियों की इस नई श्रेणी में रखकर स्थाई स्तर प्रदान किया गया। 3 जुलाई 1946 को दिदेश सेवा मानद शक्ति दिधेयक पारित हुआ । इसने अगले दो दहाँ में 250 विदेश सेवा अधिक रियों की नियुक्ति की शक्ति प्रदान की । दे नियुक्तियाँ किसी भी वर्गीकृत प्रेड में उम्मीददार की उम्र अनुमद व योग्यता के आयार पर हो सकती थीं । उम्मीदवार की चपयुक्तता का आधार 15 दर्व की अमेरिकी नागरिकता उन्न पूर्व सैनिक सेदा का अनुमय तथा विदेश मन्त्री द्वारा निर्धारित परीक्षा उत्तीर्ण करना आदि थे । इनके बाद नियमित विदेश सेवा की परीक्षाएँ प्रारम्भ की गड़ें । प्रारम्भ में सेवाकालीन लिखित और मैखिक

परीशाएँ प्रारम्भ हुईँ बाद में तीन एक जैसी परीशाएँ सराध्त्र सेनाओं एव मृतपूर्व सैनिकों के लिए प्रारम्भ की गईँ। सितान्दर 1947 में नियमित सामयिक व्यावसायिक परीशाएँ होने लगी।

विदेश शेवा अधिनियम 1946 उपर्युक्त मानव शक्ति अधिनियम 1946 के अतिरिक्त 13 अगस्त 1946 को विदेश सेवा अधिनियम पारित किया गया जिससे दिश्य सेवाओं का पूर्ण पूर्णानंज में गया। यह अधिनियम सामिति कर में आज मी विदेश सेवाओं का अधिन प्रत्ये के प्रत्ये के अधिन में दिश्य सेवाओं का अधिन प्रत्ये के विदेश सेवा का अधार है। इस अधिनियम में पूर्विश्याति व्यवस्थायनों को परिवर्तित और सहिताब्द कर दिया सवा परिवर्तित को सेवा को को प्रत्ये के दिश्य महत्वपूर्ण तथा व्यापन व्यवस्था हो गई। पूर्व क्षांत्री में तेवा में का मानवा और प्राथान के दृष्टि से ओक्त के दिश्य सेवाल के देश की हिर्देश में त्रा संवर्तित के मानवा विदेश सेवा के के सार निर्देश के किया की की विदेश सेवा के मानवा विदेश सेवा के मानवा विदेश सेवा के सार मित्रा के सेवा मी के सार्वा मानवा विदेश सेवा के सार मानवा के व्यवस्था की सेवा के सार आज भी प्रयक्ति के हैं हमें सेवा मी सेवा मी सेवा मी के सार मानवा मी सेवा मी के सार्वा मी सेवा म

ह्वार कभीशन की रिकारिसें 1949 1949 में प्रस्तुत ह्वार कमीशन के प्रतिवेदन में सर्वायिक विवादपूर्ण सिकारिस विदेश सेवा से सम्बन्धन थी। ह्वाकी मुख्य सिकारिस वह से वि कुछ करते से उठक की विदेश रोग और विदेश शिवार से सेवारित को कुछ वा में एक विदेश कार्य सेवार हिलार को कुछ वा में एक विदेश कार्य सेवार हिलार को शिवार हिलार को एक कर में संसुक्त कर दिया जाए। यह समुद्र पार एवं देश में सेवार प्रदान करे। प्रतिवेदन में यह करा गया कि होती को पूषक एवं में सामार्थ होंगा और अस्पानाचा की गावार परना होती है तथा एक ही समस्या के दिए दो प्रसासनों की आस्यवस्ता होती है। इसमें कहा गया कि विदेश सेवा के अधिकारी दीर्थकात का विदेशों में रहने के कारण देश से अपना सम्बन्ध और उसमान्य को देश है पूर्वारों और विमाणिय अधिकारी अन्य सम्बन्ध से कम सम्बन्ध और उसकी कम पानकारी रखते हैं।

ह्वर कमीशन वे मुख्य प्रस्ताव निन्मितिश्वत थे—(i) मवी विदेश कार्य के समी सदस्य पर और बाद सेवा करने के दिए बात्य होने चाहिए [(ii) बचारी एकीकरण कानून बाता कर दिया जाए तथारि कि निक्रमणिक के वर्षों में होने चाहिए [(iii) कुछ भेरियों को छोड़कर अपन सभी सेवीवर्ग को नई एकीकृत सेवा में समितिहत किया जाना चाहिए | (iv) जो अधिकारी विदेश विभाग से ऐसी सेवा में न आना चार्ड उन्हें सरकार की हुरारी हकाइस्ते में परिवर्तित कर दिया जाए और जो अगा चार्ड है मार्कन पर काम मीडिय एविंग कास मीडिय परिवर्ति कर दिया जाए और जो अगा चार्ड है मार्कन पर काम मीडिय एविंग से मीवित हो | (v) एकीकृत सेवा निवृत्ति अधिकार सभी चृत्रियों से एक समान होंगे | (vi) पुरक अधिकारियों पर सेवा के प्रथम 15 वर्षों में अधिक चारित्य वाले जाने चाहिए | (viv) एकीकृत में का रकुमारित्य नदी होंगे चाहिए बरन यह दिदेश मन्त्री के निर्देशन और निर्माण के अभीन रहनी चाहिए |

क्रिस्टन समिति का प्रतिबेदन हुसर कमीशन की सिफारिशों को कार्यरूप में परिणत महीं किया जा सका और हसलिए विदेश मन्त्री जॉन फॉस्टर ढलेस ने 1954 में सेवीवर्ग के सन्बन्ध में एक सरकारी समिति नियुक्त की । इस समिति का अध्यक्ष हेनरी क्रिस्टन को **Ž** 1

निवक्त किया गया । 18 मई 1954 को समिति ने एक सुदृढ़ दिदश संत्रा की स्थानन की सिकरिश की गई को प्रस्तुन किया । इसकी मुख्य सिकरिश यह भी कि दिदश मदा का एक करन दो दब के अन्दर किया एए । विदेश मन्त्री डलंस ने इसर्ट सिट रिटे की स्टीकार कर लिए और उन्हें किए दिल करने का निर्देश दे दिए । सन् 1954 से 56 तक एवीकरन के प्रयास किए गए। इस कार्य में अनेक कठिनाइयाँ सनाप हुई किन्तु विदेश सना में नए रक्त के आगमन से पर्याप्त लाम मी हुआ। अमरिकी काँग्रस ने 1954 55 1955 और 1960 के सरोपनों द्वारा 1946 के अधिनियम में अवस्यक और दोंग्रनीय परिदर्जन किए हैं और अमेरिकी दिदेश सेना का दर्नमान स्टरूप इसी सशोधन अधिनयन पर अधारित

अमेरिकी दिदेश सेवा की वर्तमान स्थिति

(The American Foreign Service Today)

अमेरिकी विदेश सेना के शॉर्ष पर विदेश सचिद या चिदेश सठी और राजदून होने हैं। इनके मैचे अमेरिटी दिदश सेन की मुख्यत हीन क्षेत्रियों हैं....निदेश सर्ग क्रियारी (FSO) दिदेश मेरा अपरित अधिकारी (FSR) और विदेश मेहा स्टॉफ अधिकारी ट्या कनवरी (FSSO तथा FSS) नदेश सदा नवानीय कमदारियें (FSLE) के मद में भी भारी सद्या में कर्नबारी कार्य करते हैं यो दिदेशों में स्थित दिदेश सेवा यदाधिकारियों की सहयान करते हैं।

राजदृत और मन्त्री (Ambassadors and Ministers)

राजदूर या मन्त्रा परिप्रहरू राज्य की राज्यारी में निशन के मुखिल का कार्य करने हैं। दे अपने स्टॉफ व सदस्यों को व्यक्तित निर्देश दने के किए रेन्स्टारी होते हैं। द राष्ट्रपति द्वारा निक्क किए याने हैं। लेकिन इनकी पुष्टि सानेट द्वार किया जाना अन्तरक है। उनमा प्रशिन्ति राजन्यत्र हाना अनिनय नहीं है और इससिए उनमा धरन बादरयन रूप से अपरीदन दिदश सेदा से नहीं किया राजा। इनकी नियुक्ति में राष्ट्रपति को प्रयास स्वेष्ण का अधिनार रहता है। ब्यान्सन प्रायः ब्यादसाधिन सेना के व्यक्तियों को राजदूर या मन्त्री पद पर नियुक्त किया राज्य है। रूपय समय पर राज्यीक नियुक्तियाँ की हाँग है। अपन्त पिदेशों ने प्रायः समा अमरिली निशन राजदूत सरा का है।

दिदेश सेदा अधिकारी (Foreign Service Officers)

यह दिदेश केंग का नाय सदाननकारी भाग है। समुद्र पार के निश्नों न अधिनाँश

महत्वम् कर्य इन अधिकारिये हारा सन्यादिन हाने हैं। ये एक समृद्र के स्वय में किएन के रुप्पर राजदून या मन्त्री का स्टॉन हाने हैं। इनना नियुन्ति मीना के परामश पर राष्ट्रावि हुत्त ही एती है जिलू इसमें राष्ट्रादि हो मोद्या हा हरिकार नहीं है क्योंकि हुना निवृत्ति का अचार तिवित और मैधिक परमाएँ होती हैं। इन अप्रिमारियों के बद का नमें रतदुरदम मारिक दुरातम और निदेश दिला में किए कि हो राजा है। दिदेश रिल्ले में निद्क रुदिनरी रिदेश मेन रुदिनरा ह नम म एन एन है।

الأو بعد في بدائم والدين بالمعلق والمائد وو والمراجع وأبا किन्य किन्या सकते है जाते पाने प्राथमिक शासन प्राप्त कराय हो। यहका निर्मा

के प्रमुख ने अभी। सर्वोध्य स्था। होता है सन्ता श्रेमी के अनुसार जानो प्रथम द्वितीय या पूर्वीय तसर का सर्विय कहा जाना है। दुष्ण करें राजदृश्याओं में दिसरा के मुख्य की सारायतार्थ दूर्वाध्य का मानी पर मन्त्री पानंद होता है। स्वित्यण दूर्वाध्यक्ष में अधिकारियों का पदर्शमा। इस प्रकार हो। है महावाधिय्य दूरा वार्तिय्य दूर प्रथमित्य दूरा। ये पाम पद्यिकारी ये काम वी अपेशा छसती श्रेमी के सुषक अभिक हैं।

सान् 1946 के अभिनय द्वारा विदेश संचा के अधिशारियों को 17 श्रेणियों में स्वा गया वाद में इसमें भी। श्रेणियों और स्वा दी गई। इन अधिशारियों के बात वर्ष (ट्रिअट्स) है। पटोलियों में मान के अगर वर को जाति है। सारे एक अधिशारि विद्या सेवा अधिशारिया जाते हैं। पटोलियों में सारे एक प्रतिशासिया ताता है। प्रति से जाते हैं वहीं सेवा करते हैं। इसका वाधिवाद हुवावारा संज्यातिक का साम विदेश सेवा में अदस्त स्वतः कर प्रपोणी प्रति प्रता है। को साता है। को साम केवा स्वतः कर प्रपोणी प्रति प्रता है। को साम केवा प्रति है। को साम केवा साम होता की साम केवा से साम केवा साम

विदेश रोवा आरक्षित अधिकारी

(Loreign Service Reserve Officer)

इसरी क्याचना 1946 के अधिनियम द्वारा मुख्यत आवश्यक योग्यानापूर्ण विशेषधों की अस्ति 1968 में आपित अधिनारियों को 10 वर्ष के दिए पित्रा मिंग हुं भी अस्ति 1968 में आरिता अधिनारियों को 10 वर्ष के दिए पित्रा मिंग क्यां त्या त्या सहस्रे म्यद कम से वर्ष कर में हिए ऐसा से हेटाकर उर्दे पुन 10 वर्ष के दिए पित्रक किया जा सकता था। हा अधिकारियों को नियुक्ति स्वस्त्रप्ति हुं साम रोग के विदेश मन्त्री द्वारा के जाति है। इस्ति मांगीय अध्यक्ष की स्वीकृति के बाद दिनों भी स्वरादी अभिनदान अध्यत तैय स्ववादी देने के दिला जा तकता है। यह आशा की जाति है वह सा तत्वह से केचल विशेष प्रकृति के और असाधारण योग्या वाले तीन असती अधिकारी द्वितीय विवयमुद्ध केचल में प्रियुक्त विश्व का वाले दिवेस संख्या सारोगी (Auxiliary) की गीति है।

विदेस सेवा आरंथी अधिवारियों वी नियुक्ति विदेस सेवा की एक मूल श्रेणी के लिए वी आरंगि है। प्रियुक्ति के समय उत्तकी एक योगवा। और अनुस्व का प्यान स्वा ालाता है। इस यावस्था के अनुसार परिवर्तित परिवर्शियों का मुजाबला करने के लिए बाइन से विशेषकों को लिया जा सजरात है। ये अधिवारि विदेश सेवा में स्थायों स्वर प्राप्त गर्दी कर पारों किन्तु पद पर रस्ते हुए विदेश सेवा अधिवारियों के सामा बेतल माने विशेषक्रिकार तथा अन्य सुविधाएँ प्राप्त परते है। यदि विदेश समझी यह अनुस्व करे हैं एक आरंथी अधिवारी को राजाधिक या वाणिज्य हतावासा के रावर पर कार्य करा चारिए तो वह हमें हिए राष्ट्रपति से प्राप्ती करेगा और सन्द्रपति सीरेट वी सहस्ति से ऐसी स्वीकृति प्रवा

विदेश सेवा स्टाफ क्या अन्य कर्मचारी

दानिज्य दतावास के अभिकर्त्ता (Consular Agents)

विदेश सेवा स्थानीय कर्मकारी (Foreign Service Local Employees)

(Foreign Service Staff and Other Employees) दिदेश सेदा स्टाफ अधिकारियाँ एव अन्य कर्मचरियाँ में दे सारी अमेरिकी सेरी

श्रमिक खनिज सुबना या अन्य ऐसे ही दिवयों से सम्बन्धित रहते हैं।

सम्मिलित हैं जिनका ऊपर उल्लेख नहीं किया गया है। ये मुख्यत प्रशासनिक वित्तीय र एवं लिपिक दर्ग के कर्मचारी होते हैं। इनहीं नियुक्ति किसी दिशेष परीक्षा के बिना दि मन्त्री द्वारा की जाती है। इनकी नियुक्ति नियमिन नगरिक सेदा की नियुक्तियों की म सब्र योग्यता और अनुसद के अनुसार की जाती है। इस स्टाफ में 22 से भी अधिक में के वर्मवारी होते हैं। इनका कार्य और पदोन्नति इसके अनुमद तथा योग्यता पर नि होती है। दिदेश सेहा कर्मचरियों के अनिरिक्त दिदेश मन्त्री की स्टीकृति से समुद्र पार देशों में कुछ दिदेशी लिपिक तथा अन्य वर्मवारी नियुक्त कर दिए जाते हैं। ये प्रायः रिपि स्टेनी प्रकर व्याख्याकार अनुबादक टकानकार टेलीकीन ऑपरेटर माली अदि होने

प्राचीनकाल में एक वाणाज्य दतादास के अधीन अनेक बन्दरगाह रहते थे उन्हाँ अनेरि जहाजों का आवण्यन रहता था। ऐसी स्थिति में वाणिज्य दूत को दूसरे बन्दरगाहीं के हैं अनिकर्ता नियक्त करने पढते थे। नियक्ति के मनय अमेरिकेयों को प्राथनिकरा दी ए थी। इनदी संद्या क्रमरा: बढ़ती घटढी रही है। सन् 1946 के अधिनेयन में इन अनिकन की नियुक्ति का उल्लेख या किन्तु उनके कर्तव्यों का उल्लेख नहीं या। आउनल अनिकर्ता एक अमेरिकी या दिदेशी व्यापरी होता है जो प्राय, व्यस्त बन्दरगह में रहन जहाँ नियमित विभाज्य दूत नियुक्त नहीं किए जा सकते । उसका प्रमुख कार्य निर्य दिन्य दुरावास के अधिकरियों की सहयरा और सहयेग करना है।

प्रारम्भ में यह परम्परा थी कि दिदेशियों को प्रमुख वाणिज्य दूत अधिकारी द्वारा लि के रूप में नियुक्त दिया जा सबता था किन्तु बानुनी रूप से ऐसे कर्मबारी व्याख्या ट अन्य छोटे मोटे कार्यों के अतिरिक्त कोई कार्य नहीं करते थे । द्वितीय दिश्यपुद्ध तक इन राजदूतादास और दाणिज्य दूतादास में अनेक महत्वपूर्ण पदों पर लगाया गया था। र 1946 के अधिनियन में ऐसे दिदेशियों की नियुक्ति की व्ययस्या थी। इस डेगी के कर्मध स्वानीय कहलाते हैं । ये अनेक प्रकार के कार्य सम्पन्न करते हैं । इन स्थानीय कर्नदारि की उपयेगिता यह होती है कि ये स्थानीय रीति रिवाजों परिस्थितियों तथा जनता परिवित रहते हैं। इनसे अमेरिकी राजनयझाँ का कार्य सुदियाजनक बन जाता है। यह र है कि कोई मदायिकारी इन स्थानीयों की सहायता के दिना ठीक प्रकार से कार्य नहीं व सकता दिन्तु इनको ऐसे कार्यों में नहीं लगाया जाना जिनसे अमेरिका की सरहा खटरे पड़ सके। उनको महत्वपूर्ण कागजात नहीं सींप जाते। इन कर्मचारियों का देतन सम्बन्धि

सहयारी के रूप में रखा जा सकता है और ये प्राय, राजनीतिक आर्थिक साँख्नुति

कर सकेगा । इन आरंश अधिकारियों को जनकी दिश्मीकृत तैयारी के कारण साधार

रा के जीवन स्तर के अनुसार निर्धा'स्त किया जाता है। सामान्यतः इनको बही के मापदण्ड ! अधिक ही बेतन दिया जाता है। उनको पेशन दी जाती है तथा अनेक देशों में उनको वेपैतसा सम्बन्धी सुदिधकुँ दी जाती हैं।

अमेरिकी विदेश रोवा का मूर्त्यांकन (An F valuation of the American Foreign Service)

संपुष्णसान्य की दिदेश रोग दूसरे राज्यों के साथ उसके निजतापूर्ण सम्बन्धों के निर्दाह में प्राप्ता करती है। सध्यों अपेरिकी मीतियों और उपियों का महत्व है तम्रपष्टि इस देश के महित है यो प्राप्त करती है। सध्यों अपेरिकी मीतियों के उपियं को महत्व को देखें हुए समय समय पर इसका अध्ययन करता अनिवार्य है साधि इसके दोशे का निर्दाह किया जा सके। सन् 1946 के दिरेश सेवा अधिनेयन द्वारा अनेक प्रकार से दिरेश सेवा अधिनेयन द्वारा अनेक प्रकार से दिरेश सेवा अधिनेयन द्वारा अनेक प्रकार से दिरेश सेवा का पुनर्पठन हुआ। । इसके अनुमव पर अध्यादित नवीनताओं को लागू किया गया किन्तु पर नहीं कहा जा सकता कि अब दिरेश सेवा पूर्णत रोशकुत हो युकी है। अपन सिंग कुछ राजदुर्ती का गत्व आपरण दिरेश सेवा का दोन नहीं कहा जा सकता जबका दिरेश सेवा को स्थेन नहीं कहा जा सकता जबका किया जिल्ला करना का दायित करने का दायित कारेत राज्युती की प्रकार सकता है। उसके कियानिय करने का दायित कारेत राज्युती की राज्युती का मत्व आपरण दिरेश सेवा का दोन नहीं कहा जा सकता विदेश सिंग की स्वान्धित स्वान्धित सेवार्य कारेत राज्युती में उसकी सकता की सकता है। स्वान्ध करने का स्वान्धित कारों का प्रवाद कार्य कार्य करने कार्य के दिरेश सेवा कार्य कार्य करने कार्य के स्वान्धित है। इसके अपनी समस्य के मानम में दिशेश सेवा की देश सेवार के स्वान्धित के सामित के सिंग सेवार सेवार की देश सेवार कार्य के सामित के मान सिंग सिंग सेवार सेवार की देश सेवार कार्य के सामित के मान सिंग सिंग सेवार सेवार की सम्माजिक पुनरीता अनिवार की है। स्वार को सामाजिक पुनरीता अनिवार की होश्य के अध्यार पर इसे सुधारा जा सकता है। स्वय विदेश सेवा की सामाजिक पुनरीता अनिवार के सुधार्य के अध्यार पर इसे सुधारा जा सकता है। स्वय विदेश सेवार की सामाजिक पुनरीता अनिवार की स्वान्ध के सामाजिक सेवार की सामाजिक सुनरीता अनिवार की स्वान्ध के सुधारा जा सकता है। स्वय स्वय सामाजिक सुनरीता की सुधारों के अध्यार पर इसे सुधारा जा सकता है। स्वय सामय पर अपना अवस्य निरिधा एव मुत्यावन करते रहना माजित।

दिरेश सेवा की मन स्थिति विदेश सेवा के विरुद्ध एक मुख्य आलोमना यह की जाती है इनकी मन स्थिति कहिरादी एव परम्पराज्यों होती है। नवागनुष्ठ अधिकारी को गीध हैं यह कात हैं जातात में मनित्व कार्य के कोई सारहित्व का सोमान्दिक कार्य के लिए नहीं हुआ। उत्तका अधिकारी कार्य आवित हो जाती है। प्रदेश स्थानों पर अधिकारा कार्य अध्यादिकारपूर्ण कार्यों में ही व्यतीत हो जाती है। प्रदेश स्थानों पर अधिकारा कार्य अधिकारियों कार्यक्रिया कार्य की जाती है। वहें अधिकारियों का अधिकारी कार्य कार्य की प्रदेश कार्य की अधिकारियों का अधिकारी समय स्थान हो परनाओं से मुस्तिम स्थान में ही अधिकारियों का अधिकारियों का अधिकारियों का अधिकारियों समय स्थान हो परनाओं से मुस्तिम स्थान में ही अधिकारियों का स्थान स्थान है। अपने सीवित और कृतिम सावावरण में कार्य करता हुआ वह सीध हो एक विशेष मन स्थिति का बन जाता है। पत्र पर सेवा का मारिविताल पत्र जाता है।

पतंत्रति की दृष्टि से दिदेश सेवा के सदस्य को एक विशेष मनःस्थिति अपनानी पड़ती है। पदोत्रति तती होती है जबकि कोई कर्ममारी लागे समय तक सेवा में रहे और विजिन्हें से बचता रहे। विदेश सेवा में बतिनाई से बचने का कर्म यह है कि कोई कर्मवारी क्रिजी प्रमान पर ऐसा दृष्टिकोन न कपनाए कि उसे विश्व अधिकारी द्वारा मिरस्स कर दिया छए। क्षेत्र में कतिष्ठ अधिकारीयों के सार्व्युवालना प्रतिदेदन पर विश्व अधिकारी के हस्त्रमर होते हैं। ये प्रतिदेदन व्यवसायिक सुरता और प्योजति की दृष्टि से महत्वपूर्ण होते हैं। अट-युवक अधिकारी श्रीय ही। यह जान जाता है कि उसे या हो अपनी सेवा समायी करानी याहिए या छोड़ देनी महिए। समय गुज्यने के साथ कर्मबारी पूरी तरह से सिदानवादी बन जाता है और अपनी पहस तथा कर्म करने दो होने हो हो देता है।

स्पष्ट है कि दिदेश सेवा आवश्यक रूप से व्यादसायिक प्रतिना को प्रोत्सादित करती है। इसका स्तर और मून्य बनए रहने के लिए कुछ मार्यक्र स्मारित किए उनते हैं। इसके सुरातम् एकतन और पूर्ण निष्ण के सिद्धात शानित हैं। वीर्पकात में या सं व्यक्तियत अधिकारी को उन्हें स्टैकार कर लेना प्रतिकृत क्याव वह सक्ष्रिय और प्रगावितील सदस्य नहीं रह जायेगा। ऐसे मार्यव्यक्त के बिना दिदेश सेवा बुद्धिमत पूर्ण नहीं रह सकेगी। इस प्रकार एक प्रमावशासी दिदेश सेवा की रहा करना, जो उच्चनर व्यवसायिक सेवा के गुगों से पूक्त हो, एक गम्मीर सनस्या है। व्यक्त पदी के कर्मवारी कुछ सन्य तक पुराने आजियन अधिकारियों के अधीन रहते हैं फल्ट वे दिदेश सेवा के मारी रूप को प्रमावित

करेंगे बदोंके जारे बहाँ के जारवादित्यों के जिए आवश्यक प्रतिशत्म प्राप्त नहीं होगा। एक अन्य शिवश्यता यह वी जाती है कि ह्या दोनों प्रवार की रोवाओं के एवंजिक्या से दोनों ही हारोतादित हो जाती है। सुप्रतिशित दिदेश सेता अध्यानीयों को दिवस प्रियान में अपना नया दादित्य अदिक्तर प्राप्तीत होता है। दूसरी और दिदेश विभाग के स्टार्क विशेषक अधिकादियों को पदोत्रित के लिए ऐसे अधिकादियों से स्वयद्धी वसनी होती है जो मामाओं और राजनियिक कार्यों में पूर्ण स्वार में प्राप्तित होते हैं। ऐसी स्थिति में सामाओं के एवंजियस का बार्य सामस्यापूर्ण बा जाता है। यह कारत भीरे पीरे दिया जाना मादिए।

अधिकारियों का विशेषीकरण विदेशों तेवा वी एक अच मुख्य समस्य तेवीयों का विशेषीकरण है। युवा अधिकारियों को सामानियक सम्य वाधिन्य दुमाशा के कार्यों में समाने में तथा स्वामानियल ऐसे दाने में उन्हें अधिक मोगोरिक विशेषीकरण प्राप्त नहीं हो पता यह साम है कि चुन सेवा में में तो गए उपस्पतरीय अधिकारियों को उस के ब्रांच अनुमव रोता है जिन्तु समस्त सेवा में यह बात दिखाई नहीं देती। एक अधिकारि प्राप्त में यह ब्रांच अनुमव रोता है जिन्तु समस्त सेवा में यह बात दिखाई नहीं देती। एक अधिकारि प्राप्त में यहि यों में का जाता है तो है कि पूर्व में सेविय अभीका में का दिखा जाता है तो उसे विशेष में प्राप्त में सेविय को सेविय अधिकारी में साम अधिकारी में साम अधिकार सम्प्रप्त स्थाप अधिक स्थापन पर यह कर जा सकता है वि अभीकी विशेष सेवा में का सम्याप्त अधिक कि विशाद सेविय है।

भारतीय विदेश सेवा और विदेश कार्यालय (Indian Foreign Service and Foreign ()llice)

भारतीय विदेश सेवा और भारतीय राजनय

भारत अन्तर्राष्ट्रीय राजगिति के क्षेत्र मे नत्य राष्ट्र नहीं था। जैसा कि की पुण्येस पन्त ने लिए। है अपेन देगों के साथ भारत सारकृतिक प्राचारिक समस्यों का किसान सैकड़ें वर्ष पुरा है। अपिनेशिक दासता के कात में इस परस्या में माणा पड़ गांचा पार कर्ता था। पर क्षा था। पर कर्ता था। पर प्राचा था पर कर्ता था। पर प्राचा था पर कर्ता था। पर प्राचा था पर कर्ता था। कर प्रचा था भारत के राजगित साम्या थे तथा भारत के राजगित सम्यान थे तथा भारत के राजगित सम्यान थे तथा भारत के राजगित सम्यान थे तथा भारत के स्वाचार के के क्षा भारत के क्षा कर कर्ता थे साम भारत के क्षा भारत के क्षा भारत भारतीय साम कर क्षा था। क्षा भारतीय साम क्षा थे क्षा भारत के स्वचार कर कर क्षा भारतीय साम क्षा था। क्षा था। क्षा था। भारतीय साम क्षा था। कर कर के लिए एक पैरोवर सामतीय वर्ष था। कर था। कर था। कर था। कर कर के लिए एक पैरोवर सामतीय वर्ष था। का साम था। वर्ष था।

स्वतन्त्रता के परचात् भारतीय विदेश रोवा का गठन केसे किया जाए यह एक विकट सानरवा थी पर शीध ही इस सानवा को हल कर दिया गया। यह निश्चय किया गया हि विदेश सेवा में प्रवेश परीवा हारा ही गियुक्ति की जाए लेकिन प्रारम्भ में बढ़ी उन्न के कुछ अन्यार्थी भी लिए जाएं। इनमें से कुछ सैनिक सेवाओं से और कुछ अन्य क्यबसायों से लिए गए और मारतीय विदेश सेवा के गठन और विस्तार का सिलसिला घल पडा। भारतीय विदेश सेवा के लिए सेना से लिए गए अधिकारी बहुमूल्य साबित हुए और कुछ अन्य अधिकारियों ने भी अपने चयन की उपयोगिता सिद्ध की। राजदूरों को उधित दिशा निर्देश देने की आदरयकता अनुभव की जाने लगी। अत जब मेनन कि पी एस। और आसफकारी को क्रमश चीन और अमेरिका में स्वतन मारत का पहला राजदूत नियुक्त किया गया तो प्रणानमंत्री नेहरू ने उनके मार्ग दर्शन के लिए एक लमी टिप्पणी लिख मेजी। इसकी कुछ महत्वपूर्ण दिवायों जैसा डॉ. पूर्णश पन्त ने लिया है इस तरह थी

"हमारे राजदूत एक महान् देश का प्रतिनिधित्व करेगे और यह सही मी है कि वे और लोगों को इस बात का अहसास कराएँ पर उन्हें यह भी नहीं मूलना चाहिए कि वे एक गरीब देश का प्रतिनिधित्व करते हैं जहाँ करोड़ों लोग मुख्यरी के कगार पर खडे रहते हैं। उन्हें कोई भी काम ऐसा नहीं करना चाहिए जो इसके विपरीत हो।" उन्होंने मारतीय राजनियियों को यह सलाह भी दी कि वे सर्वथा ही भारतीयों की तरह रहें अग्रेजों के नकत्वी न करें।

मारतीय विदेश सवा के प्रारम्भिक वर्षों मे गरिमा और क्रोशल वी कभी खटकती रही और अनेक राजनिक्षों ने अपना गृह कार्य करने के स्थान पर ऐश्वर्य और सेक्रिकों का बाना पहन कर अपनी जिम्मेदारियाँ पूरी बरनी बारी ! समय के साथ विदेश सेवा में निखार अता गया और अनेक भारतीय राजनिक्षिणे ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की । आज विश्व के अधिकांश देशों मे मारतीय राजनृत नियुक्त है । राष्ट्रमङ्कतीय देशों मे मारतीय उच्चायुक्त नियुक्त हैं । बहुत से देशों में मारतीय महावाणिज्य दूत और वाणिज्य दूत नियुक्त है । समुक्त राष्ट्रस्य मे मारत का विशेष प्रतिनिधि नियुक्त है । इतना सब कुछ होते हुए भी मारतीय विदेश सेवा और मारतीय राजन्य च वत्त स्त से मी दूर है जो ब्रिटिश और अमेरिकी विदेश सेवा तया राजन्य का है । मारतीय राजनिकों की नियुक्ति करते समय सार्यजनिक जीवन के विशिष्ट व्यक्तित्वों के साथ साथ मारतीय विदेश सेवा के सक्षम और गतिशील समाने इस पद पर नियुक्त किका जाता है। वर्तमान में विदेश सेवा को सक्षम और गतिशील समाने प्रारम्भ प्रयास के प्रकार के स्था साथ मारतीय विदेश सेवा को सक्षम और गतिशील समाने के प्रयान किये जा रहे है।

भारतीय विदेश मन्यात्मा

मारत की मौगोलिक स्थिति एव विदश नीति के सिद्धात अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के नियमन और संचालन में एक विशेष प्रकार की मूमिका निमाते हैं। मारत का विदेश मन्त्रातय अन्य देशों के साथ मारत के सम्बन्धों का नियमन करने दाली विदेश नीति के निर्माण एव कियान्वपन के लिए जनस्वाति है।

विदेश मन्त्रालय का प्रारम्म ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासनकाल में 1783 में विदेश दिमाग की स्थापना स हुआ था। स्वतन्त्रता से पूर्व इसके दो दिमाग थे विदेश दिमाग और सादमुम्पडलीय सम्बन्ध का दिमाग। 1947 में इनको मिलाकर एक मन्द्रालय बना दिया गया। सन् 1948 में इस मन्त्रालय को सूचना एव प्रसारण मंत्रालय से बाह्य प्रयार दिश्य का हस्तन्त्रस्तरा मी कर दिया गया। मार्च 1949 में इसके नुमकरण में में प्राप्ट्रमण्डलीय सन्दर्भ शर्द निकाल दिया गया। और इसका नाम केटल दिदेश मन्त्रालय रखा गया।

विदेश मन्त्रालय का रागठन

विदेश मन्त्रालय भारत शरकार का एक विशाल मन्त्रालय है । स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व यह मन्त्रालय सदैव ही गवर्नर जनरल की देखरेख मे रहा । स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात जब तक पण्डित जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रधानमन्त्री रहे तब तक विदेश मन्त्रालय उन्होंने अपने पास रखा। उनके बाद भी इस मन्त्रालय के प्रधान सदैव वैश्विनेट के महत्वपूर्ण सदस्यों में से रहे। वर्तमान में माधवसिंह सौलकी विदेशमन्त्री हैं। श्री जे एन दीक्षित विदेश सचिव है।

इस मन्त्रालय का प्रधान भारत सरकार की कैबिनेट के स्तर का एक मन्त्री होता है और उसकी सहायता हेत् प्रशासकीय स्तर पर तीन सथिव होते हैं । पहले इन तीनों सथिवाँ के कार्यों में समन्वय स्थापित करने के लिए एक महासचिव (सेक्रेटरी जनरल) भी हुआ करता था। यह पद कुछ समय पूर्व में समाप्त किया गया है। अब तीनों सचिव अपने अपने क्षेत्रों में सीधे मन्त्री महोदय के पास अपनी अपनी फाइले सम्प्रेपित करते हैं । विदेश सचिव निम्न सम्मागौ (Divisions) के कार्य के लिए उत्तरदायी होता है (1) अमेरिकन सम्माग (2) यूरोप सम्भाग (3) घीन सम्भाग (4) पाकिस्तान सम्भाग (5) संयुक्त राष्ट्र तथा सम्मेलन सम्भाग (6) सकटकाली मामलों का सम्माम (7) आफ्रेशियन सम्मेलन तथा चालू अनुसन्धान सम्माग (8) नयाचार सम्माग (Protocol Division) (9) विदेशी प्रचार anann 1

विदेशी मामलों का प्रथम संधिव (1) दक्षिण सम्माग (2) उत्तरी सम्माग (3) परिपन्न तथा वीसा सम्माग के कार्य की देखनाल करता है।

विदेशी मामलो का द्वितीय संघिव (1) अफ्रीका सम्माग (2) पश्चिमी अफ्रीका और उत्तरी अफ्रीका सम्माग (3) प्रशासन सम्माग (4) आर्थिक सम्माग (5) ऐतिहासिक सम्माग और (6) कानूनी एवं सचि समाग के कार्य के लिए उत्तरदायी होता है।

संविदों के अलावा अपर संविव संयुक्त राचिव आदि भी है। विदेश मन्त्रालय का अपना

संविदालय है।

विदेश मन्त्रालय ससार भर में राजनियक (Diplomanc) तथा कौंसली कार्यालयाँ (Consular Offices) को कायम रखता है मन्त्रालय में ४५ अनुमाग (Sections) हैं जिनमें 38 तो प्रशासनिक (Administrative) है और 47 प्रादेशिक (Territonal) तथा सकनीकी (Technical) हैं । ये अनुभाग निम्नलिखित 12 सम्भागों में वर्गीकृत किए गए हैं —

- (1) अमेरिकन सम्माग (American Division) उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका के देश और विदेशी सहायता ।
 - (2) शूरोप सम्भाग ।
- (3) भीन सम्प्राग l
- (4) दक्षिणी सम्माग पश्चिमी एशिया तथा दक्षिण पूर्वी एशिया उत्तरी आफ्रीका सूडान अफगानिस्ताः। ईरान ब्रह्मा श्रीलका पारपत्र (Ccylon Passport) और दृष्टाक एशियन अफ्रीकन तथा कोलम्बो शक्ति सम्मेलन (Visual Asian African and Columbo Powers Conference) I

- (5) अफ्रीका सम्भाग ब्रिटेन त्या उपनिदेश (Colonics) (उत्तरी त्या दक्षिणी सूडान
- के अलावा अफीका) । (6) पाकिस्तान सम्माग (Pakistan Division) ।

126 राजनय के सिद्धान्त

- (7) नवाचार सन्नाप (Protocol Division) नवाचार कौसली कार्य (Consular Work) तथा देशन्तरवास (Emigration) !
- (8) प्रशासन सामाण (Administration Division) दिदेश स्थित भारतीय निशने त्या प्रयान कार्यान्यों (Headquarters) के प्रशासन (अर्थात कर्मणरी वर्ग त्या गृह सम्बन्ध) स्थानना सम्बन्धी भामते (Essabishment Matters) दल्ट तथा केरो सम्बन्ध प्रशासकीय भामते सरद कर्य ।
 - (९) दिदशी प्रचार सम्माग ।
- (10) दिदेशी सेटा निर्देशक वर्ग (Fureign Service Inspectorate) तथा अपलंत व्यक्ति (Abducted Person) 1
- (11) ऐतिहासिक सम्पण ।
 (12) उत्तरी सम्पण यह सम्पण उत्तरी सीना तथा चीन के साथ सम्बन्धों कं बारे में
- व्यदहर करता है। दिदेश मन्त्रालय के अधीनस्य कार्यालय निम्न प्रकार हैं—
- (क) देशन्तरदास सस्यान (Emigration Establishment) ।
 - (छ) उत्तरी पूर्वी सीन्यन्त एजेन्सी ।
 - (ग) नग पहाडी तुरनसँग क्षेत्र।
 - (ण) महानिद्रिष्ठ का कार्यालय (Office of the Inspector General) असम सङ्कलत ।
- दिदेश मजात्य का देलकेयर यूनिट मुख्यत्य तथा दिदेश स्थित मिशनों में काम करने वाले सभी कर्मचारियों के सामान्य हित कल्यान की देखनाल करता है।
- करन दात सभी कमवारया के सामान्य हिंत कत्यांग की देखमाल करता है। विदेश मन्त्रालय के कार्य
 - दिदेश मन्त्रालय के कार्यें को निम्निलिखित रूप से रखा जा सकता है—
 - (1) ददारु मानत ।
 - (2) दिदेशी एवं राष्ट्रमञ्डलीय देशों से सम्बन्ध ।
 - (३) मारत में दिदेश राजनिक रणिज्य अधिकरियों एवं संयुक्त राष्ट्रसध तथा समनी दिशिष्ट सत्याओं के अधिकरियों से तम्बन्धित मानते।
 - (4) पसपेर्ट एवं दीस ।
 - (5) मारत से दिदेशो एव राष्ट्रमम्ब्रलीय देशों को रूपा वहाँ स मारत को अपराधियों का प्रत्यापन ।
 - (6) दैदेशिक एड राष्ट्रमण्डलीय देशों से राज्य विषयक निवास्क निरोध सम्बन्धी मामले ।
 - (त) मार ने दिदरी एट राष्ट्रमाइटीय देशों के निविध्यों का स्टेश को पुनरायनन तथा इन दरी से मारिय नागरिकों के आपना सम्बन्धी मानले ।
 - । डॉब्रन्सी इटस्टरी दर्ग प्रसादक 25

- (b) भारतीय उठ्यवासन अधिवियम 1922 के अधीन भारत से समुद्र पारीय देशों को एवं वहीं से भारत को समस्त उत्प्रवासियों का उत्प्रवासन ।
- (9) सभी वाणिज्य दृतों दिषयर कार्य ।
- (10) रिक्षा मन्त्रालय की सास्कृतिक छात्रवृतियाँ सम्बन्धी योजनाओं के कार्यों एव विदेशों में मारतीय मूल के निवास करने वाले वैयतिक छात्रों के लिए भारत में मेडिकल एवं इजी ियरिंग महाविद्यालयों में आरक्षित स्थानों का प्रवेश सम्बन्धी समन्वयं कार्यं।
- (11) विदेशी एव राष्ट्रमण्डलीय देशों के आगन्तुकों एव राजायिक तथा वाणिज्य दती संशा प्रतिधियाँ सम्बन्धी समारोहात्मक कार्य ।
- (12) पाण्डिघेरी गोआ दमण एव दीव विषयव क्रास एव पूर्तगाल सम्बन्धी भामले ।
- (13) हिमालय पर पर्वतारोहण।
- (14) सीमा क्षेत्रों में समायय एवं विकास कार्य ।
- (15) संयुक्त राष्ट्रसंघ उसके अन्य अग एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन ।
- (16) भारतीय विदेशी रोवा ।
- (17) भारतीय विदेशी सेवा शाखा ।
- (18) बाह्य प्रधार ।
- (19) राजगितिक सन्धियौँ I
- (20) युद्ध की घोषणा एवं समाप्ति विषयक विद्यापियाँ ।
- (21) विदेशी होत्राधिकार ।
- (22) खुले समुद्र एव आकाश में विए गए अपराध एवं डवैतियाँ । मूनि समुद्र या आकाश में अन्तर्राष्ट्रीय दिधि हे विरद्ध दिए गए अपराय ।
- (23) मारत की गूमि सीमा का सीमाँका ।
- (24) भारत द्वारा पेपाल सरकार को कोलम्बी योजना के सहयोगी आर्थिक विकास के अधी । प्रदत्त आर्थिक एवं प्राविधिक सहायता ।

विदेश मन्त्रालय के सगठा एवं कार्य का अध्ययन यह बतलाता है कि विदेशों से सम्बन्धित भारत सरवार वे जितने भी विषय अथवा वार्य है उन सबका नियमित निर्वाह इसी मन्त्रालय के द्वारा किया जाता है। अन्य देशों से शत्रुता मित्रता अथवा सटस्थता के सम्बन्ध रथापित वरो वे डिर्णय भी इसी मन्त्रालय में लिए जाते हैं। इसके दूतावासों को विदेशों में भारत की ऐसी आखों एवं कानों की सज़ा दी जा सकती है जो दूसरे देशों के साम्बन्ध में भारत सरकार को समय समय पर आवश्यक सूच गए देते रहते हैं। इसी सूचना के आधार पर भारत शरवार उन देशों से अप) सम्बन्धों में आवश्यक परिवर्तन करती रहती

भारतीय राजाय को कुश्तन और प्रमानी बनाने का मुख्य एतरदायित मारतीय रिदेश मन्त्रातय पर है और यह एविस है कि विदेश मन्त्रातय रामय पर भारतीय राजदूरी और राजनियकों का सम्भेतन आयोजित कर एनका भागेदर्शन करे। भारतीय राजदूरी की

। पी की शर्मा की एम शर्मा एवं मीलम प्रोवर वही पृष्ठ 146

वे दिभित्र देशों की अर्थ-स्थिति का अध्ययन करें और मारत के साथ अपना वाणिज्य बढाने भी दिला में हर जरूरी घटल करें । भारत को आत्म-निर्मरता दिलाने में भारतीय राजनय एक महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। दह सम्बन्धित देशों के साथ भारत के व्यापारिक और आर्थिक सम्बन्ध बढ़ा सकता है बशर्ते हमारे राजदूत इस दिशा में सक्रिय हाँ । पिल्लई समिति ने सिफारिश की थी—'भारत के दूसरे देशों में मेजे जाने वाले राजदूतों के चयन एव नियक्ति के लिए विदेश मन्त्रालय में वर्तमान में कोई वैज्ञानिक पद्धति नहीं है। प्रशासकीय दृष्टि से यह अत्यन्त उपयोगी होगा यदि विदेश मन्त्रालय किसी ऐसे प्रकोच्छ अयवा शाखा का गठन करे जो राजदुतों के चयन एव उनकी योग्यताओं आदि के दिवय में समुचित सचना आदि एकत्रित कर सकें।"

कार्य पद्धति आज भी बहुत-कुछ पुराने दर्रे पर है। मारतीय राजदूतों का यह कर्तव्य है कि

विदेश प्रचार

विदेश मन्त्रालय का एक मुख्य कार्य 'दिदेश प्रचार' है । विदेश प्रचार जितना व्यापक और प्रभादपर्ण होगा भारतीय राजनयिकों का कार्य भी उतना ही सरल बन सकेगा । विदेश

प्रचार राजनय का एक अनिदार्य अग है और इसका मुख्य दायित्व भारतीय विदेश सेदा के प्रतिनिधियाँ राजनिकों आदि घर है।

"मन्त्रालय का दिदेश प्रचार प्रमाग भारत के विदेश सम्बन्धों से सम्बद्ध समग्र प्रधार कार्य के लिए उत्तरदायी है। यह प्रमाग दिदेश स्थित भारतीय मिशनों द्वारा किए जाने दाले प्रेस सास्कृतिक सम्बन्ध प्रचार तथा सास्कृतिक कार्य की देखरेख करने और उसमें ताल-मेल बिठाने के लिए भी जिम्मेदार है। यह प्रमाग विदेश स्थित मिशनों को अपने-अपने प्रत्यायन के देशों में वहाँ की जनता और वहाँ के प्रचार तन्त्र के समझ मारत की विदेश

नीति के सभी पतों को उचित रूप से प्रस्तुत करने के सम्बन्ध में सहायता देता है और इसके बारे में उन्हें समृवित पक्षसार भी उपतब्ध कराता है। उन्हें भारत की राजनीतिक आर्थिक सामाजिक और सास्कृतिक घटनाओं से भी इस तरह अवगत रखा जाता है जिससे कि दिदेशी सरकारों और वहाँ के लोगों की भारत के साथ सम्बन्ध दिकसित और दिस्तृत करने में दिलवस्पी पैटा हो !

उपर्यक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वैदेशिक सम्बन्धों के सचालन में दिदेश मजालय की अहम मनिका है।